॥ आयुर्वेद उपचार शास्त्र ॥

(रसोद्धार तंत्र १ लो भाग)

कर्ता

राजवैद्य जीवराम कालिदास शास्त्री

गोंडल तथा राजकोट स्टेटना राजवैद्य

ओल इन्डिया आयुर्वेदिक कोंग्रेस लाहोरना प्रमुख

तत्वज्ञान इतिहास तंत्र मंत्र आयुर्वेद वगेरे विशयना अनेक ग्रंथोना कर्ता

प्रकाशन स्थळ

रसशाळा औषधाश्रम

गोंडल काठीयावाड

१९ मी आवृत्ति

(आज सुधीमां आ ग्रंथना ४९,००० ओगण पचास हजार प्रतो बहार पडी छे)

विक्रम संवत् २००१ वैशाख सने १९४५ मे

किंमत रु १०-०-०

विद्यार्थीओ पासे रु. ५-०-०

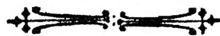
रसशाला इलेक्ट्रीक प्रीन्टींग प्रेस गोंडल.

॥ आयुर्वेद उपचार शास्त्र ॥

(रसोद्धार तंत्र १ लो भाग)

१९ मी आवृत्ति

प्रस्तावना



आं ग्रन्थनी १ ली आवृत्ति सने १९१६ नी सालमां प्रसिद्ध थयेली अने १९३२ मां एटले १६ वर्षमां १८ आवृत्ति प्रसिद्ध थइ गइ. आजे आ ग्रन्थनी १९ मी आवृत्ति प्रसिद्ध थाय छे. १८ मी आवृत्ति १९३५ मां खलास थयेली. रसशाळानुं छापखानुं रसशाळाने लगतां साहित्य छापवाना कामामांथी नवरुं न थवाथी १९ मी आवृत्ति छापवानुं लंबाणु तेमां १९३९ मां लडाइ शरु थइ कागळनी तथा बीजी मोंघवारी अने रसशाळाना कामकाज वधतां आज सुधी आ ग्रन्थ पुरो थइ शक्यो नही. आ पुस्तकनो १ लो फरमो ता. ३०-७-१९४२ ना रोज छपाणो हतो अने छेल्लो फरमो आजे ता २२-५ १९४५ ना रोज छपाणो छे। आ रीते अनेक कामनी राजवैद्यश्रीनी अने छापखानानी रोकाणने लइ छापवानुं शरू कर्या पछी ३ वर्ष आ ग्रन्थ पुरो थाय छे. ते दरम्यान श्री भगवद्गीता दुर्गासप्तशती चंडीपाठ राज्याभिषेक पद्धति श्री सूक्त वगेरे घणां पुस्तको पंचांगो नानी मोटी चोपडीयुं वगेरे प्रसिद्ध थयां छे. १८ मी आवृत्ति खलास थया पछी आज सुधीमां हजारो ग्राहकोये आ पुस्तकनी मागणी करी छे. लडाइनी मोंघवारीमां आ ग्रन्थ पुरो थयो छे एटले कागळ छपाइ मजुरीमां वधु खर्च लागवाथी आनी किंमत चालु ग्राहको माटे रु. १० अने विद्यार्थीयो माटे रु. ५ पांच राखी छे. गुजराती साहित्यमां आ ग्रन्थ जेटली आवृत्ति कोइ पण ग्रन्थनी बहार पडी नथी बधी आवृत्तिनी मळी आ ग्रन्थनी ४९ हजार कोपी छपाणी छे. अमे ग्राहकोनी मागणी प्रमाणे प्रसिद्ध करी शक्या होत तो आजे ३८ थी ४० आवृत्तिमां एक लाखमी संख्या थइ गइ होत। आ १९ मी आवृत्तिमां घणो सुधारो वधारो करतां विस्तार पण वधी गयो छे. आ ग्रन्थना पांच भाग छे. तेमांनो आ १ लो भाग छे पांचे भाग राजवैद्य संस्कृतमां श्लोकात्मक बनाव्या छे ते संस्कृत ग्रन्थ हवे पछी प्रसिद्ध थाशे आ ग्रन्थना रसायन शास्त्र, कामशास्त्र, धातुवाद शास्त्र, मंत्र शास्त्र नामना भागो गुजरातीमां अने संस्कृतमां प्रसिद्ध थाशे हींदी मराठी इंग्रेजी तथा बीजी भाषानी प्रजानी ने ते भाषामां आ ग्रन्थनां भाषांतर करी छापवानी मागणी घणा वर्षोथी थाय छे पण ते बनी शक्यु नथी. दरेक भाषानां माणसो वांची शके माटे १९ मी आवृत्तिनी भाषा काठीआवाडी छतां लीपी बाळबोध राखी छे तेथी आ ग्रन्थनुं बाजी भाषामां भाषांतर न थाय त्यांसुधी बीजी भाषावाळा साधारण उपयोग करी शकशे।

आ पुस्तक वैद्यो दाक्तरो के प्रक्टीश करनाराने उपयोगी थाय ए स्वाभाविक छे पण अमारो मुख्य उद्देश गामडाना लोको दरेक रोगना घरगथु उपाय जाणी शके ए छे, माटे नानामां नाना गामडामां पण मळी शके दरेक रोगमां लागु थाय तेवां वगडाना के बीजा वनस्पतिजन्य आसडीयांना उपचार वधु वर्णव्या छे आ ग्रन्थनो उपयोग ३० वरस थयां मुख्यत्वे करी गामडामां वधु थइ रह्यो छे. आज

सुधीनी आवृत्तिओमां रोगोपचार साथे रसायन अने वाजीकरण प्रकरण दाखल करेलां हतां छतां १८ आवृत्ति सुधीनु आ पुस्तक सांडा त्रणसो पृष्ठमां पुरु थयुं हतुं. ज्यारे आ १९ मी आवृत्तिमां ते बे प्रकरण राख्यां नथी छतां रोगना उपचारमांज आ भागे ४५० पानां रोक्यां छे. रसायन अने कामशास्त्रनां लगभग ७०० पानां थाय एम छे तेथी तेने जुदा विभाग रुपे प्रसिद्ध करवानु ठराव्युं छे. आ आवृत्तिमां दरेक रोगना घरगथ्थु उपायो राजवैद्यश्रीना ३५ वर्षना अनुभवना उपरांत सेंकडो वर्ष पहेलां लखायेला विश्वासपात्र हस्तलिखित जुना पुस्तकोमांथी पण संख्याबंध प्रयोगो लीधा छे

श्री. कस्तुरबा फंडमां भेगा थयेला लगभग सवा करोड रुपीयामांथी मोटी रकम गामडामां वैदकीय सारवारमां खरचवानुं नक्की थयुं छे तेनो घणेभागे विलायती दवामां अने विलायती पद्धतिमां उपयोग थाय एवां चिन्ह देखाय छे दरेक राजकर्तानी के एजन्सीना मोटा अधिकारीओनी गामडानो प्रजाने वैदकीय सारवार पोचाडवानी इच्छा छतां तेमां सफळता मळे एम नथी कारण डाक्टरी सारवार मुख्य शहेरो अने मोटा गामोमां मांड पोंची शके छे एटले सेकडे ९० टका गामडांनी प्रजा देशी के विदेशी कोइ जातनी सारवार मेळवी शकती नथी. आ दशा घणेभागे आखा हिंदनी छे. एटले आ पुस्तकने आधारे दरेक रोगना घरगथ्थु उपचारनुं ज्ञान गामो गाम आपवामां आवे तो दरेक गामडानो दरेक माणस रोग मुक्त थशे. ते माटे दरेक गामे आ पुस्तकनी एक एक प्रत राखी गामनो पटेल पोलीस पटेल मास्तर के आगेवान कार्यकर्ता तेनुं ज्ञान गामडाना माणसोने करावे ते: सामान्य गुजराती समजनारो दरेक माणस गामडाना लोकोने मदद रुप थनारो ग्राम्य वैद्य बनी गामडाना लाखो माणसोने रोग रुपी मृत्युमांथी बचावी शके आ पुस्तकनी आज सुधीमां प्रसिद्ध थयेली ४९ हजार प्रतो पैकी ४० हजार प्रतो विना मूल्ये अपाणी छे अने तेनो लाभ मोटे भागे गामडानी प्रजाये लीधो छे. पण काठीआवाडनो अने देशनी विशाळता अने भाषानी विविधता जोतां आ प्रचार बहु ओछो गणाय काठीआवाड कच्छनी ४५ लाखनी प्रजा आजे आरोग्यनी दृष्टिये पछात छे अने विविध रोगथी मरे छे. श्री कस्तुरबा काठीयावाडी हतां पोते चुस्त सनातनधर्मी अने आयुर्वेद वगेरे प्राचीन शास्त्रोने माननारां हतां, तो तेना फंडमांथी कच्छ काठीयावाडनी प्रजाने आयुर्वेदिक साहित्य अने देशी औषधोनो लाभ मेळववानो प्रथम हक छे. अमारी इच्छा छे के श्री. कस्तुरबा फंडना ट्रस्टीओ काठीआवाडना गामडामां आ पुस्तकनो पडत कींमते फेलावो करी वैद्यो द्वारा ग्राम्य जनताने तेनो लाभ आपवानी व्यवस्था करे तो कच्छ काठीआवाडना माणसोने आशिर्वाद मळशे अने बाना आत्माने शांति थाशे ट्रस्टीओ आ पुस्तकने मुख्यत्वे करी गुजराती भाषामां तथा अनुकुळता प्रमाणे बीजी भाषामां छपावी पडत कींमते वेचवानो व्यवस्था करवा कबुल थाशे तो अमे घणी खुशीथी छापवानी संमति आपशु।

आ पुस्तक ए आखा आयुर्वेदना शास्त्रीय उपचारोनुं दोहन छे शास्त्रोक्त उपचारोना ३०-३५ वर्षना अनुभवने आ पुस्तक प्रसिद्धि आपे छे।

ता. २२-५-४५ गोंडल

व्यवस्थापक
रसशाला औषधाश्रम

रसशाला औषधाश्रम

ना

आश्रयदाता



हिझ हाईनेस नामदार महाराजा श्री १०८

श्री भोजराजजी साहेब बहादर

श्रीमंत गोंडल नरेश

॥ अर्पण पत्रिका ॥

अखंड प्रौढ प्रताप, जाडेजा वंश भूषण, क्षत्रिय शिरोमणि, हिझ हाइनेस नामदार महाराजा श्री १०८ श्री भोजराजजी साहेब बहादुर मु. गोंडल.

आयुर्वेद शास्त्रना दोहन सरखा, आखा भरतखंडना विद्वानोये मुक्तकंठे वखाणेला आ ग्रन्थनी: :अढारे आवृत्तिना ४८००० अडतालीस हजार ग्रन्थो आप नामदारना पूज्य पिताश्री स्व. महाराजा साहेबने अर्पण करी गोंडल राज्य प्रत्येनुं मारुं कर्तव्य बजाव्युं हतु आजे आ १९ मी आवृत्तिनुं पुस्तक आप नामदारना राज्यारोहणना स्मरण रूपे आपश्रीने अर्पण करी आशा राखुं छुं के आप नामदार आयुर्वेदना पोषण रक्षक अने उद्धारक बनशो.

संवत २००१ — आप नामदारनो शुभचिंतक

वैशाख वदी १३ — राजवैद्य जीवराम कालिदास शास्त्री

रसोद्धारतंत्र १९ मी आवृत्तिनो अनुक्रमणिका

रसोद्धारतंत्रनी विषय क्रमवार अनुक्रमणिका

रसोद्धारतंत्र



॥ चिकित्साखण्डः ॥१॥

दारिद्र्यगदध्वंसावुमामहेशौ सदा वंदे ॥
गलघृतशुंडाहस्तानतजननीनातममरेशम् ॥ १ ॥
सकलविकाराणां यद् विद्धी राजा ज्वरः ख्यातः ॥
तस्माज्ज्वराधिकारं प्रथमं वक्ष्ये मुदे विदुषाम् ॥ १ ॥

बधा रोगोमां ताव ए राजा छे माटे ज्वराधिकार पहेलां कहीये छीये.

ज्वर-ताव ए देवकोटीनुं एक सत्व छे तेथी औषधनो साथे मंत्र तंत्र अने तेनुं पूजन अर्चन करवाथी जलदी ताव उतरी जाय छे खास करी क्षयनो ताव, जीर्णज्वर सन्निपात जेवा असाध्य तावमां तो औषध साथे ज्वरशांतिना पूजन अर्चन वगेरे उपचार पण शास्त्र प्रमाणे करवा जे अमे आ प्रकरणमां कहेशुं।

तावनी उत्पत्ति.

भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष, राक्षस वगेरे सत्वोनी उत्पत्ति जुदी जुदी रीते छे तेम ज्वर-तावनी उत्पत्ति शास्त्रमां वर्णवी छे ते आ प्रमाणे छे. दक्ष प्रजापतिना यज्ञमां सती पोताना पति शंकरनुं अने पोतानुं अपमान जोतां बळी मुवां त्यारे कोपायमान थयेला रुद्रना भयंकर श्वासथी ज्वर उत्पन्न थयो छे ते प्राणि मात्रने दुःख आपे छे जन्म वखते अने मृत्यु वखते तो ताव प्राणिमात्रना शरीरमां अवश्य पेसे छे तावने देव अने मनुष्यो शिवाय कोइ सहन करी शकतुं नथी अर्थात ते शिवायना प्राणीने ताव आवतां मृत्युज पामे छे. प्रजाना मृत्यु माटेज ज्वर उत्पन्न थयो छे तेना भेद प्रमाणे जुदां जुदां स्वरूप छे.

तावनुं देवताई स्वरुप.

त्रण पग अंगारा एज हथीयार त्रण मस्तक मोटुं पेट वाघनुं चामडुं पहेरेलुं काबरचित्रो रंग पिंगळो आंख्युं टुंकी जांघ विचित्र भयानक स्वरुप महा बळवान एवो आ ज्वर प्रजानो संहार करवा माटेज उत्पन्न थयो छे अर्थात संसार-जगतनी उत्पत्ति साथे नाश निर्माण छे. जन्म तेनुं मृत्यु अवश्य छे एटले मृत्युना कारण रूप ज्वर छे.

तावना भेद	१३ जातना सन्निपात
१ वायुनो	१ वायु वधु-पित्त कफ ओछा
२ पित्तनो	२ पित्त वधु-कफ वायु ओछा
३ कफनो	३ कफ वधु-पित्त वायु ओछा
४ वात-पित्तनो	४ वायु पित्त वधु-कफ ओछो
५ वात-कफनो	५ वायु कफ वधु-पित्त ओछुं
६ पित्त-कफनो	६ पित्त कफ वधु-वायु ओछो
७ त्रणेदोषना प्रकोपनो सन्निपातज्वर	७ वायु वधु-पित्त मध्यम-कफ ओछो
८ अभिघात वगेरेथी थयेलो आंगंतु-ज्वर	८ वायु वधु-कफ मध्यम-पित्त ओछुं
	९ पित्त वधु-वायु मध्यम-कफ ओछो
	१० पित्त वधु-कफ मध्यम-वायु ओछो
	११ कफ वधु-वायु मध्यम-पित्त ओछुं
	१२ कफ वधु-पित्त मध्यम-वायु ओछो
	१३ त्रणेदोषना प्रकोपवाळो

आंगंतुक ताव—अभिघात-पछडाट, शस्त्रनो, हथीयारनो घात, मार तेवां कारणने लीधे आवे ते ताव जुदो गण्यो छे पण उपरना तावमां तेने समावेश थइ जाय छे अर्थात कार्य कारण परत्वे उपरना कोइपण तावनुं रुप आगंतुक ताव पण लीए छे.

ताव—ज्वर.

शरीरनी स्वाभाविक गरमी-९७½ थी ९९ नी होय छे ९९ थी १०२ सुधी सामान्य ताव गणाय छे १०२ थी १०५ सुधीनो वधु ताव गणाय छे अने १०५ थी वधारे थाय तो भयंकर ताव समजवो, ९७½ थी घटी ९६ सुधीनी गरमी होय तो ओछी गरमी गणाय अने ९६ थी ओछी थाय तो शैत्य के शरदी समजवी.

कारण चिन्ह—ऋतुना बदलवाथी हवा बगडवाथी, सूक्ष्म जंतुथी, उ- भिज प्राणिज विषथी आघात, जखम, फेफसां, हृदय, मगज वगेरेनो द वगेरे अनेक कारणे ताव आवे छे. प्रथमनो विशिष्ट अने बीजो लाक्षणिक ज्वर कहेवाय. आहार विहारना अनियमितपणाथी कोपेला वात पित्त कफ दोष हो रीमां जइ कोठा अग्निनी उष्णताने बहार काढवा प्रयत्न करे छे त्यारे ताव अ छे. परसेवानो अटकाव, देह इंद्रियो अने मननो संताप तेने ताव कहे छे.

शरीर ढीलुं थाकेलुं लागे, कोइ वस्तु पर प्रीति न थाय, चेरो निस्तेज लागे, मोंनो स्वाद खराब थाय, आंखे पाणी आवे, ठंडी चीज पवन के तडका इच्छा तथा द्वेष थाय, बगांसां आवे, आळस भरडे, शरीर भारे थाय, रुंवा उभां थाय, खोराक पर अभाव, आंखे अंधारां आवे, टाढ वाय प अने पने ल बीजां चिन्हो ताव आववानो होय त्यारे जणाय. वात प्रकोप होय तो उप

चिन्हो साथे बगांसां वधु आवे. पित्तप्रकोप होय तो उपरनां चिन्हो साथे आंखो वधु बळे. कफ प्रकोप होय तो अन्न उपर बीलकुल प्रीति थाय नहीं. मोळ, उबको वधु जणाय.

१ सादो ताव—तरुणज्वर नवज्वर.

कारण—खोराक वधु खावाथी, अजीर्णथी, टाढ तडको वरसाद वेठवाथी, उजागराथी, हमेशां ठंडे पाणीये न्हावाथी, शरबत, आइस्क्रीम, बरफ, चेवडा, बजारनी चीजो वेजीटेबल घी, मगफळीनां तेल वगेरे चीजो खावाथी, नाटक, सीनेमा जोवाथी, तडके चालवाथी, शरीर अने मनने वधु श्रम पडवाथी, ऋतुओना फेरफारथी आ ताव चडी आवे छे.

चिन्ह—शरीर ढीलुं पडवुं, अन्नपर अभावो, पेटमां बोजो, माथानो दुखावो शरीर भारे, बांसानी फाट, आंखोनुं बळवुं, नाडीनी गति १ मिनिटमां १२० थी १३० सुधी थवी, तरस, टाढनुं चडवुं, मों सुकावुं, झाडो पेशाब कबज वगेरे चिन्ह जणाय छे. कोइवार उबका साथे उलटी पण थाय छे. अने दरदी लवारो पण करे छे

ताव उतरवानां लक्षणो—परसेवो वळे, शरीर हळवुं लागे, बरो मुत्रो थाय—होठ पाके, छींको आवे अन्नपर रुचि थाय, तरस ओछी लागे, माथुं हळवुं पडे नबळाइ जणाय.

सामान्य सारवार—दरदीने स्वच्छ बिछानामां अने स्वच्छ घरमां खाटला पर सुवरावदो, दरदीना ओरडामां पवननी आवजा थाय पण तेना शरीर पर बीलकुल पवन अडवो नहीं जोइए. तेनी पासे वधु माणसोने बेसवा देवा नहीं तरस बहु लागे तो पर्पटादि हिम खडसलीयो तोलो १, धाणा तोला २, धरास तोला ४, अने साकर तोला ४, साथे खांडी तेमांथी ५ तोला भुकीने बारीक [illegible]दी जेवुं वाटी तेमां गरम करी ठारेलुं पाणी (अने ते तुरत हाजर न होय तो [illegible]रुं कुवानुं पाणी) तोला ३० थी ४० मेळवी कलइवाळा वासणमां भरी ठारी [illegible]वुं. तेमांथी दरेक वखते १–२ तोला पावुं शरीर सखत तपे अने ताव १०२ डीग्रीथी [illegible] होय तो माथे सादा पाणीनां के गुलाबजळनां पोतां मुकवां. असह्य गरमी[illegible] तपे तो माथे नदी कांठानो सेवाळ मुकवो के बरफनो पोटली ताळवे के पेटपर [illegible]वी. तेथी तुरत ताव ओछो थइ जशे अने मगजने ठंडक वळशे. दरदीने शरुआतमां [illegible] बे दिवस नाह—बाफ न आपवी. त्रण दिवस वित्या पछी नाह—बाफ आपवी. [illegible]ा प्रमाणे—एक सांकडा मोंना घडामां लींबडो, बकान, कीडामारी, कांकच अने [illegible]डानां पान शेर ०॥ अर्धो अथवा एकलुं महासुदर्शन शेर ०॥ अर्धो लइ पोणो [illegible] पाणी भरी तेमां ए नाखो उकाळवुं. घडानुं मो बंध राखवुं सारी रीते [illegible] उकळी जाय एटले दरदीने एक नेतर भरेल खुरशी उपर के खाटलीपर [illegible]रवो. पछी दरदीनी आसपास फरती खाली जग्या रहे तेम चार लाकडीनो

माळखो करी ते उपर धाबळा के गोदडां ढांकी तेमां बहारने। पवन जइ न शके तेम करवुं. पछी दरदीना मोढा आगळ के खुरशो नीचे घडो मुकी तेनुं मों उघाडी नाखवुं अने एक डंडीकावती ते घडामानुं पाणी हरवखत दरदी हलावे अथवा बहारना माणसोये अंदर हाथ नाखी हलावतुं जवुं. १० थी १५ मिनिट रहेवाथी परसेवो वळी हाडमांथी ज्वरनो अंश के विकार खेंचाइ जशे अने शरीरनी जीणी मोटी नसोमां तथा रुंवाडे रुंवाडे ज्वरघ्न कडवाणी पेसी जशे अने त्यारथी ताव चडतो अटकशे. देशी पद्धतिनुं आ एक इंजेकशन छे. दरदी मुंझाय तो वखतो वखत गळा उपरनो भाग उघाडतुं जवुं.

अपवास—दरदीने ताव आवे के तुरत तेना पेटनी स्थिति केवी छे ते तपासवुं. पेटमां बादी तो होवीज जोइए. एटले ताव आवे के तुरत अन्न के दुध तो आपवुंज नहीं. अर्थात् लांघण करवानुं आदरी देवुं. दरदी बुद्धिमान् होय अने हाडकचर जेवुं जणातांज खावानुं बंध करे तो तेने वधु ताव चडी आवतो अटकी जाय, पण तेनी जीभनी पराधीनताने लीधेज तेने खाटले पडवानो वखत आव्यो छे एम चोकस समजवुं. दरदी एम न कहे के मने सखत भुख लागी छे त्यांसुधी उकाळेला पाणी सिवाय कांइपण खोराक देवो नहीं. पेटमां आमनो भाग हशे त्यांसुधी भुख लागशे नहीं. अने ए आममां कांइपण खोराकनी वस्तु उमेराशे तेम ताव चडशे; पण कांइ वस्तु नहीं पडे तेम आमनो नाश थवा मांडशे. जेम अपवास वधु थाशे तेम दरदी वधु हुशीयारीमां आवशे. घणा लोकोनी भूल भरेली समज होय छे के दरदी खाशे तो बेठो थाशे. एम मानीने दरदीने इच्छा नहीं छतां पराणे खवरावे छे तेथी ताव जलदी उतरी जवाने बदले लंबाय छे. दाकतरो पण तावबाळाने पातळो हळवो खोराक खावानी भलामण करता होवाने लीधेज वधु मरण निपजे छे. तेमां पण साबुचोखानी कांजी के दुध एतो तावबाळाने झेर छे. आयुष्यबळ होय तोज आ खोराकरुपी विष पेटमां गया छतां दरदी बची जाय. त्रण थी तेर दिवस सुधी तावबाळाने अपवास करवानी अमे भलामण करेली अने दाक्तरो निराश थयेला ते केसो सारा थया छे. दरदीनी शक्ति प्रमाणे अने आमना वधु ओछापणाने आधारे अपवास करावबा. तेनी बाळक पण करी शके एवी परीक्षा एज के आमनो पूर्ण नाश थया पछीज दरदीने भुख लागशे. भुख लागे त्यारे मगनुं ओसामण अने गाळेलो थोडो भात आपवो. ते पण बहु थोडो थोडो अने वखतसर आपवो. ज्यांसुधी ताव हाडमांथी खसतो न होय त्यांसुधी तो खोराक देवोज नहीं. ताव उतरी गया पछी भुख वखते उपर प्रमाणे खोराक आपी शकाय. ताव उतरी गया पछी दश के पंदर दिवसे बधी जातनो खोराक नियमसर लेवा दरदीने छुट अपाय.

क्षयनो ताव, भय, क्रोध, कामांधता, शोक अने श्रमनो, क्षगर्भानो के लु लागवाथी ताव चडयो होय के सुवावडनो ताव होय तो तेमां लंघन कराववुं नहीं. लंघन करवाथी शरीर हळवुं पडे छे अधोवायु पेशाब अने दस्तनो खुलासो थाय छे छाती हळवी लागे छे सारा ओडकार आवे छे गळुं अने मोढुं चोखुं

थाय छे सुस्ती, बेचेनी मटे छे परसेवो वळे छे खोराक खावानी इच्छा थाय छे खोराकपर रुचि थाय छे भुख अने तरश उघडे छे. साजा माणसने ज्यारे पेटमां बोजो लागे, भुख न होय अने ताव चडशे एम लागे तो तुरत १-२ दिवस लांघण करी नाखवाथी ताव चडतो अटकी जाय छे.

हद उपरांत लांघण करवाथी नुकशान थाय छे जरुर करतां वधु लांघण करवाथी सांधानी त्रोड थाय, शरीर त्रुटे, आळस, उधरस, गळुं, मो सुकाय, भुख मरी जाय, अरुचि, तरश लागे आंखो नबळी पडे, उंडी उतरी जाय, काने धाक पडे, मन भमे, जीव उंडो उतरवा मांडे, अंधारां आवे, शरीरनी अने बळनी हानि थाय माटे लंघन मर्यादामां रहीने बुद्धिपूर्वक करवुं कराववुं.

ताव आवे त्यारे उलटी, झाडा वगेरे जणाय तो तेने रोकवाना ओसड खावां नहीं. तावना दरदीने झाडा तो भाग्येज होय छे. घणेभागे तो झाडा बंधज थइ जाय छे. अने तेथी तावना औषधमां घणेभागे जुलाब लावनार वस्तु होय छे. ज्वरकाळभैरव रस, इच्छाभेदी, ज्वरांतकविरेचन जेवी दवा देवी पडे छे के जेथी परसेवो वळी बे चार झाडा आवी ताव मोळो पडे छे. उलटी वहु थती होय तो उपर जणावेल पर्पटादि हिम तोला ५ मां ४० तोला पाणी नाखी वाटी गाळी ते थोडुं थोडुं पावुं. एटले उलटी थोडीज मिनिटमां बंध थशे. उलटी थती होय त्यारे जोवुं के दरदीने पेटमां बोजो, बगाड केटलो छे. जो बोजो वधु होय झाडो बे त्रण दिवस थयां कवज होय तो इच्छाभेदी गोळी २ आपवी एटले दोषनुं अनुलोमन थतां उलटी बंध थइ जाशे. आ तावमां जुलाबनी जरुर होयतो ज्वरकाळभैरवनी २ थी ३ गोळी आपवी. ताव उतारवा, अटकाववा विश्वतापहरण २ थी ३ गोळी पाणी साथे आपवी.

वातज्वर, वायुनो ताव.

कारण—वाइडां पदार्थ, वाल, वटाणा, तरबुच, तुवेर, मठ, चोळा, चीभडुं, बटाटां वगेरे खावाथी, गरीष्ट भोजनथी, चीकणां, ठंडा, वासी पदार्थ, बजारनो मीठाइ वगेरे खावाथी तथा चोमासानी ऋतुमां आ ताव लागु पडे छे.

चिन्ह—शरीरमां धुजारो, गळुं होठ सुकावा, मळनो अवरोध, छींको अटकवी, माथुं, पेट, कमर तथा वांसामां दुखावो थवो, उंघ न आववी, अनियमित रीते ताव चडवो उतरवो, मोढुं बेस्वाद, बगांसां, पेटमां आफरो, अजीर्ण, दबदबो शूळ, रोमांच, साथळनी के पींडीयुंनी त्रोड, घेनमांथी चमकवुं, लवरी, गळे शोष, उलटी वगेरे.

ताव उतरवाना चिन्हो—शरीरमां उपर जणावेलां चिन्ह जणाय नहीं, दस्त नियमित साफ आवे, भुख लागे, हरवा फरवामां उत्साह जणाय.

ज्वरघ्नी गुटि अथवा त्रिपुरभैरव २ थी ३ गोळी आपवी.

उपचार.

मळज्वर उकाळो—मींढीआवळ तोलो ०।, हरडे तोलो ०।, सुंठ तोलो ०।, धाणा तोलो ०।, गरणीना बीज नंग २५ सेकीने नांखवां सर्वे सूक्ष्म चूर्ण करी गोळ तोला २॥ ना पाणीमां उकाळी पावां, ताव उतरे, मळ नीकळे.

तपतीज्वर चूर्ण—हरडेदळ तोला ७॥ पलची तोला २॥, साकर तो. १५ साथे खांडी मात्रा ०॥ थी १ तोलो पाणी साथे देवुं. ताव उतरे.

सर्वज्वरहर क्वाथ—कायफळ, अरडुसो, देवदार, काकडासिंगी, भारंगी, खोरासाणी वज, भोरिंगणी, खडसलीयो, लविंग, हरडेदळ, पीपर, मोथ, धाणा बधां सम भागे लइ खांडी तेमांथी तोला २ चूर्णने पाणी शेर २ मां उकाळतां शेष शेर ०। रहे पटले गाळी २ वखत पावुं. बधा ताव उतरे, अटके.

शठ्यादि क्वाथ—कचुरो हळदर, दारुहळदर, देवदार, सुंठ, पीपर, मरी, दारुडीना मूळ, पलची, गळो, कडु, पीतपापडो जवासो, कांकडासिंगी, करीयातुं, दशमूळ बधां सरखेभागे अधकचरा खांडी राखवां १ थी २ तोला भुकानो उकाळो के फांट पावो. बधा तावने उतारे छे.

पित्तज्वर, गरमीनो ताव.

कारण—खारां, खाटां तेलवाळां, तेलमां तळेलां पदार्थो खाटां अथाणां बधु खावाथी, बहु गरम, तीखां, खाटां, दाह करनार, क्षोभ करनार वस्तुओ खावाथी वधी गयेलुं, बगडेलुं पित्त होजरीमां जइ खोराकमां मळी जइ रसने दुषित करे छे तेथी पित्त गरमीनो ताव आवे छे.

चिन्ह—आखा शरीरे दाह, तरस, निद्रानो नाश, मो कडवुं, मूर्च्छा, कडवी खाटी उलटी, फेर, लवारो, पातळा झाडा, परसेवो, मळ मूत्र तथा आंखोमां पिळाश, नाडीनो गतिमां १२० थी १३० धबकारा, तावनी गरमी १०४ थी १०५ सुधीनी, वगेरे चिन्हो देखाय छे. पछी ताव ४-६ कलाक १ थी ५-७ दिवस लगोलग रह्या करे छे. जोभपर काळी छारी वळे छे. आ तावथी घणी वखत दरदी मरण पामे छे. अथवा साजो थया पछी घणो वखत नबळो रहे छे. आ तावनी मुदत ७-१० के १२-१५ दिवसनी होय छे, तेमां योग्य सारवार न थवाथी मगज, होजरी, काळजुं के फेफसामां सोजो थाय छे. तो दरदीनी खराब स्थिति थायछे.

सारवार—दरदीने स्वच्छ मकान स्वच्छ बिछानामां सुवराववो. हवानी आवजा थाय पण दरदीना शरीरपर न लागे तेम ध्यान राखवुं. दरदीने प्रारंभमां थती उलटी के झाडा थावा देवो. माथुं बहु दुखतुं होय, बळतरा थाती होय तो माथे टाढां पाणीनां पोतां मुकाववां. तरस बहु लागे तो खडसलीयो, द्राक्ष, धाणा साकरनुं प्रवाही थोडुं थोडुं पावुं. त्रिभुवनकिर्ति बबे गोळी सवार सांज महा-सुदर्शनना उकाळा साथे आपवी. अथवा पित्ताशनो रस १-२ रती मधमां चटाडवो.

द्राक्षादि क्वाथ—द्राक्ष, हरडे, मोथ, कडुं, गरमाळो, खडसलीयो, सेदरडी सरखेभागे लइ खांडी राखवां. मात्रा १-२ तोलानो उकाळो के फांट करीने पावो. पित्तज्वर तथा ते साथे जणाता मुख्यदोष, प्रलाप, दाह, मूर्छा, भय, तरस, लोही पडवुं झाडा वगेरे मटे.

पर्पटादि क्वाथ—खडसलीयो, गळो, काळीद्राक्ष, धाणा, करीयातुं मोथ, कडाछाल सरखेभागे खांडी राखवां. १-२ तोला भुकानो उकाळो के फांट करी मध नाखी पावो गुण उपर प्रमाणे.

पाठादि क्वाथ—काळीपाठ, कायफळ, वाळो, कडुं, मोथ, जव, खडसलीयो, रतांजळी, सुखड समभागे खांडवां. १-२ तोला भुकानो उकाळो के फांट करी साकर साथे पावो. गुण उपर प्रमाणे.

आमज्वर क्वाथ—चण्या, पिपरीमुळ, मोथ, सुंठ, वाळो, करीयातुं, काचांबीलां, पद्मक, धाणा समभागे क्वाथ, आमज्वरे मळपाचन थाय, अग्नि प्रदिप्त थाय.

वृद्धपटोलादि क्वाथ—परवळ कडवां, कडुं, मोथ, पीपरीमूळ, जेठीमध, करीयातुं, अतिविषनी कळी, ए सर्वे समभागे लइ एक तोलानो क्वाथ करवो. पित्तज्वर, कफज्वर, वातज्वरमां उत्तम छे.

अंजन—वज, मरी, निरमळीनां बी, अरीठानां फोतरां, पुत्रजीवामींज, अघेडानां मूळ, लींबोळीमींज, प्याजकळी, मोरथूथू, सींधव, हींग, शंखनाभि, कायफल, सर्पकांचली, काकविष्टा सर्व सममात्रा एकत्र करी कारेली रस भावना एक, लींबु रस भावना एक, लींवडाना पानना रसमां वाटूय करी मरी प्रमाण घसी आंजवी. शाकणी, भूत, प्रेत, तरीयो ताव, टाढीयो ताव, एकांतरो ताव उतरे. नजर लागी होय तो आंजवाथी टळे.

कफज्वर–शरदीनो ताव.

कारण—भारे, चीकणां, बजारनो मीठाइ, मिष्टान्न पदार्थ वगेरे बहु खावाथी, ठंडे पाणीये न्हावाथी, दिवसे सुवाथी, खांडनी चीजो बहु खावाथी वगेरे कारणे आ ताव आवे छे. घणेभागे वसंतऋतुमां के नाना बच्चांने पेंडा बजारनी मीठाइ वगेरे खवरावावानी आदत पाडवाथी आ ताव आवे छे.

चिन्ह—शरीर भारे लागे, कळतर त्रोड थाय. मोळ आवे, मीठो खारो खाटो उलटी आवे, उबको आवे, आळस, मों, गळुं, पेशाव झाडो थाय, आम थोळां पडे. भुख मंद, उंघ बहु आवे, नाक कान वगेरे जड थइ जाय, चीकणो परसेवो नीकळे, उधरस, सळखम, माथुं दुखवुं, नाकमांथी पाणी पडवां, श्वास चढवो, हेडकी, साद बेसी जवो, सांधानो दुखावो वगेरे लक्षणो जणाय.

ए चिन्हो जणाया पछी झाडानो बंधकोश थइ ताव आवे छे. ते साथे उधरस होय छे. योग्य सारवार न थाय तो उधरस वधी जइ फेफसामां कफ भराइ जइ दरद वधी जाय छे. पण उपाय लागु पडी जाय तो झाडा वाटे के

मे वाटे कफने निकास थइ ताव उतरवा मांडे छे. पण ताव लंबाय त्यारे कफ फेफसामां चोटो जइ श्वास नळीने अवरोध करे छे. जेथी दरदी बहु मुश्केलीये श्वास लइ शके छे अने पछी फेफसानां अंतर पडने सोजो थइ छातीमां शूळ नीकळे छे. हळवे हळवे दरदी बेशुद्ध थाय छे. आ स्थितिने न्युमोनिया पटले फेफसानां सोजाने ताव कहे छे. त्यारे उलटी के कफमां लोही पडे छे. ज्यारे दरदी बचवो मुश्केल छे.

सामान्य सारवार—शरुआतमां सादी विरेचन दवा आपी बे चार झाडा थावा देवा. दरदी पोतानी मेळे खावानुं न मागे (भुख लागी छे एम न कहे त्यांसुधी तो) तेने कांइपण खोराक न आपवो. मात्र गरम करी ठारेलुं पाणी तरस लागे अने मागे त्यारे आपवुं. दुध, साबुचोखानी कांजी जेवो कांइपण खोराक न देवो. खोराक मागे त्यारे प्रथम मगनुं ओसामण आदु, मरी, मीठुं, हींग, जीरेथि वघारेलुं आपवुं. अने बे त्रण दिवस पछी ओसामण साथे थोडो भात शरु करवो. ताव तदन उतरी जाय ते पछी थोडुं थोडुं दुध सुंठनी चपटी नाखी गरम करेलुं देवुं (जो के वधा तावमां पण लांघणनी जरुरी छे तो पण) आ तावमां तो लांघण जेम विशेष कराशे तेम ताव मोळो पडतो जशे माटे दरदीनुं पेट केम छे, भुख छे के नहीं, बोजो, भारेपणुं, वायु, वादी केटलां छे ए प्रथम तपासवां. भुख न लागे त्यांसुधी २-४-६-८ दिवस सुधीनी लांघण करावबी. लांघणथि डरवु नहीं. ते बाबतमां वैद्योनी सलाहने वजन आपवु नहीं. कारण वैद्योनी अने घणा दाक्तरोनी पण एवीज समज घणे भागे होय छे के कांइक पेटमां जशे तो बेठुं थवाशे गमे ते दरद होय पण पेटमां नाखवानी वात प्रथम आवे छे पण सावचेत रहेवुं. न्युमोनिया नहीं थयुं होय तो तावमां दुध के कांजी वगेरे खोराक आपवो ए न्युमोनिया के त्रिदोषने आमंत्रण आपव जेवुंज छे. श्वास करी उलटीनी दवा देवी नहीं. जुलावनी दवा दीधी होय अने ते साथे उलटी थाय तो भले. छातीये महानारायण तेल के महालाक्षादि तेल वे रसराजनां थोडां टीपां टरपेनटाइन तेलमां मेळवी चोपडी कपडांना गोटा वर्त शेक करवो. टरपेनटाइनने बदले सरसीयुं के करंजीयुं तेल वापरी शकाय. कल्प तरु रस, आदुरस अने मधमां आपी शकाय. छातीये सर्व पोडाहर मिश्रले चोपडी रु दाबवु. कफाशनि २-३ रती आदुरस, मध के आसव साथे देवी.

त्रायमाणादि क्वाथ—त्रायमान, इंद्रजव, अरडुसो, कडु, गळो, पटोल गरमाळो, खडसलीयो, पीतपापडो, भोरींगणी, लींबडानी अंतरछाल, पदमख करीयातुं समभागे खांडवा. तेमांथी १॥ तोला भुकानो उकाळो करी पावाथ वातज्वर मटे.

ताव प्रयोग—घुडविष्टा तोलो १, सींधव तोलो ०॥, आकडाना दुधम घसी डाबापगनी लांक मध्ये चोपडवाथी ताव जाय. कफाशनि रस २-४ रत मध तथा आदुरस साथे आपवो.

पिपल्यादि गण क्वाथ—पीपर, पीपरीमूळ, गजपीपर, सुंठ, चित्रो, [illegible]वक, नगोडनां बी, एलची, बोडीअजमोद, सरसव, हींग, भारंगी, काळीपाठ, [illegible]द्रजव, जीरुं, बकान, मोरवेल, अतिविष, कडु, वावडींग बधांने समभागे खांडवा. [illegible] थी २ तोला भुकानो उकाळो के फांट करी मध नाखी पावो. कफ, शरदीनो [illegible]ाव, उधरस, सळखम, छातीनां दरद वगेरेमां उत्तम छे।

टाढीया, मेलेरिया अने ऋतुदोषजन्य ताव.

कारण—ऋतुना फेरफारथी, झाडीवाळा (गीर जेवा) वगडाउ गाममां [illegible]हेवाथी, गंदां पाणीथी, भीनाशवाळी के भेजवाळी जगामां रहेवाथी, तळावमांथी [illegible]ळ वाटे पाणी मेळवनारां गाममां, बेसुमार ढोळाता पाणीनो निकास नहीं थवाथी [illegible]टरोमां गंदकी भराइ रहेवाथी, पायखानां साफ नहीं थवाथी, ढोळाता पाणीने [illegible]कदम सुकावी नाखे तेवो प्रकाश तडको नहीं मळवाथी, हवानी आवजा बराबर [illegible]हीं थवाथी, गोच वस्तीवाळी शेरीयोथी, न्हावा धोवानी सुघडता नहीं राखवाथी [illegible]ाचां, शेकेलां, वासी बकालां, टाढां, वासी अन्नपान खावाथी, पेटमां बादी [illegible]जीर्ण अपचो थवाथी. उजागराथी, नाटक सिंनेमा जोवाथि वगेरे कारणोथि आ [illegible]ाव फेलाय छे।

चिन्हः—प्रथम शरीर तुटवा मांडे, बगासां आवे, कमर फाटे, आंखो [illegible]ळे, कपाळ दुखे, तरस लागे, पेशाब लाल थाय, उलटी थाय, झाडो कबज रहे, [illegible]ा ताव टाढीयो अने उनियो एम बे प्रकारनो गणाय छे. अमुक मुदते आवे छे [illegible]छो उतरी गया पछी दरदी पोतानुं कामकाज कर्या करे छे. प्रथम टाढ वाइने [illegible]ावे छे. अथवा टाढ वाया विना गरमी वधी जइ आवे छे अथवा परसेवो वळी [illegible]छी टाढ वाइ ताव चडे छे. टाढ वाइने आवता तावमां प्रथम दरदीने टाढ [illegible]ावा मांडे छे, तडके जवानुं मन करे छे, अगर गोदडां ओढी सुइ जाय छे. टाढ [illegible]ोछी थये सखत ताव तपे छे. गरमी वधीने आवता तावमां प्रथम माथुं पकडाय [illegible] दुःखे छे. चेरो लाल थइ जाय छे. परसेवो वळीने आवता तावमां परसेवो [illegible]णो वळी ताव सखत चडे छे, शरीर बहु तुटे छे, शरीरनां दरेक अवयव सखत [illegible]ने जलदी दाब्या कर्यानी दरदी बुमो पाडे छे. आ ताव उतर्या पछी लांबो वखत [illegible]थानो दुःखावो रहे छे. एक दिवस छोडी एक दिवस आवे ते एकाहिक एकां-[illegible]ीयो, बे दिवस छोडी एक दिवस आवे ते तृतीयक–तरीयो. त्रण दिवस छोडी [illegible]थे दिवसे आवे ते चातुर्थिक–चोथीयो ताव कहेवाय छे. आ बधा टाढीया [illegible]वना अर्थात् विषमज्वरनां भेद छे. ज्वरेन्द्रवज्र रसनी २–४ गोळी पाणी साथे [illegible]पवो, अथवा महाज्वरांकुशनी २–६ गोळी आखा दिवसमां पाणी साथे आपवी।

जिरक वटी—जीरुं तथा गोळनी गोळी बणियाबोर जेवडी करवी. ताव [illegible]ववाने समये देवी. ताव जाय।

जातीफलादि ज्वरहर चूर्ण—जायफळ, जावंत्री, अकलकरो, भारंगी

लवींग दरेक तोलो १, साकर तोला ९. ए सर्व खांडी सवार सांज ०॥ थी १ तोलो पाणी साथे देवाथी एकांत्रो, तरीयो वगेरे समस्त ताव जाय।

जातीफलादि शीतज्वर गोळी—आयफळ तोलो १, लवींग तोला १।, धतूरानां बी लीलां तोला २ मां वाटी गोळो चणोठी प्रमाणे वाळवो. २-३ गोळी दुधथी गळाववी. पथ्य-खीचडो घी नाखेली खवराववी टाढीया मुदतीया ताव उतरे।

निंबबीजादि शीतज्वर चूर्ण—लींबोळीना मींज तोलो १, मरी तो. १, संचल तो. १ खांडी फाकी तोलो ०। पाणी साथे गळाववी तो शीतज्वर टळे।

तपतीहर गोळी—एलची, तज, तमालपत्र, द्राक्ष, पीपर, साकर, जेठीमध, खजुर, मधमां गोळी चणियाबोर जेवडी वाळवी २-४ देवी बधा ताव, तपती तपारो टळे. जडबुद्धिवाळो सेवन करे तो विद्या आवडे।

पित्तज्वर—धाणा, चण्या, सुंठ, मोथ, वाळो, बालबीली समभागे क्वाथ पित्तज्वरे पावो।

ज्वरहर मस्तक लेप—करियातुं, मीठुं, सुंठ, उपलेट, वाळो, बधां समभागे वाटी माथे ताळवे लेप करवो. बधा ताव जाय।

सर्वज्वरहर चूर्ण—अजमोद, हरडे, हींग, चित्रो, सुंठ, साजीखार, जवखार, बे जातनां जीरां, पीपर, त्रिफला, संचळ, सिंधव एनुं चूर्ण सर्वज्वरमां ०। थी ०॥ तोलो पाणी साथे देवुं।

ज्वरभद्र क्वाथ—सुंठ, पटोल, कचुरो, जवासो, लींबडानी छाल, करियातुं, अरडुसो, हरदळ, रींगणीनां मूळ सममात्रा क्वाथ शीतज्वर जाय।

पित्तज्वर चूर्ण—अघेडानां पंचांगनी राख, समुद्रफळ चूर्ण समभागे खांडी सवार सांज बे बे आनीभार वासी पाणी साथे देवी. दिवस ३ मां एकांतरो बेळा ज्वर जाय।

पगनी कळतरनो लेप—हीराबोळ, आसंध, मेथी पाणीमां पलाळी ए त्रणे परती उनां करी चोपडवाथी कळतर मटे।

लघुचंदनादि पित्तज्वरे क्वाथ—सुखड, कडु, काळीपाठ, करियातुं, वाळो, खडसलीयो समभागे क्वाथ पित्तज्वर जाय।

कारेली अंजन वटी—काळां मरीने कारेलीना पाननां रसमां मरदी गोळी मरी प्रमाणे करवी. आंखे अंजन करवुं. टाढीयो ताव जाय।

ताव धूणी—लाकडीया गंधकनी धूणी देवी. ताव जाय।

तपतीहर क्वाथ—लिंबडाछाल ५, रतांजलि ५, पदमख ५, गळो ५, चण्या ५, वाळो ५, मोथ ५, करियातुं ५, अरडुसो ५ खेरसार ५ बधां खांडी २ तोलानो क्वाथ, बधा ताव जाय।

षोडशांग चूर्ण—करियातुं, कडु, गळो, पटोल, पीपर, सुंठ, धमासो, पीपरीमूळ, त्रायमांण, हरडे, रींगणी बे, खडसलीयो, मोथ, सुंठ, पोखरमूळ, ए चूर्ण सर्वज्वरमां उष्ण जळ साथे पावुं ।

ज्वरे अंजन वटी—अगर तोला ०॥, मनशील तो. ०॥, सींधव तो. ०॥, एकत्र करी तेलथी गोळी वाळवी. तेलथी अंजन करवुं सघळा ताव जाय ।

सर्वज्वरहर चूर्ण—सुंठ, रींगणी, पोकरमूळ, काकडासींगी, कडु, कचुरो, गळोसत्व, आंबला, दारुहलदर, पीपर, मरी, कुलंजन, त्रायमाण, खडसलीयो, अगर, धमासो, कडाछाल, वंसलोचन, तज, अतिवीस, देवदार, मोथ, पटोल, अजमो, चित्रो, हरडे, पीपरीमूळ ए दरेक तोला २॥, करियातुं शेर ०॥ साथे खांडी चूर्ण करवुं. नित्य तोलो ०। थी ०॥ पाणी साथे देवुं. आठ जातना ताव जाय. पथ्य योग्य राखवुं ।

विषमज्वरारि क्वाथ—अरडुसी, गरमाळो. हरडे, बेडां, आमळां, सुंठ, पीपर, मरी, अगथीयानां पान, सरसडानी छाल, कडु, करियातुं, अघेडो, भांगरो, समभागे खांडवा. १–२ तोलानो उकाळो के फांट करी पावो ।

रुग्दाहसन्निपात टाइफोइड ताव.

२१ के २८ दिवसनो ताव.

कारण—गंदा, सडेलां शाकभाजी के फ्रुट खावाथी, गंदा कुवाना पाणी पीवाथी, मकानने आसपास मेज के मळमूत्रत्याग थतो होवाथी, वर्षाऋतुमां रजस्वला (पुर आवेली) नदोनां पाणी पीवाथी, बरफ के सरबत बहु पीवाथी आ ताव आवे छे. आहारविहारनी अनियमितताने लीधे सामान्य ताव पण आ तावमां फेरवाइ जाय छे. आ ताव मोटे भागे जुवान अने बाळकोनेज आवे छे. ३८ वर्ष पछीनाने कवचितज आवे छे युरोपमां आनो उपद्रव वधु छे. हिंदुस्तान जेवा गरम देशोमां तेनो थोडो भय होय छे ।

चिन्हो—आ ताव आवतांज दरदी नबळो थइ जाय छे, शरीरना अवयवोमां वेदना, माथानो दुःखावो, मंदाग्नि धुजारो, टाढ वावो, झाडा, उलटो, नाडीना धबकारा एक मिनिटमां १२० थी १४० सुधी थाय छे, भुख तदन नाश पामे छे, जीभपर पड बाजे छे, ताव सांजे १०४ थी १०५ सुधी वधे छे अने सवारे १०१ थी १०२ सुधी रहे छे, पेशाब थोडो थाय छे, रात्रे उंघ जुज आवे छे. बेननी पेठे पड्यो रहे छे. झाडो पातळो उतरे छे, आंतरडामां जमणी बाजुए दुःखावो अने गडगड अवाज थाय छे. ७–१२ दिवसमां शरीर पर गुलाबी रंगनी फोडलीओ उपडे छे. अने पछी करमाइ जाय छे. त्रीजे अठवाडीये तावनां लक्षण ओछां थइ आराम थवा मांडे छे. आमां घणा दरदीओने सन्निपात थइ जाय छे. सन्निपात, दांतपर काळां छालां पडे, होठ फाटी लोही नीकळे, बेभानी वधे, ताव जोरथी आवे, फीकी मोटी थाय, नाकमांथी के झाडामांथी लोही पडे, आंकडी आवे अने ताव सवारे १०५ अने दिवसना बीजा वखतमां १०७ डीग्री उपर होय

तो दरदी बचे नहीं. घणीवार आ ताव साथे झाडा, मरडा, लोहीना झाडा, आंतरडामां क्षत पडवां, बरल लीवर वधवां, फेफसांनो सोजो वगेरे पण जणाय छे घणाखरा दरदीओ त्रीजा अठवाडियामो मरण पामे छे. भयंकर दाह-बळतरा थाय, भयंकर तरस लागे, श्वास, बकवाद, अरुचि, भ्रम, मोह, पीडा थाय, हांसडी, हडपची अने ओडयमां गळामां पीडा थाय, आ तावमां वात पित्त कफमांथी जे दोषनी अधिकता होय तेनां चिन्ह वधु जणाय।

उशिरादि क्वाथ—वाळो, चंदन, काळा वाळानां मूळ, द्राक्ष, आमळां पीतपापडो समभागे खांडी उकाळी ठंडो करी मध के साकर नाखो पावुं. दशांग लेपना भुकाने दहींमां वाटी शरीरे खरड करवो, ठंडा पाणीये घीने सो वखत धोइ तेमां घसेली सुखड मेळवी शरीरे चोपडवुं. गायनी छासमां कपडुं भींजावी शरीर उपर वींटाळवुं माथे बरफ के शेवाळ मुकवो. महापित्तांतक अथवा रत्नगिरी रस बबे रती द्राक्ष धाणा खडसलीयाना पलाळेला पाणी साथे दिवसमां ३-४ वखत आपवुं।

पथ्यापथ्य—दरदीने शुद्ध हवा अजवाळा तथा सूर्यनो तडको पडतो होय तेवां मकानमां राखवो. पण ते वधां दरदीना शरीरने सीधा न अडे ए ध्यानमां राखवुं. दरदी पासे बहारथी जोवा आवनारानो घोंघाट न करवो. पासे बहारना माणसोने आववा देवा नहीं. पहेरवानां कपडां अने बिछानुं हरवखत बदलाववुं. माथुं बहु तपे तो गुलाबजळनां पोतां के बरफनी पोटली मुकाववां. १५-२१ दिवस पछी दरदी खोराक मागे तोज खोराक आपवो. पराणे आपवो नहीं. खोराक आपवो पडे त्यारे मगनुं के तुवेरनुं ओसामण अने गाळेला चोखा काफी चा थोडा आपवा. ताव उतरी गया पछी ज दुध चालु करवुं. थता झाडा उलटी अटकाववा नहीं. चालु दवानी योजनामां ते थोडा ओछा थाय एवो फेरफार करवो. लोही पडे, उंघ आवती होय के वीजा जे जे उपद्रव जणाता होय ते माटे तावनी साथे ते ते उपद्रवनी योजना करवी. तेमां थता उपद्रवना खास उपचार करवा नहीं. दरदी कफ काढी शकतो न होय तो बीजा माणसे दरदीना मोढामांथी कपडाना कटका वडे लुइ लइ लेवो. प्राणदायी रस २-४ गोळी मृतसंजीवनी सुरा साथे अथवा आदुरस साथे आपवी।

कोइ पण सन्निपात ज्वरमां के बीजा तावमां जीभ सुकाती होय तो धराखने मधमां वाटी तेमां जरा घी मेळवी जीभे चोपडवुं।

ग्रन्थिकादि क्वाथ—पीपरीमूळ, इंद्रजव, देवदार, गुगळ, वावडींग, भारंगी, सुंठ, पीपर, मरी, चित्रो, कायफळ, पुष्कळमूळ, रास्ना, हरडे, भोरींगणी, अजमोद, नगोड, करियातुं, खोरासानी वज, चवक, पहाडमूळ बधां समभागे खांडी राखवां. ४ तोला भुकामां सोळगणुं पाणी मुकी अष्टमांश रहे एटले गाळी लइ शीशीमां भरवुं. दिवसमां ३-४ वखत पावुं. बधा सन्निपात, न्युमोनिया, बेशुद्धि, शीत, बकवादने मटाडे छे. तथा शूळ, आफरो, विद्रधि, कफना वायुनो संधीवानां दरद, सुवारोग एटलां दरदमां पण तात्कालिक काम करे छे।

प्रलापक सन्निपात, टाइफस फीवर.

चौद दिवसनो ताव,

कम्पप्रलापपरितापनशीर्षपीडाप्रौढप्रभावपवमानपरोन्यचिंता ।
प्रज्ञाप्रणाशविकलैः प्रचुरप्रवादः क्षिप्रं प्रयाति पितृलोकप्रदं प्रलापी ॥

कारण—भेजवाळी जगोमां रहेवाथी, गंदी जगानी वधु वखत हवा लीधाथी गंदा पायखानामां जवाथी, गीच वस्तीथी आ ताव वृद्ध, जुवान वधारे लागु पडे छे. तथा २१ दिवसना तावमांनां घणां कारणोथी लागु पडे छे अने तेने मळतांज चिन्हो होय छे।

चिन्हो—आ तावथी २-३ दिवसमां दरदी नबळो पडे छे. माथामां सखत दुखावो, टाढ आवे, शरीरना अवयवो तुटे, वंत्राय, आंख लाल, आंखमांथी पाणी पडे, ताव वधे, आंखो वींचाती जाय, मों उघाडुं रहे, उतर आपी शके नहीं, डचकां खाय, वहेरास वधे, जीभपर काळुं पड बाझे, होठ मों दांतपर काळा फोडलां पडे, तावनी गरमी ६-७ दिवसे १०४-१०५ सुधी चडे, नाडीना धबकारा ११०-१२० सुधी जाय ४-५ दिवसे हथेळी, छाती, पेट के पेडुपर काळा रंगनी फोडलीयो के चांभा देखाय, नाक के आंतरडां वाटे घणीवार लोही पडे आमां वातपित्त कफ भयंकर रीते कोपे छे तेथी दरदी बहु बके छे. एकदम उठी भागे छे. शरीर धुजे छे, पीडा थाय छे, पडी जाय छे, दाह अने बेशुद्धि थाय छे, आ असाध्य छे. आनी मुदत १४ दिवसनी छे।

तगरादि क्वाथ- तगर खडसलीयो, मोथ, कडु, आसोंध, ब्राह्मी, चंदन, दशमूळ, शंखावळी, वाळो, द्राक्ष, धाणा, गरमाळो वर्धा सरखेभागे खांडी २ तोलानो उकाळो करी ६-७ टाणा पावो माथे पीडुं पोतु मुकवुं अथवा बरफ लगाडवो. महापित्तांतक रस के रत्नगिरि रस बबे रती मध अने तुलसी रस साथे देवो. सन्निपातहर नस्य सुंघाडवुं. दरदीने आश्वासननां वचन कहेनां शांति आपवी, काळोप्रसन्न रस आंजवो।

पथ्यापथ्य—आ ताव चेपी छे तेथी दरदीनुं एठुं कोइने खावा देवुं नहीं. तथा तेना मळमूत्र दूर फेंकाववां तेना सहवासथी अलग रहेवुं. दरदीने प्रकाश हवावाळा ओरडामां राखवो पण हवा तेना शरीरे अडवा देवी नहीं. कपडां, बिछानां हमेशां बदलवां. गादलां. गोदडां हमेशां सखत तडकामां नाखवां गुगळ लोबान, लींबडाना पान, घी, चोखा वगेरेनो धूप करवो. झाडा, मरडा, लोही, उलटी वगेरे जे जे चिन्ह जणाय ते माटे दवानी योजना करी उपचार करवो।

सन्निपात गजांकुश २-१२ रती आदुरस मधमां आपवो अथवा प्राणदायी रस के सन्निपात भैरव २-१२ रति तुळसीरस मधमां देवो उपर अग्निकुमारादि क्वाथ के शठ्यादि क्वाथ आपवो।

संधिक सन्निपात.

उथलो मारतो ताव परिवर्तिज्वर अथवा संधिक सन्निपात.

सात दिवसनो तथा पांच दिवसनो ताव.

कारण—दुकाळमां जेवो तेवो खोराक लेवाथी तथा दुकाळ उतर्ये पुष्कळ खोराक लेवाथी. गीच वस्तीने लीधे, गंदा पाणीथी, पेटमां बगाडो थवाने लीधे, तथा तेवां बीजां कारणोने लइ आ ताव आवे छे. सांधाओमां सोजा साथे पीडा सख्त थाय, कफ घणो नीकळे उंघ उडी जाय, खांसी आवे. आ दरद साध्य छे. आनी मुदत ५-७ दिवसनी छे।

चिन्हो—माथानो दुखावो, कमर अवयवोमां वेदना, तरस, टाढ, कंपारी, नबळाइ, माथुं वांसो अने सांधामां पीडा, ताव अणउतार, परसेवो आवी तुरत ताव चडे, गरमी १०४ १०६ सुधी, कमळो, शरीर पीळुं पडी जवु, जीभपर पीळुं तथा भुरुं पड बाजवुं, झाडो कबज, वरल लीवर वधवां, पांचमे सातमे दिवसे ताव उतरी जाय अने पाछो थोडा दिवसमां चडे, पाछो ४-५ दिवस रही उथलो मारे छे. सन्निपात भैरव दर एकेक कलाके एकेक रती आदुरस, मध साथे अथवा शठ्यादि क्वाथ साथे पावी।

शठ्यादि क्वाथ कचुरो, देवदार, हरडे, बेडां, आमळां, वरधारोमूळ रास्ना, सुंठ, गळो, शतावरी अने गुगळ बधां समभागे खांडी ४ तोलानो उकाळो करी पावो सन्निपात गजांकुश आदुरस अने तुलसी रस साथे बबे रती आपवो. महालाक्षादि तेल अथवा महानारायण तेल चोळवुं. महासुदर्शन चूर्ण, दशांग लेप अने आसोंधनो भुको त्रणे सरखे भागे मेळवी गौमूत्रमां के पाणीमां वाटी आखे शरीरे अवळी रुंवाडीये लेप-खरड करवो।

पथ्यापथ्य—शुद्ध हवा, प्रकाश तडको, गंदकी विनाना मकान, स्वच्छ कपडां बिछाना वापरवां, भुख लागे के खोराक मागे त्यारे मगनुं ओसामण भात आपवां. भुख न लागी होय त्यांसुधी लांघण करावावा. बधा तावमां पाणी उकाळी पावुं. लीलो सुको मेवो, भारे खोराक दुध कांजी वगेरे छोडवां. कडवां ओसडीयानी बाफ लेवी. झाडो बंध होय तो खुलासानी अने वधु होय तो नियममां लाववानी योजना बीजां औषधो साथे करवी. जे जे उपद्रव जणाय ते माटे विचारवुं।

भुग्ननेत्र सन्निपात.

फेफसांनो सोजो, भुग्ननेत्र सन्निपात.

कारण—शरदीथी, चोमासामां नदीने ठंडे पाणीये बहु नहावाथी, तावनो उपद्रव चालतो होय त्यारे बादी करे तेवा पदार्थो बहु खावाथी, पेटना घणा बगाड साथे ताव चडे अने तेमां दुध राब कांजी वगेरे खोराक आप्या करवाथी भेजवाळी जग्यामां रहेवाथी उधरस सळेखम जेवुं दरद होय तेमां ताव लागु पडवाथी, बाळकोने उधरस ससणी ओरी शीळी वराध वगेरे दरदोथी, वरसादमां बहु भींजावाथी वगेरे कारणे आ ताव आवे छे. कोइपण कारणे आ ताव आवे

अने ते तावमां आहारविहार अने औषधनी संभाळ नहीं रहे तोपण आ दरद लागु पडे छे. अने तेमां पण ज्यारे दरदीने लांघण करावावानी खास जरुर होय छे त्यारे नबळो पडी जाशे एवी खोटी धास्तीने लइ बगडेली होजरीमां खोराक दुध कांजी पडवाथी कोठो वधु बगडी जइ फेफसां उपर सोजो करे छे।

भुग्ननेत्र सन्निपात—सादा तावमां योग्य सारवार नहीं थवाथी, औषध खोराक वगेरेनी संभाळ न रहेवाथी आ सन्निपात थइ जाय छे ते न्युमोनियाने मळतो छे. श्वास वधु चाले, उधरस आवे, छातीमां दुखे, नाडीनी गति उतावळी, माथुं दुखे, पेशाब ओछो, दस्त बंध, कोइने आंखो तणाय भ्रांमी थाय, घेन बकवाद कंप मद श्रवणेंद्रियनुं ओछुं ज्ञान, तांत बोले परसेवो आवे नहीं, कफ चीकणो फेफसांमा सोजो आ असाध्य गणाय छे. मुदत ८-१५ के २५ दिवसनी छे. महा-सुदर्शन चूर्णनो क्वाथ अथवा अर्कादि क्वाथ पावो. साथे सन्निपात भैरव आंजवो सुंघाडवो तथा आदुरस अने मधमां पीवरावो अथवा सन्निपातहर नस्य सुंघाडवुं. त्रिलोक्य चिंतामणी रस बबे रति तुळसीरस, आदुरस अने मधमां पावो आंजवो अने नाकमां टीपां नाखवां।

चिन्हो—आ दरद लागु पडवानुं होय छे ते पहेलां ५ ७ दिवस थयां ताव लागु पडी गयेलो होय छे. अने आ दरद लागु पडवानुं होय त्यारे ए ताव साथे उधरस, छातीमां दुखावो, नाडीनी गति उतावळी, माथानो दुखावो पेशाब थोडो अने लाल, दस्त बंध अथवा बहु थोडा, बकवाद श्वासनी वधु गति, छातीमां के श्वासनी साथे कफनुं के तांतनुं बोलवुं वगेरे चिन्ह जणाय छे तावनुं जोर १०४-१०५ के तेथी पण वधु डीग्री थाय छे. दरदनुं जोर ओछुं थवानुं होय तो परसेवो वळे छे. पण ज्यांसुधी दरद जोरमां होय त्यांसुधी परसेवो वळतो नथी. केटलाक दरदीओने परसेवो वळी जइ पाछो एकदम ताव एवोने एवो भराइ जाय छे. केटलाकने उधरस होय छे अने केटलाकने बीलकुल होती नथी. कफ चिकणो रातो झांगावाळो. श्वास ३०-४० के वधु वखत चाले छे नाकमां फरणां उचां नीचां थाय छे. नाडीना धबकारा १२०-१४० सुधी थाय छे शरू-आतमां वधु धबकारा थाय छे पण दरदी क्षीण थतो जाय छे तेम नाडीनी गति ओछी क्षीण अने नबळी थाय छे फेफसांना जे भागमां सोजो थयो होय त्यां पीडा शूळ थाय छे. बन्ने फेफसांमा सोजो होय तो तावनुं जोर वधे छे. दरद वधी जाय तो १५-२० दिवसमां मृत्यु पामे छे. जो दरद मटवानुं होय तो १०-१२ दिवस पछी सारुं थवा मांडे छे।

पथ्यापथ्य—हवा प्रकाश खुल्लां होय तेवा ओरडामां दरदीने सुवराववो पण पवन तेना शरीरने न लागे ए संभाळ राखवी. भेज ठंडक के शरदी लागे तेवा ओरडामां सुवरावववो नहीं. तेना ओरडामां छाणानी सगडी रात दिवस राख्या करवी. आ दरदमांथी दरदीने बचाववा माटे प्रथम तेनुं पेट तपासवुं. जो दरदी शुद्धिमां होय तो पछी जोवुं के पेटमां पेडुमां कयांय दुखे छे. भुख छे के नहीं तथा ओडकार कठणपणुं अने नाडीनी गति उपरथी पेटमां बगाड केटलो छे ते तपासी लेवुं. अने ते साथे चोकस समजवुं के पेटना बगाड विना इंग्रेजी डाक्टरो

ना मत प्रमाणे मात्र जंतुओथी आ दरद थतुं नथी. आ दरद तेवा जंतुओथी थयेलुं मानी लइए तो पण ते जंतुओ पेटमां सडेला मळथीज थयेला होय छे. एटले जंतुओ दरद उपजावता नथी पण पेटनो बगाडो जंतुओने पेदा करे छे. माटे प्रथम ए मळनो नाश करवाना उपाय योजवा. प्रथम तो दरदीने ८-१५ दि लांघण कराववी. ताजा गरम करी ठारेला पाणी सिवाय तेना शरीरमां कांइपण नाखवु नहीं दुध अने कांजी तो ते दरद माटे झेरज छे एम समजी लेवुं. लांघण वज करी शके एम जणाय त्यारे मात्र मगना ओसामणनी छुट देवी. अने प्रथम-थीज उपचारमां कहेला उकाळामांथी कोइपण उकाळो चालु करवो अने ते उका-ळाने लीधेज जे मळ नीकळे ते निकळवा देवो. ग्वास जुलाबनी दवा आपवी नहीं उकाळो साथे बीजां ओषधो पण व्याधि स्वरुप प्रमाणे योग्य मात्राथी आपवां पण मुख्य संभाळ राखवानी छे ते खोराकनी छे. जो पेटमां वगर जरुर-नो खोराक पडशे तो तावनुं जोर अने फेफसांनो सोजो वधशे अने वाजी हाथमां रहेशे नहीं. खोराक नहीं आपवाथी दरदीमां निर्बळता आवशे ते दुर करी शकाशे पण खोराक आपवाथी दरदी मरणना भयमां जशे. माटे जेम बने तेम वधु लांघण करावचा तरफ लक्ष्य राखवुं. छातीपर धावळीनुं फाळीयुं के ग्वादिनो पाटो वींटो सेवाय तेवो शेक गोटाथी के शीशाथी कर्या करवो. छातीये एन्टीफ्लोजीस्टीन मिश्र-लेप चोपडी रु दाववु. महामृत्युंजय रस दर एकेक कलाके आदुरस, मध साथे अथवा महासुदर्शनना क्वाथ साथे देवो.

कंठकुब्ज सन्निपात.

फेफसांना पडनो वरम

कारण—आ एक जातनो सन्निपातज्वर छे. आना उपचार उपर भणावेला सन्निपातज्वर प्रमाणे करवा. खुल्लो ठंडो पवन, वरसाद, शरदी करनारा आहार विहार, बरफ, शरबत, आइस्क्रीम, उजागरो, वरसादनां पाणी, औषधनी बीन काळजी. पेटना वगाडने लीधे आ ताव आवे छे. सामान्य शरदीना के बीजा ताव-वाळाने "कांइ पेटमां जाशे नहीं तो उभुं केम थवाशे" एवी लागतावळगताओनी मान्यताने लीधे दुध, कांजी अने खोराक आपी वगाडामां उमेरो करे छे त्यारे आ दरद लागु पडे छे।

चिन्ह—श्वास लेती वखते काइ सोयुं खोसतुं होय, चीरातुं होय कपातुं होय तेवी पिडा छातीमां थाय छे. तेम उधरस खाती वखते पण तेवुं जणाय छे. जे बाजु दुखावो होय ते बाजु दरदी सुइ शकतो नथी. बेइ फेफसांमां दरद होय तो चीतो सुइ रहे छे. पेशाब थोडो लाल उतरे छे. आमांथी दरदी बेठो थया पछी तेने छातीनुं दरद घणुं करी रही जाय छे. अने घणांने तेमांथी क्षय रोग लागु पडे छे।

पथ्यापथ्य—छातिये शेक करवो. पेटमां बगाड वादी के सडो छे के नहीं ते तपासवुं जरुर जणाय तेटली लांघण करावबी. खोराक आपवानी जरुर जणाय त्यारे मगनुं ओसामण, बाजराना लोटनी गोळवाळी के खारी पातळी राब,

गाळेला चोखा प आपवुं पण दुध के कांजी बालकुल आपवां नहीं. देशी ऊननां कपडां पहेराववां. महालाक्षादि तेल वगेरे चोळवां. झाडो लाववो होय तो विश्वतापहरण ३-५ गोळी मधमां चटाडी उपर महासुदर्शननो उकाळो पावो. रोगीना ओरडामां छाणानी सगडी रात दिवस सळगाववी. कपडां पथारी स्वच्छ राखवां. सुकी हवावाळा ओरडामां खाटला उपर दरदीने सुवराववो. दरदोनां चिन्हो प्रमाणे उपचार करवा. सर्व व्याधिहर मिश्रलेप छातीये चोपडी ने दाबवुं. कालीप्रसाद रस दर एकेक कलाके १ थी २ गोळी लसणरस अने मध साथे अथवा आदुरस साथे अथवा तेज आसव साथे देवी ।

कंठकुब्ज सन्निपात—गळुं रोकडो मूळाथी रोकाइ गयुं होय एम लागे श्वास घणो चडे. बके, अरुचि, दाह थाय. आखा शरीरमां पीडा थाय, तरस लागे हांसडी झकडाय जाय. माथामां पीडा थाय, मुंझाय. शरीर अने माथुं कंपे छे आ कष्टसाध्य छे आनी मुदत १३ दिवसनी छे ।

त्रिफळादि क्वाथ—हरडे, बेडां, आमळां, सुंठ, पीपर, मरी, मोथ, कडु, इंद्रजव, अरडुसी, हळदर समभागे खांडी फांट अथवा क्वाथ करी पावो. अभयादि के अर्कादि क्वाथ पावो. गळा उपर बहारना भागमां दशांग अने अश्वगंधा समभागे खांडी गोमूत्रमां वाटी चोपडवुं. सन्निपात भैरव दिवसमां ४-५ वखत दवो रति महासुदर्शनना फांट साथे के गोमूत्र साथे आपवो. माहेश्वर धूप करवो ।

बधा ताव अने सन्निपातज्वरमां सामान्य पथ्यापथ्य.

लांघण—आमाशयमां आमेलां मळ वगाड विना ताव आवतो नथी. जठराग्नि प्रदीप्त होय त्यांसुधी ताव आवतो नथी. एटले जठराग्नि प्रदीप्त करवा अने आमने पकाववा लांघणनी जरुर छे. ताव आववानां चिन्हो म्हेज जणातां अथवा पेटमां पाचन नथी थयुं ए जणातांज लांघण एक बे करी नाखे तो जरुर तावथी बची जाय. लांघणनुं प्रमाण ए छे के कडकडीने भुख लागे एटले लांघणनी मर्यादा पुरी थइ समजवी. भुख सख्त लागे एटले थोडो हळवो खोराक देवो एम बे चार टंक कर्या पछी जठराग्नि प्रदीप्त थइ गरिष्ठ खोराकने पण पचावशे. ताव चडी गयो होय पछी ते ताव ओछा के वधु गमे तेवा जोरमां होय पण प्रथम दरदीनुं पेट तपासवुं. बोजो होय, भुख न होय, वायु भराइ गयो होय, मोळ आवती होय, उलटी थती होय के झाडा होय बीजां गमे ते चिन्ह जणातां होय पण पेटमां बादी केटली छे ते नक्की करी २-४ के ८ दिवस सुधी लांघण करावी शकाय छे. १२ दिवस सुधी पाणी पर रहेला दरदीओ दाक्तरोए छोडी दीघेला सारा थया छे. लांघणनी मर्यादा दरदीनी प्रकृति उपर आधार राखे छे. पण तावबाळाने ३-४ लांघण तो जरुर करावबी जोइए. जेम जेम लांघण लेवाशे तेम ताव उतरतो जाशे. लांघण चालु होय त्यारे अथवा बे त्रण दिवस रमीने जुलाबनी दवा आपवी. अभयादि क्वाथ, ज्वरांतक विरेचननी गोळी के विश्वतापहरण आपवो दरदोने ४-५ झाडा थवा जोइए. लांघण चालती होय त्यारे उकाळी ठारेलुं पाणीज आपवुं. लांघण जोइए तेटली थइ गया पछी मगनुं ओसामण शरु करवुं.

लांघण दरम्यान दरदी कांइ खावा मागे तो चा काफी जेवुं प्रवाही आपवुं हालमां दाक्तरो आयुर्वेदने अनुसरी छासनी पाछळ ठीक मंडया छे पण छास क्यां देवी क्यां नहीं ते बाबत तेओये वैदोने पुछवुं जोइए. तावमां सन्निपात न्युमोनियामां के गमे तेवी स्थितिमां छास दीर्घ राखे छे ते योग्य नथी. छास घणे भागे पेटनां अने आंतरडाना दरदमां अपाय छे अने फायदो करे छे।

दुध— दाक्तरो अने तेमने अनुसरनाराओ तावनी शरुआतथी दुध अने कांजी आपवा मांडे छे. पण ताव ए एक पेटना बगाडनुं अने होजरी-आमाशयमां बगडेला आमनुं चिन्ह छे तेमां दुध आपवाथी आमनो एकदम वधारो थइ तावनुं जोर पण वधे छे. ए वात ते लोकोने गळे उतरती नथी, अने तावथी माणस नबळो थइ जशे माटे बळ टकावी राखवा दुध तो आपवुंज जोइए एवी भुल भरेली मान्यता राखे छे. पण दुध कांजी आपवाथी दरदी सादा तावमांथी भयंकर स्थिति सन्निपात न्युमोनिया तरफ खेंचाय छे. घरनां माणसो अज्ञ होय छे. तेमां वैदोनी एवीज समज होय छे के ' कांइ पेटमां जातुं नथी. बे त्रण दिवस थयां तो कोळीयो अन्न के थोडुं दुध मांड पेटमां गयुं हशे कांक पेटमां जाय तो बेठुं थवाय अन्नसमा प्राण छे " पण ते बिचारां जाणतां नथी होतां के हद उपरांत पेटमां भर्याकर्युं तेनुं आ प्रायश्चित भोगवे छे अने मुर्खाइथी खा खा कर्युं एटले हवे थोडा दिवस तेनी होजरी विश्रांति मागे छे दुध अने कांजी ए तावना दरदीने भयंकर झेर समान छे. दरदी भुख्यो थाय अने बहु भुख लागी छे एम वैद्यनी के घरना माणसनी खात्री थाय त्यारे शरुआतमां मरी मसालो नाखेलुं मगनुं ओसामण पावुं. एटले जुलाब नहीं आव्यो होय छतां ते जुलाबनुं काम करशे अने जामेला मळना गांठा बहार काढशे. बे त्रण दिवस पछी गाळेला चोखा के खीचडीमां दुध नाखी कुचा काढीने आपवुं. ताव तदन उतरी जाय अने भुख बराबर लागवा मांडे त्यारे शक्तिने माटे नबळाइ मटाडवा माटे खुशीथी विना संकोचे दुध कांजी वगेरे आपवुं ।

गरमी—तावमां तरस बहु लागती होय, गरमी बहु थती होय, पेटमां के छातीमां बळतुं होय तो काळी धराख तोला २॥, सुका धाणा तोलो १, खड-सलीयो तोलो १, साकर तोला २॥ साथे खांडी तेमां उकाळी ठारेलुं पाणी तोला ४० नाखी हलावी तेमांथी चमची चमची पाया करवुं. तावनी गरमी, दाह, उलटी, झाडा तथा गमे तेवां पित्ताधिक्यनां चिन्होमां आ प्रवाही शामक गुणकारी छे।

बरफ—दरदीने गमे तेटली गरमी थती होय पण तेने मगज माथुं ताळवा सिवाय बीजे कयांय बरफ बांधवो के चोपडवो नहीं के बरफनुं पाणी पण पावुं नहीं हालनी दाक्तरी पद्धतिमां बरफनो उपचार बहु दर्या पडयो छे. ताव आव्यो के गृहस्थोना घरमां मण अधमण बरफ आवीज पडे छे अने गरमी जो १०४ डीग्री उपर जाय तो दरदीने बरफमां भारी दे छे, घणा किस्सामां थर्मामोटर गरमी खोटी बतावतुं होय छे. तेथी फायदाने बदले दरदीना हृदय फेफसां उपर सन्निपातना चिन्हो लागु पडे छे माटे ताव १०२ थी वधु होय तोज बरफनी पोटली माथे फेरववी ते सिवाय बरफनी बीलकुल जरुर नथी. माथुं सखत गरम

थातुं होय तो माटलाना ठंडा पाणीमां मीठुं के नवसार नाखी पोतां बदलतां मुक्या करवां. गरमी शांत थाय एटले बंध करवुं. फरी गरमी वधी जाय तो तेम करवुं. तावनी गरमी ओछी करवा माटे महापित्तांतक, पित्तभंजी, रत्नगिरि के जुना गोळनुं पाणी पावुं जेथी जरुर जेटलो परसेवो वळी गरमी ओछी थशे. ज्यां बरफ न मळे त्यां बरफने बदले नदीनो सेवाळ वापर्यो होय तो चाले।

पाणी—ताववाळाने पाणी कुवानुं के नदीनुं उकाळीने पावुं पाणी त्रांबाना वासणमां ठारवुं वधु टंडु जोइए तो त्रांबाना वासणमांथी थोडुं थोडुं माटीनी माटलीमां भरतुं जवुं पण बाकीनुं पाणी तो त्रांबाना वासणमांज भरी राखवुं।

शीतांग सन्निपात.

तावथी अवळी स्थिति-शैत्य, शरीर टाढुं पडी जवुं.

कारण-चिन्ह—शरदी ठंडो पवन लागवो, वरसादमां भींजावुं, बहु झाडो, बहु लोही पडवुं, मधुमेह वगेरे दरदोनी नबळाइ, कोर्बोलिक जेवां झेरनुं पेटमां जवुं, भयंकर दरदने लीधे मरण पूर्वेनी अवस्था सन्निपात ताव उतारवा माटे परसेवानी दवा देवी वगेरे कारणे शरीर टाढुं पडी जाय छे।

शीतांग सन्निपात— शरीर बरफ जेवुं ठंडु थइ जाय, श्वास, खांसी, हेडकी, बेशुद्धि, धुज, बकवाद, ग्लानि बेचेनी, कफवायुनो प्रकोप, दाह, उलटी, शरीरनो दुखावो, पीडा, त्रोड, साद बदली जवो वगेरे चिन्हो जणाय छे. आ असाध्य सन्निपात गणाय छे. आनी मुदत १५ दिवसनी छे।

हिरण्यगर्भ, सप्तामृत पर्पटी, सन्निपात भैरव अथवा प्राणदायी रस योग्य मात्राथी योग्य अनुपानथी देवा. आकरी ब्रांडी, मृतसंजीवनी सुरा, मृगमदासव वगेरे वखतो वखत पावां शरीरे चोळवां. आदुनो रस २-५ के १० तोला सुधी पावो. आखे शरीरे सुठनो भुको घसवो।

अर्कादि क्वाथ—आंकडानां मूळनी छाल, जीरुं, पीपर, मरी, भारंगी, भोरींगणी मूळ, पुष्कर मूळ दरेक अकेक तोलो अने सुंठ बे तोला साथे खांडी ९ पडीकां करवां त्रण त्रण कलाकने अंतरे अकेक पडीकुं गोमूत्रमां उकाळी पावुं. उद्वर्तन वांझकंटोलीनो कंद, कळथी, पीपर, वज, कायफळ, काळीजीरी, करियातुं, कडु, चित्रो, वाळो, हरडे सरखे भागे खांडी कोरेकोरुं शरीरे चोळवुं. सन्निपातभैरव दर अकेक कलाके दबे रति मात्रा, आदुरस अने तुळसीरसमां पावी. तळवे छेको दइ हिरण्यगर्भनो घसारो घसवो. मृगमदासव के तीव्रमद्य शरीरे चोळवुं. त्रैलोक्यचिंतामणि रस आदुरस साथे पावो तथा मोहांधसूर्य के उन्मतरस आंजवो।

उपर जणावेला शिवाय आयुर्वेदमां नीचेना सन्निपातज्वर पण वर्णवेल छे. तेनां चिन्हो प्रमाणे बुद्धि पहोंचाडी उपचार करवा।

१ तंद्रिक सन्निपात—घेन घणुं, तरश लागे, झाडा थाय, श्वास वधु चडे, खांसी आवे, तपारो बहु होय, गळामां सोजो, कफ अने खजवाळ आवे, जीभ काळी पडे, बेचेनी, काने बहेराश, दाह थाय, आमां त्रणे दोषनो प्रकोप होय छे. आमां ताव चडतो उतरतो रहे १०५ सुधी चडे आ कष्टसाध्य छे आनी मुदत २५ दिवसनी छे आमां कफप्रधान वायु मध्यम पित्तन्यून होय छे।

क्षुद्रादि क्वाथ—भोरींगणी मूळ, गळो, पुष्करमूळ, सुंठ, हरडे सम भागे खांडी ५ तोला भुकानो काढो करी पावो. सुंठ, पीपर, मरीना भुकाने अगथीयानां पाननां रसमां मेळवी नस्य देवुं. सिंधालुण, कपुर, मनशीळ, पीपर अने मध समभागे मेळवी घोडानी लादना रसमां कालवी अंजन करवुं अथवा सन्निपातहर अंजन आंजवुं. रोमवेध रस ताळवे छेको दइ २-४ रति घसवो. अचिंत्य शक्तिरस तोलो ०। आदु अने डुंगळीना रसमां मेळवी शरीरे खरड करवो तथा थोडुं पावुं. त्रिलोक्य चिंतामणि रस बबे रति आदु रसमां पावो तथा आंजवो।

२ **रक्तष्ठीवी सन्निपात**—थुंकमां लोही देखाय. लोही जेवां के काळां चकरडां शरीर पर थाय आंखो लाल थाय, तरश, अरुचि, उलटी, श्वास, झाडा, चकरी आवे, आफरो चडे, बेशुद्धि थाय, दरदी पडी जाय, हेडकी, शरीरमां पीडा थाय. आ असाध्य छे आमां पित्त अधिक वायु मध्यम कफ न्यून होय छे ताव सख्त जोरमां रहे आनी मुदत १० दिवसनी छे।

शालिपादि क्वाथ—रोंस सुगंधी घांस, धमासो, जवासो, अरडुसी, खडशलीयो, पटोलो, कडु अने साकर समभागे खांडवां. ५ तोलानो उकाळो करी पावो महापित्तांतक रत्नगिरी के महाचंद्रकळा रस दर त्रण त्रण कलाके उपला उकाळा साथे बबे रति आपवो.

३ **अभिन्यास सन्निपात**— त्रणे दोष सरखी रीते कोपे, मोह, चैतन्य रहितपणुं, हिडकला श्वास घणो, दाह, मोढुं चिकणुं, जठराग्नि मंद, शक्ति तद्दन हराइ जाय अने बोली शके नहीं. आनी मुदत १५ दिवसनी छे।

कृष्णादि क्वाथ- काकडाशींगी, भारंगी, हरडे, जीरुं, पीपर, करियातुं, पीतपापडो, देवदार, वज, कुष्ठ, धमासो, कायफळ, सुंठ मोथ, धाणा, कडु, इंद्रजव, काळीपाठ, नगोडवी गजपीपर अघेडाना मूळ पीपरीमूळ, चित्रो, इंद्रामणीनां मूळ, गरमाळो लींबडाना छाल वावची वावडींग, हळदर दारुहळदर, अजमा, अजमोद समभागे खांडी ४ तोलानो उकाळो करी आदुरस अने हींगनी भुकी साथे पावो। महास्वच्छंद नृपंचे पाणीमां वाटी गरम करी शरीरे खरड करवो. अभिन्यासमां दरदीने सबाका नीकळे, एकदम नवळो थइ जाय, अति कष्टे मरण पामी शके आनी मुदत २० दिवसनी छे।

४ **जिह्वक सन्निपात**—आमां जीभ कठण कांटाशी छवाइ जाय, बीलकुल बोली शके नहीं गळी शके नहीं बळनो नाश थाय श्वास, खांसो अने तपारो सखत होय आ कष्ट साध्य गणाय छे. आमां कफ प्रधान वायु मध्यम पित्त न्यून होय छे आनी मुदत १६ दिवसनी छे।

करियातादि लेपन—करियातुं अकलकरो कुलींजन, कचूरो, पीपर समभागे खांडी बीजोराना रसमां मेळवी जीभ उपर चोपडवुं. क्षुद्रादि क्वाथ भोरींगणी मूळ सुंठ पुष्करमूळ गळो ब्राह्मी वज, तुळसी, भारंगी, अरडुसी, [illegible] [illegible] [illegible] समभागे खांडवां ४ तोलानो उकाळो करी पावो. अचिंत्यशक्ति अथवा हिरण्यगर्भ लाल मध आदुरसमां मेळवी बबे रति पावो।

५ अंतक सन्निपात—विसामा विना माथुं धुणाव्या करे, उधरस आवे आखे शरीरे पीडा थाय, हेडकी श्वास दाह मोह अने घणो तपारो थाय विह्वळता, अव्यवस्थित बकवा करे. आ असाध्य छे आमां कफप्रधान वायुमध्यम पित्तन्यून होय छे आनी मुदत १० दिवसनी छे।

योगराज क्वाथ—सुंठ, धाणा, भारंगी, लींबडो, त्रिफळा, जेठीमध, वळदाणा मूळ, साकर, कडु, पटोळ, पद्मकाष्ट, रतांजळी, मोथ, गजपीपर, गरमाळो, करियातुं, गळो, दशमूळ, भोरींगणी समभागे खांडी उकाळो करी ०। पा कलाके पावो. तथा पाणीमां मेंदा जेवो वाटी आखे शरीरे खरड करवो महासुदर्शन चूर्ण, दशांग लेप अश्वगंधा समभागे मेळवी गौमूत्रमां वाटी गरम करी खरड करवो. हिरण्यगर्भ अथवा सूचिकाभरण ताळवे छेको दइ घसवो. आंखे आंजवो. नाकमां सुंघाडवो. आ असाध्य छे मृत्युंजयनो जप, रुद्राभिषेक अने शांतिकर्म कराववुं।

६ चित्तभ्रम सन्निपात—घडीकमां गाय नाचे, हसे बके, खराब गीते जुवे मुंझाय, दाह थाय, भय पामे आ कष्टसाध्य छे आमां वातप्रधान पित्तमध्यम कफन्यून होय छे आनी मुदत ११ दिवसनी छे।

मृद्वीकादि क्वाथ—द्राक्ष, देवदार, कडु, मोथ, आमळां, गळो, हरडे, गरमाळो, करियातुं, पीतपापडो, पडवळ समभागे खांडी उकाळी पावुं. अगथीयाना पान के अंतरछाल, गोळ, सुंठ अने पीपरने वाटी लुबदी करी तेनो रस नाकमां नाखवो. सन्निपातभैरव दिवसमां ३ ४ वखत वधे रति महासुदर्शनना क्वाथ साथे आपवो. हिरण्यगर्भ रस आदुरसमां घसी आंजवो. महामृत्युंजय रस वधे रति अभिन्यासादि के अर्कादि क्वाथमां आपवो।

७ कर्णिक सन्निपात—कानना मूळमां तीव्र पीडाकारी सोजो थाय, व्यथा थाय, गळुं जकडाय जाय, काने बहेराश आवे, श्वास चडे, बके, परसेवो वळे, मुंझाय, बळतरा-दाह थाय, आमां वातप्रधान पित्त कफ समान होय छे आ कष्टसाध्य छे. आनी मुदत १० थी ९० दिवसनी छे,

निशादि लेप—हळदर, इंद्रामणांमूळ, हरडे, सींधालुण, दारुहळदर, इंगोरीयाना मूळ, आकडानुं दुध समभागे मेळवी लेप करवो. दशांग अने आंबोधनो भुको समभागे पाणीमां के गौमूत्रमां वाटी लेप सोजा पर करवो. सर्व पीडाहर सिंधलेप चोपडी उपर रु दाबी शेक करवो. महासुदर्शनने फांट करी पावो. महासुदर्शन, कोडामारी, समुद्रफळ, माळकांकणी, खडभरभी समभागे खांडी खरड करवो. अघोर नृसिंह वधे रति दिवसमां ४ वखत महासुदर्शनना फांट साथे आपवो।

इन्फलुएन्झा

तन्द्रिक सन्निपात

तन्द्रातीव ततस्तृषातिसरणं श्वासोधिकः कासरक्
सन्तप्तातितनुर्गले श्वयथुना सार्धं च कण्ठूकफः
सुश्यामा रसना क्लमः श्रवणयोर्मान्द्यं च दाहस्तथा
यत्र स्यात्स हि तन्द्रिको निगदितो दोषत्रयोत्थो ज्वरः

कारण—आ चेपी उडतो रोग छे मरकी करतां पण आनो फेलावो एकदम आखा देशमां थइ जतां वार लागती नथी. गमे तेवा सुघड गाममां पण आनो फेलावो थाय छे. देशमां ज्यारे आनो वा चालतो होय त्यारे काचुं कोरुं खानार, बजारनी मोठाइ पर मिष्टान पर प्रेम धरावनार, जठराग्निने जे ते खाइ बगाडनार, कडवाणी हमेशां सेवन नही करनार, कपडां घर आसपासनी जग्या स्वच्छ नही राखनार, खुली हवा अने प्रकाश नही मेळवनार माणस आनो भोग जलदी थाय छे।

चिन्ह—तन्द्रिक सन्निपात नामनो ताव आयुर्वेदमां कह्यो छे तेनां घणां खरां लक्षणो आ तावमां मळतां आवे छे. लागु पडतां सळखम थाय छे. माथुं वांसो अने सांधामां सखत दुखावो थाय छे. शरुआतमां थोडी टाढ वाइ ताव भराय छे. छींक उधरस वधवा मांडे छे. छातीमां फेफसांमां अने गळामां सोजो थाय. हृदय दिवसे दिवसे नबळुं पडवा मांडे छे. श्वासनळीनो सोजो वधे तो मुश्केलीये श्वास लइ शके छे पछी सन्निपात न्युमोनिया थइ मृत्यु पामे छे।

पथ्यापथ्य—दरदीने शारीरिक श्रम न पडे तेम करवुं. शरुआतमांज दाक्तरो अने तेनी पद्धतिने अनुसरनारा वैद्यो दुध के साबुचोखानो कांजी आपे छे ते दरदीने मृत्यु तरफ वधु लइ जाय छे एम समजवुं. गामना महाजन के परोपकार करनारां मंडळ तरफथी कांजीनां के दुधनां तपेलां भरी गरीबोने वहेंचवा नीकळी पडे छे ते पुण्यने बदले पाप करे छे. कारण शाकर अने दुध इन्फलुएन्झाना दरदीने विष रुप छे अर्थात दरदने भयंकर रुप लेतुं करवा माटे ते खोराक मदद रुप थइ पडे छे. आ दरद थताज दरदी नबळो पडी जाय छे ए खरुं परंतु ते निर्बळता आववानुं कारण हृदय फेफसां उपर दरदनो हुमलो छे. दुध कांजी के पौष्टिक खोराकथी हृदय फेफसांमां थयेली असर नाबुद नथी थती परंतु होजरीमां बोजो थवाथी वधु निर्बळता आवे छे. शरुआतमां ताव वगेरे चिन्ह जणाय के तुरत दरदीने खोराक लेतो अटकाववो अने लांघण कराववी तेथी तावनुं जोर वधशे नहीं अने ताव जेम ओछो जोर करशे तेम हृदय अने फेफसां उपर ओछी असर थशे. दरदी भुख्यो रही न शके एवी भुख लागे त्यारे मगनुं ओसामण आपवुं. दरद लागु पडया पछी त्रीजे के चोथे दिवसेथी आठ दिवस सुधी ओसामण शरु राखवुं ने पछी चार दिवस सुधी गाळेला भात अने ओसामण आपवुं कुल १२ दिवस पछी दुधमां जरा सुंठ मरी पीपर लवींगनो भुको नाखी

गरम करीने दुध थोडुं थोडुं आपवुं. दुधमां थोडो गोल नाखवो अने ते न भावे तो थोडी जातनी आवती शाकर नाखवी. छाती उपर कपडुं ढांको उपर गोटाथी शेक करवो. झाडां कपडां पहेरावां हमेशां बदलवां. एन्टीफ्लोजीस्टीन मिश्रलेप छातीये पडखामां चोपडी उपर रु दाबी पाटो बांधवो. छातीये महालाक्षादि तेल चोळवुं दस्त लाववा माटे ज्वरांतक विरेचननी गोळी १–३ उना पाणीमां आपवी ताव उतारवा के अटकाववा रसशाळानुं न्युक्वीनाईन आपवुं तेथी परसेवो वळी ताव मोळो पडशे. पेटमां जामेलो बगाड निकळशे. २–३ झाडा थइ जाय तो वधु झाडा कराववा नहीं. शठयादि क्वाथ, अभयादि क्वाथ, काळाजीरीनो क्वाथ २ तोला भुकाने कलइवाळा वासणमां नाखी उकळतुं पाणी तोला १० तेमां रेडी १० मिनिट ढांकी राखवुं पछी गाळी शीशी भरवी २ वखत गरम करी बीजी कोइ दवा साथे अथवा एकलुं पावुं।

मरकी–प्लेग

प्लेग-मरकी गांठियो ताव ग्रन्थिक सन्निपात

कारण—गंदकी, दुर्गंध अंधारुं, सूर्यना प्रकाशनी ताण उंदरनुं वधवुं वगेरे कारणे तथा दैवी प्रकोपथी आ दरद उद्भवे छे. एकादा माणसने लागु थया पछी उपला साधनो भेळां थाय तो झपाटामां वधे छे. गटर खाळुं, गंदकी फळीयामां आखो दिवस रहेतुं कचकाण एवी जग्याये प्लेगना जंतुओ एकदम फेलाइ जाय छे अने फेलाया पछी तेमां स्वच्छ मकानमां रहेनारा पण सपडाय छे. रात्रे अने अंधारामां ते वधु फेलाय छे. उंदर खीलखोडा वगेरेने जलदी लागु पडे छे अने ते एक ठेकाणेथी अनेक ठेकाणे भागे छे एटले तेनी जातीमां फेलाइ ते द्वारा आखा गाममां प्रसरी जाय छे. नबळां, दुबळां, रोगी के वृद्धने आ दरद ओछुं लागु पडे पण छे युवान स्त्री पुरुषोने घणे भागे थाय छे आ रोग शीयाळा चोमासामां शरु थयो होय तो भयंकर रीते फाटी नीकळे छे उनाळामां ओछुं जोर होय छे प्लेगवाळानी सारवार करनारा, खबर काढवा आवनारा थोडा पण महेल्लामां रहेनाराने घणी वखत प्लेग लागु पडे छे अने घणी वखत बची जाय छे पण सगर्भा स्त्री कदी पण बचती नथी, अर्थात् सगर्भा स्त्रीने एकदम लागु पडी जाय छे. बीजां मोटे भागे बची जाय छे, पण सगर्भा स्त्रीओ रोगी तो मरे छे घणी वखत १२ कलाकमां १, २, ४ के वधुमां वधु २० दिवसे मरण पामे छे. पण केस लंबाय अने सारवार सारी थाय तो बचवानी आशा रहे छे. गळुं, बगल साथळनुं सळ एवे ठेकाणे गांठ देखाय छे. जखमवाळो भाग खुल्लो रहेवाथी श्वासोश्वास द्वारे, प्लेगना जंतुथी दूषित अनाज शाक भाजी वगेरे खावाथी, प्लेगना जंतुओ शरीरमां दाखल थाय छे. खुल्ली हवा तथा सूर्यनो ताप प्रकाश दाखल थतां होय तेवा मकानमां प्लेगना दरदीनी सारवार करनाराओने प्लेग लागु पडतो नथी. पण गंदा गोबरां, भेजवाळां हवा अजवाळा विनाना मकानमां रहेला दरदीनी सारवार करनारो माणस पण प्लेगथी सपडाय छे प्लेगवाळा दरदीना सहवासथी, प्लेगवाळी जग्यामां रहेलां अन्न खावाथी प्लेगनो उपद्रव चालतो होय

ते गामनां शाक भाजी के दाणा दुणी खावाथी, उघाडां वासी टाढां अन्नपानथी मरकी लागु पडे छे. ते वखते आखुं गाम खाली करी वगडामां रह्या सिवाय बंध पडती नथी ।

चिन्हो—दरदी चिंतातुर, बेचेन, भुखनो नाश, स्नायु सांधा अकडावा, हृदयना धबकारा वधवा, गांठ थवानी जगाए धीमो दुखावो शरु थवो, मोढुं फीकुं, आंखो निस्तेज, उलटी, उबका, छातीमां मुंझवण, माथानो दुखावो वगेरे जणाय छे. टाढ वाइ ताव चडे अने १०२–१०७ डीग्री सुधी वधे नाडी उतावळी अनियमित, श्वास दर मिनिटे २०–५० वखत चाले, चामडी सुकी, परसेवो अटके आंखो लाल चोळ चळकती कीकी मोटी थाय. वहेरास वधे, पेटमां बळतरा, तरश बहु लागे. जीभनो वचलो भाग सफेद चाक जेवो, जीभनी अणी तथा आसपासनो भाग लाल चोळ, वधु वखत जतां जीभ फाटी काळी पडे, नखकोरां उपर काळी छारी, तंद्रा निद्रा वधे, घेन जणाय, जांगमां बगलमां नीचला जडबानी अणीमां गरदन उपर गांठो देखाय, ताव आव्या पछी अथवा पहेलां गांठ देखाय गांठ पाके परु थाय तो दरदी वची जाय दरदी वचवानो होय तो गांठ थया पछी ताव नरम पडे. गांठ पाकवा उपर आवे, भान आववा मांडे, तंद्रा निद्रा ओछी थवा मांडे, जीभमां अमी आवी धीमे धीमे साफ थती जाय आंखोनी रताश घटवा मांडे. गांठ पाकवा मांडे अने ताव मोळो पडे तो आराम थाय. पण गांठ पाकवा पर न जणाय अने तावनुं जोर ओछुं न थाय तो दरदी घणे भागे २ ३ दिवसमां मरण पामे छे. जो सात दिवस निकळी जाय तो वचो जवानी पुरी आशा राखवी ।

पथ्यापथ्य—खुल्लां हवा प्रकाशवाळां मकानमां दरदीने राखवो. गंदां मकानो, गंदा पायखानां, आजुबाजुनी गंदी जगा वगेरे छोडवां, लींबडांना पान, गुगळ, लोबान, चोखा, घी वगेरेनो धूप करवो दरदीनुं बिछानुं कपडां साफ राखवां तेना मळमूत्र भोंमां डाटवां स्वच्छता खुब राखवी. सारवार करनारे पेटमां भुख राखवी. बादी थवा देवी नहीं. मकानमां चुनो छंटावी स्वच्छ करवुं. दरदीने मेडी उपर राखवो ए वधु सारुं. मकानमां तडको आववा देवो. एक माणसने प्लेग लागु पडे के तुरत तेने शुद्ध हवा प्रकाशवाळी जगाए खसेडवो. खेतरमां के गाम बहार झुंपडामां लइ जवो ए वधु ठीक. पाणी उकाळीने पावुं. दरदीने प्रारंभमां ७ दिवस सुधी खोराक आपवो नहीं केवळ पाणी भरज राखवो जरुर जणाय तो सोडा के मीठा लींबुनो रस पावो. दुध कांजी बिलकुल आपवी नहीं, पेट खाली थाय अने खोराक मागे तो ८ मा दिवसथी मगना ओसामण सिवाय कांइपण खोराक देवो नहीं. दरदीने बहु बळतरा दाह के शोष पडतो होय तो धगधग धाणा खडसलीयो अने साकरनुं पाणी अथवा गोळनुं के मधनुं पाणी थोडुं थोडुं पावुं. पहेलेज दिवसे ३-६ इच्छाभेदी गोळी आपी देवी एटले सखत जुलाब लागी प्लेगना जंतु नीकळी जाशे, मरी जाशे अने तावनुं जोर ओछुं थाशे, गांठ बेसी जाशे. दरदीनी सारवार करनारे ब्राह्मीतेल. लक्ष्मीविलास तेल, महानारायण तेल के महाराजप्रसारणि तेल शरीरे चोळी हमेशां गरम पाणीये न्हावुं. पेटमां बादी न थाय तेवो थोडो हळवो खोराक लेवो. अजीर्ण थवा देवुं नहीं पाणी ताजुं पीवुं स्वच्छ कपडां पहेरवां ।

महाज्वरांकुश—पारद, गंधक, वछनाग प्रत्येक ४ चार तोला, धतुरानां बी १२ तोला. दारुडीनां मूळनो भुको २४ तोला, लींबुरसनी १ भावना देवी. मात्रा २-४ रति, आदुनो अथवा तुळसीना पाननो रस अने मध साथे आपवाथी टाढीयो, त्रिदोषनो, एकांतरो, तरीयो, चोथीयो वगेरे ताव उतरे. चणोठी जेवडी गोळी पण वळाय छे ।

मल्लज्वरांकुश—चुनाना पाणीमां १ दिवस दोलायंत्रथी पकावेलो सोमल सुकावी घुंटी राखवो. ताव न होय त्यारे अटकाववा माटे ०। थी ०॥ रति मध साथे आपवो ।

कफाग्नि रस—पारद, गंधक, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, सुंठ, पीपर, मरी, जीरुं, शाजीरुं, कचुरो, काकडाशींगी, हींग शेकेली, सींधालुण, जवखार, टंकण, जावंत्री, अजमोद, वावडींग, काम्मोंद्रो, कायफळ, कनकबीज बधां सरखे भागे लइ खांडी तुळसी, आदु, बीलीनां पान, अरडुसी, कासोंद्रो अने भोरींगणी नां डोडवां प्रत्येकना रसनी अकेक भावना देवी. मात्रा २-६ रति मध अने आदुना रस साथे कफज्वरमां तथा शरदी प्रधान बधां दरदमां अपाय छे. उधरस, सळखम, माथुं भारे वगेरेमां पण फायदो करे छे ।

त्रिभुवनकीर्ति रस—हींगळो, वछनाग, सुंठ, पीपर, मरी, टंकण, पीपरीमूळ समभागे लइ तुळशी, आदु अने धतुराना पाननां रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-४ गोळी नीचेना द्राक्षादि, पर्पटादि के पाठादि उकाळा साथे आपवी. पित्तज्वर तथा बधा तावमां उत्तम छे ।

पित्ताग्नि रस—पारद, गंधक, टंकण, मरी, कचुरो, गळो, साकर, एलची, कपुरकाचली, कडाछाल, रौप्यभस्म, प्रवालपिष्टि प्रत्येक तोला ५, मोतीपिष्टी तोला २ साथे मेळवी गळो, काळी धराख, वरीयाळी अने खडसलीयाना उकाळानी अकेक भावना दइ घुंटी राखवुं. मात्रा १-३ रति आदुरस अने मधमां अथवा सुंठ अने जुना गोळना १०० वखत गाळेला पाणी साथे आपवाथी पित्त गरमीनो ताव उतरे छे ।

ज्वरांतक विरेचन रस-जुलाब—पारद, गंधक, सुंठ, पीपर, मरी, दारुडीनां मूळ, कडु, करीयातुं, सींधालुण, कुवानां फुल बधां सरखेभागे अने बधांनी बराबर शुद्ध नेपाळानां बी नाखी शेदरडीना रसनी भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-४ गोळी नवशेका पाणीमां देवा. जे तावमां झाडो कबज होय, कोठामां मळ दबदबो जणातो होय तेमां आ गोळी देवाथी झाडा थइ बगाड नीकळी ताव उतरे छे ।

ज्वरघ्नी गुटिका—पारद, सरसीया तेलमां शोधेलो गंधक, पळीयो, पीपर, हरडे, अकलकरो प्रत्येक तोला १०, इंद्रामणानां डोडवां तोला ४० बधांने साथे मेळवी इंद्रामणानां पंचांगना रस के उकाळामां घुंटी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-४ गोळी गळोना रस साथे आपवी. बधा ताव मटे, वायुनो ताव उतरे ।

त्रिपुरभैरव—वछनाग १ भाग, सुंठ २ भाग, पीपर ३ भाग, मरी ४ भाग, ताम्रभस्म ५ भाग, हिंगळो ६ भाग साथे मेळवी आदुरसमां घुंटी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी, वायुना तावमां उत्तम छे तथा बीजा तावने मटाडे छे ।

विश्वतापहरण रस—पारद, गंधक, हरडे, पीपर, आकडाना मूळ झेर-कोचलां, नेपाळानां बी, कडु नसोतर समभागे लइ खांडी धतुराना पानना रस साथे घुंटा चणोठी जेवडी गोळा वाळवी. मात्रा २-३ गोळी आदुरस साथे देवी. भुख लागे त्यारे मगनुं ओसामण, भात खावो आपवा. नवा ताव उतरे अटके बधा तावमां अपाय ।

ज्वरकाळभैरव रस-जुलाब—पारद, गंधक, ताम्रभस्म, सुंठ, पीपर, मरी, हरडे बेडां, आमळां, कडु नसोतर, हरताळ, वज, पीतपोपडो. दंतीमूळ, दारुडीनां मूळ आकडानां मूळ टंकण, वछनाग बधां सरखेभागे अने बधांनी बराबर शुद्ध नेपाळो साथे मेळवी भुंगळीया थोरना रसनी तथा चमारदुधलीना रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-३ गोळी नवशेका पाणी साथे आपवी. तरुणज्वरमां तथा शूळ, गुल्म, पांडु, हरस, कृमि, अजीर्ण, आमवा, पेटनां दरद पमां उत्तम छे. तरुणज्वर नवा ताव उतरे, बधा तावमां उत्तम ।

तावनुं चूर्ण—अतिविष, हळदर, आंबाहळदर देवदार, वज, काळोपाठ, चित्रो, भोरींगणोनां डोडवां, इंद्रामणानां डोडवां, सिंधालुण, सुठ, पीपर, मरी हरडे, कचुरो मरगवानां बी, कडु, अजमा, गळो, खडसलीयो, काळीजोरी बधां सरखे-भागे अने बधांनी बराबर करियातुं लेवुं. मात्रा ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण नवशेका पाणी साथे आपवुं. अथवा १० तोला पाणीमां रात्रे पलाळी सवारे गाळी पावुं. बधा तावमां अकसीर छे ।

ज्वरेंद्र वज्र रस—साबरसींग भस्म, हिंगळो, वछनाग, कनकबीज, पीपर, सुंठ, मरी. पीपरीमूळ. प्रत्येक तोला ५ चुनाना पाणीमां पकवेलो सोमल तोला २, हरताळ शुद्ध तोलो १॥, टंकण तोला ४, कांकचीयानां मींज तोला १०, बधां साथे खांडी कपडे चाळी कारेलानां पंचांगना रसनी, दारुडीना अने तुळशीना रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-४ गोळी ९ तुळशीना पान साथे खवरावची. बधी जातना टाढीयो तथा मुदतीया ताव मटे छे ।

प्राणदायी रस—पारद, गंधक, वछनाग, हरताळभस्म, ताम्रभस्म, हिंगळो अभ्रकभस्म प्रत्येक तोला ५ पांच, कळगारी तोला १०, नेपाळानां बी तोला २॥, सुंठ, पीपर, मरी, अघेडानां मूळ, चित्रो, देवदार, कनकबीज प्रत्येक ४ चार तोला लइ खांडी तलवणीनो रस, तुळशीनो रस, आदुनो रस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुको राखवो. मात्रा २-४ गोळी मध अने आदु रस साथे हरकोइ प्रकारनां सन्निपात, न्युमोनिया वगेरेमां अपाय छे, तात्कोलिक काम करे छे ।

सन्निपात भैरव—गंधक अने पारद तोला ३ त्रण लइ कजली करवी. रौप्यभस्म. अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, वंगभस्म, नागभस्म, लोहभस्म प्रत्येक तोलो १ बधांने साथे मेळवी सरगवो, अरणी, सुंठ, बीली, तांजळजो प्रत्येकनां रसमां ३ त्रण कलाक घुंटी गोळो वाळी कपडामां वींटी तेने काचनी शीशीमां उपर नीचे मीठुं अने वचमां गोळो पम राखवुं पछी ते शीशीने वालुकायंत्रमां मुकी ६ कलाक

पकाववी पछी तेमांथी औषध काढी घुंटी तेमां १ तोलो प्रवाळपिष्टि अने ०॥ तो. वछनाग मेळवी पछी मळी शके तो सर्पविषनी १ भावना देवी. (ते न मळे तो मत्स्य पित्तनी के अजापित्तनी १ भावना देवी) पछी तगर, नुशळी, जटामांसी, दारुडी, नेतर, पीपर, गळो, तमालपत्र, एलचा, चित्रो, तुळशी, सुवादाणा, कुकडवेल, धतुरो, अगथीयो, गोरखमुंडी, जुइ, मींढाळ प्रत्येकना रसनी अकेक भावना देवी. ते न बने तो बधां ओसडीयां साथे खांडी तेना उकाळानी १८ भावना दइ सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा २ रतिभार, बाजोरानो रस तोलो ०।, १६ तीखानां दाणा अने आदुरस साथे आपवाथी बधी जातना सन्निपात, न्युमोनिया, प्ल्युरसी, वातपित्तज्वर, कफवातज्वर वगेरे जातना भयंकर ताव उतरे छे।

महामृत्युंजय रस—गंधक तोला ८ पारद तोला ४, टंकण तोला ३, ताम्रभस्म तो. ०॥ अभ्रकभस्म तो. २, वछनाग तो. १॥, रौप्यभस्म तथा सोमलभस्म प्रत्येक तोलो १, सुवर्णभस्म तो ०॥, सुंठ, पीपर, मरी, हरडे, देवदार, कडु, गुगळ, गळो कनकबीज, काळीपाठ वाळो, दारुडीमूळ प्रत्येक तोलो २ बे नाखो खांडी मेळवी आदु, तुळशी, धतुरानां पान, भोरींगणीनां डोडवां, इंद्रामणानां डोडवां प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ मग जेवडी गोळी वाळवी. १३ जातना सन्निपात गमे ते जातना न्युमोनिया, तथा हरकोइ तावने उतारवामां तथा अटकाववामां अकसीर छे।

कालिप्रमन्न रस—पारद, गंधक, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, पूर्णचंद्रोदय, मल्लचंद्रोदय प्रत्येक तोला २, मरी, सुंठ, पीपरीमूळ, अघेडानांमूळ, बीलीमूळ, अरणीनी छाल, कासोंदरानां पान, अगथीयानां पान, सरगवानी छाल प्रत्येक तो. ४ चार लइ साथे मेळवी भोरींगणीनां डोडवानां रसनी अने दारुडोनां पंचांगनां रसनी अकेक भावना दइ चणा जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३ १६ गोळी सुधी कोइपण जातना सन्निपातना दर्दीने लसणनो रस अने मध साथे अपाय छे. ताळवे छेको दइ आनी भुकी घसवी. आंखमां आंजवुं सुंघाडवुं. सर्पना झेरमां पण ए प्रमाणे उपयोग थाय छे. उपर ग्रन्थिकादि क्वाथ पावामां आवे तो वधु सारुं. भयंकर सन्निपातमांथी माणस बेठो थाय।

समामृत पर्पटी रस—पारद तोला ४, गंधक तो. ८, लोहभस्म, ताम्रभस्म, रौप्यभस्म अभ्रकभस्म प्रत्येक तोला २, सुवर्णनो वरख तोलो १ बधां विधिवत् साथे मेळवी पकावी केळनां पानमां ढाळी तांदळजो, भोरींगणी, दारुडी, कुंवार, तुळशी, आदु, धतुरो प्रत्येकनी अकेक भावना दइ भुको करी राखवो. मात्रा २-४ रति, लसणनो रस, आदुरस अने मधमां आपवी. शरीर टाढुं पडी गयुं होय, शीत वळतां होय, मरणनी तैयारी जेवी स्थिति होय तेमां आराम करे छे।

सर्वज्वरहरी वटी—वछनाग, पारो, हडताळ, गंधक, सुंठ, पीपर, मरी, हरडे, बेडां, आमळां, टंकण, हींगळो, चित्रो, कनकबीज बधां सरखे भागे लइ प्रथम वछनाग अने मरीने साथे खांडी पछी पारा गंधकनी कज्जली मेळववी. पछी बीजां वसाणानो भुको मेळवी कनकपत्र रसनी सात भावना दइ मग जेवडी गोळीयो करवी. वायुना, पित्तना, कफना, टाढीया, एकांतरा, तरीया, सन्निपातना तथा ताव उतरे अटके. अनुपान विचार करीने आपवुं।

ज्वरनागेश्वर रस—पारद, गंधक, वछनाग, मरी हरताळ, टंकण, सुंठ, पीपर प्रत्येक अकेक तोलो, अभ्रकभस्म ताम्रभस्म, माक्षिकभस्म, नेपाळानां बी प्रत्येक अर्धो तोलो, कोडीभस्म, शंखभस्म, शुक्तिभस्म, हरडे प्रत्येक १॥ तोलो, कनकबीज तो २, काळीपाठ, अतिविष, देवदार, मोरींगणीनां डोडवां, इंद्रामणानां डोडवां, चित्रो, करियातुं, नगोड, अरडुसी अघेडो प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी करवी दर त्रण कलाके अकेक गोळी नवशेका पाणीथी आपवी इन्फ्लुअन्झा द्विदोषना ताव, त्रिदोष सन्निपातज्वर-न्युमोनिया वायुना, पित्तना, कफना ताव, हृदयना रोगमां तथा अनुपानभेदथी सर्व रोगमां अपाय छे।

अमरजीवन रस—पारद तोला ४ गंधक तोला ८, मनशील तो. ५, वछनाग तो. ४, हींगळो तो. ३, कांतलोहभस्म, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, लोहभस्म, शुद्ध हरताळ, माक्षिकभस्म प्रत्येक तोला २॥ बधां साथे मेळवी कडु, चित्रो, देवदार हरडे नगोड प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ भूधरपुटमां ६ रतल छाणाथी पकाववुं. पछी चित्रना उकाळामां घुंटी सुकावी शीशी भरवो. मात्रा २-४ रति सुंठ अने खारेकना घसारा साथे अथवा आदु अने तुळशीना रस साथे आपवाथी १३ प्रकारना सन्निपात तथा बधा ताव उतरे।

ज्वरमातृका चूर्ण—मोरींगणीनां मूळ, गावसुकडानां मूळ, इंद्रामणानां मूळ, दारुडीनां मूळ कडु, करियातुं, गळो, सुठ मोथ, मरी, अरडुसी, अरणीनां मूळ, उभी मोरींगणीनां मूळ, बीलीनां पान, सिंधालुण बधां सरखे भागे लइ खांडी बारीक चूर्ण करवुं अथवा अधकचरां करी राखवां. ०। थी १ तोलो उना पाणी साथे फकाववुं अथवा उकाळी पावुं।

त्रिदोषहर प्रयोग—आंकडानां मूळ, करियातुं, वज, देवदार वावडींग, सुंठ, पीपर, मरी, धमासो, चित्रो, अतिविषनी कळी, भांगरो, रास्ना, नगोड, कड, हरडे, बेठी मोरींगणीनां मूळ, कायफळ सरखे भागे खांडवां. ०॥ थी १ तोलो भुको उकाळी पावु. इन्फ्लुअन्झा, द्विदोषजन्य ताव, त्रिदोषज्वर, न्युमोनिया तथा तेनी साथे जणाता उपद्रवोनुं शमन थाय छे. आ साथे उपर जणावेला रसोमांथी कोइ पक अपाय तो वधु सारुं।

चंडेश्वर रस—पारद, गंधक, वछनाग, ताम्रभस्म बधां सरखे भागे लइ आदुना रसनी ७ अने नगोडना रसनी ७ भावना दइ सुकावी घुंटी राखवुं मात्रा १ ३ रति मधना के गोळना पाणीमां आपवी. बधा तावने उतारे तथा अटकावे. मरकीमां त्रण त्रण कलाके पकथी त्रण रतिने आशरे आपवाथी आराम थाय छे. उपर तिक्तादि क्वाथनो उकाळो पावो।

मृत्युशासन रस- पारद तोला ८, गंधक तोला १६, मनशिळ, वछनाग, हिंगळो, कांतलोहभस्म, ताम्रभस्म, हरताळ शुद्ध, काळांमरी, सरगवानां बी सिंधालुण नेपाळानां बी, अभ्रकभस्म प्रत्येक तोला ४ चार बधांने विधिसर साथे मेळवी आदु तुळशी धतुरो, लुणी खाटी, काळीपाठ अने चमारदुधली प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ सुकावी १-३ रति मरकीना दरदीने केळना थडना रस साथे आपवाथी आराम थाय छे कोइपण जातना सन्निपातमां तथा बधा तावमां अपाय छे।

हिरण्यगर्भनी गोळी—शुद्ध पारद तोला ४, हीरानी भस्म पक्वभानी-भार, सोनानो वरख तोला २, रौप्यभस्म अथवा वरख तोला ३, ताम्रभस्म तो ३, मोतीनी पिष्टी तोला ६, प्रवालनी पिष्टी तो. ७, अभ्रकभस्म तो. ८, मनशीळभस्म तोला ४, लोहभस्म तो. ८, गंधक तो. १२, टंकणखार तो. २, रससिंदुर तो. २, शंखपिष्टी तो. ४ बधां साथे मेळवी नगोड, लींबु अने कुंवारना रसमां बबे दिवस घुंटी तोला तोलानी गोळीयो के सोगठी बनावी रेशमी कपडामां अकेकने बांधी गंधकना भुकाथी भरेला कुलडामां नांखी ते कुलडाने वालुकायंत्रमां पकाववो. गंधक रस थइ जाय एटले नीचे उतारी ठरी जाय एटले गोळीयो काढी घसी वापरवी. बधी जातना ताव उतारवामां, अटकाववामां, सन्निपातनी बेभानी के बकवादमां तथा दरदी छेल्ली स्थितिए अवाचक रही गयो होय तो तेने जगाडवा मां उपयोगी छे. मरकीमां सवार सांज बबे रति जेटलो घसारो आदुरस, तुळशी-रस अने मध मेळवी आपवो न्युमोनिया, प्ल्युरसी, टाइफोइड के बीजा कष्टसाध्य के असाध्य सन्निपातज्वरमां तात्कालिक काम करे छे तेम श्वास, दम, क्षय, जुनी उधरस, छातीनां दरद, फेफसानां दरद जीर्णज्वर के हरकोइ हठीलां दरदमां आनो घसारो आदु के तुळशीना रसमां मध नाखी अपाय छे ।

प्लेगनाशिनी-प्लेगप्रतिबंधक वटी- पारद तोला ८, गंधक तो १२, लोहभस्म तो. ६, अभ्रकभस्म तो. ६, ताम्रभस्म तो. ६, हरडे, बेडां, आमळां, शिलाजीत, गुगळ, कांकचीयानां मींज आसोंध कडाछाल, रास्ना चित्रो, इंद्रजव, करियातुं, कडाछाल, उपलेट प्रत्येक तोला ८ आठ, कडु तो. ४० साथे मेळवी खांडी नगोडना रसनी १, भांगराना रसनी १, लींबडाना पानना रसनी ३ भावना दइ ३ रतिभारनी गोळी वाळवी. मात्रा ४-८ गोळी नवशेका पाणी साथे अथवा केळना थांभलाना पाणी साथे दर बबे कलाके आपवाथी मरकीनो दरदी बचे छे. बधी जातना ताव आ गोळीथी अटके छे अने उतरे छे. मरकीनो उपद्रव चालतो होय त्यारे सेववाथी रक्षण मळे छे ।

निकनादि क्वाथ—कडु, करियातुं, पितपापडो, गळो कचुरो, रास्ना, पीपर पुष्करमूळ पाषाण, भोरींगणीनां मूळ, देवदार, हरडे, धमासो, भारंगी, बधां सरखे भागे खांडी तेमांथी १ तोला भुकामां ६० तो. पाणी मुकी चोथा भागनुं रहे एटले गाळी लइ दिवस रातमां ४ ५ वखत उपर जणावेला कोइपण रसनी मात्रा साथे अथवा एकलुं पावुं ।

प्लेगनी गांठनो लेप १—कायफळ, सुंठ, रास्ना, चित्रो हळदर, अरणीनां पान, गावसुकडानां डोडवां, देवदार, सरगवानी छाल बधां साथे पाणीमां वाटी पोटीस मुकवी. पाकी फुटी जशे ।

प्लेगनी गांठनो लेप २—आंकडानुं दुध, इंगोरीयानो गरभ, हळदर, इंद्रामणानां मूळ, सिंधालुण, देवदार, कुष्ठ, गोळ आंबाहळदर बधां साथे पाणीमां वाटी लेप करवो ।

प्लेगनी गांठनो लेप ३- सुंठ, अरणीनां मूळ, रास्ना बीजोरानां मूळ, चित्रो, दारुहळदर सरखे भागे खांडी पाणीमां वाटी गरम करी चोपडवुं.

उपरनो लेपथी गांठ पाकी फुटी जशे. केटलाकने बेसी जाय छे. लेप चोपडया पछी सारुं लागे तो शेक करवो पण दरदीने ठीक न लागे तो लेप उपर पाटो बांधी राखवो ।

उन्मत्तरस नस्य—प्लेगनो दरदी बेभान होय के घेनमां पडयो होय तो आ नस्य सुंघाडवुं. कागळनी भुंगळीमां भरी नाके राखी फुंक मारवी पारद गंधक. प्रत्येक ४ चार तोला अने मरी तो. ८ मेळवी धतुराना रसमां १ दिवस घुंटी सुकावी खरल करी राखवुं आ रस न्युमोनिया तथा बीजा सन्निपातज्वरमां पण सुंघाडाय छे. आ नस्य देवाथी ताव उतरी जाय छे ।

प्लेगहर अंजन—दरदी बेभान होय के घेनमां होय तो आंजवुं. नेपाळानां बीनां मींज तो. २, वछनाग, पीपरीमूळ अने हिंगळो प्रत्येक तो ८। साथे मेळवी लींबुना रसमां ७ दिवस घुंटी सुकावी भुकी राखवी प्लेगमां तथा बाजा बधा सन्निपातज्वरमां अंजाय छे तेथी शुद्धि आवे छे अने ताव मोळो पडे छे ।

प्लेगमांथी बचवा माटे- आरोग्यवर्धनी गोळी सवार सांज बबे पाणी साथे खावी अथवा प्लेगप्रतिबंधक गोळी टंके ३ पाणी साथे लेवी. महालाक्षादि तेल, लक्ष्मीविलास तेल के ब्राह्मीतेल चोळवुं ।

अपराजित धूप—गुगळ कुष्ठ पानडी सरसव वज, राळ, लींबडानां पान, आंकडानां पान, अगर, देवदार बधां सरखे भागे लइ खांडवां तेमां सोळमा भागनुं घी नाखवुं. आ धूप बधी जातना तावने उतारे तथा अटकावे दरदीनां श्वासोश्वासमां सुंघाडी जाय तेम करवुं. सवार सांज दरदीना ओरडामां धूप करवो प्लेगथी बचवा माटे आ धूप करवाथी हवा शुद्ध थइ प्लेगमांथी बची शकाय छे ।

तावनी गोळी—रायणबीज, लवींग, मनसल, पीपरीचूनो धतुराना पत्र नागरवेलीना रसमां गोळी मरी जेवडी करवी पछे तेलमां घसी आंखे आंजवी. एकांतरो, टाढीयो तथा कारण प्रमुख समस्त ताव जाय ।

सन्निपात गोळी—वछनाग मरी इद्रजव, सुंठ पीपर दरेक तोलो १ ए सर्वेने वाटी लींबुरसमां गोळी करवी गोळी १ देवी तथा अंजन करवुं, सन्निपात जाय ।

तावनी गोळी—सोमल तो. १, तीखां तो ९ तुळशीपाननां रसमां तथा कुंवारमां अकेक भावना दइ मग जेवडी गोळी करवी. मात्रा १-२ गोळी ताव श्वास, कास, दम उपर दुध साथे आपवी. खाटुं खारुं तजवुं ।

वातज्वरे गोळी- नेपालो वछनाग, काथो दरेक तोलो १ लइ घुंटी गोळी बाजरी प्रमाण करवी ते गोळी १ ३ तावमां साकरमां तथा जीरा साथे देवाथी ताव जाय दिन ३ प्रभाते देवी वातज्वरे हरडेनां पाणी साथे देवी उपर थुली, मगनी खीचडी. खटासमात्र निषेध छे ।

सर्वविषमज्वर वटी—पारो, गंधक, दरेक तोलो १।, सुंठ तो. २॥ पीपर तो. २॥, मरी तो. ३, हरडेदल तो. ३॥, नेपालाबीज तो. ४॥ दिन १ तुलशीना रसमां मर्दीए पछे मरी प्रमाण गोळी वाळीए एकज्वर, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ वेलाज्वर मळज्वर पेटपीड वटला ज्वर जाय ।

मृतराज गोळी—पारो गंधक, टंकण, वछनाग, कनकबीज एकत्र चूर्ण करी दरेक शेर लइ दिवस ४० सुधा घुटी कनकबीज, वछनाग दरेक अकेक शेर लइ खांडो तेनो उकाळो करी अकेक पट दइ त्रिकटु शेर १ नो उकाळो करी तेनो एक पट दइ चणोठा जेवडी गोळी वाळवी. घोर सन्निपात, महाविषम रोगने शमावे इन्फलुएन्झा मेनीन्जाइटीस वगेरे ताव मटे ।

जीरकादि पुष्टिकरी वटी—जीरुं तोला ५, वरीयाळी तो. ५, पलची तो २॥ चणकबाब तो. २॥ लोहभस्म तो २॥ मधमां चणोया बोर जेवडी गोळी घी साकर साथे नित्ये १ गोळी खाइ उपर दुध पीवुं. हाडीताव तपारो मटे, शरीर पुष्ट थाय ।

अर्कादिवटी—आकडाना खाइडा (फुलनी अंदरनो भाग) तोला ७॥, कांकचीयानां मीज शेकेलां तो. ७॥ पाणीमां गोळी चणोया बोर जेवडी वाळवी. गोळना पाणी साथे १-२ गोळी ताव उतारवा अटकाववा आपवी ।

अश्वगंधादि सर्व ज्वरहरी वटी—आसोंध, बलबीज, अजमो वरीयाळी, सुआ गोखरु, जायफळ, जावंत्री, अकलकरो, तज, तमालपत्र, नागकेसर पीपर मरी, लविंग पीपळीमूळ मूसळी, साटोडीमूळ समुद्रशोष, वाळो, पडवास, मोचरस, सतावरि, नगोडमूळनी छाल, तेजबळ, वावडींग, उटींगण, कलोंजन, कौचां, कपूर, सहदेवी एकत्र चूर्ण समभागे गोळ घीनो पाक करी उतारी सोपारी जेवडी गोळी करवी. ३६ सन्निपात मटे ।

सन्निपात ज्वरहरी वटी—पारो, गधक, वछनाग, मरी, टंकणखार, पीपर समभागे लइ चूर्ण करी धतुराना बीनो क्वाथ करी दिन १ मर्दी मग जेवडी गोळी करवी. सवार सांज अकेक गोळी पाणी साथे आपवी ।

छिक्कन्यादि गोळी—नाकछीकणी, त्रिकटु, उपलेट, वज, लविंग, अकलकरो, सुवा, कुलींजन, भारंगी दरेक अकेकभार चूर्ण आदुरसथी घुंटी चण्या जेवडी गोळी पाणीथी ४-८ देवी. बधा ताव मटे ।

ज्वरांकुश लघु—मोरथुथु एकवेलुं, टंकण, पारो, गंधक, वछनाग, आपरीष, ताळ सर्व समभागे लइ भांगराना रसमां गोळी चणोठी प्रमाण. साकर अथवा जीरा साथे १-२ गोळी देवी. एकांतरो, तरीयो, चोथियो, टाढीयो, शीतज्वर ए ज्वरांकुश लघु बालक तथा स्त्रीने देवाय. पथ्य साकर, चोखा, घी, खीचडी खोराक देवाय ।

लीलावती गुटी सर्वज्वरे—पारो तोलो १, गंधक तो. २, वछनाग तो. ३, चोकमूळ तो. ४, नेपाळो तो. ५ ए सर्व साथे घुंटी लिंबुरसे गोळी अडद प्रमाण, ज्वर जाये ए लीलावती गुटिका छे ।

तावनी गोळी—पळीयो तोलो १, गोळ तो. ४ गोळी आंखमां आंजवाथी तत्काळ ताव जाय ।

तावहरी—पळीयो तोला ५, लींबोळी मींज तो. ५, नसोतर तो. १, कडु तो. २ भांग तो. २ लींबुरसमां चणीयाबोर जेवडी गोळी करवी. २-४ गोळी आपवी ।

सर्वज्वरनी वर्ती—उपलेट पीपर, हीमजीहरडे, वज, मनशीळ, मरी, शंखनाभी बेठांमींज समभागे वाटी चाळी गाडर दुधथी गोळी मरी प्रमाणे करवी. एकांतरो, वेळाज्वर, गमीज्वर, तथा बधा ताव जाय पाणीथी अंजन करवु ।

सर्वज्वरहर क्वाथ—भोरींगणी बेठी तथा उभीनां मूळ, सुंठ, धाणा, देवदार समभागे अथवा सुंठ, करीयातुं, गळो, मोथ समभाग !

गुडुच्यादि वातज्वरमां क्वाथ—गळो, धाणा, लींबडानी अंतरछाल भोरींगणीमूळ चंदन समभाग ।

द्राक्षादिक्वाथ पित्तज्वरमां—धराख काळी खडसलीयो, मोथ, करीयातुं, कडु, वाळो समभाग ।

वास्मादिक्वाथ कफज्वरमां- अरडुसो, सुंठ भोरींगणीमूळ, भारंगी, कचुरो, करीयातु समभाग ।

भूनिम्बादिक्वाथ त्रिदोषज्वरमां करीयातु कडु, मोथ सुंठ, खडसलीयो गळो अरडुसी, धमासो धराख, भारंगी, पुष्करमूळ काळीपाठ लींडीपीपर, काकडाशींगी समभाग ।

सन्निपातमां अंजन—कस्तुरी, मरी, घोडानी लाळ फीण बधाने साथे घुंटी मधमां कालवी आंजवाथी तंद्रा घेन मटी दरदी जागृत थाय छे ।

मळबंध-मळबंधमां बंधाण- बकरीनी लींडी अने जवनो लोट साथे वाटी रोटलो करी गरम करी कपडामां बेवनमां मुकी पेटपर बांधवाथी मळ छुटी ताव उतरे छे ।

घणा तावमां लेप - महासुदर्शन चूर्ण तो. ५ तेमां हरडेनी भुकी तो १ नाखी पाणीमां वाटी नवशेकुं करी पेट पेडु उपर चोपडवाथी परसेवो वळी ताव उतरी जाय छे ।

घणातावमां अष्टांगधूप—कुष्ठ, लींबडानां पान, हरडे, वज, जव घी, गुगळ, सरसव समभागे खांडी तावबाळाने धुणी आपवाथी ताव उतरे ।

मधुरो

मधुरज्वर मंथरज्वर.

आ तावमां दाह, भ्रम, बेशुद्धि, झाडा, उलटी, तरश, अजंपो थाय, मो रातुं थइ जाय, ताळवुं जीभ सुकाय डोक उपर सरसव जेवी फोडकियुं देखाय, दांत काळा पडे, पेशाब पीळो उतरे सातमे दिवसे गळामां मोती जेवी फोडकियुंनो हार देखाय एकवीश दिवसे आराम थाय आ तावमां त्रणे दोषनो प्रकोप न्यूनाधिक होय छे एटले आ एक प्रकारनो सन्निपात ज्वर छे फेफसां अने हृदय उपर तेनी असर नुकसानकारक छे ।

आ दरदीने शरदीथी बचाववो, टंडो पवन लागवा देवो नहीं, छातीये टरपीटन तेल चोळी रु दाथी फलालीननुं कपडुं वींटी राखवुं, जरर जणाय तो

कपडानां गोटावती छातीये शेक करवो. तावनी तीव्रता के झाडा उलटी वगेरे जे जे उपद्रव वधु देखाय तेना शमनना उपाय करवा, पेटमां बोजो होय तो झाडा थवा देवा, बंध करवा नहीं ।

चंदनादि क्वाथ—चंदन, करियातुं, धाणा गळो, वाळो, मोथ, सुंठ, कडु, कलंभो, खडसलीयो समभागे खांडी २ तोलानो उकाळो करी पावो ।

मधुरज्वरहरी वटी—फुलावेली फटकडी, फुलावेलो टंकण, शोधेलो नवसार, पारो, गंधक प्रत्येक तोला ४ चार, सुंठ, पीपर, मरी, हरडेदळ, काकडाशींगी, कपुरकाचली, कडु, खडसलीयो, मोथ वछनाग, हिंगळो, ताम्रभस्म, अरडुशी पान, साबरसींग भस्म, जेठीमध मूळ, पलचो प्रत्येक तोला २ बे, तुळशी अने आदुरसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. दिवसमां ३ वखत टंके ४ गोळी महासुदर्शनना काढा साथे के पाणी साथे आपवी ।

बधाण—लींबडानां पान वाटी खदखदावी तेमां थोडुं मध नाखी पेट उपर कपडानां बेवनमां पाथरी रात्रे बंधाण करवुं ।

मधुरामां लोहीना झाडा थाय तो महाचंद्रकळा गोळी दिवसमां ४-८ सुधी खडसलीयाना काढा साथे आपवी अथवा खदिरादिक्वाथ खेरनी छाल, मोचरस, सुंठ, मरी, पलचो, कृष्णागर, पद्मकाष्ट हरडेदळ, नागकेसर समभागे खांडी तेमाथी ०॥ तोलो भारनो उकाळो करी तेमां ०॥ तोलो जुनो गोळ मेळवी दिवसमां बे त्रण वखत पावुं अथवा रोहीतकारिष्ट पावो ।

बृहत् कस्तूरीभैरव रसः (रसोद्धारतंत्रे)

स्वर्ण रौप्य प्रवालायोमुक्ता ताम्राभ्र तालकम् ॥
हरगोरीरसो मुस्ता विडंगानि च धातकी ॥ १ ॥
धात्री विश्वा शिवा पाठा मर्कटी कुष्ठ वालकं ॥
चंद्रः कस्तूरिका सर्वं समभागेन कल्पयेत् ॥ २ ॥
श्वेतार्कस्य दलद्रावैर्भावनैका प्रदीयताम् ॥
शुष्कं सम्यक् मर्दयित्वा काचकूप्यां निधापयेत् ॥ ३ ॥
शुष्के कस्तूरिकाचंद्रौ दत्वा सम्यग्विमर्दयेत् ॥
बाह्यवातविरक्तायां काचशीश्यां विनिक्षिपेत् ॥ ४ ॥
एकद्वित्र्याहिकजान् चातुर्थिकशीतजाञ्ज्वरान्हन्यात् ॥
सर्वांश्च सन्निपातान् कफविषजीर्णाभिचारकामोत्थान् ॥५॥
सर्वज्वरेष्वार्द्ररसेन दद्याज्ज्वरातिसारग्रहणीगदेषु ॥
आमातिसारे दधिजीरकाभ्यां मंदाग्नि कासश्वसनोदरेषु ॥६॥
क्षौद्रोषणाभ्यां बलपुष्टिदाता वाजीकरो हृद्यरसायनश्च ॥
नानानुपानानुगतो रसोयं हृत्फुप्फुसान्त्रादिगदान्निहन्ति ॥७॥

पाणी शेर १ मुकी पाशेर रहे पटले उतारवुं. मध नाखी पावुं सर्वज्वर जीर्णज्वर १ महीनामां जाय ।

जीर्णज्वर हरी गोळी—हरडे, गळो, नसोतर, कपूर, सुंठ, करीयातुं, द्राक्ष दरेक तोलो १ ए सर्वे साथे खांडी चणीया बोर जेवडी गोळी करवी सवार सांज ३ त्रण पाणी साथे देवी ।

हाडीतावहर क्वाथ—भोरींगणी मूळ, गळो, सुंठ, पीपर, समभागे, तोला २ भुकानां पाणि शेर १ मुकवुं पाशेर रहे गाळि पावुं जीर्णज्वर जाय ।



झाडा

झाडा—अतिसार, हाघोणुं.

गुर्वतिस्निग्धरूक्षोष्णद्रवस्थूलातिशीतलैः ।
विरुद्धाध्यशनाजीर्णैर्विषमैश्चापि भोजनैः ॥
स्नेहाद्यैरनियुक्तैश्च मिथ्यायुक्तैर्विषैर्भयैः ।
शोकदुष्टाम्बुमद्यातिपानैः सात्म्यर्तुपर्ययैः ॥
जलातिरमणैर्वेगविघातैः क्रिमिदोषतः ।
नृणां भवत्यतीसारः षड्विधः स निगद्यते ॥

कारण—वधु भारे, बहु स्निग्ध, लुखां, प्रवाही, बहु ठंडा खोराक लेवाथी मिष्टान्न, बजारनी मिठाइ, चीकणा पदार्थो खावाथी, पच्युं न होय त्यां उपरा उपर खावाथी, घी जेवां पदार्थ वधु खावाथी, विष, शोक, भय, बगडेलुं पाणी, मद्यपान अने जीवडाथी झाडानो उपद्रव थाय छे, नानां बाळकोने दांत आवती वखते झाडा थाय छे ।

चिन्ह—छाती डुंटी पडखां पेटमां पीडा, पवननो अवरोध, आफरो वगेरे जणाइ झाडा शरु थाय छे. झाडा आम-काचा दोषवाळा होय ते पाणीमां बुडी जाय छे, बहु गंधाय छे; चीकणा होय छे; अने पक्व दोषवाळा झाडा होय ते दुर्गंध ओछी होय, चीकाश न होय, पाणीमां तरे, वारंवार जुलाब जेपावा तळा झाडा थाय छे. मोढे मोळ, अरुचि, जीभपर सफेद पीळी छारी, पेटमां वायु, चुंक, खाटा दुर्गंधवाळा ओडकार, अशक्ति, कोइवार लोहीनो देखाव वगेरे चिन्हो देखाय छे ।

पथ्यापथ्य—खोराक बंध करवो, पेटमां बोजो होय त्यांसुधी बे त्रण उपवास करवा. पछी हळवो गळपण विनानो खोराक खीचडी, कढी, मोळी वघारेली छास, भात, घउं बाजराना लोटनी पातळी गोळवाळी राब मगनुं स्वादिष्ट करेलुं ओसामण वगेरे खावां. ठंडी हवा, भेजवाळुं मकान, गंदकी, मलीन कपडां, मलीन बीछानां वगेरे तजवां. ठंडी ऋतु होय तो पासे सगडी राखवी. स्वच्छ कपडां पहेरी राखवां, पेटे महानारायण तेल के टरपीटन चोपडवुं. पेटमां

वींट, थुंक बहु आवे तो लुगडांना गोटाथी शेक करवो. झाडा मटी जाय ते पछी १०-१५ दिवस सुधी सादो खोराक देवो. नानां बाळकोने दांत आववाथी के माताना आहारविहारना अनियमितपणाने लइ झाडा थया होय तो तेने खावा पीवानी शिखामण देवी. तथा बाळकने दुध पावामां आवतुं होय तो सुंठनी भुकी नाखी गरम करी गायनुं दुध पावुं. तथा बाळारोग्यवटी, महागंधक, बाळार्क वगेरे दवा योग्य मात्राथी आपवी. स्वच्छ कपडां पहेरावी ओढाडी राखवां अने भीनां थाय वगडे के तुरत बदलाववां. भेज विनानी खुल्ली हवा प्रकाशवाळी जग्याये बच्चांने घोडीयामां के पारणामां सुवराववां ।

आनंदभैरव गोळी—शुद्ध हिंगळो, शुद्ध वछनाग, मरी, टंकण, कनकबीज साथे खांडी लींबुरसमां ६ कलाक घुंटी चणोठी जेवडी गोळी करवी. १-२ गोळी पाणी साथे देवाथी वधी जातना झाडा मटे उपर इंद्रजव तो. ०। अने कडाछाल तो. ०। बेइना भुका साथे मध मेळवी चटाडवुं. दहीं भातनो खोराक आपवो गायनुं दुध छास तरस लागे तो ठंडु पाणी आपवुं. रात्रे सुती वखते बे वाल शेधेली भांगनी फाकी आपवी ।

अभयनृसिंह रस—हिंगळो, वछनाग सुंठ, पीपर, मरी, जीरुं, टंकण, गंधक, अभ्रकभस्म, पारद प्रत्येक १० दश तोला अफीण १०० तोला लींबुना रसमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा लींबुना रसनी भावना दइ सुकावी भुको राखवो. मात्रा १-३ गोळी अथवा १-३ रति, ०। तोलो जीरानो भुको अने मध साथे चटाडवुं वायुना पित्तना, कफना, त्रिदोषना ताव साथेना अथवा ताव विनाना झाडा तथा संग्रहणीनुं दरद वगेरेने मटाडे छे ।

झाडानी गोळी—पारद तोला ५ मां सोनानो वरख तो ०। मेळवी पछी तेमां गंधक तो. १० नाखी कज्जळी करवी. पछी इद्रजव, अफीण प्रत्येक तो. १० हिंगळो वछनाग, कपूर, जावंत्री, सुंठ पीपर, मरी, टंकणखार, धनुरानां बी राळ, मोथ केरीनी गोटली, बीलीनो गर्भ, शेधेली भांग, साकर प्रत्येक ५ पांच तोला अने कडाछाल तो २० लइ साथे खांडी पाणीमां गोळी चणोठी जेवडी वाळवी. मात्रा २-६ गोळी मधमां चटाडवी दहीं, भात, गायनुं घी, खीचडी वगेरे हलवो खोराक देवो. वधी जातना झाडा, संग्रहणी, मरडा उधरस वगेरेमां अपाय छे ।

कनकसुंदर रस—काळांमरी गंधक, हिंगळो, वछनाग, पारद टंकणखार, कनकबीज समभागे लइ भांगना उकाळामां घुंटी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुको राखवो. मात्रा २-४ रति मध अने कडाछालना भुका साथे चटाडवुं. झाडा, मरडा, संग्रहणीमां उत्तम छे ।

पंचामृत पर्पटी—पारद, लोहभस्म, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म प्रत्येक तो. ० लइ तेमां गंधक तोला ८० मेळवी लोढाना कडायामां कोयलाना [illegible] [illegible] उपर नीचे गायनुं छाण अने वचमां केळना पानमां ढाळी [illegible]. मात्रा ३-१२ रति सुधी अपाय छे. मध अने कडाछालना भुका साथे आपवा. संग्रहणी, क्षय, ताव, स्त्रीओनां दरद, पांडुरोग, अमलपित्त, दम्म, मंदाग्नि, [illegible] दरदमां फायदो करे छे ।

कर्पूर सुंदरी गुटिका—कपूर, जायफळ, जावंत्री, कनकबीज, समदरशोषनां बी, अकलकरो, सुंठ, पीपर, मरी, चोपचीनी, शेकेला कांकचीयानां मींज प्रत्येक तोला ५ पांच, शोधेली भांग तोला ५५, अफीण तो. ५५ अने शुद्ध वछनाग तो. २७॥ बधाने खांडी साथे मेळवी भांगराना रसनी भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा १–४ गोळी पाणी, छास के मधमां आपवी. गमे ते जातना भयंकर झाडा, संग्रहणी, हरस, मदाग्नि वगेरे दरदने मटाडे छे तथा अफीणनुं बंधाण छुटे छे ।

अतिसारामृत रस—पारद, गंधक, कडाछाल, लविंग, जायफळ, जावंत्री अकलकरो, सुंठ, पीपर, मरी, तज, तमाल, नागकेसर, एलची, मोचरस धावडीफुल, कनकबीज, कपुर, खेरसार, कमेलां प्रत्येक तोलो १ एक अने अफीण तो. ०॥ अर्धो साथे मेळवी मधमां वाल वालनी गोळी करवी. सवार सांज बबे गोळी पाणीथी देवी ।

अतिसार भैरवी गोळी—जावंत्री, लविंग, सुंठ, चणकबाब चंदन, केसर, पीपर, अकलकरो, पारद भस्म लाल अने अफीण बधा सरखे भागे लइ पाणीमां चणोठी जेवडी गोळा करवी. २–४ गोळी चोखाना धोण साथे आपवी. बधी जातना झाडा मटे ।

राळादि चूर्ण—राळ मोचरस, अफीण, कडाछाल, अतिविष, सुंठ बधां समभागे खांडवां १ वाल मात्रा मधमां चटाडवाथी झाडा मटे ।

वृद्ध गंगाधर चूर्ण—धावडीनां फुल, आमळां, मोथ, पाहाडमूळ अडडुसो, जेठीमध, बीलीनोगरभ, जांबुना ठरीया केरीना गोठली, सुठ अतिविष, वाळो, लोदर, इंद्रजव बधां सरखेभागे लइ खांडवां. मात्रा ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण चोखाना धोणमां मेळवी पावुं अथवा मधमां चटाडवुं. बधा झाडा मटे ।

झाडाना दरदमां, संग्रहणी-मरडाना प्रकरणमां बतावेला औषधो लागु पडे छे तथा कुटजावलेह शार्ंगधर २०१, शंखोदर रस र. प्र. २७, मलपाचनी वटी र. प्र. सु. ९९, अतिसार नाशन प्रयोग र. प्र. सु. ९९, अहिफेनासव भै. र. ३३७, कुटजारिष्ठ भै. र. ४३७, लाइ चूर्ण यो त. ४१२, दाडिमाष्टक यो. र. २१८, कपित्थाष्टक यो. र. १२७ वगेरे औषधो अपाय छे ।

झाडानी गोळी हींगूलाष्टक वटी प्राचीन—हींगळो, जायफळ मोचरस बीली, लवींग, टंकण फुलावेल, अफीण दरेक शेर १ एक, कपूर अर्धो शेर. पाणीमां गोळी चण्या प्रमाण, बाफेला चोखाना पाणीमां देवी ।

ताव साथे झाडा—ज्वरातिसार

पित्तज्वरे पित्तभवोतिसारस्तथातिसारे यदि वा ज्वरः स्यात ।
दोषस्य दूष्यस्य समानभावाज्ज्वरातिसारः कथितो भिषग्भिः ॥

विजयवटी—सुंठ, समदरशोषनां बी, शोधेडी भांग, शेकेला कांकचीयानां मींज, चोपचीनी, अफीण कनकबीज, कपूर, जावंत्री, कांकोलनां मूळनी छाल, बधां

सरखेभागे लइ पाणीमां गोळी चणोठी जेवडी वाळवी. मात्रा २-६ गोळी मधमां चटाडवी, ताव साथेना के बीजा बधी जातना झाडा, मरडा मटे ।

सिद्ध प्राणेश्वर रस—पारद, गंधक, अभ्रकभस्म दरेक तोला ४ चार, साजीखार, टंकण, जवखार, पंचलवण, त्रिफला, त्रिकटु, इंद्रजव, जीरुं शाजीरुं, चित्रो, अजमा, हिंग, बीयो, सुवादाणा दरेक अकेक तोलो मेळववां. मात्रा १ मासो नागरवेलना पान साथे, उपर नवशेकुं पाणी पावुं. ताव साथेना झाडा १४ दिमां मटे ।

पथ्यापथ्य—ज्वरातिसारनुं दरद कष्टसाध्य छे. तावने उतारनारुं औषध घणेभागे दस्त लावनारुं अने झाडानुं औषध घणेभागे स्तंभन करनारुं होय छे. तेथी आ बन्ने दरदने काबुमां लावे तेवा औषधनी बुद्धिपूर्वक योजना करवी. ज्वरातिसारमां प्रथम दरदीनुं बळ जोइ लांघण कराववी पछी पाचन औषध आपवुं ।

ह्रिबेरादि क्वाथ—वाळो, अतिविष, मोथ, बीलीगर्भ, सुंठ, धाणा समभागे खांडवां पछी उकाळो करवो ।

उशीरादि क्वाथ—वाळो, काळो वाळो, मोथ, धाणा, सुंठ, रीसामणी, धावडीफुल, लोदर, बीलीगर्भ समभागे खांडवां. पछी उकाळो करी पावो ।



संग्रहणी अने मरडो

संग्रहणी आंत्रक्षयः

कारण—झाडो मट्या पछी पण जठराग्नि केटलाक दिवस मंद रहे छे. ते वखते भारे अजीर्ण करे तेवो खोराक लेवाथी जठराग्नि बगडी जइ पित्तधरा नामनी कळा जे ग्रहणी छे ते बगडी आ दरद थाय छे. अनियमित भोजनथी अति भोजनथी, पंथथी मळ मूत्रादिना वेग रोकवाथी पण आ रोग थाय छे ।

चिन्हो—आना दर्दीये खाधेलुं अन्न पाचन थवा आवतां खाटुं थाय छे, शरीर रुक्ष-सुकुं थाय छे, तरस बेहद लागे छे, संग्रहणीनुं आ एक मुख्य लक्षण छे. आंखे झांखप, काने भणकारा, पांसळीयोना सांधाना दुखावो, हृदयमां पीडा, शरीरनी दिवसे दिवसे निर्बळता, मळद्वारने ठेकाणे कोइ कापतुं होय तेवी पीडा, खारा खाटा रस उपर प्रीति. कोइवार पातळो तो कोइवार सुको पण कष्ट साथे के कष्ट विना झाडो आवे छे, हाथे पगे सोजो चडे छे. आ दरद दिवसे कोपे छे अने रात्रे शांत थइ जाय छे. पडखामां शूळ, मळ निकळती वखते घडो ठलवातो होय तेवो अवाज थाय, ताव रहे, सुस्त पडयो रहे ते असाध्य लक्षण गणाय ।

पथ्यापथ्य—नावुं नहीं जरुर पडे तो अठवाडियामां एकादि वखत गरम पाणीथी नावुं. बहु पाणी पीवुं नहीं. चिकाशवाळा लाडु जेवा मिष्टान्न तळेलां पदार्थ, बजारनी मिठाइ. खांडनी चीजुं वगेरे खावां नहीं. जे जे खोराक दरदी ल्ये छे ते तेवाज रुपमां झाडा वाटे बहार नीकळे छे. एटले आ दरदीने पातळो एमदम हळवो, दीपन, वातपित्त कफनाशन खोराक देवो. छास जीरुं हिंगथी वघारी सिंधालुण मेळवी पावी. आदु, कोथमीर, मरी, हिंग, जीरुं, अजमा, तज,

लवींग, सुंठ वगेरे मसालावाळां अन्नपान प्रवाही रुपमां युक्तिथी आपवां. खोराक पचवा मांडे तेम तेम थोडो भात के खीचडी कांजी वगेरे आपवुं. वायुनी, पित, कफनी अने त्रिदोषनी एम चार जातनी संग्रहणी थाय छे. जे दोषनुं प्राधान्य होय तेनो विचार करी औषधनी योजना करवी अने आहार विहारनी समजण देवी।

मरडो आमातिसार

कारण—गरमागरम खोराक, बहु मरचांवाळा शाक पत्र अतिशय खावाथी अजीर्ण मळ बंध थइ चुक आंकडी आवे छे. मंदाग्निवाळा के आंतरडांनी नबळाइवाळा दरदीने जट असर थाय छे, अपक्व मळ आंतडामां भराइ तेमां क्षत पडे छे तेथी आंतरडां सोजीआवी तेनी वेदनाथी चुंक आंकडी साथे मरडो लागु पडे छे।

चिन्ह—मळ वेदना तथा आंकडी वींट साथे बहार पडे छे, तेनी पीडाथी दरदी आमतेम अमळाइ-मरडाय छे अने असह्य वेदना भोगवे छे. मरडो चेपी अने ते अमुक जंतुओथी थाय छे एम डाक्टरोनुं मानवुं तदन खोटुं छे. केटलाक केसमां सख्त मरडो थइ झाडा थाय छे, अने केटलाकमां मळ बंध थइ झाडो कटके कटके थोडी थोडी वारे आवे छे, झाडानी हाजत रह्या करे छे, झाडे जतां दरदी कणछे छे, बेसी रहेवानुं मन करे छे, पण मात्र थोडां टीपां आम-जळपटां के ते साथे लोहीना छांटा पडे छे, नाडीनी गति वधे छे, जीभपर सफेद थर बाझे छे, बे त्रण दिवसमां दरद वधी जइ १०-१५ दिवसमां शांति पर आववा मांडे छे, तीव्र मरडामां हाडमां जरा ताव रहे छे, भुख मंद थाय छे, कळतर, गोटलां चडे छे, पेट चडे छे, झाडामां दुर्गंध होय छे, आंखो उंडी उतरे छे, मरडो १५-२० दिवसनो थाय त्यारे जुनो मरडो कहेवाय छे, अने संग्रहणीनुं रुप पकडे छे।

पथ्यापथ्य—दरदीने स्वच्छ कपडां तथा स्वच्छ बिछानामां राखवो. पीवानुं पाणी गरम करी ठारी वापरवुं. गोटलां चडे के कळतर थाय त्यां लुगडाना गोटाथी शेक करवो, महानारायण तेल चोळवुं, एरंडीया तेलनो जुलाब देवो, खोराकमां दुध आपवुं होय तो तेमां चपटी सुंठ अने जरा साकर नाखी गरम करी ते थोडुं थोडुं पावुं, अथवा गायना दहींनी मोळी छास जीरुं, सिधालुण, धाणा नाखी पावी. खोराकमां खीचडी, चोखा, मग, तुवेर के मठनी दाळ पातळी आपवी. पाणीनो तरस बहु लागे तोपण पाणी ओछुं पावुं. धराख, धाणा, खडसलीयानुं पाणी चमची चमची पावाथी तरस ओछी थशे. बरफ सोडा वगेरे के तेवुं पीणुं पावुं नहीं, मोळी छास के मोळा दहींनुं घोळवुं मीठुं जीरुं नाखेलुं के वघारेलुं उत्तम खोराक छे।

अष्टामृत पर्पटी—पारद तोला २०, गंधक तो. ४०, सुवर्णभस्म तो. २, रौप्यभस्म तो. ६, मोतीनी पिष्टी तो. २, प्रवालपिष्टी तो. ५, ताम्रभस्म तो. ६, अभ्रकभस्म तो. ५ लइ प्रथम गंधकने पीगाळी पछी बीजां मेळवी पर्पटी ढाळवी मात्रा २-४ रति मधमां चटाडी उपर पाणी के नीचेनो कोइ उकाळो पावो. मधने बदले कुटजामृतावलेह पण अपाय. संग्रहणी झाडा मरडा मटे, दरेक जातनी पर्पटी ढाळवा गायनुं छाण लेवुं।

लोहपर्पटी—जांबुमां पकवेली लोहभस्म तेला १० अने पारद तो. १० लइ गंधक तो. २० ने लोढाना कडायामां पीगाळी तेमां प्रथम पारद अने पछी लोह मेळवी विधि प्रमाणे पर्पटी ढाळवी. मात्रा २–७ रति कुटजावलेह चाटण साथे अथवा टंडा पाणी साथे अथवा धाणा, जीरु अने वहीना घोळवा साथे आपवी टंके ७ रति सुधी वापरवी ।

सुवर्ण पर्पटी—पारद तोला १६ लइ तेमां सोनानो वरख तो २ मेळवी एक दिवस घुंटी पछी तेमां गंधक तो. १६ मेळवी कोयलाना अग्नि उपर पीगाळी हलाववु अने पर्पटी ढाळवी. मात्रा २–१२ रति नीचेना चटण साथे अथवा मध, माखण साथे आपवी बधी जातनी संग्रहणी झाडा मरडा मटे छे. शरुआतमां ८ दिवस सुधी टंके २ बे रति आपवी. पछी दर अठवाडिये अकेक रति टंके वधारवी कुल टंके १२ रति थतां सुधी वधारवी शरीर तदुरस्त थइ जाय ते पछी क्रमे क्रमे घटाडवी. शरीर दृढ निरोगी थाय छे. संग्रहणीमा पित्त गरमी वधु देखाती होय तो साकर माखण साथे आपवी वायु विशेष होय तो वंश-लोचननो भुको वाल वाल अने मध घीमां आपवी कफ शरदी वधु होय तो वंशलोचन वाल १, पीपर वाल १ अने मध साथे आपवी. लांबा वखतथी असा-ध्य संग्रहणी मटे छे, ते शिवाय शरीर क्षीण थइ गयु होय, जुलाब जेवा झाडा थया करता होय भुख मंद पडी गइ होय, शरीर कृश थइ गयु होय पांडु रोग पेटनां दरद अने कलेजु वध्युं होय मरडा झाडा. लांबा वखतनो हाडीताव होय ते दरेक रोग आनाथी मटे छे ।

पंचामृत पर्पटी—गंधक तोला ४० ने पीगाळी तेमां लोहभस्म, अभ्रक-भस्म, ताम्रभस्म अने शुद्ध पारद प्रत्येक तो. १० दश नाखी विधि प्रमाणे पकवी ढाळी घुंटी राखवी. शरुआतमां टके १ एक रतिथी शरु करवी दर सातांहे १ एक रति टंके वधारवी, टंके ७ रति थाय एटले पछी दर सप्ताहे १ एक घटाडवी आना सेवनथी भयंकर संग्रहणी मटे छे तथा क्षय ज्वरातिसार, स्त्रीओना गुह्य रोग, पांडुरोग, अम्लपित्त श्वास मंदाग्नि पटलां दरदो पण मटे छे. हिंग, सिंधा-लुण अने जीरुं समभागे खांडी छासमां २ वे आनीभार नाखी ते उपर छास पावी. झाडा मरडा संग्रहणी गोटो मटे ।

सिद्धनाथी कांचन पर्पटी—अष्ट संस्कारित पारद तोला १० मां सोना नां पानां तो. २ नाखी घुंटवुं पछी तेमां माणिक्यपिष्टी, मोतीपिष्टी, प्रवालपिष्टी, सहस्त्रपुटी अभ्रकभस्म, सहस्त्रपुटी लोहभस्म, रौप्यभस्म प्रत्येक तो. ४ चार मेळवी घुंटी गंधक तो ३० ने अंगारा पर लोढानी कडाइमां पीगाळी उपलुं मिश्रण नाखी हलावी विधि प्रमाणे पर्पटी ढाळी घुंटी राखवी. आमां गंधक भांग-रानां रसमां ७ वखत शोधेलो वापरवो. झाडा, मरडा, कोलेरा, संग्रहणी, क्षय, कृशता नबळाइ उदर रोग, छातीना फेफसानां, आंतरडानां दरद, धातुक्षय वगेरे मटी माणस बळवान थाय छे ।

ग्रहणीकपाट रस कालो—पारद तोला १० लइ तेमां सोनाना वरखनां पानां तो. १ नाखी घुंटी एक जीव करी तेमां शुद्ध गंधक तो. २० नाखी कज्जळी

प्र. ८ खारेक ठळीया काढेल तोला २॥, सुंठ तोला २॥, अफीण चोख्खु तोलो १॥ साथे मेंदी लींबुना रसमां गोळी चणोठा जेवडी वाळवी. टंके १-२ गोळी दिवसमां २ थी ३ वखत दरद प्रमाणे आपवी. झाडा, मरडा, संग्रहणी, बाळकना झाडा मटे कोलेरामां पण उपाय छे।

प्र. ९. अफीण तो १ चीनाइ काथो तो. १, फटकडी फुलावेल तोलो १॥ साथे मेळवी पाणीमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी टंके २-४ के दरद प्रमाणे गोळी पाणी साथे आपवी

झाडानी गोळी—दाडम १ मोटुं लइ कोरी तेमां जायफळ १ तथा पक्काणी भार अफीण तथा मरी तो. ०॥ तेमां भरी डगळी दइ घउना लोटथी लपेटी अडाया छाणामां ओठवी पछे दाडम सहित वाटी चणिया बोर जेवडी गोळी करवी मात्रा १-२ गोळी आपवी. वाडे-झाडा मटे।

झाडा प्रयोग—दाडम शाहजीरुं, साकर दरेक तोलो ० साथे मधमां चटाडवुं. झाडा बंध थाय।

अतिसारामृत अवलेह—सुंठ तो. ७॥. जीरुं तो ३॥. कडाछाल धावडीनां फुल दाडिमसार वाळो लोदर, मोचरस, शाजीरुं काळुंजीरुं, आमलवेतस, आंबानी गोठली, गोरोचंदन, चवक ए दरेक औषध तो २॥ लेवां साकर बधाथी छगणी नाखी मधमां अवलेह करवो घणा वरसनो अतिसार संग्रहणी, वायु, विकार सरवे मटे. टंके ०॥ थी १ तो. चाटवु।

अतिसारहर चूर्ण—आंबानी गोठली, धतुरानां बी, सुंठ, अतिवेष, दाडिमसार, अजमोद पाषाणभेद, वाळो, मोथ, इन्द्रजव, पीपळीमूळ दरेक तो. २॥, मोरथुथु पकवेलु तो. ० ए चूर्ण साकरमां देवुं अथवा मधमां चटाडवुं अथवा दहीमां देवाथी वायु अतिसार मटे मात्रा बे आनी भार।

दाडिमादि—दाडिमसार, लोदर मध साथे देवाथी लोहीना झाडा अतिसार मटे।

शठ्यादि—सुंठ, कडाछाल, लोदर, बीली धावडीनां फुल, इन्द्रजव, अतिविष, वाळो, काळोवाळो, कचुरो दरेक समभागे चुरण करी ० थी ०॥ तोलो मध साथे अथवा गायनी छास साथे अथवा चोखाना पाणी साथे आपवाथी लोहीना अतिसार, मरडो संग्रहणी विकार मटे।

वाळादि—वाळो, आंमळा, खीजडानां भळ, जांबुनां ठरीया समभागे चुरण करी ० थी ०॥ तो. साकर साथे देवु. महाअतिसार मटे।

झाडाहर—सुंठ अने अतिविषनी कळी समभागे खांडी ६-१२ रति सुधी मधमां आपवु. अतिसार मटे।

गडुच्यादि क्वाथ- गळो, अतिविषनी कळी, चण्यानी दाळ, सुंठ बीली गर्भ, मोथ वाळो, काळीपाठ, करियातुं, कडाछाल, चंदन, उशीर पद्मक, इन्द्रजव सरखेभागे क्वाथ १ तोलो उकाळी पावो अतिसार, ज्वरातिसार उबको, अरुचि, दाहज्वर पटला रोगने शमावे।

मरडाहर चूर्ण—हरडे शिलाजीत, अतिविषनी कळी, संचळ, वज, हींग, इन्द्रजव समभागे चूर्ण टांक ०। छास साथे ३ दिवस देवुं लोहीवाळा झाडा तथा मरडा मटे ।

अजमोदादि चूर्ण—अजमोद मोचरस, सुंठ, धावडीनां फुल, ए समभागे खांडवा पछी गायना दहींना घोळवा साथे ०। थी ०॥ तोलो मात्रा छाश साथे आपवाथी अतिसार मटे. दही खीचडो, दहीं भातनो खोराक देवो ।

अजमोदादि क्काथ—अजमोद सुंठ वाळो धाणा, अतिविष मोथ, बल मूळ बिलिगर्भ, सालवण समभागे खांडी क्काथ पावाथी अन्न पचे संग्रहणी झाडा मटे ।

पुनर्नवादि क्काथ—साटोडा, मरी, शरपंखो, सुंठ चित्रो, हरडे काचां बोलां, बळामूळ ए क्काथ हरस गुल्म संग्रहणी शमावे ।

शुंठ्यादि क्काथ—सुंठ, गळो, अतिविष, मोथ, ए क्काथ मंदाग्नि संग्रहणी कबजीयत टाळे ।

पाठादि चूर्ण—काळीपाठ, अतिविष, कडाछाल, मोथ, कडु धावडी, रसवंती, सुंठ, बिलिगर्भ ए चूर्ण मधमां चाटी उपर चोखानुं ओसामण पावु हरस गुदाना रोग लोहीना झाडा संग्रहणी मटे ।

भूनिंबादि चूर्ण—करीयातु कडु, मोथ, इन्द्रजव त्रिकटु ए दरेक तो. २ बे, कडाछाल तो. १६ चित्रो तो. २ ए चूर्ण गोळ दुध साथे ०। थी ०॥ तोलो देवुं. पांडुरोग, ताव, अतिसार, अरुचि, कमळो, गुल्म, प्रमेह, संग्रहणी मटे ।

यवक्षारादि चूर्ण—जवखार साजीखार, सिंधव संचळ, बिडलवण, त्रिकटु, चवक, अजमोद, चित्रो पीपरीमूळ, हिंग, जीरु, सुवादाणा समभागे चूर्ण करी उष्णजळे अथवा छास साथे देवाथी हृद्रोग, गुल्म, अर्श, संग्रहणी मटे ।

यवक्षारादि गुटि—जवखार, साजीखार, त्रिकटु चवक, चित्रो पीपरीमूळ, सिंधव संचळ बिडलवण कावलवण भांगरो, मीठु अजमोद, हिंग, अजमो, बीजोराना रस बोरनो गर्भ कुष्ठ, गोळमां गोळी चणिया बोर जेवडी करवी मात्रा २ ४ गोळो आपवी. पाचक श्लेमवायु, संग्रहणी रोग मटे. जठराग्नि प्रदीप्त थाय.

चित्रकादि चूर्ण—चित्रो, चवक, बीलि, सुठ ए चूर्ण छास साथे देवु. संग्रहणी मटे ।

संचळादि चूर्ण—संचळ, चित्रो, मरी ए चूर्ण छास साथे देवाथी संग्रहणी, उदर विकार गुल्म, अर्श, मोळ मटे. भुख लागे ।

मुस्तादि चूर्ण—मोथ इन्द्रजव, बालबीली, वाळो, मोचरस ए चूर्ण बकरीना दुध साथे देवाथी आमातिसार, संग्रहणी मटे ।

कुटजादि क्काथ—कडाछाल, अतिविष, मोथ, वाळो, लोदर, सुखड, धावडी फुल, दाडम छाल, काळीपाठ ए क्काथ मध साथे पावो सर्वातिसार संग्रहणी मटे ।

बोलादि गुटी—हीरबोळ, हिंगळो, गुगळ ए त्रण गायना दुधमां वाटी मग जेवडी गोळी करवी ३ थी ६ गोळी पाणी साथे देवी वायु संग्रहणी मटे ।

गुगळ शेर ०॥ दाडममां घालो उपर घउनो लोट दावी अग्निमां ओळा पका- ववुं लोट उतारी दूर दाडम वाटी गोळी चण्या प्रमाण करवी सांज सवार १ थी २ देवी. संग्रहणी, झाडो मटे ।

अंकोलमूळ छास अथवा पाणी साथे घसी दिन ७ देवु संग्रहणी जाय ।

हरस—मसा अर्शोरोगः

हरस, अंदरना हरस, दुझतो हरस, सुका हरस, बहारना मसा.

कारण—भुख मंद पडवाथी अन्न पाचन नहीं थवाथी बगडेला वात पित्त अने कफ, मांस मेद वगेरेने दूषित करी गुदामां विविध आकृतिवाळा मांसना अंकुर उपजावे छे. क्रोधथी, बळवान साथे लडवाथी, दिवसे उंघवाथी, रातना उजागराथी, उभडक पगे बेसवानी टेवथी, उट घोडानी वधु मुसाफरीथी बहु गोळ, बहु मरचां बहु मगफळी, मगफळीनुं तेल. वेजीटेबल घी वधु खावाथी बगडेला वात पित्त कफ साथे प्रसार पामेलु लोही विष्टानी वहन करनारी धम- नीओमां पेसी गुदामां आवी गुदानी वळीओने दूषित करी मांसना अंकुरो उपजावे छे, ज्यारे अनेक कारणे जठराग्नि मंद थइ खोराक पचतो नथी त्यारे वृद्धि पामेलो मळ गुदानी वळीओमां भराइ जइ वळीओने फुलावी मांसना अंकुरो उत्पन्न करे छे, अति स्त्रीसंगथी, कठण आसने बेसी रहेवाथी मळोत्सर्ग वखते बहु बळ कर- वाथी, मळमूत्रनो वेग रोकवाथी बेसी रहेवानी टेवथी, थोडी महेनत छतां घणो खोराक खावाथी, बहु खारीतीखी जलद चीजो खावाथी, जलद दवा के दारु पीवाथी, पाचनक्रिया बगाडनारा दरदोथी हरसनुं दरद थाय छे ।

चिन्ह—अपान वायु छुटो शकतो नथी. अपान वायु उंचो चडवाथी, (छुटी नहीं शकवाथी) समान, उदान, व्यान अने प्राण वायुने बगाडी जठराग्निने बगाडे छे तेथी हरसनो दरदी कृश, कांतिहीन थाय छे. स्हेज गरम चीज खावाथी जींभ आवी जाय, जरा हालतां चालतां श्वास चडे हाडी ताव, सोजो थेथर, नपुंसक जेवी स्थिति आंखे अंधारां, मन चिंतातुर, सांधामां शूळ वगेरे जणाय ।

सुका हरसमां—अंकुर सुका, स्राव विनाना, दुखावावाळा, चटका मारती जीणी वेदनावाळा, काळा के लाल रंगना होय छे, जे अंकुरने चीटोडीयो भरतां खबर पडती नथी, सुका गायनी जीभ जेवा खडसट, केटलाकनी आकृति बोर झिंडवा के खारेकना जेवी होय छे. ओडकार झाडानो कबजीयत, छातीनो सोजो, उधरस, श्वास, झाडो कठण पथर जेवो फीणवाळो चीकणो पोडा साथे आवे छे. दरदीनी चामडी नख आंख मोढुं काळां फीका पीळां के घोळां पडी जाय छे ।

लोहीना दुझता हरस—मळथी ज्यारे हरस दबाय छे त्यारे गरम लोही पडे छे, लोही घणुं जवा पछी दरदी पीळो कृश हाडकाना माळखा जेवो

थइ जाय छे, उत्साह ओछो थइ जाय छे, जरा हालतां चालतां हांफी जाय छे, शक्ति बिल्कुल रहेती नथी, झाडो कठण काळो सुको उतरे छे, भुख मंद थाय छे जरापण तीखुं खाइ शकतो नथी, खाय तो जीभ आवी जाय छे अने लोहीं पडवानी धास्ती रहे छे, पवन छुटतो नथी लींबु के खटाइ खावाथी मोढे के पगे शेथर चडी जाय छे।

पथ्यापथ्य—भारे अजीर्ण करनारी, वादडी, वादी करे, झाडो कबज करे एवी वायु-गडबडाट करनारी, कठे पवो, गरम, दाहक, तीक्ष्ण चीजो खावी नहीं. सादो हळवो पातळो दीपन पाचन करनारो खोराक हमेशां लेवो. झाडो हमेशां साफ आवे ते माटे मोटी हरडे गरमाळानो गोळ के मींढोआवळनी फाकी गंधक साथे लेवी. दुध उपर रहेवाय तेम करवुं अथवा घणे भागे दुध लेवु. जंगली लोको पासे हरस कढाववा नहीं हुशीआर डाक्टर पासे शस्त्र क्रिया करावनी ए ठीक छे. हरवा फरवानी टेव राखवी. मोळी छास, सुरण, आंमळां, मीठां लींबु, दाळ, भात, एकली के दुधमां चोळेली खीचडी, घउनो के जवनी राब, माखण, कढी गायनुं घी खीर, मग तुवेर, द्राक्ष, गुलकंद, हरडेनो मुरब्बो, आंमळांनो मुरब्बो, परवळ वगेरे खावां. तेल, मरचां, अडद, चोखा वाल, चा, दारु, मेंदाना पदार्थो, बजारनी मीठाइ रींगणां, कोबीज वगेरे हानी कारक छे।

महार्श कुठार रस—पारद, गंधक, रससिंदुर, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, शांकरलोहभस्म शंखभस्म, हरडे, कडु, शिलाजीत, जवखार, गळो, आमळा, गोखरु गोरखमुंडी, पीपर घसेली सुखड, दारुहळदर, हळदर सममागे लइ खांडी पछी खडसलीयो दाडम, केवडानां पाटा कुंवार, सेदरडी तलवणी, शतावरी, गुळवेल, छ्यानां मूळ प्रत्येकना रसनी अकेक, तथा काळी धराखनी ७ भावना दइ चणा जेवडी गोळा वाळवी के भुकी राखवी. मात्रा ३-६ गोळी मध घामां के मध माखणमां चटाडवी. सुका तथा दुझना हरस मटे छे. ते शिवाय पित्तनां दरद, दाह पडतुं लोही, प्रदर, प्रमेह वगेरे दरदो मटे छे।

अर्शमुख लोह—नसोतर, चित्रो नगोड, भुंगळीया थोरनुं दुध, गोरखमुंडी, मोआंवला प्रत्येक तोला ३२ नो उकाळो करवो. पछी वावडींग तो. १२, सुंठ पीपर, मरी प्रत्येक तो. ३, हरडे, बेडां, आमळां प्रत्येक तो. ७, शिलाजीत तो. ४ त्रिफळामां मारेली लोहभस्म तो. ४८ बधांने उपल्या उकाळामां नाखी घाटुं थतां सुधी पकाववुं. भुकी राखवी अथवा चणोठी जेवडी गोळो वाळवी. मात्रा ३-६ गोळी पाणी साथे आपवी. बधी जातना सुका तथा दुझना हरस मटे छे. तेमज मंदाग्नि, पेटनां दरद, अजीर्ण, पांडुरोग, सोजा, लोहीबगाड, बरल, लीवर वगेरे दरदोमां पण उत्तम फायदो करे छे।

नित्योदित रस—पारद, गंधक, वछनाग, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म सममागे लइ चित्रो अने आदुरसनी ७ भावना देवी. मात्रा २-४ रति मधमां चटाडवाथी २१ दिवसमां बधा हरस मटे छे।

अर्शःकुठार रस—पारद तोला १०, गंधक तो. १०, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, वंगभस्म, माक्षिकभस्म प्रत्येक तो. ६ छ, अतिविष, बीलोगरभ, इंद्रजव,

करंजनां बी, हरडे, चित्रो सिंधालुण, कळगारी, मरी, दंतीमूळ, नसोतर, स्नुहीदुध, फुलावेलो टंकण, जवखार प्रत्येक तोला ४ चार साथे मेळवी गौमूत्र बधांथी ३ त्रणगणुं मुकी पकाववुं. पछी चणोठा जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३-४ गोळी पाणी साथे आपवी. सुका तथा दुझता हरस मटे छे ।

अर्शःकरी केसरी रस—पारद तोला १०, गंधक शुद्ध तो. २०, शिलाजित तो. १०, वंगभस्म, शांकरलोहभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म, अभ्रकभस्म प्रत्येक तोला ४ चार, मोतीपिष्टी, प्रवाळपिष्टी, माणिक्यपिष्टी, कांतभस्म प्रत्येक तोला ८ आठ लइ मेळवी काळो हंसराज, हरडेदळ रसवंती, पंचामृत अने काळीद्राक्ष प्रत्येकनी अकेक भावना दइ छांये सुकावी घुटी राखवुं. मात्रा ३-६ रति मध माखणमां चटाडवाथी बधा हरस लोहीस्राव, प्रदर वगेरे दरद मटे छे ।

करंजादि चूर्ण—करंज बी सुंठ इंद्रजव अरडुसीनां पान, सिंधालुण, हरडे, चित्रो ए बधां समभागे खांडवां. मात्रा ०। थी ०॥ तोलो मोळी छास साथे आपवुं. सुका के दुझता हरस सुकाय जाय छे ।

प्र. १—सुरणनां कंद उपर बबे आंगळ धोळी माटो चोपडी सुकावी अंगारामां पकाववुं. पछी ते सुरणना कटका करी तेलमां जीराथी वघारी सिंधालुण नाखी छास साथे खवराववाथी बधा हरस मटे छे ।

प्र. २—हरडे अने गोळ समभागे ०॥ थी १ तोलो मोळी छास साथे देवुं ।

प्र. ३—हरडे, इंद्रजव, करंजबी, काळोमंडूर समभागे खांडी बधाथी बमणी साकर नाखी ०। थी ०॥ तोलो मध माखण साथे आपवुं ।

प्र. ४—फोतरा साथे पलची तोलो ०। हमेशां खाइ जवी. १ महिनामां हरस मटे ।

प्र. ५—चमारदुधलीनां पान तोला २॥, गायनो छास साथे वाटी सवारमां पी जवुं, चोखानी खारीबरंज गायना दहींना घोळवा साथे खवराववी १४ दिवसमां हरस मटे ।

प्र. ६—द्राक्षासव दिवसमां ३-४ वखत पावो अथवा प्रवाळचंद्रपुटी तो. १॥, मुक्तापिष्टी तो. ०॥ साथे मेळवी २४ पडीकी करी माखणमां चटाडी उपर च्यवनप्राश अवलेह चटाडवो ।

प्र. ७—शांकरलोहभस्म तोलो १, स्फाटिकमणिभस्म तो. १, अभ्रकभस्म तो. ०॥ साथे मेळवी तेनी ४२ पडीकी करी सवार सांज माखण, साकर साथे अथवा कुटजावलेह साथे अथवा कुष्मांडावलेह साथे आपवुं ।

प्र. ८—राळ तो. ४, फोतरा सोती पलची तो. ४, पाषाणभेद तो. ४॥, साकर तोला ४॥ साथे खांडवुं. हमेशां गायना घोळवा साथे तो. १। सवा आपवाथी लोही पडतुं अटके, हरस मटे ।

प्र. ९—रसवंती तोलो ०। दहींमां वाटी पीवी तथा हरसने चोपडवी. ७ दिवसमां हरसने आराम थाय. गरम चीज खावा देवी नहीं ।

१० प्र. दरदवटी—हिंगळो तोलो ०।, आंकडानुं मूळ लीलुं तो. ०॥, लविंग दाणा ७ काळा मरी दाणा ७ बधाने वाटी चणोठी जेवडी गोळी करवी. २-४ गोळी पाणी साथे आपवी अने नं. ४ नो मलम चोपडवो. हरस खरी पडे।

११ प्रयोग—इंद्रजव अने खांड दरेक तोला ०॥ साथे मेळवी दहीं साथे ३ दिवस आपवाथी लोही पडतुं अटके।

१२ मलम—मीण राळ मोरथुथु सरखे भागे लइ वाटी गायना घीमां मलम करी चोपडवाथी हरस मटे।

१३ मलम—मोरथुथु अने फटकडी लइ फुलावी बारीक करी तेमां गायनुं घी मेळवी खुब घुंटवुं. हरसपर लगाडी ५ तोला मूळानां पान अने ५ तो. चणानी दाळ पलाळेली खाइ जवी ७ दिवस लगाडवु अने खावु तो हरस मटे।

१४ मलम—हीराकसी गायना माखणमां घुंटी लगाडवी. हरस मटे।

१५ मलम—सोमल शंखियो, डीकामारी, इन्द्रजव काळां मरी, कपूर, अफीण साकर हींग कडु, नवसार पकवेलो ए बधां तोला १० दश लइ दरेकने जुदुं जुदुं बारीक करी मेळवी ४ गणा माखणमां कालवी घुंटवुं. पछी रुमां मेलीने सफरामां मेलवुं मसा उपर चोपडवुं. तथा उपरनी कोइपण खावानो दवा आपवी।

१६ मलम—फुलावेली फटकडी तो. १, गायनुं घी तो. ४ खुब घुंटी लगाडवुं.

१७ अशोघ्न मलम—फणसनो खार, तुंबडोनां बी, पीपर, कुकडवेलनां बी, सिंधालुण, करंज बी, सडसडानां बी समभागे साथे वाटी बारीक करी गायना घी साथे मलम करवो. चोपडवाथी बधी जातना हरस सुकाय छे।

१८ लेप—सिंधालुण कुकडवेलनां बी सुरकामां के कांजीमां वाटी चोपडवाथी हरस खरी जाय अथवा सुकाय जाय।

१९ लेप—मालकांकणानां बीने पाणीमां वाटो चोपडवाथी हरसमां पडतुं लोही अटके, मटे।

२० लेप—हळदर, कडवी घीसोडी, थोरनुं दुध, सिंधालुण समभागे लइ पाणीमां के गौमूत्रमां वाटी चोपडवाथी बधा हरस मटे छे।

२१ लेप—करंजना बीने बकरीना मूत्रमां वाटो चोपडवाथा लोहीना हरस मटे.

२२ लेप—सरगवानुं मूळ अने आकडानां पानने वाटी चोपडवाथी हरस मटे.

२३ लेप—(वर्ति) पीलुडीना तेलमां रुनी वाट भींजावी गुदामां राखवाथी हरस खरी जाय छे।

२४ लेप—कंकु, मस काळी, मोरथुथु, बोदार दरेक अकेक रुपियाभार लइ लींबुरसमां घुंटी घाढुं थाय त्यारे दिवसे ४ वखत, राते ४ वखत चोपडवाथी ३ दिवसमां हरस मटे।

२५ लेप—(थेपली) अघेडाना पंचांगने खांडी लुबदी करी गुदानी वच्चे मुकी लंगोट बांधी दरदीने सुवरावी राखवो, ७ दिवसमां मसा हरस खरी जाय।

२६ लेप—(थेपली) साजीखार तो. ३, हींग तो. १, अफीण तो. ॥ फुलावेलो टंकण तो. ०॥ बधाने साथे चूर्ण करवुं पछी कुकडवेलने छाये सुकावो तेनुं चूर्ण करी राखवुं तेमांथी तोला ३ चूर्ण अने साजीखार विगेरेना चूर्णमांथी तो. ०। पा लइ मेळवी पाणीमां वाटी थेपली करो ते थेपलीपर साजीखारादि चूर्ण भभरावी थेपली हरस उपर बांधवी २१ दिवस बांधवी हमेशां कुकडवेलना पाननो भुको अने चूर्णनुं वजन उपर प्रमाणे लेवुं तो हरस खरी पडे ।

२७ लेप—सोमल तो. १, साबु तो. १, टंकण फुलावेलो तो. १, कथीलो तो. २, मोरथुथु तो. ०। बधां साथे वाटी कुकडवेलना रसमां घुंटी हरसपर लेप करवो उपर जुनुं रु मुकी पाटो बांधवो दिन ७ तो हरस खरी पडे ।

२८ लेप वटी—सोमल, मोरथुथु, कळीचुनो तथा धोळो काथो बधां सरखेभागे लइ प्रथम दरेकने जुदां जुदां वाटी पछी मेळवी पाणीथी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी जरुर पडे त्यारे १ गोळीने गौमूत्रमां वाटी लगाडवी आखा दिवसमां २-३ वखत लगाडे तो हरस पाकी फुटी जाय फुट्या पछी चोखा रांधीने दहींमां मेळवी उना उना बांधवा पाटो बांधवो आखा दिवसमां चोखा दहींनो पाटो ४ वखत बांधवो तो वगर मलमे रुझ आवे ।

२९ लेप वटी—सफेद सोमल कपूर काथो शीकोतरो पळीयो बधां सरखे वजने लइ पाणीमां घुंटी चण्या जेवडी गोळी वाळवी जरुर पडे त्यारे गोळीने पाणीमां घुंटी लगाडवाथी हरसना मसा मटे ।

३० लेप वटी—नवसार तोला ७ सात, आमलसारो गंधक तो. १॥, काथो धोळो तो. २ बधाने बारीक करी पाणीमां गोळीयो वाळी छाये सुकाववी. जरुर पडे त्यारे पाणीमां घसीने के वाटीने हरस उपर लगाडवुं. १४ दिवसमां हरस खरी पडे ।

३१ धुणी—पुरुषनां वाळ, सरपनी कांचळी, आकडानुं मूळ, खीजडानां पान समभागे खांडवां. धुंवाडी देवाथी हरस सुकाइ जाय ।

३२ धुणी—राळना भुकाने सरसीया तेलनी भावना देवी, पछी हरसने धुणी देवाथी पडतुं लोही अटके ।

३३ धुणी—भेंसना सींगडानो भुको तोला ४, हाथीदांतनो भुको तो. ३, कुकडवेल तो. ३, सुवादाणा तो. २, गधेडानां लींडा सुकां तो. २, शाळनां फोतरा तो. ३ साथे खांडी धुणी आपवाथी हरस मटे ।

३४ धुणी—भेंसनुं सींगडुं, उन्य, जोगणी, सुवादाणा बधां वाटी धुणी आपवी.

३५ धुणी—हाथीदांत तथा हिंगळो दरेक तोलो ०। लइ वाटो तेनां पडीकां ४ करी हमेशां धुंवाडी देवी हरस पाक्या होय, तणाता होय तो सुकाइ जाय ।

३६ धुणी—उंटकंटानां बीने इंद्रवळीना रसमां ७ दिवस भींजवी छांये सुकावी बोरडीना लाकडाना अंगारा उपर नाखो धुणी देवाथी मसा नीकळी पडे ।

३७ नागकेसरादि चूर्ण—नागकेसर, इन्द्रजव, साकर दरेक तोलो १॥ डोढ लइ तेनी ७ पडीकी करी दिवस ७ खवराववी. हरस मटे ।

३८ टंकण प्रयोग—टंकणखार फुलावी तोलो १॥ वाटी तेनी १४ पडीकी करी खजुर पेसी चीरी तेमां पडीको १ भरी ते पेसी खवराववी. ते उपर ४-५ पेसी सारी खवराववी. हरस जाय ।

३९ अजमाभस्म प्रयोग—अजमो शेर १ बाळी तेनी राख करो हमेशां तो. २॥ पाणीथी खवरावी पाणी भरेल टोपमां नग्न करी बेसारवो. हरस पडे ।

४० इंगोरियानी प्रयोग—इंगोरीयांबीज तोलो १, खांड तो. १. लींबुरस तो. ५ मेळवी पीवराववुं. ७ दिवस पीवराववाथी हरस जाय ।

४१ इंद्रजव प्रयोग—हमेशां तोला २॥ इन्द्रजव वाटो सुक्ष्म करी गायना अथवा भेंसनां दहींना घोळवा साथे घोळीने पावुं हरसनुं लोही पडतुं अटके ।

४२ खजूर प्रयोग—छास शेर ०॥, खजुर तोला ६ एकत्र करी पाणी शेर ०॥ नागकेसर तोलो ८। चोळी एकत्र करी पावुं. १४ दिवस पावाथी हरस मटे ।

४३ गंधकादि प्रयोग—गंधक शुद्ध तोलो ०।, त्रिफला तो ८।, खांड तो. ०॥ मेळवो हमेशां पाणी साथे खवराववुं तो हरसमांथी लोही पडतुं अटके ।

४४ साजीखार प्रयोग—साजीखार तोलो १, खजुर शेर १ साथे वाटी तेना लाडवा करवा. हमेशां १ प्रभाते खावो, उपर बाजरानो रोटलो, घी गोळ, मेळवी लाडवो खावो, तेना उपर दहीं गायनु रुचि प्रमाणे पीवुं. ७ दिवस खावाथी हरस नीकळी पडे, दुखे नहीं ने पीडा पण थाय नहीं ।

४५ नागकेसरादि पुडी—नागकेसर तोला ०॥ मरी तो. ०॥, इन्द्रजव तो १ साकर तो. १॥ ए सर्व औषध खांडी पडीकी ७ सात करवी, ते वासी पाणी साथे देवो. ३-५ के ७ दिवस सुधी देवी. सर्व जातना हरस मटे ।

४६ हिंगुलादि गोळी—हिंगळो तोलो १, वज तो. १, वावडींग तो. १, सिंधव तो. ४ जीरुं तो. ५, सुंठ तो. ६. मरी तो. ७, पीपर तो. ८, उपलेट तो. ९ हरडेदळ तो. १०. अजमोद तो. १२, गोळ तो. ७५ गोळी तो ०॥ नी करवी. मात्रा सवार सांज अकेक गोळी खावी. खारुं, खाटुं निषेध. हरस जाय ।

४७ सींगरोटी प्रयोग—सींगरोटीनो रस, गायनुं घी ए बे वानां हमेशां पाशेर पाशेर मेळवी पीवां दिवस ७ सुधी पीवाथी हरस नीकळी पडे ।

४८ हरडे प्रयोग—हरडे, तल, भिलामां समभागे वाटी गोळमां गोळी. खावी. हरस, पांडु ज्वर कुष्ट कास श्वास मटे ।

४९ भीलामा प्रयोग—भीलामां शेर १ पाणी शेर २ मां वाफवां, पछी ४ दिवस गायना दुधमां पकाववां. पछी घी शेर २. साकर शेर १ मेळवी हमेशां १-२ तोला खवराववुं. हरस मटे ।

५० हरस लेप—आकाननां पाननो रस तोला २॥ पीवो. क्रमीरोग तथा हरस जाय. इंद्रालफळ तथा बीज गौमूत्रमां घसी चोपडवुं. ३ दिवसमां हरस खरी पडे ।

५१ गुगळादि लेप—गुगळ लसण, लींबोळी, हींग सुंठ टाढा पाणीमां वाटी गोळी करवी. चोपडवाथी हरस पडी जाय ।

५२ रसवनी वटी—रसवंती तोला २, लिंबोळीमींज तो. ४, साजी तो. ९, चित्रो तो. ८, नागकेसर तो. १०. गोळ तो. २२ दरेक मेळवी गोळी ना ०॥ नी करवी. रोज सवारे १ गोळी खावी. पथ्यमां घउं चोखा खावा. खाटुं खारुं तजवु, हरस जाय ।

५३ गर्दभ धुणी—गधेडानां लिंडा छाये सुकावी वाटी चाळी हरस उपर घसावानां तथा धुणी देवी. खजवाळवाळा तथा बीजा हरस मटे ।

५४ गलजीभा प्रयोग—गलजीभी (मोंपाथरी) तोला ४ रोज चाववी दिवस ७-१४ सुधी तो हरस मटे ।

५५ हरस तंत्र—उंधाफुली तथा कंथेरी लइ सुवर्णना मादळियामां घाली अगरनो धुप दइ कडये बांधवु. दुझता हरस मटे ।

५६ हरस लेप—वाडदुधेलो रस चोपडवो हरस जाय ।

५७ हरस तंत्र—होरवणी शनीवारे नोतरवी रवीवारे लयाववी तेनी जड कडये बांधवी. हरसमां लोही पडतुं अटके पेचोटी ठेकाणे आवे ।

५८ हींगधुणी—हींग शुद्ध वाटी एकांतरा धुणी देवी. ७ दिवसमां हरस मटे.

५९ अर्शोघ्न लेप—साजीखार अने चुनो समभागे पाणीमां कालवी हरस उपर चोपडवुं. ठरे पटले लुगडे लुइ नाखवुं पम घडी २ बे ने अंतरे ३ वखत चोपडवुं. हरसमांथी गंधातुं पाणी नीकळे, ३ दिवस पछी राळ वाटी तेलनो करमो दइ घुंटी हाथे मर्दवुं, चोपडवुं. हरस जाय ।

६० अर्शोघ्न धुणी—वागुल विष्ठा. गेंडानां सींगनो छोल कबुतरनी चरक, भांगरानां बी समभागे खांडी धुणी देवी हरस जाय ।

६१ हरसनो गोळी—हींग, कडाछाल समभागे वाटी गोळी पाणीथी चणिया बोर जेवडो करवी. ७ दिवस खावी दुझता हरस मटे ।

६२ ओथमीजीरु प्रयोग—ओथमीजीरुं देशी तोला ४. गायनुं दुध तो. ३०, मध तो. २॥ नाखी पलाळवुं २ कलाक पछी पी जावु, राते सुती वखते पीवु. दस्त साफ आवे १ महीनो खावाथी हरस मटे ।

६३ हरस प्रयोग—जांगी हरडे तोला ३, घीमां तळेली हींमेज तो. ३, संचळ तो. ३, सुंठ तो. ४ खांडी ०॥ तोलो उना पाणीथी लेवुं हरस जाय ।

६४ राई तोलो ०। खांडी खाटी छास साथे पीवाथी हरस जाय ।

६५ इन्द्रजव तोलो ०। साकर साथे पाणीथी लेवा. १ महीनामां हरस जाय ।

६६ काळाहंसराजनो रस तोलो ०॥, साकर तो. ०॥ मेळवी २१ दिवस पीवुं. समुला हरस जाय ।

६७ कोठानो गर्भ तोला २ जुना गोळमां गोळी करी ७ दिवस खावी हरस मटे.

६८ कडाछाल, साकर मळी तो. ०॥ पाणीमां लेवी. हरसमां के झाडामां लोही पडतुं अटके ।

६९ धतुरानां पान, अरणीनां पान वाटी हरस उपर बांधवां. ७ दिवसमां हरस जाय. लोही पडतुं अटके, खजवाळ, बळतरा मटे ।

७० **हरसनो मलम**—मीण तोला २॥ घी तो. ५ भेळां गरम करवां. शुद्ध बोदार तो. १॥, अफीण तो. १॥, कनकपत्रनो रस तो. ५ नाखी मर्दवुं. पछे मसा उपर दिवसमां २ वखत चोपडवाथी ७ दिवसमां हरस जाय ।

७१ **थेपली**—तमाकुपत्र लीलां, गळजोभीपत्र लीलां वाटी थेपली करी हरस उपर बांधवी. ७ दिवसमां हरस नीकळी पडे ।

७२ **लेप**—हरडे माखणमां घसी चोपडवी. हरसमां बळतरा मटे ।

७३ **प्रयोग**—सुरण, हळदर वाटी चणा जेवडी गोळी करी दिवसमां ४-८ खावी. हरसनी खजवाळ मटे ।

७४ **लेप**—अफीण, धोळो वछनाग, झेरकोचलां पाणीमां घसी हरस उपर ३ दिवस चोपडवाथी हरस सुकाय जाय ।

७५ **हरस तंत्र**—अश्व विष्टा कडये बांधवाथी हरस जाय ।

७६ **प्रयोग**—इन्द्रजव पैसा २, सोनागेरु पैसा २, रसांजन पैसा १ वाटी पडी १४ करवी गायनी छास साथे १४ दिवस फाकवी. हरस मुळथी जाय ।

७७ **लेप**—इन्द्रजव तोलो १, रसवंती तो. १ प बेइ वाटी गोळी १६ करवी. नित्य गोळी १ पाणीमां देवी तथा पाणीमां घसी मसा उपर चोपडवी हरस जाय.

७८ **प्रयोग**—पलची, चित्रो, तज, देवदार, इन्द्रजव, वावडींग, बाळबिल्व सिंधालुण सुंठ, पीपर समभागे चूर्ण करवुं. पाणी साथे ०। थी ०॥ तोलो लेवुं. हरस जाय ।

७९ **प्रयोग**—भिलामा, काळातल, वावडींग, त्रिफळा भींढीआवळ, चित्रो समभागे चूर्ण तोलो ०। थी ०॥। पाणीथी देवुं. हरस जाय ।

८० **प्रयोग**—मजीठ तोला ५, रसवंती तो. ५, हीमेज हरडे तो. ५, साकर तो. १५ चूर्ण तो. ०। थी ०॥ दिवस १४ लेवुं. हरस जाय ।

८१ **हरस तंत्र**—जलपीपर (रतवेलीयो) शनीवारे नोतरीने रविवारे लयाववो पछी सोनाना मोदळियामां राखी कडये बांधवाथी हरसमां लोही पडतुं अटके.

८२ **लेप**—कुकडानी हगार, पारेवानी चरक, घुंस सरसव, धतुरानो रस मेळवी लेप करवाथी हरस खरी जाय ।

८३ **प्रयोग**—अरडुसानी छाल, चित्रो, इन्द्रजव, बाळबिल्व, सिंधालुण, सुंठ समभागे खांडी ०॥ तोलो गायनी छासमां पीवुं. ७ दिवसमां हरस जाय ।

८४ **धुंवाडी**—नागकेसर, सींगडानां कोंटा समभागे मेळा करो हमेशां १ रुपीया भार भुकीनी धुंवाडी देवी हरस मटे ।

८५ **हरसनी गोळी**—मोटो हरडेदळ पैसा ५ भार. मरी पै. १ जीरुं पै. १, पीपर पै. १, पीपरीमूळ पै. १, चवक पै. ३, चित्रो पै. ४. सुंठ पै ५, भीलामां पै. ८, सुरणकंद पै. १६. गुगळ पै. ८ भार सर्वथी गोळ बमणो मेळवी लाडु रुपया भारना करवा. गुदारोग हरस मटे, १ थी ३ खावा ।

८६ **प्रयोग**—दुधेली रस टां. ९, गौतक्र टां १८ पीवुं. हरस जाय ।

८७ **तंत्र**—पीपरनी वडवाइ शनीवारे नोतरी रवीवारे लाववी कडये बांधवाथी हरस जाय ।

८८ **प्रयोग**—गधेडानां लिंडां भाग १, साकर भाग १ पाणीमां आपवुं हरस जाय ।

८९ **तंत्र**—उभीरींगणीनां मूळ नक्षत्रना सूर्य होय त्यारे लइ कडये बांधवां हरस जाय ।

९० **हरस गळी पडे**—मामेजवो पंचांग छांये सुकावी खांडी टां. २॥, खांड टां. २॥ नित्य वासी पाणीमां देवुं दिवस ४९ देवाथी हरस गळी जाय ।

९१ **प्रयोग**—चमारदुधली पान १ रवीवारथी खवराववां बीजे दिवसे बे एम चढतां ७ दिवस सुधी पछी उतरतां एम १४ दिवसमां हरस जाय ।

९२ **हरसनुं लोही**—लाल खापरीयुं टां. ९ वारीक वाटी कडछीमां घाली लींबुरसमां खदखदावी रस बळी जाय भुको थाय पटले खरलमां घुंटी मरी टां. ०॥ पाणीमां पलाळी फोतरां उतारी चूर्ण करी मेळववुं साकर टां ०। मेळवी गायना माखणमां गोळी टां. ०॥ नी वाळवी. प्रभाते १ हमेशां देवी. खारुं खाटुं तजवुं. ७ दिवसमां दुझता हरस अटके ।

९३ **प्रयोग**—तांजळीयानो रस साकर साथे ३ दिवस पीवो हरस जाय.

९४ **प्रयोग**—सुरण, वज मुसळी, कडाछाल सुंठ समभागे वाटी छास साथे पीवाथी हरस जाय।

९५ **प्रयोग**—पारेवा विट तोलो ०। दुध पासेर साथे दिवस ७ पीवुं. हरस जाय ।

९६ **प्रयोग**—चित्राछाल टां. ५ रातीसोपारी टां. ५. हरडेदळ टां. ५ भिलामां टां ५. गुगळ टां. १० ए सर्वे वाटी गुगळ भिलामां भेळां कुटी गोळी २४ करवी. नित्य गोळी १ गायनी छास अथवा बकरीनी छास पासेर साथे खावी उपर घउ, खांड, घी, चोखा, दुध, तांदळीयानी भाजी जमवामां लेवुं. खाटुं खारु तेल. अथाणां तजवां. सर्वे जातना हरस मटे ।

९७ **प्रयोग**—भेंसना सींगडानो छोल करी घीनो करमो दइ राखवो. खाडमां अथवा कुलडीमां अग्नि माथे भुको नाखी गोदडुं ओढी मुख उघाडुं राखी धुंवाडो दिवसमां २ वखत एम २७ दिवस लेवाथी सर्वे जातना हरस जाय ।

९८ **प्रयोग**—भारंगो, चणाना फोतरां, दाडिमनां छोडीयां सुकां ए त्रण औषध बरोबर वाटी माखणमां गोळो सोपारी जेवडी खावी. ७-१४ दिवसमां हरस जाय. दुझता दुझता हरस मटे ।

९९ **प्रयोग**—तळावमांनी उखराडनो रस टां. ९, तेल टां. ९ एकठुं करी पावुं. उपर कमळकाकडीना १० मींज खवराववा. हरस जाय ।

१०० **प्रयोग**—मूळानां पान बाफी अगाशीमां मुकवां प्रभाते पाणी नीचोवी नाखी ते भाजीमां तळशो खोळ शेर ०। तथा तेल शेर ०। दिवस ३-५ के ७ पावुं. हरस जाय ।

१०१ **लेप**—चणोठी दाल चोखली करी गायना दुधथी वाटी गुदामां घसवुं. चोपडवुं हरस जाय ।

१०२ **लेप**—काळाधतुरानां डोडवां कोरो तेमां अफीण टां. ०। भरी उपर कपडमाटी करी बाळवां. ते राख पाणीमां वाटी गोळी चण्या प्रमाणे गुदामां राखे हरस जाय ।

१०३ **लेप**—काथो तोला २, कपूर ते।. १ पाणीथी गोळी चण्या प्रमाण. थुंकथी मसा उपर चोपडवी. हरस मुळमांथी मटे ।

१०४ **मस्स**—सोमल चणा १ भार. खारो टां. ५, चुनो टां. ५ ए त्रण वस्तुनुं पाणी करी मस्सा उपर चोपडवुं, उपर भांगनी थेपली बांधवी. एम करतां मस्सा सुकाय त्यारे उपला पाणीथी दोरो खरडी मसाने बांधी कडये बांधवो मस पडे.

१०५ **प्रयोग**—नारंगीमूळ कडये बांधवाथी हरस जाय. मुसळी गोमूत्रमां घसी पीवाथी हरस जाय ।

१०६ **प्रयोग**—कांकसीनां पान घी साथे तळी तेमां खांड समभागे मेळवी हमेशां टां ५ दिवस २१ सुधी खावाथी हरस मटे ।

१०७ **लेप**—सोमल टां. ०॥, केवडीयो काथो टां. ०॥, मनशील टां. ०॥, टंकणखार टां. ०॥ सर्वे सरसीयुं तेल गरम करी मेळवी मलम करवो. दिवस ७ मसा उपर चोपडी सुइ रहेवु. छेल्ले दिवसे दहीं चोखा बांधवाथी हरस समूळ पडे.

१०८ **लेप**—बकाननी लींबोळीनां मींज टां. २, मेख चोखुं टां ०।, सुरो-खार टां. १ लींबुरसथी गोळी चणा प्रमाण. लींबुरसथी मळद्वारे चोपडवुं गोळी १ अंदर रखाववी हरस जाय ।

१०९ **धुंवाडी**—लिबोळीमींज, सींगडानां कांटा, हिंग समभागे धुणी देवी हरस जाय ।

११० **धुंवाडी**—हीराबोळ, हळदर, कडवीतुंबडीनां बी सर्वे समभागे एकत्र करी धुणी दिवस ३ देवी. समुळा हरस नीकळी पडे ।

१११ **प्रयोग**—अरलुमूळ दहीं साथे ०।थी०॥ तोलो पावुं पित्तना हरस जाय

११२ **प्रयोग**—मजीठ १, उपलेट २, चंदन ३, अजमोद ४ बकरीनां दुधथी मास १ पीवुं. दुझता हरस मटे ।

११३ **लेपवटी**—हळदर १, चणोठी दाल २, आमळां ३ गोमूत्रमां वाटी गोळी चणियाबोर जेवडी करवी. गुदामां रखाववी हरस जाय ।

११४ **लेप**—आमलसारो गंधक, फटकडी, नवसार समभागे वाटी पाणीथी हरस पर लगाडवुं. उपर चोखा रांधेला तथा दहींना पाटा ३ बांधवां हरस जाय.

अजीर्ण

अपचो—अजीर्ण

अनात्मवंतः पशुवद् भुंजते येऽप्रमाणतः ।
रोगानीकस्य ते मूलमजीर्णं प्राप्नुवन्ति हि ॥

"जे मूर्ख लोको पशुनी पेठे हद उपरांत खाय छे तेओ अनेक रोगोना कारणरूप अजीर्णने मेळवे छे ।"

कारण—अजीर्ण ए अग्निमांद्यनोज प्रकार छे. अग्निमांद्य तात्कालिक उपद्रव कर्ता नथी होतुं पण दीर्घ काल सुधी टकनारुं अने न जाणी शकाय तेवी रीते धीमे धीमे शरीरने हानि पहोंचाडनारुं छे. त्यारे अजीर्णनु परिणाम तत्काळ देखाय छे. पाचनशक्ति उपरांत खोराक बहु लेवाथी के वखतो वखत खांड साकरवाळां मिष्टान्न खावाथी काचां कोरां, बजारनी मिठाइओ, चा, बिस्कीट वगेरे कृत्रिम खोराक पेटमां नाखवाथी, अनियमित खोराक लेवाथी, नहीं पच्या उपर खावाथी, चाव्या विना उतावळे खावाथी, दारु भांग, गांजो तमाकु, चाना बंधाणथी, रात्रे उजागरो दिवसे निद्रा, अनियमित उंघ लेवाथी, घणा अपवास, आइस्क्रीम शरबत जेवां अति शीत पदार्थोना बहु उपयोगथी पेटमां भुखना प्रमाणमां जमवानी टेव न राखवाथी तथा जमती वखते मन प्रसन्न नहीं राखवाथी क्रोध करवाथी अजीर्ण थाय छे. बहु पाणी पीवाथी, नियमित वखते तथा प्रकृतिने माफक आवे एवो खोराक न लेवाथी, मळमूत्रनो वेग रोकवाथी, इर्षा, भय, क्रोध, लोभ, द्वेष वगेरे दुर्गुणोने लीधे तथा कोइ दरदने अंगे भुख ओछी लागे छे, अथवा नथी लागती तेने लीधे अजीर्ण थइ आवे छे ।

चिन्ह—कोइने झाडा एकदम बंध थाय छे अथवा तो झाडा वधी पडे छे झाडा थइ नहीं पचेलो भाग नीकळी जाय तो तुरत नीरांत थाय छे पण जो झाडो बंध थइ जाय तो भयंकर स्थिति थइ पडे छे. भुख बंध थाय छे, मोढे मोळ, ओडकार, छातीमां दाह, पेटमां दरद, शूळ, चुंक, दुर्गंधी अपान वायु, श्वासनो अवरोध, माथामां पीडा, जीणो ताव, उंघ उडी जवी वगेरे चिन्हो जणाय छे. दीर्घकाल सुधी आ दरद लंबाय तो दरदी गळतो जाय छे एकदम नबळो पडे छे, पीळो पडी जाय छे. अने अतिसार के संग्रहणीनुं दरद थाय छे।

आमाजीर्णमां शरीर भारे लागे, उबको आवे, गाल अने आंखनां पोपचामां सोजो चडे, खाधेला अन्नना गंधना ओडकार आवे, विदग्धाजीर्णमां भ्रम तरश, मूर्च्छा, पित्तनो उपद्रव, धुंवाडा साथे खाटा ओडकार, परसेवो बळतरा थाय, विष्टब्धाजीर्णमां शूळ नीकळे, आफरो चडे, वायुनो उपद्रव थाय, मळ के अधो वायु छुटे नहीं शरीर अकडाइ जाय, मन गभराय, शरीरमां त्रोड, दुखावो थाय. रसशेषाजीर्णमां खोराकपर अभाव थाय, छातीमां बोजो लागे शरीर भारे जणाय ।

पथ्यापथ्य—हळवो खोराक लेवो, वखतसर भुख जेटलुं पची जाय तेवुं जमवुं, दस्त पेशाबनो वेग रोकवो नहीं, रात्रे उजागरो करवो नहीं, बहु लीलुं शाक खावुं नहीं बजारनी मीठाइ, वाइडा मिष्टान, काचुं कोरुं खावुं नहीं, अजीर्ण

मालुम पडे के तुरत खावानुं बंध करवुं, अपवास-लांघण करवी. पाणी सिवाय कांइ पेटमां नाखवुं नहीं, पाणी पण तरस लागे त्यारे अथवा थोडे थोडे वखते घुंटडे घुंटडे पीवुं २ थी ३ अपवास थया पछी अजीर्ण मटी गयुं छे एम जणाय त्यारे प्रवाही गरम गळपण विनानो पाचन थाय तेवो स्वादिष्ट हळवो खोराक थोडो थोडो लेवो अने ज्यारे भुख खुब लागवा मांडे ते पछी रोटली रोटला वगेरे खावुं. पेटमां जरा पण बादी जणाय के तुरत लांघण करी नाखनारने कदी पण अजीर्ण थतुं नथी अथवा दर अठवाडीये के पखवाडीये नकोरडो अपवास पाणी सिवाय कांइ पेटमां नहीं नाखनारने बादी के अजीर्ण थतुं नथी. अपवासनी साथे दापन पाचन औषध पण लेवां. दीर्घकाळनुं अजीर्ण होय तेणे हमशां एक बे झाडा साफ आवे तेवी दवा लेवी चा काफी. तमाकु वगेरे बंधाण होय ते छोडी देवुं. दिवसमां बे वखत गरम ताजुं भोजन करवुं वखतो वखत नास्तानी टेव छोडवी. चावीने खावुं, जीभने वश राखवी जमती वखते मन आनंदमां राखवुं जमता जमता जरापण क्रोध न करवो के स्वभावने जलद थवा देवो नहीं ठंडीनी के चोमासानो मोसममां जाडां के गरम कपडां पहेरी राखवां. उनाळामां खुल्ले शरीरे रहेवुं. पाणी स्वच्छ पीवुं. चोमासामां कुवानुं के बीजुं पाणी अस्वच्छ होवानी शंका पडे तो गरम करी गाळो पीवुं अने मन हमेशां प्रसन्न राखवुं. हमेशां नरणेकोठे पांच कोगळा वासी पाणी उठीने तुरत सवारमां पीवुं ।

अजीर्ण कंटक रस—पारद तोलो १ गंधक तो. १, मरी तो. २ साथे मेळवी बेठीभोरींगणीना फळना रसनो २१ भावना दइ चणाठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-८ गोळी पाणी साथे आपवी. बधी जतना अजीर्ण अने कोलेरामां उत्तम छे।

भास्कर रस—पारद, गंधक, वछनाग, सुंठ. पीपर, मरी, टंकण, जीरुं प्रत्येक अकेक तोलो, अने लोहभस्म, शंखभस्म, अभ्रकभस्म, कोडीभस्म प्रत्येक तोला २ बे, लविंग तोला १६ बधाने साथे मेळवी बारीक करी पाणीमां चणाठी जेवडी गोळी वाळी छाये सुकाववी. नागरवेलना पान साथे ३-६ गोळी चावीने खाइ जवी. अजीर्ण, मंदाग्नि, शूळ, कोलेरा ए दरदोमां आपवी ।

पशुपतिनाथ रस—पारद, गंधक, हिंगळो, सुंठ. पीपर, मरी, लविंग, सिंधालुण, संचळ, वडागरुं, हींग, लोहभस्म, कपूर, हरडे, टंकणखार, झेरकोचलां, शंखभस्म, शुक्तिभस्म बधां सरखे भागे लइ खांडो लींबुना रसमां घुंटी चण्या जेवडी गोळी वाळी छाये सुकववी. मात्रा ३-६ गोळी पाणी साथे आपवी अथवा ३ गोळी सवारे जमीने तुरत अने ३ गोळी रात्रे जमीने तुरत पाणी साथे आपवी. अजीर्ण, मंदाग्नि, अरुचि, मोळ, गुल्म, शूळ, बरल, गांठ, लीवर, ढाळो गांठ तथा पेटनां बधां दरदमां उत्तम छे ।

अग्नितुंडी—शुद्ध पारद, गंधक, शुद्ध वछनाग, अजमोद, हरडे, बेडां, आमळां, वावडींग, मीठुं, सुंठ. पीपर, मरी, जवखार, जीरुं, संचळ प्रत्येक अकेक तोलो, अने शुद्ध झेरकोचलां तोला १६ साथे मेळवी लींबुरसमां चणोठी जेवडी गोळी करवी. मात्रा २-४ गोळी नवशेका पाणी साथे आपवी ।

शंखवटी बृहद्—पीपरीमूळ चित्रो, दंतीमूळ, पारद, गंधक, पीपर, जवखार, साजीखार, सुरोखार, सिंधालुण, संचळ, वडागरुं मीठुं, मरी, सुंठ, वछनाग, बोडीअजमोद, गळो, हिंग, आंबलीनो क्षार प्रत्येक अकेक तोलो, अने शंखभस्म तोला २ साथे मेळवी लींबु, दाडम अने बीजोरु प्रत्येकना रसना अकेक भावना आपी वाल वालनी गोळी वाळवी. मात्रा २-६ गोळी छास साथे के उना पाणी साथे आपवी. मंदाग्नि, हरस, संग्रहणी, बरल, पथरी पेटनां दरद, कृमिरोग, पांडुरोग कबजीयत वगेरे रोगोमां अपाय छे अजीर्ण माटे खास उपयोगी छे।

अजीर्ण भास्कर रस—पारद तोला ५, गंधक तो. १०. लोहभस्म तो. ६, शंखभस्म तो. ८, वछनाग, जवखार, सुरोखार, टंकणखार प्रत्येक तोला ४ चार, लविंग, तज, सुंठ, पीपर, मरी, सरगवाना बी, वावडींग, हिंग, बोरडीना लाकडांनी राख, सिंधालुण, संचळ, मीठुं, वडागरुं, अजमा, जीरुं, झेरकोचलां, करंजना बी प्रत्येक तोला ३ त्रण बधांने साथे खांडी मेळवी तेने गोदडीया लींबु अने आथणीयां लींबु बेइना रसनी ३ त्रण भावना दइ चणा जेवडी गोळी वाळवी. सवारे जमीने तथा सांजे जमीने ३ त्रण गोळी पाणीमां देवी. मात्रा १० गोळी सुधीनी छे. हरस, अजीर्ण, गुल्म, मंदाग्नि, बरल आफरो, कबजीयत वगेरे पेटनां बधां दरदमां अपाय छे।

वडवानल चूर्ण—सिंधालुण १, पीपरीमूळ २, पीपर ३, चवक ४, चित्रो ५. सुंठ ६ हरडे ७ तोला लइ साथे खांडी राखवुं मात्रा बे आनीथी पावलीभार नवशेका अथवा गरम पाणी साथे देवुं.

अजीर्णहर रस—पीपर, पीपरीमूळ, मरी सुंठ टंकणखार, अकलकरो, नवसार, मीठुं दरेक तोला ४ चार, पारो तो. १. गंधक तो. १ बधां भेळवी लींबुना रसनी ३ भावना दइ सुकावी भुको राखवो. सवार सांज बेआनीभार पाणी साथे लेवुं।

गंधकवटी—गंधक नाकछींकणो, पीपरीमूळ, पीपळा काकडा शींगी, तज बधां समभागे लइ खांडी लींबुरसमां वाल वालनी गोळी वाळवी. पाणी साथे बबे गोळी खावी।

हुताशन चूर्ण—हरडे, सुंठ, पीपर, आमळां, मरी, बेडां, टंकणखार, सिंधालुण, वडागरुं, बीडलुण, साजीखार, संचळ, मींढी, नसोतर, भोरींगणी, भांगरो बधां खांडी कुंवारना रसनी अने लींबुना रसनी ३ त्रण भावना दइ सुकावी चाळी राखवुं. मात्रा ०। तोलो पाणी साथे. भुख लागे अन्न पची जाय।

वडवामुख चूर्ण—फुलावेली हिंग, सुंठ, पीपर, काळांमरी, पलची, काळोजीरी बापुंभा, हरडे, वरीयाळी, संचळ, तज, मींढी, अजमो, टंकण फुलावेल, जवखार, वडागरुं, बीडलुण, चण्यानो खार, सिंधालुण, देवदार, सतावरी, नसोतर, आंकडानां फुल, इन्द्रजव, लविंग, वछनाग शोधेलो, दाडमनी छाल बधां सरखेभागे खांडी कपडछाण करी तेमां गंधक तोला ५ नाखी लींबुरसमां वाल वालनी गोळी वाळवी. सवार सांज २-३ त्रण गोळी पाणी साथे खावाथी भुख घणी लागे, पेटनां बादी वायु मटे।

दीपन चूर्ण—नवसार तोलो १, पीपर तो. १, लविंग तो. ०।, एलचो-दाणा तो. ०। बधांने खांडी कपडछाण करी ०। तोला पाणी साथे देवुं. भुख लागे खोराक पचे।

अग्निभैरव रस—त्रिमळीनो कटको तोला २ नो लइ तेने एक माटीनी ठोबमां मुकी चुले चडावी नीचे धीमो अग्नि आपी लींबुना रसनां टीपां नाखतां जावां, ४० तोला रस बळी रहे एटले ते हिंगळामां पारो तोला २ नाखी घुंटी तेमां अकलकरो, लविंग, जायफळ, जावंत्री, सुंठ पीपर मरी खरसाणी, अजमो समदरशोषनां बी, काकडाशींगी दुधमां पकावेलो बछनाग अफीण, भांग शोधेली दरेक तोला २ बे लइ खांडी कपडछान करी मेळवी भांगरानो रस तोला १८ नाखी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. सवार सांज १-२ गोळी पाणी साथे लेवी. भुख घणी लागे अजीर्ण मटे. पेटनो वायु, पातळा झाडा अजीर्ण-मंदाग्निने लीधे रहेती बेचेनी मटे।

अग्निमांद्य

अग्निमांद्य मंदाग्नि रसशेषाजीर्ण-भुख न लागवी.

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाच्च संधारणात्स्वप्नविपर्ययाच्च ।
कालेऽपि सात्म्यं लघु चापि भुक्तमन्नं न पाकं भजते नरस्य ॥

स्वरूप—पाचक इन्द्रियनी क्रियामां कांइ अडचण थवाथी अन्ननुं पाचन थवुं जोइए तेवुं थतुं नथी. खाधेला अन्ननुं पाचन थइ तेना पोषक पदार्थ द्वारा शरीर वृद्धि पामे छे अने उष्णता मळे छे. ते क्रियाने पाचन क्रिया कहे छे. मों, अन्न नळी (गळानो मार्ग) पक्वाशय नानां आंतरडां अने मोटां आंतरडां एम ए ३० फुट लंबाइनी नळी मोंथी शरु थइ गुदा सुधी पहोंचे छे तेने पचनेंद्रियो पण कहे छे. खाधेला अन्ननुं पाचन थइ ते रक्त वगेरेमां परिणाम पामी शरीरमां फेलाइ शरीरव्यापार व्यवस्थित चालु थाय छे अने निरुपयोगी भाग बहार पडे छे. अन्न पाचन थवु एटले तेनुं द्रवण थइ लोही बनवुं ए छे. अन्न चाववामां आवे त्यारे अनेक लालोत्पादक पिंडद्वारा अमृतरस उत्पन्न थइ अन्न साथे मळी पेटमां जाय छे अने तेने जठर रसनी मदद मळे छे. जठरस्नायुओनी मददथी अन्न उपर मंथननी क्रिया थतां ते अन्न जठररसद्वारा पूर्ण मिश्र थइ त्यांथी यकृत् शिराद्वारा यकृत्मां जाय छे त्यां तेना पर अमुक क्रिया थइ रक्ताशय-हृदयमां जाय छे अने त्यांथी आखा शरीरमां फेलाय छे ए प्रमाणे आपणे खाधेला अन्ननी व्यवस्था थाय छे. कोइ कारणे तेमां विघ्न आवे छे त्यारे अग्निमांद्यनो रोग थाय छे।

कारण—सुधरेला जमानाने अनुसरता चा काफी कोको बीडी सीगारेट वगेरे व्यसन, अतिविषय, गीचवस्ती, बेठाडु प्रकृति, स्त्रीओने दळवुं, भरडवुं, पाणी भरवुं, रसोइ करवी, खांडवुं, छास फेरववी, वासण मांजवा वगेरे शरीरने कस-नारां तथा आंतरडां स्नायुने मजबुत करनारां घरनां कामकाज रुपी कसरतनो अभाव थइ गयो. बधां काम यंत्रोथी अने नोकरोथी कराववां चालु थयां. पुरुषो

नोकरी के धंधाने अंगे बेठाडु थया परिश्रम नहि करनारा वर्गने शारीरिक व्यायाम नहीं मळवा छतां पेटने बोजा रुप के नुकशान कारक वस्तुनुं भरणु थयाज करे छे. कांचां कोर्श खावां, अनेक व्यसनो एमां सहायक बने छे. गादी तकीये के खुरशी उपर बेसी रहेवानीज टेव के फरजने लीधे अग्निमांद्यनां दरदे प्रजामां मोटो प्रवेश कर्यो छे. महेनत मजुरी के शारीरिक परिश्रम करनारा वर्गमां आ दरद बहु ओछुं जोवामां आवे छे. आ दरदने अंगे बीजा अनेक रोग उत्पन्न थवानो संभव रहे छे. सुखी गर्भ श्रीमंत लोकोने व्यायाम मळतो नथी छतां पेटमां बोजा वध्येज जाय छे. सीनेमा नाटक चेटक जोवा, उजागरा, विविध अन्नपान, मिष्टान्न, मेवा, बजारनी मीठाइओ, नास्ता, दारु, मांस, चाव्या विना गळये जवुं वगेरे कारणने लीधे नबळां पडतां आंतरडां वधु नबळा बनी अग्निमांद्यनुं हमेशनुं दरद उपजावी मनुष्योने अल्पायुषी बनावे छे. पोतानी गफलती-जीभ वश नहीं राखवानी टेवने लीधे अनेक राजा महाराजा के श्रीमंतोये लाखो रुपी-यानी दोलत छोडी काळने आधिन बनवुं पडे छे ।

लक्षण—गळामां खाटा ओडकार, चचरका पेटमां वायुनो भरावो. झाडा. खोराक उपर रुचि ओछी. पचे नहीं, वखतसर भुख लागे नहीं, माथुं दुःखे, जीभ उपर छारी जामे, मोढामां लाळ के चिकाश देखाय, कोइवार मोळ उलटी थाय, कोइवार मोढामां चांदां पडे, शरीर ठंडु, चीकणुं, हाथ पग आंखो बळे, हरवा फरवा कामकाजमां उत्साह ओछो थाय, छातीमां धडको स्वभाव चिडीयो थाय, अने मन कोइ काममां परोवाय नहीं ।

पथ्यापथ्य—खुब चावीने खावुं, चा काफी कोको दारु वगेरे व्यसन छोडवां, खाखा करवुं नहीं, नियमित बे वखत जमवुं, वधु पडतुं खावुं नहीं, जमती वखते मन शांत राखवुं, पाणी रुचि प्रमाणे पीवु, स्त्री अने पुरुषे शारीरिक श्रम बने तेटलो करवो. खुल्ली हवा लेवी, हमेशां दस्त साफ आवे तेम करवुं, उजागरा करवो नहीं. हमेशां शरीर चोळीने गरम के ठंडा ठीक पडे शरीरने प्रिय लागे तेवा पाणीये नहावुं ।

अग्निमुख चूर्ण—साजीखार, जवखार, चित्रक, काळीपाठ, करंज, पंच-लवण, पलची, तमाल, भारंगी, वावडींग, हिंग, पुष्कळमूळ, कचुरो, दारुहळदर, नसोतर, मोथ, वज, इन्द्रजव, कोकम, जीरुं, आमळां, हरडे, कलोंजी, अमलवेत आंबली, अजमोद, देवदार, अतिविष, घउंलो, पळांसवी, गरमाळो तल, मरवो, सरगवो, कोयलानी अने खाखरानी राख, मंडूरभस्म बधां समभागे लइ ३ दिवस बीजोराना रसनी, ३ दिवस सुरकानी अने ३ दिवस आदुना रसनी भावना देवी. मंदाग्नि, अजीर्ण, गुल्म, बरल, हरस एमां उत्तम छे. मात्रा ०। थी ०॥ तोलो पाणी के छास साथे आपवुं ।

अग्निकुमार रस—पारद, गंधक, टंकण वछनाग, वराटिका भस्म, साजीखार, जवखार, पीपर, सुंठ प्रत्येक अकेक भाग, मरी ८ भाग लींबुना रसनी १ दिवस भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी करवी. मंदाग्नि पेटनुं शूळ वायु तथा आफरामां अपाय छे. मात्रा २-३ गोळी पाणी के छासमा ।

छुटे नहीं वेढ रोकाइ जाय, गळे शोष पडे तरश लागे कोठामां गयेलो खोराक सलवाइ जाय ।

असाध्य चिन्ह—जे दरदीना दांत होठ नख काळा थइ जाय, भान ओछुं थावा मांडे, उबको आवे पण उलटी करी अन्न बहार काढी नाखवानी शक्ति हराइ गइ होय, आंख्युं उंडी उतरी जाय, साद बेसी जाय, सांधा ढीला थइ जाय एवां चिन्हवाळो दरदी जीवे नहीं ।

उपचार—एरंडीया तेलनी पीचकारी देवी, तेलथी पेट चोळवुं, दरदी बळवान होय तो उलटी कराववी, कोइपण उपाये मळ मो वाटे के गुदा वाटे बहार नीकळे तेम करवुं. महासरस्वती सुरा, मृतसंजीवनी सुरा वगेरे पावुं, ब्रांडी पेटे चोळवी शेक करवो एरंडीनां मींज बाजरानो लोट साजीखार संचळने खदखदावी तेनुं बंधाण करवुं गरम पाणी पेटपर रेडवुं ।



विसूचिका—कोलेरा

विसूचिका कोलेरा-कोगळीयुं हुंटीयुं, छलकवा, हैजा, महामारी वगेरे नाम छे।

न ते परिमिताहारा लभंते विदितागमाः ।
मूढास्तामजितात्मानो लभन्तेऽशनलोलुपाः ॥

कारण—आ दरद जे देश निचाणमां आवेला होय, भेजवाळा होय त्यां दर वर्षे उनाळा के चोमासामां फाटी नीकळे छे, कोइवार गमे ते देशमां कोइपण कारण विना हवाना बगाडथी मरकीनी पेठे फाटी नीकळे छे, कोइवार आहार विहारना अनियमितपणाथी, रेल्वेनी मुसाफरीमां, काचां, कोरां, टाढां, वासी के सडेलां पदार्थो खावामां आववाथी, लांबी मुसाफरीनी हाडमारीथी, खराब, गंदु, गधातुं, तळाव टांकां वगेरेनुं बगडी गयेलुं पाणी पीवाथी, अजीर्ण उपर जमवाथी वगेरे अनेक कारणोथी आ दरद लागु पडे छे माणसनी भुलथी थयेलो कोलेरा चेपी नथी पण हवा बगडवाथी फाटी निकळेलो कोलेरा चेपी छे, तो पण स्वच्छता राखनार अने पेटने संभाळनार माणस कोलेराना दरदीना सहवास छतां बची शके छे ।

चिन्ह—घणाने जलदी भयंकर असर थाय छे ते जलदी मृत्यु पामे छे. केस लंबाय छे तेने सारवार करवानी तक मळे छे. केटलाकने साथे ताव पण होय छे. केटलाकने झाडा वधु तो कोइने उलटी वधु होय छे कोइने श्वासनुं रुंधन थाय छे. प्रथम कठण पछी पीळाश पडता अने पछी सफेद झाडा थवा मांडे छे. पछी उलटी शरु थाय छे. कोइ केसमां उलटी मुदल थती नथी अने झाडा ज वधी पिंडीनां गोठलां चडवा मांडे छे. कोइ कोइने उलटी सखत जोरमां थइ प्रथम अन्नादिक अने पछी चिकणुं पाणी के लोही निकळे छे. उलटी ओछी थाय तेने कोलेराना झेरनी वधु असर थाय छे अने दरद भयंकर रुप ल्ये छे. झाडा उलटी साथे पेटमां, काळजामां, नाभीमां के पेडुमां दुखावो थाय छे. झाडा उलटी

अने झाडा वधवानी साथे शरीरनी गरमी ओछी थती जाय छे. शरीर स्पर्शमां ठंडु लागे छे. शरीरनी गरमी ओछी थाय तेम तेम तरस वधु लागे छे. पछी हाथे पगे गोठलां चडे छे. प्रथम पगनी पींडीमां पछी हाथमां अने पछी आखा शरीरमां गोठलां वळे छे. त्यारे स्नायुओ सखत अने गांठा गांठा जेवां लागे छे. आंखो ऊंडी उतरे छे. चेरो फीको, चिंतातुर, परसेवो चीकणो, माथे फेर चकर नाड क्षीण पाणीनी घणी तरश, पेशाव बंध, चामडी काळाश पडता रंगनी, गाल बेसी गयेला होठ काळा सुका, दांत खुल्ला देखाय, दांत पर छारी वळे, अने बेहद तृषा वधी जाय छे. दरद वधी जाय त्यारे कांडा पासे नाडी क्षीण थती अदृश्य थाय छे. शरीरनी गरमी ९५ थी ८८ सुधी कमी थइ जाय छे छेवटे मूर्च्छा आवे छे।

कोलेरा मटवानां चिन्हो—झाडा उलटीनो समय लांबो थतां छेवटे बंध थाय छे. शरीरमां १०१ थी १०२ डीग्री ताव चडे छे. झाडा बंध थया पछी थोडे वखते एकाद पीळा रंगनो झाडो थाय छे. पेशाब शरु थाय छे. तरश ओछी लागे छे।

कोलेरा चालतो होय त्यारे पाळवाना नियमो—हमेशां नरणे कोठे लींबडानां ३० थी ४० पान खावां. पेटमां भुख अहोनिश रह्या करे तेटलो अल्पाहार करवो, बे वखत अने बनी शके तो एकज वखत १२ वागे गरम भोजन लेवुं. पाणी उकाळी त्रांबाना साफ वासणमां ठारी पीवुं. दुध उकाळीने थोडी साकर नाखी पीवुं. दहीं के कांइ पण वासी चीज खावी नहीं. खावानां अन्न ढांकी साफ करवी वापरवां. खोराक हळवो सादो जलदी पची जाय तेवो लेवो. मिष्टान्न पदार्थ, बजारनी मीठायुं, रांध्या विना खवाती कोइ पण बजारनी चीज खावी नहीं. उपवास करवा नहीं. बाळकोने माटे संभाळ राखवी. दुध पीनाराने हर वखत गरम करेलुं दुध पावुं. अने खोराक लेनारा बाळकोने दरेक वखत गरम खोराक आपवो. लीलो सुको मेवो बीलकुल खावो नहीं. शाक भाजी खावां नहीं. जुलाब लेवो नहीं. झाडो कबज रहेतो होय तो २-४ आरोग्यवर्धनी गोळी के मधुविरेचन २ आनीभार रात्रे सुती वखते लेवुं. मकाननी आसपास के अंदरनी जग्या साफ राखवी. खुल्ली हवा तथा पुष्कळ तडको मळतो होय तेवा मकानमां रहेवुं. आ दरद चालतुं होय त्यारे नीचेनी चा दिवसमां २-३ वखत पीवाय तो वधु सारुं. सुंठ तोलो १, मरी तो. ०॥, पीपर तो. ०। तज तो. १. लविंग तो. ०॥, चोपचीनी तो. २. तुळशीनां पान छाये सुकावेलां तो. ५, लीलो चा छाये सुकावेलो तो. १० बधां साथे खांडी शीशो भरी राखवो. हमेशां १ रतल पाणीमां ०॥ तोलो भुकी तथा थोडी साकर नाखी उकाळी तेमां थोडुं गरम दुध नाखी रुचि प्रमाणे पीवुं. जेओ तुळशीना लीलां पान हमेशां मेळवी शके एम होय तेमणे बधां वसाणामां तुळशीनां पान नाखवां नहीं पण उकाळो करती वखते ०॥ तो. पान नाखवां।

पथ्यापथ्य अने सारवार—दरदीने सुकी खुल्ली हवा प्रकाशवाळा ओरडामां राखवो. पाणी उकाळी त्रांबाना ठाममां ढांकी राखवुं ते पाणीमां १० रतले तोलो मीठुं नाखवुं हशे तो वधु सारुं अथवा तुळशीना पाननी साफ कपडामां

पोटली बांधो पाणीमां नाखवी, ते पाणी थोडुं थोडुं पावुं कपडां पथारी दिवसमां २-३ वखत बदलवां. मळमूत्रादिवाळां थाय तो तुरत बदलवां. मळमूत्र उपर तुरत घणी राख नाखतुं जवुं अने तुरत साफ करी नाखवुं. कर्पूरासव के अहिफेनासव ½ गणुं पाणी साथे मेळवी थोडो थोडो पावो. गोठलां वळे त्यां आंगे तथा महानारायण तेल चोळवुं आखे शरीरे चोळाय तो वधु सारुं. ते न होय तो तलना तेलमां लीमडानां पान ककडावी ए तेल चोळवुं झाडा उलटी बंध करवानी दवाओमांनी २-३ साथे मेळवी आपवा मांडवी. २-३ कलाके दवा बदलाववी. ओछा अदकी मात्रा करवी अथवा एक बे काढो नाखी नवी एक बे उमेरवी. आमां लखेली वधी दवाओ लागु पडे छे विचार करी योजना करवी. कस्तूरी रती २, कपूर रती २ अने लसणनो रस तोलो ०। साथे मेळवी कोइ पण आसव के ब्रान्डी साथे मेळवी २-३ वखत पावुं. पेटे पेडुंये के ज्यां आंकडी आवती होय के गोठलां चडतां होय त्यां लसण के डुंगळीनो रस चोळवो तथा कोरे कोरो सुंठनो भुको घसवो ।

विसुचीकालान्तक रस—रससिंदूर तोला ८ पारद तो. ४, गंधक तो. ४, अभ्रकभस्म तो. ६, वछनाग तो ४ सुंठ, टंकण, चवक, चित्रो, नगोडनां बी कनकबीज, पीपरीमूळ साजीखार, संचळ, जवखार, अघेडानो क्षार, मरी बोडी अजमोद, शेकेली हिंग, शंखभस्म वज, मोथ प्रत्येक बबे तोला साथे मेळवी आदुना रसनी १, लींबुना रसनी १ तथा नागरवेलनां पानना रसनी १ भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा दर अर्धी कलाके बबे गोळी पाणी साथे आपवी. दरेक गोळी साथे वालवाल लवणभास्कर के अग्निमुखचूर्ण आपवाथी वधु फायदो थाय कोलेरा मटी जाय छे आ औषध झाडा, मरडा, मंदाग्नि, अपचो, अरुचि, उलटी, गुल्म, बरल, लीवर वगेरेमां पण फायदो करे छे ।

कोलेरानाशिनी वटी—धाणा शेकेला तोला ४, जावंत्री तो. ३, जीरुं तो. ३, अतिविष, इन्द्रजव, अजमो, कांकचोया, लविंग प्रत्येक तोलो १ एक, बीडलवण, सुंठ बीलीगर्भ, काळां मरी, पीपर, पीपरीमूळ, रांळ, एलची, हरडे, प्रत्येक तोलो ०॥ अरधो लइ बधां साथे वाटी लींबुरसमां मग जेवडो गोळी वाळवी दर ०। पा कलाके अकेक गोळी डुंगळीना रस साथे के कोइपण आसव साथे आपवी. कोलेरामां तात्कालिक छे तथा झाडा मरडा अतिसारमां उत्तम छे ।

विसूचीदमन तेल—मोथ, वज, इन्द्रजव, कडाछाल, कडु, सुंठ, पीपर, मरी, हिंग, अजमा, अजमोद, लविंग, मेथी, चित्रो, जीरुं, काळोजीरी, पारद, गंधक, मोरींगणीनां डोडवां इन्द्रामणांनां डोडवां, नागरवेलनां पान, अतिविष प्रत्येक ४ चार तोला लइ खांडी पाणीमां वाटी लुबदी करी तेमां लींबुनो रस तो. ४०, केळनो रस तो. ८०, छुरको तो. ४०, दहीं तो. ४०, गायनुं दुध तो. ४० मेळवी तेमां तलनुं तेल रतल ४ नाखी पकावबुं, पाणीनो भाग बळी जाय पटले गाळी लेवुं. पछी तेमां कपूर तो. ४ मेळववुं. आ तेल कोलेरावाळाने आराम थतां सुधी चोळवुं गोठलां चडतां होय त्यां वधु चोळवुं. कोलेराथी बचवाने माटे साजा माणसे पण आ तेल मालीस करवाथी बहु लाभ थाय छे ।

आदुनो रस तोला २०, सुंगळीनो रस तो. २० अफीण तो. ०। घुंटी कसुंबो करी अकेक चमचो एक १ कलाके पावुं ।

डाम—डुंटीनी चोतरफ कुंडली आकारनो डाम देवो. तथा एक ताळवे, एक गरदन उपर डाम देवाथी कोलेरा मटे छे ।

अनुभूतांजन—अघेडानां पान अने मरी समभागे लइ घोडानां मोढानां फोणनी लाळ साथे वाटी आंजवाथी कोलेरा मटे छे ।

विसूचोहरांजन—सुंठ, पीपर, मरी, करंजनां मींज हळदर बीजोरानुं मूळ समभागे लइ पाणीमां वाटी आगठा के गोळी करी छाये सुकाववी. पाणीमां घसी आंजवुं ।

शंखवटीबृहत् दर अर्धी कलाके ३ त्रण गोळीं आदु अने तुळशीना रसमां देवी कर्पूरासव, मुस्तकारिष्ट, मृतसंजीवनीसुरा, मृगमदासव के चंद्रहास दर ०। पा कलाके एक एक तोलो आशरे पावुं. विसूचाविध्वंश विश्वोद्दापकाभ्र, वीरभद्राभ्रक दर ०॥ कलाके २-४ रति मध अने आदुरसमां मेळवी पावुं ।



करम—करमियां—कृमि पेटना जीवडा

कारण—अजीर्ण, अजीर्ण पर भोजन, विरुद्ध भोजन बहु मिष्टान्न भक्षण, मलीन भोजन, कसरत न करवी, चीकणा ठंडा पदार्थोनुं सेवन दहीं, गोळ जळचर प्राणीओनां मांस, तल खाटां कफकारक पदार्थ वगेरेना अति सेवनथी आमाशय अने पक्वाशयमां जीवडा उत्पन्न थाय छे. विष्टा, कफ, लोही चामडीनो मेल एमां तेनी उत्पत्ति थाय छे ।

चिन्ह—ताव. शूळ, छातीनो रोग, बेचेनी, अन्नपर अभावो, झाडा, पेटमां दुखवुं, दुबळापणुं, पेट चडी आववुं पेट मोटुं थवुं, पाचन नहीं थवुं, झाडानी कबजीयत गुदामां चळ आववी माथानो दुखावो, उंघ ओछी, आंखोनुं निस्तेजपणुं चेरो फीको वगेरे चिन्हो अंदरना जीवडाथी जणाय छे ।

पथ्यापथ्य—गळपणवाळी चीज बीलकुल बंध करवी, शाक भाजी तद्दन छोडी देवां. मांस घी. दुध दहीं, पांदडांवाळां शाक, खाटो मीठो रस, लोटनी चीजुं, बजारनी मीठायुं वगेरे छोडी देवां. कडवुं, तीखुं, कफनाशक भोजन लेवुं. सलनुं तेल, तीखा, कडवा पदार्थो, मीठुं, मध, हींग अजमा, लसण तथा कफघ्न चीजो खावी. पित्तपापडो, खाखरानां बीने एरंडीयातेलमां शेकी २-३ दिवस बबे वाल देवाथी जीवडा मरी जाय पछी एरंडीयुं देवाथी झाडा वाटे नीकळी जाय ।

कृमिशेखर रस—वावडींग, इन्द्रजव, खाखरानां बी प्रत्येक तोला ५, पारद तो. २॥, गंधक तो. ५ बधां साथे मेळववां मात्रा २ थी ८ रति मधमां चटाडवी. बधी जातना कृमिनो नाश थाय ।

कृमिमुद्‌गर रस—पारद तोलो १, गंधक तो २ अजमोद तो ३, वावडींग तो. ४, झेरकोचलां तो. ५ खाखरानां बी तो. ६ साथे मेळवी ३ रतिभारनी गोळी मधमां करी. ३ ६ गोळी मोथना उकाळा साथे अथवा उंदरकनोना रस साथे आपवाथी ३ दिवसमां बधी जातना कृमि तथा तेथी थयेलां दरदो मटे. जठराग्नि प्रदीप्त थाय ।

कृमिहरी गोळी—कीरमाणी अजमो, पळीयोसीकोतरो, काळीजीरी, पारो, कपीलो, डीकामारी हीमजीहरडे सेकेलो शोरो मींढीआवळ, पलाशपापडो, इन्द्रजव कडवा, कांकचीया बकैनानुं कपुरकाचलीनीयो हींग, नसोतर संचळ वावडींग नेपाळो आंबाहळदर बधां सरखे भागे लइ खांडी कपडछान करी दुधमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. गरम पाणी साथे २-४ गोळी गळी जावी. तो करम पडी जाय ।

कृमिघ्न चूर्ण—पलाशपापडो कीरमाणीअजमोद इन्द्रजव, नसोतर, कांकचीया. कडुं सरखे भागे लइ खांडवा. मात्रा ३ थी १० रती सुधी पाणी साथे आपवुं. करम पडी जाय ।

कीटमर्द रस—पारद भाग १, गंधक २ अजमोद ३, वावडींग ४, झेरकोचलां ५, भारंगी ६ साथे खांडी मधमां १ रतिभारनी गोळी वाळवी. मात्रा २-६ गोळी वावडींगना उकाळा साथे आपवी ।

कृमिकुठार रस—सुंठ, सिंधालुण, चित्रो मरी, हरडे, वज, गुगळ, हीराबोळ, हळदर वावडींग, कुष्ट लसण पारद गंधक, कांकचीया इन्द्रजव, खाखरानां बी खेरनी छाल जीरं. पीपर, खरसाणी, अजमोद, संचळ बधां सरखे भागे मेळवी मधमां रतिभारनी गोळी वाळवी मात्रा २-६ गोळी मोथना उकाळा साथे के हरडेना उकाळा साथे आपवी बधी जातना करम मटे ।

विडंग प्रयोग—वावडींगनो उकाळो करी तेने जरा घी मुकी वावडींगथी वघारवो. ते उकाळो १५ दिवस नवशेको पीवाथी बधी जातना कृमिनो नाश थाय छे।

त्रिकट्वादि क्वाथ—सुंठ पीपर, मरी. हरडे बेडां आमळां, इन्द्रजव, लींबडानां पान नसोतर, वज खेरनी छाल बधां सरखे भागे खांडवा १ तोला भुकामां ४० तोला पाणी मुकी उकाळवुं ५ तोला रहे एटले गाळी लइ तेमां ३-४ तोला गोमूत्र नाखी पावाथी बधी जातना कृमि मरी जइ झाडा वाटे नीकळे छे।

दांतना जीवडा—इन्द्रामणानुं एक पाकेलुं फळ लइ एक लोढानो तावीथो लाल चोळ धगावी तेना पर ए फळ मुकवुं तेनो धुंवाडो दांतने आपवाथी दांतमां पडेला जीवडा मरी पडी जाय, तेवीज रीते भोरींगणीनां बीने तेलनो करमो दइ तेमी धुंवाडी दांत के डाढने आपवाथी जीवडा नीकळी जाय, दुखावो मटे ।

यवान्यादि चूर्ण—खरसाणी. अजमोद मोथ, पीपर, काकडाशींगी, वावडींग, मजीठ, खाखरानां बी, इन्द्रजव, लींबडानां पान सरखे भागे खांडवा. ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण मधमां चटाडवाथी बधी जातना कृमि तथा कृमिथी थयेल उधरस, ताव, झाडा, उलटीमां पण फायदो करे छे ।

कृमि ... चूर्ण—करमाणीअजमोद पलाशपापडो, कपीलो, वावडींग कांकचीयानां मींज समभागे खांडी मोटा माणसने गळे जम्या पछी सुती वखते ०॥ थो १ तोलो चूर्ण पाणी साथे लइ उपर साकरनुं सरबत पीये तो सवारे तमाम करम नीकळी पडे ।

विडंगादि तेल—वावडींग तोला ४००, बावचीना पंचांग तोला ४००, चारगणा पाणीमां उकाळवुं चतुर्थांश रहे एटले गाळा ते क्वाथमां १२८ तोला तलनु तेल तथा वावडींग, मजिठ चित्रो, धोळो बछनाग, प्रसारणी, गळी, अशेळीयो कायफळ सुंठ पापर, मरी, इन्द्रावणी, रास्ना एरंडमूळ दरेक तोला ४ चार लइ कल्क करी तेलमां नाखी पकाववुं चोपडवुं तथा १ थी २ नानो चमची पावुं तो बहारना अने अंदरना कृमि मटे. धामंठा शीळस खंजवाळ, शरीरनी खरज, ताव, उबको, अरुची सळखम, मरडो झाडा, पांडुरोग वगेरे दरदो पण मटे छे ।

कृमिविनाशक गोळी—अजमोद वावडींग वायुंभा हींगळो इन्द्रजव, कमळकाकडी हींग फुलावेल पीतपापडो लविंग दरेक तोलो ०॥, कांकचीयाना गोटा २ बे, केसर वाल २ बधां साथे खांडी चाळी जुनां कागळ पाणीमां पलाळी ते पाणीथी चणिया बोर प्रमाणे गोळी करवी २–६ गोळी आपवी ।

बधी जातना कृमि माटे सादा उपाय

१ वावडींगनो उकाळो करी तेने घी मुकी वावडींगथी वघारी १ महीनो पावुं ।

२ वावडींगनुं चूर्ण तोलो ०। थी ०॥ मधमां चटाडवुं ।

३ खाखराना बीनो भुको बे आनीभार मधमां चटाडवो ।

४ कपीलो बे आनीथी पावलीभार गोळ साथे आपवो ।

५ वावडींग, इन्द्रजव खाखरानां बी समभागे खांडी पावलीभार चूर्ण खांड साथे आपवुं ।

६ लींबडानां पान पाणीमां वाटी २ थी ५ तोला रसमां १ चमचो मध मेळवी पावुं ।

७ कीरमाणी अजमोद बेआनी भारमां रुपीआभार गोळ मेळवी खाइ उपर वासी पाणी पीवुं ।

८ महामंजिष्ठादि क्वाथ पावो नाळीयेरना पाणीमां मध मेळवी पावुं ।

९ त्रिकटु, त्रिफला, इन्द्रजव, कडाछाल लींबडानी छाल, लींबडानां पना, मसोतर, वज, खेरसार समभागे खांडी १ तोलानो क्वाथ गौमूत्र साथे पावो ।

१० मोथ, उंदरकनी, त्रिफला, देवदार, सरगवानी छाल पना क्वाथमां पीपर, वावडींगनुं चूर्ण नाखी पावो ।

११ अळसीनुं तेल तोला २॥ दिवस ३ पावुं ।

१२ अरीठानां फीण काढी माथे चोपडवां, पछे हइये, पछे पेटे, एम उतरता चोपडवां. करमियां पेटमांथी नीकळे तथा घणां करमिया होय तो अरीठानां फोतरां पलाळी पाणी तो. ०॥ भार पावुं ।

१३ सुंठ, भारंगी, काकमांसी, उभीरींगणी, पोखरमूळ, पीपर, मरी, वज, कायफळ, सींधव, संचळ, हरडे समभागे मधमां चणिया बोर जेवडी गोळी पाणी साथे आपवी ।

१४ हरडे, मोथ, वावडींग, पीपर पीपरीमूळ, देवदार नसोतर, संचळ, कालीजीरी, सुंठ सींधव हींग समभागे खांडी ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण पाणी साथे देवुं ।

१५ नसोतर, पीपर, खांड, वावडींग समभागे खांडी उना पाणीमां पावुं ।

१६ अजमोद, वावडींग हींग समभागे खांडी ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण खाटी छास साथे आपवुं ।



पांडुरोग

कारण—अति विषय, बहु खाटा के खारा पदार्थोनुं अति सेवन, अति मद्यपाननी टेव माटी खावो, दिवसे निद्रा, तीक्ष्ण जलद पदार्थो खावानो टेव, बहु रक्तस्राव, जखम, स्त्रीओने सुवावडमां लोही पडवुं, अत्यार्तव (ऋतु-द्वारा लोही बहु पडवु), संग्रहणी के मसामां घणुं लोही पडवुं वगेरे कारणोथी तथा क्षय, अर्बुद, मूत्रपिंडनी व्याधि, टाढीया ताव मेलेरियाना ताव, लीवर रक्ताशयनां दरद वगेरे रोगोने लीधे, वात, कफ दूषित थइ हृदयमां रहेलां पित्तने बळवान वायु क्षोभ पमाडे छे. ते पित्त हृदयमां रहेली दश धमनी नाडीओ द्वारा आखा शरीरमां फेलाइ कफ, लोही, मांसादि धातुओने दूषित करी चामडी अने मांसनी वच्चे रहे छे. अने तेनो रंग पीळो, लीलो अने घणे भागे पांडु धोळो थाय छे, ते पांडुरोग कहेवाय छे ।

चिन्ह—शरुआतमां छातीमां थडको, चामडी रुक्ष, अरुचि, पेशाब पीळो परसेवो न वळवो, भुख मंद, आंखे थेथर, झाडो कबज वगेरे चिन्हो जणाय छे. पछी लोही अने चरबी ओछां थाय छे. शरीर कृश थवा मांडे छे. स्वभाव चीडीयो थइ जाय छे, थुंक आवे छे, ठंडा पदार्थो के शीत स्पर्श गमतो नथी. ताव आवे छे, श्वास चडे छे, कानमां भणकारा वागे छे, शरीर धोळुं फीकुं देखाय छे. हाथ, पग, मुख उपर, अने कोइ कोइने आखे शरीरे सोजो देखाय छे. वधु चालतां के चडतां श्वास बहु चडे छे, छातीमां धबकारा उपडी आवे छे, झाडो कबज थाय छे, पेटमां ढबदबो रहे छे, दरदी अहोनिश उदास जणाया करे छे. पांडुरोगवाळा दरदीनुं लोही क्षीण थइ गयुं होय, शरोर श्वेत. दांत, नख, आंख पीळां पडी गयां होय. ताव, अरुचि, मोळ, उलटी तरश बेचेनो मुख्यत्वे करी गुदामां जननेंद्रिय उपर अने वृषणमां सोजा चडया होय, झाडा थता होय परसेवो वळी शरीर टाढुं पडी जतुं होय, शरीर कृश थइ गयुं होय तो ते दरदी बचे नहीं ।

पथ्यापथ्य—हमेशां बेक दस्त साफ आवे तेम करवुं. खोराक सादो, प्रवाही, खीचडी, चोखा दाळ, राब वगेरे आपवो खुल्ली हवा, गंदकी विनाना मकानमां दरदीने राखवो. सवार सांज खुल्ली हवामां-दरदीने खुल्ली हवा प्रिय लागे तो बगीचामां फेरववो. खोराक ओछो पचे तेटलो आपवो. झाडा तथा पेशाब साफ आवे तेम करवुं, अजीर्ण थवा देवुं नहीं ।

मधुमंडूर—मंडूरभस्मने त्रिफळाना उकाळाना ३, गौमूत्रना ३, कुंवारना रसना ४ अने पंचामृतना ७ एम कुल १७ पुट आपी तैयार कराय छे. मात्रा ३-६ रति मध, पीपरमां चटाडवुं लांबा वखतनो पांडुरोग मटे ।

यशस्विनी वटी—मंडूरभस्म तोला ४० लइ ८ गणा गौमूत्रमां पकावी पछी तेमां पारद, गंधक, ताम्रभस्म. गुगळ, शिलाजीत, कडुं, सुंठ, पीपर. मरी हरडे, बेडां, आमळां, वावडींग, मोथ, चवक, चित्रो, दारुहळदर, पीपरीमूळ, देवदार प्रत्येक तोला ८ लइ नगोडना रसनी अने लींबडाना पानना रसनी अकेक भावना दइ २ रतिभारनी गोळी वाळवी. ३-६ गोळी मधमां चटाडवी. बधी जातनो पांडुरोग, सोजा कमळो. पेटनां दरद वगेरेमां उत्तम छे ।

मंडूरवटक—सुंठ पीपर, मरी, हरडे बेडां, आमळां मोथ वावडींग, चवक, चित्रो दारुहळदर तज सुवर्णमाक्षिकभस्म पीपरीमूळ, देवदार दरेक तोला ५ पांच, बधाथी बमणी गौमूत्रमां ७ वखत पकावेली मंडूरभस्म लेवी. मंडूरथी ८ गणुं गौमूत्र नाखी पकावी घाटुं थाय एटले उपरनां वसाणानुं चूर्ण नाखी बबे रतिभारनी गोळी वाळवी. छासनी साथे ६ थी २४ गोळी सुधी आखा दिवसमां आपवी. पांडुरोग अने कमळानुं आ खास औषध छे. ते सिवाय कुष्ठ, सोजा. हरस प्रमेह. बरल एटला रोगोमां पण उत्तम काम करे छे ।

प्राणवल्लभ रस—पारद गंधक केसर, लोहभस्म, ताम्रभस्म, वराटी-भस्म, यशदभस्म, हींग, हरडे बेडां, आमळां. स्नुहीमूळ जवखार. दंतीमूळ, टंकण फुलावेलो, नसोतर बधां सरखे भागे लइ बारीक करी बकरीना दुधमां घुंटी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-४ गोळी मधमां चटाडी उपर पाणी पावुं. आ पांडुरोगनुं खास औषध छे, ते सिवाय हाथीपग, कंठमाळ, सोजा, शूळ, ऊरुस्तंभ संग्रहणी, मूर्च्छा, उल्टी, हेडकी, श्वास. खांसी. जीर्णज्वर एटलां दरदोमां पण उत्तम काम करे छे ।

मंडूरेश्वर रस—शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, हरडे, बेडां, आमळां. सुंठ, पीपर, मरी, दारुहळदर, सुवादाणा, तज, तमाल, एलची, नागकेसर, बीलीगर्भ, साकर, मोथ, उपलेट, लसण बाबची, अरडुसी, वावडींग, चित्रो. वरधारो, वज. देवदार, जवखार, कचुरो, संचळ, चवक, सुवर्णमाक्षिकभस्म, नसोतर बधां समभागे. बधांनी बरावर गौमूत्रमां पकवेल मंडूर मेळवी गौमूत्रमां वाटी गोळी बबे रतीभारनी करवी. ३-१२ गोळी पाणी साथे आपवाथी पांडुरोग, सोजा, शूळ, पेटनो दुखावो वधेली चरबी तथा हरस मटे ।

मधुरानी गांठ उपर बंधाण—तलनो खोळ शे. ०॥ कपासीया शे. ०॥ सिंकोतरो पलियो तो. १ ए सर्वे वाटी पाणीमां राखी परंडोयुं तेल तो. ४ नाखी रोटलो करी एक बाजु शेकी पेटे बांधवो मधुरानी गांठ मटे ।

पित्त कमळीनी गोळी—एलची दाणा ४ द्राक्ष तो. १ दाडमसार तो. १ हरडेदल तो. १ साकर तो. १ नी गोळी तो. ०। भारनी करवी सवार सांज पाणी साथे खावी पित्त कमळी मटे ।

नवायस लोह—त्रिकटु तो. ०॥ त्रिफला तो. ०॥ चित्रो तो. ०। मोथ तो. ०। वायवडींग तो. ०। लोहभस्म अथवा मंडुर तो. ५ मध साथे आपवुं पांडुरोग प्रमेह पित्त मंदाग्नि उदर विकार सोजो गुल्म गुदग्रह सर्वे मटे, मात्रा ६ थी ८ रती टंके।

नवामृत गोळी—त्रिकटु तो. ३ त्रिफला तो. ३ तज तमालपत्र नागकेसर एलचि धाणा मेथि वायवडींग पिपलीमूळ चित्रो दरेक तो. १ मंडुर तो ९ लोह तो. ९ साकर तो. ३० मधमां गोळी चणिया बोर जेवडा करवी २ थी ४ देवी पांडु रोग मटे।

चंदनादि चूर्ण—सुखड लविंग जायफळ जेठीमध कलिंजण द्राक्ष तज तमालपत्र तांजळी वालो हळदर दारुहळदर सुंठ पिपर पिपरिमूळ धाणा जीरु नागकेसर कमळकाकडी खारेक मरी कंकोल समभागे लेवां बधांनी बराबर साकर चूर्ण करी तो. ०॥ थी १ देवुं पित्त तरस बळतरा, कोम उधरस, दम, अतीसार मलग्रह, सर्व रोग पित्तरोग वायु, मंदाग्नि जीर्णज्वर, धातुक्षय प्रमेह एटला रोग जाय।

१ लोढाना कडाइमां उकाळेलुं दुध ७ १४ दिवस पावुं।

२ कुवाना पंचांगनो रस आंजवो।

३ हरडेनुं चूर्ण ०॥ तोलो, गोळ तोला २ मेळवी खवराववुं।

४ गौमूत्रमां पकावेली मंडुरभस्म ३-८ रती मध घीमां चटाडवो।

५ साटोडी, लींबडानी छाल, परवळ सुंठ, कडु गळो, दारुहळदर, हरडे समभागे खांडवुं. आनो उकाळो करी पावाथी पांडु अने कमळो उपरांत सोजा, पेटनां दरद, वधेली चरबी, मोळ, उलटी अने लोहीबगाड पण मटे।

६ लोहभस्म गोरक्षनाथी बबे रती मध अने हरडेनी भुकी साथे चटाडवी।

७ स्फाटिक मणि भस्म ४ रती, लोहभस्म १०० पुटी २ रती वासावलेह साथे बे वखत चटाडवी।

८ आरोग्यवर्धनी भुको सवार सांज पावली भार पाणी के दुध साथे आपवी।

९ मरी अने चणोठीने पाणीमां भींजावी छाल उतारी सरखे भागे वाटी पाणीमां गोळा वाळवा छाये सुकाववा. घसी आंजवाथी पांडु कमळो मटे।



कमळो

कारण—पित्त योग्य रस्ते न जतां पाछुं लोहीमां जवाथी पित्तनी नळीमां कांइ पदार्थ भराइ रही तेनो रस्तो बंध थवाथी पित्ताशयनी नळीनो सोजो के संकोच थवाथी के बीजा कारणोये तेनो रस्तो बंध थवाथी, दस्तनी कबजीयतथी, चिंता शोक अजीर्णथी, तावथी, झेरथी, बहु खाटां, बहु विदाही, गरिष्ठ, पित्त करनारां पदार्थ खावाथी आ दरद थाय छे।

चिन्ह—आंखोनो धोळो डोळो पीळो थाय, पेशाब पीळो उतरे, वखते आख चामडी पण पीळी थाये, शरीरे सुस्ती, चळ, तरस, आसुं परसेवो थुक वगेरे घणी वखत पीळां थाय छे. झाडो कबज, सर्व पदार्थ पीळां देखाय, पेटमां

વાયુ વધે, અન્ન પચે નહીં ઓડકાર આવે, શરીર દબળું થાય, ખોરાક લેવાય નહીં, નાકમાંથી ઉલટી ઝાડા કે મોઢામાંથી લોહી પડે, નિદ્રા ઘેન જણાય, નાડીનો વેગ ૫૦-૬ વાર ચાલે. જો કમળાના દરદીને ઉલટી, અરુચિ, ઉચકો, તાવ, બેચેની, શ્વાસ અને ઉધરસ એ ચિન્હો જણાતાં હોય મળમૂત્ર કાળાં કે પીળાં હોય, સોજા ચઢી ગયા હોય, દાહ, તરસ, આફરો વગેરે ચિન્હો જણાતાં હોય અને જઠરાગ્નિ તદન મંદ થઇ ગઇ હોય તે અસાધ્ય લક્ષણ છે ।

પથ્યાપથ્ય—મુખ્ય જે લક્ષણ જણાતાં હોય તેનો ઉપાય કરવો ઝાડા હમેશાં એક બે થાય તેમ કરવું. પેશાબ પણ નિયમિત થતા રહેવો. દુધ ખીચડી ભાત કાંજી મગનું ઓસામણ પાતળી દાળ વગેરે આપવું. ભારે ચીકણાં મિષ્ટાન્ન મીઠાવાળું તળેલા પદાર્થ તેલ કાચાં શાક વાસી પદાર્થ ખાવા દેવા નહીં. ઘી ચરબીવાળાં પદાર્થ પણ બંધ કરવાં ।

લોહભાસ્કર રસ લોહભસ્મ તોલા ૮, પારદ તો ૪, ગંધક તો. ૬, અભ્રકભસ્મ તો. ૨, શંખભસ્મ તો. ૪, કોડીભસ્મ તો. ૪. તામ્રભસ્મ, હિંગ, જવખાર, ટંકણ, નસોતર, ગોખરુ, અરણીમૂળની છાલ, શિલાજીત, હરડે, કરીયાતું, દેવદાર વાવડીંગ ચિત્રો, આંબાહળદર, અજમોદ, જીરું, કચુરો પ્રત્યેક ૧ એક તોલો, શિલાજીત તોલા ૩ ગુગળ તોલા ૮ બધાં સાથે મેળવી ઇન્દ્રામણાનું પંચાંગ બકરીનું દુધ, ભાંગરો, કુંવો પ્રત્યેકના રસની ભાવના દઇ વંને ચણોઠી ભારની ગોળી વાળવી. માત્રા ૩-૮ ગોળી પાણી સાથે આપવી. કોઇપણ કારણે થયેલો કમળો કે પાંડુરોગ મટે તથા સોજા, કંઠમાળ, શ્વાસ, ઉધરસ, જીર્ણજ્વર, પરદેશનાં પાણી લાગવાં, લોહીબગાડ વગેરેમાં ઉપાય છે ।

મંડૂરામૃત રસ—મંડૂરભસ્મ તોલા ૬૦ ને ત્રિફળાનો ઉકાળો. ગોમૂત્ર, નગોડનો રસ, આકડાના પાનનો રસ, દુધ, દહીં, મધ, શેરડીનો રસ પ્રત્યેકના રસની એકેક ભાવના દઇ દરેક વખતે ગજપુટ આપવો. કુલ ભાવના આઠ અને પુટ ૮ આપવા. પછી પારદ તોલા ૧૦, ગંધક તોલા ૨૦, રૌપ્યભસ્મ તોલા ૪, હરડે તો. ૧૬, સુંઠ, પીપર, મરી, વાવડીંગ પ્રત્યેક તો. ૬ સાથે મેળવી ભાંગરાના રસમાં ઘુંટી સુકાવી રાખવું. માત્રા ૪-૮ રતી મધ ઘી સાથે આપવાથી કમળો, પાંડુરોગ, હરસ, કબજીયત, લોહીબગાડ, અમ્લપિત્ત, છાતીનો દાહ, બળતરા વગેરે મટે ।

કામલાનાશન ચૂર્ણ—હરડે, બેડાં, આમળાં, ગળો, દારુહળદર, કડુ, મેથ, વાવડીંગ, સુંઠ, પીપર, મરી, કુષ્ટ પ્રત્યેક ૪ ચાર તોલા, હરડે તો. ૧૨, સાકર બધાનો બરોબર ખાંડી શીશીમાં ભરી રાખવાં. માત્રા ૦॥-૧ તોલો મધ સાથે ચાટવું અથવા ઉકાળો કરી પાવું ।

નવાયસ લોહ—સુંઠ, પીપર, મરી, હરડે બેડાં, આમળાં, મોથ, વાવડીંગ, ચિત્રો બધાં સરખે ભાગે બધાની બરાબર લોહભસ્મ સાથે મેળવવું. માત્રા ૩-૬ રતી મધ ઘીમાં અથવા છાસ સાથે અથવા ગોમૂત્ર સાથે લેવાથી કમળો મટે તથા પાંડુરોગ સોજા પેટના રોગ કૃમિ વગેરે પણ મટે ।

मंडूरवटक—सुंठ, पीपर, मरी, हरडे, बेडां, आमळां, मोथ, वावडींग, चवक, चित्रो, दारुहळदर, तज सुवर्णमाक्षिक भस्म, ग्रन्थिक, देवदार प्रत्येक बबे तोला, काळी मंडूरभस्म बधाथी बमणा मेळवी बधाथी आठगणुं गोमूत्र नाखी पकावी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. सवार सांज चार चार गोळी छास साथे आपवी. भुख लागे त्यारे हळवो खोराक देवो. १ महीनो सेववाथी कमळो मटे तथा पांडुरोग पेटनां दरद सोजा हरस बरल लीवर लोहीबगाड कुष्ठ व दरदो पण ४० दिवस सेवन करवाथी मटे छे।

त्रिफळानो क्वाथ मध नाखी १ महीनो पावो अथवा गळोनो क्वाथ मध नाखी १ महीनो पावो अथवा दारुहळदरनो क्वाथ मध नाखी १ महीनो पावो अथवा कुवानो रस आंजवो अथवा शिलाजीत शुद्ध गोमूत्र साथे आपवो अथवा हरडे बेडां आमळां गळो अरडुसी कडु करीयातुं लींबडानी छाल सरखे भागे लइ खांडवां आनो उकाळो मध नाखी पावो।

प्रयोग १—वाडयनां तुरीयां बीयां सहित लेवा सुकाववां पछी तेमां पाणी भरी ४ पहोर रहेवा दइ ते पाणी पीवुं पीळो कमळो तथा कमळी मटे।

प्रयोग २—पलचो पिपरामूळ समभागे खांडी तेमांथी १। तोलो भुको लइ पाणी शेर १ मुकी पाशेर राखी पावुं. दिन २१ पावुं. पांडु कमळो मटे।

प्रयोग ३—सुरोखार तो. २॥ खारो पापडीयो तो. ०॥। साकर तो. २॥ पनी पडीकी ६ करवी हमेशां पडीकी १ पाणीथी देवी कमळो हळदरवो मटे नाके लोही पडतुं अटके।

प्रयोग ४—सुरोखार तो. ०।= जवखार तो. ०।= साकर तो. ०॥। पनी ३ पडीकी करवी वासी पाणीथी देवी कमळो मधुरो हळदरवो मटे।

प्रयोग ५—पिपरीमूळ तो. ०॥= पाणी शेर १ मां उकाळी शेर ०। रहे घटले पावुं कमळो मटे।

प्रयोग ६—जाळय पइसा भार पाणीमां वाटी पावी कमळो टळे उपर चण्या जमवा।

प्रयोग ७—त्रिफला अरडुसो करीयातु लिंबडानीछाल कडु गळो व क्वाथ मध नाखी पावो कमळो मधुरो पांडु मुबारकी गांठ मटे।

प्रयोग ८—चण्यानी दाळ खाचे कमळो जाय।

प्रयोग ९—बंदालफलरस नाके नास देवी कमळो जाय।

प्रयोग १०—गेरु हळदर आमळां पाणीमां घसी आंख्ये आंजवुं कमळो जाय।

प्रयोग ११—अघेडानो राख जवखार कडु हरडे दरेक तोलो १॥ लइ वाटी पडीकी २१ करवी ठंडा पाणीथी टंके बे लेवी मधुरो कमळो पांडु मटे।

प्रयोग १२—करीयातुं लिंबडानीछाल त्रिफला पटोल अरडुसो गळो पित्तपापडो भांगरो व क्वाथ मधसाथे पावाथी पित्तकमळि कमळो पांडु मटे।

प्रयोग १३—हरडे, बेडां, आमळां, लींबडानी छाल, सुंठ, मोथ, काळीपाठ, चित्रो, सुखड, वावडींग, मजीठ, महुडा, कचुरो, अरडुसो, नसोतर, हळदर, धमासो, पितपापडो, भोरींगणी, लसण, जवासो, आंकोल्य, धणनां कुणां झींडवां, बावची, कौचमूळ, मींढोआवळ, वाळविली, इन्द्रजव, कडु, त्रायमाण, पोपरीमूळ, उंटकंटामूळ ए दरेक तोलो १। सवा, खेरनी अंतरछाल शेर ५, पाणी मण १॥ मां उकाळवुं. चोथे भागे रहे एटले उतारवुं. रीढा ठाममां नाखी तेमां लोढानो भुको के मंडूर तोला ६। सवाछ नाखी १५ दिवस तडके राखवुं. ते रस हमेशां तोला १॥-२ सुधी पावो. पेटपीड, पांडुरोग, कमळो, पत, शूळ, लोहीविकार, श्वेतकुष्ट मटे।

प्रयोग १४—गधेडानां लींडा ३. उसबाना पाणीथी भींजवी पावां. ताव तथा कमळानी गांठ गळे. तथा पित्तकमळो मटे।

प्रयोग १५—गधेडानां लींडा दहीं साथे घोळी पावां. कमळो जाय. तथा गांठ मटे।

प्रयोग १६—पापडीयो खारो हिमेज पलाळी पावुं।

प्रयोग १७—सरसीयुं तेल तो. २॥, साकर तो. ०॥ चोखाना धोण साथे दिवस ३ देवुं. कमळो मटे।

प्रयोग १८—साजीखार तो. ०।, खांड तो. ०। पाणी साथे सवार सांज देवुं. कमळो मटे. कमळानी गांठ गळे।

प्रयोग १९—पापडीयो खारो, मरी, जीरुं, अजमोद, गधेडानां लींडा सुकां समभागे वाटी चाळी पडीकां तो. ०।नां करवां. दिवस ७ टंक १४ देवां. मधुरो कमळो मटे।

प्रयोग २०—साकर तो. ०॥, फटकडी बेआनीभार भुकी करी पाणी साथे दिवस ७ थी १४ सुधी आपवुं. तावनी गांठ, वरल, कमळो मटे।

प्रयोग २१—तज, तमालपत्र, नागकेसर, एलची, जीरुं समभागे चूर्ण करी तो. ०। थी ०॥ टाढा पाणी साथे देवाथी मधुरो कमळो मटे।

प्रयोग २२—द्राक्ष, खसखस, धावडीनां फुल, जवासो, उसीर सेवंत्रानां फुल, गळो, वरधारो, कमळकाकडी, लींबडानी छाल, चंदन, पटोल, अगर, दाडम, धाणा, पीतपापडो एनो क्वाथ पावाथी मधुरो टळे।

प्रयोग २३—अरणी, द्राक्ष, सुखड, वाळो, मोथ, पीतपापडो, जेठीमध एनो क्वाथ टाढो करी मध साथे पावो. पित्तज्वर, फेर, दाह, छर्दि भ्रम मधुरो मटे।

प्रयोग २४—द्राक्ष, पीतपापडो, धाणा, करीयातुं, वाळो, गळो कडु ए क्वाथे हारिद्रक कमळो मटे।

प्रयोग २५—त्रायमाण, जेठीमध, पीपरीमूळ, मोथ, अरडुसो, गळो, लींबडानी छाल, करीयातु, कडु एनो क्वाथ टाढो करी मध साथे पावो. हारिद्रक ज्वर तथा कमळो मटे।

प्रयोग २६—सुखड, त्रिफळा, अरडुसो करीयातु, लींबडानी छाल, धाणा, मोथ, कडु, जेठीमध, द्राक्ष, पीतपापडो ब्राह्मी गरमाळो एनो क्वाथ करी पावाथी हारिद्रकज्वर, पांडुरोग, कमळो, शोष, दाह, प्रलाप, मस्तक पीडा, वमन पित्तरक्त विकार मटे ।

प्रयोग २७—कडवी तुंबडीना गरनो रस नाकमां टिपां ४ पाडवां उपर नाकने वहेथो पाणी तो. ०॥ भार पावुं. कमळानो रोग मटे ।

प्रयोग २८—हीराबोळ, हळदर साजीखार, फटकडी, डांगरनो राख समभागे खांडी नित्य वोडकीना गोमूत्र साथे देवाथी १८ जातना मधुरा रोग मटे ।

प्रयोग २९—बावळना पान शेर ०। घुंटी रस काढी जीरुं प्रतिवास मुकी पावुं कमळो जाय ।

प्रयोग ३०—त्रिकटु, हळदर, आमळां लोहभस्म समभागे लइ घृत मध साथे बेआनीभार चाटवु. कमळो, पांडुरोग जाय ।

प्रयोग ३१—लोहभस्म, त्रिफळा, कडु, हळदर घृत मध साथे चाटवुं- कमळो, पांडुरोग मटे ।

मधुरो मुबारकीगांठ कमळानां लक्षण—ताव, दाह, फेर, बेचेनी, झाडा, उलटी, तरश, अजंपो मोढुं लाल ताळवुं जीभ सुकाय, शरीरे सरसव जेवडी फोडकीयुं, मळमूत्र नख आंख्युं चामडी अने वान पीळां देखाय ए मधुरज्वर मधुरो पित्तकमळीनां लक्षण छे ।

रक्तपित्त–रक्तस्राव लोहीनुं पडवुं

कारण—बहु गरम तीक्ष्ण, तीखां, बहु खाटां, बहु खारां, क्षार जेवां विदाही, पित्त करनारां पदार्थोनुं बहु सेवन करवाथी, क्रोधथी, शोकथी, भयथी, बहु महेनतथी, ताजा वनस्पतिजन्य खोराक नहीं मळवाथी, विरुद्ध अन्नपानथी वगेरे कारणे दूषित थयेलो रस पित्तने बगाडे छे अने बगडेलुं पित्त लोहीमां दाह उत्पन्न करे छे त्यारे कोइपण ठेकाणेथी लोही पडे छे ।

चिन्ह—लोही पडवानुं होय त्यारे प्रथम माथुं दुखे, अरुचि, शीतळ पदार्थोनी इच्छा, खाटा ओडकार, खांसी, श्वास, ताव, उलटी थाय, छातीयें मोणो चडवो, शरीरनुं पीळापणुं, दाह, तरश, माथामां तपारो, अन्न उपर द्वेष, शरीरनी दुर्बळता, मन नबळुं, दांतना पेढां सोजी आवे एम जुदे जुदे ठेकाणेथी लोही पडवाथी जुदां जुदां चिन्हो देखाय छे. जो आमाशयना बगाडथी लोही पडतुं होय तो नाक मो वाटे लोही पडे छे. अने पक्वाशय दूषित थयुं होय तो झाडा वाटे लोही पडे छे. बन्ने दूषित थयां होय तो बेइ ठेकाणेथी लोही पडे छे ।

शस्त्रघातथी के बीजी रीते लोहीनो स्राव

कारण-चिन्ह—छरी, चाकु, अस्त्रो, तरवार वगेरेना आघातथी, नसो फाटवा के तुटवाथी, घणी गरमीथी, घणी ठंडीथी, घणा श्रमथी, घणो बोजो

उपाडवाथी, गरम दवाओथी, दारु पीवाथी, कोइ ठेकाणे लोहीनो वधारो थवाथी वगेरे कारणे लोही पडे छे ।

मोढामांथी रक्तस्राव—थाय छे त्यारे मोढामांथी, दांतमांथी, पेढामांथी, जीभमांथी ताळवामांथी लोही पडे छे ।

उलटीमां पडतुं लोही अर्थात् होजरीमांथी थतो रक्तस्राव—जे होजरीमांथी लोही पडे छे ते उलटी वाटे बहार आवे छे. ते लोही काळाश पडतुं अने घणुं होय छे. ते साथे कांइ कांइ खोराक मळेलो होय छे. लोही पडवा पहेलां उबका आवे छे. काळजा पर बोजो लागे छे. फेर आवे छे. आंखे अंधारां आवे छे. होजरीमां थोडो वखत रही तुरत उलटी वाटे बहार पडे तो रातुं होय छे होजरीपर वागवाथी, अंदर क्षत थवाथी, काळजा-यकृतनां व्याधिथी, दारु पीवाथी, मूत्रपिंडनां दरदथी वगेरे कारणे उलटी वाटे लोही पडे छे ।

फेफसामांथी लोही पडवुं

कारण-चिन्ह—छातीपर मार वागवाथी, असह्य बोजो उपाडवाथी, उतावळे शक्ति उपरांत डुंगर चडवाथी, दोडवाथी, मोटी उधरसने लीधे, स्त्रीने ऋतु बंध थवाथी, क्षयरोग टी. बी. लागु पडवाथी वगेरे कारणे लोही पडे छे ।

पेशाबमां थतो रक्तस्राव.

कारण-चिन्ह—कमर पडखां अने पेट मार पडवाथी, उंचेथी पछडावाथी तडके लांबो पंथ करवाथी मूत्रपिंडमां पथरीना रोगथी दारु जेवा जलद पदार्थना वधु उपयोगथी, पेशाब उतर्या अगाउ लोही पडे तो मूत्रमार्गमांथी पडे छे एम जाणवुं. पेशाब उतरती वखते लोही साथे मिश्र होय तो मूत्रपिंडमांथी पडे छे एम मानवुं. पेशाब आवी रह्या पछी लोही पडे के लोही युक्त पेशाब छेवटे थोडो उतरे तो मूत्राशयमांथी लोही पडे छे एम मानवुं ।

पथ्यापथ्य—उजागरो, दाह करनारां गरम भारे पदार्थोनो त्याग करवो. खोराक हळवो, सादो अने समशितोष्ण लेवो कोबीच, नोलकोल, दुधी, तुरियां, मीठां लींबु, नारंगी, संत्रा, सफरजन, लीलीधराख, अंजीर अथवा पाकेलां उंबरानां फळ, फणस, मीठां दाडम, कोर, जांबु वगेरे चीजो फायदाकारक छे. शरबत, मुरब्बा अनुकूळ आवे तेवा आपवा चोखा, बंटी, कोंदरो, कांग, मसुर, चण्या, मठ, तुरदाळ, कळथि, आमळां, परवल, मीठो लींबडो, भुरुंकोळुं तांदळजो, टांको, रताळु, स्हेज खटास पडतां पदार्थ, मोळि छास, साकरवाळुं मधुर दहीं वगेरे हितकारक छे. डुंगळि, लसण, मरचां तेल, बजारनी मीठाइ, खाटां तीखां, दाह करनारां पदार्थ, रींगणानुं शाक महेनत, तडको, टंडे पाणिये स्नान वगेरे हानि कारक छे ।

कोइपण कारणेथी पडतां लोहीना उपचार

रक्तपित्तांकुश रस—पारद तोला १०, गंधक तो. १०, रससिंदूर, टंकण, फटकडी, हरडे, आमळां, एलची, चणकबाब, मोथ, आंखफुटामणां, अरडुशी

प्रत्येक तोला ५ पांच, साथे मेळवी खडसलीयो तथा जेठीमधना मूळनी अकेक भावना देवी. मात्रा ६-१२ रती द्राक्षनां पाणी साथे अथवा चोखाना ओसामण साथे आपवी. छातीमांथी, मूत्रमांथी, गुदामांथी, मस्तकमांथी, नाकमांथी पडतुं लोही अटके ।

सुधानिधि रस—सुवर्णमाक्षिकभस्म, मंडूरभस्म, टंकण प्रत्येक तोला ५, कचुरो, जीरुं, नागकेसर, कपुर, चणकबाव, मोथ, हरडे, फटकडी प्रत्येक तो २, शेदरडी, वाळो, द्राक्ष, अने भोंपाथरीनी अकेक भावना दइ सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ३-६ रती पाणी साथे आपवी. कोइपण कारणेथी पडतु लोही अटके ।

महाचंद्रकळा रस—पारद, गंधक, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, बंगभस्म, यशदभस्म, फटकडी, टंकण, गेरुभस्म प्रत्येक तोला ६ छ, गळोसत्व खडसलीयो चणकबाव, वाळो, पीपर, गोरखतंबोळ पलची, बावळनो गुंद लींबडानो गुंद केसुडां. केळकंद, कमळकाकडीनां मींज प्रत्येक तोला ३ त्रण लइ साथे मेळवी बावळनां पान द्राक्ष, शेदरडी, खडसलीयो, मोथ, कोठानो गर्भ, भोंपाथरी प्रत्येकनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी करवी. उशीरासव साथे अथवा द्राक्षासव साथे अथवा द्राक्षनां पाणी साथे आपवी. कोइपण ठेकाणेथी पडतुं लोहि अटके तथा बधां पित्तनां दरद, दाह कोइपण ठेकाणांनि बळतरा, दाहज्वर, मूत्रकृच्छ्र उनवा, मूत्रमां लोहि, लोहिनि उलटि वगेरे दरदोनुं पण शमन थाय छे ।

उशीरासव—काळीद्राक्ष रतल २० ने कचरी तेमां पाणी रतल २०० तथा साकर रतल ३० नाखी तेमां वाळो तोला ८०, धावडीनां फुल तो. १०० तथा कमळकाकडी, कमळफुल, गुलाबनां फुल, चंमेलीनां फुल, चंपानां फुल, अतिविषनी कळी, चोपचीनी, लवींग, पलची, चणकबाव, आंखफुटामणां, मजीठ, धमासो, बावळनी छाल, शेमळानी छाल, केसुडां, कपूर, वायवरणो, जांबुना ठळीया प्रत्येक तोला ८ आठ नाखी बरणीमां भरी तेनुं मों छांदी १ महीनो रहेवा देवुं पछी गाळी लेवुं. कोइपण औषध उपर अथवा एकलो पावो. कोइपण ठेकाणेथी पडतुं लोही, सोजा, दाह, अम्लपित्त वगेरे दरदो मटे छे ।

रक्तपित्तशमनावलेह—अरडुसी रतल १० तथा भुरा कोळानुं खमण रतल ५ लइ उकाळो करवो पछी ते उकाळामां साकर रतल २० तथा अघेडानुं पंचांग, बळदाणा, काथो, खाखरानां मूळनी छाल पलची, नागकेसर, मोथ, सुखड, कमळकाकडी, आमळां, हरडे, मरी, सुंठ, पोपर, धाणा, जीरुं, शाजीरुं, ओथमी-जीरुं, फोदीनो, शतावरी, आसोंध प्रत्येक तोला ८ आठ गुलाबनां फुल तो. १२, आमळांनो भुको तो. २०, सुवर्णमाक्षिक शुक्ति अने सावरसींग भस्म प्रत्येक तो. ४ चार मेळवी पकावी चाटवा जेवुं थाय पटले उतारी मध तोला ३० मेळवी बरणीमां भरी राखवुं. मात्रा १-२ तोला चाटण कोइपण औषध साथे अथवा एकलुं चाटी उपर दुध, मोळी छास अथवा पाणी पावुं. गमे ते ठेकाणेथी पडतु लोही अटके, दाह, अमलपित्त, उलटी, उनवा, हरस, मूत्रकृच्छ, मूत्रघात, मूत्रपिंड-गुरदानां दरद वगेरेमां पण बहु फायदो करे छे ।

कोईपण ठेकाणेथी पडतुं लोही अटकाववाना सामान्य प्रयोगो

१ महाचंद्रकळा तोलो १, प्रवाळचंद्रपुटी तोलो १॥, मुक्तापिष्टि तोलो ०॥, अभ्रकभस्म तो ०॥ बधां साथे मेळवी तेना सरखे भागे ४८ पडीकां करी च्यवनप्राश अवलेह साथे चाटी उपर दुध के छास पावी. जमीने बे वखत उशीरासव पावो ।

२ मुक्तापिष्टी तो. ०॥, शांकरलोहभस्म तो. ०॥. माणिक्यपिष्टी तो. ०॥, सुवर्णपर्पटी तो. ०॥, सुवर्णवसंतमालती तो ०॥ बधां साथे मेळवी ६४ पडीकां करी सवार सांज अकेक माखण साकर, के मध माखणमां के दहींनी तर अने साकरमां चटाडवां ।

३ (युनानी) केरबो दीरम १, माशुक दी. १, शंगेआरबी मीसकाल २, बाबुनानां फुल सुकां दी २, मसकती दी. १, गुलाबनां फुल दी. ४, तुख्मे खीरद दी. १, खसखस दी. १ बधां साथे खांडी कपडछान करी खसखसनां शरबतमां घाळ घालनी गोळी वाळवी. मात्रा दिवसमां ४-८ गोळी पाणी साथे आपवी. गमे त्यांथी पडतुं लोही बंध थाय छे ।

४ (युनानी) पोस्तेबेखेअनजुबाद भाग ४ बेखेअनजुबार ४, संदल सुर्खजन ३, आपलास ३ अकाकीओ ३. तुख्मेहमाज ४, तुख्मेआगर्त ४, एलची १, कपूनो १, शुरखेस १॥, खसखसनो पोस्त ३. गुलेखेरु ३, सफेद सुखड ३ ए बधां लख्या भागे लइ बधाथी बमणी धोयेली साकर लइ खांडी बारीक करी ०॥ तोलो आशरे आखा दिवसमां आपवुं अथवा साकर सिवायना वसाणां खांडी ०॥ तोलानो उकाळो करी तेमां मध नाखी पावो ।

५ सफेदजीरुं, इन्द्रजवमीठा, मरडासींगी, बीलीगर्भ, नागकेसर, पलाशी, दरीयाळी बधां सरखे भागे लइ खांडी बारीक करी तेमां सरखे वजने साकर मेळवी ०। थी १ तोला सुधी आखा दिवसमां छास साथे आपवुं. बीलीनो मुरब्बो अथवा बीलीनुं चाटण चटाडवुं ।

६ बाळकोने लोही पडतुं होय तो कांसकीनुं मूळ दुधमां के चोखानां ओसामण साथे घसी पावाथी अटके ।

७ शेवाळ के काळी माटी माथे बांधवाथी नाकमांथी के मगजमांथी पडतुं लोही अटके ।

८ धाणा, आमळां, अरडुसी, द्राक्ष, पित्तपापडो समभागे स्वरस काढी मध साथे पावुं ।

९ वाळो, कमळफुल, धाणा, सुखड जेठीमध, गळो, नसोतर समभागे वाटी स्वरस काढी मध नाखी पावु ।

१० अरडुसी, जीरुं, जेठीमध, द्राक्ष समभागे स्वरस काढी मध नाखी पावुं ।

११ सफेदध्रो, कमळकाकडी, मजीठ, बावळनां पान, साकर समभागे मध साथे पावुं ।

१२ चोखानुं ओसामण शेर ०॥, बकरीनुं दुध शेर २ मेळवी पावुं ।

१३ काळीद्राक्ष, सुखड, लोद्र, धउंलो प्रत्येक तोला १० अने फुलावेल फटकडी तोला २॥ साथे मेळवी राखवुं. मात्रा ०। थी ०॥ तोलो मधमां के साकरमां

अथवा माखणमां चटाडवुं. कोइपण ठेकाणेथी पडतुं लोही अटके. शस्त्रनो घा वाग्यो होय तो ते पर चूर्ण दाबी पाटो बांधवो ।

१४ बेठी उबरीनां मूळ, काळीद्राक्ष, जेठीमधनां मूळ साथे खांडी उकाळो करी मध नाखी पावुं ।

१५ आमळांने घीमां तळी छासमां वाटी माथे चोपडवाथी (थथेडो करवाथी) नाकमांथी पडतुं लोही अटके ।

१६ कडाछाल, मोथ, कुणांबीलानो गर्भ, अतिविषनी कळी अने वीरणवाळो बधां समभागे लइ खांडी २ तोलानो उकाळो करी मध मेळवी पावाथी झाडामां पडतुं लोही आम तथा झाडा मटे छे ।

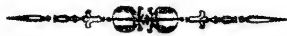
१७ दाडमनी छाल अने कडाछाल बबे तोला लइ खांडी उकाळो करी मध नाखी पावाथी कोइपण ठेकाणेथी पडतुं लोही अटके ।

१८ सुखडने चोखाना पाणीमां घसी तेमां मध साकर नाखी पावाथी रक्तस्राव मटे।

१९. बीलीनो मुरब्बो अथवा बिल्वामृत अवलेह चटाडवो ।

२० गळी (नीली) नुं मूळ घसीने तोलो १ चोखाना ओसामण साथे पावुं. ५ थी ७ दिवस पीवुं. रक्तप्रवाह, कोइपण ठेकाणेथी पडतुं लोही अटके ।

२१ अळसी तेल शेर १, जुनो गोळ शेर १, मेंदालकडी शेर ०॥, खसखस शेर १ बधां साथे मेळवी मोटा बोर प्रमाणे गोळी करवी. मात्रा २-३ खावी. लोहीबंध थाय, पुष्टि थाय, मरदाइ आवे ।



क्षय-राजयक्ष्मा

क्षय-राजयक्ष्मा-खेन घासणी.

कारण—क्षयरोग वारसामां उतरे छे एम कहेवाय छे पण ते वात बधा किस्सामां साची नथी बहु मधुर पदार्थ खावानी टेव, बहु तीखां, बहु जलद भोजन, वखतो वखत अजीर्ण, बजारनी मीठायुं, बिस्कीट (भिस्कुट) वगेरे विदेशी खोराक, चानो बहु उपयोग, अतिविषय, हद उपरांत श्रम, बहु दारु वगेरे कारणोथी क्षयरोग लागु पडे छे. लांबा वखत सुधी उधरस, ताव, श्वास वगेरे दरदो जारी रहेवाथी क्षयनुं रुप पकडे छे. कोइपण दरदने लइ शरीर निर्बळ बहु अशक्त थइ गयुं होय तेमां खावा पीवानी के वर्तणुकनी संभाळ नहीं राखवाथी आ दरद थाय छे भेजवाळां, मळमूत्रादिना संसर्गवाळां, खुल्ली हवा प्रकाश विनाना मकानमां रहेनाराओने, टाढां, वासी, सडेलां के बीजानां पठवाड (उच्छिष्ट), अन्न-पान खानाराओने, दिवसे निद्रा अने रात्रे उजागरो सेवनाराओने, सीनेमा नाटक जोनाराओने, हजारो माणसोना समूहमां गोंधाइ रहेनाराओने, बहु गावानी, बहु उच्चे स्वरे भाषण करवानी के बहु पारायण करवानी टेव वाळाने, रेल्वेनी मुसाफरीमां उघाडां माखीयोये दूषित करेला, सडेला, वासी, जुना खोराक तथा चाना दूषित उकाळा पीनाराओने आ दरद लागु पडे छे. अंग्रेजी डाकटरो कहे छे के टयुबरकल नामना जंतुओ शरीरमां दाखल थवाथी क्षयरोग थाय छे ते वात

खोटो छे. क्षयरोगने उत्पन्न करनारां कारणोज ए जंतुओने उपजावे छे. आहार, विहार अने औषधोनी उचित योजना थवाथी जेम जेम दूषित भाग ओछो थतो जाय छे तेम जंतुओ कुदरती रीते ज नाश पामे छे. आ दरद घणे भागे २० थी ३५ वर्ष सुधीनाने लागु पडे छे. स्त्रीओने सुवावडनी गफलतमांथी आ दरद लागु पडे छे. ते सिवायना बीजां कारणोथी स्त्रीओने क्वचितज आ दरद लागु पडे छे. छतां हालमां सुधरेली अने सुखी कुटुंबनी स्त्रीओ कुचेष्टानी टेवमां पडे छे तेथी परिश्रम करती नथी. बेठाडु थइ जइ होजरी, आंतरडां, हृदय, फेफसांने बगाडे छे. सीनेमा नाटक चेटक जोया करवाथी अवळे रवेडे चडी जाय छे आवा कारणोथी स्त्रीओने क्षयरोग लागु पडे छे. घरनां दळवां, खांडवां, पाणी भरवां, रसोइ करवी एवां काम करनारी के महेनतु स्त्रीओने आ रोग लागु पडतो नथी. तेम गामडां करतां शहेरना प्रजामां आ रोगनुं प्रमाण घणुं वधारे होय छे. गामडांनी खुल्ली हवा, शुद्ध पाणी अने परिश्रमवाळुं जीवन प्रजाने आ रोगथी बचावे छे. त्यारे शहेरमां एनो अभाव होय छे. घणे भागे पुरुषोने ज आ दरद सपडावे छे अने तेनुं मुख्य कारण ब्रह्मचर्यनो नाश छे. वीर्यनुं रक्षण करवाथी थता लाभने आपणा युवको हालना शिक्षणने प्रभावे समजता नथी तेथी अनेक कुचेष्टाओथी वीर्यनो नाश करे छे. पुख्त उमरना माणसो पण विषयमां ज आ संसारनुं सार्थक समजे छे अने तेमां पाछुं पुष्ट खोराक, वाजीकर औषधो रहेवाने उत्तम मकानो तथा बीजां साधनोनो अभाव होय छे एटले क्षयना दरदमां तुरत सपडाय छे बहु उपवास करवाथी, मळमूत्रना वेगने रोकवानी टेवथी तथा हमेशां अजीर्ण थाय तेवो खोराक लेवाथीपण आ दरद लागु पडे छे. अनुलोम क्षयमां प्रथम रस क्षीण थइ पछी लोही, मांस, मेद, मज्जा, अस्थि, वीर्य एम एक पछी एक धातुनो क्षय थतो जाय छे. प्रतिलोम क्षयमां प्रथम वीर्यनो क्षय थइ पछी मज्जा, अस्थि. मांस, लोही अने रस एम एक पछी एक धातुनो नाश थाय छे।

चिन्हो—आ रोगनी त्रण अवस्था छे. प्रथमावस्थामां लांबो वखत खांसी चालु रही पातळो कफ पडे छे फेफसामां क्षत पडे छे बीजी अवस्थामां नाडी मिनिटनी ११० थी १२० चाले छे, चामडी सुकी अने नरम रहे छे, छातीमां दुखावो पेडुमां चुंथारो. अनियमित वखते परसेवो. दिवसे दिवसे शरीर कृश थवुं वगेरे जणाय छे, जठराग्नि मंद पडे छे, कोइने झाडो वधु थाय छे, कोइने थोडो अथवा बंधाइने पण आवे छे, स्वभाव चीडीयो थइ जाय छे. उधरस घणी आवी कफनो वडखो पडे त्यारे थोडी निरांत थाय छे, आंखो धोळी जणाय छे. विषयसुखनी इच्छा थाय छे. क्षयरोगनी शरुआतमां दरदी स्वप्नामां सुकी नदीओ, बळतां वृक्षो, पवन वगेरे देखे छे, खंभा तथा पडखामां पीडा हाथ पगनी वळतर अने सर्व अंगोमां ताव ए मुख्य चिन्हो छे. आखा शरीरमां शोष, अन्न उपर द्वेष. श्वास, उधरस. लोहीना धोगावाळो कफ, साद बेसी जवो. ताव वगेरे चिन्हो जणाय छे. वायु प्रधान होय तो साद बेसे, शूळ निकळे, खंभा पडखांनो संकोच थाय. पित्तप्रधान होय तो सखत ताव, वळतर अने लोही देखाय. कफ प्रधान होय तो माथुं भारे, खोराक पर अप्रिती, उधरस विशेष वगेरे चिन्हो जणाय।

असाध्य चिन्हो—खोराक पर अरुचि, श्वास, सखत उधरस, लोही पडे बाद बेसे, आखे शरीरे ताव, मांस तथा बळनो दिवसे दिवसे थतो नाश, बहु खोराक लेवा छतां नबळाइ वधती जती, वृषण तथा पेट पर सोजो झाडा आंखो चोळी, ऊर्ध्वश्वास अने वखतो वखत वीर्यस्राव ए बधां क्षयरोगीने लक्षणो जणातां होय तो असाध्य स्थिति जाणवी।

अतिविषयजन्य क्षय—जननेंद्रियमां तथा अडकोशमां पीडा, विषय भोगववा अशक्त छतां यत्न करे त्यारे वीर्य बहुज थोडुं अथवा वीर्यने बदले लोहीनां टीपां पडे छे, शरीर घोळुं थइ जाय छे अने वीर्य नाश पाम्या पछी मज्जा, अस्थि, मेद, मांस, लोही, रस ए धातुओ एक पछी एक नाश पामे छे त्यारे क्षयरोग थाय छे. तेमज वृद्धावस्थाने लीधे, बहु पंथथी, शोकने लीधे, बहु कसरतथी, गुमडां जेवां दरदनी पीडाथी क्षय रोग थाय छे तेमां उपर जणाव्या प्रमाणेना लक्षण होय छे।

उरःक्षत—बहु बोजो उपाडवाथी, बळवान साथे लडवाथी, उचेथी पडवाथी, बळध, घोडा, हाथी, उंट जेवा बळवान जनावरोने काबुमां राखवानो प्रयत्न करवाथी लांबो प्रवास पगे चाली करवाथी, पहोळी नदीओ तरवाथी, मोटी छलंग मारवाथी वगेरे कारणे छाती उपर आघात पहोंची आ दरद थाय छे. छाती चीराइ गइ होय एम लागे, छातीमां असह्य पीडा, पांसळामां शूळ, कंप, ताव, शक्तिक्षय, कृशता खोराक पर अभावो जठराग्नि मंद, मन उदास, झाडो पातळो, उधरसमां बडखा काळा पीळा गांठोवाळा लोहीवाळा वगेरे लक्षणो जणाय छे।

क्षयरोगवाळाने शरुआतमां ताव ८५ थी ९० अने पछी उधरस वधे त्यारे १२० सुधी नाडीना धबकारा एक मिनिटमां थाय छे अने ताव १०२ थी १०५ डीग्री सुधी वधे छे. दवाने जोरे ताव ओछो थाय छे पण अमुक समये पाछो चडे छे, एम चड उतर थाय छे. घणेभागे सवारमां ताव नरम पडे छे अने सांजे वधे छे. राते घणो परसेवो वळे छे. प्रथम फेफसामां सोजो थइ सडो लागु पडे छे. पछी बन्ने फेफसां सडी जाय छे।

पथ्यापथ्य—शारीरिक श्रम न पडे तेम विश्रांति आपवी. दरदी अशक्त होय तो दस्त जवाने नजीक गोठवण करवी छतां दरदीना सुवाना मकाननी एटलुं बधुं नजीक न होय के तेनी दुर्गंध तेमां आवे. बिछानुं कपडां हमेशां बदलाववां. थोडुं बोलवुं वांचवुं तथा मनने बीजी बाबतोमां परोववुं दरदीने पोतानी व्याधि संबंधे विचार आववा देवा नहि, धीरज आपवी, सखत ब्रह्मचर्य पळाववुं, बनतां सुधी स्त्रीओनो ओछो परिचय रहेवा देवो, तेम स्त्री साथे एकांत तो मळवा देवीज नहीं. गरम के सुतराव जाडां कपडां पहेराववा, सुकी हवावाळां मेडी उपरनां मकानमां दरदीने राखवो. हवा, प्रकाश पुष्कळ आवे तेम करवुं पण दरदीना शरीर पर हवा न अथडावी जोइए. कोगळा करवामां हाथ पग धोवा वगेरे कोइपण काममां पाणी उकाळेलुं वापरवुं. पीवानुं पाणी उकाळी त्रांबाना वासणमां भरी राखेलुं आपवुं, ओरडामां छाणानी तापणी रात दिवस राखवी, उनाळानो दिवस होय तो तडकाने वखते सगडी बंध करवी चोमासुं के शियाळो

होय तो रातदो सगडी राखवी. ठंडी मोसम होय तो छातीये तथा शरीरना बीजा भागमां सेतो सेतो शेक करवो उनाळो होय तो एक बे दिवसे गरम पाणीथी पसन न आवे तो [illegible] दरदीने नवरावधो अने तुरत डील लुइ नाखवुं. शरीर ढांकी उघाडी आराम पूर्वक बेसाय तेवी गाडीमां बे वखत खुली हवामां दरदीने फेरववो. बगीचामां फेरवी फुलनी सुगंध आपवी।

खोराकमां हलको प्रवाही पची जाय तेवो खोराक आपवो. वादडा [illegible] कोरां वजारना मीठाइ सिवाय पदार्थ खांड, साकर, सुकी मेवो अथाणां, तळेलां पदार्थ [illegible] नुकसान कारक छे. मुख्यत्वे करी बकरीनुं दुध [illegible] गायनुं दुध पचे तेटलुं आपवु. मगनुं [illegible] ओसामण [illegible] चोखा मग चोखा सीधालुण के मीठुं नाखी [illegible] खीचडीमां दुध चोळी [illegible] [illegible] एकला दुधनां करी तेमां साकर थोडी नाखी तेमां एक प्याले २ ३ चमचाना [illegible] पावुं शेडकढ दुध [illegible] के सिवाय [illegible] ते पावुं. खोराक तथा गळपणनी जरुर जणाय त्यां गोळ वापरवो खांड साकर थोडी वापरवी. दुध, कांजी आपवी होय तो तेमां गोळ नाखवो. खोराक एक साथे वधु न देवो पण थोडो भुख प्रमाणे ३-४ वखत देवो. दरदीने पेटमां भुख न होय खावा पर रुचि न होय के खोराकथी कंटाळो आवतो होय तो पराणे खोराक आपवो नहीं के पराणे दुध पावुं नहीं. दरदीने जेटली भुख अने जेटली रुचि होय तेटलेज खोराक देवो।

एकलुं दुध न पचतुं होय के न भावतुं होय तो नीचे प्रमाणेनो मसालो करी तेमांथी चपटी भुकी दुध साथे उकाळा थोडो गोळ के देशी खांड नाखी ते पावुं. तज तोलो १॥, लविंग तो १॥ सुंठ तो. १, तुळसीनां बी तो. २, तुळसीनां पान तो. ४, लीलो चा छाये सुकावेलो तो. १०. कुवाडीयानां बी तो ३ साथे खांडी राखवां चानुं व्यसन होय तेणे आ मसाला साथे चपटी चा पण दुधमां नाखवो पण क्षयना दरदीने पाणीनो चा तो बीलकुल पावोज नहीं. गायनुं दुध गरम करी उफणो आवे पटले चा के [illegible] नाखी नीचे उतारी १ प्याले ३ चमचा जेटलुं मीठु नाखी हलावी गाळी ते पावुं. गायनुं घी, माखण मलाइ, घउनी रोटली वगेरे भुख बहु लागे त्यारे थोडुं थोडुं आपवुं. पण ज्यां सुधी ताव सख्त चडयो होय त्यां सुधी पौष्टिक खोराक अथवा घी रोटली जेवी चीज बंध करवी अने दुध थोडुं थोडुं देवुं. मुख्य खोराकमां वधारेलुं मगनुं ओसामण आपवुं. गधेडीनुं, उंटडीनुं, घोडीनुं दुध के नीरोगी स्त्रीनुं धावण बहु फायदो करे छे. बकरीनुं दुध, घी, माखण अने मांस आ दरदमां बहु फायदाकारक छे।

केटलाक लोकोनी खोटी मान्यता छे के खीचडी साथे दुध खावाथी नुकसान थाय छे ए भ्रम खोटो छे. राते [illegible] दुध खीचडी चोळी खानारा काठीआवाडना लाखो माणसो दीर्घायुष भोगवे छे. आयुर्वेदमां दुध खीचडी साथे खावानी मनाइ लखी नथी. चरक (सुत्र अ. १२) मां दुधमां मीठुं नाखी पीवाथी शरीर स्निग्ध पुष्ट निरोगी थाय छे एम लख्युं छे. "धारोष्णं स्नेहसंयुक्तं पीत्वा सलवणं पयः नरः स्निह्यति पीत्वा सरं दध्न सफाणितम् ॥ ८५॥" "तुरत दोयेला दुधमां जरा घी

अने मीठुं (लवण) नाखी पीवाथी शरीर स्निग्ध सुंवाळुं पुष्ट थाय छे" आ प्रमाणे घणे ठेकाणे दुधमां मीठुं नाखी पीवानुं लखेल छे पण ते पीवाथी नुकसान थवानुं क्यांय लख्युं नथी माटे खीचडी साथे दुध खावुं ए ताजा माणसने, न्हानां बाळकोने तथा क्षय जेवा दरदीओने अमृत सरखुं समजवुं. ए खानारा काठीआवाडना माणसो सो वरस जीवतां त्यारे ए नहीं खावानी मान्यतावाळा घेघला माणसोनां शरीर निस्तेज नमालां क्षीण कृश जोवामां आवे छे।

क्षयरोगी माटे पाणी कुवानुं उकाळी ठारेलुं त्रांबाना वासणमां भरी राखेलुं वापरवुं तळाव टांकां के बंधीयार जग्यानां पाणी नुकशान करे छे आ दरद माटे खुल्ली, सुकी, पर्वतनी के दरियानी हवा सारी छे पण केटलाक दरदीओने ते माफक पण नथी आवतो पण सुकी खुल्ली, गंदकी विनानी हवामां दरदीने राखवो ए जरुरनुं छे. गीरनार उपर रही सातपडानुं पाणी पीवाथी क्षयरोग मटे छे।

राजमृगांक रस लघु—रससिंदूर तो. ३, अभ्रकभस्म तो. ३, [illegible]भस्म तो. १॥, सुवर्णभस्म तो. १, ताम्रभस्म तो. १, मनशिल गंधक हरताळ प्रत्येक तोला २, शुक्तिभस्म शंखभस्म, साबरसींगभस्म प्रत्येक तो. १ साथे घुंटी पीसी कोडीओमां भरी बकरीना दुधथी घाटेला टंकणथी तेनां मों छांदी सुकावी ते कोडीओने माटीना लोटकामां भरी लोटकाने कपडमाटी करी गजपुटना अग्नि दइ स्वांगशीत थये घुंटी २ थी ४ रति मात्रामां १२ रति पीपर अने ९ रति मरीना चूर्ण साथे मेळवी ३ भाग करी मध घी साथे दिवसमां ३ वखत चटाडी उपर दुध पावुं. क्षयरोग, [illegible] खांसी [illegible] मटे छे तथा क्षयरोग साथे जणातां बीजा उपद्रवोनुं पण शमन थाय छे.

राजमृगांक रस [illegible]—रससिंदूर तो. ४, सुवर्णभस्म तो. १॥, अभ्रक भस्म तो. ४, गंधक तो. [illegible], [illegible] तो. १, माक्षिकभस्म तो. ६, शंखभस्म, [illegible]भस्म, प्रवाळभस्म, शिलाजीत, [illegible] लोहभस्म, दळेली साकर, सुंठ, पीपर, मरी, लवींग, [illegible] प्रत्येक तो. २॥ साथे मेळवी, तुळसी आदु, भांगरो, [illegible] अरडुसो, [illegible] रसनी प्रत्येक भावना दइ सुकावी घुंटी [illegible]. मात्रा २ थी ६ रति [illegible] साथे आपवी. क्षय, उधरस, श्वास, खांसीनो [illegible], [illegible] वगेरे मटे छे २ थी ३ महिना सेववुं जोइए।

[illegible]—सुवर्णभस्म तो. १ रससिंदूर तो. २ मोतीभस्म तो. ३, [illegible] तो. ४ [illegible] माक्षिक भस्म तो. ५ प्रवाल भस्म तो. ६, टंकण फुलावेल, [illegible]भस्म, शुक्तिभस्म, कोडाभस्म, साबरसींग भस्म, लोहभस्म, वैक्रांत भस्म, [illegible] भस्म, प्रत्येक तो. २ ए बधां साथे घुंटी लींबडाना पंचांगना उकाळामां ३ दिवस घुंटी गोळा वाळी तडके सुकवी ते गोळा उपर केळनां पान वींटी तेना उपर गोपीचंदननी माटी अरधो आंगळ चोपडी सुकावी पछी ते गोळाने एक घडामां मीठुं भरी तेनो वचमां आ गोळो मुकी मीठामां डुडाडी चुले चडावी १२ कलाक अग्नि आपवो पछी स्वांगशीत थये २४ कलाके गोळो काढी माटी दूर करी घुटवुं मात्रा ३ थी ६ रति लींडीपीपर मरीना चूर्ण साथे मध घीमां कालवी दिवसमां २ थी ३ वखत चटाडवुं. आना सेवनथी ४० दिवसे क्षय

मटे छे ते शिवाय क्षशता, उधरस श्वास साद बेसी जावो, गळाना दरद, केन्सर संग्रहणी, दम, छातीना दरद, हेडकी नबळाइ, गुल्म, शुळ, छातीनो दुखावो, फेफसांनो सोजो, लीवरनो बगाडो पांडुरोग, कमळो पटलां दरद मटे. शरीरमां लोही भराइ लोही, वीर्य, बळ वधे छे शक्ति आवे छे।

कांचनाभ्र रस—सुवर्णभस्म रससिंदुर मोतीनी पीष्टी लोहभस्म, अभ्रकभस्म परवाळां, हरडे, रौप्यभस्म शिलाचंद्रोदय, सुवर्णमाक्षिक भस्म, शुक्तिभस्म, शंखभस्म दरेक तोला ५ पांच लइ मेळवी तुळसी, भांगरो, आदु प्रत्येकनी अकेक भावना दइ सुकाइ जाय पटले तेमां कस्तुरी तो. १ मेळवी घुंटी शीशी भरवी भुकी राखवी मात्रा ३ थी ६ रती मधमां चटाडी उपर गरम दुध पावुं क्षयरोग मटे छे. ते शिवाय प्रमेह उधरस वाना दरदोमां पण तत्कालिक छे तथा पौष्टिक वृष्य छे।

सुवर्ण रस मालणी—सोनानो वरख अथवा भस्म तोलो १, मोतीनी पिष्टी तोला २ रससिंदुर तोला ३, मरी तोला ४, जसदभस्म तोला ८ साथे मेळवी माखणमां कालवी पछी लींबुना रसमां घुंटवुं घुंटतां घुंटतां खटाइनो स्वाद आवे अने माखण तदन उडी गयेलुं लागे त्यारे मग जेवडी गोळीं वाळवी अथवा तोला तोलानी सोगठी करवी अथवा घुंटी भुकी राखवी. मात्रा १ थी २ रति मध, पीप घीमां चटाडवी, क्षयरोग उधरस मगजनी नबळाइ धातुक्षीणता वगेरे मटे।

जातिफलादि गुटिका—जायफळ, वावडींग, चित्रो सुंठ, तगर, तालीसपत्र, सुखड लवींग कलोंजी, कपूर हरडे आमळां मरी, पीपर, वंशलोचन, तज, तमाल, पलची, नागकेशर प्रत्येक तोला ३ भांग शेघेली तोला २८ बधानी बराबर साकर साथे मेळवी मधमां चण्या जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ४ दी ८ गोळी आपवी वधी जातनो क्षय, उधरस, श्वास मटे, संग्रहणी, झाडा मरडा, सळखम, मंदाग्नि वगेरेमां पण अपाय छे।

क्षय शशांक रस—अष्टसंस्कारित पारद, गंधक, गोरक्षनाथी सुवर्णभस्म, मुक्ता, पन्ना, स्फाटिक, माणिक्य प्रत्येकनी पिष्टी. अभ्रकभस्म, लोहभस्म, रौप्यभस्म, तालचंद्रोदय, प्रवाल, सिद्धहरताळ भस्म प्रत्येक तोला ४ चार. सुंठ, पीपर, मरी, पीपरीमूळ, कुष्ठसुगंधी, कसुरो, कपूरकाचली काकडासींगी, कांकचोयानां मींज, लविंग, पलची तज, धमासानां मूळ, शतावरी, विदारीकंद, आसोंध, तुळसीनां बी, कनकबीज प्रत्येक बबे तोला लइ. तुळसीना रसनी, आदुना रसनी, ब्राह्मीना रसनी अकेक भावना दइ छाये सुकावी अंबर तोलो १, कस्तुरी तो. २, केसर तो. १॥ मेळवी घुंटी राखवुं. सवार सांज ४ चार रती मध, घी के दुधमां आपवी. दुधनो खोराक विशेष राखवो. ८० दिवस सेवन करवाथी क्षयरोग मटे।

युनानी नुसखो—तबाशीर, खसखस, कडायोगुंदर, केवडोयो काको, मगजेबादाम, दबेगुश, गुलेबनफशा, शकरेतगार, पलची, तुरंजबीन, बेदाना, खाकर दरेक अकेक तोलो लेवां. प्रथम बेदाना अने तुरंजबाननो लुआब काढी ते साथे उपरनां वसाणां खांडी कपडछान करी सवार सांज अर्धो तोलो दुध साथे आपवुं आनी साथे क्षय पर लागु पडता सुवर्णवसंतमालती वगेरे रसो साथे आपी शकाय छे अथवा ते रसोना अनुपान तरीके पण आ दवा अपाय छे. क्षय मटे।

वासावलेह बृहत् (भस्मयक्त — अरडूसीनां पांदडां शेर १० लइ पाणी मण १ मां उकाळवां १० शेर पाणी बाकी रहे पटले गाळी लइ पछी तेमां साकर शे. १० नाखी धीमे तापे पकाववुं घट्ट थाय आ पटले तेमां सुंठ शाहीरु काळीजीरी, कलोंजीजीरुं, शाक जीरुं, पीपरीमूळ काकडासींगी कडु हरडे. धाणा भारंगी, दुधीगोहेमकंद, अग्निदीपनी कळी लवींग अभ्रकभस्म, शंखभस्म शुक्तिभस्म. शिलाजीत, भोंयआंबली धमासो दरेक तोला बबे लइ खांडी जीणे हवाले चाळी उकला क्वाथमां नाखो धीमे तापे पकाववुं. चाटवा जेवुं थइ जाय पटले तेमां मध जोइए तेटलुं नाखवुं सवार सांज पक थी बे तोला चटाडवु ।

अभ्रमिद्र रसायन (प्राणिज — पारेवां, वांदरा बकरो, सर्प मोर, सांसलु, दरेकनुं मांस जुदुं जुदुं सुकवी दरेक १० तोला लेवुं पछी तेमां तज. तमाल, पलची लींडीपीपर काळां मरी कुष्ठ कौंकचीयां मींज, इन्द्रजव अभ्रकभस्म, दरेक तोला २ बे तथा रससिंदुर तोलो ०।, जावंत्री लवींग कुष्ठ दरेक तोलो १॥ साथे खुब घुंटी चाळी सवार बपोर सांज ०। थी ॥ तोलो मध. गायना घी साथे चटाडवु उपर बकरी गधेडी, उंटडी के घेटीनुं दुध पावुं. क्षयरोग मटे ।

शृंगाराभ्र — निश्चंद्र अभ्रकभस्म तोला ८, कपुर जावंत्री वाळो गजपीपर, तमालपत्र लवींग जटामांसी. तेजबळ, तज. नागकेसर, कुष्ट धावडीना फूल. दरेक तो. ०। हरडे दळ आमळां, बेडां, सुंठ, पीपर मरी दरेक ।= छ आनी भार. पलची जायफळ, दरेक तोलो ०॥, शुद्ध गंधक तोलो १. पारद तोलो ०॥ बधां साथे घुंटी वटाणा जेवडी गोळी वाळी छाये सुकाववी अथवा घुंटी भुको राखवो. सवारमां ४ गोळी ०। तोलो आदु अने नागरवेलना पान साथे चावी खाइ जावां उपर पाणी पीवुं क्षय तथा तेना अंगोना ताव उधरस वगेरे उपद्रवो मटे ते शिवाय मंदाग्नि, सोजो, प्रमेह चरबी उलटी शूळ, अम्लपित्त, शोष गुल्म, पांडु पडनुं लोही. बरल पटला रोगमां सारुं काम करे छे गायनुं दुध, मांसनो रस घी पौष्टिक खोराक आपवो आ औषध वाजीकर अने कामोत्तेजक पण छे ।

छागलादि घृत — बकरानुं मांस शेर १० सर्पनुं मांस शेर १, पारेवानुं मांस शेर २, बधाने वांत्री कापी ३५ शेर पाणीमां उकाळवुं चोथा भागनुं पाणी रहे पटले ते रस गाळी लेवो. अरडूसीनां पान शेर १० मां २६ शेर पाणी मुकी उकाळो चोथा भागनुं पाणी रहे पटले गाळी लेवुं. घोडाआसोंध देशी शेर १० मां २६ शेर पाणी मुकी उकाळी चोथा भागनुं रहे पटले गाळी लेवुं. पछी ते त्रणे उकाळा भेळा करी तेमां गायनुं घी तो. २००. बकरीनुं दुध तो. ६४, घेटांनुं दुध तो. ६४. तथा अष्टवर्ग, लघुपंचमूळ. तज, तमाल, पलची नागकेसर. शतावरी सुंठ पीपर, मरी हरडे, बेडां. आमळां जेठीमधनां मूळ, विदारीकंद शेमळानी छाल, दुधीयो वज. शंखावली, सेंसमूळ तथा खेवडोनामना खडना मीठां मूळ, घोळी मुसळी चवक कौचांनां मींज, अजमोद खेरनी छाल जीरू जीणी पलची मेथीदाणा, भारंगी, प्रत्येक तोला २ बे लइ खांडो पाणीमां लुबदो करी उपला बधा उकाळा अने घी मां साथे पकाववुं धीमो ताप आपवो पाणीनो भाग बळी जाय पटले घी

गाळी लेवुं क्षय, उधरस, हेडकी साद बेसी जावो क्षयनो ताव तेमां उत्तम छे आ घृत कामोत्तेजक, पौष्टिक अने वाजीकर पण छे ।

महाचंदनादि तेल—चंदन उभो समेरवो मूळ हेठो समेरवो मूळ हेठो भोरींगणी मूळ, उभी भोरींगणी मूळ, गोखरु मूळ मदूगपर्णी, विदारिकंद, आसोंद मासपर्णी, आमळां, सरगवानी छाल, पद्मकाष्ठ वाळो नागकेसर प्रसारणी, मोरवेल, घउंलो कमळ, कमळतंतु अतिविष कमळनाळ बधां मळी २०० तोला लइ कचरी २६ शेर पाणीमां उकाळवा चोथा भागनुं रहे पटले गाळी लइ तेमां तलनुं तेल, बकरीनुं दुध शतावरीनो रस, लाखनो उकाळो, सुरको, दहींनुं पाणी हरण मांस सासलानुं मांस, बकरानुं मांस प्रत्येक तोला २५६ नाखी साथे धीमे तापे पकाववुं तेमां चंदन, अगर, चणकबाब, नखलो, छडीलो केसर तमाल तज, कमळतंतु हळदर, दारुहळदर, उपलसरी लालकमळ कुष्ट त्रिफला फालसा, मोरवेल रोहीषतृण देवदार, नळी पद्मकाष्ठ, वाळो धावडी, बीलागर्भ रसवती, मोथ शिलारस, वज, लोद्र, मधुरी घउंलो कचुरो पलची नागकेसर, खाटखटुंबो रास्ना आसंत्रो धाणा दरेक तो. २ ने खांडी लुबदी करी तेल साथे मेळवी पकाववुं पाणीनो भाग बळी जाय पटले तेल गाळी लेवुं पछी तेमां कपूर, कस्तुरी केसर, तथा बीजां सुगंधी पदार्थो मेळववां आ तेल मालीस कराय छे तेम नानी चमची जेटलुं गायना के बकरीना दुध साथे पीवरावाय छे भयंकर क्षय रोग मटे छे उरःक्षत कोइपण ठेकाणेथी पडतुं लोही अटके छे वायुपित्तने शांत करे छे आ तेल कामोत्तेजक पौष्टिक धातुपुष्टिकर अने वाजीकर छे शरीरने बळवान पुष्ट करे छे ।

जीवंत्यादि घृत—खरखाडीनां कुणां फळ जेठीमधनां मूळ, काळीद्राक्ष, इन्द्रजव कचुरो, पुष्करमूळ, बेठीभोरींगणीमूळ, गोखरु, बलामूळ कमळ, भोंआंबली त्रायमाण, धमासो, लींडीपीपर दरेक तोला ४ चार. बधां ओसडीयाने खांडी पाणी शेर ८ मां उकाळवां. पाणी शेर २ रहे पटले गाळी लइ तेमां गायनु घी शेर ६॥ तथा बकरीनुं दुध शेर २॥ नाखी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय पटले घी गाळी लेवुं. सवार सांज मळी ४-८ तोला चटाडवुं. आ घी थी क्षयरोग मटे छे. एकलुं घी न भावे तो थोडुं मध मेळवी चटाडवुं ।

क्षयरोगना सामान्य प्रयोगो

१ सोवार घोयेलुं घी शरीरे चोळवुं चोपडवुं ।

२ महाचंदनादि के महालाक्षादि तेल शरीरे मालीस करवुं ।

३ क्षयरोगवाळाने बे वखत दातण कराववुं, मोढुं साफ रखाववुं, नीचेना ओसडीयाने पाणीमां कालवीने मोमां कोळीया राखवा अने थुकवुं. ०।-०॥ कलाक राखी थुंकी कोगळा करवा. महाचंदनादि तेलना कोगळा कराववा ।

४ तज, मोथ पलची धाणा, आमळां दारुहळदर, अजमोद प ओसडना कोळीया राखवा अथवा प ओसडने खांडी गोळमां गोळी वाळी होकामां तेनो धुंवाडो पावो अथवा प ओसडने उकाळी कोगळा कराववा ।

५ शरीर कृश क्षीण थइ गयुं होय तो मांस खानारा जनावरनां मांस खवराववां. गीध, घुड, चकरो बाज, मोर, कागडो तेतर, सर्प, जाडां नोळीयां, सुद्ध,

ख्रौसलो, रींछ, दीपडा, हाथी, गेंडा सुवर, कुकडां, हंस, उंट एनां मांस के ते मांसने उकाळी तेना सुप पीवराववां के ते बीजा खोराक साथे आपवां जुदी जुदी जातनी उत्तम मदिरा मात्राथी आपवी ।

६ क्षयना दरदीने छागलाद्य घृत के महाचंदनादि तेल मालिस करी एक कोठीमां खरखोडी शतावरी, साटोडी आसोंध अघेडानां पंचांग, बळदाणा, जीवनीय गणनां मळे तेटलां ओसडीयांनां मूळ, खपाटमूळ, जेठीमधमूळ, मोंआंबली, करीयातुं, वकाननां पान, विदारीकंद कुष्ट वधांना उकाळाथी एक कोठी भरी तेमां दरदीने गळा सुधी उकाळामां बेसाडवो उकाळो दरदीने सारो लागे तेटलो गरम राखवो सारी रीते चोळीने नवरावबो पछी शरीर कोरु करी सुगंधी पदार्थो चोपडेलां कपडां, फुलनी माळा वगेरे पहेराववां ।

७ क्षयरोगवाळाने एक वरसनां जुनां धान्य दाणा कठोळ खावा देवां ।

८ क्षयना दरदिने जुलाब आपवो नहि झाडा थवाथी ते जल्दी क्षीण थइ मरी जाय छे माटे झाडो एकादो आखादीमां थाय तो बस छे दस्त कबज थाय तो एरंडीया तेल के दुधनी के गरम करेला दुधनी पीचकारी गुदावाटे आपी एकाद झाडो लाववो पण आकरो जुलाब देवो नही ।

९ अत्तर चोपडेलां दरदी प्रसन्न थाय तेवां हमेशां नवां कपडा पहेरावबां. नवीनवी जुवान स्त्रीओ तेनी नजरे चडे तेम करवुं पण तेनो स्पर्श करवो नहीं के विकार उत्पन्न थाय तेटलो सहवास न राखवो. संगीत वाजां वेदना घोष के कथाने जे सांभळवुं गमतुं होय ते संभळाववुं. माता, पिता, गुरु, वृद्ध, विद्वान ब्राह्मण तथा मुरब्बीओना आशीर्वाद मेळववा ब्रह्मचर्य पाळवुं दान देवां संध्या वैश्वदेव होम वगेरे करावबां. देवतानां पूजन अर्चन दरदी पासे ब्राह्मणद्वारा करावबां. तेनां निर्माल्य जळना चरणामृत पावां. सत्य बोलवुं. पवित्रता आचार रखाववां. मंगळकारी कार्यो करावबा. वाणीथी के शरीरथी हिंसा न करवी. वैद्योनुं अने ब्राह्मणोनुं पुजन करवुं. वेदमां कहेली आरोग्य प्राप्त करनारी इष्टि कराववी ।

१० अरडुशीनां मूळ, खरखोडीनां फळ, जेठीमधनां मूळ, कचुरो, मोरींगणी मूळ समभागे खांडी १ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो ।

११ कडाछाल, अरडुसो, भारंगी, जीरुं समभागे लइ १ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो. ।

१२ शतावरी, घोडाआसोंध, तुळसी, उंदरकनी समभागे लइ १ तोलानो उकाळो करी मध बी नाखी पावुं ।

१३ बिलीगरभ, अरणीनां मूळ, अशोळीयानां मूळ, बळदाणानुं मूळ, तलवणी, आंगरो समभागे लइ १ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो ।

१४ वासावलेह १ तोलो, सुवर्णभूपति २ रति, शंखभस्म ४ रति साथे चटाडी उपर गरम दुध पावुं ।

१५ अभ्रकभस्म ३ रति, शिलाजतु प्रयोग १॥ रति, सुवर्णपर्पटी २ रति, साथे मेळवी च्यवनप्राश साथे दिवसमां २ वखत चटाडवुं. उपर गरम दुध पावुं ।

१६ सुवर्णवसंतमालती रति २, महालक्ष्मीविलास रति ३, शंखभस्म रति ३ साथे मेळवी २ भाग करी भृगुहरीतकी १ तोला साथे चटाडवुं गरम दुध पावुं ।

१७ आसोंधरानी छाल, खरेटीनां बी. कौचां, अरडुसी समभागे २ तोलानो उकाळो करी पावो ।

१८ खपाटना मूळनुं चूर्ण १ थी २ तोला मध. साकर अने माखण साथे आपवुं. बकरीनुं दुध पावुं ।

१९ गोखरु. घोडाआसोंध समभागे खांडी ०॥ थी १ तोलो चूर्ण मध माखणमां चटाडी उपर दुध पावुं ।

२० कांटा विनानी अघेडीना पंचांगने खांडी ०॥ थी १ तोलो भुको गायना दुध साथे आपवो ।

२१ दारुहळदर. शंखावळी. तलवणी. जेठीमधनां मूळ समभागे लइ ०॥ थी १ तोलो चूर्ण मध. माखण साथे के दुध साथे देवुं ।

२२ मीठुं शेर ०॥ लइ आकडानां दुधमां १ दिवस घुंटवुं पछी एक पाणीवा नाळीयेरमां काणुं पाडी पाणी काढी लइ मीठुं तेमां समाय तेटलुं कलरीने भरी डगळी दइ नाळीयेरने कपडमाटी सात करी, गजपुटनो अग्नि देवो. आकडाना दुधनो पट दीधा वीना पण पकावाय छे. ताव खांसी. क्षय श्वास मटे सवार सांज ६ थी १२ रति पाणी साथे देवुं. क्षयरोग मटे ।

२३ कळीचुनो लींबुमां भरी आखी रात रहेवा देवो. सवारे नीचोवी ते रस पीवो. खेनक्षय, कास. खांसी मटे ।

२४ अघेडानुं पंचांग लइ बाळी राख करवी ते पाशेर, लींडीपीपर तो. ०॥, अरडुनानी छाल तो. ५, गोळ तो. १० नां मळिया बोर जेवडी गोळी वाळवी. दिवसमां ३ थी ६ गोळी खवरावची. क्षय, खांसणी जाय ।

२५ टंकणखार तोला ५, पारो तो. ५, गंधक तो. ५, सुंठ तो. ४, [illegible] तो ४, आदुना पट ७, पानना [illegible] पट ७ दइ खांडे [illegible] [illegible] तो २ [illegible] [illegible] गोळी वाळवी. [illegible] पान [illegible] [illegible] उधरस [illegible] मटे ।

२६ घोडाआसोंध. सुंठ पीपर. लवींग साकर समभागे खांडी ०। थी ०॥ तोलो पाणी साथे लेवाथी क्षय रोग जाय ।

२७ आकडानां [illegible], लवींग सवारे [illegible] क्षयरोग जाय ।

२८ त्रिफला त्रिकटु आमळीं [illegible], [illegible]मूळ, लवींग, [illegible] [illegible], [illegible], नागकेसर. तमालपत्र ए सर्वे चूर्ण [illegible] सर्वथी बमणी साकर [illegible] ०। थी ०॥ तोलो पाणी के दुध साथे लेवाथी क्षय रोग जाय ।

२९ [illegible] सांजे २ [illegible] थाय [illegible] [illegible] लेवो [illegible] सवार [illegible] दस्त लागी जाय सवारे [illegible] पी शके तेटला [illegible] दुधमां २ पान [illegible] उकाळवुं पान बफाइ जाय पछी [illegible] दुध [illegible] [illegible] सांजे काइ [illegible] के पान आपवानुं नथी परेजी कांइ नथी [illegible] ते [illegible] बीजे दिवसे सवारे २ पान त्रीजे दिवसे ३ पान एम ७ पान सुधी [illegible] ८ से दिवसे ६ पान ९ मे दिवसे ५ पान एम छेल्ले दिवसे १ पान एम उतरवुं हमेशां दुध पी शकाय तेटलुं पीवुं कुल १३ दिवसनो प्रयोग छे आथी दम, श्वास. क्षय. उधरस वगेरे मटे छे आ प्रयोग सिद्ध पुरुषनो बनावेलो छे. आराम थइ जाय पछी रु. १। सवानो धर्मादा करावो ।



कास—उधरस.

खांसी—काम [illegible]

उदानानुगतः [illegible] [illegible]कांस्यस्वनो [illegible] ।

[illegible]ष्टो निरेति सहसा सदोषः का[illegible] [illegible] (मा. नि.)

[illegible]—श्वासनळीमां धुळ वगेरे पदार्थ जवाथी, जमता [illegible] जवाथा, छींक आवता अटकाववाथी दाह करनारां, गरम ठंडा, वाइडां [illegible] पदार्थ खावाथी टाढे पाणीये न्हावाथी ठंडो पवन लागवाथी आघातथी, पछाटथी अतिभोजन, गरिष्टभोजन अजीर्ण उपर भोजन करवाथी [illegible] [illegible] उधरसनु दरद थाय छे ।

[illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ठक लागे हाडमां थोडा ताव [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] खुचतां होय एवुं जणाय ।

वायुनी उधरस—छाती गळु अने मों सुकाय हृदय पांसळां छाती अने माथामां शूळ निकळे, जीव मुझाय बेचेनी थाय, साद बेसी जाय, खांसीनो वेग वधु होय पीडा वधु थाय सुकी खांसी आवे रुंवाडां उभां थाय साद खोखराय जाय ।

पित्तनी उधरस—छातीमां बळतरा थाय, ताव आवे, मोढुं सकुं अने कडवुं तरस वहु लागे पीळी तीखी उलटी रोगीनो वान पीळो आवे शरीरे दाह बळे, कफ पीळो पडे गळामांथी उनी वराळो निकळे झाडा पातळा अने वधु थाय ।

कफनी उधरस—छातीमां पीडा ओछी माथुं अने छाती भारेसल जेवां थइ जाय गळामां कफ चोंटेलोज रहे. मों चीकणुं, शरीर सुस्त, सळखम उलटी, अरुचि रुंवाडां उभां थाय, झाडो चीकणो धोळो कफ पडे ।

क्षतनी उधरस—पोताना बळ करतां वधु बळ करवाथी जेमके शक्ति उपरांत घोडा वगेरे पर मुसाफरी करवी राडो पाडीने बोलवु, गावुं (पारायण वगेरे सतत करे छे ते) मोटे सादे भाषणो करवां, घणो भार उपाडवो बळ क्षीण थतां सुधी नदीमां तरवुं बळध, सिंह, घोडा वगेरेने काबुमां लेवा हद उपरांत बळ करवुं वगेरे कारणे छातामां क्षत-घारुं पडी उधरस थाय छे. पीळा काळा, सुका गांठयुंवाळा, सडेला बडखा पडे, बडखा निकळतो वखते गळामां दरद थाय अने छाती चीराइ जाती होय तेवी पीडा थाय, सोयुं खोसाती होय तेम शूळ निकळे ने साथे ताव, श्वास, तरस धुजारो थइ दिवसे दिवसे शरीर क्षीण थइ छातीमां के पेशाब वाटे लोही पडे छे ।

क्षयनी उधरस—अतिविषय, अनियमित अपवित्र भोजन, विशीनां खाणां बजारु चानुं व्यसन बहु दुःख, चिंता वगेरे अनेक कारणे आ दरद थाय छे त्यारे ताव, शूळ, बळतरा, बेचेनी, कृशता वगेरे चिन्हो दिवसे दिवसे वधतां जाय छे. गंधातो पीळो लालो धोळो कफ पडे छे बळवान् पुष्ट अने नियमित आहार विहार साथे औषध सेवनार माणसने आ उधरस मटी शके छे ।

पथ्यापथ्य—जाडां पाणकोराना अथवा उननां कपडां पहेरवां. दरद के शरदीकारक पदार्थो भारे गरिष्ठ अजीर्ण करे तेवां अन्नपान, स्त्रीसंग. सामो पवन खुल्लो पवन शरीरे लागवा देवो नहीं मीठाइ, तेल, अथाणां, झाडो कबज करनारां भजीयां, गांठीया, चेवडो वगेरे खावा नहीं. हळवो गरम प्रवाही खोराक लेवो. दुध गरम करेलुं अने घणे भागे मोळुं अथवा गोळ नाखेलुं (ते न भावे तो जुज साकर नाखेलुं) आपवुं खीचडी, चोखा, दाळनुं पाणी, घउं बाजराना लोटनी राब वगेरे खोराक आपवो लीलुं शाक बीलकुल देवुं नहीं. चानी टेव होय तेणे तुळशीना पान, सुंठ मरी, लवींग नाखीने पीवो अथवा दुधमां ते चा वाळो मसालो नाखीने गरम करीने दुध पीवुं. छातीये शेक करवो भेज विनाना सुका हवा प्रकाशवाळा मकानमां सुवुं. महानारायण के महाविष्णु तेल चोळवुं पन्टीड्रोपीन मिश्र लेप छातीये लगाडवो ।

नागनाथ रस—पारद, गंधक, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, शंखभस्म, शुक्तिभस्म, टंकण, लोहभस्म प्रत्येक तोला २ मरेठा तो. ३, जायफळ, लविंग, तज, एलची, वावडींग, सुंठ, पीपर, मरी, मोथ, कचुरो, कपुरकाचली कपुर, चित्रो बच्छनाग प्रत्येक तोलो १ एक साथे मेळवी उंदरकनी, भांगरो, नगोड, कुवो, अरडुसी प्रत्येकना रसनी अकेक भावना आपी चणोटी जेवडी गोळी वाळवी. के घुंटी भुको राखवो. मात्र. ३ थी ६ रति मधमां अथवा वासावलेहमां चटाडी उपर दुध पावुं ।

नागनाथ रसो ह्येष नानाकासनिबर्हणः ।
क्षयमाहत्फुप्फुसोद्भूतान्गदान्सद्यो विनाशयेत् ॥

रसेन्द्र गुटिका बृहत्—पारद गंधक मरी अभ्रकभस्म ताम्रभस्म हरताळ लोहभस्म अतिविष प्रत्येक तोला १० दश लइ साथे मेळवी भांगरो नगोड सरगवाना पान जेठीमधना मूळनो काढो लींबुरस खाखरानां फुल पितुडि काळो भांगरो प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ चणोटि जेवडि गोळि वाळवी मात्रा २-६ गोळि वासावलेह साथे अथवा च्यवनप्राश अवलेह साथे आपवी बधि जातनी उधरस श्वास अम्लपित्त वगेरे दरदोमां वपराय छे ।

गुणमहोदधि रस—पारद गंधक लोहभस्म बछनाग तज ताम्रभस्म वंग अभ्रकभस्म प्रत्येक तोला १० दश. तमालपत्र सुंठ पिपर मरि मोथ वावडींग नागकेसर नगोडनां बि एलची पिपरिमूळ प्रत्येक तोला २० विश साथे मेळवि रतवेलियो अने लींबुना रसनी भावना दइ चण्या जेवडि गोळि वाळवि. मात्रा ३-८ गोळि मधमां चाटि उपर गरम दुध पिवुं. बधी जातनी उधरस श्वास. छातीनां फेफसानां स्वरनळिनां दरद, साद बेसी जवो वगेरे दरदो मटे छे. हरस भगंदर हृदयशूळ पडखानुं शूळ संग्रहणी पेटनां दरद, प्रमेह पथरि ए दरदोमां पण बहु फायदो करे छे ।

उधरसमां शृंगाराभ्र—वासारिष्ट महाकाळेश्वर रस (श्वासकाळेश्वर) वासावलेह बृहत्, तालिसादि चूर्ण तथा क्षयरोगमां लखेलां औषधो वपराय छे ।

युनानी सरबत—बनफशा तोला ३, नीलोफर तो. ३ खसखस तो. ३, उनाब तो. २, तुख्मेखलाजी तो. २, बेदाना तो १, पोस्तना डोडा नंग ६, अळशिनां बिज तो १॥ मेथीदाणा तो १॥, तुख्मे रहेमान तो. १॥, इशबगोल तो. १, मध शेर १, साकर शे. २ विधिथी शरबत बनाववुं पित्तगरमीनी उधरस मटे ।

बालकाम हरीबटी—पारो गंधक सुंठ मरि वावडींग जवखार फुलावेलो टंकण दरेक तोलो १ एक, हीमजी हरडे तो. ३ नेपाळो पकवेलो तो. १॥ परडिनां मींज तो. ७ बधाने पाणिमां वाटि मग जेवडि गोळि वाळवि. मात्रा १-३ गोळि उमर प्रमाणे देवि. गोळना पाणिमां गोळि आपवी नानां बच्चांनि खांसि सस्णि कफमां उत्तम छे. मोटि उधरस भराणि वराधमां पण अपाय छे ।

मुक्ता रसायन—(चरक चि अ. २१) मोती प्रवाळ वैडूर्य शंख स्फाटिक प्रत्येकनी भस्म, शुद्ध काळो सुरमो पारो गंधक काच (काचलवण) आकडानां रवाइडां जीर्ण पलची मीठुं मींघालुण ताम्रभस्म लोहभस्म रौप्यभस्म कमळपुष्प कसेरुक जायफळ भींडीनां बी अघेडानां बी बधां सरखे भागे खांडी घुंटी ६ थी १२ रति मध घी साथे चटाडी उपर दुध पावाथी हेडकी श्वास उधरस मटे अने आंख्यमां आंजवाथी पडळ मोतीयो झांइ फुलुं झांझवां डयो खंजवाळ चीपडा तथा बीजा आंखना घणा रोग मटे ।

उधरसना सादा उपाय

१ गधेडो घोडो उंट सुवर बकरो के हाथी एमांना कोइपण जनावरनां ताजां लींडाने नीचोवी रस काढी तेमां मध मेळवी पावुं ।

२ आसंधने बाळी पाणीमां डोइ ते आछरेला पाणीने बाळी खार करवो ते खार पावलीथी छ आनीभार आपवो ।

३ मोरना पगने के पगनी नळीने कचरी उकाळी पावुं ।

४ शींगडावाळां आखी खरीवाळां के बे खरीवाळां जनावरनां चामडां हाडकां खरीयुं दरेकने जुदां जुदां बाळी त्रणे राखने सरखे भागे मेळवी ६ थी ८ रति मध घी साथे चटाडवुं. श्वास हेडकी उधरस कफ मटे छे ।

उपला १ थी ४ आ चार प्रयोगो कफथी गळुं रुंधाइ गयुं होय घडको उपडयो होय तेथी श्वास रोकाइ जातो होय तेमां आपवा. कफ न होय तेवी उधरस श्वास तेवी हेडकीमां आ चार उपचार करवा नहीं ।

५ चोपचीनी वरीआळी, साजीखार, एरंडीना मींज, कालीमुसली समभागे ए सर्वे एकठां वाटी गौमूत्रमां गोळी चणीया बोर प्रमाणे करवी सवार सांज ३ थी ७ दिवस सुधी देवी उधरस, श्वास, वायु प्रकोप सर्वे रोग मटे ।

६ पीपर अरडूसो भारिंग अफीण अजमो वावडींग काळी हलदर मध समभागे खांडी चणीयो बोर जेवडी सवार सांज बबे गोळी उना पाणी साथे आपवी उधरस मटे ।

७ हीराबोळ टंकणखारीयुं साजीखार फटकडी चूनो समभागे लइ जुना गोळथी गोली चणीयाबोर जेवडी वाळवी सवार सांज बबे गोळी देवी उधरस मटे

८ हरडेदळ सुंठ मोथ समभागे लइ खांडी मधमां चणीया बोर जेवडो गोळो वाळवी उना पाणो साथे टंके बबे गोळी देवा उधरस मटे ।

९ वेडां सुंठ पीपर हरडेदळ समभागे लइ मधमां गोळी चणीया बोर जेवडी करवी उना पाणीथी लेवी उधरस मटे ।

श्वास–दम

दम चडवो हांफण–हांफली.

कारण—उलटी झेर पांडुरोग अजीर्ण ताव धुळ धुंवाडो मर्मस्थानमां आघात ठंडो पवन छातीये लागवो गंधकनो धुंवाडो आघात ठंडा पाणीये नहावुं वगेरे कारणे आ दरद थाय छे. फेफसांनी बहारनी जीणो धमनी नाडीओ वगडवाथी तेमां बहारना श्वासनुं बराबर आवागमन थतुं नथी अने फेफसामांनी झेरी हवा सहेलाइथी बहार जइ शकता नथी एटले आ दरद थाय छे. दरदोनां चिन्हो तरीके पण श्वास रोग थइ आवे छे ।

चिन्हो—कोइ माणसने शियाळामां कोइने चोमासामां अने कोइने बधी ऋतुमां दम थइ आवे छे. वर्षो सुधी लंबाय छे अने वर्षोवर्ष अमुक मुदते उपडी आवे छे. रातने वखते उपडे छे त्यारे उंघमांथी जागी उठे छे. छातीमां एक जातनो अवाज थाय छे. प्रथम उधरस उपडी दम वधे छे. बडखो नीकळी जाय त्यारे जरा शांति थाय छे छाती भींसाय छे बराबर चाली शकातुं नथी पाछली राते वधु जोर पकडे छे. बादी झाडानी कबजीयत गभरामण वगेरे थाय छे. श्वास चडे त्यारे प्रथम उधरस बहु आववाथी दरदी विहवळ थइ जाय छे परसेवो बहु वळे छे अंदर जतो श्वास टुंको अने बहार नीकळतो श्वास लांबो थाय छे. लमणामां त्रोड वांसामां के पडखामां शूळ वांसामां फाट कामकाजमां निरुत्साह चिंताग्रस्त चहेरो वगेरे जणाय छे ।

पथ्यापथ्य—अजीर्ण थवा देवुं नहीं बादी थाय तेवी चीज खावी नहीं खांड साकर बजारनी मीठाइ तेलमां तळेलां पदार्थ चेवडा चा फळ सुको मेवो मगफळी तरबुच चीभडां तळीयां लापसी शीरो घांनी चीजुं दहीं छास वगेरे खावां नहीं. लीलुं शाक जेम बने तेम ओछुं खावुं. दरदीये सुको हवावाळा प्रकाश पुष्कळ आवतो होय आसपास गंदकी के भेज न होय तेवा मकानमां रहेवुं. उजागरो करवो नहीं दिवसे सुवुं नहीं घी के चरबीवाळा पदार्थ ओछां खावां. बकरीनुं गायनुं घेटीनुं गधेडीनुं दुध तथा प्रवाही सादो खोराक लेवो. ठंडो के सामो पवन लेवो नहीं तेमां पण छातीये बीलकुल लागवा देवो नहीं. प्राणायाम वधु करवा. एक वखत जमवुं. ठंडे पाणीये न्हावुं नहीं न्हावुं होय त्यारे पवन न आवतो होय तेवी बंध ओरडीमां सहेवाय तेवा गरम पाणीये न्हावुं. तुरत शरीर कोरुं करी नाखवुं. शोयाळो होय तो पथारीमां तथा पहेरवामां गरम के जाडां कपडां वापरवां ।

श्वासकुठार रस—पारद गंधक वछनाग टंकण मनशिळ सुठ पीपर प्रत्येक तोला १० दश, मरी तो. ‌०० बधां साथे खांडी घुंटवां. मात्रा २ थी ४ रति मधमां चटाडवुं बधा श्वास मटे ।

श्वास भैरव रस—पारद गंधक शंखभस्म ताम्रभस्म प्रत्येक तोला १०, टंकण वछनाग सुंठ पीपर मरी चित्रो मनशिळ कचुरो कपुरकाचली मोथ वावडींग शुक्तिभस्म कोडीभस्म लविंग तज प्रत्येक तोला ५ पांच साथे मेळवी आदु अने धतुराना रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुको राखवो. मात्रा २ थी ४ रति मधमां चटाडी उपर दुध अथवा पाणी पावुं. बधा श्वासमां उत्तम छे ।

सूर्यावर्त रस—ताम्रभस्म पारद गंधक प्रत्येक तोला १० दश, शंखभस्म शुक्तिभस्म सुंठ पीपर मरी लवंग पलची तज प्रत्येक तोला ५ पांच साथे मेळवी घुंटी राखवुं. मात्रा २ थी ४ रति मधमां चटाडवुं ।

श्वास चिंतामणि रस—पारद गंधक ताम्रभस्म शुक्तिभस्म शंखभस्म प्रत्येक तोला ५ पांच, अभ्रकभस्म तो ७॥ मुक्ताभस्म सुवर्णभस्म रौप्यभस्म प्रत्येक तोला १ माक्षिकभस्म तो ६ टंकण वछनाग सुंठ पीपर मरी मनशीळ कनकबीज प्रत्येक तो. ४ साथे मेळवी भोरिंगणीनां छोडवानो रस नगोडनो रस अने आदु रस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुको राखवो. मात्रा ३ थी ६ रति मध अने आदुरस साथे आपवी आ गोळीनी चलममां फुंवाडी पण पीवाय छे बधी जातना श्वास छातीनां दरद हेडकी वगेरे मटे ।

श्वासरेश्वराभ्र—पारद तो. १० गंधक तो. १० रससिंदूर तो. ५ कांस्य भस्म तो. ५ अभ्रक भस्म तो ३० साथे मेळवी भारंगी कनकपत्र अरडूसी कारेलांनो वघान नगोड पीपरीमूळ आदु चित्रो गंधक तज लवींग बधां सरखे भागे लइ उकाळो करी ते उकाळानी १२ अथवा दरेकनो उकाळो जुदो जुदो करीने के रस काढीने अकेक भावना एक पछी एक देवी. पछी सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ३ थी ४ रति मधमां चटाडवुं बधां श्वासनां दरद छातीनां दरद उधरस वाळकोनां स्त्रीओनां छातीनां दरदो मटे छे ते शिवाय पांडुरोग सळखम क्षय मूत्ररोग वीर्यरोग वगेरे पण मटे छे ।

गाम्म हरिनकी अवलेह—बेठी भोरींगणीनुं पंचांग रतल १० तथा उभी भोरींगणीनुं पचांग शे. १० नो आठ गणा पाणीमां उकाळो करवो ते उकाळामां ६ रतल हरडे मोटी नाखवी. पाणी चतुर्थांस रहे एटले गाळी लइ हरडे जुदी काढी सुकावी भुको करवो पछी ते उकाळामां हरडेनो भुको तथा गोळ शेर ८० नाखी पकाववुं घाटुं थवा आवे एटले सुंठ पीपर मरी पीपरीमूळ नगोडनां पान तज वंशलोचन पलची लवींग कायफळ समदरफळ काकडाशींगी अरडूसी कचुरो भारंगी अजमा वावडींग कलोंजी अरणीनां फुल मोथ जावंत्री जायफळ प्रत्येक तोला ४ तथा शंखभस्म तो ६ शुक्तिभस्म तो. ६ वराटिका भस्म तो. ६ शुद्ध मनशीळ तो. २ बधां साथे मेळवी पकावो घाटुं थाय एटले उतारी मध जोइए

तेटलुं मेळवी बरणी भरी राखवी. मात्रा १ थी २ तोला चटाडी उपर गरम दुध अथवा कोइ उकाळो के पाणी पावुं ।

श्वासगजसिंह रस—दांतिभांति विनानी ताम्रभस्म अष्टसंस्कारित पारद शुद्ध गंधक प्रत्येक तोला १० दश, अभ्रकभस्म जेठीमधमूळ सुंठ पीपर पीपरिमूळ खेरसार मरी लविंग पलची केसर कुलींजन अकलकरो तज सुखडनुं तेल प्रत्येक तोलो १ एक, साबरसींग भस्म शुद्ध तोला ६ रींगणामां पकवेला [illegible] भस्म त्रवेन तोलो १॥ कस्तुरी उंची तो. २ प्रथम पारद गंधक अने ताम्रभस्म त्रणेने मिश्र करी पर्पटीनी रीते पकावी पछी तेमां बीजी चिजो नाखी घुंटी बारीक करवुं मात्रा २ थी ३ रति मध गोळ अथवा बकरीना दुध साथे आपवाथी बधी जातना दमनां दरद उधरस छातीना रोग सुंझारो छातीनो गभराट वगेरे मटे छे ।

धूम्रपान गोळी—सुंठ पीपर मरी तमाल [illegible] मूळ मनशिल हिंगळो हरताळ प्रत्येक अर्धो अर्धो तोलो, गुगळ गंधक दरेक अकेक तोलो लेवां. आकडानां दुधमां घुंटी पैसाभारनी गोळी वाळवी. हमेशां १-२ गोळीनी धुंवाडी चलम के होका वाटे पावी. सात दिवस पीवाथी बधा प्रकारना श्वास मटे. पथ्यमां घउंनी थुली मागनुं घी मध खावुं. खाटुं खारुं खावुं नहीं ।

अहिफेनादि वटी—अफीण शुद्ध हिंगळो अकलकरो वेवडिंग फटकडी फुलावेली रास्ना लविंग खेरसार कपूर समभागे घुंटी [illegible] चणोठी जेवडी गोळी वाळी छाये [illegible] दममां २-६ गोळी सुधी अपाय छे ।

ऊर्ध्वश्वासादि [illegible] शुद्ध पारद गंधक ताम्रभस्म लोहभस्म नागभस्म चित्रो सुंठ पीपर मरी आसोंध [illegible] वेवडिंग [illegible] पीपरिमूळ हळदर अकलकरो खरसाणी [illegible] लविंग [illegible] [illegible] [illegible] जेठीमध [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कारथी [illegible] करी [illegible] अर्धा तोला सुधी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ऊर्ध्वश्वास मटे ।

[illegible]—[illegible] [illegible] मूळ [illegible] [illegible] मरी [illegible] खांडी कपडे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जेवडी गोळी वाळवी. सवार [illegible] २-४ गोळी दरदना जोर प्रमाणे आपवी. [illegible] गोळी [illegible] आपवी [illegible] मटे ।

[illegible] गुटिका—[illegible] सुंठ हरडेदळ समभागे खांडी जुना गोळमां गोळी वाळी मोमां राखी रस [illegible] श्वास उधरस मटे ।

[illegible] चूर्ण—[illegible] [illegible] [illegible] देवदार हरडेदळ वेवडिंग आमळां सुंठ पीपर मरी [illegible] समभागे खांडवां. सवार सांज ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण मध घी साथे आपवाथी श्वास उधरस मटे ।

वासादि क्वाथ—अरडुसीनां पान हळदर धाणा गळो भारंगी पीपर सुंठ भोरींगणी मूळ समभागे खांडवां एनो उकाळो करी तेमां मरीनो भुको छांटी पावाथी श्वास क्षय उधरस मटे छे ।

हिंगुलादि वटी—हिंगळो शुद्ध लविंग ताम्रभस्म लींडीपीपर सिंधव खाख-रानो राख समभागे लइ मधमां चणीया बोर जेवडी गोळी वाळवी. श्वास दम उधरस मटे ।

जडदावटी—जडदो शेर १ गौमूत्र शे. १५ तेमां दिवस ३ भींजवी राखी पछे चोळी कुचा काढी नाखी लुगडाथी गाळी लेवुं कडायामां उकाळवुं तेमां अजमो शे. ०।नी पोटली लटकती बांधवी, हरडे २ मोटी आखी नाखवी अरडु-सानो रस शे १ नाखी उकाळवुं मावा जेवुं थाय त्यारे पोटलो हरडे काढी लेवी तेमां लविंग पीपरीमूळ सुंठ पीपर मरी टंकण साजिखार हळदर दरेक तोलो १ एक खांडि नाखि मेळववां. तेनि गोळि बाजराना दाणा जेवडि करवि ते गोळि टंके बबे सांजे सवारे देवि. श्वास कास उधरस मटे ।

श्वासना सादा उपाय

१ श्वास काळेश्वर तो ०॥ साबरसींग भस्म तो, १ लोहभस्म तो. १ स्वयमग्नि तो. ०॥ बधां साथे मेळवी तेनां सरखे भागे ६४ पडीकां करी सवार सांज वासावलेह साथे के मध साथे चटाडो उपर पाणी के दुध पावुं ।

२ ताम्रभस्म श्वेत तो. ०। मल्लभस्म श्वेत तो ०)= अष्टामृत पर्पटी तो. १ अग्निरस तो. १ बधां साथे मेळवी ३२ पडीकी करवी सवार सांज एकेक मध साथे आपवी जमीने त्रण त्रण गोळी अभ्रककल्पवटी पाणी साथे आपवी ।

३ अभ्रकसहस्त्रपुटी तो. १ श्वासगजसिंह तो. ०॥ अग्निरस तो. ०॥ भैरव-नाथी पंचामृत पर्पटी तो. ०॥ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ६४ पडीको करी सवार सांज अकेक मध साथे चटाडी उपर पाणी के दुध पावुं ।

४ धतुराना पान छाये सुकावो बीडी करी धुंवाडी पावी ।

५ बेडांनी छालने ८ गणा गोमूत्रमां पकावी छाये सुकावी खांडो टंके ०। तोलो मधमां चटाडवुं ।

६ अजमां तो. १। गाडरनुं दुध तो. २० हळदर तो. ०॥ बधां साथे मेळवी पावुं।

७ धूम्रपान बीडी—मनशीळ एलची केसर समभागे लइ पाणीमां घुंटी कागळ पर चोपडी भुंगळी वाळी सुकाववी पछी तेनो धुंवाडो पीवो अने तेना पर ढोसाना गोळ नाखेला लाडु खवराववा (चुरमाना) ।

८ गोळ जुनो शेर २ मंडुरभस्म तथा लोहभस्म शेर २ कुंवारनो गरभ शेर २ बधां साथे मेळवी एक बरणीमां नाखो तेनुं मो अडदना लोटथी बंध करी एक खाडामां उपर नीचे खातर अने वचमां बरणी मुको खाडो बंध करी १ महीनो रहेया दइ काढो १ वालथी शरु करी आखा दीमां २ थी ३ मासा सुधी वधारी सेवन करवाथी दम खांसी मटे छे उपर पाणी पीवुं ।

९ अजमो खरसाणी तो. ०। जायफळ नंग २ लवींग नंग २० वडागरुं मीठुं तो. ०। काळां मरी तो. ०। बधां साथे वाटी एक के बे मोटा इंद्रामणानां फळने चीरी तेमां बधुं भरी माथे दोरो बांधी कपडमटी करी ११ छाणानो अग्नि आपशो. ए भस्म १ थी ३ रति बे आनी भार गायना घीमां मेळवी पाणी साथे गळी जावी खाटुं तीखुं खारुं-मीठुं खावुं नहीं दम खांसी मटे ।

१० काळां मरी शेर ०। लइ तेमां खरसाणी थोरनुं दुध मरी बुडे तेटलुं माटीनी हांडलीमां नाखी चुला नीचे डाटी ७ दिवस पछी काढवुं पछी तेमांथी मरी १ खावुं ५२ बावन दिवस खावाथी श्वास दम मटे ।

११ बकरीनुं मूत्र तोला ४०० मां बेडांनी छाल तोला १० नो भुको तथा मध तोला २० नाखी पकाववुं घाटुं थाय पटले वाल वालनी गोळी वाळवी ४ थी १२ गोळी खवरावबी ।

१२ वछनाग टंकण हींगळो अफीण समभागे लइ आदुरसथी गोळी मरी प्रमाणे करवी सवार सांज अकेक देवी श्वास कास उपर गुण करे वछनाग गौमूत्रमां शोधीने नाखवो ।

१३ भुंगळियाथोरनुं दुध शेर ०॥ आकडानुं दुध शे. ०॥ आकडानां पान ६ नो लेप करवो. सरावला २ लावी पकमां ओसडनाखी बीजुं उपर ढांकी कपडमटी करी गजपुट देवा ते बाळी भस्म करवी तेमां त्रिफळा त्रिकटु चित्रो पिपरामूळ चवक जीरुं समभागे करेलुं चूर्ण समभागे नाखी घुंटी सवारे बेआनी भार पाणी साथे देवुं. श्वास शूळ गोळो पेटपिड उधरस मटे ।

१४ लुगडुं १ हाथ लइ आकडानां दुधना ७ पट देवा तडके सुकाववुं पछे ते लुगडांने बाळी भस्म करवी ते भस्म तोलो ०।= हमेशां चडती दिवस ७ सुधी आपवाथी खेन श्वास मटे जो ७ दिवसमां आराम न थाय तो उपर प्रमाणे फरी ७ दिवस आपवी. जरुर जणाय तो त्रीजी वखत ७ दिवस आपवी तो जरुर आराम थाय ।

१५ घोडाछाप गजवेल तोला ८ सिंधालुण ते. ८ त्रिकटु त्रिफळा भारंग तज तमालपत्र लविंग दरेक ते. २ बे छास तो १२ उनुं पाणी तो. ४०० ए सर्व ठाममां नाखी जमीनमां डाटवुं. १० दिवस राखी पछे काढी बबे तोला रोज पावुं. श्वास पांडु क्षय मटे ।



हेडकी—हिक्का

हेडकी—अजीर्णथी उदावर्त वायु उंचो चडवाथी हिस्टिरियाथी झाडानी कबजियतथी रुक्ष ठंडा वासी भोजनथी मळमूत्रनो वेग रोकवाथी अजीर्ण उपर जमवाथी आमथी अभिघातथी क्षयथी तथा कोइपण दरद भयंकर रुप पकडवाथी हेडकी उत्पन्न थाय छे ।

चिन्ह—हेडकी अन्नजा क्षुद्रा यमला महती अने गंभीरा ए पांच जातनी थाय छे. अन्नजा अने क्षुद्रा ए साध्य छे सामान्य उपचारोथी मटी जाय छे. यमला हेडकी कष्टसाध्य छे. आ हेडकी आवती वखते माथुं अने डोक धुजे छे. पेट चडे छे तरस बहु लागे छे उलटी झाडा थाय छे बगासां आवे छे अने बे बे वेग साथे आवे छे. आ हेडकी अन्न पचवा आवे त्यारे उपडे छे. आनां बीजां नाम वेगिनी अने परिणामवती पण छे. महती हेडकी असाध्य छे. ए हेडकी आवे त्यारे भ्रकुटी अने लमणा सजड थइ जाय छे आंखमां पाणी भराय छे बोली

वकातुं मथी स्मृति संज्ञानो नाश थाय छे. शब्द वेग अने बळ घणुं होय छे. गंभीरा हेडकी पक्वाशय अने नाभिमांथी उपडे छे. बीजां लक्षणो महती जेवां छे अने हेडकी आवे त्यारे गंभीर नाद जेवो शब्द थाय छे ।

पथ्यापथ्य—साधारण हेडकीमां प्राणायाम करावो वाइडं खावुं नहीं उपवास करवो आश्चर्यजनक वातो करी दरदीने भय उत्साह के आनंद वधारवो. हळवो खोराक देवो दरदने अंगे हेडकी असाध्य स्थिति होय तो नीचे जणावेला औषधो आपवां फोतरां साथे पलचिनी धुंवाडी लेवराववी. कफवातनाशक वायुने अनुलोमन करनारुं उष्ण उष्णवीर्य पर्दु औषध अन्न पान हितकारक छे. श्वास क्षय तथा उधरसना प्रकरणमां कहेलां औषध हेडकीमां पण गुण करे छे. विस्मय पामे तेवी वातो कहेवी अथवा मनने आघात थाय तेम करवुं ।

सर्वमंगला वटी—पारद गंधक अभ्रकभस्म ताम्रभस्म शंखभस्म कांस्य भस्म प्रत्येक तो ४ चार रससिंदूर शुद्ध मनशिळ पिपर सुंठ पलचि मरी पिपरीमूल प्रत्येक तोला ६ आदु तुळशी धतुरो नगोड अरडुसी प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दई चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २ थी ८ गोळी मधमां चटाडवी तथा ते गोळी चलममां मुकी धुंवाडी लेवरावची ।

शुंठ्यादि चूर्ण—सुंठ मरी कडु पिपरीमूळ पिपर सींधव जीरुं कचुरो काकडाशींगी नसोतर संचळ उपलेट वधां सरखां खांडी बिजोराना रसनी भावना देवी. मात्रा ०। थी ०॥ तोलो पाणी साथे देवाथी हेडकी श्वास खांसी मटे मुख उघडे ।

हेडकीना सादा उपाय

१ धुंवाडी—गायना शींगडानी धुंवाडो पावी ।

२ धुंवाडी—पलचि फोतरां समेत खांडी तेनी धुंवाडी पावी ।

३ धुंवाडी—श्वासकुठारनी के सर्वमंगला गोळीनी धुंवाडो पावी अथवा कुष्टनो के राळनो धुंवाडो चलमवती पावी ।

४ धुंवाडी—निर्धूम अंगारा पर हींग अने अडदनो लोट छांटी तेनी धुंवाडी श्वासमां लेवी अथवा चलममां पावी ।

१ अशेळियाना बी ८ गणा पाणीमां नाखी पलाळवां पलळी जाय पटले कपडामां नाखी ते पोटलीने पाणीमां चोळी चमची चमची पाणी पातुं जावुं ।

२ बोरनो छाल होकामां पावी ।

३ भारंगी सुंठ समभागे खांडी ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण उना पाणी साथे पावुं ।

४ गंधक बे आनी भार मधमां चटाडवो ।

५ पदमकाष्ट पिपर पलचि मोरपींछ वधां अंतर्धूम बाळी मधमां बबे वाल चटाडवुं ।

६ कायफळ वाटी मध साथे खवरावबुं. ।

७ हळदर मनशिल भूको करी धुणी देवी. ।

८ कुंवार रस पडवास सुंठ संचळ सममात्रा चूर्ण मरणांत हेडकी मटे ।

९ मोरपींछ मांखिनी हगार ए बे बाळी पलचि मध साथे चटाडवुं ।
१० मुशळी तथा नागरवेलना पानना रस साथे मध मेळवी देवुं ।
११ पलत्रि उकाळी पावो ।
१२ अलनो बाळी नास देवी ।
१३ थानना दुध साथे सुखड घसी नास देवी ।
१४ जुद्दनो कळी १०० पिपर तोलो ०॥ पलचि तो. ०। मधमां गोणी चण्या प्रमाणे आपवी ।
१५ सरसीयु तेल तोलो १। दुध तो. १। मेळवी पावुं ।
१६ पिपर हरडे साकर मध साथे चटाडवी ।
१७ मरो वडागरूं समभागे वाटी गोळी चणिया बोर जेवडी करी आपवी ।
१८ राळ गंधक मोरपींछ एनी धुणी देवो. मरणांत हेडकी मटे ।
१९ नाळवा सहित करवडामां अंगारा भरी ते उपर अडद हळदर सण त्रिकटु मुकी मुख बंध करी नाळवेथी तमाकुनी पेठे धुम्रपान करवुं ।
२० जुनी मुंझनी दोरडी बाळी ते राख गोळथी गोळी करी खावी. वायनी हेडको टळे ।
२१ राळ तथा मरी दाणा १५ पाणीमां उकाळी पावुं ।
२२ कळीचुनानी गोळमां गोळी वाळी आपवी ।
२३ कुंवारना गरभमां संचळनी गोळी करो देवी. मरणांत हेडकी टळे ।
२४ त्रिफळा लींडीपिपर मधमां चटाडवी ।
२५ अजमाने घीमां चोळी धुणी देवी ।
२६ मांखिनी हगारनी पोथीना पाणीमां नास देवी ।
२७ मोरपींछनी चंद्रिनी राख तथा लींडीपिपर आदुनो रस मध साथे देवाथी मरणांत हेडकी जाय ।
२८ बावळनां बी मोमां राखवां ।
२९ तुळसी, रस पावो ।
३० अलताना पाणीनी नास देवी ।
३१ राती ठिकरी पाणीमां घसी पावी ।
३२ मरी लविंग सतावरी बोरनां मींज मध साथे चटाडवुं ।
३३ मनशिळ हळदर वाटी मोढे धुणी लेवी ।
३४ पळियो उपलेट जेठिमध मध साथे चटाडवु ।
३५ गेरु कडु समभागे मध साथे चटाडवुं ।
३६ कुंवार रस साथे सुंठनो भुको खवराववो ।
३७ मांखिनी हगार लविंग सोपारी गोपीचंदन केळनी कुंपळि समभागे खांडी मधमां चटाडवुं ।
३८ लींडीपिपर सरगवानुं मूळ समभागे लइ ०। थी ०॥ तोलो पाणी साथे देवुं ।
३९ भांग कपूर पलचि जायफळ दरेक तोलो ०। बोर जेवडी गोळी मधमां देवी ।

मुख–मोढाना अंदरना रोग

गळानारोग तथा स्वरभंग

विषोच्चैर्भाषणाजीर्णाध्यशनैरतिशीतलैः ॥
अभिघातादिभिर्दोषा गलस्रोतःसु दूषिताः ॥
कुर्युर्नानागलगदान् स्थिताः स्वरवहेष्वपि ॥
गलककंट्योः शोथं स्वरभंगादिकान्गदान् ॥ (र. तं.)

कारण चिन्ह—अजीर्ण कबजियत शरदी पवन लागवो गरम पदार्थ खावां वगेरे कारणे गळानां दरद थाय छे. गळानो सोजो ए मुख्य दरद छे अंदर अथवा बहार बेय ठेकाणे सोजो थाय छे तेथी पाणी पण उतरतुं नथी. साथे ताव पण होय छे के नथी पण होतो. गळामां थनारां दरदोनां सामान्य चिन्ह छेवटे बताव्यां छे ते बधानां उपचार दोषनो प्रकोप जोइने करवा ।

साद बेसी जवानां कारण चिन्ह—उंचे सादे भाषण करवाथी गावाथी झेरथी अजीर्ण उपर जमवाथी वांचवाथी उधरस क्षय जेवां दरदथी ऋतु बदलवाथी शरदी लागी जवाथी तथा तेवां बीजां कारणोथी आ दरद थाय छे ।

वायु कोप होय तो मों आंख मूत्र अने मळ काळाश पडतां देखाय. मों सुकुं, गधेडाना जेवो घोघरो साद निकळे. पित्तप्रकोप होय तो आंख मों मळ मूत्र पिळाश पडतां थाय. बोलती वखते गळामां दाह बळतरा थाय. कफ प्रकोप होय तो कफथी गळुं रोकाइ जाय बहु श्रमे थोडुं बोली शके, नाक बाजी जाय. क्षयना स्वरभंगमां सादनी साथे धुंवाडो–वराळ नीकळती होय तेवुं जणाय अने साद तदन बेसी जाय. स्वरभंगनो दरदी क्षीण थइ गयेल होय वृद्ध होय दुबळो होय लांबो वखत थया ते दरदथी पीडातो होय त्रणे दोषनां चिन्हो साथे जणातां होय अने ते साथे दरदीने शरीरमां चरबी वधु होय तो ते असाध्य गणाय ।

पथ्यापथ्य—परसेवानी दवा देवी जुलाब आपवो उलटी कराववी कोगळानी दवा आपवी. अंदरना भागमां चूर्ण वगेरे चटाडवुं चोपडाववुं. ते भागमां नस्तर मुकावी लोही कढाववुं नस्य धूम्रपान डाम देवो. मग जव कळथी अडद जांगल-मांस पडोळां दुधी चोखा जुनां धान्य उनुं पाणी काथो कडवा रस वगेरे हित-कारक छे. खाटा तीखा रस मत्स्य ग्राम्यमांस दहीं गोळ रुक्ष अन्नपान कठण खोराक कफकारक पदार्थो बजारनी मिठाइ दिवसे उंघ रात्रे उजागरा वगेरे नुकशान कारक छे ।

कल्याणभैरव रस—पारद गंधक अभ्रकभस्म प्रवाळभस्म यशदभस्म प्रत्येक तोला ८ आठ, मोतिनी पिष्टी तो. २ कुंवार भांगरो अरडुसो बेठीमोरींगणी मूळ ब्राह्मी जेठीमधनां मूळ आमळां गळो प्रत्येकनो रस के क्वाथनी भावना दई चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा दिवस रात मळीने २–६ गोळी मधमां आपवी. गळानो सोजो दाह बळतरा काकडानो सोजो तथा बधी जातना गळाना रोगोमां उत्तम छे. साद बेसी गयो होय ते उघडे छे. श्वास

छातीनां दरद क्षयरोग हेडकी इरस मरडा जीर्णज्वर संग्रहणी वगेरेमां पण वापरवाथी फायदो थाय छे दशांग लेप के दोषघ्न लेप पाणीमां के छासमां वाटी बहारना भागमां चोपडवो ।

सरस्वती अवलेह—भोरींगणीनुं पंचांग गळो भांगरो अरडुसी बळदाणानुं पंचांग जेठिमधनां मूळ प्रत्येक तोला ३० त्रीस लइ कचरी तेने बधाथी आठगणा पाणीमां उकाळी चतुर्थांश रहे पटले गाळी तेमां छाये सुकावेली ब्राह्मी तो. ४० हळदर आंबाहळदर पिपरीमूळ आमळां हरडे शिलाजीत सुंठ पिपर मरी अजमोद जेठिमधनो शिरो कुष्ठ नसोतर सिंधालुण वज अभ्रकभस्म प्रवाळभस्म प्रत्येक तो. ६ छ तथा साकर मध गोळ प्रत्येक रतल ६ छ नाखी पकाववुं. घाटुं चाटवा जेवु थाय पटले उतारी तेमां गायनुं घी तो. २० मेळवी हलावी बरणो भरी लेवो मात्रा १-२ तोला चटाडी उपर गरम दुध पावुं. गळानां दरद सोजो साद बेसी जवो वगेरेमां तात्कालिक गुण करे छे ते सिवाय उधरस श्वास छाती फेफसानां दरद क्षयरोग सळखम काकडानो सोजो वगेरेमां उत्तम गुण करे छे ।

किन्नरकंठ रस—पारद गंधक अभ्रकभस्म सुवर्णमाक्षिकभस्म लोहभस्म प्रत्येक तोलो १ एक, वैक्रांतभस्म तो. ०। सुवर्णभस्म बेआनी भार रौप्यभस्म तो. ०॥, चंद्रप्रभा तो. १० हरडे तो. २ बधांने साथे मेळवी अरडुसी भारंगी उभीभोरींगणी आदु ब्राह्मी प्रत्येकना रसनो अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी करी छाये सुकाववी. गमे ते कारणे साद बेसी गयो होय ते उघडे. उधरस श्वास कफनां दरद गळानां बधां दरद मटे. स्वर मधुर थाय. मात्रा २-४ गोळि मधमां लेवि उपर दुध पिवुं ।

वागीश्वरी घृत—कुष्ठ नसोतर आमळां जेठिमधनां मूळ हळदर चमेलिनां फुल गुलाबनां फुल जुइनां फुल प्रत्येक तो. ४, वरियाळी धाणा पलचि सिंधालुण पिपर आदु प्रत्येक तो. १ शेरडीनो रस तो. ३०, ब्राह्मीना पंचांगनो रस तो. २५६, गायनुं घी तो. २४० प्रथमनां ओसडीयांने पाणीमां वाटी मेंदा जेवी लुवदी करी बधां वसाणांने साथे मेळवी पाणीनो अंश बळी जतां सुधी धीमे तापे पकाववुं. पछी कद्डो नीचे बेसी जाय पटले घीने उपरथी नितारी लइ बरणीमा भरवुं कोइपण ओषध साथे अथवा एकलुं चटाडवुं साद जीणो मधुर थाय छे स्वरनळीना बधा रोग मटे छे ।

कस्तूर्यादि चाटण—जीणी पलचि लविंग वंशलोचन प्रत्येक तोला ५ पांच, केसर तो. १ कस्तूरी तो. ०॥ साथे खांडी मधमां मेळवी चाटण जेवुं करवुं. ०। थी ०॥ तोलो चाटणमां ०॥ तोलो घी मेळवी चाटी उपर दुध पीवुं ।

ब्राह्म्यादि चाटण—ब्राह्मी वज हरडे अरडुसी पिपर समभागे खांडी मधमां मेळवो चाटण करवुं. ०॥ तोलो चाटो उपर दुध पीवुं. साद उघडे गवैयाओ-संगितनुं काम करनाराओने उपयोगी छे.

गळांना बीजा रोग-रोहिणी

सामान्य रीते नीचे प्रमाणे मुख्यत्वे करी गळानां दरदो थाय छे. गळामां वात पित्त कफ दूषित थइने मांस अने लोहिने बगाडी गळाने रोकी राखनारा

अंकुरो उत्पन्न थाय छे ते रोहिणी कहेवाय तेथी माणस मरण पामे छे. वायु प्रधान रोहणिमां जीभमां चारेकोर पिडा थाय मांसना अंकुरो गळाने रोकी नाखे ते दरदी ७ दिवसमां मरी जाय. पित्त रोहणिमां बळतरा अने पाक थाय साथे ताव आवे मांसांकुर एकदम निकळी आवे आमां ५ दिवसे दरदी मरे कफ रोहणिमां मार्ग रोकाइ जाय पाकवामां विलंब थाय कठण चिकास अने खजवाळ साथेना अंकुरो निकळे आमां ३ दिवसमां दरदी मरे. त्रिदोष रोहणिमां त्रणे दोषनां चिन्हो जणाय आमां एक बे दिवसमां दरदी मरे. लोहिनी रोहणिमां पित्तना जेवां लक्षणो होय अने अंकुरना उपरना भागमां फोडला थाय. आ साध्य गणाय छे।

कंठशालूकः—बोरना जेवडी कांटा जेवुं दुःख देनारी स्थिर कठण कफजन्य गांठ गळामां थाय छे ते शस्त्रसाध्य छे.

अधिजिह्वः—जीभना अग्रभाग जेवो जीभनी उपरना के नीचेना भागमां कफ रक्त प्रकोपजन्य सोजो थाय छे. ते पाक उपर आवे तो दरदी मरण पामे छे. आ सोजो जीभ उपर थाय तो असाध्य, जीभ नीचे थाय तो साध्य छे।

वलयः—लांबो अने उंचो सोजो कफजन्य थाय छे. तेथी अन्नमार्ग रोकाइ जाय छे ते असाध्य छे।

बलासः—कफ अने वायु कोपीने गळामां सोजो थाय छे तेथी दम चडे छे अने पिडा थाय छे ते असाध्य छे।

एकवृन्दः—गोळ उंचो दाह खजवाळ वाळो थोडो पाके थोडो पोचो सोजो थाय छे आमां रक्तप्रकोप होय छे।

वृंदः—पित्त अने लोहिना प्रकोपथी जाडो गोळ असह्य दाहवाळो सोजो थाय भयंकर ताव साथे आवे।

शतघ्नी—कठण बधा दोषनो प्रकोप थाय कंठने रोके मांसना अंकुरो घणा होय छे।

गलायुः—आमळानां ठळीया जेवडी कठण स्थिर थोडी पिडावाळी कफ रक्त प्रकोपजन्य अन्न रोकनारी गांठ थाय छे शस्त्रसाध्य छे।

कंठविद्रधिः—सोजो आखा गळामां फेलाइ जइ पिडा बळतरा दुखावो करे.

गलौघः—गळाने रोकनारो तीव्रज्वर साथेनो वायु गति रोकनारो कफ रक्त जन्य सोजो गळामां थाय।

स्वरघ्नः—आंखे अंधारा साथे श्वास सखत चाले साद बेसी जाय गळुं सुकाइ जाय गळा निचे पाणी के खोराक उतारवाने दरदी अशक्त बने।

मांसतानः—गळामां वधे फेलायलो सोजो असह्य पिडा करे आ त्रिदोष प्रकोपथी थाय छे. आनाथी दरदी थोडा कलाकमां मरण पामे छे।

विदारी—दाह पिडा साथे गळामां लाल सुरख रंगनो सोजो थाय छे ते भागमां मांस सडी विखाय छे अने परु निकळे छे पित्त प्रकोपथी थाय छे. पडखावुं सुवाथी दरदीने जरा ठीक लागे छे।

कोइपण जातनो रोहिणी साध्य लागे तो नस्तर मुकावी लोही कढाववुं उलटी करावची वायुनी रोहिणीमां मीठाना पाणीमां घी नाखो तेना कोगळा कराववा. षडबिंदु तेलनो कोगळो मोमां रखाववो गरमीनी रोहिणीमां साकर

मध अने घर्ड्लानो भुको साये मेळवी गळामां पिछी वति चोपडवुं घसाववुं. द्राक्ष वडनी छाल अने बावळनी छालने उकाळी तेना कोगळा कराववा. गरणी वावडींग दंतिमूळ अने सिंघालुणना कल्कमां सरसीयुं तेल पकावो ए तेलना तथा षडबिंदु तेलना के आंबळानां तेलनां टीपां नाकमां नाखवां नीचेनां औषधो अढारे जातनां गळानां दरदोमां लागु पडे छे ।

दार्व्यादि क्वाथ—दारुहळदर लींबडानो छाल रसवंति इंद्रजव हरडे समभागे खांडो आना उकाळामां मध नाखी पावुं ।

तिक्तादि क्वाथ—कडु अतिविष दारुहळदर काळीपाठ मोथ इंद्रजव सम-भागे लइ खांडवा १ तोलो भुको २० तोला गौमूत्रमां उकाळी पावुं ।

मृद्वीकादि चूर्ण—द्राक्ष कडु पिपर मरी सुंठ दारुहळदरनी छाल हरडेदळ बेडां आमळां मोथ काळीपाठ रसवंति धो तेजबळ समभागे खांडवां ०॥ थी १ तोलो चूर्ण मधमां चटाडवुं अथवा मधमां मेळवी कोइपण जातना गळानां रोगमां पिछीवती चोपडवुं घसवुं. वायु प्रधान गळाना दरदमां उत्तम छे ।

यवक्षारादि गोळी—जवखार तेजबळ काळीपाठ रसवंति दारुहळदरनी छाल पिपर समभागे खांडी मधमां गोळी वाळवी. बधां गळानां दरदोमां गोळी मोमां राखो रस उतारवो ।

स्वरोदय अवलेह—जुइनां पान पिपर रिसामणी विजोरु फळनी लविंग अकलकरो समभागे चूर्ण करी मध साये मेळवी अवलेह करवो दिन कुल ०॥ थी १ तोलो चटाडवाथी साद उघडे ।

कफज्वरोदिपी हर तेल—धोळा फुलनो गरणीनुं लीलुं पंचांग तोला ४० वावडींग दंतीमूळ सिंधव दारुहळदर दरेक तो. १० दश, तेल तो. १२० पकावी कोगळा करवा नाकमां तथा कानमां टीपां नाखवां ।

गळाना काकडा—धमासो शेर १ मां ५ शेर पाणी नाखो उकाळी कोगळा करवाथी ५-७ दिवसमां काकडा खरी जाय के सुकाइ जाय ।

गळुं आवी जवुं—गळानी अंदरनो भाग लाल थइ सुजी आवे छे तेना पर चिकाशवाळी छारी जामे छे तेमां चांदा पडे छे गळानुं द्वार ताळवुं चारियां वगेरे लाल थइ जाय छे त्यारे गळामां दुखे छे गळुं सुकाय छे कांइपण चीज गळां नीचे उतरती नथी साद बेसी जाय छे ताव रहे छे तेल मरचां दाह करनारां तीक्षण पदार्थ उपदंशथी संधिवाथी दारु बहु पिवाथी आ दरद थाय छे ।

क्वाथ—कडु अतिविष देवदार मोथ इन्द्रजव द्राक्ष दारुहळदर समभागे खांडी उकाळो करी पावो ।

कोगळा—काळीपाठ रसवंति धो तेजबळ द्राक्ष त्रिफळा एना उकाळानां कोगळा कराववा ।

खदिरादि गोळी रसेंद्र गुटिका मोमां राखी रस उतारवो केशरादि के कस्तुर्यादि गोळी ढके ३ घीमां गळाववी ।

गळानां सादा उपाय

१ चंपानां पान बाळी राख करवी ते राख तोलो ०॥ पाणीमां पावी कंठ उघडे।

२ तज तो. १ एलची तो. २ पिपर तो. ४ वंशलोचन तो. ८ साकर तो. १६ खांडी मधमां ०॥ तोलो चटाडवुं ।

३ आमळां एलची सुरोखार कुलिंजन जीरुं तज खेरसार समभागे खांडी गोळमां गोळी चणीया बोर जेवडी वाळवी सवार सांज ३ त्रण खावी साद उघडे।

४ कणझर लविंग सुंठ बेडां काथो एलची गोळमां गोळी २ वालनी करवी सवार सांज बबे खावी साद उघडे ।

५ हरडे घसी गोलसुं दीजे गळदाही मटे ।

६ करंजछाल वाटीने उना पाणीसुं दीजे गळदाही मटे ।

७ हरडेदल गंधक लींबोळी मिज सम मात्रा टां. १ नी गोळी करावी दिन ३ गळदाहो मटे ।

८ सिंधव पेंद्रवारणी मरी समभागे टां. १ उनापाणीसुं दीजे गळदाही मटे।

दांतनां रोग-पेढानां रोग

माणसने दांत बे वखत फुटे छे धावणा बाळकोने छ महिनेथी त्रण वर्ष सुधीमां आवे छे ते दुधीया दांत दुधीया दांत पांच छ वर्षथी पडवा मांडे छे अने कायमी दांत उगवा मांडे छे ते १७-१८ वर्षे आवी रहे छे दांत डाढ चखुणीया कुतरीया अने कांतनारा एवा भेदवाळा होय छे. दरेक दांतनी अंदर पोल होय छे तेमां मज्जा भरेली होय छे ए पोलाण दांतना छेडा-मूळना अग्रभाग सुधी अने छेडेना छिद्र वाटे रक्तशिरा मारफत दांतने पोषण मळे छे; ए भागमां वात पित्त कफ दोषने लीधे बगाडो थाय छे त्यारे जुदा जुदा दांतना रोग उत्पन्न थाय छे ।

कारण—खाखा करवाथी पेट बगडवाथी झाडानी कबजीयतथी शरदी लागवाथी खाटां पदार्थ खावानी टेवथी दातण नहीं करवाथी अजीर्ण थवाथी अति गरम धगधगतां अने ठंडां पदार्थो पीवाथी के खावाथी तमाकु चा कोफीना बहु सेवनथी तथा एवां अनेक कारणोने लइ दांतनां दरद थाय छे ।

दांतनी खेरी—तमाकु पान सोपारी बहु खावानी टेवथी, दांत साफ नहीं करवाथी मेल बंधाइ दांत सडे छे तथा दांतनी पोल्यमां अनाज के कांइ चीज पेसी जइ ते सडवाथी पण दांत सडे छे. मोढाना रसमांना क्षार पदार्थोनो थर जामे छे दांत पर खेरो रहेवाथी पोल्यमां सोजो थइ सडो थइ दांत हले छे अने पछी पडी जाय छे. खेरी पीळी तथा सफेद होय छे चोळवाथी कांकरी जेवी भुकी थइ जाय छे. खेरी वाळानुं मो गंधाय छे दांतमां सडो थइ परु निकळे छे ।

दंतमंजन पीळुं—मनशिळ हरताळ प्रत्येक तोला ५ पांच, जवखार सिंधालुण एलचि तज तेजबळ प्रत्येक तो २० वीश, कपूर तो. ६ आंबाहळदर तो. ४० हळदर तो. २० चाक तो. १०० लइ साथे खांडवां. हमेशां दांते घसवुं ।

दांतनां चसका—दांतमां सडो थवाथी अजीर्णथी अकस्मात पडवाथी आघात थवाथी पाचनशक्ति मंद होवाथी खाटां गळपण पदार्थो बहु खावाथी आ

दरद थाय छे त्यारे उंघ आवती नथी खाइ शकातुं नथी दांतमां लवकारा शूळ भोंकातुं सणका बळतरा वगेरे थाय छे अथवा झीणुं झीणुं दुख्या करे छे. वचमां के बधा दांतमां चसका निकळे छे त्यारे दरदी गांडो बनी जाय छे. पा कलाक पीडा ओछी थाय त्यारे जरा शांति थाय छे ।

दंतमंजन कालुं—बदामनां फोतरांना कोयला तोला २००, लींडीपिपर सुंठ मरी मोथ वज अजमा हरडे आवंत्री साटोडी कपूर आंबाहळदर सिंघालुण जवखार प्रत्येक तोला १०० सो तथा समदरफीण ते. ४० लइ साथे मेळवी घुंटी राखवुं. हमेशां दांते घसवुं ।

दांतनुं गड—दांतमां सडो खेरी शरदी वगेरेथी आ दरद थाय छे. आ दरद दांतना मूळमां थाय छे. सोजो मटी जाय छे अथवा पाकी परु निकळे छे. दरदवाळा दांतनुं पेढुं सुजी आवे छे परु निकळे तो पिडा वधे छे पिडा वधु होय तो गाल अने गळुं पण सुजी आवे छे परु निकळी गया पछी दरद समे छे ।

डाढोडी—सर्पनी कांचळीनी राख मिण सिंदोर सरखेभागे मलम करी डाढमां राखवाथी डाढोडी मटे ।

दशनसंस्कार चूर्ण—सुंठ हरडे मोथ काथो सोपारीना कोयला मरी तज लविंग बधां सरखे भागे अने बधांनी बराबर चाक अथवा धोळी माटी मेळवी घुंटी राखवुं. हमेशां दांते घसवुं तथा कोगळा करवा ।

दांतनी पोल्य—दांत साफ न राखवाथी खाटां पदार्थो बहु खावाथी दांतमां अन्न वगेरे भराइ रहेवाथी दांतमां सडो थाय छे अने सडेला अणु छुटा पडी दांत खवाइ जाय छे. धीमे धीमे दांत खवाइ जइ उपलो भाग के मूळ पडी जाय छे के निर्जीव थइ जाय छे ।

दंतमशी—मायांफळ तोला ४ काथो धोळो ते. १ हिमजी हरडे नंग २० सुवर्णमाक्षिक कावी ते. ०॥ लोढानो भुको ते. ०॥ मोरथुथु फुलावेल तोला ०॥ रुमिमस्तकी ते. ०॥। संगेजरद ते. १॥ पलचि मोटी ते. १ कपुरमासो ०॥ बधां खांडी कपडे चाळी दांते घसवाथी दांतना बधा रोग जाय ।

तवक्षीर्यादि मंजन—तपखीर तोला ८० पडवाश ते. ८० चणकबाब ते. १ काथो धोळो ते. ४ मायांफळ ते. ४ पलचिदाणा-बी ते. ४ सोनागेरु ते. २ मोरथुथु फुलावेल वाल १६ बधां साथे मेळवी घुंटी दांते घसवुं



दांतनां पेढानुं दरद—नबळाइ अजीर्ण खाटां मीठां पदार्थनो बहु मावरो ताव आंतरडा तथा होजरीनुं दरद घणी वखत खाखा करवुं अनाज के तेवी चीज भराइ रहेवी गरमी उपदंश वगेरे कारणे पेढां सुजेलां उपसेलां जाडां रातां थइ जाय छे दिवसे दिवसे खवातां जाय छे दांतनां मूळ उघाडां थइ जाय छे. आ प्रमाणे थोडां दांतनां पेढां के वधु दांतनां पेढामां बगाडो थाय छे घणेभागे मोढा आगला नीचला कापता दांतनां के उपली डाढनां पेढां वधु बगडे छे ।

दंतरोगहरी गुटिका—पारद गंधक वज्रदंती झीलनी छाल मोथ हरडे सुंठ पिपर मरी इन्द्रजव लींबडानां पान लींबोळीनां बीज अशेळीयानां बी कुवानां फळ बधां सरखेभागे खांडी गौमूत्रमां वाटी चण्या जेवडी गोळी वाळवी मात्रा २-४ गोळी मोमां दुखतां दांत वच्चे राखवी पीडा ओछी थशे तथा हलता दांत मजबूत थशे दांतनां हरकोइ दरदमां उत्तम छे. सवार सांज बबे गोळी घी साथे खावा पण अपाय छे. उपर जणावेलामांनु कोइपण दंतमंजन दांते घसवुं ।

अवाळु चडयां होय तेनुं दंतमंजन—उपलेट दारुहळदर लोदर मोथ मजीठ काळीपाठ कडु मालकांकणी अजमो वज सिंधव हरडे ए सर्व वाटी भुको करी कपडे चाळी दांते घसवुं. पेढां अवाळु चडयां होय ते मटे ।

दंतरक्षकमंजन—काथो कसेलां काळीसोपारी हिराकसी सिंधव चणकबाब मरी पलचि त्रिफळा दाडिमसार चुलानी राख ए बधां खांडी कपडे चाळो दांते पेढां उपर घसवुं ।

दंतमंजन—उपलेट दारुहळदर लोदर मोथ मजीठ काळीपाठ कडु मालकांकणी हळदर साटोडी सुंठ अजमो वज सिंधव हरडे ए सर्व खांडी कपडे चाळी २१ दिवस दांते घसवाथी दांतना रोग जाय ।

दांतहलवा कारण—खावा पीवा पछी दांत साफ राखवानी बिन काळजीथी, तेने लगतां दरद थवाथी उपदंश रोगमां मोढुं लेवरावथी, गरमागरम पीणां पीवानी टेवथी आखो दिवस खाखा करवाथी, दांत हलवा मांडे छे त्यारे बहु दुखावो थाय छे खवातुं नथी टाढुं पाणी पो शकातुं नथी शरदी-ठंडीथी चसका आवे छे. पीडाथी ताव आवी जाय छे माथुं दुखे छे बेचेनी उपजे छे ।

दंतकुशीकरण मंजन—कपुर तोला ५ कांटाळामांया तो. १० अफीण तो. ४ काथो तो ८ बावळनी छाल तो. २० झीलनी छाल तो. ३० पारद तो. ४ गंधक तो. ६ मोथ तो. ८ बेठी उंबरीनां काचां उंबरा सुकावेलां तो. १० समदरफीण तो. १० बधां साथे खांडी राखवां हमेशां दांते घसवाथो हलता दांत मजबूत थाय तथा दांतनां हरकोइ दरद मटे ।

पोटली—इंगोरियानां मूळनी छाल अने कडु सरखां खांडी पोटली करी दांत के डाढ उपर राखवाथी दांतना जतु गड मरे. हलता दांत मजबूत थाय ।

दंष्ट्रामंजन—त्रिफळा तोला २ फुलावेल फटकडी तो. १ काचलीनी राख तो. ०॥ इन्द्रवारणी मूळ काथो लींबडानी जड काळीसोपारीनी राख वावडींग मोरथुथु फुलावेल, बावळनी छाल हळदर सिंधव कुष्ट दरेक तोलो १ लइ साथे खांडी कपडे चाळी दांते डाढे घसवाथी दांत डाढ दृढ थाय ।



दांत डाढनो दुखावो-दांत के डाढमां जंतु

कडवीघोलीना पाननो रस काढी कपडे गाळी जे डाढ दुखती होय ते तरफना कानमां भरी उपर रुनुं पुंभडुं मुकवुं ।

दंतमंजन—अरडुसी कुष्ठ कडु मोथ मजिठ काथो लोद्र समभागे लइ खांडी बारिक करवुं. दांते डाढे घसवाथी दुखावो मटे. हलता दांत मजबूत थाय. दांतमां रहेला जंतु मरे ।

श्याममशी—लोढानो काटोडो मोरथुथु दरेक तो. २॥ अढी लइ कपडे चाळी लोढानी कडाइमां नाखी लींबुरसमां घुंटी सुकाववुं. कांटाळामाया बेडां काथो लोद्र दरेक तो. २ बे, हिराकसी आमळां हरडे हिमेज दरेक तो. १। सवा लइ बधां बारिक करी कपडे चाळी दांते घसवाथी बधां दरद तथा दुखावो मटे ।

राजमशी—साचां मोति परवाळां काचां सुवर्णमाक्षिक काची हिराकसी दरेक अकेक तोलो, लोढानो काटोडो कुष्ठ फटकडी भीमसेनी कपूर हिमेज हरडे बेडां आमळां कांटाळामांया दाडमनी छाल दरेक तोलो १॥ डोढ, काथो तो. ०। कस्तूरी वाल १ बधां बारिक करी कपडछान करी शीशी भरवी. खेरी पाक अवाळु पेढां चडवां खरज जंतु मुखदुर्गंध वगेरे मटे. दांत मजबूत थाय ।

कोगळा—वावडींग भोरींगणीनां बी धमासो सरखेभागे लइ खांडी एक पोटलीमां नाखी ते पोटली एक हांडलीमां नांखी पाणी भरी उकाळवुं तेना कोगळा करवाथी दांत डाढना सर्व रोग जाय ।

दंष्ट्राविडाहरी बत्ती—भैंसो गुगळ अकलकरो कपूर इन्द्रामणानां मूळ वावडींग बधां सरखेभागे लइ अगीठानां रसमां चण्या जेवडी गोळी वाळी छाये सुकाववी. दुखती डाढ नीचे राखी पाणी-लाळ पडवा देवी. डाढ दुखती रहे. जंतु निकळी जाय ।

पोटली—नवसार अने काळां मरी समभागे खांडी रुना पोलमां घाली डाढ नीचे राखवाथी डाढ दुखती रहे ।

डाढ पोटली—अगीठानी छाल तो. १ चोखा तो. ? ए बे वानां एकठां करी वाटी तेनी ७ पोटली नानी करवी ते डाढ दुखे ते उपरे पोटली १ राखवी मोमां पाणी आवे ते थुंकी नाखवुं डाढ उपरनी होय तो सवारे स्नान कर्या पछी तथा राते सुती वखते शेश गुंदरनो कटको चण्या जेवडो डाढमां राखवो डाढ दुखतो मटे ।

डाढपीडाहरी गोळी—हळदर जीरुं काळां मरी सिंधव गोळमां गोळी करी डाढमां राखवाथी दुखती रहे ।

वाडदूधेली पान कडवी कारेली पान कांकसी पान गलोना पान ए सर्वे पानना रस काढी भेळा करी कानमां टीपां नाखवां डाढ दुखती रहे ।

कासीसादि मलम—हिराकशी कपुर लालखेरसार हळदर हिमेज मायां धोळोखेरसार फटकडी फुलाबेली बेडांदळ आमळां समभागे खांडी कपडछान करी मधमां के घीमां कालवी दांते घसवाथी दांतनां बधां दरद मटे ।

दंतमंजन श्वेत—तपखीर तो. ९ काथो तो. १ मायां तो. १ चणकबाब तो. ०॥ कपुर तो. ०॥ बधां वाटी कपडछान करी दांते घसवाथी दांत साफ थाय मोढुं आव्युं होय तेमां भभरावे तो आळुं मटे ।

दांत लाल करवानुं मंजन—हींगळो तो. १ हिरादखण तो. ९ काथो सफेद तो. २ साथे वाटी लींबुना रसनी एक भावना दइ छाये सुकावी कपडे चाळवुं दांते घसवाथी दांत लाल थाय।

दांत काळा करवानुं मंजन—बेडांदइ तो. ९ मायां तो. २ हळदर तो. ९ हिराकशी तो. ९ साथे घाटी कपडे चाळी दांते घसवाथी दांत पीळा पडी गया होय काट-मेल चडी गयो होय तो दांत काळा थाय।

मंजन मिश्रण—तपखीर तो. ५ काथो तो. १ मायां तो. १ पिपरमेंटना फुल तो. ०)= चणकबाब तो. ०॥ कपुर तो. ०॥ हळदर तो. १ शेषगुंदर तो. १ बधां वारीक वाटी मधमां कालवी राखवुं. पिछीवती के दातणना कुचाथो दांते घसवुं. दांतनां बधां दरद तथा पायोरिया दांतनुं परु मटे।

पेढामांथी लोही के परु निकळवुं

पूतिमांसहर चूर्ण—हिराकसी लोद्र पिपर मनशिळ घउंलो तेजबळ समभागे चूर्ण करी मधमां कालवी पेढा उपर घसवाथी पेढामांथी परु लोही पडतुं होय तो अटके पायोरिया मटे।

दंतवेष्टरोगहर चूर्ण—जीरुं मीठुं हरडेदळ शेमळानां कांटा बधां समभागे लइ खांडी झीणुं करवुं हमेशां पेढाउपर घसवाथी दांत हलता होय परु लोही नीकळतुं होय सोजो होय पेढां ढीला पडी गया होय ए बधां दरद मटे छे।

दंतरोगहर चूर्ण—कुष्ट दारुहळदर मोथ लोद्र रिसामणी काळीपाठ कडु तेजबळ आंबाहळदर बधां समभागे लइ झीणुं करवुं हमेशां दांते घसवाथी खजवाल दुखावो लोहीस्राव तथा दांतनां बीजां दरद मटे छे।

दंतदृढकरी वटी—मोथ हरडे सुंठ पिपर मरी वावडींग लींबडानां पान बधां सरखे भागे लइ गौमूत्रमां वाटी चण्या जेवडी गोळी वाळी छाये सुकाववी राते सुती वखते आ गोळी मोमां राखी सुवाथी हलता दांत मजबूत थाय छे घणो सिद्ध उपाय छे।

पडजीभी—तज तो. १ एलचि तो. १ पिपर तो. ४ तपखीर तो. ८ साकर तो. १६ मध तो. ३२ मां अवलेह करवो अथवा गोळना पाणी साथे अवलेह करी ०। थी ०॥ तोलो चटाडवो श्वास पडजीभी मटे।

सादा उपाय

१ सुंठ अने खडसलीयानो उकाळो करीने नवशेका पाणीना कोगळा हमेशा करवाथी मोढानां लोही परु मटे।

२ सुंठ सरसव त्रिफला बधां सरखां लइ उकाळी नवशेका कोगळा करवा. मोंना बधा रोग मटे।

३ महानारायण तेलना के तलना तेलना कोगळा करवा मोंना बधा रोग मटे।

जीभना रोग

चिन्ह—अजीर्ण शरदी ऋतुनो फेरफार जखम उपदंश प्रमेह अशुद्ध पारानी दवा वगेरे कारणे जीभमां सोजो थाय छे वायु प्रधान होयतो जीभमां चीरा पडे स्वादनो खबर पडे नहिं पित्त प्रधान होय तो दाह थाय बळतरा थाय लाल कांठा जेवा अंकुरो जीभ पर देखाय कफ प्रधान होय तो शेमळाना कांटा जेवा अंकुरो देखाय सोजो वधु देखाय ।

जीभहेठेनो सोजो—आमां कफ अने लोहीनो प्रकोप होय छे आमां जीभने झकडो थे छे अने जीभनां मूळमां पाक थाय छे ।

पडजीभो—आ सोजाथी जीभ उंची थइ जाय छे आमां कफ अने लोहीनो प्रकोप होय छे लाळ पडे छे खंजवाळ आवे छे दाह थाय छे ।

जिव्हारोगहर घर्षण—फटकडी फुलावेली पलची सुखडनो भुको केरीनी गोठली बावळना पान तमालपत्र धावडीनां फुल साकर लोदर बधां समभागे लइ खांडवा जीभनां कोइपण रोग उपर घसवुं ।

प्रयोग १—दशांग लेपनो उकाळो करी तेना कोगळा दिवसमां ४–५ वखत कराववा ।

प्रयोग २—जरुर पडे तो शस्त्रथी छेको दइ लोही कढावी त्रिफला जेठीमध बोरडीनी छाल पना उकाळाना कोगळा करावया ।

प्रयोग ३—नगोड काथो कांचनारनी छाल बावळनी छाल बधां समभागे खांडी उकाळो करी कोगळा कराववा ।

प्रयोग ४—रसेंद्र गुटिका मोमां राखो रस उतारवो रसवंति जेठीमध आमळां समभागे लइ तेना उकाळाना कोगळा करावया ।

ताळवाना रोग

गळशुंडी—कफ अने लोहीना प्रकोपथी थाय छे ताळवानां मूळमांथी लंबाइ सोजो थाय छे तेमां तरस लागे खांसी आवे श्वास चडे ।

तुंडीकेरी—आ पण कफ लोही प्रधान छे तेमां सबाका नीकळे दाह वेदना अने पाक थाय ।

अध्रुव—सोजो कठण लोहीना प्रकोपथी थाय छे आ ताव अने तीव्र वेदना साथेनो होय छे ।

कच्छप—काचबाना जेवो उपसेलो ओछी पीडा वाळो कफ प्रकोपनो सोजो थाय छे ।

ताल्वर्बुद—कमळना आकारनो ताळवाना मध्यमां सोजो रक्त प्रकोपथी थाय छे ।

तालुशोष—ताळवुं चीरातुं होय तेवी पीडा थाय तरस सखत लागे एमां वायु प्रधान होय छे ।

तालुपाक—पित्तना प्रकोपथी ताळवुं पाके छे आ भयंकर रोग छे ।

तालुरोगहर घर्षण—कुष्ठ वज सिंधालुण काळीपाठ मोथ कचुरो अतिविष रास्ना कडु पारद गंधक लींमडानी लींबोळीनां मींज बधां सरखे भागे खांडी राखवां पछी ताळवाना सोजा उपर अंगुठाथी घसवुं लाळुं पडवा देवी ।

प्रयोग १—कुष्ठ मरी वज सिंधालुण पिपर काळीपाठ मोथ समभागे खांडी उकाळो करो गळशुंडीमां कोगळा करावचा ।

प्रयोग २—गंगाधर चूर्णना उकाळाना कोगळा तुंडीकेरी अर्बुद अने तालुपाकँमां करावचा ।

प्रयोग ३—तालुशोपमां महा नारायण तेलना कोगळा करावचा शिरोबस्ति आपवी माथा उपर गायनु दुध चोपडवुं आमळाने घीमां तळी छासमां वाटी माथा उपर गळानी आसपास चोपडवुं, दशांग लेप चोपडवो शेवाळ के धोळी माटी बांधवी।



होठना रोग

चिन्ह—वायुना प्रकोपथी होठ खरसट थाय काळा थाय पिडा थाय चिराय, पित्तना कोपथी झीणा झाणी फोडकीयुं निकळे बळतरा थाय पाके, कफ प्रकोपथी खजवाळ आवे धोळी फोडकीयो उपडे घा वागवाथी राती फोडकीयु थाय पिडा थाय लोहो स्रवे ।

होठ जाडो—कंठमाळनां दरदने लीधे उपरनो होठ घणीवार जाडो थायछे।

होठ फाटवा—शरदी शियाळानी ऋतु खोटी गरमी वगेरे कारणे होठ फाटेछे

ओष्ठव्याधिहर तेल—गंधिलाखेरनी छाल लींबडानी छाल तगर कुष्ठ परडानां मूळ प्रत्येक तोला ४० चाळीस लइ दशगणा पाणीमां उकाळी चोथा भागनुं पाणी बाकी रहे पटले गाळी लइ तेमां तलनुं तेल शेर १० तथा परडीयुं तेल शेर ५ नाखी तथा गंधिलोखेर लविंग गेरु सुखड लाख जेठिमधनो शिरो कायफळ दारुहळदर आंबाहळदर कचुरो पानडी हरडे आमळा जावंत्रो अशोळियो दुधियोवज काथो वडवाइ प्रत्येक तोला १० दश लइ पाणीमां वाटी लुबदी करी १० शेर दुधमां डोइ तथा तेमां मीण तोला २० नाखी तेलवाळी कडाइमां नाखी पाणीनो भाग बळी जतां सुधी पकाववुं पछी तेल गाळी लेवुं ठंडु थया पछी तेमां कपूर तोला २॥ बारिक घुंटी बरणीमां भरी राखवुं आ तेल होठना कोइपण रोग उपर चोपडाय छे ।

ओष्ठव्याधिहर मलम—राळ तो ४ गेरु तो. २ फुलावेल टंकण तो. ३ हळदर तो २॥ गायनुं घी तो. ३० मीण तो. २॥ बधां साथे मेळवी पकाववां होठनां बधां दरद पर चोपडवुं ।

ओष्ठरोपण मलम—परडीयुंतेल घी राळ मीण रास्ना गोळ सिंधालुण गेरु बधां समभागे लइ बारिक करी पकावो एक करवुं आ मलम चोपडवाथी चामडी फाटी जइ लोही निकळतुं होय ते रुझाय ।



मोढानो पाक

जीभनी आजुबाजु ताळवुं होठनी अंदरना गलेफां वगेरे ठेकाणे चांदा पडे छे पेटना बगाडथी अजीर्णथी पान के तमाकु साथे चुनो खावाथी मरचां जेवी गरम चीज वधु खावाथी उपदंशनो रोग थवाथी एम अनेक कारणे चांदां पडे छे।

मुखपाकहर क्वाथ—सातवीण वाळो पटोळ मोथ हरडे करीयातुं कडु जेठिमध गरमाळो चंदन समभागे खांडी उकाळो करी पावो।

प्रवाल चंद्रपुटी तोलो ०॥, मुक्ता पिष्टि तोलो ०।, महाचंद्रकळा तोलो ०॥, अमृतासत्व तो. १ साथे मेळवी ४८ पडीकां करी च्यवनप्राश अवलेह साथे चटाडवुं द्राक्षासव पावो।

मुखरोगहर घर्षण—उंबरो लींबडो खेर वड बावळ ए दरेक झाडनी थडना उपरनी सुकी छाल ०॥ शेर लइ पछी काळी सोपारी शेर ०॥ मोरथुथु फुलावेल तो. २॥, काथो सफेद शेर ०॥ फुलावेलो बधाने मेळवी कपडछान करी मोमां घसवाथी चांदा आगरु पडेल होय ते मटे।

धूम्रपान—मनशिळ तथा हळदर दरेक ०॥ तोलो लइ साथे घुंटी एक लुगडांमां पाथरी तेनी वाट करी सळगावी तेनो धुंवाडो मोमां जवा देवो तो उपदंश-गरमीथी मोढुं आव्युं होय ते मटे।

मुखरोगहर लवण—एक कोरी हांडलीमां मीठुं शेर १ एक नाखी तेना उपर ताडीनो सुरको नाखी पकाववुं सुरको बळी जाय एटले बीजी वार सुरको नाखवो एम ३ त्रण वार सुरको नाखी पकाववुं पछी तेमां तोला ५ कांटाळांमरचां, तोला ५ आंबलीना आंबलीया, तोलो ०॥= भार रुमी मस्तकी, तोलो ०॥= भार अकलकरो लइ बधांने खांडी कपडछान करी मोमां घसवुं मोली गरमी चांदी मटे।

मुखरोगहर घृत—चमेलीनां पान आंबानां पान कुवानां पान लींमडानां पान बावळनां पान आवळनां पान कमळ केळनो कंद कुष्ठ महुडां मोथ लोदर वाळो कुणी वडवाइ आंबाहळदर देवदार आदु रतांजळी प्रत्येक तोला २० लइ खांडी उकाळो करवो पछी ते उकाळामां घी शेर १५ अंदर आंबानां कल्क करेला ठाममा पकाववुं पाणीनो भाग बळी जाय एटले गाळी वरणी भरवी तेमां कपुर तोलो १ बारीक करी मेळववुं १ थी २ तोला चटाडी उपर दुध पावुं तथा मोना हरकोइ दरद पर चोपडवुं।

मुखसुरभी गोळी—खेरनी छाल तथा जेठिमधना मूळ दरेक शेर १ गंधीला खेरनी छाल शेर ४ सुगंधी कुष्ठ शेर १ त्रणेने साथे खांडी पाणी शेर ४० मुकी बेभागनुं बळी रहे त्यां सुधी उकाळी पछी गाळी ते उकाळामां एलची जायफळ कुष्ठ कमळपुष्प सुखड उपलसरी पानडी तमाल मोथ कपुरकाचली जेठिमधनो शीरो मोसमीगुलाब आमळां मोगरानां फुल चमेलीनां फुल वाळो लविंग खेरसार घउंलो नखलो प्रत्येक तोला ६ लइ कपडे चाळी उपला उकाळामां नाखी तथा जेठिमधनो शिरो तो. २० नाखी पकाववुं. गोळी वळया जेवुं थइ जाय एटले उतारी ठारी तेमां भीमसेनी कपुर तोला ४ मेळवी चण्या जेवडी गोळी वाळी छाये सुकाववी सुकाइ

गया पछी गुलाबना अत्तरनो करमो देवो अने मजबुत बुचवाळा शीशामां भरी राखवी आ गोळी शीयाळामां बनावी होय तो बहु गुणकारी रहे छे मात्रा ३ थी ८ गोळी दुध साथे आपवी अथवा मोमां राखी रस उतारवो. तेथी वायुना पित्तना के कफना प्रकोपना गमे तेवा मोना रोग नाश पामे छे गळाना जीभना ताळवाना रोग मटे छे तथा मोंनो दुर्गंध मटी जइ मों सुगंधी थाय छे ।

वारुणी गुटिका—आंबानो कोल के कुंपळीयां लींबडाना कुंपळीयां काथो जेठिमध पारद गंधक आंबाहळदर कपुरकाचली आमळां पकवेली लोहभस्म वड-वाइमां पकवेली अभ्रकभस्म वज पलचि कायफळ वंशलोचन चणकबाब जावंत्री कुष्ठ जायफळ मोथ जटामांसी कपूर परवाळानी भस्म साबरसींग भस्म बधां समभागे लइ खांडी झीणे हवाले चाळो मधमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २ थी ६ गोळी दुध साथे देवी. मोनां बधा रोग मटे ।

सर्वमुखरोगहर क्वाथ—हरडे बेडां आमळा सातविण वाळो मोथ त्राय-माण कडु हळदर दारुहळदर धमासो जेठिमधनुं मूळ बधां समभागे लइ खांडी २ तोला भुकानो उकाळो करी मध नाखी पावो. मोंना सर्वरोग मटे ।

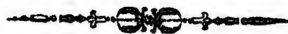
कोगळा १—जुइनां पान गळो द्राक्ष काळीपाठ दारुहळदर त्रिफळा पना उकाळाना कोगळा कराववा ।

कोगळा २—पटोळ लींमडो जांबु आंबो चमेली पना पानने उकाळो करी कोगळा कराववा ।

कोगळा ३—चमेलीनां पान धमासो बावळनी छाल आंबलीनी छाल बोरडीनी छाल आमळां बधां सरखे भागे खांडो उकाळी तेना कोगळा दिवसमां ५-१० वखत करवा तो मोढुं आवी गयुं होय चांदां पडतां होय ते रुझाय ।

कोगळा ४—अंगुरी सुरकाना गुलाबजळना कोगळा कराववा ।

जुइनां पान चाववां ।



मोढानी खराब गंध-खराब वास

मुखसुगंधी वटी—जायफळ जावंत्री मरवो केसर कुष्ठ समभागे खांडी मधमां चणोया बोर जेवडी (आशरे २ वालनी) गोळी वाळवी मोमां राखी रस उतारवाथी मोमां परु जेवी के बीजी खराब गंध आवती होय ते मटे ।

मुखसुगंधी चूर्ण—उपलेट जायफळ मोटी हरडेदळ समभागे खांडी हमेशां सवार सांज ०। पा तोलो चूर्ण पाणी साथे आपवुं ।

मुखसुगंधी चूर्ण—पिपर जीरुं कुष्ठ इंद्रजव समभागे खांडी ०। तोलो टंके पाणी साथे खावुं तथा बेउ वखत जमीने एक तोलो चूर्ण खुब चावी कोगळा करावबा ।

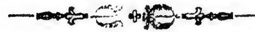
मुखसुगंधी तेल—गंधीलाखेरनी छाल शेर १० लइ खांडी उकाळो करी मजीठ लोधर महुडां गंधोलोखेर काथो कायफळ लाख वडनी छाल झीणी पलची

कपूर अगर पद्मकाष्ट लविंग चणकबाब जायफळ पतंग गेरु तज नागकेशर धावडीनां फुल तुळशी लीलो चा कुष्ठ जेठीमध मोथ दरेक ४ चार तोला लइ लुबदी करी तेल शेर ५ पांच उपला उकाळा साथे नाखी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय पटले गाळी लेवुं आ तेलना कोगळा करवाथी मोंना बधा रोग मटे छे मोंनी खराब वास जती रहे छे दांतनां पेढानां गळानां ताळवानां जीभनां गलोफानां दरद पण मटे छे ।

मुखसुगंधी वटी—(मुखसौरभ्यकरी वटी) खेरसार शेर १। अभ्रकभस्म पारद गंधक लोहभस्म पलची कमळतंतु सफेद चंदन मोथ वाळो उपलसरी तमाल मजीठ जेठीमधनां मूळ रीसामणी हरडेदळ बेडांदळ रसवंति धावडीनां फुल नागकेशर लविंग गेरु दारुहळदर कायफळ कमळकाकडी लोदर घडवाइनां अंकुर धमासो जटामांसी हळदर रास्ना तज कपुर बोरसलीनां फुल तुळशी साकर लाख प्रत्येक तोला ४ चार मरी सुंठ पिपर प्रत्येक तोला २ बे पिपरमेन्टना फुल तोलो १ बधां साथे मेळवी गुलाब जळमां घुटीने अथवा मधमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी आ गोळी पान साथे खावाथी मोंनी खराब वास मटे छे मों सुगंधयुक्त थाय छे जीभनां गळानां ताळवानां रोग मटे छे ।

१ बीजोरानां फळनी छाल छाये सुकावी खांडी राखवी ०। तोलो सवार सांज पाणी साथे आपवाथी मोंनी खराब वास-गंध मटे ।

२ लींबडानुं खेरनुं आसोपालवनुं बावळनुं के वडवाइनुं दातण करी तलनां तेलमां बोळी बोळी दांते पेढां उपर घसी दातण हमेशां करवानी टेव राखवाथी मोंनी खराब गंध मटे ।



अम्लपित्त

कारण-चिन्ह—खराब बगडेलां वासी खाटां दाह करनारां पित्तकारक अन्नपानना उपयोगथी तथा अजीर्ण उपर भोजन करवानी टेवथी छातीमां गळामां दाह वळतरा थाय छे त्यारे खाटा घचरका आवे छे छातीये डचुरो चडे छे उबको आव्या करे छे भुख मंद पडी जाय छे. आ दरदमां तरश दाह चकरी परसेवो बहु वळवो शरीर पीळुं पडवुं पवां चिन्हो देखाय छे. उलटी थाय छे. उलटीनो रंग लीलो काळो लाल के पीळो होय छे. माथानो दुखावो फेर आवेछे. झाडो कबज रहे छे ।

पथ्यापथ्य—जव घउं मग राता जुना चोखा साकर मध कंटोला कारेलां वांसनुं अथाणुं परवळ परबोळियां जांगल मांस उकाळी ठारेलुं पाणी साथवो वगेरे कफ पित्त शामक चिजो हितकर छे. तेल नवां अनाज अडद भेंसनुं दुध दहीं छास सुरको खाटां तीखां भारे पदार्थ बजारनी मिठाइ लींबु केरीनुं अथाणुं दारु वगेरे हानिकारक छे ।

मिश्रण—अम्लपित्तांतक लोह तोलो ०॥, सुवर्णवसंत मालती तोलो ०॥, प्रवाळचंद्रपुटी तो. १, मुक्ताभस्म तो. ०॥, आरोग्यवर्धनी तो. १ बधां साथे वाटी

६४ पडीकां करवां. सवार सांज अकेक पडीकुं मधमां चाटवुं. १ महिनामां अम्लपित्त मटे ।

सर्वतोभद्र लोह—लोहभस्म ताम्रभस्म अभ्रकभस्म प्रत्येक तोला ८ आठ शुद्ध पारद तो. २ गंधक तो. ४ माक्षिकभस्म शुद्ध मनशिळ प्रत्येक तोला २ बे शिलाजीत तो ३ गुगळ तो. २ वावडींग भिलामां चित्रो धोळा आंकडानां मूळ खाखरानां मूळ मुशळी सटोडी भांगरो शतावरी कुवाडीयानां बी गोरखमुंडी सुंठ पिपर मरी प्रत्येक तोलो ०॥ अरधो बधाने विधिवत साथे मेळवी घी अने मधमां वाल वालनी गोळी वाळवी. मात्रा ३-१२ गोळी आखा दिवसमां पाणी साथे अपाय छे. गमे तेवा उपद्रववाळुं अम्लपित्त अवश्य मटे छे. ते शिवाय हरस भगंदर शूळ कुष्ठ पांडु सोजा संधीवा गुल्म खांसी श्वास क्षय वगेरे दरदोमां पण तात्कालिक गुण करे छे. रात्रे सुती वखते सींढो अने अजमा समभागे खांडी ०॥ तोलो उना पाणीमां फाकी १ वखत लेवी ।

अमृतचंद्र रस—पारद तोला ८ गंधक तो. १६ लोहभस्म अभ्रकभस्म प्रत्येक तोला ४ चार सुंठ पिपर मरी वावडींग जेठिमधनां मूळ गळोनां मूळ आवळनां फुल गळोनो सत्व सिंधालुण मुरोखार हरडे आमळा साकर कुष्ठ मोथ तज एलचि जीरूं वावडींग प्रत्येक तोला ६ छ लइ साथे मेळवी गळोना रसनी आमळाना रसनी अने केळना पाणीनी अकेक भावना दइ चणा जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ४-१२ गोळी पाणी साथे सवार सांज जम्या पछी आपवी. अम्लपित्त घसरका छातीनी बळतरा ओडकार मोळ उलटी दाह झाडानी कबजीयत शूळ पेटनां दरद वगेरेमां उत्तम छे ।

लीलाविलास रस—पारद गंधक अभ्रकभस्म ताम्रभस्म लोहभस्म बधां सरखे भागे लइ साथे मेळवी आमळा अने बेडानां रसमां ३ दिवस सुधी घुंटी चणाठो जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-६ गोळी पाणी साथे आपवी. शूळ साथेनो उलटी छातीनो दाह तथा गमे ते जातनुं अम्लपित्त मटे ।

अम्लपित्तांतक रस—पारद गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म हरडे बेडां आमळा शतावरी नसोतर पिपर नवसार पकवेलो सिंधालुण संचळ बधां सरखे भागे लइ भांगराना रसनी अने शतावरीना रस के उकाळानी अकेक भावना दइ सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ४ रति मध साथे आपवुं ।

अम्लपित्तांतक लोह—पारद गंधक मंडूरभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म दरेक तोला १० दश अने त्रिफळामां पकवेली लोहभस्म तो २० साथे मेळववां. नसोतर अने कडुना उकाळानी भावना दइ घुंटी राखवुं. मात्रा २-४ रति धाणा हरडे जेठिमधना मूळना उकाळा साथे आपवाथी बधां अम्लपित्त मटे ।

अविपत्तिकर चूर्ण—सुंठ पिपर मरी हरडे बेडां आमळा मोथ वावडींग बिडलवण एलचि तमालपत्र प्रत्येक तोलो १ एक लवींग तो. ११ नसोतर तो. ४५ साकर तो. ८८ मात्रा ४-१२ वाल पाणी साथे आपवुं. बधी जातनां अम्लपित्त मटे तथा बंधकोश मंदाग्नि अने हरसमां पण घणो फायदो करे छे ।

अम्लपित्त शमनावलेह—मुरुं कोळुं पाकेलुं लइ उपरथी छाल अने अंदरथी घी रेषा वगेरे काढी नाखी खमण करवुं पछी खमणने नीचोवी रस काढवो इ खमण शेर १० ने ५ शेर के जोइए तेटला घीमां बदामी रंगनुं थतां सुधा शेकी एक बाजु मुकवुं पछी कोळाना नाचोवेल रसमां १० रतल लीलां आमळांने बाफवा जरुर पडे तो ताजुं पाणी बाफवा जेटलुं नाखवुं बफाइ जाय पटले आमळांने काढो लइ ठळीया काढी छुंदो करा नाखवो ते छुंदाने जोइए तेटलुं घी मुकी शेकी नाखवो पछो आमळां बफातां रहेला पाणीमां २० रतल खांडेली साकर नाखी पकववुं पतासा जेवी घाटा चासणी थाय पटले तळेलुं कोळानुं खमण अने आमळानो छुंदो नाखी दइ हलाव्या करवुं दाझे नहि तेम पकाववुं घाटुं थाय पटले नीचे उतारी ठरवा आवे पटले नीचे लखेला ओसडीयानो भुको तैयार राख्यो होय ते नाखी हलाव्या करवुं. धाणा पिपर मोथ वंशलोचन जीरुं शंखजीरुं ओथमाजीरुं तकमरीयां तुळशीना पान तज पलचि नागकेसर हरडे मरी सुंठ फुलावेल टंकणखार अघेडानो क्षार गळोनुं सत्व भांगरो प्रत्येक तोला १० दश तथा लोहभस्म अभ्रकभस्म रससिंदुर मंडुरभस्म अने शंखभस्म प्रत्येक तोला ६ छ, कपूर तो. २॥ मेळववुं. ठंडुं थाय पटले मध तो. ८० मेळववुं पछी काचनी बरणीमां भरी राखवुं. मात्रा १-२ तोला उपला केइपण औषध साथे अथवा एकलुं चाटवुं. अम्लपित्त दाह छातीनी बळतरा अरुचि उबको उलटी वायु पित्त कफना बधा रोग शोष क्षयरोग प्रमेह प्रदर पेशाबनी बळतरा खोटी गरमी हरस वगेरेमां उत्तम छे।



अरुचि खोराकनो अभावो—अन्नपर रुचि न थाय

कारण-संप्राप्ति—शोक भय लोभ क्रोध अप्रिय वस्तुनुं दर्शन तथा चिंतवन खराब गंध ताव वगेरे कारणे आ दरद थाय छे तेथी दांत अंबाइ जाय छे. मोढुं नहायुं खारुं तीखुं खाटुं कडवुं चीकणुं थइ जाय छे. वायुप्रधान होय तो छातीमां शूळ निकळे छाती भींसाय. पित्तप्रधान होय तो तरस लागे दाह थाय शोष थाय. कफप्रधान होय तो मों चीकणुं थाय लाळुं पडे।

पथ्यापथ्य—जुनां अनाज मूळा रींगणा सरगवानी सींगु केळां दाडम फणस घी लसण सुरण द्राक्ष केरी शिखंड दहीं छास हितकर छे. उजागरो मळमूत्रना वेगनो अवरोध अप्रिय वस्तु क्रोध शोक तथा खराब गंध वगेरे हानिकारक छे।

रामबाण रस—पारद गंधक वछनाग लविंग प्रत्येक तोला ३ त्रण, मरी तो. ६ जायफळ तो. १॥ बधां साथे मेळवी आंवलीना कातराना रसमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-६ गोळी पाणी साथे आपवी. अरुचि उबको मंदाग्नि झाडा मरडा वगेरेमां अपाय छे।

महोदधि रस—वछनाग तोलो १ शुद्ध हिंगळो तो. १ जायफळ तो. २ टंकण तो. २ लींडीपिपर तो. ३ सुंठ तो. ६ कोडीभस्म तो. ५ बधां साथे मेळवी पाणीमां गोळो चणोठी जेवडी वाळवी. मात्रा ४-१२ गोळी पाणी साथे आपवी अरुचि मंदाग्नि वगेरेमां उत्तम छे।

अरोचकामृत रस—पारद गंधक अभ्रकभस्म सुंठ पिपर मरी तज पलचि लविंग चणकबाब जीरुं शाजीरुं मोथ कचुरो अजमा बोरनो गर्भ सिंधालुण मीठुं कुष्ठ प्रत्येक तोला ४ चार, साकर तो. १२ केसर तो. ०॥ कपूर तो १ बधाने साथे खांडी मेळवी दाडमनो रस तोला २० नाखो छाये सुकाववुं. पछी आंबलीनां पाकेला कातरा तोला २० पाणीमां पलाळी रस काढी कपडे गाळी तेमां मेळवी छाये सुकाववुं. पछी १०० तोला लींबुमांथी निकळे तेटलो रस काढी मेळवी चण्या जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा दिवसमां ४-८ गोळी पाणी साथे आपवी. अरुचि मोळ उबको खावापर अभावो पेटनो गडबडाट वायु पेटमां पवन भराइ जवो आफरो वगेरेमां उत्तम छे ।



वमन–छर्दि–उलटी उलक उबको मोळ उछाळा

कारण—अप्रिय अन्नपान बहु भोजन आम अजीर्ण जिवडा सगर्भा अवस्था मगजनुं दरद सुग चडे तेवा पदार्थो नजरे चडवां खराब चीजोनुं रटण सुंघवुं पित्तनो प्रकोप वगेरेथी उलटी थाय छे तथा ताव कोलेरा आंतरडानो सोजो लिवरनुं दरद पथरी वगेरे रोगोमां पण उलटी थाय छे. उलटीवाळा दरदीने उधरस श्वास हेडकी ताव तरस छातीमां बोजो वगेरे जणाय छे कोइवार अन्न के पित्त के पकलुं पाणी निकळे छे अने कोइवार ते साथे लोही पण पडे छे ।

पथ्यापथ्य—वटाणा जव घउं मग चोखा कफलुग जांगल मांस शिखंड शरबत द्राक्ष संत्रा दाडम मीठां लींबु खाटां लींबु शेतुर अंजिर वगेरे हितकारक छे. लांघण करावची झाडानी दवा देवी. दोषनुं प्राधान्य अने बीजां लक्षणो तपासी खोराक अने औषधनी योजना करवी ।

छर्दिशंकर रस—रससिंदूर शुक्तिभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म सुवर्णमाक्षिक भस्म जेठिमधनो शिरो शिलाजीत वंशलोचन सुंठ पिपर मरी, तलसरानी राख हरडेदळ कलोंजिजीरुं वावडींग पलचि मोथ नागकेसर द्राक्ष सरखे भागे लइ बीजोराना अने लीलां आमळाना रसनो बबे भावना आपी सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ४-८ रति पाणी साथे आपवी. उलटी मोळ उबका अरुचि खोराक पर अभावो सगर्भास्त्रीनी उलटी वगेरेमां उत्तम छे ।

छर्द्यंतक रस—रससिंदूर तोला ४ सुवर्णमाक्षिक भस्म ताम्रभस्म नागभस्म बंगभस्म मोतिभस्म प्रत्येक तोलो १ पक लोहभस्म अभ्रकभस्म तथा गंधक प्रत्येक तोला ९ नव बीजोरुं आदु लुणिखाटी लीलां आमळां तथा तुळसी प्रत्येकनी अकेक भावना दइ सुकावी घुंटी तेमां जीरुं अजमा सुंठ पिपर मरी हरडे आमळां बेडां कलोंजिजीरुं वावडींग तज प्रत्येक तोलो ०। पा मेळवी घुंटी भुको राखवो. मात्रा सवार सांज बबे रति मधमां चटाडवुं. गमे ते कारणे थती उलटी बंध थाय ।

एलादिचूर्ण—पलचि डांगरनी धाणी लविंग नागकेसर लींडीपिपर कांग बोरना ठळीयानां मींज मोथ श्वेतचंदन बधां सरखे भागे खांडी कपडे चाळी ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण मधमां चटाडवुं ।

उलटी उछाळा मोळ उबकाना सादा उपाय

१ भमरोनुं मोंण (माटीनुं होय छे) ते उकाळी पावुं. वमन शमे ।

२ कमळकाकडीनां मींज छोहारी खारेक एलचि ए त्रणे वाटी वासी पाणी साथे बेआनीभार देवुं. उलटी मटे ।

३ वाळो पवडी मींज भमरीनां मोंणनी माटी मोरनां पांखनी राख खापरीयुं लुगडां बाळी करेली राख बधां समभागे वाटी तोलो ०। मध साथे चटाडवुं. उलटी मटे ।

४ झेरकोचलुं घसी आशरे १ रति पावुं. उछाळा उलटी मोळ मटे ।

५ आमळा १ भाग लींडोपिपर २ भाग काळां मरी ३ भाग साकर ४ भाग साथे खांडो मध साथे पावलीभार चाटवुं. उलटी उबका मटे ।

६ सिंधव तोलो १ एलचि तो. २ खांडी ०। तोलो घी साथे चटाडवुं ।

७ एलचि तुळसीना रस साथे पावी. उछाळा समे ।

८ आरसपाण घसी पावो उलटी मटे ।

९ चिकणी सोपारी तोलो ०॥, काथो तो. ०॥ पाणी शेर २ मां उकाळी पाणी शेर ०। रहे एटले तेमां लींडोपिपरनो भुको १ वाल छांटी पावुं. अन्न पाछुं वळतुं अटके उछाळा मोळ मटे ।

१० लींबुरस तोलो १। गायनुं दुध तो. ५ मेळवी पावाथी अन्न उछळतं अटके

११ सोनु तोला ५० भार पाणी शेर १२ मां उकाळी पाणी शेर १ रहे त्यारे उतारी तेमां मध नाखी पावुं. उलटी मटे ।

१२ तेल अथवा घी नाखवाना चामडाना कुडलाना कटकाने बाळी राख करवी ते राख वाल १ पाणी साथे पावा. घणा दिवसनो उलक मटे ।

१३ एलचि लाल चोखा लवंग गजपिपर घउंलो आंबानो मोर नागकेसर कमळकाकडीनां मींज बोरनां मींज मोथ सुखड समभागे खांडो मध साकरमां ०। थी ०॥ तोलो चाटवुं. त्रिदोषनी उलटी मटे ।

१४ एलचि तो. ०। तुळसी रस तो. ०। मेळवी आपवुं. उबका मटे ।

१५ लविंग अफीण केसर वाटी पाणीमां चण्या जेवडी गोळी करवी. मात्रा १-२ गोळी आखा दिवसमां आपवा. उलटी मटे ।

१६ केसर वाल १ साकर तो. ०॥= सुखड साथे घसी दिवस ३ पावुं. उबका उलटी मटे ।

१७ अजमा तो. ०॥ थी १ नो फाकडो भरी उपर वोडकी गाय (नहीं वीयायेल गाय) नुं मूत्र घुंटडो पीवुं. ७ दिवस पीवाथी उबका उछाळा मोळ मटे ।

१८ माखिनी हगार रति ६ गोळमां गोळी वाळी आपवी. शांति थाय जरुर पडे तो ३ गोळी ३ दिवस सुधी पाणीमां पावी. मोळ उलटी मटे ।

१९ गुगळनो धुंवाडो कोरा घडाने ७ वार आपवो पछी तेमां पाणी भरवुं. ते पाणी पावुं. उबका उलटी मटे ।

२० लींबुरस तो. १ मां एलचि बेआनिभार भुको करी छांटी पावुं. उलटी मटे ।

२१ मोरपींछ बाळी मध साथे चटाडवुं. उलटी मटे ।

२२ बिजोरानो रस तो. १ मध साथे चाटवो ।

२३ अगरनुं लाकडुं नाळीयेरनी काचली कमरकाकडोनां मींज पाणीमां घसी पावां. ३-४ दिवसमां उलटी मटे ।

२४ आकडानां पाकां पान छाये सुकावी वाटी तेमां समभागे जवखार मेळी तो. ०।= भार पाणी साथे पावुं. तत्कालिक उलक जाय ।

२५ तुळसीरस पीवाथी उलटी मटे ।

२६ मोरपींछनी राख लविंग समभागे वाटी नागरबेलना पानना रसमां मग जेवडी गोळी करवी. उछाळा मटे ।

२७ नागकेसर आंबानी गोठली पलचि उकाळी पावुं. उछाळा मटे ।

२८ जांबुनां पान उकाळी पावाथी उलटी उबका मटे ।

२९ संचळ जीरुं साकर मरी समभागे खांडवां. तो. ०। मधमां चटाडवां ।

३० सुंठ पिपर समभागे मधमां चाटवुं ।

३१ वडवाइना कोटा कुणा होय तेनो रस गायना दुध साथे पावो सगर्भा-स्त्रीनुं वमन उलटी मटे ।



शरीरनो दाह शोष तरस गळे खरेरी पडवी मो सुकावुं मोमां अमी न रहेवुं

पित्तना कोपथी दाह थाय छे तेना चिन्ह पित्तज्वरने मळतां होय छे. पित्तज्वरमां होजरी बगडेली होय छे अने पित्तज्वरमां शरीरे तपारो सखत होय छे. आमां पित्तज्वरने लगता उपचार करवा ।

आखा शरीरमां फरता लोहीमां दाह थाय छे त्यारे शरीर अग्निथी बळतुं होय के अग्निथी तपतुं होय तेम लागे. सबाका निकळे शरीर अने आंखो राती थइ जाय शरीर पर अंगारा मुक्या होय तेवी बळतरा थाय. दारु बहु पीवाथी दाह थाय छे ते पित्त अने लोहीने बगाडे छे आ दाह घणो भयंकर होय छे. शस्त्र-हथियार वगेरे वागवाथी कोठामां लोहीनो जमाव थवाथी दाह थाय छे ते असाध्य छे. तरस रोकवाथी अथवा तरस्या माणसने पाणी नहीं मळवाथी रस क्षीण थइ वधी गयेलुं तेज-आंतर अग्नि अंदरना अने बहारना देहने बाळे छे त्यारे मनुष्य चेष्टाहिन थइ जाय छे. गळुं ताळवुं होठ सुकाय छे जीभ बहार निकळी जाय छे. धातुना क्षयथी थयेला दाहमां मूर्च्छा आवे छे तरस लागे छे साद बेसी जाय छे हलनचलन करी शकतो नथी. मर्मस्थानमां वागवाथी दाह थाय छे ते असाध्य छे. कोइपण जातना दाहमां शरीर उपरथी ठंडु लागे अने अंदर असह्य दाह थातो होय तो ते असाध्य चिन्ह छे ए सिवाय बीजा रोगने अंगे तथा झेरी दवा खाइ जवाथी पण दाह थाय छे ।

आ दरद पकलुं अथवा ताव जेवा रोगनी साथे होय छे साथे घणाने शरीरे दाह बळे छे. वायुनो के पित्तनो कोप थवाथी जीर्णज्वरथी बहु श्रम करवाथी तडके तपवाथी भय पामवाथी कामांध थवाथी घा वागवाथी क्षयथी तथा बीजा रोगोने अंगे आ दरद थाय छे त्यारे वारंवार पाणी पीवा छतां तरस छीपती नथी ।

उपचार—सो वखत धोयेलुं घी चोपडवुं शेकेला जव बोर आमळां सरखे भागे लइ सुरकामां के खाटी छासमां वाटी मर्दन करवुं. छासथी भींजावेल कपडुं ओढाडवुं. वाळो अने चंदन साथे वाटी चोपडवुं. चंदन अने रतवेलियो वाटी वींजणा पर चोपडी तेनो पवन नाखवो. केळना पांदडां अथवा कमळपत्र पाथरी ते पर दरदीने सुवराववो ठंडु पाणी अखंड रेडवुं. घउंलो लोदर वाळो काळोवाळो नागकेसर वाटी चोपडवुं वाळो पद्मकाष्ठ काळोवाळो चंदन मोथ पने कचरी एक कोठीमां नाखी तेमां बेसाडवो. कमळनुं पाणी साकरनुं पाणी दुध शेरडीनो रस वगेरे पावां काळो हंसराज रतवेलियो वाटी पावो अने चोपडवो ।

पटीरादि क्वाथ—चंदन खडसलियो वाळो सुगंधी वाळो मोथ कमळ कमळतंतु वरियाळी धाणा पद्मकाष्ठ आमळां समभागे खांडी १० तोला भुकामां ८० तोला पाणी मुकी अर्धु रहे पटले मध साकर नाखी पावुं बधा दाह मटे ।

दाहहर तेल—आमळां शेर २ गुलाबनां फुल शेर १ सुगंधी मेंदी शेर ०॥ घउंलो चंदन मोथ वाळो रतवेलियो मोगरानां पान चमेलीनां पान रातराणीनां फुल नागकेसर कमळपुष्प कमळपत्र पद्मकाष्ठ काळो हंसराज दरेक तोला १० दश बधांने कचरी तेमां छास बधाथी बमणी नाखी बे दिवस पलाळी राखवुं पछी तलनुं तेल शेर १० नाखी पाणीनो भाग बळी जतां सुधी धीमे तापे पकाववुं. आ तेल दाहवाळाने चोपडवाथी बधी जातना दाह मटे छे ।

रौप्यगुटि—चोखी चांदिने तपावी लालचोळ करो जेठिमध द्राक्ष वावडींग चणकबाब शेरडीनो रस साकरनुं पाणो मोथ ए प्रत्येकना रस के उकाळामां २१ एकविश वखत बुझाववुं. पछी १ तोलानी गोळी वाळवी आ गोळी मोमां राखवाथी तरस मटे छे मोमां अमी आवे छे दाह मटे छे ।

कुष्टादि वटी—कुष्ट कमोदना ममरा मोथ वडवाइना कुणां अग्रभाग जेठिमध समभागे मधमां चणिया बोर जेवडी गोळी वाळवी मोमां राखवाथी तरस दाह मटे ।

एलादि चूर्ण—एलचि ममरा लविंग गजपीपर घउंलो बोरडीनां ठळीयानां मींज मोथ सफेद सुखड समभागे खांडवुं. मध साकरमां चटाडवुं ।

शरीरमां दाह–बळतराना सादा उपाय

१ एळचि चोखा लविंग नागकेसर सुखड समभागे उकाळो करी मध नाखी पावुं ।

२ काळी द्राक्ष धाणा खडसलियो साकर एनुं हीम करी पावुं ।

३ बोरडीनां पान कुणां आमळां चोखानो लोट पाणीथी वाटी हाथेपगे चोपडवुं. दाह मटे ।

४ बोरडीना कुणां पान आमळां अरिटानां फीण हाथेपगे चोपडवुं. दाह मटे ।

५ कपूर वाळो एलचि आमळां सुखड शितळ पाणी साथे पावुं. कोठानो दाह मटे ।

६ मुसळीकंद मरी साकर समभागे खांडी ०।थी ०॥ तोलो पाणी साथे आपवाथी घणी तरस लागती होय धख थाती होय ते मटे ।

७ वाळो सुखड रतांजळी काळा वाळानां मूळ पद्मकाष्ठ बधां घाटी मस्तके लेप करवो. तरस धख मटे ।

८ उपलेट चोखा वडवाइ जेठिमधनां मूळ मोथ दरेक तोलो ०॥, कमळकाकडानां मींज तो १ बधां साथे खांडी बधानी बराबर साकर मेळवी मधमां गोळी वाळवी. गोळी मोमां राखवी तरस धख शोष मटे मोमां अमी आवे ।

९ गजवेलना कटकाने तपावी माथे पाणी रेडवुं ते पाणी मध साकर साथे पावुं. तरस शोष मटे ।

१० लींडीपिपर नागकेसर दाडमनी छाल साकर मधमां गोळी करी मुखमां राखवी गळे शोष पडतो अटके ।

११ सुखडने चोखाना ओसामणथी घसी पावुं. तरस मटे ।

१२ सिंधव मरी मध बिजोराना रस नाळवे चोपडवाथी मुख शोष मटे ।

मूर्च्छा

कारण—नबळाइ दोष प्रकोप विरुद्ध आहार विहारनुं सेवन क्रोध शोक मनपर आघात तमोगुण मळमूत्रादिना वेगनो अवरोध झेर आघात वगेरे कारणे कोपेला वात पित्त कफ हृदयमां ज्ञानेंद्रियना स्थानमां कर्मेंद्रियोना स्थानमां पेसे छे त्यारे माणस मूर्च्छित थाय छे ।

चिन्ह—प्रथम हृदयनी गति मंद पडे छे मोळ उलटी थइ श्वास धीमो पडे छे शरीरमां कंपारी थइ टाढ वाय छे शरीर ठंडु पडवा मांडे छे परसेवो बहु वळे छे नाडी धिमी अस्थिरगतिवाळी थाय छे हाथ पग के शरीरना बीजा स्नायु खेंचाय छे मन गभराय छे. मूर्च्छा पूर्णरूपे पहोंचे त्यारे दरदी तदन बेशुद्ध थाय छे ते वखते झाडो पेशाब थइ आवे छे. भ्रम संन्यास वगेरे रोग आने मळता छे ।

मूर्च्छा पित्त अने तमोगुण प्रधान छे भ्रम पित्त वायु अने रजोगुण प्रधान छे तंद्रा वायु कफ अने तमोगुण प्रधान छे निद्रा कफ अने तमोगुण प्रधान छे ।

कोपेला बळवान दोष जीवस्थानमां प्रवेशी वाणी देह अने मननी गतिने अटकावी दइ पराधिन थइ गयेला माणसने लाकडांनी पेठे पाडी दीये छे. तुरत चांपता उपाय लेवामां आवता नथी तो तत्काळ मरण निपजे छे ते संन्यास कहेवाय छे ।

[illegible]—दरदीने सोंयपर सुवरावबो ठंडी हवा वाळा ओरडामां लइ जवो कपडां ढीलां करवां छुंदेलुं लसण छुंदेली डुंगळी आदु आमोन्या वगेरे सुंघाडवुं. छातीये माथे मोढा उपर टाढुं पाणी छांटवुं मोढा उपर पवन आववा देवो गळे उतरे एम होय तो टाढुं पाणी चमचीथी थोडुं थोडुं पावुं. द्राक्षासव मृतसंजीवनी सुरा महाकस्तुरी सुरा वगेरे पावुं माथा हेठे ओसीकुं राखवुं. मरवो आदु फोदीनो डुंगळी लसणनो रस थोडो थोडो मध नाखी पावो. नाकमां टीपां नाखवां हाथे पगे शेक करवो ।

मूर्च्छा नाशन घृत—सुंठ पिपर मरी हिंग नगोडना बी केपान देवदार हळदर मजिठ वावडींग सुखड मोरींगणीनां डोडवां केळकंद शतावरी आसोंध प्रत्येक तोला ५ पांच लइ पाणीमां लुबदी करी तेमां गायनुं दुध शेर ८ नाखी हलावी तथा गायनुं घी शेर ८ नाखी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय एटले गाळी लेवुं. आ घी कोइपण औषध साथे १-२ तोला सुधी चटाडवुं. आनाथी भ्रम तंद्रा वाइ अपस्मार गांडपण वगेरे मानसिक दरद मटे छे ।

मूर्च्छान्तक रस—पारद तो. ५ गंधक तो १० रससिंदूर तो. ५ अभ्रकभस्म रौप्यभस्म ताम्रभस्म प्रत्येक तो २ बे सरगवानां बी सरसडानी छाल आसोंधरानी छाल चोपचिनी संधेसडानी छाल सुंठ पिपर मरी आसोंध शतावरी वज रास्ना ब्राह्मी ब्रह्मदंडी सिंघालुण प्रत्येक तोला ३ त्रण लइ खांडी हवाले चाळी साथे मेळवी तेने आसोंध आदु शतावरी प्रत्येकनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुकी राखवी. मात्रा २ ४ रति मध अने मूर्च्छानाशन घृत साथे अथवा अश्वगंधावलेह साथे चटाडी उपर अश्वगंधारिष्ट २-४ तोला पावो अथवा पाणी पावुं ।

मूर्च्छाहर अंजन—सुंठ पिपर मरी सरगवानां बी सिंघालुण वज हिंग लसण करंजनां बी धोळा सरसव समभागे लइ बोकडानां मूत्रमां वाटी वाटयुं करवी अथवा सुकावी भुकी राखवी. आ औषध आंजवुं अथवा सुंघाडवु ।

१ रास्ना गळो आमळां नगोड समभागे खांडवां. ०॥ थी १ तोलो भुकानो उकाळो करी लघुयोगराज गुगळ ४-८ गोळी अथवा महायोगराज गुगळनी ३ ४ गोळी आपवी उपर महारास्नादि काढो पावो ।

२ सिंहनाद गुगळ २-४ गोळी उपर धमासो ब्राह्मी इंद्रकनी गोखरूमूल समभागे खांडी ०॥ थी १ तोलानो उकाळो करी पावो ।

३ अष्टामृत पर्पटी तो. ०॥ अपस्मार नाशन रस तो. ०॥ महायोगराज तो. ०॥ चंद्रप्रभा तो. १ साथे मेळवी ४८ पडीकां करी मध घीमां अकेक पडीकुं सवार सांज आपवुं ।

दारुथी उत्पन्न थता दरदो

मद्य आसव-सुरापान विधि

मद्यं मात्रापीतं दत्तं प्रियया समाधिनैरन्नैः ॥
हृष्टमियेण समये भव्यैरमृतोपमं भवेद्विधिना ॥१॥ (र. तं.)

नियमपूर्वक नियमित मात्राथी मद्यनो विचार करी हितकारक अन्न अने खावाना पदार्थो साथे प्रियाये आपेलुं प्रसन्न थयेला प्रिय पुरुषे पीधेलुं मद्य-आसव अमृत सरखो गुण करे छे. बुद्धिमान पुरुषोये मद्यने अन्न जेटलुंज उपयोगी गण्युं छे पण तेनो डहापण साथे अने जे ऋतुमां जे आतनुं मद्य पीवुं हितकारक होय तेनो तथा प्रकृति स्वभाव शरीरनुं बंधारण वगेरे विचार करी उपयोग करे तो अमृत सरखो गुण करे अने मुरखाइथी हद उपरांत ढाच्ये गाले तो विविध रोग उत्पन्न थाय अने छेवटे मरण थाय छे ।

विधि—मळमूत्रोत्सर्ग अने स्नान कर्या पछी पुष्पो तथा सुगंधी पदार्थो शरीरे धारण करी चोपडीने मन सावधान तथा प्रसन्न राखोने सुगंधी पुष्पोथी खिलेला भ्रमर मयूरादिथी गुंजित सुगंधित ठंडा पवन वाता होय तेवा बगोचाओमां चंद्रकिरणोथी धवलित अने सुगंधि धूपथी सुगंधित थयेली अगाशिओमां चित्तनी प्रसन्नता वधारनारा शयनासनमां बेठेला पुरुषोये सोना रुपाना के रत्नजडित पात्रमां भरेलुं अने रुप यौवन मत्त वस्त्राभूषण भूषित रमणीओये आपेलुं मद्य विविध प्रकारनां फळ सुगंधि अने घी दुधवाळा पौष्टिक स्निग्ध अन्न भक्ष्य पदार्थो साथे प्रसन्न चित्तथी प्रकृतिने अनुकूळ पडे तेटला प्रमाणमां पीवुं. वायु प्रकृतिवाळा माणसे स्निग्ध अने उष्ण अन्नपान साथे मद्य पीवुं. पित्त-गरम प्रकृतिवाळाये मधुर शितळ फळफुल स्निग्ध अन्नपान अने शितोपचार साथे मद्य पीवुं कफ-शरद प्रकृतिवाळाये जंगली मांस मरी साथे मद्य पीवुं. कफ-शरद प्रकृतिवाळाये प्रथम मद्य पीइने पछी जमवुं. पित्त-गरम प्रकृतिवाळाये जमीने मद्य पीवुं अने वायु प्रकृतिवाळाये खोराकनी वचमां मद्य पीवुं

गुण—मद्य युक्तिपूर्वक मात्राथी अने विधिपुरःसर पीधुं होय तो तेथी मन प्रसन्न थाय ओज आरोग्य पौरुष बळ वधे शरीर पुष्ट थाय खोराक पर प्रीति वधे भुख लागे हृदय बळवान थाय स्वर अने वान खीले. भय शोक श्रम मटे उंघ उडी गइ होय तो उंघ आवे मळमूत्र साफ थाय बहु उंघ के घेनवाळाने उंघ ओछी थाय कबजियत मटे संसारना विविध दुःख शोकथी पिडायेला मनुष्योना दुःख भुलावी शोक ओछो करे।

मद्यपान करवाथी जेटलुं मद्य वधु पीवाय ते प्रमाणे माणसनी ४ दशा थाय छे।

प्रथम दशा नियमित मद्य पीवाथी बुद्धि वधे स्मरणशक्ति खीले सुख उपजे खानपान निद्रा अने विषयमां सुख उपजे वांचवां गावा वजाववामां उत्साह वधे।

बीजी दशा—वजनथी वधु पीवायुं होय तो बुद्धि स्मरणशक्ति अने वाणीमां विकार अस्पष्टता जणाय उन्मत्त जेवी लीला अने आचरण करे क्रोध वधे आळस अने उंघ आवे।

त्रीजी दशा—तेथी वधु पीधुं होय तो अगम्यागमन करे गुरु मोटेरानुं अपमान करे अभक्ष्य भक्षण करे बेशुद्ध थइ जाय मनमां रहेली गुह्य वातो कही नाखे अने माणस नदन पराधिन बनी जाय।

चोथी दशा—हद उपरांत कोइपण जातनो मर्यादा विना पीवाथी माणस कापेला वृक्षनी पेठे पडे चेतना विनानो थइ जाय कांइपण कार्याकार्यनुं ज्ञान रहे नहीं अने जीवतो छतां मृत जेवो बनी जाय।

मद्य कोणे पीवुं नहीं—क्रोधमां आवेला भयभित थयेला तरश्या शोक विह्वळ भुख्या कसरत अने भार उपाडवाथी थाकी गयेला मळमूत्रना वेगथी पिडायेला बहु खाटां लुखां सुकां पदार्थो खाधां होय अजीर्ण उपर खोराक लीधो होय शरीरे नबळो होय तडको के अग्निथी तपेलो होय एवा माणसे मद्य पीवुं नहीं तेथी विविधरोग उत्पन्न थाय छे।

दारुनां दरद—शरीरमां पीडा थाय भयंकर प्रमेह थाय छातीमां पीडा थाय अरुचि मोमांथी अमी जतुं रहे तरस रह्या करे मो सुकुं रहे शितोष्णताव माथुं हाडकां सांधामां पीडा थाय बगासां बहु आव्या करे शरीर कंपे फरके थाको जाय छाती भींसाय उधरस हेडकी श्वास उजागरो थाय कान आंख मोनां रोग थाय वांसो झकडाइ जाय उलटी झाडा वातपित्त कफ जन्य उबको भ्रम चकरी बकवाद भयंकर रुप अने भयंकर स्वप्न दर्शन एम विविध चिन्हो देखाय।

मद्यभंजी रस—पारद तोला ८ गंधक तो. १८ साचा मोतिनी पिष्टी तो. २ सोनानो वरख तो. १ शिलाजीत तो. ६ वंगभस्म तो ४ रुपानो वरख तो. ८ बधां साथे मेळवी गायना घीनो करता दइ उंबरानी छालनो क्वाथ काळी द्राक्षनो रस हरडेनो उकाळो प्रत्येकनी अकेक भावना दइ सुकावी घुंटी राखवु. मात्रा २-४ रति मध आदु साथे खवरावी उपर द्राक्षासव के अंजीरासव पावो. दारु बहु पीवाथी थती दरदो मटे छे दारुनुं वंधाण छोडवा इच्छता माणसे टंके त्रण त्रण रति मात्रा घी साकरमां लेइ उपर गरम दुध पावाथी १५-२० दिवसमां गमे तेटला वर्षनुं जुनुं दारुनुं वंधाण छोडी शकाशे।

पथ्यापथ्य अने उपचार चव्यादि चूर्ण चवक संचळ हिंग बिजोरुं सुंठ अजमा समभागे खांडवां. द्राक्षासव साथे टंके ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण आपवुं. दारुना गांडपणमां वातप्रकोप होय तो स्निग्ध उष्ण लवण अने खटाइ साथे खीचडी दाळ वगेरे तथा घउना लोटनो शिरो राव गरम पथारी ओढवानां पुष्कळ ठंडो खुल्लो पवन ए हितकारक छे पित्त गरमी प्रकोप होय तो ठंडा उपचार करवा साकर मध अने पाणी साथे अथवा खजुर द्राक्ष पाकां उबरां पना रस साथे मद्य के द्राक्षासव के बीजी जातनुं मद्य पावु साथवो खवरावvो शश कपिंजळ हरिण रस अजारस मधुर अम्लरस चोखा जव परवळ मग आमळां ठंडा अन्नपान आहार-विहार शयन वगेरे आपवु. बगिचामां खुल्लो पवन आपवो चंदन वाळो कमळ चंद्रप्रकाश रेशमी वस्त्रो मोतिनां आभुषण ए हितकारक छे. कफ-शरदी प्रधान होय तो उष्ण उपचार करवा. हिंगाष्टक चूर्ण यवान्यादि चूर्ण श्रीबाहुशाल गुड अमृतप्राश अवलेह वगेरे आपवुं पेटमां बोजो होय तो लांघण करावबी महानारायण तेल के लक्ष्मीविलास तेल मालिस करवुं।

गांडपण—उन्माद

गांडपण वेलछा—दिवानापणुं—पागलपणुं

कारण—घणा अभ्यासथी आघातथी घणो दारु पीवाथी उजागराथी घणो वखत झाडो कबज रहेवाथी कुटुंब क्लेशथी माल मिलकत के प्रियजननो नाश थवाथी वेपारमां खोट जवाथी प्रेमांधता विरह के अत्युत्कट विषयेच्छाथी लांबा वखतनां अजीर्णथी एम विविध कारणोथी गांडपणनुं दरद थाय छे. स्त्रीने सुवावड आवी गया पछी आहार विहारना अनियमितपणाथी के दरदने लीधे गांडपण थाय छे ते सुतिकोन्माद सुवावडथनुं गांडपण कहेवाय छे।

चिन्ह—दरदी वहेमी संशयी मालविनाना विचारोमां गुंचवायेलो रहे छे गरम वस्तुने ठंडी अने ठंडीने गरम मानी ल्ये छे. पोतानुं शरीर काचनुं बनावेलुं होय तेम फुटी जवानी धास्ती राखे छे. केटलाकने एकदेशी गांडपण होय एटले अमुक बाबतमांज तेओनुं गांडपण होय छे अने बाकी तेओ बधी रीते डाह्या देखाय छे. केटलाकने आपघात करवानुं गांडपण होय छे. केटलीक स्त्रीओ प्रेमोन्माद थाय छे ते पोताना प्रियने झंखती गांडी बनी जाय छे अने पुरुष स्त्रीना प्रेममां लुब्ध थइ गांडो बनी जाय छे. केटलाक गांडा लोको शोकाकुल स्थितीमां शून्याकार थइ जाय छे आ माणसने सवारने पहोर दरदनुं वधु जोर होय छे केटलाकने धार्मिक गांडपण लागु पडे छे कारण विना हसे छे असंबद्ध वातुं करे छे केटलाक लोको जन्मथीज मुर्ख अने बुद्धिहीन थाय छे ते पण एक जातनुं गांडपण छे तेओनुं शरीर पण बेडोळ होय छे बाल्यावस्थामां सीजाय जाय छे कोइपण काम करती वखते तेओ अक्कल पहोंचाडी शकता नथी आवा माणसोनां माथां घणीवार नानां होय छे पण मोटा माथावाळा पण घणीवार गांडा के अर्धगांडा होय छे. सुवावडी स्त्रीने गांडपण लागु पडे छे ते नबळा बांधानी स्त्रीने घणेभागे थाय छे तथा बहु कष्टोथी पण आ दरद लागु पडे छे ।

भूतभैरव रस—पारद हरताळ शुद्ध, मनशिळ शुद्ध, लोहभस्म सुरमो ताम्रभस्म प्रत्येक तोला ४ चार गंधक तो. ४८ लइ बधाने साथे मेळवी गौमूत्रनी भावना दइ लोढानी कडाइमां शेकी पर्पटीनी पेठे पकावी घुंटी राखी मुकवुं. मात्रा २ ४ रति गायना घी साथे चटाडवुं उपर उबरानां पाननो उकाळो घी नाखी देवो ।

पार्वतीश्वर रस—पारद गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म रससिंदूर ताम्रभस्म झेरकोचलां प्रत्येक तोला ४ चार, सुरमो तो. ६ समुद्रफीण तो. ३ पंचलवण तो. ५ रौप्यभस्म तो. २ बधां साथे मेळवी ब्राह्मीना पानना रसनी १ उंबरानी छालना उकाळानी १, तुळसीना रसनी १, वजना उकाळाना १, भांगराना रसनी १ एम कुल ५ भावना दइ सुकाइ जाय एटले लोढानी कडाइमां गायनुं घी तोला ५ मुकी धीमे तापे १० मिनिट शेकी घुंटी राखवुं. मात्रा २ ४ रति गायना घी साथे चटाडवुं उन्माद बधी जातनुं गांडपण शिरावायु हिस्टीरिया वाइ- अपस्मार तथा तेने लगतां दरदो मटे ।

महाकल्याण घृत—सवार सांज २ थी ५ तोला चटाडवुं. अथवा गरम करी पावुं ।

महापैशाचिक घृत—जटामांसी हरडे ब्रह्मदंडी शंखावळी कौचांमूळ वज त्रायमाण अरणिमूळ क्षीरकाकोली ब्राह्मी कडु आमळां वाराहीकंद उंबरो वरियाळी गुगळ शतावरी गुजराती एलचि नोरवेल रास्ना वापुंभां वींछीडानां मूळ शालपर्णी प्रत्येक तोला ४ चार लइ गायना दुधमां कल्क करी दुध बधाथी चारगणुं अने घी बधाथी बमणुं लइ पकाववुं गमे तेटला वखतनुं के गमे ते जातनुं गांडपण भूतबाधा वगेरे मटे छे बाळकोने हमेशां चटाडवाथी कोइपण जातनी भूतबाधा नडती नथी अने निरोगीपणे उछरे छे बुद्धि अने स्मरण शक्ति वधारवा माटे पण सेवन कराय छे ।

उन्माद हर अंजन—पिपर मरी सिंधालुण गोरोचन समभागे घुंटी पडे चाळी मधमां आंजवुं ।

उन्माद हर धुप—लींबडानां पान हळदर गगळ लोबान वज हिंग सर्पनी कांचळी उभी मोरींगणिनां डडवां कपासीया मोरपींछ सरसव समभागे खांडवां घीनो करमो दई धुंवाडो देवो बधी जातना ग्रह भूत प्रेत पिशाच बाधा उन्माद डाकणयनो वळगाड वगेरे मटे बाळकोने आ धुवाडी देवाथी निरोगी रहे ।

उन्माद हर चाटण—सुंठ पिपर मरी तज तमाल पत्र चि नागकेसर हरडेदळ उबरानी छाल अक्कलकरो मालकांकणी धमासो शंखावळी ब्राह्मी समभागे खांडी बधाथी चारगणी साकर मेळवी मध मेळवी चाटण जेवुं करवुं १ २ तोला चाटी उपर गायनुं दुध पावुं ।

उन्माद गजांकुश २ रति, सारस्वती चूर्ण ६ रति, मध घीमां देवुं. दिवाना पिल्स सवार सांज त्रण त्रण गोळी गायना दुध साथे आपवो. अणु तेल के षड्बिंदु तलना टीपां नाकमां कानमां नाखवां ।

शंखावळी पंचांग खांडी ०।थी ०॥ तोलो मधमां चाटवुं. चित्तभ्रम जाय ।

स्मरणादि क्वाथ—लसण पिपरीमूळ झेरकोचलां सुंठ भारंगी पोखरमूळ करियातुं अकलकरो मरी पिपर समभागे खांडी २ तोला भुक्कामां ४० तोला पाणी मुकी उकाळवुं. १० तोला बाकी रहे पछी उतारी लइ सवार सांज गायनुं घी मेळवी आपवुं. ८४ जातना वानां दरद तथा चित्तभ्रम गांडपण मटे ।

अजमा मरी समभागे खांडा गोळथी गोळी लींबु जेवडी करवी. हमेशां १ एम २१ दिवस आपवी. मूर्च्छा मटे ।

वज खरसाणि हमेशां ०।= भार गायना घीमां चाटवुं १॥ मास सुधी. दुध चोखा खावा देवा. मुर्च्छा चित्तभ्रम मटे ।

उंटनी डाबी पांसळीनो भुको १ रति, मरीनो भुको १ रति ए बेउ एकठा करी कागळनी भुंगळीमां भरी कानमां फुंक मारवी तुरत अचेत थइ छींक आवे कृष्णमुखो लट नीकळी पडे लोहीनां टीपां ५-७ पडे. मुर्च्छा गांडपण मटे ।

घोडावज तोला ३ उपलेट तो. १॥ अकलकरो तो. ०॥ लवींग तो. ०॥ भांग शोधेली तो. १। बधां वाटी साथे मेळवो मात्रा बेआनीथी पावलीभार पाणी साथे आपवाथी गांडपण चित्तभ्रम मटे ।

उन्माद धुणी—धतुरानां बी हरताळ बीजोरानां बी पारेवानी चरक तेनी धुंवाडी देवी. गांडपण चित्तभ्रम मटे ।



वाना ८४ जातना रोग—वातव्याधि

आयुर्वेदमां ८४ जातना वाना रोग कह्या छे तेमां विशेष करी जोवामां आवे छे अने शरीरमां दुःख दायक छे तेवा वाना रोगोने माटे विशेष अने बीजा माटे सामान्य उपचार बतावशुं ।

विवेचन—प्राणवायु कोपे त्यारे हेडकी श्वास खांसी स्वरभेद सळखम वगेरे दरद थाय छे. उदान वायु कोपे त्यारे नेत्र मुख नाक कान अने माथानां दरद थाय छे. समान वायु कोपे त्यारे गुल्म मंदाग्नि झाडा संग्रहणी वगेरे दरदो थाय छे. व्यान वायु कोपे त्यारे ताव मरडो पडतुं लोही दाह वगेरे दरद थाय छे. अपान वायु कोपे त्यारे पथरी प्रमेह भगंदर हरस वगेरे दरदो थाय छे।

बधां वानां दरदनुं कारण—शरदी लागवाथी ठंडे पाणीये न्हावानी टेवथी बहु मिष्टान्न खावाथी हमेशां अजीर्ण बादी रह्या करवाथी लोहीना बगाडथी पाचन क्रिया बगडवाथी आंतरडां नबळां पडवाथी घी दुध विनानो लुखो के सुको खोराक लेवाथी टाढुं वासी अन्नपान खावाथी अतिविषयथी उजागरा करवाथी लांबो पंथ करवाथी बहु महेनत के अति कसरत करवाथी पछडाटोथी बहु चिंता अने शोकथी मळमूत्रना वेगने रोकवाथी शरीर पर कोइ पदार्थोनो आघात-पछडाट थवाथी हाथी घोडा उंट पर वधु मुसाफरी करवाथी बहु उपवास करवाथी जुलाब अने उलटीनी दवा हरवखत लेवाथी सामो ठंडो वायु सेववाथी अकस्मात शोकना के हरखना समाचार सांभळवाथी वगेरे कारणे शरीरमांनो कोपेलो वायु विविध प्रकारनां वानां दरद करे छे।

बधां वानां दरदनां सामान्य चिन्ह—शरीर झकडाइ जाय छे प्रथम एकाद दिवस ताव आवी जाय छे पछी ते ताव वधी परसेवो वळे छे नाडी उतावळी चाले छे जीभ पर सफेद छारी वळे छे माथुं दुःखे छे तरस लागे छे झाडो कबज रहे छे पेशाब रातो तथा थोडो थोडो आवे छे शरीरनुं लोही खाटुं थइ जाय छे पछी कोणी गोठण कांडु खभो घांहो कडव्य वगेरे ठेकाणे दुखावो थइ के भाग रही जाय छे सखत पिडा थाय छे उंघ आवती नथी हरी फरी शकातुं नथी खाटो परसेवो वळ्या करे छे पिडाने लीधे तावनी गरमी १०१ थी १०५ सुधी वधे छे एक सांधामां पिडा ओछी थाय के बीजो सांधो पकडाय छे संधिवाने अंगे बीजां पण दरदो थइ आवे छे. बीजां वानां दरदमां नाम प्रमाणे चिन्हो होय छे।

बधां वानां दरदमां पथ्यापथ्य—बधां वानां दरदोमां घणे भागे सरखा उपचार अने सरखां पथ्यापथ्य छे. पाणी विशेषे करीने कुवानुं पीवुं. ज्यां कुवानुं साधन न होय अने नदीनुं पाणी स्वच्छ नथी एम लागे के चोमासानी ऋतु होय तो नदी के नळनां पाणीने उकाळी ठारीने वापरवुं. दुध विशेष लेवुं खोराक हळवो पातळो खीचडी बाजरो जव चोखा दाळ राब वगेरे खोराक लेवो. गरम के झाडां कपडां पहेरवां. गोळ आदु तीखां लसण सुंठ पिपर लविंग तज कोथमीर एवा मसालावाळो खोराक लेवो. आंबलो कोकम छास दहीं लींबु भारे खोराक बजारनी मिठाइ मिष्टान्न पदार्थ लोटनी चीकणो चीजुं साकरनो चीजुं तळीयां तरबुच चीभडां तथा बनतां सुधी बधुं लीलुं शाक फळ (लीलो मेवो) वगेरे खावुं नहीं पेटमां बादी थवा देवी नहीं झाडो पेशाब खुलासेथी उतरे तेम करवुं. भुख न लागे तेवो वधु पडतो खोराक लेवो नहीं शरबतो मुरब्बा वगेरे खावां नहीं. सुकी हवामां रहेवुं मकाननी आसपास गंदकी थवा देवी नहीं. बे मोंयवाळुं मकान

होय तो उपली मोंये रहेवुं. पवन शरीरे लागवा देवो नहीं. शियाळो के चोमासु होय तो रात दिवस सगडी राखवी. सारो लागे तेम शेक हमेशां करवो. महानारायण तेल वगेरेथी मर्दन कराववुं. दुखावाने ठेकाणे धीमे धीमे चोळवुं ।

संधिवा—संधिवाना दरदीने उपरमांना नियमो साथे जुलाब आपवो अथवा हमेशां २-३ तोला देशी परडियुं आपवुं. ताव ओछो करवाना उपाय तावना उपचार प्रमाणे करवा दोषनुं प्राधान्य तपासीने ताव उतारवानी योजना करवी. लोहीमां खटास ओछी थाय तेम करवुं. परसेवो घणो वळे तेम करवुं अने कपडां बदलतां जवुं दारु बंध करवो. खटाइ जे चीजमां होय, शीतवीर्य होय अने ठंडो होय ते आपवी नहीं. तेल हळदर मेळवी मर्दन करवुं ।

बधां वानां दरदना सामान्य उपचार

महायोगराज गुगळ—परडीनां मींज चित्रो पिपरीमूळ अजमा शेकेली हिंग कलोंजी वावडींग अजमोद जीरुं देवदार वज पलचि सिंधालुण कुष्ठ रास्ना गोखरु धाणा हरडे कांकचिया आमळां मोथ सुंठ पिपर मरी वंशलोचन उभी भोरींगणीनां डोडवां लविंग साजीखार कचुरो गळो भिलामां अथवा तेनां मींज आसोंध शतावरी साटोडा प्रत्येक तोला ४ चार. लोहभस्म ताम्रभस्म अभ्रकभस्म दरेक सो पुटी, वंगभस्म रौप्यभस्म नागभस्म पारदभस्म रक्त शुद्ध पारद शुद्ध गंधक मंडुरभस्म प्रत्येक तोला ८ आठ शुद्ध गुगळ तोला १०० शिलाजीत अग्निपक्व तो. १६, गायनुं घी तो. ३० बधां साथे मेळवी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-६ गोळी सुधी टंकें घीमां चटाडवी. उपर महारास्नादि क्वाथ पावो. उरुस्तंभ संधिवा लकवा-पक्षाघात वगेरे ८४ जातना वाना रोग मटे छे तथा क्षय संग्रहणी भगंदर प्रमेह कुष्ठ उदावर्त गुल्म अपस्मार हृदयरोग मंदाग्नि श्वास खांसी वीर्यदोष स्त्रीना ऋतुदोष वगेरेमां पण अपाय छे सारो फायदो करे छे. रोगपरत्वे अनुपान बदलवुं. स्पेश्यल महायोगराजमां लोह ताम्र अभ्रक दरेक सहस्त्र पुटी पारदभस्मने बदले पूर्णचंद्रोदय अने शिलाजीत सूर्यतापी पडे छे ।

लघुयोगराज गुगळ—उपर प्रमाणे महायोगराजमां कहेल भसो शिवायनां ओसडियां सरखे भागे लेवां अने बधांनी बराबर गुगळ तथा २० तोला गायनुं घी मेळवी बोर जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ४-८ गोळी घीमां चटाडी उपर महारास्नादि क्वाथ पावो ।

वातराक्षस रस—पारद गंधक रससिंदुर अभ्रकभस्म ताम्रभस्म लोहभस्म नागभस्म प्रत्येक तोला १० दश, शुद्ध रसकपूर तो. २॥, सुंठ पिपर मरी लविंग सुखड हरडे चणोठीमूळ लींबडानो गुंद शेपगुंदर प्रत्येक तोला ५ पांच, शिलाजीत तो. १०, चित्रो आदु परडानां मूळ उंबरानी छाल प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ चणोटी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुकी राखवी. मात्रा २-६ रति घीमां चटाडी उपर महारास्नादि क्वाथ पावो ।

चिंतामणी चतुर्मुख रस—शुद्ध पारद तोला १० मां सोनानो वरख तो. २॥ मेळवी तेमां शुद्ध गंधक तो. २० लोहभस्म अभ्रकभस्म नागभस्म प्रत्येक

तो. १० दश मेळवी गायनुं घी तो. १० नो करमो दइ नगोडना रसनी १ अने महारास्नादि क्वाथनी २ भावना दइ गोळो करी परडानां गानमां वींटी दाणाना ढगलामां ३ दिवस राखी घुंटी भुकी राखवी मात्रा २-३ रति घीमां चटाडी उपर महारास्नादि क्वाथ पावो. ८४ प्रकारना वानां रोग वाइ-अपस्मार उन्माद गांड-पण वगेरे दरदो मटे छे ।

समीरपन्नग रस—पारद गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म प्रत्येक तो. १० दश, टंकण तो. ५, वछनाग सुंठ पिपर मरी लविंग तज पलचि मोथ रास्ना वज चोपचिनी पिपरीमूळ प्रत्येक तो. २॥ अढी लइ भांगरानां रसनी ७ भावना दइ सोगठा करवी अथवा भुका राखवी. मात्रा २-४ रतिभारनो घसारो पावो अथवा भुकी घीमां चटाडा उपर महारास्नादि क्वाथ पावो ।

महारास्नादि क्वाथ—रास्ना तो. १०, धमासो बळदाणा परडानां मूळ देवदार कचुरो वज अरडुसी सुठ हरडे चवक मोथ साटोडो गळो वरधारो सवा गोखरु आसोंध अतिविष गरमाळो शतावरी लींडोपिपर अशेळियो धाणा बेठो ऊभो मोरींगणी प्रत्येक तो. ५ पांच लइ साथे खांडवां. मात्रा १ थी १॥ तोला भुकामां ४० तोला पाणी मुकी उकाळवुं. १० तोला पाणी रहे पटले गाळी दिवसमां २ वखत कोइपण औषध साथे पावुं ।

महानारायण तेल—(निरामिष) गोखरु अरणि अतिबळा लींबडो अरडुसी साटोडी प्रसारणी प्रत्येक तो. ४०, शतावरी रस तो. २५६, कुष्ठ पलचि चंदन मोरवेल वज जटामांसी सिंधालुण बळदाणा आसोंध रास्ना सुवादाणा देवदार उभोसमेरवो बेठोसमेरवो मगवेल अडदवेल तगर प्रत्येक तोला ८ आठ पाणी जोइप तेटलुं तलनुं तेल बधां ओसडियाथी ४ गणुं विधि प्रमाणे उकाळो करी पकाववुं. आ तेलथी ८४ जातना वानां रोग मटे छे. चोळवुं तथा पावुं ।

सर्ववात व्याधिहर मलम—रास्ना अरणिनां फुल अजमोद अजमा काळीजीरी जीरुं पलचि तज लविंग टंकण गुगळ धाणा सुंठ पिपर मरी नागर-वेलनां पान आदु प्रत्येक तोला १० दश लइ पाणीमां वाटी तेमां भेंसनुं घी रतल १० तथा बकरीनुं दुध रतल १० नाखी पकाववुं पाणीनो भाग बळी जाय पटले घी गाळी लेवुं. ते घीमां अजमानां फुल तोला २॥ तथा कपूर तो. २० मेळववां. आ मलम वानां बधां दरदमां तथा हरकोइ दरदना दुखावामां वापरवो ।

सर्ववातहर प्रयोग—मोटुं मीठुं दाडम लइ तेना ५०० दाणा गणीने लेवा तेमां तुरुसीनां फुल ५०० गणीने नाखी वाटी ३ चणोठी भारनी गोळी वाळवी हमेशां सवारमां ४ गोळी खवराववी. खोराकमां घउंनी थुली तथा दुध ७ दिवस खवरा-ववुं. बधी जातना वानां रोग मटे ।

सर्ववातहर लेप—रलियो शिकोतरो सुंठ आंबाहळदर साबरसींग घसेलुं अफीण सरगवानी छाल धतुरानां पान रतांजळी बधां बराबर वजने लइ बळधनां मूत्रमां खरल करी पछी बराडी दारुमां गरम करी लेप करवो. गमे तेवो वा मटे छे. ३ लेप करवा ।

चुवो—गुगळ तोलो ०। रुमिमस्तको तो. २॥ हिराबोळ तो. ५ साथे खांडी तेनो पाताळजंत्रथी चुवो काढी नागरवेलनां पान साथे लगाडो खवरामपाथी बधी जातना वा जाय ।

१ अडदियो वा

कारण—टाढ शरदी लागवी ठंडो पवन लागवो काननुं नाकनुं दरद कानमी गांठ वायु प्रकृति वगेरे कारणे आ दरद थइ आवे छे ।

चिन्ह—एक बाजुनो चेरो रही जइ फरी जाय छे मोंना डाग्नो एक तरफनो खुणो नीचो देखाय छे एक बाजुनो गाल ढीलो थाय छे होठमांथी थुंक इच्छा नहीं छतां पडया करे छे फुंक सीधी मराती नथी. आ दरद भयरुप नथी ।

पथ्यापथ्य तथा उपचार—वानां दरद पाने १२४-१२५ मां कह्या प्रमाणे करवा ।

अर्दितांकुश रस—पारद गंधक ताम्रभस्म १०० पुटी, रससिंदूर प्रत्येक तोला १० दश, घोडाआसोंध चोपचिनी शतावरि भोंरींगणीनां डोडवां इंद्रामणानां डोडवां सुंठ पिपर मरी कचुरो हळदर साटोडी प्रत्येक तोला ५ पांच साथे मेळवी अडदना उकाळानी नगोडना रसनी अने बळदाणाना पंचांगना उकाळानी अकेकी भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळी छाये सुकाववी. अडदियो वा मों फरी जवुं धृजवुं मों फरी जतां तोतडुं बोले पाणी के खोराक बराबर उतरी शके नहीं तेमां आपवी तथा वानां बीजां दरद मटे छे ।

२ आफरो वा

कारण—आ दरद पेटमां वायुनो प्रकोप थवाथी थाय छे ।

सिद्धयवानी चूर्ण—कमावेल अजमा शेर २ तथा काळां मरी पिपळा हरडेदळ बेडांदळ आमळां हिमजी हरडे ए दरेक तोला १० दश, लविंग पलचि वावडींग सुंठ जीरुं सफेद, शाजीरुं तज लसण चण्यानो खार ए दरेक तोला ४ चार, अकलकरो नवसारनां फुल गुलाबनां फुल साजी सफेद, ए दरेक तोला २ बे, हिंग फुलावेली, नरकचुरो लोबानना फुल ए दरेक तोलो १ एक, टंकणखार तो. ०॥ फुलावेल, केंसर तो. ०॥, वडागरुं लाहोरी निमक, संचळ खावानुं मीठुं, जवखार कुंवारनो रस डुंगळीनो रस आदुनो रस सरगवानी जडनो रस ए दरेक तोलो १ एक ए प्रमाणे बधां वसाणा लइ अजमा शिवायनां वसाणां ख्यांडी कपडछान करी जे जे चीजनो रस छे ते पाछळथी मेळवी तेमां लींबु ५०नो रस मेळवी अजमा आखा मेळवी छाये सुकाववुं. एम लींबुना रसना ५ पट देवा तेमांथी ०।थी ०॥ तोलो खाय तो पेटनां लिवरनां गुल्म हरस आंतरडानां दरद मटे. वघेली बरल ओछी थाये भुख लागे दस्त साफ आवे पेटनो वायु तुटे ।

३ उरुस्तंभ वा

कारण—खाटां रुक्ष ठंडां वासी पदार्थो खावाथी शरदी लागवाथी करोड रज्जुनो वरम थवाथी पडी जवाथी पछडाट लागवाथी बहु पंथथी आ दरद थाय छे ।

चिन्ह—कमरथी नीचेनो भाग रही जाय छे के खोटो पडे छे. कोइने १ पगे के कोइने बेइ पगे जणाय छे. पगने हेरवो फेरवी शकातो नथी. स्पर्शज्ञान धीमे धीमे साव जतुं रहे छे अथवा घणुं ओछुं थइ जाय छे. झाडा पेशाबनी हाजत थवानी खबर नहीं पडती होवानी पथारीमांज मळमूत्र करे छे. पेटे तथा कमरे खेंचीने पाटो बांध्यो होय तेवो भास दरदीने थाय छे।

पथ्यापथ्य—पडवाथी पछडाटथी के मार लागवाथी थयुं होय तो रुखडी के जळो मुकावी मरेल लोही कढावी नाखवुं. आराम आपवो हरवा फरवानुं बंध करवुं. महानारायण तेल चोळाववुं. दबाववुं (चंपी करवी) शेक करवो. खटाइ मरचां अथाणां भारे खोराक बंध करवो. सादो हळवो स्निग्ध दुध घी वगेरे खोराक भुख प्रमाणे आपवो. दस्त पेशाबनो खुलासो रखाववो. खीचडी दुध मेळवीने खोराकमां देवुं अडदनो खोराक वधु आपवो।

उरुस्तंभारि रस—रससिंदुर गंधक पारद अभ्रकभस्म बंगभस्म शंखभस्म प्रत्येक तोला ८ आठ. मरी पिपरीमूळ देवदार रास्ना आसोंध खरखोडीनां कुणां डोडवां बळदाणा लींमडानो गुंद बोडी अजमोद सिंधालुण हरडे प्रत्येक तो. ४ चार साथे मेळवी कुंवारनो रस नगोडनो रस खपाटनां पंचांगनो रस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ गोळो वाळी तेनापर एरंडानां पान वींटी दोरो बांधी मेथीदाणाना ढगलामां के कोठीमां ३ दिवस राखी घुंटी राखवुं. मात्रा २-४ रति मधमां चटाडी उपर महारास्नादि क्वाथ पावो उरुस्तंभ तथा कमर निचेनो हरकोइ वानो व्याधि मटे छे।

उरुस्तंभारि लेप—सर्पना राफडानी माटीमां मध मेळवी जाडो लेप करवो पाटो बांधी राखवो. एम त्रण लेप करवाथी उरुस्तंभ मटे छे।

४ कंपवा

कम्पवातारि रस—पारद तोला १० गंधक तो. १५, ताम्रभस्म रास्ना धमासो कपूरकाचली अडदवेल समेरवो बिलीमूळ देवदार एरंडानुं मूळ वाराही कंद कुष्ठ एलचि जेठिमधनुं मूळ प्रत्येक तोला २ बे लइ भुको करी धमासो आसोंध शतावरि अने काळीपाठ चारेयनो साथे उकाळो करी तेनी ४ भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी मात्रा ३-६ गोळी बकरीना दुध साथे अथवा हरकोइ उकाळा साथे आपवी. कंपवा तथा बीजां वानां दरद पण मटे छे।

अमरसुंदरी गोळी—पारद गंधक सावरसींग भस्म पळियो अरणिमूळ समेरवानां मूळ गधीसमेरवानां मूळ एरंडानां मूळ सुंठ पिपरीमूळ पिपर चवक चित्रो शेकेलोहिंग वावडींग गजपिपर कडु अतिविष अजमोद अरडुसामूळ सरसव जीरुं शाजीरुं नगोडनां बी इन्द्रजव काळीपाठ गोखरुमूळ भारंगी वज मोरवेल तमालपत्र देवदार पिपर कुष्ठ रास्ना मोथ सिंधालुण एलचि बळदाणामूळ हरडे गोखरु धाणा बेडां आमळां तज वाळो जवखार खपाटनां मूळ गणगेटीनां मूळ शिवणनी छाल बधां सरखे भागे अने बधांनी बराबर शुद्ध गुगळ अने गुगळथी चोथा भागनुं गायनुं घी लइ खांडी एक जीव करवुं. वाल वालनी गोळीयो करी दिवसमां ८-१२ गोळी सुधी खवराववाथी कंपवा तथा बधी जातना वाना रोग मटे।

५ गांठीयो वा

कारण—लोही बगाडथी आ दरद थाय छे स्त्री करतां पुरुषने वधारे थाय छे पशआरामथी कसरत नहीं करवाथी शारीरिक मानसिक कामकाज नहीं करवाथी खाइने दिवसे हमेशां सुवानी टेव राखवाथो विविध दारुना पानथी चिकणां स्वादिष्ट मिष्टान्न बजारनी मिठाइ साकरनी चिजु वगेरे खावाथी पेटमां हमेशां अजीर्ण रहेवाथी चांदी गरमीना दरदथी आ दरद थइ आवे छे।

चिन्ह—आ दरद पण एक जातनो वा छे हाथपगनां आंगळामां गांठो रुपे भराय छे. बहु दारु पिनारा अने मांसभक्षी लोकोने आ दरद थाय छे. पारसी इंग्रेजो अने मुसलमानमां आ वधु होय छे. ताजा गांठीया वामां प्रथम अजीर्ण थाय छे पगना अंगुठा पगनी पाटली हाथनां आंगळां तथा हथेळी रातां थइ सोजी आवे छे तेथो ताव चडे छे झाडो कबज थाय छे खाटा घचरका आवे छे छातीमां अगन बळे छे पाछली राते वधु पिडा थाय छे सवारे दरद कांइ नरम पडे छे जीभपर सफेद छारी वळी जाय छे. जुना गांठीया वामां ताव के सोजा होता नथी पण हाथ पग अने तेनां आंगळां पर टोंबरु के सोपारी जेवडी गांठयो देखाय छे सांधा सज्जड रही जाय छे कोइ वखत गांठो पाकी आवी परु निकळे छे अने घारां-चांदां पडे छे ते लांबे वखते रुझाय छे।

पथ्यापथ्य—सादो हळवो सरल खोराक लेवो स्त्रीसंग ओछो करवो दारु बंध करवो मांस खावुं नहीं उकाळी ठारेलुं अथवा स्वच्छ कुवानुं पाणी पीवुं खावा पीवामां वानां दरदमां कह्या प्रमाणे वर्तवुं झाडो साफ आवे तेम करवुं गरम कपडां के जाडां पहेरवां मिष्टान्न मिठायुं साकरवाळी चिजुं बंध करवी दुध पचे तेटलुं पीवुं अने हमेशां वधारवुं. गांठो उपर गरम पाणीनो के कपडानां गोटानो शेक करवो ठंडा पाणीने अडवुं पण नहीं।

ग्रन्थिवातांतक रस—पारद गंधक ताम्रभस्म लोहभस्म प्रत्येक तो. १० रसकपूर तो २॥ शिलाजीत तो. ८ शिलारस तो ४ शेपगुंदर गुगळ दरेक तो. ६ समुद्रफळ हरडे मरी पिपरीमूळ लविंग अजमा जीरुं साकर आसोंध सिंघालुण देवदार अतिविष शतावरि प्रत्येक तोला ४ चार कडु तो. ८ लींमडाना पाननां रसनी २ भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुकी राखवी. मात्रा ३-६ रति घीमां चटाडी उपर दुध पावुं. गांठीयो वा संधिवा सांधा जलाइ जवा पेटनां दरद उदावर्त वायु तथा वानां ८४ जातनां दरद मटे छे।

६ जानवो वा

कारण—वायु अने लोहीना बगाडथी गोठणमां पिडाकारी शियाळनां माथा जेवो सोजो थाय छे ते जानवो वा कहेवाय छे।

त्रयोदशांग गुगळ—बावळनी छाल आसोंध पळांसवी गळो गोखरु रास्ना उपलसरी कचुरो अजमा सुंठ हरडे बधां अकेक भाग अने सतावरी २ भाग अने बधांनी बरोबर शुद्ध गुगळ मेळवी तेमां बधाथी चोथा भागनुं घी नाखी खुब कचरी एक जीव करी पाणीमां वाल वालनी गोळी वाळवी. मात्रा सवार सांज ४ चार गोळी

गरम पाणी साथे अथवा दुध साथे आपवाथी जानवो वा मटे. हाथ तथा पगमां वा मज्जा स्नायु अस्थिमां पेठेलो वा ग्रवसीया तथा अनेक प्रकारना वा मटे छे. महामाषादि तेल मालीस करवुं ।

७ जीभ अटकायी तोतडावी-जिव्हास्तंभः

कारण—वाणीने वहन करनारी शिरामां रहेलो वायु कोपवाथी जीभने अटकावी दइ माणसने बोलतां अटकावे छे कांइ पण बोली शक्तो नथी आनाथी केटलीक वार वाणीनी अटकायत साथे खावा पिवानुं अटकी जाय छे बधुं सांभळी शके छे पण बोली शक्तो नथी ।

जिव्हा स्तंभ हर अर्क पुष्पयोग—आकडानां रवाइडां रविवारे १ खावुं बीजे दि २ एम ३० मे दिवसे ३० सुधी चडवुं अने ३१ मे दिवसे २९ ए प्रमाणे ३० दिवस सुधी हमेशां एकेक उतरवुं छेल्ले दिवसे १ खाइ बंध करवुं २ महिनाना प्रयोगथी जीभ वळगती टळे. खारुं खाटुं न खावुं ।

हमेशां महानारायण तेलना के महामष तेलना कोगळा कराववा. त्रयोदशांग गुगळ साथे हिंगुल भस्म खवरावववी ।

मिश्रण रसायन—पूर्णचंद्रोदय तो ०।, मुक्ताभस्म तो. ०।, सुवर्णवसंत मालती तो. ०॥, अभ्रक १००० पुटी तो. ०।, अमृतासत्व तो २ साथे वाटी ६४ पडीकां करी मध घी मां २ वार रोज चटाडवुं. २ महिनामां जीभ तोतडानी मटे।

८ टचकीयुं-कमर रही जवी

कारण—भार उपाडवाथी हालतां चालतां पग उंचो नीचो खाडामां पडी जवाथी गजां उपरांतनुं काम करवाथी कमर रही जाय छे ।

महानारायण तेल चोळी शेक करवो. त्रयोदशांग गुगळ खवरावो. प्रसारणी तेल चोळवुं पावुं नस्य आपवुं ।

(१) बळदाणा शेर ३ बाबची नानी शेर १ गोळ शेर २ घी शेर २ नी कुलर करवी हमेशां शेर ०। खावी मास १ खावाथी कडय दुखती रहे ।

(२) सुरवाली सुंठ शेर ०॥ परडीनां जींज तो. १ दुधमां खीर रांधी २१ दिवस खावी कडय दुखती रहे ।

(३) काळा तल इसपघ्न अजमो खरसाणी बळदाणा समभागे खांडी रोज तो. ४ खवरावबुं. कडय-कमर दुखती मटे ।

(४) खजुर तो. २॥ सुंठ तो. २॥ ए बेइ वाटी गोळी तो अढीनी खवरावववी. कडय दुखतो रहे ।

(५) खजुर तो. १॥ घी तो. १॥ ३ दिवस खवरावबुं. कडय दुखती रहे ।

९. डोक रही जवी झकडावी-मन्यास्तंभः

कारण—दिवसे उंघवाथी उंचे जोवानी बहु टेवथी वांकी आडी डोक राखवाथी अथवा तेवां बीजां कारणोथी कोपेलो वायु कफ संयुक्त थइ डोकनी पाछळनी १४ शिराओने झकडावी नाखे छे ।

(१) दशमूळनो क्वाथ पावो महानारायण तेल चोळावी उपर आकडाना के एरडानां गरम करेलां पान बांधी शेक करवो. कुकडानां इंडाना रसमां गायनुं घी अने सिंधालुण मेळवी चोळावबुं ।

(२) महायोगराज गुगळ तो. ०। लघुयोगराज गुगळ तो. २ वातराक्षस तो. ०॥ सर्वेश्वरपर्पटी तो. ०॥ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ६४ पडीकां करी गायनां घीमां बे वखत चटाडवां. खटाइ बंध करवी ।

१० डाढी खडी जवी-झकडाइ जावी

कारण—जीभे ओल उतरतां सुकां पदार्थो खातां कोइ चीज वागतां डाढीनां मूळमां रहेलो वायु बगडी डाढीने हेठी उतारी मुके छे त्यारे कांतो मोढुं उघाडुं रही जाय छे अथवा ते बंध रही जाय छे ते हनूग्रह ।

जो डाढी उघाडी थइ गइ होय तो प्रथम घी तेल चोपडी बाफ आपी नमावी सरखी करवी अने उघाडी थइ गइ होय तो उंची करी सरखी चडावी देवी. पिपर अने आदु चवरावो गरम पाणीना कोगळा करावबा. लसणने तेलमां ककडावी खवरावबुं. अडदनी छडी दाळने पलाळी वाटी तेमां लसण हिंग मीठुं आदु नाखी वडियो करी तेलमां तळी खवरावबी. अथवा अडदनी पातळी हळदर मीठुं हिंग नाखेली दाळ खवरावबी. शिरोबस्ति आपवी. महानारायण तेल चोळावबुं।

११ पक्षाघात

कारण—मगजमां लोही चडवाथी मगजनां ज्ञानतंतुओ निर्बळ थवाथी वाइ हिस्टिरिया आंचकी मूत्रपिंडनां दरद वगेरेथी वृद्धावस्थाथी अकस्मात भ्रम हरख के शोकथी अति विषयथी पचा अनेक प्रकारे आ दरद थाय छे ।

चिन्ह—डाबो अथवा जमणी बाजुनुं अरधुं शरीर खोटुं पडी जाय छे एक हाथ अने ते तरफनो एक पग रही जाय छे तेनुं कांइपण हलन चलन माणस इच्छा प्रमाणे करी शकतो नथी ते साथे स्पर्शज्ञान पण धीमे धीमे ओछुं थतां छेक जतुं रहे छे तेमां उष्णता पण ओछी होय छे ते तरफनो गाल ढळो लोला जेवो थइ जाय छे. आंख पण त्रांसी थइ जाय छे मोढानो खुणो नीचो जणाय छे ते तरफथी थुंकनी लाळ पडया करे छे कारण ते तरफनो अरधो होठ बिडातो नथी जीभ बहार काढे तो त्रांसी देखाय छे आंखनी उपली पांपण बराबर बींचाती नथी पांपण उघाडी रहे तो दरद वधी गयेलुं समजवुं. बोलवामां हुशियारीमां तथा स्मृतिमां फेर पडी जाय छे मगजने बहु असर थइ होय तो बोली शकातुं नथी बोबडु बोलाय छे के बिलकुल बोलो शकातुं नथी. स्वभाव चिडीयो थइ जाय छे एम आखुंय ते तरफनुं अरधुं अंग खोटुं पडे छे ।

पथ्यापथ्य—खोराक सादो आपवो दस्त साफ बे वखत आवे तेम करवुं पेशाबनो खुलासो राखवो मूळ कारण दरद थवानुं होय ते तपासी तेने अनुसरता उपचार करावबा. वायुनाशक तेल के मलम चोळवां शरदीथी बचवुं. खटाइ भारे चीज अजीर्ण करनारां झाडो कबज करनारां रुक्ष पदार्थो खावां नहीं ।

एकांगवीर रस—पारद गंधक रससिंदूर लोहभस्म ताम्रभस्म अभ्रकभस्म नागभस्म प्रत्येक तोला ८ आठ लींनडानो गुंद बावळनो गुंद आसोंध कचुरो सुंठ पिपर मरी अकलकरो गोखरु गळो शेकेली हिंग हरडे रासना देवदार कौचां अडद खिलोना मूळनी छाल अरणिनां फुल प्रत्येक तोला ४ चार, गुगळ तो. ४० शिलाजीत तो. २० साथे मेळवी सरगवानी मींगना उकाळानो कुंवारनां रसनो नगोडना पानना रसनो भांगराना रसनो चित्राना उकाळानो आदुना रसनो भांगरानी अकेक भावना दइ भुको राखवी अथवा चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-६ गोळी घी मां चटाडी उपर महारास्नादि क्वाथ पावो. अर्धु अंग खोटुं पडी गयुं होय १ आंख भोढांनो १ भाग छातीनो १ भाग खोटो पडो गयो होय स्पर्शनी खबर न पडती होय शरीरनुं कोइपण अवयव खोटुं पडो गयुं होय अर्दित वा तथा वानां बीजां दर्दोमां २ महिना सेवन करवाथी आराम थायछे।

पक्षाघातारि रस—पारद गंधक रससिंदूर शुक्तिभस्म प्रत्येक तो ८ आठ साबरसींग भस्म तो. ६, दंतिमूळ अडद कौचां सुंठ वावडींग मरी पिपरीमूळ मोथ देवदार वायवरणो रास्ना परडानां मींज त्रिफळानी छाल तज लविंग वज अतिविष सिंधालुण कुलींजन प्रत्येक तो. २ ये लइ महारास्नादि क्वाथनी ३, वायवरणाने १, भांगरानी १ भावना दइ चणोठो जेवडी गोळो वाळवी अथवा भुको राखवी. मात्रा २-४ गोळी अथवा २-४ रति घी मां चटाडो उपर वायवरणांनो उकाळो अथवा त्रिफळानो उकाळो अथवा महारास्नादि क्वाथ पावो ।

१२ बाहुशोष-अपबाहुक

कारण—खंभामां कोपेलो वायु तेना बंधनरुप स्नायुओने सुकावो नाखे छे ते बाहुशोष । बावडामां रहेली शिराओने कोपेलो वायु संकोचो नाखे छे तेथी हाथ संकोचाइ टुंको पातळो देखाय छे ते अपबाहुक ।

महामाषादि तेल—अडद सेंधालुण बळदाणामूळ रास्ना दशमूळ हिंग वज जटामांसी सुंठ अळसि जव अशेळियानां बी भोरींगणी डोडवां गोखरु अरडुसाना मूळ कौचां कपाशिया भींडोना बो कळथी पिपर मरी परडानां मूळ साटोडी गळो बधां समभागे लइ तेमां तलनुं तेल पकावो राखवुं आ तेलनां नाकमां तथा कानमां टीपां नाखवां दुखावा उपर चोळवुं. अपबाहुक बाहुशोष तथा बीजां वानां रोग मटे छे ।

१३ माथुं झकडाइ जवुं-शिरोग्रह

कारण—माथाने धारण करनारी ग्रीवागत शिराओने लोहोमां पेठेलो वायु विकृत करे छे त्यारे ते शिराओ सज्जड रुक्ष थाय छे पिडा करे छे काळा रंगनी थइ जाय छे ते शिरोग्रह ।

शिरोबस्ति आपवी महानारायण तेल के महामाषादि तेलनां टीपां नाकमां कानमां नाखवां तथा दुखावा उपर चोळवुं. महारास्नादि क्वाथ पावो. वात विध्वंश के सर्वेश्वर पर्पटो बबे रति घीमां चटाडवी ।

१४ रसाज्ञान–स्वादनुं अज्ञान

कारण—माणसने खारा खाटा मधुर वगेरे रसनो स्वाद आवे नहीं ते रसाज्ञान। मंदवाडने लीधे सुवावडमां बहु कष्टावाथी के सुवावडमां बिमारी थवाथी वृद्धावस्थानी नबळाइने लीधे एवां घणां कारणे आ दरद थाय छे।

ब्राह्म्यादि घर्षण—ब्राह्मी पलाशपापडो साजीखार काळुंजीरुं कडु करियातुं इंद्रजव पिपर पिपरीमूळ चित्रो सुंठ मरी समभागे खांडी चूर्ण करवुं हमेशां थोडुं चूर्ण पाणीमां वाटी जीभपर घसवुं अथवा पकलो आदुनो रस जीभपर घसवो महानारायण तेलना के तलना तेलना कोगळा करवा तो जीभना स्वादनुं अज्ञान मटी २१ दिवसमां स्वादनुं ज्ञान आवी जाय छे।

१५ रांजण–ग्रध्रसी वात

कारण—प्रथम कुलामां पिडा करीने पछी कमर साथळ गोठण अने पग सुधी पिडा थाय दाह थाय अकडाइ जाय फरक्या करे आ ग्रधसी बे जातनी छे एक पकला वायुना प्रकोपथी थइ होय तो पिडा दाह थाय शरीर वांकुं वळी जाय गोठण जांग अने साथळनां सांधाओ फरक्या करे अने झलाइ जाये अने बीजी वात कफना प्रकोपथी थइ होय तो शरीर वजनदार भारे लागे भुख ओछी थाय ग्लानि सुस्ती मोढामांथी लाळोनुं पडवुं अन्न उपर द्वेष वगेरे चिन्हो जणाय।

अग्निदेवता वटी—पारद गंधक लोहभस्म प्रत्येक तोला ८ परडानुं मूळ बीलीनुं मूळ थेठी मोरींगणीनां डोडवां रास्ना गुगळ शेषगुंदर राळ गरमाळो गोखरु हरडे सुंठ मरी पिपर बळदाणा गळो वरधारो समदरफळ कायफळ प्रत्येक तोला ३ त्रण साथे मेळवी १० तोला परडीयानो करमो दइ बकरीना दुधनी गोमूत्रनी अरणीना रसनी एकेक भावना दइ पिंडो वाळी दाणाना ढगलामां बे दिवस राखी परडाना मूळना उकाळामां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी मात्रा २ थी ६ गोळी बकरीना के गायना दुध साथे आपवी रांजणनुं दरद मटे छे तथा वानां बीजां दरदोमां पण बहु फायदो बतावे छे।

१६ लकवो वा

कारण—मनुष्यने स्पर्शनुं ज्ञान स्वाभाविक छे ते ज्ञान अमुक अवयवोमांथी ओछुं थाय के बीलकुल जतुं रहे तेने लकवो कहे छे अथवा ते अंग–अवयव बाधो रही गयुं होय एम कहे छे इंग्रेजीमां तेने पाल्सी कहे छे जे भागनुं स्पर्शज्ञान जतुं रहे ते भाग दरदी पोतानी इच्छाथी हलावी चलावी शकतो नथी।

आमां फस खोलावी लोही कढाववुं तेल चोळावबुं धुंवाडो आपवी आकडानां परडानां अरडुसानां के अरणीनां पान बांधी शेक करवो त्रयोदशांग गुगळ महायोगराज वातविध्वंश खवरावबो।

सुसवातारि तेल—सफेद करेणनां मूळ सफेद चणोठीनी दाळ धतुरानां पान एदरेक पैसा बबे भार वाटी टोकडी करी पछी तेल मीठुं शेर ॰। लइ तळी काढवी पछी ए तेल लगाडवाथी लकवो मटे।

लकवामां लसण प्रयोग—पक्कज बीनुं लसण (जेमां बीजी कळीओ न होय तेवी कळीओ लेवी) तोला ५ लइ वाटी मेंदा जेवुं करी पछी घी शेर ०॥। ताजुं लइ घउंना लोटने घीनुं मोण दइ लसण लोटमां मेळवी नानी नानी पुरीओ करी घीमां तळी काढवी तळतां घी वधे ते पुरीमां चोळी पक्कज वखतमां खवरावी देवुं तेना उपर कांइ बीजुं खावा देवुं नहीं पाणी उकाळी ठारेलुं पावुं बीमारने बंध कोटडीमां राखवो-सुवरावयो जरापण पवन खावा देवो नहीं तेज कोटडीमां झाडा पेशाबनी व्यवस्था राखवी. एम दीन ७ सुधी खवराववाथी लकवो मटे. गरमी वधु जणाय तो लसण आछुं करवुं घी वधु खवाय तो सारुं।

१७ लेखनाघात वा

कारण—बहु लखवानी टेववाळा छतां स्निग्ध आहार ओछो लेनाराने आ दरद थाय छे आमां कोइपण जातनुं तेल मालिस करावबुं. त्रयोदशांग गुगळ के लघुयोगराज गुगळ खवराववो।

१८ संधिवा

कारण—मंदाग्निवाळाने खा खा करवानी टेववाळाने विरुद्ध आहार विहारनुं सेवन करनाराने स्निग्ध पदार्थ खाइने कसरत करनाराने आम काचो अन्ननो रस धमनी वाटे संधि वगेरेमां पेशी संधिवानुं दरद करे छे तेथी सांधामां पिडा थाय दुखावो थाय छाती भारे रहे भुख मंद करी नाखे शरीर आखाने झकडी नाखे सज्जड बनावी दीये शरीरमां त्रोड थाय ताव आवे शरीरनुं स्पर्शज्ञान ओछुं थाय. गरमी चांदीना दरदीने पण आ दरद थाय।

पथ्यापथ्य—आमां मुख्यत्वे करी लाघण करावबी बाफ नांह आपवी तीखां कडवां पदार्थ खवराववां जुलाब देवो बस्ति आपवी. कारेलां कंटोलां कडवां शाक रींगणा जव कोदरो जुना चोखा कळथीनुं वटाणानुं के चण्यानुं ओसामण आपवुं।

अभेदा वटी—पारद तोला १० गंधक तो. २० वछनाग तो ४ टंकण तो. ६ गोळ तो ५ धोळां तीखां तो. ३ गुगळ तो. १२, काळोपाठ जवखार वरधारो सुंठ गोरखमुंडि रास्ना काळिजीरी मरवो नसोतर तुळशीनां बी सिंधालुण अशेळियानां बी वायवरणो विकळो पळियो प्रत्येक तोला ३ त्रण लइ परडिया तेलनो करमो दइ हरडेना उकाळानी अने बोडी अजमोदना उकाळानी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३-६ गोळी गायना घी साथे आपवी. संधिवा १५ दिवसमां मटे छे ते शिवाय ८४ जातना वा उदावर्त-वायु अजीर्ण मंदाग्नि गुल्म अम्लपित्त कबजीयत वगेरे दरदमां आपवाथी पण घणो फायदो थाय छे।

१९. सांधानुं अकडाइ जवुं-संधिग्रह

कारण—शरीर आखाना अथवा अमुक अमुक अवयवना सांधा झकडाइ जाय छे त्यारे माणस मुश्केलीथी हालीचाली शके छे अथवा पथारीवश थइ जाय छे अति स्त्रीसंगथी पछडाटथी खाटा पदार्थो खावाथी गरमीथी आ दरद थाय छे।

महानारायण तेल प्रसारणि तेल के महामाषादि तेल चोळाववुं. एरंडानां पान बांधी शेक करावबो. हरताळभस्म पारदभस्म के अभ्रकभस्मनुं सेवन कराववुं. कोइपण भस्म साथे त्रयोदशांग गुगळ योग्य मात्राथी आपवो ।

अश्वगंधाक्षीर—आसोंध तो. ०॥ मुसली धोळी तो. १ पिपरी मूळ तो. ०। ए सर्वे वाटी दुध शेर १॥ नाखी उकाळवुं पछी खांड तोला २॥ घी तो. १। नाखी खीर करी दिन १४ खवराववी ८४ जातना वा मटे ।

नरनारायण तेल—शतावरी रस तो. ६४ गायनुं दुध तो. ६४ सूरा देवदार मरवो कांटाअसेळीयो वज चंदन तगर उपलेट एलचि मालकांकणी दरेक तो. ०॥ तेनो क्राथ करी तेमां तलनुं तेल तो. ६४ मेली पकाववुं ए नरनारायण तेल चोळवाथी कुबडो मरडाइ गयेल झकडाइ गयेल संधीवा तथा ८४ जातना वा मटे ।

वातहरी गोळी—पारो तो. ०। काथो तो. १॥ गोळ जुनो तो. २॥ एकत्र करी लोढाना ठाममां लींमडानी छालना पाणी साथे दिवस ३ घुंटी पछी चणा जेवडी गोळो करवी. मात्रा ३-४ गोळी दुध साथे गळी जावी खोराकमां मोळा चण्या खवराववा. दिवस ७-१४ सुधी गोळी देवी. पछे मोढुं आवी गयुं होय तो लींबुना रसना कोगळा कराववा उपर दुध घउंनी थुली खवराववुं. वधा वा मटे ।

वातहर तेल—मालकांकणी शेर १ गरम पाणीमां १ पहोर भींजवी राखवी पछे वाटी लुगडामां निचोववी अथवा तडके थाळी मुकवी तरी आवे ते तेल नागरवेलना पानपर चोपडी पान खवराववां. ८४ जातना वा मटे शक्ति आवे ।

कंपवाहर तेल—मालकांकणी वछनाग उपलेट दरेक तो. १। सवा सर्वे वाटी भुको करी सरसियुं तेल शेर १ एरंडियुं शे. ०। तलनुं तेल शे. ०। ए सर्वे तेल एकठां करी ओसडियां पाणीमां वाटी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी रहे त्यारे गाळी राखवुं. पछे चोपडवाथी कंपवा तथा सर्व जातना वा मटे ।

संधिवाहर तेल—चणोठीनी दाळ शेर १ पाणीमां भींजवी वाटी वडां करी सरसिया तेलमां तळी नाखवां ए तेल उतारी तेमां वछनाग तो. ०। वज तो. ०॥ नाखी ए तेल शरीरे मर्दन करवुं. मों अने इंद्रि उपर चोपडवुं नहीं ते शिवाय चोपडवुं तो संधिवा मटे सांधा छुटा थाय ।

सर्ववातहर तेल-घृत—हाडसांकळी अरडुसी रस सतावरि रस धतुरानो रस कुकडवेलानो रस दरेक शेर २ बे, रास्ना तो. १। सुवा तो. १। लसण तो. १०, कांटासेलियो देवदार बळदाणा घोडावज मालकांकणी दरेक तो. १। सवा तेल पकावी चोळवुं तथा एज ओसडियामां घी पकावी खवराववुं. बधी जातना वानां दरद मटे ।

सर्ववायुहर तेल—अळसिनुं तेल तलनुं तेल एरंडियुं तेल गायनुं घी आसोंध भारंगी सरघवानो रस नगोडनो रस दरेक शेर १ एक, वज उपलेट वावडींग सुंठ पिपर मरी वछनाग दरेक तो. २॥ अढी. प्रथम रस अने तेल एकठां करी तेमां बीजां वसाणानी लुबदी करी बधुं पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय पटले ते गाळवुं. चोळवुं तथा पावुं वधां वानां दरद मटे ।

वातेश्वरी गुटी—शंखियो सोमल तो १, वछनाग दुधीयो तो. ०॥, हिंगळो तो. ०॥, आंबलीनो गुंद तो. २, साकर तो २ तांदलयाना रसमां मरदी गोळी चरसव जेवडी वाळवी. मात्रा १-२ गोळी घी साथे देवी. ८४ जातना वा विस्फो- टक फोडाना ३५ जातना रोग, ६४ जातना कोढ मटे. उपर दुध चोखा जमाडवां हिंगनी परेजी राखवी हिंग दवा चाले त्यासुधी खावी नहीं ।

पक्षघातारि मिणतेल—मिण शेर १ मीठुं (लवण) शे. ३ ए बेइने गरम करी मेळवी एक जीव थया पछी दिवस ३ रहेवा देवुं पछे पाताळ जंत्रे करी तेल काढवुं. उपले ठामे पाणी भरवुं ते अति गरम थये बीजुं पाणी बदलवुं. ए तेल वायु रोगीने शरीरे चोळवुं. सवे जातना वा मटे पक्षाघातमां पण गुण करे छे ।

शतावर्यादि तेल—सतावरिनो रस दुध सरसियुं तेल दरेक शेर २ बे लइ अग्नेने पकावयां पछे नीचेना ओसडियानी लुबदी करी नाखवी. देवदार वाळो कांटाळो असेळियो तगर कुष्ट बावची बळदाणा सुखड दरेक ०।= छ आनी भार लइ पाणीमां वाटी तेमां नाखी पकाववुं पाणीनो भाग बळी जाय अने वाकीनुं तेल रहे त्यारे उतारवुं पछे तेल चोपडवुं. बधा वाना दरद मटे ।

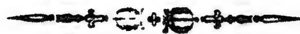
वातारानि रस—हिंगळो लविंग जायफळ अकलकरो फुलावेल टंकण मरी पिपर सुंठ समभागे लइ नागरवेलना पानना रसमां चण्या जेवडी गोळी करवी. पान साथे आपवी ८४ जातना वाना रोग मटे ।

भमरियो वा हाथपगनी आंगळीयुं दुखे तेनो उपाय—आकडाना थडनी छालनो भुको करी गायना दुध साथे वाटी हाथेपगे बांधवुं. आराम थाय।

प्रयोग १—गायनुं धोळवुं शेर ०॥ मां कनकपत्र रस टीपां ३ थी ४ पावुं संधीवा मटे सांधा मोकळा थाय दिन ७ पावुं ।

प्रयोग २—मालकांकणी शेर १ खांडणीयामां खंडावी कांबलि धाबळाथी बे वखत नीचोववी तो तेल चोखुं नीकळे ए तेल नागरवेलना पान २ चोपडी खावां दिन १४ सुधी तो सुनकार कफ वायु अंग रही गयुं होय संधीवा वगेरे ८४ जातना वाना रोग जाय एज तेल चोळवुं-चोपडवुं ।

प्रयोग ३—कांकजंघा रस तो २॥ गोळ साथे पावो. दिवस ७ पावाथी संधिवा मटे ।



धनुरवा

कारण चिन्ह—आ दरदमां आखुं शरीर धनुष्यनी पेठे अथवा कमाननी पेठे वांकु वळी जाय छे ठंडो भेजवाळी जमीनपर सुवाथी हाथपग कापवाथी के ते पर घा वागवाथी के शरीरे आघात थवाथी हथेळी के पगनी पडीमां तिक्ष्ण हथियार पेसी जवाथी सखत खटाइ पीवा खावाथी खेंचताण थाय छे. ताव सखत आववाथी तथा तावमांथी सन्निपात थइ जवाथी धनुरवा उपडे छे. केटलीक वार आगळ अने पाछळथी पकडे छे अने केटलीक वार आडत्रांस कामठुं वळे छे ते

वखते तेने उंघनी दवा आपवी दरदीने घेनमां नाखी स्नायु शिथिल करवानी जरुर छे नहितर दरदी मरण पामे छे आ दरद बधी उमरना माणसने थाय छे आंचकीमां स्नायु वारंवार खेंचाय छे अने ढीलां पडे छे पण धनुरवामां ते घणे भागे खेंचायेलां रहे छे पुरेपुरां ढीलां पडतां नथी अने दरदी धनुष-कामठानी पेठे बहारना भागमां तणाइने वळी जाय छे. ज्यारे आंचकीमां ते सिधेसीधो खेंचाय छे प्रथम जडबाना स्नायु खेंचाइने आरंभ थाय छे ते साथे गरदनना स्नायु पण खेंचाय छे आखे शरीरे परसेवो वळे छे बोली शकातुं नथी गळा नीचे पाणी पण उतरवुं मुश्केल थाय छे छाती भींसाय छे पेटना स्नायु लाकडा जेवा थइ जाय छे तरस बहु लागे छे झाडो बंध थाय छे छेवटे श्वास रोकाइ जइ दरदी मरण पामे छे ।

सामान्य सारवार अने पथ्यापथ्य—दरदीने स्वच्छ हवावाळी जग्यामां राखवो प्रकाश ओछो होय तेम सारु घोंघाट थवा देवो नहीं. इच्छाभेदी के महानाराचनो जुलाब आपवो. धनुरवा साथे ताव होय तो ज्वरांतक विरेचननी २-३ गोळी आपवी. ताव न होय तो दुध के घउंना लोटनी राब आपवी ताव होय अने खोराकनी जरुर जणाय तो मगनुं ओसामण के अडदने उकाळी तेना पाणीने वघार आपी पावुं. तीव्र मद्य आसव मृतसंजीवनी सुरा चंद्रहास सुरा मृगमदासव वगेरे पावो. मोढेथी दवा न उतरे तो पुंठेथी पिचकारी वती दवा अने दुध वगेरे नाखवुं. उंघ आवे तेम करवुं त्वचामां मृतसंजीवनी सुरानी पिचकारी मारवी. हिरण्यगर्भ रोमवेध के सूचिकाभरण २-३ रति आशरे ताळवे छेको दइ घसवुं आंखे आंजवुं नाके सुंघाडवुं. आदुरस तुळशी रस साथे पावुं. मद्य साथे घसी पिगाळो त्वचामां पिचकारी देवी. महारास्नादि क्वाथ पावो. वातव्याधिना उपचार करवा महानारायण तेल वातद्विपवज्र तेल महाविष्णु तेल एमांनुं हरकोइ तेल चोळवुं पोवराववुं वातविध्वंस रस वात राक्षस चिंतामणी चतुर्मुख सर्वेश्वर पर्पटी वाततिमिरभास्वान महालक्ष्मी नारायण रस वगेरे औषधो आपवां ।

तमाक्वादि मर्दन—तमाकु जरदो सिंधालुण किडामारी आसोंध हळदर मजिठ तुळशी सरखे भागे लइ गौमूत्रमां वाटी आखे शरीरे खरड करवो चोळवुं ।

कृष्ण गुटी—शुद्ध गंधक अने शुद्ध पारो तो. ३ त्रण लइ कज्जळी करी तेमां संचळ तो. ३ नाखी घुंटवुं मिश्र थइ गया पछी तेमां फुलावेलो टंकण तो. ३, मेळववो पछी लविंग तो. ४, जायफळ तो. ५ अकलकरो शुद्ध वछनाग अने कनकबीज दरेक तो. ९ नव, मरी तो ५, पिपर तो. १० बधां साथे मेळवी केरडाना रसनी ३ भावना आदुरसनी ७ भावना अने लींबुरसनी ७ भावना दइ चण्या जेवडी गोळी वाळवी. दरदीनी स्थिति जोइ २-२५ गोळी सुधी आखा दिवसमां अपाय छे धनुरवा आंचकी दांत होढे चडी जावा जडबुं खसी जवुं वगेरे दरदोमां अपाय छे ।

शिग्रुबीजादि नस्य—सरगवानां बी वावडींग मरी मरवो समभागे मेळवी नस्य आपवुं ।

मालाधरी वटी—पारद गंधक साबरसींगभस्म शंखभस्म प्रत्येक तो ८ आठ, पिपरीमूळ सुंठ पिपर मरी चित्रो हिंग अजमोद कडु अतिविष भिलामा टंकणखार वछनाग साटोडी दंतिमूळ प्रत्येक तो. ३ त्रण, गुगळ तो. १० साथे मेळवी पछी दियुं तेल तो. २० नो क्रमो दइ आसोंधना उकाळानी २ अने भांगराना रसनी २ भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २-६ गोळी महारास्नादि क्वाथ साथे आपवी।



आंचकी—आक्षेप—ताण खेंच

कारण-चिन्ह—वाइ हिस्टिरिया धनुरवाथी हडकवाथी सुवारोगमां प्रसव पछी जखम थवाथी घणुं लोही पडवाथी खोपरी फुटवाथी मगजमां रक्तस्राव थवाथी झेर खाधाथी आंतरडामां कृमिनो विकार थवाथी झाडानी कबजीयत थवाथी खटाइ चडी जवाथी सखत तावथी एवां बीजां कारणोथी आंचकीनुं दरद थाय छे त्यारे आखुं शरीर के हाथ पग खेंचाय छे मों अने चेरो लालचोळ थइ जाय छे दांत झकडाइ जाय छे जीभ बहार निकळे छे श्वास घुंटाय छे।

पथ्यापथ्य—दरदीने खुल्ली हवा आवे तेवे ठेकाणे सुवराववो अथवा पंखावती हवा नाखवी मोढापर ठंडु पाणी छांटवुं जुलाब आपवो अथवा गुदा वाटे पिचकारीथी जुलाब लाववो मस्तक पर ठंडा पाणीना पोतां मुकवां द्राक्षासव आपवो निद्राप्रद क्वाथ पावो. प्रवाल पिष्टी मुक्ता पिष्टी अथवा चिंतामणी चतुर्मुख रस योग्य मात्राथी मधमां के मध अने आदुरसमां आपवो. महानारायण तेल के वातद्रिवज्र तेल आखे शरीरे मालिस करवुं. महालक्ष्मी नारायण रस डुंगळीना रस साथे पावो।

वाततिमिरभास्वान रस—अभ्रकभस्म सुवर्णमाक्षिकभस्म पारद गंधक ताम्रभस्म रौप्यभस्म अफीण टंकणखार सिंघालुण पापडखार प्रत्येक तो. २ बे, आसोंध लविंग तज सुंठ मरी पिपर बळदाणा केसर प्रत्येक तो. ३ त्रण, शिलाजीत तो. ६ गुगळ तो. ८ बधां साथे मेळवी आसोंधनो उकाळो नगोडनो रस बळदाणानां लीला छोडनो रस अरणिनो रस अने कुंवारनो रस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ बबे रतिभारनी गोळी वाळवी मात्रा ३-६ गोळी आदुरस तुळशीरस अने मध साथे आंचकीवाळाने आपवी गोळीने पाणीमां वाटी आंखमां आंजवी कपाळे चोपडवी तथा गोळीनो कोरो भुको करी नाकमां सुंघाडवी. आंचकी ताण सुवावडीनी आंचकी धनुरवा पक्षाघात उरुस्तभ मूर्छा उदावर्तवायु संधिवा नजलो तथा बधी जातना वानां दरदमां तात्कालिक गुण करे छे।

वाताद्रिवज्र तेल—बळदाणानां मूळ खपाटनां मूळ अरणिनां मूळ अरडुसानी छाल सडसडानी छाल आसोंधरानी छाल संघेसडानी छाल सरगवानी छाल राळ देवदार प्रत्येक तो. २० वीश लइ आठ गणा पाणीमां उकाळो करवो. पाणी चतुर्थांश रहे पटले गाळी लइ तेमां तेल रतल १० नाखी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय पटले गाळी लेवुं पछी ते तेलमां कपूर तो. १ केसर तो. १ सुंठ तो.

५ सुखडनो भुको तो. ५ हळदर तो. २॥ नाखो बरणीनुं मों छांदो तडके राखी मुकवुं हमेशां बरणीने हलावतुं रहेवुं १५ दिवस राखी गाळी शीशामां भरी लेवुं. ८४ जातना वानां रोग तथा आंचकी ताण सुवावडोनी आंचकी बाळकोनी आंचको धनुरवा शरीर के कोइ अवयव झलाइ जवुं पक्षाघात संधिवा नजलो वगेरेमां चोळवुं तथा ०। थी ०॥ तोलो तेल दुध साथे पावुं ।



आम–वा–आमवात

कारण—खावा पीवा रहेणी करणीमां धडो न राखे बेठाडु माणसने भुख मंद थइ जाय अने चिकणां वधु पडतां घी वाळी चीजुं खा खा करे महेनतनां काम न करे त्यारे वायुथी खेंचायेलो आम कफस्थानमां जाय छे ते परिपक्व थया विनानो अन्नथी उत्पन्न थयेलो रस के जेनुं लोही थावुं जोइए ते वात पित्त कफथी विकार पामी धमनीओ द्वारा स्त्रोत-प्रवाहोने बगाडे छे रसने वहेवराव-नारी शिराने रोकी दीये छे ते विविध रंगवाळो बहु चिकणो होय छे आथी अन्नना रसनुं लोही बनतुं नथी एटले दरदाने भुख बहु ओछी लागे छे छाती पर बोजो जणाय छे अने तेमांथी अनेक दरदो पेदा थाय छे माथुं भारे थाय छे शरीरना अवयवोमा पीडा थाय छे एक साथे वायु अने कफ आ रोगमां कोपे छे. वरडो सांधा वगेरेमां पेशी जइ झकडावी दाये छे अने त्यां पिडा करे छे ।

चिन्ह—वखतो वखत आळस मरडवी अरुचि तरस बगांसा सुस्ती शरीर दुबळुं छतां वजनदार लागे अनेक अवयवोमां सोजो देखाय. हाथ पग माथुं घुंटी बरडो गोठण कुला कडुय साथळ सांधा वगेरेमां पीडाकारी सोजो थाय जे भागमां वधु विकार होय त्यां पीडा थाय सोयुं खोमाती होय वींछी करडता होय तेम लागे. मोळ आवे लाळुं पडे कोइ काममां उत्साह न थाय उदासीनता रहे दाह थाय पेशाब बहु थाय पेट कठण थाय शूळ निकळे उंघ अनियमित थइ जाय तरस लागे उलटी उबको थाय चक्कर आवे जीव मुझाय छाती झकडाइ जाय छाती माथे कोके बेलुं मुश्कुं होय तेवो भार लागे झाडो कबज रहे झाडा साथे आम जळपटां पडे आंतरडामां पवन बोले आफरो चडे अने बीजा उपद्रव थाय पित्तनां वधु उपद्रव होय तो दाह अने लालाश लागे वायु वधु होय तो शूळ-दुखावो सबाका निकळे. कफ वधु होय तो जडता खंजवाळ कठणपणुं लागे आखा शरीरमां वखतो वखत सोजा थाय मटे अने फरी करे तो ए असाध्य छे ।

पथ्यापथ्य—खमी शके ते प्रमाणे अपवास करावबा अथवा दिवसमां एक. वखत खोराक आपवो. कारेलां कंटोलां दुधी तुरियां वालोळ परवळ पंडोळां एवां शाक खीचडी कढी जव घउं बाजरो अडद मग घाल हिंग जीरुं धाणा लसण कोथमीर आदु मीठो लींमडो गोळ कोकम सुंठ काळां मरी लींडीपिपर एवी चीज हितकारक छे ।

तिक्तादि क्वाथ—कडु काळीपाट इंद्रजव अतिविष गळो चित्रो समभागे एनो क्वाथ पावो अथवा चुरण करी गरम पाणीमां ०। थी ०॥ तोलो फाकवुं ।

मुस्तादि क्वाथ—मोथ सुंठ अतिविष हरडे देवदार वज समभागे खांडी ०।थी ०॥ तोलो चूर्ण उना पाणी साथे फाकवुं के उकाळो करी पीवो ।

रसायन मिश्रण—आमवातारि रस आमवातेश्वर वातविध्वंश दरेक तो. ०॥ अडधो, सर्वेश्वरी पर्पटी तो. ०। मुक्ताभस्म तो. ०। मिश्र करी ६४ पडीकां करवां दररोज बे टंक दंतिहरीतकी चाटण साथे आपवां ।

मिश्र क्वाथ—महारास्नादि क्वाथ तो १० महामंजिष्ठादि क्वाथ तो. ५ महासुदर्शन तो. ५ रास्ना तो. २॥ उंबरानी छाल तो. १० साथे खांडी हमेशां २ तोला भुकामां ४० तोला पाणी मुकी १० तोला रहे एटले गाळी २ वखत पावुं ।

महारास्नादि क्वाथ—रास्ना तो. १० एरंडीनां मूळ अरडुसी धमासो कचुरो देवदार बळदाणा मोथ सुंठ अतिविष हरडे गोखरू गरमाळो सुवादाणा धाणा साटोडी शतावरि वरधारो लींडीपिपर गळो आसोध वज कांटाअशेळियो चवक बेठी उभी भोरींगणी मूळ दरेक तोला ५ पांच साथे खांडवां. १ तोला भुकामां ४० तोला पाणी मुका उकाळवुं ५ तोला रहे गाळी लइ बे टाणां पावुं ।

महायोगराज गुगळ त्रयोदशांग गुगळ सिंहनाद गुगळ भैरवनाथो पंचामृत पर्पटी अभ्रक सहस्रपुटी एमांना कोइ एक के वधु ओषधो साथे आ क्वांथ पावाथी वधु फायदो थाय छे ।

हिंगाष्टक चूर्ण ०।थी ०॥ तोलो पाणी साथे जम्या पछी आपवुं. लसणवटी (रसोनपिंड-महारसोनपिंड) २-४ गाळी आपवी. महासरस्वती सुरा दशमुळारिष्ट वगेरे आसव पावां ।

शंकरबाफ—उंबरानां मूळ तल जव एरंडानां मूळ अळशी साटोडी कपासिया कळथी अडद बधा साथे सरखे भागे खांडी २० तोला भुकामां १० शेर पाणी मुकी घडामां उकाळवुं पछे नळी के भुंगळी के पोलावांस वाटे जे जे अंग अवयवमां दुखावो दरद होय त्यां बाफ आपवी ।

नाळियेर लवण—पाणीवा नाळीयेरमां काणुं पाडो तेमां समाय तेटलुं खांडेलुं मोठुं (लवण) दाबीने भरी काणुं बंध करी तेना पर ७ कपडमाटी करी २०-२५ छाणानी भठीमां पकाववुं ठंडु थये मांहुं काढी लइ घुंटी राखवुं. बेआनी भार सुधी बे त्रण टंक पाणी साथे आपवुं. आमवा मटे ।

लसण वटी—लसण शेर १० तल शेर १० बेइने गायनी खाटी छासमा वाटवां पछी सुंठ पिपर धाणा चवक चित्रो गजपिपर अजमोद तज पलचि पिपरी मूळ दरेक तोला ४ चार, साकर तो. ३२, काळां मरी तो. ८, कुष्ठ जीरुं आदु दरेक तो. १६, घी तो. ३२, तलनुं तेल तो. ३२, सरसव तो. १६, राइ तो. १६, चोखी हिंग तो १, पंचलवण पांचे मळी तो. ५ बधा साथे मेळवी तेमां मध तो. १६ तथा छास खाटी अथवा सुरके तो. ८० मेळवी पींडो वाळो हांडलामां भरी बंध करी दाणाना ढगलामां १२ दिवस डाटी राखी काढी पावली भारनी गोळी वाळवी. हमेशां आखा दिवसमां ४-८ गोळी आपवी भुख लागे त्यारे जमवुं आना सेवनथी ८० जातना वा, हरस गुल्म आमवा कुष्ठ सोजा योनिशूळ मटे छे हाडकां भांगी गया होय ते संधाये छे शक्ति आवे छे. १ महिनो खवराववुं ।

आमवातारि रस—पारद गंधक हरडे चित्रो गुगळ साथे वाटी देशी एरडिया तेलनो करमो दइ लोह अभ्रक शंख कोडी दरेकनी भस्म अफीण शुद्ध समभागे लइ भांगना रसनी भावना दइ चणया जेवडी गोळी करवी. सवार सांज बबे गोळी पाणी साथे आपवी ।

आरोग्यवर्धनी गोळी—पारद गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म ताम्रभस्म दरेक तोलो १ एक, त्रिफळा तो. १०, शिलाजीत तो. १५, चित्रानां मूळ अने गुगळ दरेक तो. २० वीश बधांनी बराबर कडु खांडी लींमडाना पानना रसनी भावना ३ दिवस सुधी आपी वाल वालनी गोळी करवी. सवार बपोर सांज टंके २-८ गोळी सुधी आपवी. आ गोळीनुं सेवन १ महिनो करवाथी आमवा मटेछे ।

आमवातेश्वर—पारद तो. १ गंधक तो २ ताम्रभस्म तो १ लोहभस्म तो १ अभ्रकभस्म तो. १ गरमाळानी छालनां उकाळानी तथा पंचकोलनी अकेक भावना देवी पछी गळोना उकाळानी भावना २० आपी तेमां फुलावेल टंकण तो. १०. बिडलवण मरो आंबलीनो खार दरेक तो. ५ सुंठ पिपर हरडे बेडां आमळां लविंग तज पिपरीमूळ अजमोद जीरुं शाजीरुं दंतिमूळ दरेक तो. १ एक मेळवी घुंटी राखवुं. टंके ३-६ रति पाणी साथे आपवुं ।



वाइ—अपस्मार

कारण—अति दारु जेवो केफी वस्तुओनी टेवथी अतिविषय हाथरस-मुष्टि-मैथुननी टेवथी मगजनां दरद कृमिरोग गर्भाशयनुं दरद वगेरेथी आ रोग थाय छे ।

चिन्ह—आ रोग थवानो होय त्यारे प्रथम हृदय कंपे छे शून्य लागे छे दरदी चालतां चालतां चीस पाडी पडी जाय छे आंख उघाडतां सफेद डोळाज देखाय छे जीभ कचराइ जाय छे मोढे फीण आवे छे गरदन फरी जाय छे ताण वधतुं जाय छे तेम तेम चेरो काळाश पडतो थइ जाय छे थोडी मिनिटे खेंच ताण बंध पडे छे त्यारे दरदी उंघी जाय छे आनाथी हाथ पग खडी जाय छे ।

वायुप्रकोप होय तो—दरदी धुजे छे दांत कचडे छे दांतनी डोढ वळी जाय छे मोमांथी फीण बहु निकळे छे श्वास चडे छे लाल काळां अंधारां देखे छे ।

पित्तप्रकोप होय तो—आंख मो अने फीण पिळाश पडतां थाय तरस घणी लागे आखा जगतने अग्निनी जाळमां विंटायेलुं देखे छे ।

कफप्रकोप होय तो—आंख अने फीण धोळां होय छे शरीर टंढुं पडी जाय छे अने वाइ उतरवामां घणो वखत लागे छे केटलाक केसमां दरदी विचित्र प्रकारनी चीस पाडे छे अने केटलाकमां नथी पाडतो दरदी बेशुद्ध थइ जाय छे गमे त्यां पडी जाय छे आखां शरीरना स्नायु खेंचाय छे दांत खीलाइ जाय छे श्वास बंध थाय छे केटलाकने पेशाब झाडो के वीर्यस्राव थइ जाय छे हृदय उछळे छे पेटमां गडबड थाय छे ।

पथ्यापथ्य—वाइ आवती होय ते दरदीने एकलो क्यांय जावा देवो नहि अथवा वाइ आववानी मुदत अगाउ एक बे दिवसे तो तेने घेरज राखवो. वाइ आवे त्यारे तेना हाथ पगने इजा थती अटकाववी छाती उघाडी करवी पवन नाखवो जीभ कचराय नहीं माटे मोमां पोचुं लुगडुं मुकवुं. द्राक्षासव पावो. दरदीने उपयोगी अंजन आंजवुं नस्य सुंघाडवुं के चोळवुं ।

वाइ आवती होय ते माणसे आहार विहारमां नियमित थावुं हळवो सादो पची जाय तेवो खोराक लेवो पेटमां बोजो थवा देवो नहीं. अजीर्ण अपचो कबजीयत थाय नहीं तेम खावुं गरिष्ठ मिष्टान्न वगेरे थोडां खावा. दस्त हमेशां साफ आवे तेम करवुं औषध सेवन करवुं. स्त्रीओने वाइ आवती होय तो ऋतु नियमित आवे तेम करवुं. चिंता क्रोध भय शोक न थावा देवो. पाणी देवता नजीक अवाथी के जोवाथी वाइ तुरत आवे छे माटे तेवे स्थळे दरदीने जावा देवो नहीं. लीलुं शाक बकालुं ओछुं खावुं ।

महा भूतभैरव रस—रससिंदुर रौप्यभस्म सुवर्णमाक्षिकभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म शिलाचंद्रोदय शिलाजीत प्रत्येक तोला १० दश, गंधक तो. २० बधाने घुंटी १० तोला गायना घीनो करमो दइ तेमां आसोंध तुळसीना बी रुद्राक्ष मरवो भरेठी प्रत्येकनो भुको तो. १० नाखी कोयलाना धीमा तापथी ०। कलाक शेकी पाछुं घुंटी नाखवुं पछी अरणी शतावरि नगोड बोकडानुं मूत्र अने तुळसीनुं पंचांग प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ छाये सुकावी गौमूत्रमां पिंडो वाळी १ एक तोलानी सोगठी करवी अथवा भुको राखवो. मात्रा ३ थी १२ रति दरदना प्रमाणमां गायना दुध साथे आपवी. वाइ-अपस्मार उन्माद गांडपण विचारवायु हिस्टिरिया वगेरे दरद मटे छे ।

भूतभैरव लघु—पारदभस्म ताम्रभस्म लोहभस्म हरताल गंधक मनशिळ अभ्रकभस्म समभागे लइ गौमूत्रमां घुंटी बधाथी बमणो गंधक लइ लोढानी कडाइमां पांच मिनिट पकाववुं. सवार सांज ५ पांच रति गायना घीमां चटाडवुं सुंघाडवुं अने आंजवुं. २ महिनामां वाइ गांडपण मटे ।

अपस्मार नाशन रस—पारद गंधक ताम्रभस्म अभ्रकभस्म मनशिळ हरताल वज कुष्ठ हिंग अजमोद सुंठ पिपर मरी रुद्राक्ष सिंधालुण मोरपींछनी राख लसण ब्राह्मी बधां सरखे भागे लइ खांडी मालकांकणानां तेलनो करमो दइ बोकडानुं मूत्र उंदरकनी अने ब्राह्मी प्रत्येकना रसनी अकेक भावना देवी. भुको राखवो अथवा चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ रति गायना घीमां चटाडी बीचे लखेलामांनो कोइ उकाळो पावो अथवा अश्वगंधारिष्ट पावो ।

अपस्मार चूर्ण—सुंठ पिपर मरी चवक चित्रो हरडे सिंधालुण वावडींग कज्जळी अजमा अजमोद धाणा जीरुं लसण तज सरसव सरगवाना बी मालकांकणां गोखरु बळदाणा घोडाआसोंध पिपरीमूळ कडु अतिविष देवदार रास्ना सौथ तज लविंग बधां सरखे भागे लइ खांडी राखवां. मात्रा ०। थी १ तोला सुधी आपवुं. शरुआतमां टंके बबे आनीभार घी साथे चटाडवुं पछी धीमे धीमे वधारवुं.

अपस्मार गांडपण हिस्टिरिया विचारवायु दारुथी थयेलो भ्रम वगेरे मानसिक दरदोमां उत्तम छे ।

अपस्मारहर घृत—भुरांकोळानो रस तोला १०० ब्राह्मीनो रस तो. १०० उंदरकनी वज अरडुसो भारंगी मरडाशिंगी अरणीमूळ गोखरुमूळ कुलींजन सरसव संघेसडानी छाल मालकांकणां वावडींग अजमोद सुवादाणा वरियाळी अजमोद साकर लीमडानी लींबोळी लसण हिंग नगोड प्रत्येक तो. १० दश, बोकडानुं मूत्र तो. ५० गौमूत्र तो. ५० बधाने पाणीमां वाटी लुबदी करी तेमां गायनुं घी रतल ३० नाखी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय पटले गाळी लेवुं. टंके मात्रा ०॥ थी १ तोला सुधी उपला कोइपण ओषध साथे अथवा एकलुं चटाडवुं. मगजनां दरद मानसिक व्याधि तथा अपस्मार उन्मादने लगतां दरदोनुं शमन थाय छे. रसायन प्रकरणमां कहेलो सारस्वतारिष्ट पावो अथवा अश्वगंधारिष्ट पावो. ।

वाइ उपर सामान्य उपचार

१ पुष्य नक्षत्रमां लावेलुं कुतरानुं पित्त आंजवुं. ते पित्तने घी साथे मेळवी धुंवाडी देवी ।

२ मनशिळ रसवंति पारेवानी चरक समभागे मेळवी आंजवुं ।

३ बळदाणा हळदर दारुहळदर वज सानविण कडु गरमाळो समभागे खांडवां. मात्रा १ थी १॥ तोलानो उकाळो करी पावो ।

४ ब्राह्मी उंदरकनी मेंदी काळीपाठ पुष्कळमूळ हळदर कपुरकाचली नसोतर समभागे खांडवां. मात्रा ०। थी १ तोलानो उकाळो करी पावो ।

५ उपलसरी रास्ना शतावरि घोडाआसोंध करियातु अजमोद समभागे खांडवां. मात्रा ०॥ थी १ तोलानो उकाळो करी पावो ।

६ घोडावज ब्राह्मी दरकनी प्रत्येक तोला ५ पांच सुंठ पिपर मरी हरडे प्रत्येक तोला २॥ अढी, लसण तोला ६ गुगळ तो. १० साथे मेळवी बे थी चार आनीभार घी साथे चटाडवुं ।

७ करंजबीज आमळां मालकांकणां वज तुळसी आंबाहळदर कचुरो शतावरि संघेसडो सरसडो हरदळ वींछीयाना फळ सरसव उपलेट बधां समभागे खांडवां मात्रा २-४ तोला भुकाने पाणीमां वाटी आखे शरीरे चोळवुं मर्दन करवुं पछी २ कलाक रही नहावुं ।

८ ब्राह्मीना पान वज शंखावळी शंखकीट मरी रास्ना सरगवानां बी सरसव बधां समभागे खांडी बोकडानां मूत्रनी भावना दइ छाये सुकावी घुंटी कपडे चाळवुं. आ भुकी नाके सुंघाडवी तथा आंजवी ।

९ जुनुं लुगडुं १ हाथनुं लइ हाथीना पग वच्चे परसेवो वळे तेथी भींजाववुं पछी छाये सुकावी राखवुं पछी दरदीने वाइ आवे त्यारे ए लुगडामांथी ५-६ इंचनो कटको कापी पाणीमां भींजावी ते पाणीना टीपां नाकमां नाखवां पटले छींक आवी नाकमांथी जीवडा २ निकळी पडशे अने वाइ मटशे ।

१० चकोर पक्षीनी चरक अने काळां मरी सरखे भागे लइ पाणीमां वाटी नाकमां टीपां नाखवाथी वाइनुं दरद मटे ।

११ चमारदुधलीनां फळ तो १ काळां मरी तो. ०। साथे मेळवी घुंटी कपडे चाळी सुंघाडवाथी वाइ मटे ।

१२ हाथीनो मद अने काळां मरी मेळा पाणीमां वाटी नाकमां टोपां नाखवां मरगो-वाइ मटे ।

१३ गधेडाना दांत चोकीना ४ बाळी नाश देवी मृगी टळे ।

१४ अरणीना मूळनी छाल तोलो १ लइ बकरीना दुधमां घसी ७ दिवस पावुं. वाइ मटे ।

१५ अरिठानी छाल इंगोरियानुं फळ समुद्रफळ पुत्रजीवखनो गरभ बधां सम-भागे लइ पाणीमां घुंटी चणोठी जेवडी गोळी करवी. वाइ आवे त्यारे पाणीमां वाटी नास देवी मृगी-वाइ मटे ।

१६ समुद्रफळने गधेडाना मूत्रमां वाटी सवारमां नास देवी १४ दिवसमां मृगी-वाइ मटे ।

१७ इंद्रामणानां डोडवांनो रस कढावी तेनो नास २१ दिवस देवी. वाइ मटे ।



पत गळत्कोढ-वातरक्त

कारण—दारुनुं वेधाण अति खाटां पदार्थो खावानी टेव जळचर प्राणीओनु मांस भक्षण संयोग विरुद्ध आहार करवाथी (जेमके दुध साथे माछलां) लोही-बगाडनारां पदार्थो खावाथी मळ शुद्धि नहीं थवाथी बेसी रहेवानी टेवथी कांइपण शारीरिक महेनत नहीं करवाथी ठंडा वासी अन्नपान खावानी टेवथी हाथी घोडा पर वधु स्वारी करवाथी वगेरे अनेक कारणोथी शरीरमानुं लोही हाथ पगोमा खेंचाइ मंद थाय छे ते साथे वायु मळी बगाड करी आ दरद उपजावे छे अने आ दरद लागु थया पछी आखा शरीरमां फेलाय छे गरीब भिखारी लोको जेओने बगडेलां सडेलां अन्नपान खावा मळे छे तेओने आ दरद वधु देखाय छे. वहु मांस खानाराओने पण वधु थाय छे. केवळ वनस्पतिना खोराक पर रहेनारामां वहु ओछा प्रमाणमां आ रोग थाय छे ।

चिह्न—प्रथम परसेवो बहु वळे छे के बिलकुल वळतो नथी. स्पर्शज्ञान ओछुं थइ जाय छे सांधा ढीला पडे छे शरीर जड जेवुं थाय छे शरीरमां सोयुं भोंकाती होय तेवी पीडा थाय छे चळ आवे छे बळतरा थाय छे शरीर पर गांठो तथा चांभा उपडी आवे छे आखे शरीरे अने विशेष करीने कपाळ मो उपर सोजो चामडी पर झगझगाट रताश हाथपगनी आंगळीओ वांकी वळवी नख खवाइ जवा चाजडीमां चिरा पडवा फुट थवी पाणी झरवुं मांस खरी पडवुं वगेरे

वायुप्रधान होय तो—शूळ निकळे अंग धुजे सोयुं खोस्या जेवी पीडा थाय सोजो चडे शरीर सुकुं लुखुं देखाय रंग काळाश पडतो होय धोळी नसो के धमनीओ अने आंगळीओना सांधा खेंचाय शरीर झकडाय शीत पदार्थोनो अण-गमो ठंडा पदार्थोना सेवन के स्पर्शथी कंपारी छुटे शरीरने स्पर्शनुं भान रहे नही ।

पित्तप्रधान होय तो—बळत्रा वधु थाय परसेवो वळे मूर्च्छा आवे तरस घणी लागे दरदी गांडा जेवो देखाय स्पर्श सहन थाय नहीं शरीर लाल थाय सोजो थाय पाक थाय ।

कफप्रधान होय तो—शरीर भीनुं ठंडु लागे शरीर बोजारुप थाय बेरुं थइ जाय टाढ वाय शरीरनो वान चळकतो थाय खजवाळ-चळ आवे पीडा थोडी थाय ।

गांठियो वातरक्त—आमां हाथ पग गोठण जांघ पगनां आंगळां कोणिओ वगैरे शून्य थइ जाय माछलांनां भींगडानी पेठे चामडी उपरथी पोपडी उखडे नख काळा पडी जाय चामडीनो देखाव करुपडो थइ जाय चामडी थोडो रातो थइ फाटे अने तेमांथी रसी तथा लोहो रात दिवस झव्या करे आंगळानी चामडी मांस हाडकां वगेरेमां सडो थइ धीमे धीमे खवाइ जाय. मोढुं गाल नाक कान वगेरे अवयवोनी चामडी तगतगे छे पछी धीमे धीमे आखा शरीरमां ए देखाव थाय चाठांमांथी गांठयो थाय ते गांठयो मोटी थयेथी तेमां फुट थइ परु वहे. नाकनुं हाडकुं सडी नाक चपटुं थाय पगनां आंगळां सोजी आवी पाणी झरे खवाइ जइ खरी पडे हाथ पग ठंडा थाय अंदर असह्य बळतरा थाय चामडीने स्पर्शनुं ज्ञान रहे नहीं ।

शून्य वातरक्त—आमां उपर प्रमाणे गांठ्य बंधाती नथी पण हाथ पगनां आंगळां अंगुठाओ तदन बेरा शून्य थइ जाय छे अने कोइ वखत माछलानां भींगडानी पेठे पोपडा उखडे छे हाथ पग के शरीरनो कोइ भाग खोटो पडी जाय छे कोइ वखत प्रथम शरीरपर फोडलो उपडी फुटी रुझाइ धोळो डाघ पडे छे आ चाठांवाळा भागने अग्निथी बाळीये के कापीए तो पण खबर पडती नथी ।

पथ्यापथ्य—अलग मकानमां बिछानुं राखवुं खावा पीवाना ठाम वासण अने कपडां जुदां रखाववां मांसनो खोराक बिलकुल आपवो नहीं. सादो हळवो वनस्पतिनो ताजो बेइ वखत गरमागरम खोराक आपवो दारु बंध करवो. लोही सुधारनारा उपचारो करवा खुली हवा सादी कसरत एकांत स्थळ स्वच्छ पाणी न्हावा धोवानी सफाइ पोषणकारक हळवो सादो विशेषे दुधनो खोराक आपवो. मांस मदिरा खटाश गरम मसाला तेल मरचां अथाणां वाइडां झाडो कबज करनारां एवां पदार्थोनो त्याग तथा ब्रह्मचर्य ए आ दरदमां हितकारक छे ।

वातरक्तांतक रस—पारद गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म हरताळभस्म शुद्ध मनशिळ शिलाजीत गुगळ वावडींग हरडे बेडां आमळां सुंठ पिपर मरी समुद्रफीण साटोडी देवदार चित्रो दारुहळदर धोळां फुलनी गरणी बधां समभागे लइ खांडी त्रिफळा अने भांगरानी ३ त्रण भावना आपी सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ३ थी ४ रतिभारमां लिंबडानां पंचांगनुं चूर्ण तो. ०। अने गायनुं घी मेळवी चटाडवुं. उपर दुध पावुं ।

कृष्णमाणिक्य रस—सुवर्णमाक्षिकभस्म गंधक तिक्ष्णलोहभस्म कांतलोहभस्म प्रत्येक तोला १०, कळगारी तो. २॥ बधां साथे मेळवी वालुकायंत्रमां चडावी तेमां महा मंजिष्ठादि क्वाथनो रस नाखतुं जवुं अने पकाववुं. मात्रा १-२ रति मध घी साथे चटाडी उपर लींमडाना पाननो रस पावो. एत लोहीबगाड कुष्ठ मटे ।

वातरक्तनाशन रस—पारद तोला १० गंधक तो. २० ताम्रभस्म लोह-भस्म अभ्रकभस्म रसमाणिकय प्रत्येक तो. ८ आठ, हरडे बेडां आमळां सुंठ पिपर मरी अतिविष गळो मोथ अरडुमी गुगळ चित्रो दंतिमूळ वावडींग नसोतर करियातु लींबोळी प्रत्येक तो. ५ पांच लइ भांगराना रसनी ७, गळोनां रसनी ७, लींमडानां पानना रसनी ४ अने कोठाना पानना रसनी ३ भावना दइ सुकावी खरल करी राखवुं. मात्रा ६ थी २४ रति गायना घी साथे चटाडी उपर पाणी पावुं. पथ्यमां खटाइ तेल मरचां बजारनी मिठाइ अजीर्ण करनारां पदार्थो खावां नहीं. हळवो सादो खोराक देवो, २ महिनामां गळत्कोढ पत तथा लोहीबगाडने लगतां दरदो मटे ।

अमृता गुगळ—गळो भांगरो त्रिफळा अने साटोडी प्रत्येक रतल २ बे लइ उकाळो करी पछी ते उकाळामां शुद्ध गुगळ रतल १, पारद गंधक सुवर्ण-माक्षिकभस्म दंतिमूळ सुंठ पिपर मरी कुबानां पान वावडींग चोपचिनी मोथ हरडे चित्रो वज केळकंद कचुरो कांचनारनी छाल रास्ना परडीनां मींज दरेक तो. ५ पांच लइ भांगराना रसनी कोठानां पानना रसनी तथा गळोना रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा टंके ६ थी १२ गोळी गायना घीमां २ मास आपवाथी वधी जातना पतनां दरद मटे छे ।

वातरक्तांतक भैरव रस—पारद गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म शुद्ध हर-ताळ शुद्ध मनशिळ शिलाजीत गुगळ वावडींग हरडे बेडां आमळां सुंठ पिपर समुद्रफीण साटोडी देवदार चित्रो दारुहळदर धोळी गरणी समभागे खांडी त्रिफळा अने भांगरानी ३ त्रण भावना देवी. मात्रा ६ थी १२ रति मध घीमां चटाडी उपर लींमडानां पंचांगनो स्वरस पावो ।

सर्पकंचुकयोग—सर्पनी कांचळी मासो १ तथा खजुरनी पेशी २ मां सापनी कांचळीने बारिक करी मेळवी दिवस २१ के २८ सुधी खवराववाथी गळत्कोढ पत मटे ।

सिद्ध हरताल भस्म—सोनपत्री हरताळने भेंसना मूत्रमां कुंवारना रसमां चुनाना पाणीमां शरपंखाना उकाळामां कोळाना रसमां अने लींबुना रसमां एम दरेकमां १८ अढार कलाक संशोधन करी शुद्ध थया पछी कोळानो रस कागदी लींबुनो रस धतुरानो रस सहदेवीनो रस पलाशनो रस बोरडीना मूळनो रस आदुनो रस भोंपाथरीनो रस नाकछींकणीनो रस सुरजमुखीनो रस दुधेलीनो रस भांगरानो रस परडाना मूळनो रस ब्रह्मदंडीनो रस सफेद लसणनो रस इंगळीनो रस अमरवेलनो रस पिलुडीनो रस बळानो रस खरसाणी थोरनुं दुध आकडानुं दुध दरेकनो २१ एकवीश भावना दइ चकी करी तडके सुकवी पछी एक मजबुत हांडलीने माटी अने कपडाथी २१ वखत कपडमाट करी पछी तेमां पिपळानी राख चार तसु दबावी भरी तेनापर चकी मूकी ते पर पिपळानी राख गळा सुधी दाबी दाबीने भरवी पछी मुद्रा दइ ६४ प्रहरनो अखंड मंद मध्य तीव्र अग्नि आपवो उत्तम भस्म थशे. महादेवनी महापूजा करी देव गाय ब्राह्मण वैद्यनुं पूज-

करी साचवी राखवी. मात्रा ०॥ थी १ रति सुधी मध घीमां चटाडवी. अनुपान रोग प्रमाणे बताववुं. पथ्यमां लवण मीठुं खाटां तीखां पदार्थो तेल वगेरे छोडवुं।

२१ दिवसमां भयंकर गळत्कोढ मंडळ कुष्ठ सफेद कोढ तथा बधा लोहीना बगाडनां दरद मटे. सन्निपात अपस्मारादि पापजन्य रोग भगंदर नासुर वगेरे महाव्रणो उपदंश फिरंगरोग हाथीपग सर्व सोजा सुवारोग वानारोग बधा शितळाना रोग श्वासकास पिनस वगेरे नाकना रोग हरस वगेरे आठ महारोग मंदाग्नि संग्रहणी मधुमेह मेदवृद्धि अर्बुद गळगंड कंठमाळ क्षयरोग, ८० वाना, ४० पित्तना अने २० कफ शरदीना रोग मटे ।

नवकार्षिक क्वाथ—दारुहळदर गळो कडु वज मजिठ लींमडानी छाल हरडे बेडां आमळां समभागे २ तोलानो काढो करी पावो अथवा महामंजिष्ठादि क्वाथ पावो ।

कोइपण औषध उपर महामंजिष्ठादि क्वाथ २ तोला उकाळी पावो. अमृता गुगळ ३ थी ६ गोळी अथवा कैशोर गुगळ ३ थी ६ गोळी, सिंहनाद गुगळ ६ थी ८ गोळी आपवी ।

महातालकेश्वर ३ रति गंधक रसायन ६ रति अमृता गुगळ गोळी ६ साथे मेळवी ३ भाग करी ३ वखत घीमां चटाडी उपर महामजिष्ठादि क्वाथ पावो ।

सामान्य सारवार—शरीरे घी मालिस करी फस खोलावीने अथवा जळो के शींगडो मुकावीने हमेशां थोडुं थोडुं लोही कढाववुं वायु न वधे तेम लोही कढाववुं. स्निग्ध पदार्थ साथे जुलाब आपवो. वखतो वखत पिचकारी-एनिमा आपवी. आ दरदीने दिवसे सुवा देवो नहीं मननो संताप थवा देवो नहीं. महेनत करावची नहीं ब्रह्मचर्य पळाववुं. तीखां गरम भारे चिकणां खारां खाटां पदार्थो खावा देवा नहीं. जुनां धान्य जव घउं बंटी तथा चण्या तुवेर मग मसुर कळथी पनो यूष प्रवाही आपवुं ।

महंमदी घृत—मेंदीनां मूळ शेर २॥ खांडी पाणी मण १। मां उकाळवां पाणी बळीने अर्धो मण रहे त्यारे तेमां गायनुं दुध मण १। नाखी चोळी कुचो काढी नाखी उकाळवुं. मण १। रहे त्यारे तेमां गायनुं घी शेर ७ नाखी उकाळवुं. पछी चोखुं घी रहे पटले उतारी कपडे गाळी लेवुं. तेमांथी हमेशां तोला २ थी ४ खावुं तथा शरीरे मालिस करवुं. गळत्कोढ मटे ।

गलित्कुष्ठहर मलम—लींमडानां पाकां पादडां तोला ४॥ टंकणखार तो. ०॥, राळ तो. १ तथा गायनुं घी तो. २० नाखी मलम करी लगाडवाथी गळत्कोढ मटे.

१ टीडनी हगार दररोज ४॥ दोकडाभार पाणीमां वाटी १४ दिवस पीवाथी गळत्कोढ-पत मटे ।

२ लींबोळी शेर ५, खांड शेर ५ मोरीयामां नाखी कुंडुं १ हेठळ कुंडुं १ उपर मुकी कडसमा पाणीमां डाटवुं ३ मास राखी पछे सुक्या केडे काढी लइ हमेशां पांच आनीभार सेवन करवाथी रक्तपित्त गळत्कोढ मटे. दर अठवाडीये बबेआनो भार चढाववुं कुल दश आनीभार थाय त्यार पछी ४० दिवस लेवुं ।

३ छोपनीयुं वाळी आकडानां दुधमां घुंटी टीकडीयुं करी डोबमां भरी पकवी पाछुं घुंटी राखवुं. मात्रा ४ वाल ६ मास सुधी चण्यानी दालमां भींजवो खावुं. उपर चण्यानो रोटलो खावो. गळत्कोढ मटे।

४ आमळां गधेडानुं मूत्र लींबुरस साकर मध गायनुं घी सरखे भागे लइ मेळवी चाटण बनाववुं. हमेशां ०॥ तोलो दिवस ७-१४ चाटवुं. गळत्कोढ मटे।

५ आवळामोरस लींमडाना पाननो रस सरखे भागे एकत्र करी दिवस १४-२१ सुधी पावो. रक्तपित्त मटे।

६ लींमडाना पाननो रस तोलो ०। जीरुं ते. १ मेळवी खावुं एम दिवस ७-१४ सुधी खावुं. वातरक्त मटे।

चांदी गरमी–उपदंश

हस्ताभिघातान्नखदंतघातादधावनादत्युपसेवनाद्वा ।
योनिप्रदोषाच्च भवंति शिश्ने पंचोपदंशा विविधोपचाराः ॥

कारण—हस्तदोषनी खराब टेवथी नख अने दांतनो क्षत इंद्रि उपर थवाथी स्त्रीसंग पछी तुरत प्रक्षालन नहीं करवाथी वेश्याना संगथी अति विषयथी स्त्रीना योनिदोषथी लांबा तथा कठोर रुंवाडावाळी स्त्रीना संगथी अप्रिय इच्छा विनानी गुह्येंद्रिय प्रक्षालन नहीं करती तथा उपदंशना दरदवाळी स्त्रीना संगथी बकरी गधेडी वगेरे पशु जातिना संगथी वीर्य के मूत्रना वेगने अटकाववाथी जखमी थयेला लिंगमां दुषित थयेला वात पित्त कफ सोजो करे छे आ रोग स्त्रीमांथी पुरुषने अने पुरुषमांथी स्त्रीने लागु पडे छे।

चिन्ह—दुष्ट स्त्री पुरुषना संग पछी तुरत अथवा बे चार दिवसे गुह्येंद्रिय खोलावाथी अने चेप लागवाथी प्रथम फोल्लीओ थाय छे ते फुटीने चांदां पडे छे आ चांदा घणेभागे नळीना आकारमां अथवा ते उपरना घुमटानी चामडीमां पडे छे प्रथम चांदु दाळना दाणा जेवुं गोळ होय छे ते एक चांदामांथी वधु थाय छे घणी वखत मूत्रभागमां पण चांदा पडे छे।

वात पित्त प्रधान कठण उपदंश—गरमीवाळी स्त्री साथेना संयोग पछी ८ थी ४० दिवसमां देखाय छे चामडीना पडमांज खोलाइने रहे प्रारंभमां फोडलो थइ खोलाइ क्षत पडे छे. आखी जिंदगीमां घणुं करी एकज वखत थाय छे प्रारंभमांज तळीये कठण होय छे. चांदीनी फरती धार जाडी कठोर अने चामडी उपसी आवे छे चांदी नानी कोरवाळी थयेली सपाटी लाल रसी पातळी अने बहु थोडी निकळे छे चांदीनी आसपासनो तथा पत्ती नीचेनो भाग कठण होय छे झाझो वखत रहेती नथी अने सडो पण करती नथी।

कफ पित्त प्रधान उपदंश—गरमीवाळी स्त्रीना संग पछी आठ दिवसमां चांदी देखाय छे ज्यां थाय छे ते भाग सडतो पडतो चांदी उंडी उतरती जाय छे शरुआतमां खोलाइने चीरो पडीने क्षतनुं रुप पकडे छे. जिंदगीमां अनेक वखत

मटे छे अने थाय छे दाबतां नळीये नरम होय छे आजुबाजुना भागथी किनारी अलग देखाय छे कोर उंची सपाटी बेठेली ते पर मरेला मांसनो थर अने तेमांथी जाडुं परुं निकळे छे आसपासनो भाग अने मोंय उपरनो भाग नरम रहे छे. १॥ थी २ महिने के तेथी पण वधु मुदते मटे छे ।

पथ्यापथ्य—नितीथी वर्तवुं परस्त्री संगथी दूर रहेवुं सदाचार पाळवो आचार स्वच्छता स्नान संध्या देवपूजनादिमां मन जोडवुं पवित्रता शुद्धता हमेशां डगले डगले जाळववी. कुसंगी मित्रो के तेवी स्त्रीओनो बिलकुल सहवास राखवो नहीं शृंगारिक वार्ता चोपडीयो वांचवी नहीं नाटको जोवां नहीं उजागरा करवा नहीं हमेशां स्वच्छ कपडां लवां पहेरवां चेपवाळां कपडांने साबुथी के खारेथी धोइ नाखवां. बजारना पेडा काख्वा बजारनी मिठाइ भजीयां गांठिया खेबडो मरचां मसाला तीक्ष्ण जलद चिजो दारु वगेरे छोडवां. दस्त पेशाब साफ रहे तेवी औषधो साथे योजना करवी. दुध भात रोटली घी साकर एवो हविष्य अथवा सादो खोराक लेवो. लीलुं शाकपत्र ओछुं खावुं ।

हिमचंद्रशेखर रस—शुद्ध पारद तोला ५ साकर तो. १५ कोठानी खरलमां लींमडाना वताथी १ दिवस घुंटवुं पछी तेमां चोखो केवडीयो काथो तो. ५ मेळवी अकेक आनो भारनी गोळी पाणीथी करवी हमेशां सवार सांज बबे गोळी गळाववी चाववी नहीं. शिरानी वखतमां के घी साकरनी वखतमां मुखमां गळवा. मीठुं मरचुं तेल खटाइ वगेरे बंध करवुं. दुध भात रोटली साकर घी खोवा वगेरे खोराक आपवो गरमा गरम खोराक लेवो ए प्रमाणे १ महिनो आपवाथी शरीर निरोगी थइ जाय छे. आ औषधमां पथ्य योजन १ वखत करवुं ठंडा पाणीनो स्पर्श न करवो. ठंडु पाणी पीवुं नहीं तरस लागे तो शेरडीनो रस दाडम वगेरे लेवुं शौच उने पाणीये करवुं तुरत लुइ नाखवुं. पवन तडको के अग्निनो ताप शरीरे लागवा देवो नहीं. चोमासामां के शियाळामां आ औषधनो उपयोग करवो वधु ठीक छे. दिवसे उंघवुं नहीं अने रात्रे जागवुं नहीं ब्रह्मचर्य पाळवुं १ महिनो पछी नहावुं महेनत करवी नहीं. आ औषधनो १४ दिवसनो प्रयोग मोटी मात्राथी करवाथी तत्काळ रोग मटे छे पण ते मुश्केल छे ।

उपदंशहारी वटी—रससिंदुर रसकपुर अकलकरो केसर वावडींग मेंदी लविंग मींढीआवळ बधां सरखे भागे लइ बारिक करी वासी पाणीमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. हमेशां सवारमां एक वखत २ गोळी ठंडा पाणीथी गळी जावी चाववी नहीं एम २१ दिवस लेवी. पथ्यमां मीठुं मरचुं तेल खटाइ खावां नहीं. घउंनी रोटली गायना दुधमां खावी ।

उपदंशसूर्य रस—आकडाना दुधमां शोधेलो रसकपुर लविंग चंदन केसर जावंत्री बंगभस्मश्वेत सुवर्णमाक्षिक बधां सरखे भागे बारिक करी नागरवेलना पानना रसमां मग जेवडी गोळी वाळवी. दिवसमां २ थी १० गोळी घीमां गळाववी ।

कस्तुर्यादि गोळी—आकडाना दुधमां शोधेलो रसकपुर लविंग सुखड कस्तुरी केसर अकलकरो समभागे नागरवेलना रसमां मग जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी घीमां गळी जवी. पथ्य उपर प्रमाणे पाळवुं ।

चांदीनो मलम—सफेद पारो राळ शेषगुंदर जुनुं टोपरुं मरी कंकुशोयागरी मेथीदाणा भिलामां दरेक तोला २॥ अढी, गायनुं घी शेर १. प्रथम पारो अने राळने साथे पीसवां बीजां वसाणाने जुदां पीसी पछी बधां भेगां करी लोखंडनी कडाइमां गरम करी तेमां बधां नाखी थोडीवार पकाववुं. चांदी गरमी पर चोपडवुं आ मलम चोपडवामां आवे त्यां सुधी चणानो रोटलो भात दुध खोराकमां आपवुं. मीठुं मरचुं खटाइ के बीजुं कांइ खावा देवुं नहीं ।

उपदंशरोपण तेल—चोखा तो. ०॥ नेपाळानी दाळ करी तेमांथी सणगी (जीभी) काढी नाखी बाकी दाळ तो. ०॥ मोरग्रीवा तो. ०॥ ए त्रणे ओसडने तेल शेर ०॥ मां उकाळी पकाववुं. चोपडवाथी चांदी रुझाय ।

उपदंशरोपणगुंजा तेल—चणोटीनी दाळ पाणीथी वाटी वडी करवी तेल शेर ०॥ कडाइमां मुकी ककडवा मांडे पटले ते वडी तळवी लाल थया पछी उतारी लइ ए तेल अरुझ चांदीमां दिवस ७ थी १४ चोपडवुं. चांदी रुझाय ।

उपदंशहरी गोळी—अकलकरो तो. ०। हिंगळो तो. ०। मुसळीकंद तो. ०। त्रणेने वाटीने २१ गोळी करवी. हमेशां १ गोळी दुध साकरमां आपवी।

उपदंशहर मलम—राळ काथो हिंगळो हिरादखण मरदारसींग सिंदोर गेरु सगतरास बधां समभागे लइ साथे घुंटी गायना घीमां मलम करी चोपडवाथी चांदी रुझाय ।

फिरंगवा गोळी—सोमल शंखियो अकलकरो कपूर समभागे लइ तांदलीयाना रसथी सरसव जेवडी गोळी करवी. हमेशां १ गोळी साकर जीरा साथे खवराववी सर्व फिरंगवा जाय ।

चांदीनो मलम—टोपरानुं तेल जनावादी २ भार लइ पछी लोढाना वाटकामां नाखी गरम करवुं पछी तेमां लींमडाना पानने वाटीने तेनो रस लुगडे निचोवीने काढवो पछी जनावादि तो. १ लइ टोपराना तेलमां रेडी पछे मिण जनावादि तो. १ नाखो त्रणे एक रस थाय त्यारे तेमां सिंदोर चोखो वाटीने टांक १ तथा काथो टां. ०। वाटीने नाखवो पछी लींमडानी लाकडीथी घुंटवुं सर्व एक थाय त्यारे उपर पाणी रेडवुं. उपर तर आवे ते लइ लेवी. ते काचलीमां भरी राखवुं ते मलम चांदा गरमी फोडा विस्फोटक वगेरेमां चोपडवुं ।

चांदानो मलम—हिरादखण बोदारसींग मायां काथो राळ कंपिलो सिंदोर मनशिळ मस्तकी कायफळ प्रत्येक टां. १ एक, मिण टां. ३ समस्त वाटी कपडछान करी गायना घी साथे मलम करवो मिण गाळीने नाखवुं. ए मलम चांदा उपर चोपडवो. फोडा मूळथी जाय ।

फोडला लेप—(नखे खणवाथी फोडला थाय ते उपर) अफीण हिमेज गंधक ए त्रणेने तुळसीना रसमां वाटी चोपडवाथी फोडला मटे ।

चांदीलिंगलेप—अकलकरो तो. ०। हिंगळो तो. ०। लइ ए बेइने वाटी २१ पडीकी करवी. नागरवेलनां पान साथे १ पडीकी रोज खवराववी तथा चोपडवी. ७ थी १४ दिवसमां चांदी मटे ।

मलम—लींमडानो रस शेर ०॥ घी तो. ५ बेइ लोढानी कडाइमां नाखी चुले चडावी धीमो ताप करी लींमडाने लाकडे घुंटवुं. लींमडानो रस सोसी रहे त्यारे उतारी तेमां पाणी रेडवुं पछी ठारीने ते घी चोपडवुं. अरुझ चांदी रूझाय ।

विस्फोटक प्रयोग—पारो १ आनीभार, हिंगळो २ आनीभार, बोदारसींग २ आनीभार जावंत्रि १ आनीभार, मस्तकी १ आनीभार साथे मेळवी १४ पडीकी करवी. गोळमां गोळी १ पडीकीनी करी हमेशां १ खावी उपर नागरवेलनुं पान खवराववुं. पथ्य चोखा घउंनी थूली मोळी देवी. फोडा चांदा विस्फोटक मटे ।

विस्फोटकहरी गोळी—मोरथुथु भस्म तो. ०। हिमेज तो. ०॥। साथे मेळवी लींबुरसना २ पट दइ घुंटी अडद जेवडी गोळी वाळवी १ गोळी लींबुरसथी उतारवी. गळपण खावुं नहीं. मोढुं न आवे अने चांदा मटे ।

विस्फोटककारि गोळी—मोरथुथु भस्म शेर ०। कायो शेर ०। हिमेज शेर ०। झिलडाना बी तो. १। ए सर्वे बारिक वाटी लींबुरसमां १४ दिवस खरल करवुं. पछी अडद जेवडी गोळी वाळी १ गोळी माखण साथे गळाववी. विस्फोटक १८, प्रमेह १८, हरस ६ जाय तेल दुध गोळ खावां नहीं ।

विस्फोटकहर पारद प्रयोग—बोडीया कलारनो रस तो. १ पारो टां १॥ नाखी ८ घडी खरल करी पछी हाथने बेइ कांडे गुप्त ४ ५ घडी मालिस करवुं पछी हाथ बगलमां राखी सुवुं हरवुं फरवुं उपर दुध भात खावा २ दिवसमां असाध्य विस्फोटक मटे ।

विस्फोटक गोळी—सोमल शंखियो तो. ०॥, वछनाग २ आनीभार, हिंगळो २ आनीभार, गुंद बावळनो तो. ०॥ तांदलीयाना रसमां वाटी सरसव जेवडी गोळी करवी रोज १ गोळी खवराववाथी फोडारुप ८४ जातना वायु तथा कलंग ७, कोढ १८, गडगुंमड ३२ ए सर्वे रोग मटे ।

फोडालेप—मोरथुथु टां. ४ मालवण बावची टां. १८ गुगल टां. १२ घी शेर ०॥। तेल शेर ०॥ तेमां पकाववुं पछी चोपडवुं. फोडा विस्फोटक चांदी गरमी मटे ।

विस्फोटकहर चूर्ण—घोडाआसोंघ मोरींगणीनां जड बावळना मींज सरगवाना बी प्रत्येक तोला १० दश काळां मरी तो. ५ साथे खांडी २ आनीभार मात्रा सवारे गायना घी मां चटाडवी. विस्फोटक उपदंश मटे ।

विस्फोटकहर क्वाथ—त्रिफळानो क्वाथ करी १४ दिवस पीवाथी विस्फोटक मटे ।

विस्फोटकहर धुणी—हिंगळो टां. १, हरताळ टां. १, पलचि टां. १ करोळिया टां. १ पना पडीकां १४ करवां खेरना अंगारा उपर नाखी धुणी दिवस ७ देवी. फोडा चांदु फिरंगवायु वगेरे मटे. मोढुं आवी जाय तो जीर्ण स्याकरनो भुको करी पाणीमां देवुं. बावळनी छालना कोगळा कराववाथी शांति थाय ।

उपदंशहर होको—जडदो के पीधानी तमाकु शेर ०। लइ तेमां हिंगळो रोकडा १ भार गोळ नवटांक नाखी १४ गोळी करवी ते होकामां प्रथम

७ दिवस पावी. पहेलां जुलाब मींढीआवळ अने गोळनो देवो पछी हिमेज अने नसोतरनो जुलाब आपवो पछी उपर प्रमाणे धुंवाडी पीवी. ७ दिवसमां चांदी मटे. वायु पवन लेवो नहीं पथ्य राखवुं १४ दिवस चंमेलीना वेलानुं दातण करवुं अने पान मुखमां राखवुं तेथी मोढुं आवे नहीं अने चांदी गरमी विस्फोटक मटे. सात दिवसमां पुरो आराम न थाय तो चौद दिवस धुंवाडी लेवो ।

विस्फोटकनो होको—हिंगळो टां. ५ अकलकरो टां. ५ मायां टां. ५ टंकणखार टां. ५ बधां मेळवी तेनां पडीकां ९ करवां ते पडीकुं १ हमेशां होकामां पावुं. मुख आवे त्यारे बावळना पाणीना कोगळा करावबा तथा फटकडीना कोगळा करावबा. मोळुं धान्य खवरावबुं. विस्फोटक जाय ।

विस्फोटक प्रयोग—हिंगळो तो. ०॥= रुमीमस्तकी तो. ०॥= अकलकरो तो. ०॥= ए बधां घुंटी २८ पडीकां करवां. हमेशां २ पडीकां सवार सांज आपवां मोळुं जमवुं दुध पीवुं. फिरंगी फोडा विस्फाटक मटे ।

विस्फोटक गोळी—रसकपुर टां. १ हिंगळो टां. १ चित्रो टां. १ लविंग टां. १ ए सर्व वाटीने दाडम कोरी तेमां भरी उपर अफीण टां. ०॥ मुकी उपर आंबलीना पान दाबवां पछी घउंना लोटथी मुख बंध करवुं तथा दाडम उपरे लपेटवुं पछी खाडो गाळी तेमां बकरानी लींडी १ सुंडलो नाखी दाडम वचमां मुकी अग्नि आपवो १-२ पहोर पछी धुंवाडो निकळतो बंध थाय त्यार पछी काढी लइ तेमांथी अफीण अने आंबलीना पान काढी नाखो बाकी दाडम सहित वाटी १४ गोळी करवी उपर अलुणुं जमवुं चोखा खांड घउंनी रोटली दुध वगेरे जमवुं खारुं खाटुं तीखुं कांइ न आपवुं. चांदी फोडा फिरंग शुक्रदोष उपदंश मटे. हमेशां १ गोळी खवरावबी ।

धुंवाडी—चित्रो टां. २ हिंगळो टां. २ अरणीनी छाल टां. २ आकडाना मूळनी छाल टां. २ ए चारे भेळां वाटीने होका वाटे धुंवाडी पीवी होकामां पाणी भरवुं नहीं सवार सांज २ वखत पीवो. मुख आवे त्यारे बावळनी छाल उकाळीने तथा फटकडीना कोगळा करावबा तथा जीरुं साकर खवरावबुं. विस्फोटक मटे ।

धुंवाडी—कलइ अर्धो तोलो पिगाळी तेमां पारो तो. ०॥ नाखी हलावी पछी हिंगळो तो. ०॥ नाखी भुको करवो तेनां १४ पडीकां करी सवार सांज आखे शरीरे धुंवाडी देवो आराम थाय ।

धुंवाडी—अकलकरो तो. २ हिंगळो शोधेलो तो. ०॥ मेळवी १४ पडीकां करी बे वखत धुंवाडी आपवी ७ दिवसमां आराम थाय ।

धुंवाडी—हिंगळो पारो रसकपुर बोदार कायो मोरथुथु मस्तकी दरेक तो. ०॥ अर्धो, मोथ तो. ०। बोरडीनी छाल शेर ०। गुंदीनी छाल शेर ०। बधां खांडी ७ पडीकां करी हमेशां १ पडीकानी धुंणी देवी ।

धुंवाडी—मोरथुथु हिंगळो अने गंधक सरखे भागे वाटी शरीरे धुंवाडी आपवाथी विस्फोटक गरमी मटे ।

धुंवाडी—हिंगळो आकडानां मूळनी छाल मेंदीनी छाल दरेक तो. ०॥ अर्धो लइ वाटी १४ टीकडी करवी. हमेशां सवार सांज १ एक टीकडी होकामां पीवी अने ते धुंवाडानी फुंक चांदा उपर मारतुं जवुं. मोढुं आवे त्यारे चमेलीना पान अने गुलाबना फुल उकाळी अथवा नीचे बतावेल पोटलीना कोगळा करवा ।

मो वाळवानुं औषध—मो आवेलुं होय तो आमळां बेडां धमासो दरेक तो. ३ त्रण, बावळनी छाल चमेलीनां पान दरेक तो. १॥ डोढ लइ अधकचरां खांडी तेनी पोटली ३ करवी पछी पोटली १ पाणीमां उकाळी तेना कोगळा करवा आखो दिवस १ पोटलीनुं पाणी पहोंचाडवुं एम त्रणे पोटलीनो उपयोग करवो. मो आवेलुं पाछुं वळे. खोराकमां दुध भात आपवा १५ दिवस सुधी मीठुं-लवण खावा देवुं नहीं ।

१ माणसना हाडकांनो राखने बारिक वाटी कपडे चाळो दाबवाथी चांदी गरमी विस्फोटक मटे छे ।

२ पारो टां. १ काथो टां. ६ जुनो गोळ टां. ६ एकत्र करी लींमडाना रसमां ३ दिवस घुंटी पछे बोर जेवडी गोळी करवी. प्रथम सात दिवस मोळा चण्या खावा खांडने लींबुना रसना कोगळा करावचा. बीजे साते घउंनी धूळीने दुध जमाडवुं. गोळी पाणी साथे उतारवी. फिरंगी फोडा मटे ।

४ हिंगळो चूनो मोरथुथु त्रणे सरखे भागे लइ बारिक वाटी माखण साथे मेळवी चोपडवाथी फोडा मटे ।

५ मीठा पाणीनी छीप १ पैसाभार वाटी १४ पडीकी करवी. एक पडीकीमां हिंगळो ३ चण्याभार मेळवी सवार सांज टंके धुणी देवी. फोडा मटे ।

६ पारो टां. २॥ चित्रो टां. १। चित्रोनाटनो टां. १। काथो टां. ५ तालमखाना टां. २॥ लविंग टां. ३॥ एलचिमोटी टां. १। एलचिनानी टां. १। इसपन टां. १। जुनो गोळ ६ दोकडाभार साथे खांडी लोढानी कढाइमां पाणी शेर २ मुकी औषध नाखी लींमडाना लाकडाथी घुंटवुं पछी तेनी ७ गोळी करवी. ७ दिवस खवरावची पथ्यमां चण्यानी रोटली अलूणी आपवी दुध पावुं. फोडा मटे ।

७ हिंगळो टां. १॥ खेरना कोयला १ पैसाभार झीणा वाटी मेळवी १४ पडीकी करवी हमेशां १ पडीकी अंगारा उपर नाखी धुणि देवी एम ७ दिवस आपवी. पथ्यमां २ दिवस चण्यानी दाळ अने खांड खावा आपवी. पछी २ दिवस चोखाने दुध आपवुं. पछी २ दिवस मठनी दाळ अने द्राक्ष आपवी. पछी १ दिवस घी खांड अने घउंनी रोटली आपवी. ए रीते ७ दिवस धुणि लइ मलम चोपडवो ।

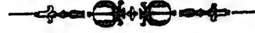
८ हिंगळो दोकडाभार मिण २॥ दोकडाभार घी २॥ दोकडाभार हिराकसी ०॥ दोकडाभार बधां मेळवी मलम करवो. ७ पाणीथी धोइ मलमलना कपडा उपर चोपडी चांदी उपर लगाडवुं ।

९ मोरींगणीनां पान कालींगडाना कडवा वेलानां पान काळा तल एकत्र करी मोरींगणीना रसथी घुंटी राखवुं. गड-गुंमड पाठां खरजवां दादर उपर चोपडाय ।

१० अमृतवेलने गायनी छासमां वाटीने चोपडवाथी खरजवुं मटे जीव निकळे अरुज चांदी मटे ।

११ सोपारी मायांफळ दाडमनी छाल पोस्तना डोडानो भुको समभागे लइ ए पांचे साथे बाळी घीमां कालवी चोपडवुं. चांदा मटे ।

१२ उंदरनी लींडी नानी सरसिया तेलमां वाटी चोपडवाथी वायुनी पित्तनी फोडानी चांदी मटे ।



सफेद कोढ–श्वेतकुष्ठ

कारण—आ कोढ पूर्व जन्मना कृतकर्मनुं फळ छे अने ते पापजन्य रोग छे. जो आ रोगमां मनुष्यनुं मरण थाय तो बीजा जन्ममां पण सफेद कोढ साथेज जन्म मळे छे एम ग्रंथकारो अने विद्वानो कहे छे, तेम आ रोगने औपसर्गिक अर्थात् चेपी कह्यो छे पण एटलो तात्कालिक चेपी होय एम अनुभवमां आव्युं नथी. ताव क्षय आंखो उठवो उपदंश लोहीबगाड वगेरे रोग संसर्गज–संक्रामक चेपी छे खरा पण ए रोगो जेटलो श्वेतकुष्ठ संक्रामक चेपी नथी पण दरद खराब होवाथी अने तेने औषध तात्कालिक असरकर्ता थतुं नथी तेथी दरदी आ दरदथी घणो कंटाळी जाय छे आ दरदने अंगे शरीरनी चामडीना रंगमां फेरफार थवा सिवाय वधु पिडा के दुःख थतुं नथी आ दरदमां लगाडवानुं अने खावानुं औषध कंटाळ्या विना छ बार महिना सुधी लेवाय तो अवश्य दरद मटी जाय छे ।

श्वेतकुष्ठहर रस—पारद गंधक हरडे बेडां आमळां भांगरानां मूळ बावची चित्रो भिलामां हरताळभस्म लोहभस्म कांस्यभस्म तल पिपर लींबोळीनां मींज गरमाळानो गोळ कुवाडियाना बी काळिपाठ कडु परडिनां मींज गुगळ शिलाजीत बधां सरखे भागे लइ लींमडाना पाननां रसनी १, बावचिना उकाळानी १ अने भांगराना रसनी २१ भावना आपी छाये सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ३ थी ६ रति मध घी तथा ०। तोलो बावचि अने ०॥ तोलो काळा तलना भुका साथे चाटी उपर पाणी पीवुं. दरद लांबा वखतनुं अने बहु फेलायेलुं होय तो १ वर्ष सुधी आ औषध सेववुं जोइए तो तदन आराम थाय ।

श्वित्रकाळानळ तेल—परडिनां मींज तो. ८ तुळसीना बी तो. ८ बावचि तो. २० कुवाडियाना बी तो. १०, कडवी घीसोडिनां बी लींडीपिपर अकोलनां बी कुष्ठ चित्रो गरमाळानो गोळ मनशिल चणोठी हिराकसी हरडे वावडींग हरताळ अरणिना मूळनी छाल काथो प्रत्येक तोला ४ चार लइ गौमूत्रमां वाटी लुबदी करी तेमां २ रतल गौमूत्र, २ रतल दुध, २ रतल दहीं, २ रतल बकरीनुं मूत्र अने ४ रतल सरसियुं तेल बधा साथे मेळवी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय तेल बाकी रहे एटले गाळी लेवुं हमेशां चोपडवुं ।

श्वेतकुष्ठहरी सोगठी—हाथीनी लादने सुकावी राख करवी तेमां हाथीनुं मूत्र नाखी क्षार काढवो १० वखत एनाए मूत्रमां नवी नवी राख नाखवी एटले तेमां क्षार आवी जशे. ते मूत्र १० रतल होय तो १ रतल बावचिनो झीणो भुको तेमां नाखी पकाववुं घाटुं थइ जाय एटले सोगठी वाळवी. सफेद कोढ पर चोप-डवाथी चामडी सारी थइ जाय छे ।

श्वेतकुष्ठहर लेप—बावचि तो. ६ हरताळ तो ४, मनशिळ चित्रो प्रत्येक तो ०॥ अर्धो लइ बधां साथे मेळवी गौमूत्रमां वाटी हमेशां चोपडवुं. १ महिनामां सफेद कोढ मटे ।

श्वित्रारि योग—गंधक त्रिफळा भांगरो भिलामां कडवी तुंबडीना बी समभागे खांडी भांगराना रसनी भावना दइ छाये सुकाववु मात्रा ३ थी ६ रति घी साकर साथे आपवी. आखो दिवस दरदीने भुख्यो राखी रात्रे खावा देवुं दिवसे बहु भुख लागे तो दुध आपवुं. सूरण दुध रींगणां अने मत्स्य मांस खोराकमां देवुं खाटां पदार्थ अने लीलां शाक बंध करवां ।

श्वतकुष्टारि रस—बावचिने साफ करी ८० तोला लइ गौमूत्रमां २१ दिवस पलाळी राखी पछी तेज गौमूत्र युक्त बावचिमां लोहभस्म तो ८ हरडेदळनो भुको तो. ८ नाखी प गौमूत्रने सूर्यने सखत तडके सुकाववुं पछी मोंउंबरीना मूळनी छालना उकाळाना २१ भावना देवी पछी ते चूर्णनुं जेटलुं वजन थाय तेटली शुद्ध ८ संस्कारवाळा पारद गंधकनी कज्जळी लइ ने कज्जळीने लींबुरसनी भावना दइ उपला चूर्ण साथे मेळवो सरगवाना मूळना रसनी अने नागरवेलना पानना रसनी ३ त्रण दिवस भावना दइ सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ०॥ तोलो हमेशां सवारमां पाणी साथे अथवा नीचे प्रमाणेनी विधिथी खावुं ।

चित्राना मूळनो भुको अर्धो तोलो गायना दुधमां रात्रे नाखी दहीं जमाववुं सवारमां हलावी छास करवी. १५ थी २० तोला छासमां ०। तोलो गंधक तथा ०। थी ०॥ तोलो उपलो रस मेळवी पी जवुं अथवा रस अने गंधक मोमां नाखी उपर छास पी जवी अने कोढ उपर प छास करतां निकळेल माखण चोपडवुं अने तडके रहेवु पम हमेशां करवुं ।

पहेला सप्ताहमां कोढनी जग्याये अग्निथी बळेलानी पेठे फोडला थाशे. बीजा सप्ताहमां ते फोडला पाकशे अने त्रीजा सप्ताहमां ते फोडला फुटी जइ रुझाशे. लींबुना रसमां केसरने घुंटी चोपडवुं अथवा उपर श्वेतकुष्टारि रसने छासमां वाटी चोपडवाथी रुझाशे ।

पहेला सप्ताहमां छास अने भातनो खोराक आपवो. बीजा सप्ताहमां छास भात साथे मठ आपवा. त्रीजा सप्ताहमां त्रिफळामां पकवेलुं गायनुं घी थोडुं भातमां आपवुं. आ प्रमाणे २१ दिवसमां सफेद कोढवाळो दरदी सारो थाय रोग मटे ।

१ बेडांनो छाल मोंउंबरीनी छाल १ पक शेर लइ उकाळो करी ने क्वाथनी भावना बावचिना बीने आपी तडके सुकवी नाखवुं पछी पाणीमां वाटी चोपडवाथी २-३ दिवसमां ते जग्याए फोडला थाशे. फुटी जाय एटले तेनापर आवळमां पकवेलुं तेल चोपडी रुझववुं ।

२ हरताळ सोनपत्री तोला ५ पांच, बावचि तो. २० साथे मेळवी चोपडवाथी चामडीनो रंग सरखो थाय ।

३ लोढानो भुको काळा तल सुरमो बावचि आमळां बधां साथे कडायामां वाळी भांगराना रसमां घुंटी चोपडवुं ।

४ कांकचना मूळ छाये सुकायेलां २ भाग अने गोळ १ भाग लइ मेळवी सवा तोलो हमेशां खवरावी उपर घउंनी चीज खावा देवी खारुं खाटुं देवुं नहीं।

५ सोमल तो. १ पापडियो खारो तो. ३ काथो तो. २ वाटी पाणीमां गोळो करी सुकववो पछी तेलमां घसी धोळा चाठां उपर चोपडवुं. चांदु पडे अने बळे तो सुखड घसी चोपडवी पछी आमळा बाळी भभराववां पटले रुझाय ।

६ काळी तुळसी काळुं जीरुं काळा तलनुं तेल साथे मेळवी चोपडवुं।

७ रति चणोठी तो. ५ काथो तो. ८॥ बेइ साथे पाणीमां वाटी चोपडवुं उपर गायनुं छाण घसवुं ।

८ मींढीआवळनी जडने लींबुना रसमां घसो चोपडवाथी सफेद कोढ मटे।

९ बावचि शेर ०। हरताळ टां. ५ गायना मूत्रमां वाटी चोपवाथी सफेद कोढ करोळिया मटे ।

१० मींढीआवळ चित्राना मूळ घोडाना मूत्रमां घसी लेप करवाथी सफेद कोढ मटे ।

११ बावचि टां. ४ हरताळ टां. १ गौमूत्रमां वाटी १ टांकनी गोळी करवी. गोमूत्र साथे घसो दिवस ७-१४ लगाडवाथी सफेद कोढ मटे ।

१२ मालकांकणी कुंवारी कन्याना मूत्रमां ४० दिवस भींजववी. तेनुं तेल काढो चोपडवाथी सफेद कोढ मटे ।

१३ काळा सापनी कांचळी अने लींमडानुं लाकडुं बेइने बाळो सफेद चाठां उपर चोपडवाथो सफेद कोढ जाय ।

१४ शेर १ खावानी वीशनगरी हळदरना गांठिया सारा जोइने लेवा धोइ कोरा करी पाणानो खरलमां नाखी ते बुडे पटलो मूळाना पंचांगनो रस नाखवो एक दिवस पलाळी राखी पछी घुंटी नाखवुं. रस सुकाय जाय त्यारे बीजो रस भरवो एवी रीते ७ भावना देवी पछी घुंटी चणिया बोर जेवडी गोळी वाळवी छाये सुकवी दिवसमां त्रण वखत त्रण त्रण गोळी खावी धोळो कोढ मटे ।

१५ हळदरनां गांठिया शेर १ लइ धोइ कोरा करी पाणानी खरलमां नाखी मूळाना पंचांगनो रस नाखवो तेमां मनशिळ तो. २॥ बारिक वाटो नाखवुं २४ कलाके पलळी जाय पटले घुंटवुं घुंटतां सुकाय जाय त्यारे बीजो रस भरी घुंटवुं एम ७ भावना देवी सुकवीने वबे तोलानी सोगठी वाळवी. घसी चोपडवाथी तथा खावाथी धोळो कोढ मटे ।

१६ लोढानो काटोढो अथवा गजवेलने शास्त्रविधि प्रमाणे शुद्ध करी जांबुना के रावणानां रसमां १२० वखत बुझाववी पछी जांबु के रावणानां रसना भठी द्वारा १२० गजपुट देवा. मात्रा २ थी ३ रति ३ महिना आपवुं. पहेले महिने कोढ झांखो पडशे बीजे महिने आछी चामडी आवशे त्रीजे महिने साफ थइ जशे ।

१७ कपीलो टां. २ चित्रो टां. २ वाटी पाणीमां खरल ३ वखत करी तुरी सोपारी साथे पाणीमां घसी चोपडवाथी २१ दिवसमां धोळा कोढ जाय ।

१८ गंधक टां. १ दुधमां नाखी पावो. धोळो कोढ मटे ।

कुष्ठ—लोही बगाड

विरोधीन्यन्नपानानि द्रवस्निग्धगुरूणि च ।
भजतां आगतां छर्दिं वेगांश्चान्यान्प्रतिघ्नताम् ॥
व्यायाममतिसंतापं अतिभुक्त्वा निषेविणाम् ।
घर्मश्रमभयार्तानां द्रुतं शीताम्बुसेविनाम् ॥
नवान्नदधिमत्स्यातिलवणाम्लनिषेविणाम् ।
व्यवायं चाप्यजीर्णेन्ने निद्रां च भजतां दिवि ॥
विप्रान्गुरून्धर्षयतां पापं कर्म च कुर्वताम् ।
अतः कुष्ठा विजायंते सप्त चैकादशैव च ॥

कारण—प्रकृतिने माफक न आवे तेवां तथा ऋतु देशकाळनी विरुद्ध एवां बहु चिकणां बहु स्निग्ध बहु भारे अजीर्ण करे तेवां अन्नपान खावाथी आवती उलटीने रोकवाथी जमीने कसरत के तापणी के सूर्यनो तडको वेठवाथी ठंडु गरम लांघण भोजन वगेरेमां नियम नहीं राखवाथी तडकेथी आवीने के महेनत करीने तुरत ठंडु पाणी पीवाथी अर्जीर्ण उपर भोजन करवाथी वमन विरेचनादिनो कोइ दिवस उपयोग नहीं करवाथी नवां धान्य दहीं माछलां खाटां पदार्थो वगेरेनुं बहु सेवन करवाथी अडद मूळा लोटनी चिजुं तल खारां अने गोळ बहु खावाथी अजीर्ण थयुं होय त्यारे स्त्रीसंग करवाथी दिवसे उंघवाथी ब्राह्मण गुरु के पूज्यनुं अपमान करवाथी वगेरे कारणे वात पित्त कफ लोही मांस त्वचा रस वगेरे सात धातु बगडी जइ कुष्ठनां विविध दरद पेदा थाय छे ।

पथ्यापथ्य—दस्त-जुलाब वमन लांघण जोग्वा मग जांगलमांसरस परवळ सरगवानी सींगु कडवा पदार्थो जव घउं जुनां धान्य तुवेर मध साकर रींगणा कारेलां वालोळ तांदळजो वगेरे हितकारक छे. स्त्रीसंग कसरत महेनत दोडवुं अर्जीर्ण करनारां गरिष्ठ भोजन बजारनी मिठाइ बहु खारां बहु खाटां पदार्थ मरचां वगेरे हानिकारक छे ।

चिन्ह—कपालकुष्ठ ओदुंबर मंडळकुष्ठ ऋक्षजिव्ह पुंडरिक सिध्मकुष्ठ काकणक किलास श्वेत ए आठ महाकुष्ठ छे. चर्मकुष्ठ किटिभ वेपादिक अलसक दद्रु चर्मदल पामा विस्फोटक रकसा शतारु विचर्चिका ए अगियार क्षुद्रकुष्ठ छे ।

कपाळ कुष्ठ—काळा राता मिश्रितरंगनुं ठिकराना जेवा रंगनुं खरसट सुकुं सबाका शूळ पीडावाळुं होय ते ।

औदुंबर कुष्ठ—उंबराना फळ जेवुं उपडेलुं पीडा सबाका बळतरा लालाश अने खंजवाळ आवती होय फरतां रुंवाडां पींगळा रंगना होय ते ।

मंडळ कुष्ठ—सफेद लाल मिश्रितरंगनुं जामेलुं सुंवाळुं उंचुं सोजावाळुं कुंडाळुं होय अने तेनी साथे जोडायेलां बीजां कुंडाळां होय ते ।

सिध्म कुष्ठ—घसवाथी शरीरमांथी सफेद लाल भुकी खरे अने घणे भागे छातीमां होय तुंबडीनां फुलना जेवा रंगनुं होय ते ।

काकण कुष्ट—चणोठी जेवा लाल रंगनुं तीव्रवेदनावाळुं पाके नहीं तेवुं त्रिदोषनां चिन्हवाळुं असाध्य छे ।

पुंडरिक कुष्ट—सफेद रंगनुं लाल छेडावाळुं कमळपत्र जेवुं लालाश पडतुं उचांइवाळुं होय ते ।

ऋक्षजिव्ह कुष्ट—खरसट राता छेडावाळुं वचमां काळाश पडतुं पीडावाळुं रींछनी जीभना आकारनुं होय ते ।

एक कुष्ट—पीडा न थाय घणी जग्यामां फेलायेलुं होय माछलीनी चामडी जेवुं होय ते ।

गजचर्म कुष्ट—हाथीनी चामडी जेवुं जाडुं खरसट होय ते ।

चर्मदल कुष्ट—लालाश पडतुं सबाका निकळे खंजवाळ आवे फोडला उपडे अने स्पर्श सहन न थाय ते ।

विचर्चिका कुष्ट—खरज साथे काळा स्त्रावषाळी फोडलीयो उपडे ते ।

वैपादिक कुष्ट—त्वचा अने मांसने बगाडीने हाथ के पगमां जामेला दोषथी फोडलीयो उत्पन्न थाय तेमां खंजवाळ अने बळतरा थाय चामडी चिराइ जती होय तेम थाय तथा खरसट रुक्ष थाय ते ।

पामा कुष्ठ—नानी मोटी स्त्राव अने खंजवाळवाळी फोडलीयो खस थाय ते ।

कच्छु कुष्ठ—खस वधी जाय अने असह्य बळतरा साथे मोटा फोडला थाय ते ।

दद्रु कुष्ठ—खंजवाळ लालाशवाळी फोडलीयो थाय अने चकरडां थाय ते ।

विस्फोटक कुष्ठ—काळा लाल मिश्रितरंगना फोटला उपडे फोडलानी चामडी पानळी होय ते ।

किटिभ कुष्ठ—सुकायेला गुंमडां जेवुं खरसट काळुं खंजोळय घणी होय ते ।

अलस कुष्ठ—खंजवाळ अने लालाश पडती घणी फोडलीयोथी युक्त होय ते ।

शतारु कुष्ठ—लाल स्त्राववाळुं अने पीडाकारी घणा चांदांवाळुं होय ते ।

ए प्रमाणे जणायेलां अने बीजां त्वचाविकार अने आखा शरीरनो लोहीबगाड वगेरे दरदो कुष्ठ रोगमां गणाय छे. खस दादर खरजवुं विस्फोटक वगेरे केटलाक सामान्य कुष्ठरोगना उपचार तथा सफेद कोढना उपचार जुदा प्रकरणोथी बताव्या छे पण आ कुष्ठ रोगमां बतावेला उपचार उपर जणावेलां अने बीजां बधां कुष्ठ रोगोमां लागु पडे छे ।

गंधक रसायन नं. १—गंधक भांगरामां शोधेलो तो. २०, एलचि सुंठ पिपर मरी तज तमाल नागकेसर हरडे भांगरो मंडूर बेडां आंमळां कुष्ठ चोपचिनी बाबचि कज्जळी आसोंध साकर प्रत्येक तोला ५ पांच खांडी चूर्ण करी भांगराना रसनी लोढाना पात्रमां भावना देवी. मात्रा ३ थी १२ रति दुध साथे आपवी ।

सर्वकुष्ठ कृतान्त रस—पारद तो. ८ गंधक तो. १६ लोहभस्म ताम्रभस्म अभ्रकभस्म रसमाणिक्य हरताळभस्म रससिंदूर प्रत्येक तो. ४ चार, भिलामां हरडे वावडींग खाखरानां बी आंमळा बेडां लींबोळीनां मींज उभीभोरींगणीनां डोडवां इंद्रामणानां डोडवां काळीपाट मरडासींगी गुगळ शिलाजीत वज हळदर आंबाहळदर

प्रत्येक बबे तोला साथे मेळवी खांडी झीणो भुको करी खेरना मूळनो उकाळो त्रिफळानो उकाळो अने गळोनो उकाळो प्रत्येक ८० अेंशी तोला मेळवी धीमे तापे पकाववुं. घाट्ठुं थवा आवे त्यारे तेमां गायनुं घी तोला १० नाखवुं अने ठरी जाय त्यारे मध जोइए तेटलुं मेळवी बबे रतिभारनी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी दुध के पाणी साथे आपवी. धोळो कोढ गळत्कोढ-पत कपाळकुष्ठ ऋष्यजिव्ह खरजवुं धाधर खस लुखस करोळिया मंडळकुष्ठ वगेरे १८ जातना कुष्ठरोग मटे ते शिवाय कमळो पांडुरोग मंदाग्नि भगंदर बरल लिवर कृमि सोजा हरस शूळ ए दरदो पण मटे छे।

पंचनिंबामृत रस—लींमडानो कोल (फुल) तो. २० लींबोळीनां मींज तो. ४० अंतरछाल तो. ६० मूळनीछाल तो. १०० पांदडां कुणां तो. १०० तथा पारद गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म हरडे बेडां आमळां सुंठ पिपर मरी ब्राह्मी गोखरु भिलामां चित्रो वावडींग वाराहिकंद हळदर दारुहळदर शिलाजित बावचि साकर कुष्ठ इन्द्रजव काळीपाठ प्रत्येक तो. २० वीश अने खेर बियो लींमडानुं पंचांग भांगरो प्रत्येकना घाटा उकाळानी अकेक भावना आपी सुकावी मधमां के पाणीमां ६ रतिभारनी गोळी वाळवी. हमेशां शरुआतमां सवार सांज ४ गोळी मध घी साथे चटाडवी ८ दिवस पछी ६ छ गोळी सवार सांज लेवी एम दर अठवाडिये ४ चार गोळी वधारवी. हमेशां सवार सांज २४ चोवीश गोळी थाय त्यारपछी तेज मात्राथी २ थी ३ महिना सुधी सेववी. भुख लागे त्यारे भात रोटली घी दुध वगेरे स्निग्ध खोराक लेवो. आना सेवनथी विस्फोटक गळत्कोढ श्वेतकोढ गुमडां लोहीबगाड धाधर खस खरजवुं नासुर भगंदर उपदंश प्रमेह प्रदर विष-विकार तथा कुष्ठनां बधां दरदो मटे छे।

अमृतभल्लातक चाटण—भिलामां तो. १२८ लइ कटका करी तेमां कच-रेली गळो तो. १२८ नाखी ३० शेर पाणीमां उकाळो करवो चतुर्थांश पाणी रहे एटले कपडे गाळी तेमां घी तो. ३२ दुध तो. २५६ साकर तो. ६४ मध तो. ३२ बधां साथे मेळवी पकाववां घाटुं थाय एटले तेमां निचेना ओसडियां नाखी हलावी बरणी भरी राखवी. बिलीगर्भ अतिविष गळो बावचि कुवाडियानां बी लींबोळीनां मींज हरडे बेडां आंमळा मजिठ मरी सुंठ पिपर अजमा सिंधालुण मोथ पद्मकाष्ठ वज नागकेसर खडसलियो तमाल वाळो सुखड गोखरु कचुरो रतांजळि प्रत्येक २ बे तोला लइ खांडी भुको करी उपरना पाकमां मेळवी हलाववुं. गळपण वधु जोइए तो मध जरुर जेटलुं उमेरवुं. हमेशां १-२ तोला चाटवुं. तेनाथी बधां कुष्ठ लोहीबगाडनां दरद हरस वगेरे मटे छे. चाटण खानारे औषध चालतुं होय त्यां-सुधी कसरत तडको अग्निनो ताप खटाइ मांस दहीं स्त्रीसंग तैलाभ्यंग पंथ एटलां वानांनी परेजी राखवी।

महामंजिष्ठादि क्वाथ—मजिठ कडाछाल गळो मोथ वज सुंठ हळदर दारुहळदर भोरींगणीनां मूळ लींमडानी छाल परवळ कडु करियातु भारंगी चित्रो वावडींग मोरवेल देवदार इन्द्रजव भांगरा लींडीपिपर त्रायमाण काळीपाट खेर शतावरि हरडे बेडां आमळां वकान बियो गरमाळो धउंलो बावचि लाल सुखड

वायवरणो दंतिमूळ उंबरानी छाल अरडुसी खडसलियो उपलसरी अतिविष धमासो इन्द्रामणां वाळो बधां सरखे भागे खांडवां. खस खरजवुं धाधर लोहीबगाड पत गळत्कोढ वगेरेमां बहु फायदाकारक छे. हमेशां १-२ तोलानो उकाळो करी पावो।

आरोग्यवर्धनी गोळी—पारद गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म ताम्रभस्म प्रत्येक तोलो १ एक, त्रिफळा तो. १० शिलाजित तो. १५ गुगळ तो. २० चित्रो तो २० कडु तो. ७० साथे मेळवी लींमडाना पानना रसमां ३ दिवस घुंटी ४ रतिभारनी गोळी वाळवी. हमेशां ४ थी २० गोळी दुध साथे आपवी. लोहीबगाड कुष्ट झाडानी कबजीयत सोजा पांडुरेग कमळो मेदवृद्धि कबजियात मंदाग्नि खस धाधरमां तथा बधा रोगमां अनुपानभेदथी उपाय छे।

कच्छुराक्षस तेल—मनशिळ हरताळ हिराकसी गंधक सिंधालुण सुंठ दारुडीमूळ पाषाणभेद कुष्ट पिपर कळगारि कणेरमूळ कुवाडियानां मूळ वावडींग चित्रो दंतिमूळ लींमडानां पान प्रत्येक १ एक तोलो, आकडानुं तथा थोरनुं दुध ४ चार तोला, गौमूत्र २५६ तो. सरसियुं तेल ६४ तो. मंदाग्निथी पकाववुं. बधी जातना कुष्ट त्वचाविकार लोहीबगाड वगेरे मटे छे. मालिस करवुं।

सर्वकुष्ठहर लेप—बावचि तो. २०, सुंठ हरताळ हरडे करंजबी सरसव हळदर सिंधालुण वावडींग कुवाडियानां बी लींमडाना पान वज मालकांकणां पारो गंधक सरगवानो छाल दरेक तोला ५ पांच साथे मेळवी गौमूत्रमां के पाणीमां वाटी चोपडवाथी बधां कुष्ठ मटे छे।

गळत्कोढ पत-रगतपितना उपाय

१ मसाणमांथी हाडकां बळेल लावी तेलमां कालवी ७ दिवस शरीरे चोपडवाथी काळो कोढ मटे।

२ मोरविष्टानुं तेल डोलायंत्रथी काढी चोपडवुं. कोढ मटे।

३ लींबुमूळ साकर मोथ हरडे पाणीमां घसी ४० दिवस पावुं. कुष्ठरोग मटे।

४ लींबोळी १ थी मांडी १०० सुधी चडती खावी पछी उतरती १ सुधी खावाथी कोढ मटे।

५ सरसियुं तेल गौमूत्र सिंधव समुद्रफीण पटलां मेळां करी ७ दिवस लेप करवाथी बधी जातना कोढ मटे।

६ गधेडानां लींडा शेर ५। बाळी गायना माखणमां मेळवी वाटी चांदां उपर दिवस १५ थी २० चोपडवुं. कोढ जाय।

७ शाबरसींग टां. २ पाणीमां घसी १ मास पावुं. पत रगतपित मटे।

८ सरपंखानो रस तो. १ तथा उंबरानो रस तो. १ खाखरानां मूळनो अर्क तो. ०। साथे मेळवी १ मास पावो. पत-रगतपित जाय।

९ ऊंधाफुलीनां पंचांगने वाटी घारां उपर पींडी करी बांधवुं. अरुझ चांदी रुझाय पत-रगतपित मटे।

१० लींमडानां पान शेर ०॥ आकडानां पान पाकेलां शेर ०॥ जीरुं शेर ०॥ हरडे शे. ०॥ चित्रानी छाल शे. ०॥ बधां वाटी गायनुं दुध शे. १० मां उकाळी तेमां गोळ शे. १ नाखी मेळवी ४० गोळी करवी. हमेशां १ एम दिवस ४० खावुं खारुं खाटुं तेल हिंग बंध करवां. रगतपित मटे।

११ श्वेतकंदरु सोनागेरु गोपीचंदन घसी गांठ उपर चोपडी उपर कागळ चोपडवो. गांठ गळे ।

१२ मालकांकणी ४ दिवस गौमूत्रमां भींजवी राखी पछे पाताळयंत्रे तेल काढी मालिस करवुं कुष्ट जाय ।

१३ पारेवानी विट ६ छ रति दिवसमां २ टांक देवी. ४९ दिवस आपवी उपर चण्या मग कळथीनी रोटली खवरावची. कुष्ठ जाय ।

१४ आकाळो जुनो लुणो लाग्यो होय ते टां. १ धूसो (थुंहु) टां. ५ माखण टां. ५ अरणीनां पाननो रस टां. ५ ए त्रणे भेगां करी लोढानी कडाइमां गरम करी हेठुं उतारी लोढाने बतेथी घुंटवुं. चोपडवाथी १८ जातना कोढ जाय ।

१५ गधेडानां लींडा उनाळानां सुकां अने शियाळानां लीलां लइ माटलामां भरी हेठे छेद करी पछे चोतरफ अडायां छाणां भरी नीचे खाड करी तेमां माटलुं मुकी हेठळ कोडीनो प्यालो मुकी पाताळयंत्रे चुवो काढवो ते शीशामां भरी मुकवो. तुळसीपत्रमां १ रति खवरावतुं शरीरे चोळवुं. ४९ दिवस सुधी. उपर थुली साकर घी दुध चण्या घउं चोखा मठ वगेरे खावुं शाक तांदळियानुं जीरे वघारेलुं खावुं. गळत्कोढ धाधर खस खरजवां मटे ।



धाधर–दादर–दद्रु कुष्ठ

कारण—बहु खाटां बहु खारां बहु तीखां पदार्थो खावाथी शरीर मलिन राखवाथी बीजानो चेप लागी जवाथी लोही बगाडनारा आहारविहारथी आ दरद थाय छे आ एक प्रकारनो कुष्टरोग छे. तुरतनी धाधर लाल होय छे तेमांथी पाणी निकळे छे अने जुनी थाय छे ते काळी अने सुकी थाय छे ।

उपचार—आरोग्य वर्धनी गोळी सवार सांज ३ त्रण पाणी साथे आपवी. गंधक रसायन २ बे वाल घीमां चटाडवुं. लोहपर्पटी ३ त्रण रति मध घीमां देवी. महामंजिष्ठादि क्वाथ पावो. संशमनी ६ थी २४ गोळी पाणी साथे देवी. कच्छुराक्षस तेल के दद्रुघ्न मलम चोपडवो ।

कुष्ठादि लेप—कुष्ठ वावडींग वावचि कुवाडियानां बी हळदर सिंधालुण सरसव पारो गंधक बधां समभागे लइ लींबुना रसमां के दहींमां वाटी चोपडवुं ।

दरदादि लेप—हिंगळो मनशिल गंधक पारद पिपर वछनाग वावडींग हळदर मरी हरडे सुंठ मोथ समुद्रफिण वावचि गरमाळो कुवाडियानां बी सम-भागे खांडी लींबुरसमां के गौमूत्रमां वाटो चोपडवुं ।

काळीधाधरनो लेप—सफेद राळ शिकोतरो पळियो लाख आमलसारो गंधक दरेक तो. १० दश, चण्यानी दाल तो. २५ पाणीमां भींजवी वाटी पछी बीजां वसाणां मेळवी बारिक करी चोपडवाथी काळी धाधर मटे ।

दद्रुघ्न सोगठी—आमलसारो गंधक वरखी हरताळ मोरथुथु हिमजीहरडे बधां सरखे भागे खांडी कपडछान करी लींबुरसमां सोगठी करी छाये सुकावची जरुर पडे त्यारे लींबुरसमां वाटी चोपडवी. लाल तथा काळी धाधर मटे ।

गंधकादि लेप—आमलसारो गंधक साकर बावळनो गुंद टंकण फुलावेलो समभागे खांडी पाणीमां वाटी लगाडवाथी धाधर मटे ।

कच्छूहर लेप—कुवाडियानां बी पळियो लाकडियो गंधक लोबान दरेक तो. १० दश, कांटाळांमायां नंग २५ अशेळियानां बी तो. २॥ बधां साथे खांडी बारिक करी ७ दिवस सुधी पाणीमां कालवी-भींजवी राखी चोपडवाथी धाधर खस मटे ।

धाधरना प्रयोगो

१ मींढीआवळनां मूळने लींबुरसमां वाटी चोपडवाथो धाधर मटे ।

२ हिंगळाने लींबुरसमां वाटी लगाडवाथी धाधर मटे ।

३ पलाशपापडो लींबुरसमां वाटी लगाडवाथो धाधर मटे ।

४ वांझकंटोलानां पांदडां वाटी बांधवाथी धाधर मटे ।

५ वकाननना पाननो रस लसण लींबोळी मींज सोमल दरेक टां. १० दश, वछनाग अने मोरथुथु टां. १ एक लइ बधां साथे घुंटी, सरसिया तेलमां मेळवी हांडलामां भरवुं उपर पापडियो खारो टां. १० भुको करी मुकवो. हांडलां उपर पाणी भरी थाळी राखवी. पछी चुला उपर चडावी अग्नि आपवो. तळेथी तेल पडे ते चोपडवाथी धाधर खरजवुं मटे ।

६ गधेडानां लींडा थोरनो डांडली कचरी हांडलीमां नाखी उपर थाळी पाणी भरी मुकवी ते उपर वराळ जामे ते लइ चोपडवुं. धाधर खरजवां मटे ।

७ कुवाडियानां बी थोरपत्रना रसथी ३ दिवस भींजवी राखी पछे हलावी धाधरने छाणाथी घसी ते उपर चोपडवुं धाधर जाय ।

८ साकर अने हिमजी हरडे लींबुना रसमां घसी चोपडवाथो धाधर मटे ।

९ उभीभोरींगणीनुं पाताळयंत्रथी तेल काढी चोपडवाथी धाधर मटे ।

१० चोखो लोबान अने लुण वाटी चोपडवाथी धाधर मटे ।

११ उंटनुं ताजुं लींडुं धाधर पर घसवुं. धाधर मटे ।

१२ चणोठी अफीण पितपापडो खाखरानां मींज मींढीआवळ पापडियो खारो समभागे वाटी लींबुरसमां घुंटी लोहीयाली करी ७ दिवस चोपडवुं. धाधर खरजवुं मटे ।

१३ मनशिळ वावचि आमलसारो गंधक धाणा आंबाहळदर सरखे भागे लइ वाटी चूर्ण करवुं. हमेशां बे आनीभार पाणीमां ८ पहोर पलाळी घुंटी रस काढी १६ दिवस पावाथी पित्त धाधर खस पामा जाय ।

१४ खरसाणी अजमो कुवाडियो पळियो दरेक तो. १० दश, अफीण तो. २॥ वाटी पाणी शेर १ नाखी ३ दिवस राखो पछे चोपडवुं. ३ थी ७ दिवस चोपडवाथी काळी धाधर तथा गमे तेवी मूळथी जाय पछे थाय नहीं ।

१५ खाखरानां बी मींढीआवळ समभागे वाटी लींबुरसमां घुंटी चोपडवाथी धाधर मटे ।

१६ चमारदूधेलीनुं दुध दिवस ३ थी ७ चोपडवाथी धाधर जाय ।

१७ आमळां शेर १० चोखानुं ओसामण शेर २॥ मां ३ दिवस पलाळो पछी वाटी चोपडवाथी धाधर जाय ।

१८ आमळां तथा साकर दरेक टां. २ बे लइ दिवस ७-१४ हमेशां खवरावबुं धाधर मटे ।

१९ कुवाडियानां बी टां. २ पळियो टां २ लाख टां २ आमळां टां. ४ बधां वाटी गायनी छासमां मेळवी ८ दिवस तडके राखी पछी तडके बेसी खरड करवो. धाधर मटे ।

२० पारो टां. ५ गंधक टां. १० नो कजळी करवी. कुवाडियानां बी पै. ७भार वाटी मेळववां गायना काचा दुधमां पलाळी पोठी चोळे ते प्रमाणे चोपडवुं पाणी लगाडवुं नहीं. ७-१४ दिवस चोपडवाथी धाधर जाय ।

२१ साठी चोखा टां. २॥ साकर टां. २॥ आमलसारो गंधक टां १ बावळनो गुंद टां. १॥ पाणीथी वाटी चोपडवाथी धाधर मटे ।

२२ जवखार अने कुतेलांनो रस मेळवी धाधर पर चोपडवो ।

२३ शेषगुंदर काथो साकर गंधक टंकण नवसार मोरथुथु अफिण सरखे भागे लइ लींबुना रसमां घुंटी चोपडवाथी धाधर जाय ।

२४ सिकोतरो पळियो टां. ५ पांच, कुवाडियानां बी टां. १० वाटी पीळो गुल्ल मोटेफुले घणी पांखडीनां फुलवाळो तेना पाननां रसमां ३ दिवस भींजवी चोपडवाथी बधी जातनी धाधर मटे ।

२५ हिमेज अने मींढीआवळनां मूळ वाटी चोपडवुं ।

२६ धाधर खुब खंजोळी जरा पाणी निकळे भीनुं थाय तेना पर लोबाननो भुको करी भभराववो ।

२७ आमलसारो गंधक वण फुलाव्यो टंकण गुगळ साकर सरखे भागे लइ लींबुरस तथा पाणीथी वाटी चोपडवाथी ७ दिवसमां धाधर मटे ।

२८ हरडे साकर लोबान लींबोळीमींज मोरथुथु अफिण समभागे लइ लींबु-रसमां वाटी चोपडवाथी धाधर जाय ।

२९ नेपाळो तो ०॥ बोदार तो. ४ गोळमां गोळी चण्या जेवडी करवी. सवारमां १ गोळी गरम पाणी साथे देवी. पथ्यमां चोखा दुध खावुं. खाटुं कांइ खावुं नहीं. ७ थी १० दिवस आपवाथी काळी धाधर मटे ।

३० बोरडीनी लाख पळियो अने गंधक समभागे पकठां करी गायनी छास साथे चोपडवाथीं धाधर मटे ।

३१ कुवाडियानां बीनो लोट अने जव खांडी कुसका काढी नाखी तंदुलनो लोट एकत्र करी गायना दहींना काचा पाणीमां आथी २ दिवस राखी चोपडवाथी सर्व प्रकारनी धाधर मटे ।

३२ वाडदुधेलीनो रस चोपडवाथी धाधर मटे ।

३३ अफिण अने राइ सरखां लइ गोळना पाणीमां वाटी ३ दिवस चोपडवुं धाधर मटे ।

३४ नेपाळो पळियो समभागे लइ वाटी चोपडीये तो धाधर मटे ।

३५ सहदेवी रस चोपडवाथी धाधर मटे ।

३६ राइ उधई खाधेल आकडानुं थड बेइ दहींमां वाटी घुंटी चोपडवाथी धाधर मटे ।



खरजवां

चिन्ह—हाथे पगे कानની કोरे साथामां पगने तळे वगेरे ठेकाणे थाय छे. केटलाकमांथी पाणी झरे छे अने केटलांक सुकां होय छे. प्रथम लाल थइ सुजी आवे छे पछी तेना पर फोडलीओ थइ फुटी झवे छे ।

खर्जुनाशन तेल—गौमूत्र शेर २ कणेरना पाननो रस शेर २ गायना छाणनो रस शे. २ बधांने लोढाना कडायामां नाखी तेमां मरी धोळो वछनाग मनशिळ मोथ हळदर दारुहळदर नखोतर रतांजळी देवदार प्रत्येक तो. २ बे लइ कल्क करी तथा सरसियुं तेल शे. २ नाखी पकाववुं पाणी बळी जाय पटले तेल गाळी लेवुं. लगाडवाथी खरजवुं मटे. खस धाधर लुखस गजचर्म त्वचाविकार वगेरे मटे ।

खरजवाना सादा प्रयोग

१ अजमां वाळी पाणीमां वाटी चोपडी उपर परडानुं पान बांधवुं ।

२ मोरथुथु अने फटकडी अकेक तोलो वाटी २० तोला गायना माखणमां घुंटी चोपडवाथी खरजवुं मटे ।

३ शीळो-कांटाळुं जनावर थाय छे तेने बाळी काचा देशी परडियामां वाटी चोपडी उपर परडानुं पान बांधवुं ।

४ उंधाफुलीनुं पंचांग वाटी चोपडवाथी खरजवुं मटे ।

५ सुरज काचवो जमीन उपर रहे छे तेनी ढाल (मांस माटी काढी नाखी बाकी रहे ते) हांडलां के टीबमां बाळी घी मां कालवी मलम करवो. गमे तेटलुं जुनुं खरजवुं ४ दिवस चोपडवाथी मटे छे ।

६ आकडानां कुंपळां बाजराना कुसका वाटी चोपडी उपर पाटो बांधी पहोर राखवो एम पांच पाटा बांधवाथी खरजवुं मटे ।

७ खारेकना ठळीया कडाइमां बाळी सरसिया तेलमां घुंटी चोपडवाथी करवलां गुंमडां रुझाय ।

८ खजुर टां. १० लसण टां. २॥ हिंग टां. २॥ एकत्र करी वाटी थेपली करी खरजवां उपर बांधवी. हमेशां नवी थेपली ३ दिवस बांधवाथी खरजवुं मटे।

९ सिंदोर दारुहळदर गंधक पारो काळुं जीरुं मरी जीरुं मणसल बधां समभागे लइ वाटी गायना घी मां मथीने लेप करवो. खरजवुं मटे ।

१० भींडीना बीनो अर्क काढी चोपडवाथी खरजवां मटे ।

११ काळां मरी तो. १ आमळां तो. २ ने बेइ बाळवां. मोरथुथु तो. १ लइ लोढा उपर फुलाववुं. गायनुं घी तो. २ ताजुं लेवुं. लोढाना वाटकामां घी गरम करी पछे त्रणे वस्तु नाखी हलावी घुंटवुं. ते मलम खरजवां उपर ३ थी ५ दिवस चोपडवाथी खरजवां मटे ।

१२ उजळी खांड टां. १ मोरथुथु टां. ०। त्रांबाना कलइ वगरनां ठाममां माखण साथे त्रांबाने कळशे मरदी लगाडवाथी खरजवुं जाय ।

१३ तुंबडानां बी वाळी गायना माखणमां कालवी चोपडवुं. खंजवाळनां चांदां खरजवां मटे ।

१४ लुवारनी कोडयनो धुंह टां. ४ मरी टां. २ सिंदुर टां. १ काथु टां. १ गायना दुध साथे परती चोपडवाथी खरजवां मटे ।

१५ आमळां टां. १ पोस्त टां. १ हळदर टां. १ काळीसोपारी १ टीबमां बाळवां पछी मरी टां. ०॥ मोरथुथु टां. ०॥ कपिलो टां. १ बधां एकत्र करी गायना घीमां मलम करी चोपडवो. खरजवां मटे ।

खस-करोळिया लुखस चीत्री वगेरे चामडीनां दरदो

कारण-चिन्ह—खावामां संभाळ नहीं राखवाथी आ दरद थाय छे. गंदा छोकरांने वधु थाय छे. खस घणेभागे हाथ पग अने आंगळांना वचला भागमां थाय छे. खंजोळया करवाथी जांग पग गुह्यभाग वगेरे ठेकाणे फेलाय छे चेपी छे ।

कनक मलम—वावचि आंबाहळदर आमलसारो गंधक [illegible] तो. ५ पांच, मोरथुथु तो १। साथे वारिक वाटी धतुराना पाळने कोरी तेमां [illegible] उपर बंध करी उपर भीनुं कपडुं वींटी उपर माटी चोपडी एक खाडामां रेती भरी तेमां मुकी उपर बे-त्रण छाणानो अग्नि आपवो. ठंडु थये पाछु काढी [illegible] तेलमां घुंटी चोपडवाथी खस मटे ।

रसादि मलम—पारो गंधक जीरुं शाजीरुं हळदर दारुहळदर मनशिल मरी सिंदोर समभागे खांडी गायना घीमां कालवी चोपडवाथी ३ दिवसमां खस मटे ।

अर्क तेल—आकडानां पाकेलां पान खांडी तेनो रस शेर २, हळदर [illegible] झीणी वाटी, सरसियुं तेल शे. ०॥। साथे भेळवी लोढाना कडायामां पकाववुं. फीण चडे त्यारे उतारी लइ लेवुं. आ तेल चोपडवाथी खस मटे ।

बाळकनो खसनो मलम—गंधक तो ०॥ मोरथुथु तो. ०। [illegible] काथु तो. २॥ गोपीचंदनं (माटी) तो. २॥ साथे वाटी कपडछान करी गायना माखणमां घुंटी मलम करवो. चोपडवाथो बाळकनी खस मटे छे ।

खस-करोळियाना सादा प्रयोग

१ जीरुं तो. ४ सिंदोर तो. २ पाणीमां कालवी १० तोला सरसिया तेलमां पकावी चोपडवाथी खस मटे ।

२ सिंधालुण कुवाडियानां बी सरसव पिपर सरखे भागे खांडी [illegible] रसमां अथवा सुरकामां वाटी चोपडवाथो खस जाय ।

३ मूळानां बीने अघेडाना रसमां घुंटी तथा केळना रसमां [illegible] वाटी चोपडवाथी खस अने करोळिया मटे छे ।

४ सिंधालुण कुवाडियो सरसव पिपर सरखे भागे खांडी छासमां अथवा सुरकामां वाटी चोपडवुं. खस जाय ।

५ जीरुं तो. ४ सिंदोर तो. २ नी लुगदी करी सरसियुं तेल तो. २० [illegible] पकावी चोपडवुं ।

६ पारो गंधक हरताळ मनशिळ चोखा वावचि हिरादखण मोरथुथु राळ हिंगळो काथो कपिलो मोदार साचो सरखे भागे साथे वाटी मलम करवो।

७ बेरजो राळ गंधक मिण सरखे भागे वाटी तेमां गायनुं घी जोइए तेटलुं नाखी मलम करवो।

८ गंधक सिंदोर फटकडी ए सरखे भागे लइ गायना माखणमां मथी चोपडवाथी पामा खाज खस जाय।

९ राळ काथो सिंदोर मनशिळ चूनो गंधक मोरथुथु सरखे भागे खांडी गायना घीमां मलम करवो।

१० मनशिळ हडताळगोदंति साथे घुंटवुं. गायनुं घी शे. ०॥ गरम करी तेमां भिलामां आखां नाखी पकाववां. पाकी जाय त्यारे उतारी थाळीमां पाणी भरी तेमां टालवी ठरेथी काढी वाटी तडके बेसी चोपडी पछे छाण शरीरे चोपडी ठंडे पाणीये नहावाथी खस खाज पामा जाय।

११ आमलसारो गंधक टां. १ धतुराना फळमां भरी सुतरथी वींटी उपर छाण लपेटी अग्निमां पकववुं. ठंडु थये काढी लइ तेलमां रगडी चोपडी ४ प्रहर [illegible]वुं पछी छाण चोळी नहावाथी खस जाय।

१२ गंधक टां. १, मोरथुथु बावचि हळदर मरी चूनो दरेक टां. २ बे लइ बारिक करी धुपेल तेलमां गरम करी चोपडवाथी खस मटे।

१३ कुवाडियानां बी तांदुळ लाख बारिक करी गायनी छासनी ५ भावना दइ तेनो खरड करवो. खस धाधर खरजवां जाय।

१४ हळदर बावचि लींमडानां पान आमळां समभागे खांडी ०। थी ०॥ तोलो गोमूत्र साथे २ टंक पीवुं. ७ दिवस पीवाथी खस जाय।

१५ बावचि टां. १ गंधक टां. ३ तेल पाव १। पाणी पाव १। एकत्र करी मेळवी खरड करवो. खरड ८ प्रहर राखी भेंसनुं छाण चोळी नहावुं खस मटे।

१६ पारो हळदर मरी सिंदोर गंधक मनशिळ ए सर्व समभागे लइ सुक्ष्म करी गायना घीमां मलम करी ३ दिवस चोपडवाथी पामा जाय।

१७ गंधक मोरींगणीनां फळमां भरी ३ दिवस राखवुं पछी तेना उपर छाण लपेटी गोळो करी सुकवी अग्निमां पकाववो. पाकी गये काढी लइ सरसिया तेल साथे वाटी तडके बेसी खरड करवो. ३ खरड करवाथी खस जाय।

१८ पारो गंधक हरताळ दरेक टां. १ एक, फटकडी मनशिळ जवखार वछनाग मोरथुथु हळदर नेपाळो पापडियो खारो हरडां बेडां मालवण बावचि सिंदोर साजीखार टंकणखार पडवास हिरादखण हिराकसी दरेक तो. ०। पा अने सरसियुं तेल शेर १ लइ तेमां पकावी चोपडवाथी खरज धाधर लुखस वरम मटे।

१९ आमलसारो गंधक दोकडा १॥ भार धतुरानां फळ ७ मां भरी सुतर वींटी छाणानो अग्नि आपवो. पछी तेल शेर ०। मां मरदी चोपडवाथी लुखस मटे।

२० धमासो तथा खांड टां. १ एक लइ बारिक चूर्ण करी हमेशां पाणी साथे १४ दिवस फाकवाथी खरज खरजवां लुखस शिळस शमे।

२१ खारेक शेर १ ना फडशीयां करी लींबुरसना ३ पट देवा. सिंधालुण अने मरी पैसा ४ चार भार वाटी लींबुरसथी पलाळी मेळवी हमेशां चार ४ फडशीयां खावाथी वातपित्तनी खाज मटे ।

२२ भांगरो वाटी शरीरे मर्दन करवुं. लुखस जाय ।

२३ कुवाडियानां बी शेर ०।, गजपिपर काळानल सरसव उपलेट बावचि हळदर दारुहळदर प्रत्येक टां. ५ पांच, सिंधालुण टां. ३॥ ए सर्व वाटी गायनी छास शे. ५ मां मेळवी अगासी उपर ढांकी मुकवुं. पछी ३ दिवस खरड करवो हमेशां गायनुं छाण चोळी शितळ पाणीथी नहावुं. लुखस खरज पामा जाय ।

२४ अजमो झीणो वाटी गोळ घी समभागे मेळवी लींबु जेवडा गोळा करी हमेशां १ एम ७ दिवस खावाथी हाथपगनी खाज खजवाळ मटे ।

२५ हरडे नंग २, सिंधालुण कुवाडियानां बी अजमो साथे वाटी मर्दन करवाथी खाज खुजली मटे ।

२६ झाकळमां लुगडुं अगासीये मेलवुं ते निचोवी शरीरे चोपडीये तो पित्तनी खाज खंजवाळ मटे ।

२७ सिंधालुण बावचि गालवण तेल गोमूत्र एकत्र करी शरीरे मर्दन करवुं.

२८ तेल पैसा १० भार अडायानी राख पैसा ५ भार चोखा पैसा १ भार एकत्र करी १ प्रहर हाथे मरदी पछी तडके बेसी शरीरे चोळवुं. ५ दिवस चोपडवाथी फोडलीयुं थइ फुटे पाणी निकळी रुझाय खरज खुजली मटे ।

२९ हरडां बेडां आमळां गंधक पारो सिंदोर घी मां घुंटी चोपडवाथी खस मटे

३० पारो टां. १ हथेळीमां राखी लींबुरस अने तुळसी रस साथे मेळवी बे हाथथी मर्दन करी पछी शरीरे मालिस करवुं. पारो शरीरमां पेसी जाय त्यारे पगने तळीये दोकडो घसवाथी घोळो थइ जशे. ते दिवसे खावुं नहीं पाणी पण पीवुं नहीं. पामा खाज सर्व जाय ।

३१ आमलसारो गंधक दोकडा १ भार मरी टां. १॥ भार सांजे पैसां भार अने घी टां. ९ नव साथे मेळवी कुलर करी सांजे खावी. ठंडुं नहीं. पामा जाय.

३२ काचो टंकणखार तथा लींबुरस त्रांबाना ठाममां नाखी त्रांबाने पतळी २ प्रहर मर्दवुं. चोपडवाथी करोळिया मटे ।

३३ सुखडमां सोमल २ रति पाणीथी घसी ३ दिवस चोपडवुं वच्चे धोवुं नहीं. करोळिया जाय ।

३४ टंकणखार टां. २ लींबुरसमां आथी ३ दिवस राखवुं पछी ३ दिवस चोपडवाथी करोळिया मटे ।

३५ सोमल रति २ मरी टां. १ लींबुरसमां भींजवी ५ दिवस राखी पछी काढी सुकवी वाटी दीवेल तेलमां मर्दी तडके बेसी चोपडवुं. ३ दि मां करोळिया मटे.

३६ गंधक तो. ०। झीणो वाटी सुखड साथे घसवो. ७ दिवस चोपडवाथी करोळिया मटे ।

३७ गंधक मोरथुथु लोदर समभागे लींबुरसमां घुंटी खरड करवो ।

३८ सुखड हडताळ कपूर टंकण मूळानां बी लींबुरसमां वाटी लेप करवो.

३९ आमलसारो गंधक जवखार लींबुरस साथे वाटी तडके बेसी ३ दिवस चोपडवाथी करोळिया जाय ।

४० मूळाना पाननो रस चोपडवाथी करोळिया मटे ।

४१ कुकडवेलना पाननो रस ४ दिवस चोपडवाथी करोळिया मटे ।

४२ कुवाडियाना बीनो आटो सोगठी परटीना गोटा मालवण बावचि आमळां दरेक शेर ०। पा, पळियो नल सरसव सिंधालुण हळदर दारुहळदर गळ मोरथुथु दरेक टांक ९ नव, दहींनुं पाणी शे. १० मां वाटी ठाममां नाखी मुख बंध करी ३ दिवस तडके राखी पछी शरीरे चोपडवुं. वातपित्तनां धारां करोळिया धामठां खस लुखस सर्व मटे ।

४३ केळनां पाननी राख अने हळदर पाणीमां वाटी लेप करवो ।

४४ मरी मूळानां बी कुवाडियानां बी पिनपापडो (खाखरानां बी) आमलसारो गंधक सरखे भागे खांडी लींबुरसमां पन्ती दइ तडके बेसी शरीरे चोपडवुं ३ दिवस राखी पछी भेंसनुं छाण चोपडी शितळ पाणीथी नहावुं. करोळिया मटे।

४५ गंधक साकर तेल लींबुरस भेळां करी ३ दिवस मरदन करवुं चित्री मटे

४६ आमलसारो गंधक अने सुखड टां. २॥ अढी खांडी लींबुरस साथे मेळवी लेप करवो. चित्री जाय ।

४७ अघेडानी राख अने मनशिळ गोमूत्रमां वाटी ७ दिवस चोपडवुं चित्री मटे

४८ आकडानां पान बाळी माखण साथे मेळवी लेप करवो. खंजवाळ मटे.

४९ गंधक हळदर मोरथुथु बावचि साजीखार समभागे अने कुवाडियो सर्वथी बमणो खांडी सरसिया तेलमां मरदी ७ दिवस सुधी शरीरे चोपडवुं पछी छाण चोपडी नहावुं. सर्व जातनी पामा खस जाय ।

त्वचारोगनी गोळी—काथो हिमेज मोरथुथु हरडे दरेक टां ३० आंबा, पारो टां. ५ गंधक टां. ५ पांच लींबुरस साथे २१ दिवस खरल करवी. चणा प्रमाण १ गोळी रोज माखण साथे आपवी त्वचाना सर्व रोग जाय ।



गुमडां—व्रण पाटुं

गडगुमड मुंढगुमडां चांदां धारां पाठुं

गडगुमड- कारण चिन्ह—ज्यारे कोइ भागनो सोजो दाह थइने अंदर पाके छे त्यारे तेने गड कहे छे. कोइवार तीक्ष्ण दाह थइने अने कोइवार दुखावा सिवाय गडनो सोजो थइ आवे छे. गडमांथी जाडुं लीला पीळा रंगनुं घोळुं रक्तमिश्रित अने कोइवार पातळुं परु निकळे छे. दाह थइ गड थाय छे त्यारे ताव आवे छे ते भागमां पीडा थाय छे. पाक्युं न होय त्यांसुधी कठण लागे छे पाकतुं जाय तेम लवकारो वधवा मांडे छे छेवटे फुटीने परु निकळे छे ।

मुंढगुमडां—कारण चिन्ह—चामडीनां थोडा भागमां सोजो थइ वेदना साथे गुमडुं थाय छे नबळा शरीरनाने अथवा हृष्टपुष्ट शरीरनाने गुमडां थया करे छे. आखो दिवस गादी तकिया उपर आळोटया करवाथी, स्वच्छता नहीं राखवाथी

बाळकोने छूटेशां अवरोवबानी टेव नहीं पाडवाथी आंबा केरीयो बहु खावाथी खाटां पदार्थ बधु खावाथी लोही बगडवाथी मधुमेह होवाथी गडगुंमड थया करे छे. प्रथम गुंमडांवाळी जगानी चामडी लालचोळ थइ सुजी जाय छे पीडा लवकारा थाय छे थोडा दिवसमां गुंमडुं पाकी फुटे छे अथवा बेसी जाय छे. सखत वेदना थाय ते। ताव चढे छे पीडाने लइ उंघ आवती नथी ।

गुंमडांने बेसाडी देवानो लेप—अरणी देवदार सुंठ भारंगी रास्ना भोरींगणीनां डोडवां जेठीमधनां मूळ साथे खांडी राखवां. पाणीमां के दुधमां वाटी गरम करी चोपडी पाटो बांधवो ।

गुंमडां पकववानी लोपरी—तल अळसी घउं त्रणेनो भुको समभागे लइ तेमां मीठुं १ तोलो नाखी दहींमां कालवी लोपरी करी गरम करी बांधवी. ५-१० वखत बांधवाथी गुंमडुं पाकी जाय छे ।

फोडवानो लेप—करंज चित्रो दंतीमूळ भिलामानां मींज करेणमूळ पारेवानी चरक बधाने समभागे वाटी चोपडवाथी फुटे ।

फोडवानो लेप—हाथीदांतने घसीने गुंमडां पर चांडलो करवाथी ०। कलाकमां फुटी जाय ।

फोडवानो लेप—दंतीमूळ चित्रो भुंगळिया थोरनुं दुध आकडानुं दुध गोळ भिलामानांमींज हिराकसी सिंधालुण सरखे भागे खांडी मेळवी राखवां चोपडवाथी फुटे ।

बगाड काढवानो लेप—लींबडानां पान अने बोरडीनां पानने वाटी पोटीस मुकवी ।

बगाड काढवानो लेप—तल मीठुं हळदर आंबाहळदर नसोतर घी मध लींबडानां पान बधाने साथे वाटी चोपडवुं ।

रुझाववानो लेप—वडनी छाल पिपळानी छाल उंबरानी छाल साथे वाटी चोपडवी अथवा तेना उकाळाथी धोवुं ।

रुझाववानो लेप—पिपरनी छाल लींमडानी छाल बावळनी छाल हरडे तुळसीनां पान मरवानां पान साथे वाटी चोपडवुं ।

गुंमडुं पाकी फुटी रुझववानो उपाय—सोमल मोरथुथु कळीचूनो घोळो काथो दरेक १ एक तोलो लइ जुदां जुदां बारिक करी पाणीथी सोगठी करवी जरुर पडे त्यारे गौमूत्रमां घसी आखा दिवसमां २-३ वखत लगाडवुं तो गुंमडुं पाकीने फुटी जशे. फुटया पछी चोखा रांधीने दहींमां मेळवी गरमागरम बांधवां उपर पाटो बांधवो. आखा दिवसमां ४ वखत दहीं चोखानो पाटो बांधवो तेथी रुझाय जाय. गडगुंमड बद बांबलाइ रसोळी मसा भरनींगर गांठ नहीं पाकतां गुंमडां हरसना मसा पटलां दरदमां के जेमां पकवी फोडी नाखवानी जरुर होय छे तेमां आ उपाय करवो ।

વ્રણ ચાંદાં ઘારાં, કારણ ચિન્હ—શરીર પર વિદ્રધિ પાઠું ગાંઠય ગુંમડાં વગેરે પાકી ફુટે છે અને તુરત નહીં રુઝાતાં ચાંદાં પડે છે તે વ્રણ કહેવાય છે. તેમજ શરીરનો કોઇપણ ભાગ છેદાવાથી ભેદાવાથી ઘસાવાથી વ્રણ થાય છે. જે જગાયે વ્રણ થવાનું હોય ત્યાં પ્રથમ સોજો થઇ પછી તે ફાટી તેમાં ચાંદી ઉત્પન્ન થાય છે. સોજો પાકી ગયેલો છતાં તુર્ત તેને ફોડવામાં આવતો નથી તો તે પરુ નાડીઓમાં ઉતરી નાડીવ્રણ નાસુર ઉત્પન્ન કરે છે ।

ભરનીંગર ગંભીરવ્રણ—જે વ્રણ-ઘારું ઘણું ઉંડું માંસ કે હાડકામાં ગયેલું હોય રુઝાતું ન હોય હાડકાને સોડવે તે ગંભીરવ્રણ કહેવાય છે તેના ઉપચાર નાસુર પ્રમાણે પણ કરાય છે ।

ભાઠાં—લાંબા મંદવાડને લીધે દરદીને વાંસામાં કમરના હાડકાંની જગ્યાએ ભાઠાં પડે છે પ્રથમ લાલ ચાંદાં થઇ પછી તે ભાગ સડી ખવાતો જાય છે. તેના ઉપચાર વ્રણ-ચાંદાંની પેઠે કરાય છે ।

આગળી—મીણ રાળ અને ઘીને ગરમ કરી બનાવેલી આગળી કપડાપર ચોપડી ગરમ કરી ગુંમડાં પર બાંધવાથી રુઝાય છે ।

રુઝવવાનો મલમ—રાળ મીણ હિરાદખણ કંપિલો બોદાર કાયફળ પ્રત્યેક શેર ૧। સવા અને નવસાર શેર ૧॥ ઢોઢ બારિક કરી સાથે મેળવી ગાયના ઘીમાં મલમ કરી ચોપડવાથી ચાંદાં ઘારાં વ્રણ મટે ।

રુઝવવાનો મલમ—કોડીને બાળી રાખ કરવી એ રાખની બરાબર ગાયનું ઘી લઇ મેળવી ૧૦૧ એકસોને એક પાણીયે ધોઇ બરણીમાં ભરી રાખવું. ચોપડવાથી ચાંદાં ઘારામાં અંકુર આવે રુઝાય જાય ।

રુઝવવાનો મલમ—સફેદ રાળ શેર ૧ મીઠું તેલ શેર ૪ રાળને બારિક કરી તેલમાં મેળવી પછી ગરમ કરવું ફીણ બળી જાય એટલે ઠંડા પાણીમાં રેડી દેવું પછી ૨૧ એકવીશ પાણીયે ધોવું. જખમ ચાંદાં આળાં ગુંમડાં ઘારાં રુઝાય ।

પાઠું. કારણ ચિન્હ—મધુમેહવાળાને મૂત્રાશયના દરદીને લોહીબગાડવાળાને વૃદ્ધને નબળા માણસને પાઠાંનુ દરદ થાય છે આ દરદ એક જાતનું મોટું ઉંડું ગુંમડું છે તેમાં પ્રથમ ચામડી લાલ થઇ અગન બળે છે અને તેની વચ્ચે કઠણ હાડકાં જેવો ચપટો મોટો ગાંઠો જણાય છે તે ફેલાતો મોટો થતો જાય છે અને જાંબુ રંગ પકડે છે ઢાલકાચબાની પીઠ જેવો ઉપસેલો સોજો જણાય છે સોજા પર ઝીણા દાણા જેવી ફોડલીયો થાય છે તે ફુટી ગયા પછી ઝીણાં કાણાં પડે છે તે છિદ્રોની આસપાસની ચામડી સડી નિકળી જઇ ત્યાં ખાડો પડે છે. પાઠું ઘણેભાગે વાંસાની કરોડ ગરદન ખભો કે કુલાની વચમાં તથા હાથે પગે છાતીયે પેટે પણ ક્વચિત થાય છે ।

પથ્યાપથ્ય—ગુંમડાં ચાંદાં ઘારાં મુઢગુંમડાં લોહીબગાડ તથા તેને લગતાં ઉપર જણાવેલાં બધાં દરદોમાં ઉલટી કરાવવી જુલાબ આપવો લાંઘણ કરાવવી. જરુર જણાય તો વિચાર કરી શસ્ત્રકર્મ ડામ (અગ્નિકર્મ) કે ક્ષારનો ઉપયોગ કરી

फोडवुं. खावामां चोखा मग रोटली पडोळां सरगवानी सींगु कुणा मूळा तलनुं तथा सरसवनुं तेल कडवी चीजुं कारेलां कंटोलां वालोळ रींगणां पापडी घी मध दुध वगेरे हितकारक छे. राते उजागरो बजारनी मिठायुं खाटीनी चिजु बहु खाटां बहु तीखां वगेरे तजवां ।

जात्यादि तेल तथा घृत—जुइ लींबडो पडवळ करंज ए बधांनां पांदडां मीण जेठीमध कुष्ठ हळदर दारुहळदर कडु मजीठ पद्मकाष्ठ लोदर हरडे नीलकमळ मोरथुथु उपलसरी करंजीयां एकत्र करी वाटी तेल अथवा गायना घी मां पकाववुं. पाठुं बधी जातनां गुंमडां तेना सोजा भरनींगर नासुर भगंदर वगेरेमां लगाडवाथी मटे ।

व्रणवज्र तेल तथा घृत—कळगारी कुष्ठ पाकेली गळो वछनाग हिंग लसण घ्रो मजीठ करंजीयां खाखरानां बी खाखरानां मूळनी छाल आसोंध मोथ मोरथुथु पलिओ हळदर काकडासींगी मनशिळ हडताळ सुंठ पिपर मरी बधां सरखे भागे लइ बारिक करी तेमां सरसियुं तेल के गायनुं घी नाखी पकाववुं. चोपडवाथी पाठुं गुंमडां तथा तेने लगतां बधां दरदो मटे ।

व्रणमार्तंड रस—पारद तो. ४ गंधक तो. ८ लोहभस्म तो २॥ ताम्रभस्म तो. २॥ त्रिकटु तो. ६ त्रिफळा तो. १२ शिलाजीत तो. ९ गुगळ तो. २४ हरडे बेडां आमळां सुंठ पिपर मरी मोथ कडु गळो चित्रो वावडींग इंद्रामणांना डोडवां कुष्ठ हळदर देवदार प्रत्येक तोला ४ चार साथे मेळवी लींमडानां पाननां रसनी १ अने केळना रसनी २ भावना आपी बबे रतिभारनी गोळी वाळवी. सवार सांज ३ त्रण गोळी घी साथे चटाडवाथी गुंमडां मुंढगुंमडां पाठुं भाठुं चांदां घारां लोहीबगाड वगेरे मटे छे ।

रुझववानो मलम—कपासनां पाननो रस शेर ०। शंखजीरुं तो. २ राळ तो. ०॥ कलइभस्म सफेद तो २ मीण तो. २ गायनुं घी तो. ८ प्रथम घीने २० पाणीये धोइ पछी तेमां कपासनो रस नाखी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय पटले मीण नाखवुं एक रस थाय पटले बीजां वसाणां कपडछान करेलां नाखी हलावी राखवुं. चांदां पाठां रुझाय ।

रुझववानो मलम—हिंगळो तो. ४ सिंदोर तो. २ बोदार तो. २ कलइ भस्म तो. १ इंडाना फोतरानी राख तो. ०॥ मीण तो. ४ गायनुं घी शेर ०॥ बधांने मेळवी मलम करवो. चांदां पाठां रुझाय ।

काळो मलम—सिंदोर तो. १२ सफेद मीण तो. ४ करंजीयुं तेल तो. ४८ बधांने माटीना रीढा वासणमां पकाववुं. चोपडवाथी रुझ लावे छे. भाठां चांदां पाठां रुझाय ।

गुंमडांना सादा प्रयोग

१ खजुर अने साबु बेइ मेळां वाटी गुंमडां उपर बांधवाथी गुंमडुं फुटे ।

२ बेरजो राळ मीण दरेक टां. ४ चार, मोरथुथु टां. २ घी शेर ०॥ मां मलम करवो. बधी जातना गुंमडां चांदां घारां उपर उत्तम छे ।

३ गुगळ बाळी घी साथे मलम करी चोपडीये तो गुमडुं फुटे तथा रुझाय. १४ दिवसमां भरनींगर पण मटे ।

४ हिरबोळ टां. ५ वाटीने गांठ्य उपर चोपडीये तो गड मटे ।

५ पारो टां १॥ काथो टां. २॥ राळ टां. १० घी टां. १० मोचरस टां. २॥ ए सर्वे ४ पहोर सुधी वाटवां पछे घी मां मलम करवो ते आंगळोथी चोपडवो. अरुझ चांदी गडगुमड गुंथ वगेरे मटे ।

६ मीण राती सोपारी सिंदोर चिरोडीनी राख ए दरेक टां. २॥ अढी, राळ टां. १॥ खारेकना ठळीया टां. ५ माखण गायनुं दोकडा ८ भार गरम करी तेमां मीण अने राळ मुकी गळी जाय त्यारे सोपारी तथा ठळीया अंगारा उपर शेकी जीवता काढी वाटी ते नाखवां पछी सिंदोर चिरोडीनी राख नाखी लोढाना ठाममां ठारी लाकडोथी मजबूत घुंटवुं पछी लुगडा उपर चोपडी ते गडगुमडां उपर लगाडवुं. खारुं खाटुं खावुं नहीं गडगुमड मटे ।

७ मनशिळ चाक हळदर दारुहळदर गंधक हडताळ चित्रो साजीखार जवखार दरेक टां. १ तेल टां. २७ लोढानी कडाइमां लोढाना बताथी घुंटवुं. २ दिवस तडके राखी पछी चोपडवुं. पामा खाज खस फोडा चांदी चिमचि माथाना फोडा सर्व जाय ।

८ कळीचूनो टां. २॥ राळ टां. २॥ मीण टां ५ गायनुं घी टां ५ मेळवी मलम करवो चोपडवाथी गुमडां रुझाय ।

९ अजमो बाळी सरसिया तेलमां घुंटी चोपडवाथी गुमडां मटे ।

१० मनशिळ दोकडा १ भार मरी दो. ०॥ राळ दो. ०॥ भार मोरथुथु त्रांबीया १ भार पारो दो. ०॥ भार गायना घी मां मलम करवो. भरभींगर गुमडांमां घणो उत्तम अनुभवेल छे ।

११ दाडमनी छाल आजोकाजो आमळां केसुडां मेंदी सुरोखार दरेक टां. २॥ अढी लइ खांडी गाडरनां दुधमां पलाळी गुमडां उपर बांधवाथी आराम थाय ३ पाटा बांधवाथी व्रण तथा हाथ पगना गुमडां मटे ।

१२ बावळनां पान वाटी थेपली करी बांधवाथी गडगुमड पाठां मटे ।

१३ कांकचनां बी पारेवानी चरक वाटी चोपडवाथी असाध्य गडगुमड मटे ।

१४ राता ढोमडानां पान तथा मीठुं वाटी रसोळी उपर थेथली मुकवाथी रसोळी मटे ।

१५ कळीचूनो साजीखार नवसार लींबुरसमां वाटी बांधवाथी रसोळी मटे ।

१६ काथो शेर ०। गुगळ शेर ०। वाटी गोळो करवो ते पाणीमां घसी चोपडवाथी गडगुमड मटे ।

१७ · कुवाडियानां पान वाटी घी मां सांतळी थेपली करी बांधवी पाठुं जाय ।

१८ जवनो लोट जीणो करी सरसिया तेलमां कुलर करी घारां उपर बांधवाथी घारां मटे ।

१९ गंधक वरियाळी मनशिळ बावचि समभागे लइ खांडो तेलमां मेळवी ३ थी ७ दिवस चोपडवाथी माथानां करवलां गुमडां मटे शांति थाय ।



नासुर—नाडीव्रण

चिन्ह—पाकेला सोजाने काचो छे एम मानी फोडवामां विलंब करवाथी तेमांनुं परु चामडी मांस शिरा स्नायु सांधा हाडकां अने कोठामा मर्मने भेदी छिद्र पाडी अंदर पहोंचे छे पछी ते छिद्र पोली नळी जेवुं थइ तेमांथी परु निकळया करे छे।

उपचार—चंद्रप्रभा २ थी ४ गोळी, महात्रैफळ घृत अने मध साथे चटाडवुं अथवा सप्तामृत लोह ६ रति मध घी मां चटाडवुं. अष्टामृत पर्पटी रति २ कैशोर गुगळ गोळी २ साथे मेळवी हरडेना चाटण साथे आपवी. नाडीव्रणहर मलममां वाट बोळी अंदर जाय तेटली वाट नाखी पाटो बांधी राखवो हमेशां वाट काढी धोइ नवी नाखवी एटले रुझाय जाशे. भगंदरमां बतावेला तथा लोही सुधारवाना उपचार करवा. कस्तुर्यादि के केशरादि गोळी सवार सांज ३ त्रण घी मां आखी गळाववी।

मिश्रण—सिद्धहरताळ भस्म मुक्ताभस्म अभ्रकहजारपुटी प्रत्येक तो ०। पा, लोहपर्पटी तो. ०॥ चंद्रप्रभा तो. २ साथे वाटी ६४ पडीकां करवां. घी मां २ वखत चटाडी उपर महामंजीष्ठादि क्वाथ पावो।

नाडीव्रणांतक गुगळ—पारद तोला १० गंधक तो. २०, हरडे बेडां आमळां मोथ वावडींग गळो पलचि देवदार परडानुं मूळ अनंतमूळ इंद्रामणांनां डोडवां हळदर दारुहळदर सिंधालुण शिलाजीत माक्षिकभस्म मंडूरभस्म प्रत्येक तोला ५ पांच, गुगळ तो. ८० बधां साथे खांडी मेळवी वाल वालनी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी गायना घी मां चटाडी उपर पाणी के दुध पावुं. परेजीमां खाटां पदार्थो बंध करवां।

नाडीव्रण रोपण तेल—नगोडनां पान काळो हंसराज कोठानो गरभ बीलीनो गरभ खजुर वावडींग मोथ राळ मध मोचरस धावडीनां फुल परडीनां मींज पारो सिंदोर थोरनुं दुध आकडानुं दुध रगतरोहडो ए बधां सरखेभागे मेळवी तेमां तलनुं तेल पकाववुं आ तेलमां रुनी वाट बोळी नासुरमां नाखवाथी रुझाय छे. भगंदरने पण रुझावे छे।

नाडीव्रणहर मलम—बोदार तोला ५ जसतभस्म सफेद तो. ५ मीठुं तेल तो. १० कपूर तो. २ मीण तो. ५. तेल मीण कपूर ए त्रणेने साथे गरम करी पछी जसतभस्म अने पछी बोदार नाखवो. नासुरमां लगाडवुं।

निर्गुंडी तेल—नगोडना पंचांगना रसमां तेल पकावी तेमां रु के सुतरनी वाट भींजावी अंदर नाखवी. हमेशां बदलाववी।

हंसपदी तेल—काळो हंसराज लींमडानां पान जुइनां पान बधांने वाटी तेना रसमां तेल पकावी तेनी वाटयो मुकवी।

सर्वव्रणरोपण मलम—पारो तोलो १।, हिरादखण बोदार कपिलो दरेक तो. २॥ अढो, राळ तो. १० मीण तो. ५ गायनुं घी जोइए तेटलुं. बारिक करी

मेळवी मलम करवो. भरनींगर भगंदर नासुर पाठां तथा बीजां हाडगंभीर नहीं रुझातां गुमडां रुझाय छे ।

नाळव्रणनो मार्ग एषणी नामना शस्त्रथी गोती शस्त्रथी छेदी व्रण प्रमाणे शोधन रोपण उपचार करवा गरमाळानो गोळ हैळदर कडाछाल ग्रणेना समभागे करेला चूर्णमां घी मध मेळवी सुतरनी वाट भींजावी अंदर मुकवी ।

मोरथुथु २ रतिभार अने केरडानां कुंपळां साथे वाटी थेपली करी नासुर उपर मुकी ३ दिवस रहेवा देवी एम ३ थेपली मुकवाथी नासुर मटे ।

लींमडानां पान साजीखार पिपर सुंठ मोरथुथु संखावळि सरखे भागे लइ बारिक वाटी साजीना पाणी साथे नासुरमां मुकवुं. ७ दिवसमां नासुर जाय ।



भगंदर

कारण-चिन्ह—मळद्वारनी आसपास गड थाय छे. कोइवार अंदर अने कोइवार बहार मोढुं करे छे. घणा दिवसे ते अंदरने अंदर फेलाय छे नबळाइथी चोट के पछडाट लागवाथी त्यां चांदु पडे रस होय वगेरे कारणे आ दरद थाय छे तेमां मळ जवाने लीधे घर्षण थवाथी साफ थइ शकतुं नहीं होवाथी रुझातुं नथी. कोइवार मोढुं बंध थइ बीजे फुटे छे अथवा त्यांज फुटी रसी निकळे छे ते फुलामां वांके चुके रस्ते सडो फेलावे छे केटलाकने एक सफरामां अने एक बहार एम बे मोढां होय छे कोइमां मोढुं सफरामांज होय छे अने कोइमां बहार होय छे ते बाबत सुयो नाखवाथी जाणी शकाय छे. मांसभक्षी लोकोने आ दरद बहु थाय छे. आपणा शास्त्रकारो लखे छे के हरकोइ जातना भगंदरमां अमुक जातनां जीवडा थाय छे अने ते अंदर सडो पेदा करी वांके चुके मार्ग उंडु उतारे छे. रातो फीणवाळो स्राव थाय घणां छिद्रो पडे ते वात प्रधान. रातो पीळो स्राव थाय जलदी पाके दाह बळतरा करे ते पित्त.प्रधान खजवाळ आवे घाटो धोळो स्राव थाय ते कफ प्रधान. जे भगंदरनो मार्ग वांको चुंको होय घा वागवाथी थयुं होय वायु मूत्र विष्ठा जिवडा वगेरे निकळे ते असाध्य छे ।

पथ्यापथ्य—पाक्युं न होय त्यांसुधी रुझाववाना उपाय करवा. लांघण करावबी फस खोली लोही कढाववुं वमन विरेचनथी शोधन करवुं लेप वगेरे लगाडवां पाके तो शस्त्रकर्मथी के डाम दइने के क्षार लगाडीने मटाडवुं. चोखा मग जंगली पशुनुं मांस पडवळ सरगवानी सींगु कुणां नेतरनुं अथाणुं कुणा मूळा तल सरसव तैल कंटोली दुधी वालोळ घी मध वगेरे हितकारक छे बजारनी मिठाइ खाटां पदार्थ अजीर्ण करे तेवो खोराक खांड साकर महेनत कसरत मैथुन लडाइ दोडवुं भारे पदार्थ वगेरे नुकशान कारक छे. वखतो वखत जुलाब आपवो वखतो वखत लांघण करावबी पाटो बांधवो गरम पाणीये धोइ मलम चोपडवो. हजारवार धोयेलुं घी चोपडवुं ।

उपचार—सोनानी सळीने धगावी लालचोळ करी भगंदरमां अंदर खोसवी वटले तेनी आजु बाजुनो भाग बळी जशे ते पछी अग्निथी बळेलानो उपचार करवाथी जलदी रुझाय जाशे ।

भगंदरनी फोडली के गुमडुं काचुं होय त्यांसुधी रुझाववा माटे लांघण कराववी दशांग लेप चोपडवो जुलाव देवो पेटमां बोजो न थाय तेवो सादो खोराक देवो. भगंदर फुटया पछी नीचेना लेप चोपडवा ।

लेप १—वडनां पान विलायती नळियुं सुंठ गळो साटोडी सरखे भागे वाटी चोपडवुं ।

लेप २—मींदडानां हाडकांने त्रिफळाना उकाळा साथे वाटी चोपडवुं ।

लेप ३—कुतरानुं हाडकुं अणसियां गधेडानुं लोही सरखे भागे मेळवी घुंटी सुकाववुं पछी तेमां छास मेळवी चोपडवुं ।

लेप ४—कुष्ठ नसोतर तल दंतिमूळ लींडीपिपर सिंधालुण मध हळद्दर हरडे बेडां आमळां मोरथुथु बधां सरखे भागे मेळवी पाणीमां वाटी चोपडवुं ।

लेप ५—तल हरडे लोदर लींमडानां पान हळदर वज्र कुष्ठ घरनो धुंवाडो समभागे मेळवी पाणीमां वाटी चोपडवुं ।

भगंदरारि तेल—कणेरनां मूळ हळदर दंतिमूळ लांगली सिंधालुण बिजोरुं आकडानुं दुध बेठी उंबरी रिसामणी वज हरताळ गुगळ चित्रो मालकांकणां प्रत्येक तो. १० दश लइ खांडी तेमां पाणी शेर २० तथा तलनुं तेल शे ८ नाखी २ दिवस पलाळी राखवुं पछी चुले चडावी पकाववुं पाणीनो भाग बळी जाय अने कडदो नीचे जामी जाय पटले तेल नितारी लेवुं. प तेलनी वाटयुं मुकवी तथा चोपडवुं ।

भगंदरारि रस—पारद तो. १० गंधक तो. १०, लोहभस्म अभ्रकभस्म हरडे बेडां आमळां मोथ चोपचिनी वावडींग चवक कुष्ठ गळो चित्रो हळदर दारुहळदर आंबाहळदर सिंधालुण मरी सुंठ पलचि नागकेसर प्रत्येक तो. ५ पांच, गुगळ तो. ३० कडु तो. २० बधां साथे मेळवी लींमडाना पानना रसनी भावना दइ चण्या जेवडी गोळी करवी अथवा भुको राखवो. मात्रा ३ थी ६ रति गायना घी साथे चटाडी उपर दुध के पाणी पावुं. भगंदर नाडीव्रण नासुर वगेरे मटे छे ते सिवाय सोजा हरस वधरावळ शूळ मूत्रकृच्छ्र हाडीताव गांडपण वगेरे दरदोमां पण उत्तम फायदो करे छे. दिवसमां २ वखत आपवुं ।

नवकार्षिक गुगळ—हरडे बेडां आमळां पिपर दरेक तो. ५ पांच, गुगळ तो. २५ साथे मेळवी घी मां चण्या जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ४ थी १२ गोळी घी अथवा पाणी साथे देवी ।

स्कंदेश्वरी पर्पटी—गंधक तो. २० पारद तो. १० निरुत्थ ताम्रभस्म तो. ८ लोहभस्म तो. ६ कांस्यभस्म तो. ४ रौप्यभस्म तो. २ सुवर्णभस्म तो. १ बधां साथे घुंटी घी तो. १० नो करमो दइ लोढाना कडायामां घी चोपडी कोयलानी सगडी पर पकाववुं रस थाय पटले केळना पाननी वचमां उपर नीचे गायनुं छाण दाबी ठंडु पाडी घुंटी राखवुं. मात्रा २ थी ४ रति गायना घी मां चटाडी उपर दुध पावुं हळवो खोराक देवो. आ पर्पटी छातीनां फेफसानां मगजनां आंतरडानां दरदने संग्रहणीने मंदाग्निने हरसने श्वास उधरसने क्षयने मटाडे छे शक्ति आपे छे ।

भगंदर शोधन क्वाथ—हरडे बेडां आमळां बावळनी छाल बोरडीनो छाल कंथेरी आवळ शिवणनां फळ आंकोल लघुपंचमूळ इंगोरियानां मूळ कायफळ मायां हिराकसी लींमडानां पान कडाछाल वज राळ चोपचिनी हिरादखण समभागे खांडी तेमांथी भगंदरनां घारानां प्रमाणमां भुको लइ दशगणुं पाणी मुकी उकाळवुं अर्धु रहे पछी दिवसमां २ वखत ए पाणीथी धोवुं तेथी अंदरनो बगाड खेंचाइ आवशे पछी रुझववानो मलम चोपडवो ।

भगंदर शोधन लेप—बावळनी छाल सुंठ हिराकसी झेरकोचलुं मोरथुथु समभागे खांडी पाणीमां वाटी चोपडवुं. २-३ लेप करवाथी अंदरनुं परु बगड खेंचाइ आवशे पछी रुझववानो मलम चोपडवाथी आराम थाशे ।

भगंदरारि लेप—तल वडनां पान सुंठ धोळी मुसळ जेठिमधनां मूळ एक परडिनां मींज सरखे भागे लइ पाणीमां वाटी थेपली करी भगंदर उपर लगाडी पाटो बांधवो ।

भगंदरहर मलम—मोरथुथु मरी मनशिळ अडायांनी राख घरनो धुंवाडो कासांजण (जसतनो भस्म) लींबोळीनां मींज परडिनां मींज बधां सरखे भागे लइ बधाथी बमणुं तलनुं तेल ए बधां कांसानी थाळीमां के कांसानी खरलमां नाखी १२ कलाक घुंटी शीशी भरवी सवार सांज भगंदरने गरम पाणीथी धोइ पछी मलम लगाडी पाटो बांधवो. २१ दिवसमां भगंदर मटे आ मलम चालतो होय त्यारे बे आनिभार मरीनो भुको अर्धा तोला गायना घीमां रोज चाटवो ।

भगंदरारि मलम—फुलावेल मोरथुथु कपिलो खापरियुं अने घोडाना नख बधांने अंतर्धुम बाळवां पछी तेमां गायनुं घी नाखी घुंटी मलम करी लगाडवो भगंदर मटे ।

भगंदरघ्न मलम—सिंदोर कांटाळां मायां फुलावेल फटकडी हिंगळो कासांजण कपिलो सोसुं पारो रुमीमस्तकी राळ फुलावेल मोरथुथु समभागे लइ बारिक करी गायना घीमां मेळवो १ दिवस घुंटवुं. आ मलम एकांतरा लगाडवाथी गमे तेवुं भयंकर भगंदर मटे ।

सिद्ध भगंदर मलम—पारसपिपळानां बी जंगली ढालकाचबानी ढाल ढेलनां इंडानां खोखां माणसनां हाडकां समभागे लइ अंतर्धुम बाळो गायना घीने १०१ पकसोने एक पाणीये धोइ तेमां ए राख मेळवी एक दिवस घुंटी चोपडवाथी असाध्य भगंदर मटे छे ।

१ सुंठ साटोडी गळो वडनां पान समभागे लइ वाटी गरम करी थेपली करी बांधवाथी १४ दिवसमां भगंदर मटे ।

२ गंधकनुं तेल पातालयंत्र काढी चोपडवुं ।

३ मींदडानां हाडकांने त्रिफळाना उकाळामां वाटी चोपडवुं ।

४ तल हरडे लींमडानां पान हळदर दारुहळदर वज घरनो धुंवाडो बधां अकेक भाग लेवर बे भाग साथे मेळवी पाणीमां वाटी चोपडवाथी भगंदर मटे. अरनींगर गुमडुं नासुर दुष्टव्रण वगेरे मटे ।

५ कुतरानां हाडकांने बारिक वाटी उपर मुकवाथी भगंदर मटे ।

केन्सर—विद्रधी

चिन्ह—गळामां गुदामां मूत्रनळिना मुख उपर नाभिमां पेटमां पेडुमां बरलमां लिवरमां जळवाहिनी शिराना मूळ—क्लोममां हृदयमां अने स्त्रीओने स्तनमां विद्रधीनी गांठ अने केन्सर थाय छे. गुदामां होय तो पवन छुटे नहीं बस्तिमां होय तो मुश्केलीये थोडुं मूत्र उतरे. नाभिमां होय तो हेडकी थाय पेट चडी आवे. पेटमां होय तो वायुनो कोप थाय. पेडुमां होय तो वांसो अने कमर जकडाइ जाय बरलमां होय तो श्वास घुंटाय अटके. हृदयमां होय तो उधरस थाय तथा आखुं अंग झलाय जाय. लिवरमां होय तो श्वास उपडे हेडकी थाय. क्लोममां होय तो तरस लागे. नाभि उपरनी कोइपण विद्रधि पाके तो स्राव मो वाटे बहार आवे छे अने नाभि नीचेनो पाके तो गुदा वाटे स्राव निकळे. जो स्राव गुदा वाटे निकळे तो माणस बचे. अने मो वाटे निकळे तो बचे नहीं कोइपण ठेकाणानी विद्रधिमां पेट फुले झाडो बंध थाय उलटी थाय हेडकी आवे तरस लागे पीडा थाय शूळ निकळे श्वास उपडे तो असाध्य लक्षण जाणवां. आ दरदमां शस्त्रकर्म करवाथी पण सेंकडे पकादो केस सुधरतो होय तो काम जाणे. हिंदमां १० लाख केन्सरना दरदीओ छे ।

पथ्यापथ्य—विद्रधिनी गांठ काची होय त्यांसुधी जुलाब आपवो. परसेवो लाववो फस खोलाववी. जुना चोखा कळथी लसण सरगवानी सींगु वटाणां कारेलां मध खावामां आपवां. पाके तो शस्त्रकर्म अने जुना चोखा घी तेल मग केळां पडोळां कपूर सुखड उनुं करी ठारेलुं पाणी वगेरे हितकारक छे ।

सर्वेश्वर पर्पटी—पारदभस्म श्वेत सुवर्णमाक्षिकभस्म गंधक हिंगळो शुद्ध अभ्रकभस्म हडताळभस्म मनशिळभस्म सुरमानी भस्म रसवंति घोळो सुरमो टंकण राजावर्त चुंबकभस्म फटकडीभस्म खडीभस्म गेरु शुद्ध, हिराकसीभस्म खर्परभस्म शंखभस्म कोडीभस्म शुक्तिभस्म सुवर्ण रौप्य ताम्र लोह नाग वंग यशद प्रत्येकनी भस्म अकेक तोलो, हिरो प्रवाळ मोती माणेक पोखुं रत्न वैडूर्य गोमेद इन्द्रनिल पोखराज प्रत्येक अकेक वाल. संस्कारित पारद तोला ११३ अने गंधक शुद्ध ४५२ तोला लेवो. प्रथम पारद गंधकनी कज्जळी करी पर्पटोनी विधि प्रमाणे पकावी तेमां उपली भस्मो तथा सुको लाल फुलनो दुधियो वछनाग तोला २१ पकर्वाश मेळवी केळनुं पान अने गायना छाणमां ढाळवी ठरे पटले काढी लइ घुंटी रस भैरवनुं पूजन करी बरणीमां भरवी. बधी जातनी अंदरनी के बहारनी विद्रधिमां तथा केन्सरना दरदमां सवारे तथा सांजे बबे रति अने बबे रति मरीनो भुको अने नानी चमची आदुरस अने तेटलुंज मध मेळवी चटाडवी. आनुं सेवन २ महिना करावाथी अंदरनी के बहारनी विद्रधि तथा केन्सर अंदरनुं क्षत चांदु मटी जाय छे. ते सिवाय क्षयरोग पांडुरोग संग्रहणी गुल्म हरस बरल लिवर लोहीबगाड प्रमेह सोमरोग प्रदर उदररोग मंदाग्नि उदावर्त कुष्टरोग पटला रोग पण मटे छे ।

विद्रधिहरी वटी—पारद तोला ८ गंधक तो. १२ रससिंदुर शुद्ध रसकपूर रौप्यभस्म हरडे बेडां आमळां पिपर मरी सुंठ कांचनार सरगवानां बी

साकर लविंग गळो दारुहळदर गोरखमुंडो चोपचिनी वावडींग अजमोद प्रत्येक तोला ४ चार अभ्रकभस्म तो. ६ लोहभस्म तो ५ गुगळ तो. १० बधां साथे मेळवी उंबराना मूळनी छालना तथा खाखराना मूळनी छालना तथा कांचनारनी छालना तथा वायवरणानी छालना उकाळानी ७ सात अने सरलवृक्षना उकाळानी २ भावना दइ चणोठी जेवडो गोळी वाळवी मात्रा ३ थी ६ गोळी गायना घी मां चटाडो उपर वायवरणानी छालनो अथवा कांचनारनो उकाळो पावो ।

केन्सरहर मिश्रण—सिद्धहरताळ तो. ०।, सुवर्णभस्म तो. ०॥, अभ्रक भस्म सहस्रपुटी तो. ०॥, मुक्तापिष्टी तो. ०॥, हिरानी भस्म २ रति, पन्नापिष्टी तो. ०।, सुवर्ण पर्पटी तो. ०॥, अमृतासत्व तो. ५ साथे घुंटी तेनां सरखां ६४ पडिकां करवां. सवार सांज अकेक पडिकुं च्यवनप्राशमां चाटवुं अथवा दुधमां घोळी पाइ देवुं. उपर रोहितकारिष्ट के महासरस्वतीसुरा १॥ थी ३ ऑस आखा दिवसमां पावो ।

केन्सर तथा विद्रधिना सामान्य उपाय

१ विद्रधि जे अवयवपर छे एम नकी थाय तेनी उपरना बाह्य भागपर दोषघ्न के दशांग लेप चोपडवो ।

२ घोळी साटोडीनुं मूळ वायवरणानुं मूळ बन्ने पाणीमां वाटी पावाथी अंदरनी विद्रधि मटे ।

३ महामंजीष्ठादि क्वाथ बे टाणां पावो अने सवार सांज केशरादि के कस्तुर्यादि गोळी ५ पांच घी मां गळाववी. दर अठवाडिये एक गोळी वधारवी टंके १० गोळी थाय एटले तेटली मात्राथी २ महिना चालु राखवी. पछी एक एक दर अठवाडिये उतारवी. मरचुं तेल खटाइ बंध करवुं. सिंधालुण खावुं ।

४ सरगवाना मूळनी छालने पाणीमां वाटी तेमां सिंधालुण बे आनीभार अने एक आनीभार हिंग नाखी सवारमां पावुं ।

५ एळियो सरसव सिंधव तल साजीखार हळदर सुंठ उपलेट पोकरमूळ ए दरेक तो. १॥ डोढ, साबु तो ४ परडियुं तेल तो. ४ गौमूत्रमां वाटी लेप करवो।

६ सरगवानुं मूळ पाणीथी धोइ नाखी पाणीमां वाटी कपडे गाळी तेमां मध नाखी पावाथी १४ दिवसमां विद्रधि मटे ।

७ खेरनी छाल हरडेदळ बेडांदळ आमळां लींमडानी छाल कडु जेठीमधनां मूळ प्रत्येक अकेक तोलो, मसुरनी दाळ नसोतर अने परवळनुं मूळ प्रत्येक ४ चार तोला खांडी मेळवी हमेशां २ तोला भुकानो क्वाथ करी पावाथी बधी जातनी विद्रधि मटे ।

८ वायवरणानी छाल सरगवानी छाल पिपळानी छाल प्रत्येक तो. १० दश वज तो. २॥ साथे खांडी तेना उकाळा साथे शिलाजीत बबे आनी भार सवार सांज खवराववो. ३ महिनामां बधी जातनो विद्रधि केन्सर मटे ।



कंठमाळ

चिन्ह—शरुआतमां हडाची अने काननी पाछळ झीणी झीणी गांठो थइ वधत जतां वधी जई पाके छे अथवा ते थोडा दिवसे के महिने पाछी उपडे छे आनो दरदी निस्तेज नबळो थइ जाय छे आंखमांथी पाणी झरे होठमां चीरा पडे दांतनां पेढां पोचां पडे भुख ओछी थाय नाडी उतावळो शरीर गरम हाडी तावं पण होय छे. रसोळी गांठ अर्बुदनी पण वारवार कंठमाळ प्रमाणेज थाय छे ।

पथ्यापथ्य—जुना चोखा जव मग परवळ सरगवो वालोळ रींगणां वगेरे रुक्ष तीखां तथा जठराग्निदीपन करनारी चीजो खावी. स्वच्छता पवित्रता सुकी हवा पौष्टिक खोराक चोख्खुं पाणी तथा आहार विहारनु नियमितपणुं जाळववुं. निरोगी पशुनुं दुध वापरवुं ब्रह्मचर्य पाळवु जुनु घी जुनां धान्य नेतरनुं अथाणुं वगेरे खावुं भुख लागे दस्त पेशाब साफ आवे लोही सुधरे तेवो खोराक अने तेवुं औषध लेवुं. भारे खोराक बजारनी मिठायु मिष्टान्न साकरवाळी चीजुं मगफळीना तेलमां तळेला चेवडा वगेरे काचुं कोरुं खावुं नहीं गायनु दुध विशेष लेवुं ।

कंठलोकेश रस—पारद तोला ४ गंधक तो. ८ हरडे तो ६ आमळां तो. ४, बेडां सुंठ पिपर मरी अतिविष शिलाजीत गुगळ चित्रो वायवरणो कडु रतवेलियो मोरींगणीनां मूळ लींमडानी छाल गळो देवदार ताम्रश्वेत प्रत्येक बबे तोला, गुगळ तो १० लइ बधां साथे खाडी भुको करी लींमडाना पानना रसनी तथा कांचनारनी छालना उकाळानी अकेक भावना दइ ३ त्रण रतिभारनी गोळी वाळवी. मात्रा ४ थी ६ गोळी दुध साथे अथवा पाणी साथे आपवी. कंठमाळ गडगंड रसोळी अर्बुद गांठ गडगुमड लोहीनो बगाड वगेरे दरदोमां उत्तम छे ।

गंडमाळाकंडन रस—पारद तोला २ गंधक तो ४ ताम्रभस्म श्वेत तो. १ त्रिकटु चूर्ण तो. ४ कांचनारनी छाल तो. १२ गुगळ तो. १२ हरडे तो. ४ हडताळभस्म तो. १ लोहभस्म तो. २ सिंधालुण तो १ साथे मेळवी कांचनारनी छालना उकाळानी भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ४ थी ८ गोळी मधमां चटाडी उपर गायनुं दुध पावुं ।

महाकांचनार गुगळ—पारद तोला १० गंधक तोला २० शिलाजीत तो. १५, रौप्यभस्म ताम्रभस्म लोहभस्म प्रत्येक तो. २॥ अढी, कांचनारनी अंतर छाल तो ४०, गरणीनां मूळ तुळसीनां बी लींमडानी लींबोळी लींमडानां फुल सुंठ पिपर मरी हरडे आमळां बेडां वज कडु लाख वावडींग देवदार जेठीमधनां मूळ सिंधालुण उंबरानां मूळ प्रत्येक तो ४ चार तथा गुगळ बधाथी अरधे वजने लइ विधि प्रमाणे साथे मेळवी चण्या जेवडी गोळी वाळवी. सवार बपोर अने सांज शरुआतमां बबे अने पछी चार चार गोळी घीमां चटाडी उपर दुध पावुं. परेजीमां खाटां पदार्थ अजीर्ण करनारी वस्तु वगेरे बंध करवुं ।

कंठरोगारि तेल—चणोठीनां मूळ चणोठीनां पान सुखडनो भुको गळो लींमडानुं पंचांग काळो हसराज देवदार हरडे कुष्ठ भांगरो प्रत्येक तोला १० दश

तथा कांचनारनी छाल तो. ३० नो क्वाथ करो बधाथी बमणे वजने सरसियुं के तलवुं तेल लइ पकाववुं. पछी आ तेल चोपडवुं नाकमां टीपां नाखवां तथा ०। थो ०॥ तोलो दुध साथे पावुं कंठमाळ गांठ्य गळगंड लोहीबगाड वगेरे मटे ।

गळगंडहर लेप—विकळो अरडुसानी छाल कळगारी कांचनार अरणीनां मूळनी छाल गळोनी गांठ्य गरमाळानो गोळ राती चणोठी इंगोरियानो गरभ बधां सरखे भागे लइ खांडो चूर्ण करी शीशो भरी राखवो जरुर पडे त्यारे गौमूत्रमां वाटी गरम करी चोपडी उपर पाटो बांधवो. कंठमाळ तथा तेने लगतां दरद मटे।

भल्लातकादि लेप—भिलामां हिराकसी चित्रो दंतिमूळ गोळ भुंगळीया थोरनुं दुध आकडानुं दुध सरखे भागे मेळवी पाणीमां लेप करवो ।

गंडमाळाहर क्वाथ—बीलीनां मूळ नगोडनां पान गरणीनां मूळ कांचनार वायवरणो इंद्रामणानां मूळ गळो हरडे देवदार आसोंध उपलसरी दरभमूळ सुंठ पिपर मरी वावडींग रास्ना परडानां मूळ तलवणी बधां सरखे भागे लइ अधकचरां करी डाबलो भरी राखवो. हमेशां २ तोला भुकामां ४० तोला पाणी मुकी उकाळी १५ तोला रहे पछी कोइपण औषध साथे अथवा एकलो उकाळो पावो.

दोषघ्न लेप—सरसव सरगवानां बी शणबीज अळसी जव मूळानां बी समभागे खांडवां. खाटी छासमां वाटी चोपडवाथी कंठमाळ गांठ गळगंड मटे ।

कंठमाळना सामान्य उपाय

१ ब्रह्मदंडीनुं मूळ चोखाना धोणमां वाटी चोपडवाथी पाकी फुटी रसी निकळती होय तेवुं कंठमाळ रुझाय ।

२ गोरखमुंडीनुं मूळ गोरखमुंडीना रसमां वाटी चोपडवुं तथा पावुं ।

३ नेपाळानां पानने तेनाज रसथी वाटी सोगठी करी छाये सुकववी पाणीमां वाटी चोपडवाथी कंठमाळ मटे ।

४ गंडमाळाहर मिश्रलेप अथवा दशांग मिश्रलेप चोपडवो ।

५ उंदरनी लींडी माटीना कुंडामां शेकी चूर्ण करो सरसिया तेलमां खरड करवो. कंठमाळ जाय ।

६ मग शेर ०॥ आकडाना दुधमां ७ दिवस राखो पछी कुरडीमां भरी बाळवां घीमां मलम करी १४ दिवस चोपडवाथी कंठमाळ जाय ।

७ घोडाना नख टां. ४ हरणसींगी टां. ४ मृगचर्म टां. ४ ए त्रणेने बाळी राख करी बेरजो टां. ३ राळ टां. २ फुलावेल मोरथुथु टां. २ फटकडी टां. २ वाटी जुनुं घी टां. ९ मेळवी पछी त्रांबाना ठाममां त्रांबानो लोटीथी १ प्रहर मर्दी पछे सांचवी राखवुं. कंठमाळ उपर २१ दिवस चोपडवाथी आराम थाय ।

८ माणसनां हाड अध बळेल तथा सिकोतरो पलिवो वाटी मधमां मलम करी चोपडवाथी कंठमाळ जाय ।

राफी–राफो वल्मीकम्

आ दरद घणे भागे पगनी नोचे अने क्वचित् हाथ डोक खभो काख सांधा अने गळामां पण थाय छे, पगनुं तळीयुं फणो पडी के बीजी जग्याये गांठ थइ पाकी छिद्र पडी तेमांथी परु साथे काळो के सफेद पडतो भुखरो के लाल दाणादार राई जेवो पदार्थ निकळे छे. आ दरद खेडुतोमां तथा मजुर वर्गमां वधु जोवामां आवे छे तेथी अनुमान करी शकाय छे के खेतरमां उघाडे पगे काम करनारना पगमां ते जातना जंतुओ आळो जग्यामां दाखल थइ आ दरद उपजावे छे वखत जतां साथे वधु छिद्रो पडे छे सोजो वधे छे अने बधां छिद्रोमांथी परु साथे उकेरा (माटी जेवो पदार्थ) निकळे छे ।

पगनी दरदवाळी जग्याये चीरी बगडेलो भाग काढो नाखो जंतुघ्न तेल क्षार के अग्निथी ते भागने बाळी जंतुरहित करी रुझाववुं. दरद बहु वधी गयुं होय तो पगने कापवो जोइए ।

घणां छिद्रो अने चांदां पडयां होय हाथ अने पगनी उपरना भागमां थयुं होय अने तेमां घणां छिद्रो होय सोजो घणो होय ते असाध्य गणाय छे ।

वल्मीकहर तेल—मनशिळ हरताळ भिलामां झोणी पर्लाव अगर चंदन चमेलीनां पान बधांने छासमां वाटी एमां लींबोळीनुं तेल पकावी कपडुं भींजावी उपर राखवुं तथा छिद्रोमां पुरवुं तो राफी मटे ।

लेप—राळ सिंदोर काथो तपखीर हिरादखण मीण तथा घीनो मलम करी चोपडवो तथा तेनां छिद्रमां भरवुं तो रुझाय छे ।



छातीना अने फेफसानां दरद

कारण—बहु गरम भारे खाटां तुरां कडवां पदार्थो खावानी बहु टेवथी बहु महेनत करवाथी छातीमां पछडाट वागवाथी अजीर्ण उपर जमवाथी अतिस्त्रीसंगथी चिंताथी मळमूत्रादिना वेगने रोकवानी टेवथी भयथी इष्टवस्तुना नाशथी तथा आहार विहारमां नियम नहीं राखवाथी छातीनां अनेक प्रकारनां दरद थाय ।

चिन्ह—वायुप्रधान होय तो-खेंचाय चिराय फाटे सोये भोंकाते होय तेवी पीडा थाय भेदाय. पित्तप्रधान होय तो-तरश लागे दाह थाय शोष थाय परसेवो वळे मुंझ चडे. कफप्रधान होय तो-शरीरमां सुस्ती बोजो अरुचि कफ पडे भुख मंद थाय शरीर झलाय जाय मों चिकणुं अने मीठु लागे कोइपण जातना छातीना दरदमां जे लोको मगफळीनुं तेल वेजीटेबल घी बजारनी मिठाइ फरसाण, वासी चीजुं खाटां अथाणां खाटी केरी दहीं वगेरे चीजो खाइ जठराग्निने बगाडे छे तेने छातीना मर्मना भागमां दरद अने गांठो थाय छे ।

रक्ताशयना बाह्यपडनो सोजो होय तो—ताव रक्ताशयने ठेकाणे दुखावो डाबे खभेथी डाबा हाथमां आंचको छातीमां धबकारो थडको नाडी उतावळी गभराट नबळाइ बेभानो वगेरे जणाय छे ।

रक्ताशय वधे के पीळुं थाय तो—जरापण श्रम करतां श्वास चडे उंघ आवे नहीं नाडी अनियमित छातीमां पीडा रक्ताशयनो भाग उपसी आवे ।

रक्ताशयना पडदानी व्याधीमां—रक्ताशयनी डाबी बाजु जाडो पीळो थाय छाती उछळे ससणी के फेफसामां सोजो थाय नाक के पेटमांथी लोही पडे पगे हाथे मोये सोजो चकर मूर्च्छा उंघ ओछी जरा श्रमथी श्वास चडे. शरीर थोडो वखत हालतुं चालतुं बंध थइ बेभान थइ जाय ।

थडकाना दरदमां—छातीमां बळे गळे गोळो चडे चहेरो रातो थइ जाय माथुं दुखे ।

हृदयशूळमां—छातीनी वच्चेथी दुखावो शरु थइ बांसो अने डाबा खभा सुधी पहोंचे छे ते वखते नाडी धीमी श्वास टुंको उतावळो शरीरनो स्पर्श ठंडो परसेवो घणो वगेरे जणाय छे. शूळ उपडे त्यारे १-२ मिनिट दुखावो रही मोळो पडी पाछो थोडी वारे उपडे छे ।

पथ्यापथ्य—आकडानां पाकां पान घी चोपडी तपावी छातीये बांधवां धीमो शेक करवो. झाडो बंध होय तो झाडा पेशाबनी दवा देवी. आराम आपवो जरापण श्रम करवा देवो नहीं मन शांत राखवुं शोक चिंता करवां नहीं सुकी हवा तथा पुष्कळ प्रकाशवाळा मकानमां रहेवुं. ठंडा के चोमासानी मोसममां सगडी राखवी शेक कर्या करवो. शरीरे ठंडो पवन लागवा देवो नहीं. वादी अजीर्ण थवा देवुं नहीं. दुध विशेष देवुं प्रवाही हळवो थोडो खोराक देवो. शाक भाजी कठोळ चिकणां भारे मिष्टान्न तेलमां तळेलां खाटां अथाणां दहीं छास पग्री चीजुं देवी नहीं ब्रह्मचर्य पाळवुं. गरम पाणीथी पवन न लागे तेवे ठेकाणे न्हावुं शरीर तुरत साफ करी नाखवुं. चा केफी चीजुं वगेरे छोडवी. महानारायण तेल महाविष्णु तेल चोळवां. अर्जुनारिष्ट पावो ।

हरिहर रस—पारद तोला ८ गंधक तो १२, अभ्रक तो ६, लोहभस्म ताम्रभस्म शंखभस्म कोडीभस्म शुक्तिभस्म रससिंदुर वंशलोचन पत्रज लींडीपिपर सुंठ मरी शिलाजीत प्रत्येक तो. ४ चार लइ तेने आदुनो रस केळनुं पाणी अरडुसीनो रस अर्जुननो रस अने कासोंदरानो रस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ बबे रतिभारनी गोळी वाळवी. मात्रा २ थी ६ गोळी मध साथे चटाडी उपर गरम दुध पावुं. छातीनां बधां दरद क्षय उधरस बाळकोनां रोग नबळाइ फेफसाना स्वरनळीना गळानां रोगमां तात्कालिक फायदाकारक छे ।

प्रभाकर वटी—सुवर्णमाक्षिकभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म वंशलोचन शिलाजीत सरखे भागे मेळवी अर्जुन वृक्षनो अंतरछालना उकाळामां बबे रतिभारनी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ४ गोळी मधमां चटाडी उपर गरम दुध पावुं. छातीनां बधां दरद मटे ।

शंकरवटी—पारद तोला ४ गंधक तो. ८ लोहभस्म तो. ३ नागभस्म तो. २ बधां साथे मेळवी पिलुडी चित्रो आदु अरणी अरडुसी बीली अर्जुन प्रत्येकना रसनी भावना आपी बबे रतिभारनी गोळी वाळवी. मात्रा २ थी ६ गोळी मधमां चटाडी उपर गरम दुध पावुं. छातीनां बधां दरद मटे ।

त्रिनेत्र रस—पारद गंधक अभ्रकभस्म त्रणे सरखां लइ अर्जुननी छालना रसनी २१ भावना देवी सुको राखवो. २ थी ६ रति मधमां चटाडो उपर दुध पावुं।

हृदयार्णव रस—पारद गंधक ताम्रभस्म सरखे भागे मेळवी त्रिफळा अने [illegible]ना रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २ थी ४ गोळी मधमां चटाडी उपर दुध पावुं।

अर्जुनारिष्ट—अर्जुन वृक्षनुं पंचांग शेर २० भोरींगणीनुं पंचांग शेर ५ कांसोदरानां पान शे. ५ बधांने दशगणा पाणीमां उकाळवां. चोथा भागनुं रहे पटले गाळी लइ तेमां धावडीनां फुल शेर २॥, तज पलचि नागकेसर लविंग काळांमरी सुंठ पिपर प्रत्येक शे ०॥ अर्धो, कपूर तो १० अने गोळ शे. ६० मेळवी हलावी लाकडाना पीपमां के चोनाइ माटीनी बरणीमां भरी मोये माटी छांदा देवी दर दश दिवसे हलाववुं ४५ दिवसे तेने गाळी शीशा भरवा. हमेशां २ थी ५ तोला आसव पीवो छातीनां बधां दरद उर क्षत क्षय उधरस फेफसानां दरद वगेरे मटे।

सुवर्णवसंतमालती सुवर्णभस्म ताम्रभस्म अभ्रकभस्म सिद्धहरताळभस्म मुक्ताभस्म अष्टमूर्तिकूपी पूर्णचंद्रोदय सुवर्णपर्पटी सूर्यतापी शिलाजीत वासारिष्ट मृगमदासव अर्जुनारिष्ट अगस्त्यहरीतकी अवलेह महासरस्वती सुरा मृतसंजीवनी सुरा ए बधां औषधो छातीनां तथा फेफसानां दरदोमां उपयोगी छे।

अंग्रेजीमां न्युमोनिया अने प्ल्युरसी कहे छे तेनो सारवार तावना प्रकरणमां जोवी. क्षयरोगना प्रकरणमां बतावेलां औषधो छातीनां फेफसानां अने स्वरनळीनां दरदोमां आपी शकाय छे।

मोढाना बहारना भागनां दरद

कारण-चिन्ह—अजीर्णथी जलद दारु पीवाथी खराब हवामां रहेवाथी झाडो कबज थवाथी अथवा जुवानीनी प्रथम स्थितिने लीधे मोढानी चामडीनां दरद थाय छे।

कुंकुमाद्य तेल—केसर चंदन लोदर पतंग रक्तचंदन कृष्णागरु मजीठ वाळो जेठिमध तमालपत्र पद्मकाष्ठ कमळ कुष्ठ गोरोचन हळदर लाख दारुहळदर गेरु नागकेसर केसुडां धउंलो कुणी वडवाइ मालतीपुष्प मोण सरसव वज शेप-गुदर प्रत्येक तोलो १ एक लइ बधाथी चारगणुं गायनुं दुध अने तलनुं तेल तो. १२८ एकसो अठावीश नाखी पकाववुं पाणीनो भाग बळी जाय पछी तेल गाळी लेवुं. मोंये चोपडवाथी व्यंग छाया झांइ खील दाझ डाघ वगेरे मटी मुख सुंदर अने रुपाळुं थाय छे।

खीलना सामान्य उपचार

१ इंगोरियाना गरभने पाणीमां वाटी चोपडवो।

२ लोदर वज अने धाणा सरखे भागे लइ पाणीमां वाटी चोपडवुं।

३ जायफळ चंदन अने मरी सरखे भागे पाणीमां वाटी हमेशां चोपडवुं।

४ मसुरना लोटने घोनो करमो वृद तेने दुधमां डोइ मों उपर चोळवुं. ७ दिवसमां मुख चंद्र जेवुं कांतिवाळुं थाय खील वगेरे मटे ।

५ सरसव वज लोदर सिंधालुण पाणीमां वाटी चोपडवुं ।

६ अर्जुननी छालने गायना दुधमां वाटी चोपडवुं. खील मटे ।

७ मसुर अने वडनी कुणी वडवाइ सरखे भागे लइ पाणीमां वाटी चोपडवुं।

८ वज लोदर धाणा समभागे लइ पाणीमां वाटी चोपडवाथी अथवा लोदर सिंधालुण सरसव वज समभागे लइ पाणीमां वाटी चोपडवाथी अथवा शेमळाना कांटाने दुधमां वाटी चोपडवाथी जुवानीने लीधे के गमे ते कारणे थयेला स्त्री-पुरुषना मो गाल उपरना कांटा जेवा खील मटी ३ दिवसमां मो सुंदर थाय छे।

मो गाल उपरनां काळा डाघ चाठां चामठां दाझोडां वगेरेना उपाय

१ रतांजळी मजीठ उपलेट लोदर आंबानो मोर वडना टीसा-अंकुर मसुरनी दाळ शेवखुंदर सरखे भागे लइ खांडी गायना दुधमां वाटी मो उपर खरड करवो मोनी छाया मटे ।

२ हळदर कपुरकाचली घउंला मसुर अने मग सरखे भागे खांडी नाळीयेरना पाणीमां वाटी चोपडवाथी मुखनी छाया पटले काळां चामठां दाझ दाझोडां काळां धावां काळा राता डाघ चाठां मटे ।

३ इंगोरियानां मींज साठा चोखाना ओसामण साथे वाटी चोपडवाथी मोनो काळी झांइ छाया डाघ धावां जाय ।

४ चणियाबोरना ठळीयानां मींज मध साथे वाटी लेप करवाथो धावां मटे।

५ गोळ अने माखण मेळवी लेप करवाथी छाया मटे ।

६ करंजनां मींज पलाशनां मींज उपलेट हळदर गौमूत्रमां आथो नाखी ३ दिवस पछी चोपडवाथी छाया डाघ धावां जाय ।

७ मोरथुथु चणानी दाळ पलाळी वाटी लींबुरसथी लेप करवो. डाघ मटे।

८ मोरथुथु हिंगळोक राळ बोदार गंधक पारो कनकबीज मीण समभागे वाटी गायना घींमां मलम करी चोपडवाथी मुखछाया डाघ धावां मटे ।

९ बोरडीनी लाख वाघलनुं मूळ केसर टंकणखार समभागे खांडी लींबुरस साथे वाटी चोपडवाथी मुखछाया मटे ।

१० सरसव लोदर हळदर घउंला तल ठंडा पाणीमां वाटी लेप करवो. मुखछाया मटे ।

११ सरसव अने जीरुं वाटी चोपडवाथी मुखछाया मटे ।

१२ केसर भांग लाख टंकणखार कंपिलो जवासानां मूळ लींबुरस साथे वाटी चोपडवाथी मुखछाया मटे ।

१३ मोरींगणीनां मूळ मीठुं बळदनां मूत्र साथे वाटी चोपडवाथी छाया मटे।

१४ गरमाळाना पानना रसनो लेप करवाथी दाझ झांइ छाया मटे ।

१५ रींगणीनां पान कपासिया काकजंघा सुरको साथे वाटीने मंगळवारे उगटणुं करवाथी दाझ झांइ दाझोडा मटे ।

१६ मूळानां बी अने हळदर छासमां वाटी उगटणुं करवुं. दाझोडा मटे ।

१७ पारो दोकडा ०॥ भार वडागरु मीठुं दो. १ कुवाडियाना बी दो. १॥ ...म पारो वडागरु २ पहोर परती. कुवाडियाना बी ने झीणा वाटी चाळो भेळां ...ी गाडरना दुधमां २ दिवस वाटवां दुध नाखतुं जावुं पछी चोपडवाथी काळीछाया ...ाम चाठां सर्व जाय ।

१८ गंधक गुगळ लोबान साकर सुखड समभागे वाटी प्रथम नमकथी घसी ...ी चोपडवुं. मोढाना कपाळना काळां चामठां जाय ।

१९ तल जीरुं शाजीरुं सरसव सरखे भागे खांडी दुधमां वाटी मो उपर ...ोपडवाथी काळा डाघ मटे मो चंद्र जेवुं कांतिवाळुं थाय ।

२० गेरु मजीठ मोथ हळदर दारुहळदर समभागे लइ केळना रसमां वाटी ...ोपडवाथी ७ दिवसमां काळा डाघ मटे ।

२१ पारो अने हरताळ दोकडा १ एक भार वाटी गाडरना दुधमां पहोर ...२ घुंटी पछी चोपडवाथी काळां चाठां जाय ।

२२ हिमेज बोदार आमलसारो गंधक लींबुरसमां घसी चोपडवाथी काळां ...ठां जाय ।

२३ मरी सिंदोर गायना घी मां घाटी भेंसना घी थो तडके बेसी चोपडवुं. ...ळां ध्रामठां जाय ।

२४ वालोळना पाननो रस दोकडा ९ भार पारो दो. १ भार साथे २ दिवस ...ुंटी मलम करी चोपडवाथी कपाळना मुखना काळां चाठां जाय ।

मसना उपाय

१ नवसार टंकणखार फटकडीयो सोमल दारुडींनां मूळ लींबुरस साथे ...टी गोळी करवी. जरुर पडे त्यारे लींबुरसथी अथवा पाणीथी घसी मस उपर ...ोपडवाथी मो नां गळाना मस मटे ।

२ दाडमियो सोमल मोरथुथु चाक मनशिल चुनो खारो समभागे वाटी मसने मूळे चोपडवुं नीचे घीनुं पोतुं मुकवुं मस निकळी जाय ।

३ साजीखार वज चुनो शंख समभागे वाटी लेप करवो. मस जाय ।

४ साजीखार शंख चुनो लींबुरस साथे वाटी चोपडवाथी मस जाय ।

मगजना रोग

प्राणाः श्रिता हि यत्र प्राणभृतामिन्द्रयाणि सर्वाणि ॥
सर्वांगानामग्र्यं शिर उत्तममंगमुच्यते विद्भिः ॥ १ ॥
वाताद्रुगार्तिशूलं स्फुरणं पित्तात्सदाहधूमार्तिः ॥
गुरुता जडता च कफात्पीडा प्रातस्तथा रजन्यां वै ॥ २ ॥
दोषत्रिकचिन्हयुतं त्रिदोषजं क्रिमिभवं पुनश्च शिरः ॥
दौर्गंध्यकंडुतोदार्तियुतं वैद्या वदन्ति पूययुतम् ॥ ३ ॥ र. तं.

कारण—मळमूत्रनो वेग रोकवाथी रात्रे उजागरो करवाथी दिवसे सुवानी बहु टेवथी सामो पवन वेठवाथी बहु श्रम बहु अग्निसेवन करवाथी अजीर्ण उपर जमवाथी भुख विना खा खा करवानी टेवथी जीभने वश नहीं राखवाथी इंद्रिय दमन नहीं करवाथी कुटेवथी हद उपरांत मगजमारीनुं काम करवाथी क्रोधथी दाह करनारां गरमागरम पदार्थो के चा काफी जेवां पीणांथी चिंताथी आवेशथी भुख वेठवाथी बहु लांघण करवाथी उंचे स्वरे भाषण करवाथी अति स्त्रीसंगथी प्रकृतिने माफक न आवे तेवो गंध सुंघवाथी धुळ धुंवाडो ठंडो के तडको वेठवाथी खाटां लींबु अति शाक बकालुं बरफनुं के बरफ जेवुं ठंडु के बीजां ठंडा पीणां वधु पीवाथी आम बगडवाथी आंसुनो वेग रोकवाथी मस्तकपर चोट वागवाथी वरसादनी ऋतु बेसवाथी मनना संतापथी अति रुदनथी देशकाळ हवापाणी बगडवाथी एम अनेक कारणे मस्तकमानुं लोही बगडी जइ वात पित्त कफ दोष प्रकोप पामी विविध प्रकारनां मस्तकना रोग उपजावे छे ।

पथ्यापथ्य—जांगल आमिष चोखा मग परवळ सरगवो अडद कळथी दुध जुलाब लेप लांघण परसेवो वगेरे हितकारक छे. सुंघवानी दवा आपवी शिरो विरेचन कराववुं योग्य स्थळे डाम देवो. द्राक्ष वथवो कारेलां केरी आमळां दाडम सफरजन मीठां संत्रां कपूर चंद्रनो प्रकाश वगेरे हितकारक छे. उजागराथी छींक रोकवाथी बगासांने रोकवाथी मळमूत्रनो वेग रोकवाथी दिवसे उंघवाथी अजीर्ण थाय तेवा पदार्थो खावाथी नुकशान थाय छे. जे कारणथी मगजनुं दरद थयुं होय ते तपासीने उपचार करवा ।

सर्वशिरोरोगहर रस—पारदभस्म रक्त गंधक अभ्रकभस्म लोहभस्म ताम्रभस्म सुंठ पिपर मरी कडु गुगळ हरडे वज मरडासींगो बधां सरखे भागे लइ तुळसी तथा आदुना रसनो अकेक भावना दइ बे भावना काळी धराखना उकाळानी देवी. बबे रतिभारनी गोळी वाळवी अथवा भुकी राखवी. सवार सांज ३ त्रण रति मध घी साथे के च्यवनप्राश अवलेह साथे आपवी. मस्तकना बधा रोग मटे छे ।

पाठादि लेप—काळीपाट पटोळ सुंठ परडानुं मूळ सरगवानी छाल कुवाडियानां बी सुगंधीकुष्ठ बधांने छासमां वाटी चोपडवाथी बधी जातना मस्तक रोग-शिरो रोग मटे ।

शिरोरोगहर अवलेह—आमळां लीलां रतल १० लइ पाणीमां बाफी छुंदो करी ठळीया काढी लइ पछी घीमां तळी राखवुं. गळो गोखरु बहुफळी अरडुसी उंबरानी छाल लींमडानां पान प्रत्येक रतल बबे लइ दसगणा पाणीमां उकाळो करी अर्धु पाणी रहे पटले गाळी तेमां आमळांनो तळेलो छुंदो तथा सुंठ पिपर मरी तज एलचि नागकेसर चोपचिनी वज मरडासींगी भांगरो तुळसीनां बी गोखरु वळदाणा शतावरी दुधीयो हेमकंद प्रत्येक १० दश तोला लइ खांडी ते भुको नाखवो तथा देशी खांड रतल २५ नाखी पकाववुं चाटवा जेवुं थवा आवे पटले उतारी चिनाइ बरणीमां भरी राखवुं. मात्रा १ थी २ तोला पकलुं अथवा उपर लखेलां हरकोइ औषध साथे आपवुं. माथानां बधां दरदोमां फायदो करे छे ।

षड्बिंदु तेल—एरंडानुं मूळ तगर शतावरी हरडे रास्ना सिंधालुण आंगरो वावडींग जेठिमध सुंठ प्रत्येक तोला १० दश लइ खांडी तेमां १० शेर बकरीनुं दुध, १० शेर भांगरानो रस तथा १० शेर तलनुं तेल नाखी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय एटले तेल गाळी लेवुं. आ तेलनां नाक वाटे हमेशां थोडां टीपां नाखवां माथामां नाखवुं तथा कानमां रेडवुं तेथी मगजनां के माथाना रोग मटे छे मगजने पुष्टि मळे छे ।

शिरोबस्ति—माथामां लागु थाये तेवी उभा कांठानी चामडांनी टोपी कराववी. टोपीनो वचलो भाग खालीज रहे अने तेनी नीचेनो कांठो कपाळ सुधी फरतो बंध बेसतो थाय अने उपलो कांठो वाळ उपरांत ३ आंगळ उंचो जाय एटले गजना ६-७ आंगळ उंचाइनी करवी. टोपीना हेठला छेडाना सांधामांथी पुरेलो प्रवाही आंख डोक तरफ आवे नहीं माटे सांधामां फरतो अडदनो लोट अंदरना भागथी (वाळ तरफना सांधामां) छांदवो पछी दरदीने हले चले नहीं तेवी रीते स्थिर बेसारी नवशेकुं तेल टोपीना कांठा सुधी पुरवुं. १॥ थी ३ कलाक सुधी रहेवा देवुं तेटला वखतमां पीडा शांत थशे. आ शिरोबस्ति वायु प्रधान माथानां दरदने तथा डोक हांसडी आंख कान वगेरेमां थती पीडाने मटाडे छे. शिरोबस्ति ५ थी ७ दिवस सुधी अपाय छे. शिरोबस्ति आपवा पहेलां दरदीने भुख्ये पेटे राखवो वखत पुरो थइ जाय एटले दरदीने धीमेथी नीचो नमाधी तेल काढी टोपी काढी लेवी. पछी माथुं कपाळ मुख डोक खंभो वगेरे अवयवने मर्दन कर्या पछी नवशेका के सारुं लागे तेवा गरम पाणीये माथुं वगेरेने धोइने अथवा नवरावीने भात दाळ खीचडी वगेरे हळवो खोराक देवो. वात पित्त अने कफ जे दोष प्रधान होय तेने शमावनार तेलनी शिरोबस्ति आपवी. जेमके वायु प्रधान होय तो महानारायण तेल, पित्त प्रधान होय तो आमळांनुं तेल के षड्बिंदु तेल कफ प्रधान होय तो महामरिचादि तेल उपयोगमां लेवुं ।

सिध्धनावन तेल—तज दंतिमूळ वाघना नख वावडींग जुइ अघेडानां बी करंज बी सडसडानां बी नाक छींकणी पाषाणभेद बीलीनो गरभ हळदर हिंग चमेली मरवो बकरीनुं मूत्र एमां तलनुं तेल पकावी तेनां टीपां नाकमां नाखवाथी बधी जातनां मस्तकनां दरद मटे. एज ओसडियाने बारिक खांडी कपडे चाळी बजरनी पेठे सुंघाडवाथी पण बधी जातनां मस्तकनां दरद मटे ।

पंचामृतलोह गुगळ—पारद गंधक रौप्यभस्म अभ्रकभस्म सुवर्णमाक्षिक भस्म प्रत्येक तोला ४ चार, लोहभस्म ८ तोला, गुगळ २८ तोला बधांने लोढानी खरलमां लोढाना दस्ताथी ६ कलाक सुधी धुंटवुं थोडुं थोडुं सरसियुं तेल नाखतुं जवुं. पछी तेनी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा टंके ३ थी ६ गोळी गायनां दुध साथे आपवी आथी मगजना बधा रोग मटे छे ।

लक्ष्मीविलास तेल—कचुरो चंपानां फुल मोथ बळामूळ बीलि गरभ अश्वगंधा उभी भोरींगणीनां डोडवां अरडुसिनां फुल चंदन रक्तचंदन मजिठ उपलसरी अनंतमूळ हळदर दारुहळदर जेठिमध महुडां पद्मकाष्ठ कमळ वाळो अजमा

गंध प्रसारणी सुगंधी मेंदी गुलाबनां फुल सुकां आमळां पानडी पलचि ए बधां वसाणांने खांडी शतावरिनो रस विदारीकंदनो रस केळकंदनो रस लीलां गोखरुना पंचांगनो रस नाळीयेरनुं पाणी लीलां आमलांनो रस भुरांकोळांनो रस दहींनुं पाणी बकरीनुं दुध लाखनो उकाळो उपलां वसाणांनी ए प्रवाहीमां लुब्दी करी तलनां तेलमां पकाववुं. आ तेल कानमां नाकमां माथामां नाखवुं दुध साथे पावुं. मगजनां रोग झामरवा मटे. हमेशां नाखवाथी बुद्धि स्मरणशक्ति वधे. शरीरे चोळवाथी आयुष्य वधे ।

अर्धनारीश्वर नस्य—कोडीभस्म तोलो १ फुलावेल टंकण तो. ५ मरी तो. ९ अतिविष तो. ३ स्त्रीना धावणमां घुंटी छाये सुकावी बारिक करी कपडे चाळी राखवुं. मस्तकना बधां रोगोमां सुंघाडवुं. कफप्रधान शिरोरोग जलदी मटी जाय छे ।

१ मुक्ताभस्मउंची तोलो ०॥ सुवर्णवसंतमालती तो. ०॥ स्फाटिकभस्म तो. ०। जीवितप्रदा तो. १ अमृतासत्व तो. २॥ बधां साथे वाटी सरखे भागे ६४ पडिकां करी बेवार च्यवनप्राश अवलेह साथे चटाडी उपर दुध पावुं ।

२ मुक्ताभस्म सुवर्णपर्पटी अभ्रकभस्म प्रत्येक तोलो ०॥ अर्धो पंचामृत लोह गुगळ तो. २ साथे मेळवी ६४ पडिकां करी हमेशां १ पडिकुं गायना घीमां चाटवुं उपर जम्या पछी द्राक्षासव २ वखत १ एक औंस पावो ।

महामायूर घृत पावाथी सिद्धदशमूळ तेल, कनक तेल आमळानुं तेल, रुद्र तेल ए औषधो चोळवाथी चोपडवाथी माथामां नाखवाथी कानमां नाकमां टीपां नाखवाथी शंखक सूर्यावर्त झामरवा तथा मस्तकना बधा रोग मटे छे ।

वायुजन्य मस्तक रोग–वानो माथानो दुखावो

ऊंचे सादे बोलवाथी भाषणो करवाथी दारु जेवां उग्र पीणां पीवाथी उजागराथी ठंडो पवन लागवाथी अतिविषयथी मळमूत्रादिनो वेग रोकवाथी अपवास करवाथी चोट लागवाथी जुलाब अने उलटी करावबाथी आंसु रोकवाथी शोक भय अने त्रासथी बोजो उपाडवाथी पंथ करवाथी एवां अनेक कारणोथी वधेलो वायु मस्तकमांनी शिराओमां पेशी जइ उपद्रव करे छे तेथी माथुं दुखवानो रोग थाय छे त्यारे बन्ने लमणामां ओडव्यमां पीडा थाय भ्रकुटीनो मध्य भाग अने कपाळ तळे वेदना थाय. माथुं फरतुं होय तेम लागे सांधा अंदरना भागमां तुटता होय तेम देखाय जीणी जीणी नसो फरक्या करे मोटी शिरोधरा नाडियो सज्जड थइ जाय अचानक पीडा थाय रात्रे पीडा वधे कपडुं बांधवाथी के शेक करवाथी पीडा ओछी थाय ते वातजन्य समजवुं ।

माणिकभस्म प्रवाळभस्म चंद्रपुटी अभ्रकभस्म दरेक तोलो ०॥ अर्धो, अमृतासत्व तो. २॥ साथे मेळवी सरखे भागे ६० पडिकां करी सवार सांज अकेक पडिकुं शिरोरोगहर अवलेह साथे चटाडवुं. घी तेल के मलमनुं मर्दन करवुं. जुलाब आपवो जठरमां वायु ओछो थाय अनुलोमन थाय तेवा वायुनाशक उपचार करवा. बजर सुंघाडवी. मुचकुंदनुं फुल सुंघाडवुं ।

कुष्टादि लेप—कुष्ट परडानां मूळ अने सुंठ छासमां वाटी नवशेकुं कपाळे चोपडवुं ।

देवदार्वादि लेप—देवदार नडसळ कुष्ठ तगर सुंठ बधां सरखे भागे लइ छासमां वाटी नवशेकुं करी थोडुं घी नाखी चोपडवुं ।

पित्तजन्य मस्तक रोग–गरमीनुं माथुं दुखवुं

कारण—तीखां खाटां खारां क्षारवाळां पदार्थो खावाथी दारु बहु पीवाथी क्रोधथी तडको वेठवाथी अग्निवडे तपवाथी मगजमां कोपेलुं पित्त रोग पेदा करे त्यारे मस्तक बळे पीडा पामे ठंडी वस्तुओ सारी लागे आंखो बळे तरश लागे भ्रम थाय परसेवो वळे राते पीडा ओछी थाय ।

उपचार—आमां स्निग्ध जुलाब आपवो, परंडियुं तेल पीवरावुं द्राक्ष अने त्रिफळा शेरडीना रस साथे आपनां साकर दुध अने पाणी साथे मेळवी माथे छांटवां, माथे कपाळे घीमां तळेलां आमळांने [illegible] चोपडवां, गायनुं घी मसळवुं ।

चंदनादि लेप—चंदन घसेलुं वाळो जेठीमध [illegible] बधांने दुधमां वाटी चोपडवुं, सोवार धोयेलुं गायनुं घी चोपडवुं ।

[illegible] आंमळीने पाणीमां घसी लगाडवाथी [illegible] पित्तनो [illegible] मटे ।

स्फटिकमणिभस्म मोतीपिष्टि सुवर्णवसंतमालती प्रत्येक [illegible] अर्धो, महाचंद्र[illegible] तो. १ साथे मेळवी सरखे भागे [illegible] पडिकुं [illegible] च्यवनप्राश अवलेह साथे चटाडी उपर गायनुं दुध पावुं ।

कफजन्य मस्तक रोग–शरदीनो [illegible]

कारण—बेसी रहेवानी के बहु ऊंघवानी टेवथी [illegible] बहु प्रमाणमां खावाथी कफजन्य शिरोरोग थाय [illegible] पीडा थाय स्पर्शज्ञान ओछुं थाय मस्तक जड [illegible] चेचेनी आळस अरुचि वगेरे चिन्हो [illegible] आंखे नाके मोये सोजो थाय ।

लेपन करावबुं नगोडनां बी तगर [illegible] जटामांसी रास्ना परडानां मूळ बधांने [illegible]

सुवर्णवसंतमालती अभ्रकभस्म [illegible] अर्धो, सिंहनादगुगळ तो. १ साथे [illegible] सवार सांज अकेक पडिकुं हरीतकी [illegible] चटाडो [illegible]

त्रिदोषजन्य मस्तक रोग [illegible]

कारण—आमां वायु पित्त कफ [illegible] सखत [illegible] भ्रम थाय माथुं [illegible]

[illegible] आपवो, गायनुं घी [illegible] [illegible] करावुं, [illegible] आपवी, जुनुं घी [illegible]

मदनादि प्रधमन—मींढोळ तल समेरवानां बी जटामांसी दर्भ तमाल नेपाळो तज प्रत्येक अकेक तोलो फुलावेलुं मोरथुथु तोलो ०॥ साथे मेळवी खांडी कपडे चाळी नस्य आपवाथी त्रिदोपजन्य मस्तकरोग मटे ।

अंगुरी सुरका साथे अथवा गुलावजळ साथे सुखड घसी चोपडवाथी त्रिदोपजन्य दुखावो मटे ।

सुवर्णवसंतमालती तो. ०॥ सुवर्णभस्म लाल तो ०।, रौप्यभस्म श्वेत, शिलाजीत अभ्रकभस्म महालक्ष्मीनारायणरस प्रत्येक तोलो ०॥ अर्धो, चंद्रप्रभा तो. २ साथे मेळवी सरखे भागे ६४ पडिकां करी सवार सांज अकेक पडिकुं मध तथा गायना घी साथे अथवा च्यवनप्राश अवलेह साथे चटाडी उपर गायनुं दुध पावुं भुख प्रमाणे खोराक देवो ।

क्षयजन्य मस्तक रोग-शरीरनी क्षीणताने लइ माथुं दुखवुं

पीडा सखत थाय स्वेदन धूम्रपान नस्य फस खोलाववी वगेरेमां भूल थवाथी तथा लांबा वखतनी धातुक्षीणता शरीरनी नबळाइ वगेरेथी आ दरद थाय छे. माथानी असह्य पीडा थाय. शरीरमां शक्ति लोही मांस धातु वधे तेम पीडा ओछी थाती जाय ।

आ दरद केटलीक वखत बाळकोने वधु देखाय छे बाळक दांत घसे माथुं दुखतां ससका आववाथी राडो पाडे आंचकी बेचेनी सखत ताव भ्रम झाडो कबज वगेरे चिन्हो देखाय छे. दरदोनी छेल्ली स्थितिमां उपरना चिन्हो ओछां नबळां देखाय छे. गरदन अने पीठना स्नायुओ तणाय छे जोभ सुकी पडे छे अने बाळक मरण पामे छे ।

वायुनाशन ओसडियामां घी पकावी पावुं नाकमां टीपां नाखवां. घी दुधनो खोराक आपवो, क्षयरोगहर उपचारो करवा ।

सिद्धहरताळभस्म तोलो ०।, महालक्ष्मीविलास अभ्रक सहस्रपुटी कांचनाभ्र मुक्तापिष्टी सुवर्णवसंतमालती प्रत्येक तो. ०। पा लइ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ६४ पडिकां करवां. सवार सांज अकेक पडिकुं गायना घी साथे अथवा च्यवनप्राश अवलेह साथे चटाडो उपर गायनुं दुध पावुं. राते सुती वखते द्राक्षासव पावो. बाळकने ओछी मात्रा देवो. चिन्हो प्रमाणे विचारी उपचार करवा लोही वधे शक्ति आवे तेवा उपाय करवा ।

कृमिजन्य मस्तक रोग जीवडाने लइ माथुं दुखवुं

तल दुध गोळ वासी खोराक संयोग विरुद्धनुं अन्न पान सडेलुं मांस खावाथी, जमतां जमतां अहोंतराइ जावाथी नाकमां श्वासनळीमां अन्नना कण भराइ जइ सडी तेमांथी जीवडा पेदा थाय छे. नाकवाटे पाणी पीनाराने ते पाणी गाळ्या विनानुं होय अने पाणी वाटे न देखी शकाय एवा कीराणुं अंदर पेशी मोटा थइ जीवडानुं रुप ल्ये छे त्यारे मस्तकमांना लोही कफ मांसनो सडो थइ जंतुओ उत्पन्न थाय छे त्यारे भयंकर पीडा उपजे छे. मस्तकमां वींधातुं होय कपातुं होय जीवडा बटकां भरता होय तेवी पिडा थाय अंदर खंजवाळ आवे सोजो थाय सुतां बेसतां

हरतां फरतां खातां पीतां क्यांय चेन पडे नहीं नाक वाटे परु लोही के जीवडा कोइ कोइ वार निकळे श्वास गंधाय. आ दरद पापकर्मवाळा मनुष्योने थाय छे।

सुंठ पिपर मरी करंज सरगवानां बी बधांने बकरीनां मूत्रमां वाटी नाकमां टीपां नाखवां।

लसणना रसनां टीपां नाकमां नाखवाथी जीवडा निकळी पडे दुखावो मटे।

वावडींग पापडियो खारो दंतिमूळ हिंग बधांने गौमूत्रमां वाटी तेमां सरसियुं तेल पकाववुं. नाकमां टीपां नाखवां तिक्ष्ण शिरोविरेचन कराववुं।

चमारदुधलीनां पानमां चणोठी जेटलुं कपूर नाखी वाटी रस काढी नाकमां तथा कानमां टीपां नाखवां।

कायफळ कपूर डिकामारी तमाकु दरेक बबे आनीभार लइ करंजीया तेलमां वाटी कपडे गाळी नाकमां टीपां पाडवाथी जीवडा निकळी जाय।

पंचामृतलोह गुगळ तो. २ पूर्णचंद्रोदय तो. ०। अभ्रकभस्म तो. ०॥ जीवितप्रदा तो. १॥ संशमनी तो. १ सुवर्णपर्पटी तो. ०॥ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ६० पडिकां करी सवार सांज वासावलेह साथे अकेक पडिकुं आपवुं षडबिंदु अणुतेलनां अथवा महानारायण तेलनां टीपां नाकमां अने कानमां नाखवां

आधाशीशी-अर्धावभेदक तथा सूर्यावर्त

रुक्ष खोराक अजीर्ण उपर भोजन सामो पवन मळ मूत्रादिनो वेग रोकवो बहु महेनत बहु कसरत वगेरे कारणे कोपेलो वायु एकलो अथवा तो कफ साथे मळीने आ दरद करे छे त्यारे डोक भ्रकुटी लमणो कान आंख कपाळ वगेरे अर्धा माथाना अवयवोमां सखत पीडा करे छे. ते बहु वधे तो कान बहेरा थाय के आंख जाय।

चिन्ह—अर्धुं माथुं दुखे एकबाजुनो कपाळनो भाग आंखनी भ्रमर उपर दुखे छे कोइवार थोडो अने कोइवार असह्य दुखे छे. घणी वखत आखुं माथुं पकडाय छे. आधाशीशीमां माथुं सवारमां चडे पण अनियमित रीते उतरे छे अने सूर्यावर्त सूर्य चडे तेम दुखावो वधतो जाय मध्यान्हे भारे असह्य पीडा थाय अने सुरज नमे तेम उतरतां सांजे बंध थाय. आधाशीशी अने सूर्यावर्तना उपाय सरखा छे. आहार विहारना अनियमितपणाथी मगज उपर चिंता के बोजो बाजो पडवाथी शोक चिंताथी ताव वगेरेनी नबळाइथी आंखनी पीडाथी पण अनेक कारणे थाय छे।

उपचार—षडबिंदु तेलनां टीपां ६ छ दरेक नाकनां फरणामां नाखवां अथवा सूर्योदय पहेलां दहींमां के दुधमां अथवा धतुराना पान हथेळीमां चोळी तेनो रस १-२ टीपां नाखी पावां अथवा सवारमां उठी गरमागरम घी मां तळेली जलेबी खावी.

अर्धावभेदहर नस्य—मरी पारद गंधक प्रत्येक तोला ४ चार, टंकण फुलावेल तो. २ तमाकु तो. ३ मनशिळ तो. ०॥ पलचि तो. १ कपूर तो. ०॥ बधां साथे भेळवी बारिक घुंटी राखवुं, हमेशां सुंघाडवुं तेथी माथानो दुखावो आधाशीशी तथा तेने लगतां बधां दरद मटे छे।

उपलसरी कुष्ठ जेठिमध वज पिपर कमळ छासमां वाटी माथे कपाळे चोपडवुं.

गीलोड अने साकरने गायना दुधमां वाटी सूर्योदय पहेलां नाकमां टीपां नाखवां.

सुंठ अफीण राता चोखा सरखे भागे खांडी पाणीमां सोगठी करी राखवी जरुर पडे त्यारे पाणीमां घसी चोपडवाथी आधाशीशी मटे ।

आकडानां पीळां पान उपर तलनुं तेल चोपडी गरम करी हाथे मसळी २ ३ टीपां नाकमां नाखवाथी घणी छींक आवी आधाशीशी उतरे ।

गरणीनुं मूळ पान बी बधां पाणी साथे वाटी कपडे नीचोवी नाकमां टीपां नाखवां अथवा गरणीनुं मूळ काने बांधवुं अथवा तीखांने भांगराना रसमां वाटी माथे चोपडवुं ।

गरमागरम घी मां तळेली जलेबी सवारमां नरणे कोठे खावी ।

मरी टां ०। पिपर टां. ०। मनशिळ टां. ०। ए बधां छासना आछरणमां वाटी माथे चोपडवुं ।

लींडीपिपर २ वाल साकर तो. ०॥ वासी पाणी साथे आपवुं. आधाशीशी जाय

सिंधव पाणीमां घोळी नास देवी. आधाशीशी जाय ।

भांगराना रसमां सरखे भागे बकरीनुं दुध मेळवी तडके तपावी नाकमां टीपां नाखवां ।

सडसडानां मूळ अने फळने खांडी कपडे चाळी सुंघाडवुं ।

वज अने लींडीपिपरने खांडी कपडे चाळी सुंघाडवुं ।

जांगल मांसने उकाळी नास-बाफ देवी ।

सुरजमुखीना बी ने सुरजमुखीना पानना रसमां वाटी कपाळे माथे चोपडवां ।

नगोळाना पानना रसमां अघेडानां बी वाटी कल्क करी तेमां माखण पकावुं ए घीना टीपां नाकमां नाखवाथी असाध्य सूर्यावर्त मटे छे ।

षडबिन्दु तेलनां टीपां नाकमां नाखवां, शिरोरोगहर अवलेह चटाडवो ।

वसंतमालती तो. ०॥ शिर शूलादिवज्र तो. ०॥ मुक्तापिष्टी तो १ प्रवाळपिष्टी तो. १ अमृतासत्व तो २॥ साथे वाटी सरखे भागे ६४ पडिकां करी सवार बपोर ने सांज गायना घी साथे के च्यवनप्राश अवलेह साथे अकेक पडिकुं चटाडी उपर गायनु दुध पावुं, सारस्वतारिष्ट के महा सरस्वती सुरा अर्धा थी पण औंस टंके पावो. महाज्वरांकुश कनकबीज वाळो ४-६ गोळी दी उग्या पहेलां देवी. विश्वतापहरण गोळी ३-४ आपवी ।

अनंतवात

कालिक ब्रामरवाने मळतो आ रोग छे त्रणे दोषनो प्रकोप आमां होय छे भ्रकुटी लमणामां तीव्र पीडा करे गालनी बाजुमां कंप थाय आंखना विकार थाय आंखे अंधापो आवे. आ दरद भयंकर छे ।

खोलावी, वात पित्त कफ शामक खोराक देवो, मध माखण घी दुध खुब देवां ।

बळदर हळदर मजीठ लींमडानी अंतरछाल वाळो पद्मकाष्ठ बधांने पाणी मां वाटी चोपडवुं ।

पंचामृतलोह ગુગળ तो. २ सुवर्णभस्म तो. ०। संशमनी तो. १॥ जीवितप्रदागुटी तो. १ अभ्रककल्पवटी तो. १ सर्वेश्वरपर्पटी तो. ०॥ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ८० पडिकां करी अश्वगंधाद्यवलेह साथे सवार सांज चटाडवां. मृतसंजीवनी सुरा महा सरस्वती सुरा अश्वगंधारिष्ट के द्राक्षासव पावो ।

शंखक

तीक्ष्ण झामरवाने मळतो आ रोग छे. पित्त लोही अने वायु दूषित थइ लमणाना भागमां जामी जइ भयंकर पोडा दाह अने सोजो करे छे पछी आंख माथुं अने गळाने रोकी दइ त्रण दिवसमां दरदीने मारी नाखे छे ।

माथे सोवार धोयेलुं गायनुं घी चोपडवुं, उंबरानी वडवी पिपळानी अंतरछालने पाणीमां वाटी चोपडवी, बळदाणानां मूळ नीलकमळ भ्रो काळातल साटोडी बधां साथे पाणीमां वाटो चोपडवुं ।

शंखक रोगमां लमणानी उपरनी संधीनी त्रण शिरा–फस ठोकर न वागे तेवी संभाळ राखी खोलवी. शिरोबस्ती आपवी ।

लींमडो बकान अरणी अरडुसी कांकचिया सरगवो प्रत्येकनां पान, आसोंध शतावरी किडामारी दरेक शेर ०॥ अर्धो लइ पाणीमां उकाळी बाफ आपवी. मंघेसडाना पाननो रस काढी नाकमां तथा कानमां टीपां नाखवां. तात्कालिक लागु पडे तेवा उपाय करवा ।

मगजमां रक्तस्राव

मगज अग्निथी तपाव्यो होय तेम लागे आंख कान बळे राते अने टंडा उपचारथी जरा शान्ति मळे. माथुं दुखे माथामां भार वजन लागे फेर चक्कर आवे कानमां अवाज आंखे झांझवां नाखोरी फुटे स्वभाव चिडीयो मननो गभराट उंघ घेन ताव आवे गरदन टुंकी अने पेट मोटुं थाय मूत्रपिंडनुं अने शक्राशयनुं दरद थाय. दारु बहु पीवाथी तडके चालवाथी खोराक घणो खावाथी गरमीना दरदथी आ रोग थाय छे ।

गायनुं घी माथे हमेशां घसवुं, सोवखत धोयेलुं गायनुं घी चोपडवुं, आमळां वाळो कमळपुष्प भ्रो द्राक्ष प बधांने गुलाबजळमां वाटी चोपडवुं ।

साकर द्राक्ष जेठिमधनां मूळ त्रणेने वाटी लुबदी करवो कपडे निचोवी तेनां टीपां नाकमां नाखवां, षडबिंदु तेल ब्राह्मी तेल के लक्ष्मीविलास तेलनां टीपां नाकमां नाखवां अने प तेल माथामां नाखवां. शिरोरोगहर अवलेह चटाडवो ।

सुवर्णवसंतमालती मुक्तापिष्टी प्रवाळ चंद्रपुटी प्रत्येक तो. ०॥ अर्धा अने सप्तामृतलोह २ तोला साथे मेळवी सरखे भागे ६४ पडिकां करी दिवसमां २ वखत गायना घी साथे आपवुं. उपर अश्वगंधारिष्ट पावो ।

मगजनुं गड

मगजना कोइ भागमां विद्रधिनी गांठ पाकी परु थाय छे ते कान नाक कपाळनां दरद करे छे, उपदंश वगेरे कारणे थाय छे. तेमां माथुं दुखे टाढ वाय ताव आवे परसेवो वळे उलटी थाय आंचकी आवे शरीर नबळुं पडे ।

रसपर्पटी तोलो १ पंचाननलोह गुगळ तो. २ महाकांचनार गुगळ तो. २ संशमनी तो. १ मुक्तापिष्टी तो. ०॥ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ६४ पडिकां करी दिवसमां २ वखत गायना घी साथे चटाडी उपर कस्तूर्यादि गोळी टंके ३ पळाववी अने उपर महामंजिष्टादि क्वाथ पावो ।

मगजनुं जलंधर

आ दरद घरुचनि वधु थाय छे. चेरो नानो होय कपाळ आगळ ढळतुं होय चामडी तणाय अस्थिवच्चेनो मार्ग देखाय. मस्तकनो बोजो वधवाथी बाळक पडयुं रहे के बेसी शकतुं नथी ।

सलिलशोषण रस—रससिंदूर जवखार रेवंतचिनी तज तमाळ पलचि भारंगी झीणीपलचि हरडे इन्द्रामणानां डोडवां बधां सरखे भागे लइ बांदी कपडे चाळी सवार सांज अकेक वाल दुध साथे आपवाथी मस्तकनुं जलंधर मटे ।

मगजना जलंधरमां वह्निभास्कर रस आपी शकाय छे, आरोग्यवर्धनी टंके १ आनीभारथी शरु करी ०। तोला सुधी वधारवी पछी सवार सांज तेटली दरद मटे त्यांसुधी चालु राखवाथी आराम थाय ।

मगजनो भ्रम

मगजना तंतुओमां बगाड थवाथी आ दरद थाय छे मन कोइ काममां लागतुं नथी पोते महाभारत सांसारिक के मानसिक दुःखमां होय तेम कल्पी ल्ये छे. भुख थोडी होय छे अजीर्ण रहे खावानुं भावे नहीं झाडो कबजीयत रहे ।

शिवादि गोळी के शंखवटी बृहतनी गोळी के अभ्रककल्पवटी गोळी सवार सांज ३ त्रण पाणी साथे देवी, सुवर्णवसंतमालती १ रति अने च्यवनप्राश अव-लेह १ तोलो टंके चटाडवुं. द्राक्षासव पावो, धमासाना पंचांगना उकाळामां गायनुं घी मेळवी पावुं. भ्रम मटे ।

मुक्तापिष्टी तोलो ०। स्फाटिकमणि भस्म तो. ०॥ प्रवालचंद्रपुटी तोलो १ सुवर्णवसंतमालती तोलो ०॥ रत्नपर्पटी तो. ०॥ पंचाननलोह गुगळ तो. १ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ६४ पडिकां करवां. सवार सांज गायना घी साथे चटाडी उपर महाद्राक्षादि क्वाथ मध नाखी पावो. माथामां लक्ष्मीविलास तेल के ब्राह्मी तेल नाखवुं. नाकमां कानमां अणुतेलना टीपां नाखवां ।

मगजना पडनो दाह, सोजो

मस्तकमां दुखावो थाय पीडा सखत थाय घोंघाट अंजवाळुं जोवाथी के हलवाथी वधु दुखे चक्कर आवे माथुं गरम रहे चेरो आंख लाल रहे उंघ आवे नहीं गरदनना स्नायु सज्जड थाय साथे ताव आवे चामडी रुक्ष अने गरम होय नाडी जलदी चाले, दस्त कबज तरस उलटी थाय, २ अठवाडिया पछी दरदी नबळो पडतो जाय छे तेम चिन्ह ढीलां पडे छे ।

कस्तूर्यादि गोळी ४ चार टंके गायना घीमां गळावी उपर दुध पावुं. सुवर्णवसंतमालती बबे रति हरीतकि अवलेह साथे चटाडवी. मुक्तापिष्टी बबे रति मधमां चटाडी उपर गायनुं दुध पावुं. आरोग्य वर्धनी ३ गोळी अथवा मधुविरे-चन चूर्ण ०। तोलो राते आपवुं ।

मगजनी ग्रंथि

उपदंश लोहीबगाड वगेरे कारणे मगजमां ग्रंथि जामे छे त्यारे माथानुं शूळ उलटी आंबकी फेर घेन नेत्रनो दाह कबजीयत नाडी धीमी चहेरो सज्जड रही जाय पक्षघात वगेरे चिन्हो जणाय छे ।

केसरादि अथवा कस्तूर्यादि गोळी टंके ४ गायना घीमां गळावी उपर महामंजिष्टादि क्वाथ पावो. लोहभस्म तोलो १ अभ्रकभस्म तो. १ रसपर्पटी तो. १ पंचामृतलोह मंडूर तो. १॥ चंद्रप्रभा तो. २ बधां साथे मेळवी ६४ पडिकां करी टंके १ घीमां चटाडवुं ।

मगजनो दाह

खोपरीमां इजा थवाथी दारु बहु पीवाथी मानसिक काम बहु करवाथी आ दरद थाय थोडो ताव माथानो दुखावो चक्कर अनिद्रा उलटी आंख काननी शक्ति ओछी दस्त कबज आंचकी घेन बेचेनि अर्धांगवायु थाय एवां बीजां चिन्हो देखाय ।

राते सुती वखते मधुविरेचन चूर्ण ०। थी ०॥ तोलो अथवा आरोग्यवर्धनी गोळी ४ अथवा बृहत्शंखवटी गोळी ३ पाणी साथे आपवी ।

माणिकभस्म तोलो ०॥ सुवर्णवसंतमालती तो. १ महाचंद्रकळा तो. १ अभ्रककल्पवटी तो १ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ६४ पडिकां करी च्यवनप्राश अवलेह साथे चटाडो उपर दुध पावुं. जमीने द्राक्षासव १ औंस पावो. षड्बिंदु तेल के ब्राह्मी तेलनां टीपां कानमां तथा नाकमां नाखवां अने ए तेल माथामां नाखवुं अथवा माथे ताळवे गायनुं घी के माखण चोपडवुं ।

मगजना फेर चक्कर अंधारा आववां—मस्तक भ्रमण

द्रष्टि मंद पडी जाय चालतां चालतां जाणे बधुं फरतुं होय तेम लागे अने दरदी पडी जाय के बेसी जाय कोइने पथारीमां सुतां सुतां आंखो मींची जाय तोय पण फेर चक्कर आवे छे अने जाणे घर धरती बधुं फरतुं होय अने पोते उडतो होय तेम लागे छे आमां घणी वखत आंतरडानी अव्यवस्था मंदाग्नि पेटनो वायु मगजनी नबळाइ वगेरे कारण होय छे ।

पिपर सुंठ हरडे सुवादाणा ब्राह्मी धमासो समभागे खांडी गोळमां मोळी चणीयाबोर जेवडी करी हमेशां ३ थी ६ आपवी ।

सुवर्णवसंतमालती २ रति मध घी साथे अथवा मुक्ताभस्म २ रति च्यवनप्राश अवलेह साथे अथवा कस्तूरीनी शक्तिप्रद गोळी के पूर्णचंद्रोदयनी गोळी टंके २ दुध साथे आपवी ।

पूर्णचंद्रोदय तोलो ०। मुक्तापिष्टी तो. ०। सुवर्णवसंतमालती तो. ०॥ सुवर्णभस्म तो. १ शिलाजीत तो. १ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ६४ पडिकां करी सवार सांज शिरोरोगहर अवलेह साथे चटाडवुं. जमीने द्राक्षासव पावो ।

मगजनी पुष्टि माटे

मस्तकपुष्टिकरी वटी—रससिंदूर तोला ४ अभ्रकभस्म तो. ४ शुक्तिभस्म तो. ३, जसतभस्म वंगभस्म काळां तीखां वंशलोचन आमळां बळदाणा

प्रत्येक तो. ६ छ, शेकेला धाणा तो. ५ रौप्यभस्म तो. २ तज पलचि चणकबाब लविंग वावडींग शतावरी हरडे मंडूर सुवर्णमाक्षिक धोळीमुशळी जेठिमधनेशिरो धमासो प्रत्येक तोला ४ चार गुगळ तो. ८ शिलाजीत तो. ८ बधां साथे मेळवी लींबुना रसनी भावना दइ सुकावी मधमां ३ रतिभारनी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी दुध साथे खावाथी गमे ते कारणे थयेली मगजनी नबळाइ मगजनुं खालीपणुं वगेरे मटे छे मगज पुष्ट थाय छे ।

षडबिंदु तेल ब्राह्मीतेल लक्ष्मिविलास तेल वगेरे माथामां नाखवां तथा तेना टीपां नाकमां कानमां नाखवां ।

महालक्ष्मिविलास तो. ०। अभ्रकभस्म १०० पुटी तो. ०। सुवर्णवसंतमालती तो. ०॥ साथे मेळवी तेनां सरखे भागे ४८ पडिकां करी सवार सांज अकेक पडिकुं च्यवनप्राश अवलेह साथे चटाडी उपर दुध के पाणी पावुं ।

वसंतकुसुमाकर, मुक्ताभस्म, माणिक्यपिष्टी, सुवर्णपर्पटी प्रत्येक तो. ०। पा साथे मेळवी सरखे भागे ३२ पडिकां करवां. सवार सांज अकेक पडिकुं गोक्षुराद्यवलेह साथे चटाडी उपर दुध के पाणी पावुं ।

स्फाटिकपिष्टी तो. ०।, प्रवाळभस्म चंद्रपुटी तो. ०॥, सप्तामृतलोह तो. ०॥ साथे मेळवी सरखे भागे ३२ पडिकां करी सवार सांज अकेक पडिकुं मध माखणमां के अमृतप्राश अवलेह साथे चटाडी उपर दुध पावुं ।

मगजपौष्टिक चूर्ण—तरबुचना मींज काकडीना मींज मोटी हरडेदळ मीठी बदाम रुमि मस्तकि गुलाबनां फुल पलचि आमळां शतावरी बधां सरखे भागे अने बधाथी बमणी साकर लइ खांडी टंके ०। थी ०॥ तोलो दुध साथे आपवुं

माथानो दुखावो मस्तकशूळ-शिरःशूल

शिरःशूलाद्रिवज्र रस—पारद गंधक लोहभस्म नसोतर प्रत्येक तोला ४ चार, शुद्ध गुगळ तो. १६ त्रिफळाचूर्ण तो. ८, कुष्ठ जेठिमध पिपर सुंठ गोखरु वावडींग दशमूळनां दश ओसडियां प्रत्येक तोलो १ एक, बधां साथे बारिक करी दशमूळना उकाळानी भावना दइ छाये सुकावी भुको करी घीनो करमो दइ पाणीमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी के भुको राखवो. मात्रा ३ थी ६ गोळी टंके आपवी दिवसमां २-३ वखत मध के बकरिना दुध साथे आपवाथी वात पित्त कफ त्रिदोषजन्य माथानो दुखावो सूर्यावर्त शिरःशूल वगेरे मस्तकना रोग मटे छे ।

केसरने घी मां वाटी नाकमां टीपां नाखवा. माथानो दुखावो मटे ।

कुष्ठ परडानुं मूळ सुंठ समभागे खांडी छासमां वाटी नवशेकुं करी कपाळे चोपडवुं. गमे तेवुं माथानुं शूळ मटे. श्वासकुठार रसनी भुकी बजरनी पेठे सुंघाडवी.

गोखरु अने सुंठ समभागे पाणीमां वाटी कपडे गाळी टीपां कानमां नाखवां.

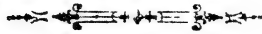
कलोंजीजिरांने पाणीमां वाटी कपाळे लगाडवाथी कफ-शरदीनुं माथुं मटे।

डाबा हाथनी टचली आंगळीनो नख वधारवो २-३ महिने कपाववो. माथुं दुखतुं मटे, अनुभवसिद्ध छे ।

धाणाजिरु साकर समभागे बारिक वाटी चाळी वासी पाणी साथे ०॥ थी १ तोलो हमेशां आपवुं. गरमीनुं माथुं दुखतुं रहे ।

(६) आंबलीनो आंबलियो तथा अरिठानी छाल प वेइ घमी ३ दिवस [illegible] माथुं दुखतुं रहे ।

उपलेट मरी वछनाग अकलकरो कपूरकाचली समभागे लइ तेमां [illegible] वी माथे कपाळे चोपडवाथी माथुं दुखतुं रहे ।



माथाना वाळनां दरद

माथानी जुयुं-लींखुं

लेप—धतुराना रसमां अथवा नागरवेलना पानना रसमां पारो [illegible] घुंटी वाळमां नाखवाथी जुयुं-लींखुं मरी जइ निकळी जाय ।

कनक तेल—१० तोला धतुराना पानने वाटी [illegible] धतुराना पाननो भंगरस नाखी तेमां तळवुं [illegible] बळी जाय पछी गाळी लेवुं. आ तेल वाळमां नाखवाथी जुयुं लींखुं [illegible]

विडंगाद्य तेल—वावडींग गंधक मनशिल सरखा भागे [illegible] चारगणुं सरसियुं तेल अने आठगणुं गोमूत्र मेळवी [illegible] पकावी गाळी माथामां नाखवाथी आखी जिंदगी माथामां जुयुं के लींखुं [illegible]

हिंगूल धूप- अर्धा पैसाभार हिंगळानो [illegible] डाढीमां धुणी देवाथी जुयुं मरी जाय ।

माथानी टाल्य, उंदरी-इन्द्रलुप्त

१ हाथीदांतनी राख अने रसवंति बकरांना दुधमां [illegible] तेलमां वाटी चोपडवाथी वाळ उगे ।

२ थोरनुं दुध आकडानुं दुध [illegible] लोढानो भुको बकरीनुं मूत्र [illegible] गोमूत्र [illegible] भागे लइ बधाथी चारगणुं सरसियुं तेल पकावी चोपडवाथी [illegible]

३ हाथीदांतने गजपुटमां बाळी करेली राख [illegible] सरखां लइ प्रथम जुदां जुदां बारिक वाटी पछी लोढानी [illegible] नाखी मंद अग्निथी पकाववुं पछी जरा गरम गरम उंदरी [illegible] एम ७ दिवस करवाथी उंदरी टाल्यनी जग्याए वाळ उगे ।

४ इन्द्रामणानुं पंचांग पाणीमां [illegible] वाटी टाल्य [illegible] पाटो बांधी देवो २४ कलाके नवशेका पाणीथी धोइ [illegible] एम ३ दिवस करवाथी टाल्य मटे ।

५ उंदरीनी जग्याये अस्त्राथी छोलानी [illegible] अफीणनो कसुंबो अथवा चमारदुधलीना पंचांगनो रस चोपडवाथी उंदरी [illegible]

६ कोडीयो लोबान १ भाग परडीनां बीज २ भाग [illegible] लेप करवाथी टाल्य मटे ।

७ कलंभो चणकबाब सिंघालुण कबाबचिनी आमळां कुणी वडवाइ बधांने साथे खांडी भेंसनां दुधमां सोगठी करी छाये सुकवी राखवी पछे जरुर पडे त्यारे आमळानुं पाणी अने दहींमां वाटी चोपडी पाटो बांधवो सवारे आमळांना पाणीथी धोवुं. टाल्य मटी वाळ उगे ।

८ पुंटानो नवसार आमलसारो गंधक लाकडानी राख सरखे भागे लइ ४ दिवस सुधी घुंटवुं पछी सोगठी वाळवी जरुर पडे त्यारे पाणीमां घसी चोपडवाथी उंदरी खोडो घाघर मटे ।

९. फुलावेल मोरथुथु धमासो कंकु बोदारसींग प्रत्येक शेर ०। पा वाटी गायनुं घी शेर २॥ लइ १०१ पाणीये धोइ उपलां वसाणां मेळवी चोपडवुं ।

इन्द्रलुप्तहर तेल—स्नुहीदुध आकडानुं दुध धोळो वछनाग बकरीनुं मूत्र गौमूत्र चणोठी इन्द्रामणां भूरसल यज पमां तेल पकावी चोपडवुं ।

माथानो खोडो करवलां पकवाळां गुमडां

१ लीलां केरडां लइ अंतर्धुम अग्निथी बाळवां पछी करंजियुं के सरसियुं तेल मेळवी चोपडवुं ।

२ हिंगळो गंधक मनशिळ हरताळ सोनागेरु बोदार राळ बावचि हिराद्खण सिंदार कंपिलो बधां समभागे खांडी वारिक करी बधाथी बमणुं मीण लेवुं पछी मीण धो अने गंधकने साथे पकावी उपलां वसाणाने मेळवी मलम करवो.

३ हिराकसी कंपिलो फुलावेल मोरथुथु सुंठ राइ समभागे खांडी तलनुं तेल मेळवी गरम करी माथामां नाखवुं ।

पेटनां दरद—उदररोग

कारण—जठराग्नि मंद थवाथी बधा रोगो थाय छे, तेमां पण पेटनां दरदो अवश्य थाय छे. अजीर्ण थवाथी अजीर्ण उपर जमवाथी मलिन काचां कोरां अन्नपान खाना पीवाथी अने आंतरडामां मळ भराइ जवाथी जठराग्नि मंद थाय छे स्वेदजलने [illegible] करनारा मार्गो बगडि एकठा थयेला दोष प्राणवायु जठराग्नि अने अपानवायुने विकृत करी पेटनां दरद उपजावे छे ।

चिन्ह—आफरो चडे हालवा चालवानी शक्ति रहे नहीं दुर्बळता जठराग्नि मंद सोजो अवयवोमां पीडा मळ अने अपानवायु अटकी जाय दाह ग्लानी पटलां चिन्हो बधी जातनां पेटनां दरदोमां मुख्यत्वे करीने होय छे ।

वातोदर

वातोदर—वायुप्रधान उदररोगमां हाथ पग नाभि अने पेट उपर सोजो चडे पेट पडखां होजरी कम्मर अने वांसामां पीडा थाय, सांधा त्रुटे सुकी उधरस आळस शरीर भारे मळ रोकाइ जाय चामडी काळी के रताश पडती थाय ए चिन्हो घडिकमां वधे अने घटे पेट उपर पातळी काळी शिराओ देखाय पेट फुलेलुं रहे एखालनी पेठे शब्द करे अने कोठामां वायु फर्या करे ।

लशुनादि तेल—लसणनी कळी शेर १० पाणी मण १ मां त्रिकटु त्रिफळा दंतीमूळ हिंग सिंधव चित्रो देवदार वज कुष्ठ मोठा सरगवानी छाल सटोडी संचळ वावडींग अजमोद गजपिपर दरेक तोला ४ चार, नसोतर तो. २४ वधां साथे खांडी लसण साथे उकाळी चोथा भागनुं पाणी रहे पछी गाळी लइ ४ कालामां तलनुं तेल शेर १० नाखी मंदाग्निथी पकाववुं पाणीनो भाग बळी जाय पछी तेल गाळी लेवुं. वायुनो उदर रोग १ महिनो पावाथी मटे. २–४ तोला तेल दुध साथे पावुं. ते सिवाय ८० जातना वाना रोग बरल लिवर पेटनी गांठ पण मटे छे ।

वातोदरारि रस—गंधक तोला १५, पारद अभ्रकभस्म ताम्रभस्म गौमूत्रपक्व लोहभस्म शुक्तिभस्म माक्षिकभस्म फुलावेल टंकण प्रत्येक तो. ८ आठ, शिलाजीत सिंघालुण संचळ वडागरं प्रत्येक तो. ४ चार, सेकेल हिंग हरडेदळ प्रत्येक तो. ६ छ वधां साथे मेळवी गौमूत्र अने लींबुना रसनी अकेक भावना दइ सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ६ थी १२ रति घीमां चटाडी उपर पाणी पावुं. १ महिनो सेवन कराववुं ।

पिपर अने सिंघालुण समभागे खांडी ०। तोलो मुकी छासमां पावी अथवा हिंमाष्टक छासमां पावुं. परंडिया तेलनी पिचकारी देवी ।

परंडियुं तेल २॥ थी ५ तोला हमेशां दुध अथवा गौमूत्र साथे पावुं जरुर जणाय तो इच्छाभेदी गोळीनो जुलाब आपवो, कुमार्यासव पावे

बंधान—धतुरा बाजरानो लोट तथा तलना खोळने गंधी पेट उपर घी चोपडी बंधान करवुं उपर शेक करवो ।

पित्तोदर

पित्तोदर—ताव आवे जीव मुंझाय दाह थाय तरश लागे मों मीठुं थाय भ्रम चक्करी घेचेनि झाडा खामडी वगेरे पीळां थाय पेट लीलाश पडतुं देखाय परसेवो वळे पेट फुले दुखे भुख मंद थाय खाटा वायुना ओडकार आवे छातीमां बळे उलटी थाय उलटीमां कफ निकळे तेमां लोहीना धाबा देखाय नाक रहे पायुं दुखे शरीर अने मन ढीलां स्थिर थइ जाय जीव उंडो उतरे बहु गरम तीक्ष्ण पदार्थों खावाथी दारु पीवाथी सोमल जेवां क्षोभक विषथी मंदवाडमां खावेलो खोराक पाचन नहीं थतां होजरीमां पड्यो रही सडवाथी वगेरेथी आ दरद थाय.

पित्तोदरारि रस—पारद गंधक शंखभस्म शुक्तिभस्म मंडूरभस्म प्रत्येक तोला ८ आठ, हरडे आमळां बेडां गरमाळानो गोळ जेठिमधनां मूळ कालीघराक सिंघालुण जवखार सुरोखार परडानां मूळ प्रत्येक तो. ४ चार, नसोतर तो. १२ वधां साथे मेळवी खांडी कालीघराक अने खडसलियाना उकाळानी अकेक भावना दइ घुंटी सुकावी राखवुं. मात्रा ६ थी १२ रति मधमां के माखण साकरमां खावी.

जरुर जणाय तो इच्छाभेदी के महानाराचनो जुलाब देवो. कुमार्यासव के लव्यारिष्ट पावो ।

बंधान—आंकोलना के अरणीनां पान वाटी पेट उपर बांधी शेक करवो ।

कफोदर

... कफप्रधान उदररोग होय तो शरिर फुटे सोजो थाय शरीर ... ग्लानि ... उबको उलटी अरुचि निद्रा उधरस, चामडी वगेरे धोळां थाय पेट कठण भारे लागे ।

कफोदरारि रस—पारद तो. ८ गंधक तो. १६, सुंठ पिपर मरी पिप-रीमुळ ... नेपाळा ... लोहभस्म ताम्रभस्म शंखभस्म थोडीअजमोद ... तो ४ चार साथे मेळवी मोथना ... भावना देवी. मात्रा ६थी१२ ... चटाडी उपर महारास्नादि क्वाथ ... पीवो ।

... रस तो ०॥ ... तो. ०॥ ... तो. २ साथे मेळवी सरखे भागे ४० पडिकी करवी. मधमां अकेक पडिकी टंके चटाडी उपर पाणी पावुं ।

... तो जळोदरना प्रकरणमां कहेला जुलाबमांनु कोइ औषध आपवुं ...

... पान तांदळजो सरखे ... पेट उपर बांधी उपर शेक करवो अथवा आकडानां पीळां पान ... तेल चोपडी तपावी पेटे बांधी शेक करवो ।

विषोदर

... सन्निपातोदर दूष्योदर —केटलीक स्त्रीओ अने शत्रुओ अन्नपानमां ... पाणी पीवाथी के दुध दाळ जेवां पदा... खावामां आवे, संयोग विरुद्ध ... थाय छे त्यारे पेट फुले दुखे कठण थाय ... कम्मर बांसामां पीडा थाय गळे शोष पडे ... पीडा थाय ... सुकी आवे वगेरे चिन्हो जणाय ...

... रस रति ३ पित्तोदरारि रस रति ३ कफोदरारि रस रति ३ साथे ... ३ भाग करवा सवार बपोर सांज मधमां चटाडी उपर ... तो २ यकृत्प्लीहोदरारि तो. २ आरोग्यवर्धनी तो. २ ... सांज अकेक भाग भारंगीगुड साथे अथवा ... साथे आपवुं ।

... तो २ ताम्रभस्म श्वेत तो. १ साथे मेळवी ... महारास्नादि क्वाथ साथे २ वखत आपवुं ।

... लोटनी लाइ दरेक तो. १० दश, मेथीदाणा घउंनो लोट ... अने लिंघाजुण दरेक तो. ५ पांच बधां गोमूत्रमां वाटी पोटलो करी गरम गरम बांधवो ।

क्षतोदर

... खावापीवामां ... अथवा बीजी रीते पेटमां गयेलां कांटो ... शल्य आंतरडांने के होजरीने भेदे छे त्यारे

पाणी जेवो [illegible] गुदा वाट निकळे छे अने नाभ नीचेनुं पेट वधे छे, सिरातुं [illegible] तेवी पीडा थाय छे ए क्षतोदर के परिस्राव्युदर कहेवाय छे. आमां पीडा [illegible] अने ते साथे लोही देखाय छे होजरि उपर एकाद ठेकाणे बहु दरद थाय [illegible] पेटमां वायु [illegible] छे [illegible] घचरको आवे छे ।

क्षतोदरारि रस—शुद्ध रसकपुर तोला ८, पारद गंधक तज लविंग मरी जायफ्री हरडे शतावरी चोपचिनी मजिठ साकर पलचि दरेक तो. ८ चार तथा केसर तो. २ बधां साथे मेळवी कांडी [illegible] चोपचिनीना रसमां घणीटा जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा सवार बपोर [illegible] ४ चार गोळी पाणी साथे अथवा [illegible] इत्यादि क्वाथ साथे गळावी चालवी [illegible] दिवसमां [illegible] छे ।

[illegible]

बद्ध गुदोदर—चिकणां लुखां [illegible] आंतरडा [illegible] अटकी जाय छे अने मळ [illegible] थया करे छे अने गुदामां मळ यथार्थ [illegible] होय [illegible] अटकी जाय [illegible] बहु बळ करवाथी [illegible] काटे थोडो थोडो [illegible] थोडो मळ [illegible] अने हृदय सुधी पकडो थइ जाय छे [illegible] थइ जाय छे ।

आ दरदमां [illegible] पर्णांम-[illegible] होशां [illegible], आठ [illegible] मारी. [illegible] इच्छाभेदी अश्वकंचुकी [illegible]

[illegible] बद्धोदर [illegible] वणी [illegible] आकडाना [illegible] चा[illegible] पाणी [illegible] तेमां [illegible] तो. १२० [illegible] [illegible] कुमारी [illegible] [illegible] लवणभास्कर [illegible] तो. ८ आठ [illegible] कांडी [illegible] मात्रा ६ थी ८ [illegible] सिवाय [illegible] वरल लिवर शुद्ध [illegible] छे ।

हिंग्वादि घृत—हिंग लसण आदु सरसीयाणी [illegible] चित्रकमूळ हरडे दंतीमूळ जवखार साजीखार सिंधालुण बीडलुण वडागरुं मीठुं [illegible] बेठा उभा समेरवानां मूळ गोखरुनुं पंचांग अरणीनां मूळ अरडुसानां मूळ [illegible] फळ काळीधराख नसोतर बधां सरखे भागे लइ बधाथी चारगणुं गायनुं घी नाखी पकाववुं वसाणानो कल्क करवो. बधी जातना उदररोग मटे छे. ४ थी ८ तोला पावुं पिचकारी देवी तथा पेट उपर चोळवुं ।

पेटनुं चढवुं–आनाहः

पेट तुंबडा जेवुं थाय कंबोडाइ जाय असह्य पीडा थाय घमणनी पेठे सोवाया करे, आम अने मळ अथवा उंचीणतिना वायुने लीधे जाम्या करे, बहार न निकळे अने पेटमां पवन भराइ जाय ते साथे तरश लागे सळेखम थाय होजरिमां शूळ निकळे ओडकार न आवे छाती झकडाइ जाय मळमूत्र रोकाइ जाय मूर्च्छा आवे अने दरद उग्र रुप पकडे त्यारे मोढेथी मळ निकळे. आने आयुर्वेदमां आध्मान आनाह कहे छे।

प्रथम इच्छाभेदी के जळोदर प्रकरणमां कहेलो कोइपण तीव्र जुलाब बे दीने आंतरे आपवो अने शंखवटी कल्याण आरोग्य वर्धनी कुमार्यासव लोहासव अभयारिष्ट वगेरे औषधो आपवां. बद्ध गुदोदरारि लोह ८ थी २४ रति सवार सांज घी मां आपवुं, हिंग्वादि घृत खावुं तथा पिचकारी देवी वंधाण करवां ।

नारायण चूर्ण—अजमा पळांसधी धाणा हरडे बेडां आमळां कलोंजिजीरुं शाजीरुं पिपरीमूळ आमोथ कचुरो वज शतावरी जीरुं सुंठ पिपर मरी दारुहीमूळ चित्रो साजीखार जवखार पुष्कळमूळ कुष्ठ पंचलवण वावडींग दरेक तो. १० दश, दंतिमूळ तो. ३०, नसोतर अने इन्द्रामणीमूळ दरेक तो. २० वीश, आकडानुं दुध तो २० ८२ बधां साथे खांडवां. मात्रा ०। थी ०॥ तोलो बधी जातना पेटना दरदोमां छास साथे देवुं. पेटना आफरामां पेट चढतुं होय तेमां छास साथे के उना पाणी साथे गुल्मरोगवाळाने बोरना उकाळा साथे मळबंध के अपानवायुना अवरोधवाळाने के खाटा दरदीने आसव साथे, झाडामां दहींना पाणी साथे, हरसमां दाडमना रस साथे, अजीर्णमां उना पाणी साथे आपवुं तेमज शूळ परिणामशूळ वगेरेमां पाणी साथे अपाय छे ।

पेटनो दुखावो, पेट पीड–शूलम्

कारण—वाइडो कावो डाहो वासी सडेलो उतरी गयेलो खोराक लेवाथी पच्याविना जमवाथी पाणीमां भींजावाथी टाढे पाणीये नावाथी पिसने लीधे पेशावनी कांकरीने लीधे एवां अनेक कारणे शरीरना जुदा जुदा भागमां शूळनुं दरद थाय.

चिन्ह—डुंटी आगळ के आखा पेटमां चुंक निकळे छे. पेट चोळवाथी के शेकवाथी सारुं लागे छे. डुंटीने फरती आंटी नाख्या जेवुं के मरडो आवतो होय तेवुं शूळ निकळे छे, झाडो बंध थइ जाय छे. झाडो उलटी शुद्ध ओडकार के आधोवायु छुटवाथी घणी वखत शूळ शमी जाय छे अथवा ते औषधथी बंध थाय छे.

पथ्यापथ्य—साधारण चुंक शेकथी मटे छे. लुगडाना गोटाथी के वांजो शेक करवो, आंकडानां पीळां पान उपर परडियुं चोपडो अंगारा पर शेकी शूळ निकळतुं होय त्यां बांधी ते पर शेक करवो. पेट के दुखावानो भाग चोळाववो. इच्छाभेदीनो जुलाब देवो, लसण गळाववुं, हिंग चोपडवो. अजमा सुंठ तीखां समभागे खांडी ०॥ तोलो भुकी उकाळी गरमा गरम पावुं. खोराक भुख लागे त्यारेज आपवो त्यांसुधी पाणी के मगनुं ओसामण पावुं. शाकभाजी बिलकुल आपवां नहीं. भुख लागे त्यारे प्रवाही हळवो खीचडी कढी दाळ भात जेवो खोराक देवो. प्रारंभमां १–२ दिवस लांघण करावथी ।

शूळगजकेसरी रस—वांतिभ्रांति रहित सो पुटी ताम्रभस्म तोला २० पारद तो. १२ गंधक तो. १२. शंखभस्म लोहभस्म प्रत्येक तो. ८ आठ लइ साथे मेळवी लींबुना रसमां घुंटी गोळो वाळी संपुटमां कपडमाटी करी लवणयंत्रमां ६ कलाक पकाववुं. स्वांगशीत थये घुंटी तेमां सुंठ पिपर मरी सिंधालुण संचळ जवखार मोथ हरडे नसोतर प्रत्येक तो ८ आठ साथे खांडी मेळवी घुंटी राखवुं मात्रा ३ थी ६ रति नवशेका पाणी साथे अथवा मध साथे चटाडी उपर पाणी पावुं अथवा नीचेनो कोइ उकाळो पावो. वायुनां पित्तनां कफनां शूळ परिणाम-शूळ तथा शरीरमां कोइपण ठेकाणे निकळतुं शूळ मटे।

शूळदावानळ रस—पारद गंधक प्रत्येक तोला १० दश, सुंठ पिपर मरी हरडे आमळां मोथ नसोतर चित्रो वावडींग वज दंतिमूळ गोमूत्रमां पकवेली लोहभस्म क्षारहत अभ्रकभस्म वराटिकाभस्म शंखभस्म टंकण सिंधालुण ताम्र-भस्म प्रत्येक तो ५ पांच लइ साथे मेळवी नगोडना रसमां घुंटी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुको राखवो मात्रा २ थी ४ गोळी नवशेका पाणी साथे बधी जातना शूळमां आपवाथी शांति थाय छे।

शूळवज्रिणी वटी—पारद गंधक लोहभस्म ताम्रभस्म मंडूरभस्म शंख-भस्म टंकण सुरोखार जवखार द्रोकोचलां सिंधालुण वडागरुं हरडे अजमा छुवारो अजमोद जीरुं सुंठ पिपर मरी कचुरो मोथ वावडींग दंतिमूळ नसोतर बधा सम भागे लइ लींबुना रसनो ७ भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ४ थी ८ गोळी नवशेका पाणी साथे आपवी बधी जातना शूळ मटे. भुख लागे खोराक पचे शक्ति आवे बरल लिवर यकृत् गुल्म पेटनां दरद आफरो अजीर्ण अम्लपित्त पांडुरोग वगेरेमां पण वपराय छे।

शूळगजेन्द्र तेल—अरणी अरडुसो कांकचिया मोरींगणी गोखरु दरेकनां मूळ सडसडाना मूळ संधेसडानी छाल परडाना मूळ पापयाना मूळ आंकडानां पान प्रत्येक तोला ४० चालीस लइ उकाळो करी तेमां अजमा वावडींग अजमोद सुंठ जीरुं पिपर वज सिंधालुण मरेठी चोपचिनी आसोध शतावरी नसोतर मोथ हिंग लसण प्रत्येक तोला ५ पांच लइ पाणीमां लुबदी करी तेमां बकराचुं दुध लुबदीथी चारगणुं नाखी तथा तेटलुंज गोमूत्र तथा गोमूत्र जेटलुंज तलनुं तल नाखो पाणीनो भाग बळी जतां सुधी धीमे तापे पकावी गाळी लेवुं आ तल शूळ निकळतुं होय त्यां चोपडवुं तथा मात्रा ०॥ थी १ तोला सुधी बकरीना दुध साथे पावुं. बधी जातना शूळ मटे।

क्षारवटी—पारो तथा गंधक बबे तोला, साजीखार नवखार टंकणखार जवखार पापडियोखारो सुरोखार संचळ सिंधालुण बंगडखार कमळकाकडी लविंग वछनाग गजपिपर दरेक अकेक तोलो, काळामरी तो १॥ बधांने साथे खांडी कपडछान करी तेने चण्याना खारनी १ भावना दइ पछी लींबुनो रस नाखी राब जेवुं करी पकावी घाटुं थाय पटले चणोठी जेवडी गोळी करवी. ३ था ८ गोळी पाणी साथे आपवी. पेटनुं शूळ चुंक आंकडी मटे भुख लागे मुबारकी गांठ गळी जाय।

कर्पूरादि वटी—कपूर तोलो १ काळांमरी हिराबोळ फुलावेल टंकण दरेक तो. २ बे, अफिण अने फुलावेली हिंग दरेक अकेक तोलो कपडछान करी पाणीथी चणोठी जेवडी गोळी करवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी वासी पाणी साथे, आपवी. शूळ पेटपीड दुखावो मटे ।

विषतिन्दुकादि चूर्ण—(झेरकोचलानी फाकी) झेरकोचलां शेर १ गोमूत्रमां ५ दिवस पलाळवां पछी तेनी छाल नळियेथी घसी उतारी नाखवी पछी १ दिवस सुकवी घी शेर ०॥ मां तळवां, फुली दडा जेवां थइ जाय त्यारे भांगी जोवुं सहेलाइथी भांगी जाय तेवां तळवां पछी तेमां नीचेना वसाणां नाखी खांडी झीणे हवाले चाळी राखवुं. सुंठ मरी अतिविषानीकाळी पिपरामूळ बोडीअजमोद अजमा लविंग दरेक तो. ३ त्रण, अकलकरो लींडीपिपर काळीजीरी मूळाना बी, डोंगला इन्द्रजव डिकामारी दरेक तोला २ बे. नत्र तो. १ वखमो तेर्नीयो तो. ४. मात्रा मोटाने रति २ थी ६ छोकरांने रति १ थी २ उमर प्रमाणे पाणी साथे आपवुं. वायु पेटपीड शूळ परिणामशूळ चुंका उलटी उबका मुबारकी गांठ पेटना कृमि ओडका वायुगोळो गुल्म बरल लिवर बधां दरद अने पेटनो वायु मटे कस्तूरी जेनो गुण करे

एरंडादि क्वाथ—एरंडिनां मूळ हरडे बेडां आमळा गरमाळो गिलोय बेठी उभी भोरींगणी पाषाणभेद बिलीमूळ जवखार समभागे खांडी उकाळो करी तेमां बे आनीभार शेकेली हिंग तथा ०॥ तोलो एरंडियुं नाखी पावाथी शूळ मटे.

बलादि क्वाथ—बळदाणा लाटोडी एरंडानां मूळ बेठी उभी भोरींगणी गोखरु हिंग सिंधालुण समभागे खांडी उकाळो वातशूळमां ।

हिंग्वादि क्वाथ—हिंग अतिविष वज संचळ हरडे सुंठ पिपर मरी समभागे खांडी उकाळो वातशूळमां ।

आमलक्यादि क्वाथ—आमळां हरडे शतावरी काळीद्राक्ष जेठिमधनां मूळ वाळो धमासो समभागे खांडी उकाळो करी तेमां साकर तो ०॥ नाखी पावो. कफशूळमां ।

शतावर्यादि क्वाथ—शतावरी जेठिमध आमळां मोथ सुखडनो भूको रसांजळी चणकबाब समभागे खांडी उकाळो करी तेमां साकर तो. ०॥ नाखी पावो कफशूळ मटे ।

१ कळथी सिंधालुण सुंठ पिपर मरी समभागे लेवां, वायुशुळमां उकाळो.

२ कळथी संचळ जेठिमधनां मूळनो उकाळो, वातशुळमां ।

३ बिलीनुं मूळ सुंठ पिपर मरी चित्रो नसोतर सिंधालुण समभागे उकाळो करवो, कफशुळ मटे ।

४ कळथी जव हिंग संचळ हरडे एरडिनां मूळ अजमा वावडींग समभागे खांडी उकाळो, कफशुळ मटे ।

५ शंखभस्म २ थी ४ वाल टंके उना पाणी साथे आपवी परिणामशुळ मटे ।

६ तल सुंठ हरडे शंखभस्म समभागे लइ बधाथी बमणो गोळ मेळवी ०। तोलो नवशेका पाणी साथे आपवुं. परिणामशुळ मटे ।

७ संचळ तोलो ०॥ लींबुरसमां मेळवी पावुं, बधां शुळमां ।

८ साजीखार अने सुंठ ०। पा तोलो गोळ मध अने घी साथे चटाडवुं ।

९ मूळाना बी तोलो ०। मधमां बधां शुळ मटे ।

१० हळदर मरी पारो गंधक समभागे घुंटी शुको वाछडीना मूत्र साथे २ थी ३ वाल तथा घी खांड साथे ३ टंक देवुं पेटपीड तरत मटे. ।

११ पळियो टां. ५, हिंग टां. २॥, राई पोखरमूळ सिंधव दरेक टां. १२ चार कुंवारनो गरम [illegible] मां नवी नाटी चणियाबोर जेवडी गोळी करवी. उना पाणी साथे २ थी ४ गोळी देवी, वायु मटे ।

१२ अजमा पाव १॥ [illegible] तथा खारो दरेक टां. [illegible] साजी-[illegible] फुल टां १२ ए सर्व आदा [illegible] शेर [illegible] २ थी ६ गोळी [illegible] सारु [illegible] ४० [illegible] तजवी उदररोग शूळ मटे ।

१३ मूळाना कंदनो [illegible] तेमां सुंठ [illegible] ३। [illegible] सर्व [illegible] अरुचि शूळ मटे १ थी २ गोळी [illegible] साथे [illegible] ।

१४ तेल टां. २॥ पाणी शेर ०। मेळवी पावुं. पेटपीड मटे ।

१५ [illegible] पानने रस टां. १० तेमां [illegible] टां ०॥ [illegible] पावुं, पेटपीड तत्काल मटे ।

१६ इन्द्रामणाना [illegible] रस तो १० खांड तो. [illegible] साथे उदरना सर्व रोग जाय ।

सुवारकी गांठ—अष्ठीला प्रत्यष्ठीला

आ पेटमां थनारी एक जातनी गांठ छे. ते स्थिर [illegible] छे [illegible] नाभिनी निचे थाय छे प्रत्यष्ठीला [illegible] कठण नाभि तरफ [illegible] अने उपर [illegible] छे [illegible] गांठमां वायु प्रधान होय छे दस्त पेशाब अने अपानवायु [illegible] छे आफरो चढे छे एज अष्ठीला नाभि निचे आडी [illegible] पेशाबने एकादम अटकावी दीये अने असह्य पीडा करे ते प्रत्यष्ठीला कहेवाय छे आ गांठ थाय त्यारे मो कडवुं थाय जीभ उपर छारी [illegible] तीमां [illegible] अने शुळ निकळे कोइवार झाडे लोही पडे नाभिमां [illegible] पीडा थाय [illegible] थुकी चिकणी कफवाळी होय उंघ आवे आंखो मांड उघडे ।

विडंगासव—वावडींग तो. ६०, पिपरीमूळ कालिपाठ आमळां कडाछाल इन्द्रजव रास्ना भारंगी पानडी दरेक तोला २० चीरा लइ पाणी मण ५ मां उकाळवुं, पाणी एक मण रहे एटले गाळी लइ ठंडु थाय त्यारे तेमां मध शेर ३० खांड मण २, धावडीनां फुल शेर १॥, सुंठ पिपर मरी दरेक तोला ३२ बत्रीस, तज तमाल एलचि दरेक तो. ८ आठ, घउंलो धतुरानां मूळ मोथ लोदर दरेक तो. ४ चार नाखी हलावी घीना रीढा ठाममां अथवा चिनाइ बरणीमां १॥ महिनो रहेवा दइ पछी गाळी शीशा भरी राखवा. अष्ठीला वरल यकृत-लिवर गुल्म शुळ कृमि एटलां दरदोमां गुण करे छे ते सिवाय भगंदर पथरी प्रमेह कंठमाळ उरुस्तंभ ए दरदोमां पण उत्तम छे ।

अष्ठीलाहरी वटी—मरी करीयातुं त्रायमाण दुरेक तोलो १॥ कोह, कपूर तो. ०। साथे मेळवी गोळमां १४ गोळी करवी. सवार सांज अकेक गोळी पाणी साथे आपवी, ७ दिवसमां गांठ मटे ।

गळजीभिनो रस तोला ५मां साकर तो. १ मेळवी पावुं ।

विषतिंदुकादि चूर्ण वाल ३ त्रण सवार सांज पाणी साथे आपवुं. कृष्ठत कुव्याद बबे गोळी गोळ साथे देवी अथवा मंडूरवटक बबे गोळी पाणी साथे देवी.

मुबारकी गांठ—अष्ठीलामां गोळो-गुल्मना प्रकरणमां कहेला उपचार करवा जरुर जणाय तो इच्छाभेदीनी गोळीथी जुलाब आपवो ।

बंधाण—लींमडानां पान बाफी बंधाण करवुं ।



कबजीयत—आनाह

प्रग्निमाऽऽमं शुष्कं मुहुरनिलेन पुनश्च दूषितेन शकृत ।
निःसरति नियमशून्यं गदमानाहं वदन्ति वैद्यवराः ॥ र. तं. ॥

कारण—वखतो वखत जुलाब बहु महेनत बहु कसरत मळमूत्रनो के पवनना वेगने रोकवानी टेव गढपण कोइपण कारणे आवेली नबळाइ हरस जेवां दरद वायु प्रकृति ताव बादी गरिष्ठ मिष्टान्न खावानी टेव घोडानी स्वारी बेसी रहेवानुं काम मगजमारीनो धंधो टाढां शीळां वासी के अनियमित खावानी टेव आरसेनिक सोडा तमाकु चा काफी दारु अफिण भांग वगेरेनुं बंधाण वगेरे अनेक कारणे आ दरद थाय छे ।

चिन्ह—झाडो उतरे नहीं पेटमां के पेडुमां बोजो जणाय पवन नमय आफरो चडे आळस मंदाग्नि चुंका माथुं दुखवुं फेर चकरी ताव श्वास लेवानी मुश्केली कामपर अप्रिती मन चिंतातुर उदास कुंडलीना भागमां झाडो अटकी जाय झाडो सुकाइ गोठाइ जाय बकरीनी लींडीयु जेवो उतरे कोइवार खुलासो कोइवार अटके दस्त जावानो समय अनियमित वगेरे जणाय छे ।

पथ्यापथ्य—पवाद हलको जुलाब लेवो खोराक हलको खावो पेटमां बोजो जणातो होय तो अठवाडियामां एक बे लांघण करी नाखवी. लांबा वखतनुं दरद होय तो जमती वखते १ तोलो उनुं घी २-४ तोला गरम दुध साथे पीवानी टेव पाडवी अने वखतो वखत लांघण करवी. स्निग्ध थोडो हळवो सादो खोराक लेवो तेम खोराक वखतसर बे टाणां गरम लेवो. टाढुं शीळुं वासी वायडुं काचुं कोहुं तळेलुं चिकणुं विशेष गळपणवाळुं खावुं नहीं. शाक भाजी बहु न खावी तेम तदन बंध पण न करवी. १५ दिवसे देशी एरंडियुं पीवुं, गामडामां घांचीने छे तेल काढे छे ते घणुं स्वच्छ घी जेवुं गंध विनानुं होय छे ते लेवुं. नानी उमरनां कबजीयतवाळां बच्चांने पण ते आपवुं, मळनो बहु भरावो थइ गयो होय तो गुदावाटे एरंडीया तेलनी पिचकारी (एनिमा) लेवी. अंजिर केळां संत्रां लींबु द्राक्ष दुध खीचडी भात राब मग तुवेर वगेरे फळ तथा खोराक लेवो. बोजो

थाय तेटलुं खावुं नहीं दस्त आवी जवाथी पेढुनी बेय बाजु हाथथी के कोथळीवती शेकवाथी टेव पाडवी तथा बे कुलामां मुठियो मारवाथी आंतरडांने पण प्रकारनी कसरत मळी दस्त साफ आवे छे. चिकणो पदार्थ मिठाइ वगेरे खावां नहीं. शरीरे तेल चोळवुं ।

अर्शांकमेरी रस—पारद तो ४, गंधक तो ४, माक्षिक भस्म तो. ४, रौप्यमाक्षिक भस्म तो. ४, कांस्य भस्म तो २, ताम्रभस्म तो. १, शिलाजीत तो. १०, लोहभस्म तो. ३, शुद्ध गुगळ तो. २०, कडुं तो. १६, आंबाहळदर, वंशलोचन वावडींग, हरडे, आमळां, बेहडां, सुंठ, पीपर, मरी तज, एलची, सिंधालुण, वदागरुं, देशी मोथुं, उपलेट, अतिविष, शतावरी, चित्रो, देवदार, वज, प्रत्येक दोढ दोढ तोला नसोतर तो ५, छाकर तो. १०, शुद्ध नेपाळानां बी (जमाल गोटा) तो. २० बधां खांडी भेळवी पाणीमां गोळी अकेक रतीभारनी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी दुध साथे के पाणी साथे आपवी. लांबा काळनी कबजीयात होय तो १५ थी २० दिवस खावी. पथ्यमां वायडां पदार्थ बंध करवां सादो हळवो, पची जाय तेवो अजीर्ण न करे तेवो खोराक लेवो. बजारनी मीठाइ खावी नहीं.

नारायण चूर्ण— चित्रो, हरडे, बेहडां, आमळां, सुंठ, पीपर मरी, जीरुं, हपुशा पळासबीनां मूळ, वज अजमो, पीपरीमूळ, सुवादाणा, गणतुळशी, अजमोद, कचुरो, धाणा, वावडींग, काळीजीरी, दारुहळदीमूळ, पुष्करमूळ साजीखार, जवखार, संचळ, बिडलवण, वदागरुं, टंकणखार, उपलेट, प्रत्येक एकेक तोलो, इन्द्रामणां मूळ २ तोला, नसोतर ३ तोला, दंतीमूळ ३ तोला, चमारदुधलीनां मूळ ४ तोला साथे खांडवां मात्रा ०। थी ०॥ तोलो पेटनां बधां दरदमां अपाय कबजीयत माटे उत्तम छे.

हरडेनो अवलेह—हरडेनो भुको शेर ६ आमळांनो भुको शेर २॥, बेहडने २॥ शेर घीमां धीमे तापे शेकवां. पछी भोरींगणीनां मूळ जेठीमधनां मूळ, भ्रामणांनां मूळ, अरणीनां मूळ अघेडानुं पंचांग प्रत्येक एक एक शेर लइ अधकचरां करी २५ शेर पाणीमां उकाळवुं चतुर्थांश बाकी रहे एटले कपडे गाळी तेमां लींबु रस शेर ४ तथा उपलो भुको नाखी पकाववुं. जरा घाटुं थवा आवे एटले तेमां धोयेली देशी साकर शेर ४'१ नाखी पकाववुं. सारी रीते घाटुं थाय एटले गुलाबनां फुल शेर १, वरीयाळी धाणा, तज, एलची, लवींग प्रत्येक तोला ३०, सुंठ, पीपर, मरी शतावरी आसोंद रास्ना प्रत्येक तो. २० रससिन्दुर तो. ५ तथा सिंधालुण तोला १० नाखी चाटण जेवुं थाय एटले उतारी ठारी बरणीमां भरवुं. मात्रा १ थी २ तोला चाटी उपर दुध पीवुं हळवो खोराक लेवो कबजीयत हरस मंदाग्नि सुस्ती बेचेनी बरल गांठ लीवर गुल्म- गोटो वधरावळ ए दरदो माटे छे.

आनाहनाशन चूर्ण—हरडे नसोतर सिंधालुण मीठुं मरी मींढीयावळ गंधक शोधेलो वरीयाळी प्रत्येक तोला १० साकर १२० तोला साथे खांडवां मात्रा ०। थी १ तोलो नवशेका अथवा ठंडा पाणी साथे आपवुं कबजीयात हरस गुल्म शूळ उदावर्त वायु तथा पेढनां बीजा दरदोमां उत्तम छे.

आरोग्यवर्धनी गोळी शंखवटी वृहत् हिंगाष्टक चूर्ण भक्तोत्तरीय चूर्ण आ बधी दवा कबजीयतमां वपराय छे

१ एरंडीयुं काढवानी रीत – दश शेर एरंडीने शेकी नाखवी पछी सारी पेठे खांडवी एक पण बी देखाय नहीं मेदा जेवुं थइ जाय त्यां सुधी खांडी पछी एक राढा माटलामां हांडलामां नाखी एरंडीथी १५ गणुं पाणी मुकी उकाळवुं खुब उकळे एटले ठरवा देवुं पछी उपर तरी वळ्युं होय ते तेल लइ लेवुं पछी कढाइने एवार वखत बटोजी फरीवार उकाळवुं प्रथम निकळे तेल पीवा लायक स्वच्छ होय छे पछीनुं दीवा बाळवा के खेडुने उपयोगी होय छे

[illegible]काष्टकनी वटी—गोमूत्रमां शोधलो शीकोतरो पळीयो तोला [illegible] काळा मरी तो. १२ खरसाणी अजमोद तोला २ साथे खांडी कुंवारना [illegible] चणोठी जेवडी गोळी करवी पाणी साथे बब्बे गोळी आपवाथी पेटनो [illegible] कबजीयत वादी मटे छे सुख लागे छे.

उदावर्त

वातविण्मूत्रजृम्भाश्रुक्षवोद्गार[illegible]वमीन्द्रियैः ।
क्षुत्तृष्णोच्छ्वासनिद्राणां [illegible]धृत्योदावर्तसम्भवः ॥

[illegible]—उदावर्त [illegible] वायु रोकवाथी थयो [illegible] छुटे नहीं मळ मूत्र अटके पेट [illegible] मरी [illegible] नळनो [illegible] रोकवाथी थयो होय तो पेट फुले [illegible] दाह थाय. मळ उतरे नहीं [illegible] दरद [illegible] तो [illegible] मोढेथी [illegible] रोकवाथी मूत्रकृच्छ्र [illegible] नळीमां के पेटमां [illegible] पेट फुले [illegible] रोकवाथी डोक [illegible] आंख माथामां दरद थाय [illegible] आंसु [illegible] [illegible] साथे आंखमां [illegible] [illegible] शूळ आवे [illegible] [illegible] [illegible] उपर [illegible] नहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अने [illegible] अटके [illegible] सामे [illegible] रोकवाथी [illegible] [illegible] संभळाय. भुखनो वेग रोकवाथी सुस्ती आळस कृशता थाय. थाकेल माणस चडेलो श्वास रोकवाथी छातीनां दरद अने मुंझारानुं दरद थाय. निद्रानो वेग रोकवाथी शरीर तुटे माथु अने आंखो जड थइ जाय एम जुदा जुदा वेग रोकवाथी ते ते जातनो उदावर्त वायु थाय छे तेने अनुसरतो उपाय करवो आहार विहारना अनियमितपणाथी कोठानो वायु बगडे अने उदावर्त थाय तो पवन छुटे नहीं मळ मूत्र उतरे नहीं छातीमां अने मूत्रनळीमां शूळ नीकळे उबका आवे. श्वास उधरस सळखम दाह तरस ताव उलटी हेडकी माथानो दुखावो वगेरे विकार उपजे ।

उदावर्तशनि रस—पारद तोला ५ गंधक तो. १० हरडे तो ५ सुंठ तो. ५ पिपर तो. २॥ टंकण तो. २॥ बधाने बराबर नेपाळामां घी नाखी, खाटी भूंजीना रसमां घुंटी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. उना पाणीथी दोष अने बगाडना उपद्रव प्रमाणे २ थी ६ गोळी सुधी अपाय छे. जाडा माणसे जुलाब लेवो होय तो पण आ गोळी लइ शकाय छे. आ गोळी लीधाथी ५-१० वखत जुलाब लागी जामेलो बगाड अने मळ नीकळी जाशे बधो जातना उदावर्तमां आ गोळी अपाय छे. पेटनां बीजां दरद सोजा जळोदर वगेरेमां पण तात्कालिक गुण आपे छे. दरदीने गरम पाणीनी कुंडीमां बेसारवो शरीरे तेल मालिस करवुं बाफ आपवी।

फलवर्ति—मिंढोळ पिपर कुष्ठ वज सरसव गोळ बधां सरखेभागे खांडी दुधमां वाटी वाटो करवी ते गुदामां चडाववाथी वायुनी अनुलोम गति थइ उदावर्त मटे छे. वाट ३ तसुं लांबी अने टचली आंगळी जेवी जाडी करवी छाये सुकाववी. गुदामां चडाव्या पहेलां तेना पर घी चोपडवु।

अधोवायु रोकवाथी थयेला उदावर्तमां परसेवो लाववो परंडियुं तेल के दुधमां घी नाखी पावुं. बस्ति एनिमा आपवी।

मळनो वेग रोकवाथी थयेलामां जुलाब आपवो पातळो खोराक आपवो शरीरे पेटे तेल चोळवुं. गरम पाणीमां दरदीने बेसारवो, परसेवो लाववो पिचकारी देवी वाट चडाववो।

मूत्रनो वेग रोकवाथी थयेलामां दुध पाणी साथे मेळवी तेमां बने वाळ वजनो भुको नाखो पावुं धमासानो स्वरस पावो अथवा आसोंदरानां पाननो उकाळो पावो अथवा काकडीनां बी तोला २॥ पाणीमां वाटी तेमां जरा मीठुं नाखी पावुं अथवा शेरडीनो रस के द्राक्षने पलाळीने तेनो रस पावो।

बगासां रोकवाथी थयेलामां दुधमां घी नाखी गरम पावुं परसेवो लाववो. हिंगाष्टक चूर्ण घीमां चटाडवुं।

आंसुं रोकवाथी थयेलामां तीव्र अंजनोथी आंखमां पाणी लाववां प्रिय वातो कहेवी शोक दुःख उपजावी दरदीने रोवराववो।

छींक रोकवाथी थयेलामां तीव्र सुंघणी सुंघाडीने अथवा सूर्य सामुं जोइने के बीजी रीते छींकुं खवराववी।

ओडकार रोकवाथी थयेलामां स्निग्ध धुंवाडो पावो।

उलटी रोकवाथी थयेलामां उलटी तथा लांघण करावची जुलाब आपवो. तेल मालिस करवुं।

वीर्यनो वेग रोकवाथी थयेलामां स्त्रीसंग, अभ्यंग, मद्य, कुकड, मांस, चोखा, दुध व हितकारक छे।

भुख रोकवाथी थयेलामां दुध घीवाळां हळवां थोडां रुचिकारक स्निग्ध अन्नपान खवराववां सुगंधी पुष्पो सुंघाडवां।

तरश रोकवाथी थयेलामां ठंडा उपचार करवा. कपूर वाळाथी सुगंधित ठंडु पाणी थोडुं थोडुं पावुं।

महेनत के पंथनो श्वास रोकवाथी थयेलामां साकरवाळुं दुध पावुं शरीर चांपवुं-दाबवुं दरदीने सुंदर पथारीमां सुवराववो प्रिय वातो करवी।

जळोदर–जळंधर

कारण—जठराग्नि मंद थवाथी अति आहार विहारथी सुकां दुर्गंध बगडेलां अन्नपान खावाथी वमन विरेचन क्रियाओ अयोग्य रीते करावबाथी लोहीना फरवामां अटकायत थवाथी के लोहीमां बगाडो थवाथी दारु रंडीबाजपणुं जीभने वश राख्या विना खाबा करवुं वगेरे कारणे आ दरद थाय छे ।

चिन्ह—स्नेहपान वमन अने विरेचन आदि कार्य कर्या पछी तरतज टाढुं पाणी पीये छे तेनुं क्लोम (जळवाहिनी शिराओनुं मूळ) बगडी जइ पाणी भरावाथी पेट वधे छे आमां तरश बहु लागे छे गुदामांथी स्राव बहु थाय छे. खांसी श्वास अरुचि थाय छे अनेक रंगनी शिराओथी पेट व्याप्त थाय छे. पेटने स्पर्श करवाथी पाणीथी भरेली पखाल जेवुं लागे छे. नाभीनो भाग गोळ थइ जाय छे।

पथ्यापथ्य—लोही सुधारवाना, परसेवो लाववाना, जुलाब लाववाना, उपाय करवा तेथी घणुं पाणी नीकळी जशे. चोखा खीचडी दुध कांजी मगनुं ओसामण वगेरे खोराक आपवो खाटां पदार्थ दहीं छास लींबु अथाणां झाडो कबज करनारां, गरिष्ठ, शरद ठंडा पदार्थोथी अलग रहेवुं. खोराक पाणी बंध करी एकला दुध अने औषध पर राखवाथी घणी वखत दरद मटी जाय छे. नीचेना अथवा जुलाब प्रकरणमां लखेलां औषध आपी पेटनो बगाड काढवो शस्त्रकर्मथी पाणी कढाव्याथी थोडा दिवस माटे आराम जणाय छे पण ए रीते त्रीजी के चोथी वखत पाणी कढाव्या पछी दरदी मरी जाय छे माटे दवाथी आ दरद मटाडयाथीज दरदी जीवतो रहे छे।

प्रथम जुलाब आपी बगाड काढवानां औषधो

जळोदरारि रस—(जुलाब) पारद गंधक टंकण ताम्रभस्म पिपर मरी हळदर हरडे मंडुर सुंठ सिंधालुण साकर प्रत्येक तोलो १ एक शुद्ध नेपाळानां मींज तो. १२ साथे मेळवी दंतिमूळ अने भांगराना रसनी बबे भावना देवी. मात्रा ३ थी ६ रति उपर प्रमाणे आपवी. पथ्यमां छास भात के खीचडीनो खोराक देवो जुलाब लागी दरद मटशे आ दवा दर ३ थी ४ दिवसे आपवी ।

इच्छाभेदी गोळी—(जुलाब) सुंठ पिपर मरी पारद गंधक टंकण प्रत्येक अकेक तोलो, शुद्ध नेपाळो तो. ६ साथे मेळवी पाणीमां गोळी चणोठी जेवडी वाळवी. मात्रा २ थी ३ गोळी उना पाणी साथे देवी. जुलाब लागी रह्या पछी खीचडी घी दहीं भात वगेरे खोराक देवो जळोदरवाळाने हमेशां सवार सांज अकेक गोळी गोळमां गळाववी ।

जुलाब आपी बगाड काढया पछी आपवानां औषधो

वैश्वानरभैरव रस—पारद गंधक ताम्रभस्म शिलाजीत कांतलोह सुंठ पिपर मरी चित्रो कुष्ठ नगोड मुशळी वछनाग अजमोद हिंग बधां सरखे भागे लइ लींमडाना उकाळानी, लींबुना रसनी, भांगराना रसनी तुळसीना रसनी अने धतुराना रसनी अकेक भावना दइ सुकावी मधमां बबे रतिभारनी गोळी करवी. मात्रा ३ थी १० गोळी पाणी साथे आपवी. जळोदर तथा पेटनां बधां दरद मटे।

एळियादि चूर्ण—शिकोतरो पळियो तथा पुष्कळमूळ दरेक तोला २॥ लइी, खांडी तेमांथी अर्धो तोलो चूर्ण पाणीमां फकावबुं. २१ दिमां जळंधर मटे।

लसणवटि—लसण शेर १ तथा मध शे. १ बेइने खुब घुंटी चुले चडावी छाणानी धीमी आंचे पकाववुं. पाकी पींडो थाय पटले अकेक तोलाना गोळा करवा सवार सांज बन्ने गोळा अथवा तबयत जोइ योग्य लागे तेटला खवरावबा जळंधर मटे।

शंखवटीनी गोळी, ताम्रभस्म, शांकरलोह, लोहरसायन, क्रव्याद रस, दंतिहरितकी अवलेह, वज्रक्षार चूर्ण, नारायण चूर्ण, आरोग्यवर्धनी वगेरे औषधो जळोदरमां अपाय छे तथा शरीरे के पेट उपर महानारायण तेल चोळवामां वापरवुं।

घउंनो पडसुदी थोरना दुधमां वाटी ०। तोलानी अकेक गोळी करवी. सुकवी पछो भाड भुंजीयानो रेतिमां शेकी रोज सवारे १ गोळी उना पाणीमां ७ थी २१ दिवस आपवी आना सेवनथी जळोधर कठोदर गोळो आफरो मटे. जळोदर माटे खास औषध छे।

उंटनुं मूत्र बकरीना छास साथे ७ दिवस पावुं जळोदर मटे।

साजीखार टां. ८ जवखार टां २८ फुलावेल टंकण टां. १४ आकडानां पान टां १५ ए बधां भेगा करी आकडाना दुधमां परती शकोरामां नाखी बीडी चुला उपर चडावी पोर २१ अग्नि देवो पछो आकडानां दुधनी भावना देवी. जळोदर कठोदर उधरस क्षय श्वास मटे।

जुलाब

आगळना वखतमां वमन विरेचनादि पंचकर्म करी शरीरनुं शोधन करवानो रिवाज हतो तेथी माणसो बिमार ओछां थानां हवे मात्र जुलाब लेवानो रिवाज चालु रह्यो छे ते पण पेटमां बोजो भगावो बगाड जामेलो जणाय भुख लागे नहीं झाडो कबज रहे तेवे वखते जुलाब लेवाय छे. दर वर्षे एकादि वखत नखत जुलाब लइ कोठो साफ करी नाखवाथी रोग थना नथी अने शरीरना दरेक अवयवनुं सारी रीते पोषण थाय छे. लंघन पाचनथी दबायेला दोष-रोग कदाचित फरी उत्पन्न थाय छे पण जुलाबथी निकळी गयेला दोष फरीने कोपता नथी।

जुलाब कोने न आपवो—बाळक वृद्ध क्षतथी क्षीण थयो होय भयभीत थयेलो थाकी गयेलो तरस्यो चरबीवाळो सगर्भा स्त्री तुरतना तावबाळो तुरतमां सुवावड आवी होय तेवी सुवावडी स्त्री मंदाग्निवाळो दारुना गांडपणवाळो रुक्ष शरीरवाळो शल्य वाग्युं होय तेवो पटलाने तीव्र जुलाब आपवो नहीं।

जुलाब कोने आपवो—जीर्णज्वरवाळो, झेर पीधेलुं होय, गळत्कोढ, भगंदर, हरस, पांडुरोग, पेटनां दरद, ग्रन्थी, छातीनां दरद, अरुचि, योनिरोग, प्रमेह, गुल्म, बरल, गुमडां, विद्रधि, उलटी, विस्फोटक, कुष्ठ, कान नाक मस्तकना रोग, मोंना, गुदाना, लिंगेंद्रियना रोग, सोजा, आंखना रोग, कृमिरोग, धानां दरद, शूळ, मूत्रघातना रोग एवा दरदीओने जुलाबनां औषध आपवां।

पथ्यापथ्य—जुलाब लीधा पछी ठंडु पाणी आंखे छांटवुं सुगंधी पुष्पो सुंघवां अने नागरवेलनुं पान काथो चुनो सोपारी साथे खावुं खुल्ला पवनमां बेसवुं नहीं ठंड लेवी नहीं तरस लागे तो नवशेकुं पाणी पीवुं ।

जुलाब थोडा थाय तो—हडी बळ जेवी थाय पेटमां शूळ धुंका निकळे पवन अने मळ अटकाइ रहे शरीरे खजवाळ आवे सांधा देखाय शरीर भारे थइ जाय. दाह अरुचि आकरो फेर उलटी थाय. एवां चिन्हो जणाय तो तेने हिंगाष्टक चूर्ण घी साथे देवुं. गिरमालुण नाखी छाश पावी अने २-४ दिवस पछी फरी कोठा तपासी योग्य मात्राथी जुलाब देवो ।

जुलाब बहु थाय तो—मूर्छा बेशुद्धि थाय गुदा बहार निकळी आवे शूळ निकळे कफ घणो निकळे मांसना धोण जेवा चरबी जेवा पाणी जेवा के लोही जेवा झाडा थाय तेवी तुरत सारवार करवी. ठंडु पाणी के चोखानुं धोण शरीर-पर छांटवुं माथे बरफ मुकवो. आंबानी छालने दहीं अने खुरकामां वाटी डुंटी उपर लेपली मुकवी. बकरीनुं दहीं हरिणमांसनो रस चोखा साथे थोडुं थोडुं खवरावबुं. ठंडा बाही उपचार करवा ।

योग्य जुलाबना चिन्ह—सारी रीते जुलाब लाग्यो होय तो शरीर हळवुं पडी जाय मन प्रसन्न रहे शुद्ध ओडकार आवे अपानवायु छुटे जुलाब लेवाथी बधां इन्द्रियो बळवान थाय बुद्धि निर्मळ थाय जठराग्नि तेज थाय धातु स्थिर थाय अवस्था टकी रहे ।

मेघनाद रस—हिंगळो टंकण सिंधालुण सुंठ पिपर मरी हरडे बेडां आमळां काळी द्राक्ष पापडीग हिंग अजमा हपुषा बधां सरखे भागे लइ बधांथी अरधे वजने नेपाळानां शुद्ध बी लइ खांडी लींबुना रसमां चणा जेवडी गोळी करवी. मात्रा १ थी २ गोळी उना पाणीथी लेवी. उपर दहीं भात के खीचडी दहीं खवराववुं ।

इच्छाभेदी गोळी—पिपर सुंठ टंकण हिंगळो प्रत्येक अकेक तोलो, दारुडीमूळ तो. ४ शोधेला नेपाळानां बी तो. ४ लइ बधां साथे मेळवी गायना दुधनी १ भावना दइ चणा जेवडी गोळी वाळवी. १ थी २ गोळी साकर अने पाणी साथे लेवी. तेथी सारी रीते जुलाब थाय छे ।

विरेचन प्रयोग—हिंगळो टंकण काळां मरी पिपर हरडे प्रत्येक तोलो एक, पळियो इन्द्रामणीमूळ कंबल प्रत्येक तो. ७ सात, नसोतर तो. १२, साकर तो. २० साथे खांडी उना पाणीमां ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण लेवुं ।

नाभिविरेचन—नेपाळानां बीज परडिनां बीज मोरथुथु टंकण बधां सरखां लइ खांडी तेमांथी थोडा भुकी लइ भुंगळिया थोरना दुधमां मेळवी डुंटी उपर चोपडवाथी जुलाब घणा लागी पेटनो बगाड निकळी जाय छे ।

इच्छाविरेचन वटी—पारद गंधक वछनाग नेपाळो नसोतरमूळ दारुडि मूळ बधां समभागे लइ लींबुना रसमां मरी जेवडी गोळी वाळवी. गरम पाणीथी

आपवी. जुलाब वाळवानी जरुर पडे तो बाजरानी गोळ नाखी तेमां करेली राब काळांमरीनो भुको थोडो छांटी पावी पडके सखत जुलाब थळी जाशे ।

कडवी अदमी गांठथनो भुको करी रति ०॥ थी ६ सुधी अपाय छे. विचार करीने योग्य मात्रा देवी. गांठ वरल अंदरनी छातीनी के बीजी गमे ते गांठयो होय किंवर के आंतरडां पर गांठयो होय, तेमां तथा इन्फलुएन्झा सन्निपात तावेरमां वखत के झाडा वकडी थाशे अने गांठय गळी आशे. मरपना झेरमां उलटी कराववा अपाय छे ।

थांवलिया थोरनुं दुध बाजरानो कोटमां नाखी मग जेवडी गोळी करवी. विचार करी योग्य मात्राथी आपवी. सखत जुलाब आवशे ।

भुंगळिया थोरना दुधमां चण्यानो कोट नाखी मग जेवडी गोळी करवी. विचार करी योग्य मात्राथी देवी ।

नेपाळानां बीं गंधक मरी टंकणखार हरडेदल बधां सममागे लइ गोळमां चणोठी जेवडी गोळी करवी. मात्रा १ थी १२ गोळी सुधी उना पाणी साथे कोठो अने दरद तपासीने देवी ।

फटकडी ते. १ पलियो ते. १ हळदर ते ३ पकत्र करी वाटी गौमूत्रमां चण्या जेवडी गोळी करवी. उना पाणी साथे १ थी ४ गोळी सुधी देवी. दस्त जुलासे आवे ।

सुंठ तोला २ चण्याना दाळिया सेकेला फोतरां काढीने ते. २ लविंग ते. ०॥ ए सर्वे पकत्र करी थोरसाणी थोरना दुधमां मरदीने चणिया बोर जेवडी गोळी करवी. उना पाणी साथे कोत्राथी जुलाब लागे. रोग काढे ।

पारद तोले। १। गंधक ते. १। वछनाग ते. १ काळां मरी ते. २॥ सुंठ ते. १। नेपाळो ते. १। बधां पकत्र करी टाढा पाणीमां चणोठा जेवडी गोळी करवी. उना पाणीथी १ थी ४ गोळी सुधी आपवी. जुलाब लागे ।

मींढीआवळ हरडेदल नसोतर ए सर्व पकत्र करी वाटी भुको करी गरम पाणी साथे ०। थी ०॥ तोले। फाको देवी. जुलाब लागे पेटनो विकार काढे. उपर भात दहीं अथवा छास जीवडी अमवार्था जुलाब थळे ।

उपरनी दवाथी सखत जुलाब उलटी थाशे अने बगाड निकळी जाशे. जुलाब न थळे तो दहीं खीचडी के साकरनुं पाणी अथवा दुध थोडा साकर वगेरे आपवुं ।

सोजा-शोथ-शोफ

कारण—उळटीथी जुलाबथी ताव वेवां दरदथी अपवासथी दुःखो थवाथी खारां खाटां तीखां उना पदार्थानो अति उपयोग करवाथी दहींथी गायनुं मांस खावाथी बहु लीलुं शाक खावानी टेवथी बगडेलुं अन्नपान खावाथी हरसथी कमुवावडथी सुवारोगथी नबळाइ संधिवा गरमी अजम शामनुं ठंडी हारवी जीवजंतुनुं करडवुं पेटना बगाड अजीर्ण झाडानो बंधकोश पांडुरोग वगेरे कारणथी आ दरद थाय छे ।

बगडेलो वायु बगडेलां लोही पित्त तथा कफने शरीरमांनी बहारनी नाडीयोमां लेइने त्यां रुंधी राखे छे त्यारे त्वचा मांसना आश्रये करी सोजो थाय छे।

चिन्ह—होजरीमां बगाड होय तो छाती उपरना भागमां सोजो आवे छे. पक्वाशय-पेटमां दोष होय तो छाती अने पेट वच्चे सोजो आवे छे. मळस्थान तथा आंतरडामां दोष होय तो पेट उपर सोजो थाय छे अने आखा शरीरे सोजा थाय छे सोजाना सामान्य लक्षणोमां सोजानुं जेतुं जोर ते प्रमाणे ताव उलटी झाडानी कबजीयात जीभपर सफेद पीळी छारी, नाडी अलद नबळी चाले छे. जे ठेकाणे सोजो आव्यो होय ते ठेकाणे पीडा गरमी तथा ते भागमां बगडेल लोहीनो भगावो होवाथी लालास आवे छे, हाथ लगाडवाथी ते भाग गरम लागे छे. वायुनो सोजो राता काळा पीळा रंगनो, झणझणाटवाळो शूळवाळो पीडावाळो दाबतां उपडी आवे तेवो होय छे. पितनो सोजो काळा पीळा राता रंगनो मिश्रित रंगनो ताव परसेवो तरस व्याकुळता बळतरा युक्त होय छे. कफनो सोजो कठण मोढामां थुक बहु आवे छे उंघ आवे उलटी थाय भुख मंद पाणी भावे नहीं सोजाने दाबतां खाडो पडे मार पडवाथी शस्त्रघातथी शरीरपर शस्त्रकर्म करवाथी के तेवां बीजां कारणे थयेलो सोजो पित्त शोषनां लक्षणोने मळतो होय छे अने आखे शरीरे फेलाय छे. नेपाळो वडवाथी के ते वाळो हाथ शरीरे अडवाथी विषैल वस्तु चोळवाथी पण सोजो थइ आवे छे. दोष स्थिति कारण चिन्ह तपासी उपचार करवा ।

पथ्यापथ्य—सोजानुं मूळ कारण तपासवुं. रेचक मूत्रल स्वेदल औषधो देवां. खोराक सादो हळवो प्रवाही देवो. चिकणां मिष्टान्न गरिष्ट पदार्थ आपवां नहीं. शेक करवो योग्य लेप चोपडवा बळतरा थती होय तो शीतोपचार करवा. खाटा पदार्थो दहीं लोटनी चिजुं लीलुं शाक कठोळ वगेरे बंध करवां. जुलाब सारी रीते थाय तेम करवुं. शोथशार्दुल तेल के बीजां तेल मालिश करवां ।

सामान्य उपचार—सोजामां हमेशां आमनो प्रकोप-बगाड होय छे माटे प्रथम तो लंघन-उपवास करावबो. पाचन औषध आपवुं जुलाब आपवो. वमन विरेचन दोष प्रकोप अने रोगीनी शारीरिक स्थिति जोइने आपवां. दरदीने खोराक बंध करी दुध उपर राखवो अने आरोग्यवर्धनी गोळी हमेशनी २ थी शरु करी ४० सुधी दोष व्याधिना शमन सुधी वधारवी. दुग्धवटि पण अपाय छे. अरडुसो अरणी साटोडी पना उकाळानी नाह-बाफ आपवी. कोइपण औषध चालतुं होय तोपण ते साथे देशी परंडियुं तेल पावुं. २ थी ८ दिवस सुधी लंघन करावबुं. हरडे ०। थी २ तोला सुधी हमेशां बडती वधारी आपवी ।

शोथकालानळ रस—पारद तो १० गंधक तो. २०, लोहभस्म अभ्रकभस्म ताम्रभस्म शंखभस्म चित्रो इन्द्रजव लींडीपिपर सुंठ मरी सिंधालुण हरडे जायफळ टंकण लविंग देवदार साटोडी कनकबीज परडिनां मींज परडानां मूळ लींबोळीनां मींज प्रत्येक तो. ५ पांच, कडु तो. २० एकत्र करी नगोड लींमडानां पान अने साटोडी प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ छाये सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ३ थी ६ रति उना पाणी साथे आपवी. दर अठवाडिये बबे रति वधारवी. हमेशनी ३० रति थाय पटले आराम थतां सुधी चलाववी पछी जेम वधावी तेम क्रमे क्रमे उतारवी. सोजा पेटनां दरद अजीर्ण पांडु कमळो हरस वगेरे मटे छे ।

शोथदावानल रस—शुद्ध झेरकोचला तोला १० हरडे तो. २०, पारद गंधक शुक्तिभस्म अभ्रकभस्म मंडूरभस्म शिलाजीत प्रत्येक तोला ८ आठ, रौप्यभस्म कांतलोह भस्म सुंठ पिपर मरी आमळां मोथ चित्रो वावडींग आसेंध शतावरी तज गळो देवदार पळचि सुरण पिपरीमूळ साटोडीमूळ दारुडिमूळ भोरींगणीमूळ सिंघालुष सरगवानां बी सरसडानी छाल बायवरणानी छाल कडु प्रत्येक तोला ४ चार चार मेळवी नगोड अने आदुनी अकेक भावना अने भांगरानी ३ भावना दई छाये सुकावी घुंटवुं. मात्रा १ थी ७ रति पाणी अथवा दुध साथे देवी. हमेशनी ३० रति सुधी क्रमे करी वधारवी अने उतारवी. सोजा पेटनां दरद अजीर्ण बरल गांठ हरस पांडु वगेरे मटे छे।

दुग्धवटी—वछनाग तोला १२ अफीण तोला १२ लोहभस्म तोला ५ अभ्रकभस्म तोला ६० साथे मेळवी दुधमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी दुध साथे २ थी ३ गोळी आपवी दुधनो खोराक राखवो आराम थातां सुधी अन्न छोडवुं सोजा संग्रहणी विषमज्वर मदाग्नि पांडुरोग मटे छे आ गोळी चाले त्यां-सुधी पाणी अने लवण-मीठुं बंध करवुं केवळ दुध पर दरदीने राखवो।

शोथ शार्दूल तेल—सरगवानी छाल सरसडानी छाल नगोडनां पान मालकांकणां सरगवानां बी कनकवी धतुराना पान साटोडी अरणी करंज अरडुसो भोरींगणी काकडाशींगी वरियाळी सुवा कडु मजिठ रास्ना वाळो कपुरकाचली कचुरो वज पिपरीमूळ कुष्ठ धाणा कायफळ झेरी नालियेर बधां सरखे भागे लइ बधां ओसडियाने गौमूत्रमां वारिक वाटी ४ गणुं सरसियुं तेल नाखी पकाववुं आ तेल पावुं तथा चोळवुं पावानी मात्रा ०। थी १ तोलो दुध साथे आपवाथी तथा चोळवा चोपडवाथी बधी जातना सोजा कृमि पांडु व्रण गुमडां घारां भर-नींगळ पेटनां दरद शूळ वगेरे मटे छे।

सामान्य प्रयोगो।

१ क्वाथ—अरडूसी गळो साटोडीनो क्वाथ मध नाखी पावो।

२ मलम—भेंसनुं माखण दुध अने तल साथे वाटी चोपडवुं।

३ क्वाथ—हरडे हळदर भारंग गळो चित्रो दारुहळदर साटोडी देवदार सुंठ पनो उकाळो पावो।

४ दुध—साटोडी देवदार सुंठमां दुध पकावी पावुं।

५ दुध—दंतीमूळ नसोतर सुंठ पिपर मरी चित्रो साथे कांढी दुध पकावी पावुं।

६ स्नान—आकडाना पान साटोडी करियाताना उकाळाथी दरदीने चोळी नवराववो।

७ पान—साटोडी देवदार सुंठ सरगवो सरसव दहींमां नाखी पावुं।

८ लेप—गळोनो कंद उपलेट आंबाहळदर सुंठ कडत्रो सरग्लोडो समभागे वाटी चोपडवाथी हाथे पगे रस उतरी सोजो चढयो होय ते मटे।

९ पान—बोलीनां पान तो. २॥ ने वाटी हमेशां पावां २१ दिवस पावाथी गमे त्यांना सोजा मटे।

१० क्वाथ—करियातुं सुंठ साटोडीनो उकाळो करी पावो ।

११ क्वाथ—महासुदर्शन चूर्णनो उकाळो २१ दिवस पावो ।

१२ क्वाथ—रगतरोहिडानी छाल त्रिफळा उंदरकनी दंतिमूळ समभागे खांडी ०॥ थी १ तोलानो क्वाथ करी तेमां त्रिकटु जवखार नाखी पावुं. सोजो उतारे छे ।

१३ चूर्ण—साटोडी रास्ना सुंठ देवदार हरडे समभागे चूर्ण करी ०। थी ०॥ तोलो उना पाणी साथे देवुं. सोजा मटे ।

१४ करड—साटोडी लींमडानी छाल सुंठ पटोळ समभागे पाणीमां वाटी करड करवो. सोजा उतरे ।

१५ क्वाथ—सिसमना छोडियां उकाळी ७ दिवस पावाथी शरीरना सोजा जाय ।

१६ लेप—अंकोलमूळ पाणीमां घसी चोपडवाथी सोजा उतरे ।

१७ चुरण—हीराकसी टां. १ उपलेट टां. १ रोज पाणी साथे देवुं दिन ३ सोजो उतरे ।

१८ चुरण—मेंदी खांड समभागे चुरण करी टां १ देवुं बे टंकमां सोजो उतरे।

१९ गोळी साटोडी जड टां. १ गोळ टां. १ गोळि करी देवी दिन ७ सोजो जाय ।

२० क्वाथ देवदार हळदर कडु गुगळ क्वाथ करी गौमूत्र पळी १ नाखी दिन २१ पावुं. सोजो उतरे ।

२१ क्वाथ—देवदार मोथ कडु त्रिफला मोरींगणी पटोळ हळदर लींमडानी अंतरछाल गुगळ समभागे क्वाथ करी पीवो सोजो टळे ।

२२ नाह—अरणी नगोड बकान भांगरो बधानी नाह बाफ देवो सोजा उतरे।

२३ लेप—सरगवानी छाल करंजछाल हळदर आसोंध गरमाळो पुरुषना मूत्र साथे के भेसना मूत्र साथे लेप करवो ।

२४ साटोडी दारुहळदर देवदार हरडे गळो गुगळ गौमूत्र साथे ०। थी ०॥ तोलो पावुं. खामडीना दरद सोजा पांडुरोग मटे ।

२५ साटोडी लींमडानी छाल पटोळ सुंठ हळदर कडु गळो दारुहळदर हरडे ए क्वाथ पावो शोफोवर पांडु मेद स्थूलता कफ वगेरे दरदोने मटाडे ।

२६ जीरुं काळीपाठ मोथ लिंडीपिपर पिपरीमूळ चवक सुंठ चित्रो मोरींगणी-मूळ हळदर अतिविष समभागे खांडी ०। थी ०॥ तोलो उना पाणी साथे पावुं. त्रिदोषनो सोजो घणा दिवसनो जुनो होय ते पण मटे ।

२७ लसणनी कळी दुध साथे खवराववी सोजा मटे ।

२८ लोढाना जुनां खीला शेर ५ गायनी छास शे. १२ मां नाखी हांडलाने ढांकणी ढांकी चुला पासे डाटवुं ४० दिवस पछी काढी हमेश नवटांक पावुं. पांडुरोग जळोदर मटे ।

२९ अशेलियानां बी अजमो समभागे टाढा पाणी साथे ०॥ तोलो पावुं. सोजा मटे मेद चरबी ओछी थाय ।

३० लसण टां. १ थी शरु करी टंके नवटांक सुधी वधारतुं आवुं वधतुं आपवुं. सोजा उतरे ।

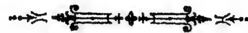
[illegible] वछनाग घोळीमाटी पाणीमां कालवी चोपडवुं सोजो उतरे ।

३२ पारो टां. १ भेंसनुं मूत्र टां ९ मेळवी पावुं सोजो उतरे ।

३३ तेल नवटांक खजुर नवटांक साथे ३ दिवस खवरावबुं सोजो उतरे ।

३४ त्रिफळा क्वाथ भेंसनुं घी नाखी पावो. सोफ सोजा प्रमेह नाडीव्रण भगंदर मटे ।

३५ सोजा कोइ प्रकारे न उतरता होय तो रात्रिये तथा सवारे आकडाना [illegible]नी वाफ दइ जुलाब आपवो. कोठो शुद्ध करी नवायसलोह ३ थी ६ रति घी साथे देवुं. सोजा उतरे ।



पेटनां दरद

शूळ आफरो पेटमां दुखवुं—सुंठ पिपर सिंधालुण नसोतर हरडे समभागे लइ चूर्ण करी उना पाणीमां पावलीभार आपवुं. पेटरोग आफरो शूळ मटे ।

मंदाग्नि वायुनुं चूर्ण—गंधक मरी चित्रो संचळ सुंठ बधां समभागे लइ ३ दिवस खरल करवुं. ०। तोलो पाणी साथे देवुं क्षुधा लागे मंदाग्नि वायु मटे ।

अग्निकुमार गोळी—पारो आमलसारो गंधक शंखनाभि झेरकोचला पिपर मरी सुंठ वछनाग टंकणखार ए सर्व समभागे लइ लींबुरसना ३ पट देवा पछी चणोठी जेवडी गोळी करवी. १ थी ३ गोळी पाणी साथे नित्य देवी. विसूचिका अजीर्ण मंदाग्नि मटे ।

पारद भस्म—हिराकसी तो १॥ सिंधालुण तो १ फटकडी तो. ०॥ ब्रणे वाटी कुइडी करी सुकवी ४-५ दिवस पछी ते मध्ये पारो तो १ भरी ते कुइडी तावडीमां मुकी ते उपर काचनो प्यालो उंधो मुकी माटी मीठानी मुद्राथी कोर छांदवी-बीडवी. सुकवी पछी नीचे १॥ पहोर अग्नि देवी. ठरे त्यारे उतारी फुल लइ लेवां चोखा २ भार नागरवेलना पानमां ७ थी १४ दिवस आपवुं. मरवाना पान साथे पण १४ दिवस अपाय छे. गांठ उदरविकार मटे ।

शीतवायुहर गोळी—आमलसारो गंधक पारो वछनाग मरी टंकणखार कनकबीज दरेक तोला ६ छ, जायफळ तो. १०, लिंडीपिपर तो. २०. प्रथम पारा गंधकनी कजली करी बीजां वसाणा मेळवी कुंवारना रसमां घुंटी चण्या जेवडी गोळी करवी. पाणी साथे २ थी ६ गोळी आपवी. शीतवायु शीत वळवां मंदाग्नि मटे ।

उदररोगहर क्षार—कुंवारनो रस शेर ०॥ रीढा ठाममां नाखी पछी नीचेना ओसड मेळववां. सुंठ शे. ०॥ हळदर शे. ०॥। पिपर तो. ३॥ मरी तो. ३॥ [illegible] नवसार फटकडी सिंधालुण संचळ साजीखार दरेक तो. २ ते लइ सर्व वाटी हांडलामां नाखी पछी मुख बंध करी देवुं. पछी ६ [illegible]मां दाटी राखवुं. पछी हमेशां १ थी २ तोला [illegible]वुं. पथ्यमां

बाजरो गोळ जमवुं. बरल लिवर अंतरगल सारण जळोदर लोहीयार उधरस पटला रोगने मटाडे ।

मंदाग्निवटी—हरडेदळ पिपरीमूळ जीरुं सुंठ पिपर दरेक तो. २॥ अढी, गोळ शेर ०॥ मां चणियाबोर जेवडी गोळी करवी. २ थी ६ गोळी पाणी साथे देवो भुख लागे ।

इन्द्रवारुणीयोग—इन्द्रमणी शेर ४ सिंधव शे ०॥ संचळ शे. ०॥ लींबु-रस शे. १ गौमूत्र शे २ ए सर्वे वाटी हांडलामां नाखी मुख बंध करी २१ दिवस चुला नीचे डाटी राखवुं. पछी काढो तेमांथी हमेशां ०॥ तोलो खवरावयुं. पथ्यमां खारुं खावुं तथा घी खावुं नहीं. पेटना वधा रोग मटे ।

पळियादि चूर्ण—पळियो तो. ४ हरडे तो. ०॥। काळीपाठ नसोतर चित्रो वावडींग कुंवार इन्द्रामणी अशेळियो पलचि हिराबोळ जावंत्री मूळाना बी टंकण पापडीयोखारो काचलुण जवखार सिंधालुण संचळ नवसार फटकडी समभागे चूर्ण करी तो. ०॥ थी १ प्रमाणे वाछडीना मूत्र साथे लेवुं. गोळो गुल्म कठोदर शोफोदर जळोदर ८४ जातना वायु ८ प्रकारना गोळा कीरम-कृमि पथरी मळबंध वगेरे मटे ।

अग्निसुंदरी गोळी—त्रिकटु त्रिफळा पिपरीमूळ नगोडना बी चित्रो लोहभस्म पलचि तज तमालपत्र नागकेसर गारो गंधक वछनाग वावडींग मोथ जायफळ लविंग बधां सरखे वजने लइ तेनाथी बमणो गोळ नाखो चणियाबोर जेवडी गोळी वाळी गरम पाणी साथे देवी. पांडुरोग गुल्म श्वास खांसी खेन पाणवी विषमज्वर पाणीनी तरस संग्रहणी १३ जातना सन्निपात हाथ पग हृदय पीडा मंदाग्नि वायु तथा पेटना वधा रोग मटे ।

शंखद्राव चूर्ण—५०० लींबु बहु रसवाळां लइ तेनो रस काढी तेमां मालवीगोळ शेर ५ मेळवी एक करी चुले चडावी उकाळवुं तेमां जवखार टां. ९५ टंकणखार टां. ४५ नवसार टां. ३५ सिंधालुण टां. ५३ ए बधां चुरण करी नाखवां पछी खुब हलावो ज्यारे भुको जेवुं थाय त्यारे उतारवुं उकळतुं होय त्यारे कोडी बांधी नाखवी अने कोडी गळे त्यारे तैयार थयेल जाणवुं नहितर लींबुनो रस बीजो नाखवो फरी पकाववुं भुको करी नाखवो. मात्रा ०। थी ०॥ तोला सुधी प्रमाणे पाणी साथे देवुं शूळ गुल्म मंदाग्नि तथा पेटना बधां दरद मटे ।

श्रीफळलवण—पाणीवाळा नाळीयेरमां काणुं पाडी पाणी काढो तेमां मीठुं वाटीने साकरीने भरवुं पछी मो बंध करी ७ कपडमाटी करी सुकावी गजपुट अग्नि देवो ठंडु थये काढवुं. बेआनो थी पावलीभार आपवुं. उधरस खांसी मटे कफ छुटे वायु शूळ मटे भुख वधे नरळाइ मटे गुल्म गोटो चड्यो होय के चडतो होय बरल वधी होय तेमां उपयोगी छे ।

मळशोधनवटी—पळियो तो. १० मरी तो १० पाणीमां वाटी चणया जेवडी गोळी करवी उना पाणी साथे १ थी २ गोळी देवी. पेट दुखतुं होय तो मटे पेटमां भार मळविकार बरल वगेरे रोग मटे. राते बबे गोळी पाणी साथे लेवी झाडो साफ आवे ।

उदररोगहर चूर्ण—हिंग त्रिकटु काळोपाठ कपुरकाचली हरडेदळ उपलेट अजमोद आसोंध आंबलीना कातरा दाडिमसार पोखरमूळ जीरुं चित्रो खोरासाणीवज संचळ सिंधालुण चवक नसोतर पापडियोखारो मरी ए सर्व समभागे वाटी बीजोराना रसना ३ पट देवा. ०। थी ०॥ तोलो फाकवी उपर गरम पाणी पावुं. उदरविकार तथा पेटना बधां दरद मटे ।

अरुचिनी गोळी—सुंठ पिपर सिंधालुण चित्रो दरेक तोला १२ बार, हरडे तो. ६ आमळां तो. ६ जवखार तो. २ दाडमना दाणा तो. १२ सर्व कपडछान करी बीजोराना रसथी चणियाबोर जेवडी गोळी वाळवी. १ थी २ पाणी साथे देवी. भुख लागे खोराक भावे अन्न पचे ।

अरुचिनी गोळी—सिंधालुण शेर ०। आमलवेतस तो. २॥ सुंठ तो. ०॥ लविंग तो. ०॥ मरी तो. ०॥ सर्व वाटी लींबुरसना ७ पट देवा पछी चण्या प्रमाणे गोळी करवी. २ थी ४ पाणी साथे देवी. भुख बमणी लागे ।

कमावेल अजमा—अजमाने भांगराना रसना ६० पट देवा छांये सुकवी पछी ०॥ तोला भार पाणी साथे खाय तो बधा पेटना रोग मटे ।

मुबारकी गांठनी गोळी—त्रायमाण पिपर पिपरीमूळ मरी एलचि चित्रो ब्राह्मी दरेक तोला ३ त्रण, मालकांकणा तो. २ गोळ शे. ०। कपुर तो ०॥ मेळवी चणियाबोर जेवडी गोळी करी ३ थी ४ उना पाणी साथे ७ दिवस देवी. मुबारकी गांठ समे ।

मुबारकी गांठनी गोळी—अगर सुरोखार नवसार टंकण पिपर करियातुं मरी सरखे वजने लइ गोळमां चणिया बोर जेवडी गोळी करवी १ थी ३ गोळी पाणी साथे २१ दिवस देवी मुबारकी गांठ गळे ।

पेचोटीनो प्रतिकार—खाखराना पान बाफी पेटे बांधवां पेचोटी ठेकाणे आवे ।

बरल—अघेडानी राख तो. ९, हळदर तो. ५, अजमा तो. २॥ जीरुं साजीखार मीठुं दरेक तो ९ नव, सर्वने वाटी तो ०॥ थी १ पाणी साथे लीधाथी १४ दिवसमां बरल मटे ।

बरल—साजीखार अने राइ बेय बीज सरखे भागे खांडी हमेशां सवारे नरणे कोठे ०। थी ०॥ तोलो दहीं अथवा छास साथे आपवाथी बरल मटे ।

बंधाण—हळदर फटकडी हिराबोळ सुवादाणा अशेळियो मेथी राइ सरसव सिंधालुण पळियो परंडिमिंज चूनो खोळ गोमूत्र साथे लेप अथवा गोळ साथे रोटलो करी पेटे बांधे उदररोग तथा काळजानी पीडा विकार मटे ।

भुख वधे—हाथीना काननी रज रति १ प्रभाते घी साथे खाय तो आहार वधे खोराक घणो लेवाय ।

भुख उघडवानुं औषध—लविंग पिपरीमूळनी गांठ अकलकरो मरी पिपर दरेक तोला ५ पांच, हरडेदळ तो. २॥ ए सर्व एकत्र करी खांडी भुको करवो. बेआनीथी पावलीभार पाणी साथे आपवाथी भुख उघडे ।

हिंगळो तो १ पारो तो. १ पिपर तो ३ सर्वे एकत्र करी वाटी प्रहर २१ अथवा दिवस २१ घुंटवुं जेम घणा दिवस थाय तेम गुण घणो थाय. मात्रा रति १ मधमां चटाडवी ।

कुवाडियाना बी आमळां शणनां बी ए सर्व वाटी दहींमां चोपडवाथी वरल बळतरा दाह मटे ।

सुरणकंद शेर १ चोखा तोला १४ भींजवीने आदु शेर ०। मीठुं तोला १४ हळदर तो. ३॥ एकत्र करी वाटी लींबुरसना ३ पट देवा. तो. ०॥ थी १ देवाथी भुख लागे वायु हरे ।

मीठुं संचळ सिंधालुण जवखार दरेक तो. १। सवा, अजमोद तो ५ हरडे-दळ तो २ पिपर तो. २ सुंठ तो. २ हिंग तो. १। वावडींग तो. २ बधाने सुक्ष्म चूर्ण करी ०। थी ०॥ तोलो पाणी साथे देवुं. भुख लागे खोराक पचे पेटनां बधां दरद मटे ।

कांकसीमूळ रविवारे लइ कडि करी हाथे बांधवी. पेचुटी खसी गइ होय ते ठेकाणे आवे ।

पाणी शेर ०॥ तलनुं तेल तोला ७॥ नाखी एकत्र करी मरदी पावुं पेटपीड खमे शूळ मटे ।

सुंठ गोळ पलचि दरेक तोला १० दश, लइ एकत्र करी पाणी साथे ०। तोलो देवाथी ८४ जातना वायु मटे संधिवा मंदाग्नि मटे भुख लागे ।

आगलसारो गंधक ७ वखत घीमां शोधी पछी खावाथी सर्व उदर रोग मटे ।

हिंगळो तोला २ इंट पाकल कोरी तेमां गंधक तो. ४ लइ अरध हेठे अरध उपर नाखी माथे इंट ढांकी छाणा सुंडला एकनो अग्नि आपवो एम ६ वखत अग्नि आपवाथी हिंगळो सफेद थाय १ रती पानमां आपवाथी घणा रोग मटे पेटना लीवरना छातीना रोग मटे शक्ति आवे लोही वधे ।

खारो शेर ५ अजमो शेर १। पांणी शेर १० ए त्रणेने उकाळवा पाणी शेर ३ रहे त्यारे उतारवा माथे अडदनो रोटलो खवरावो गोळो सुवारोग मटे १ थी २ तोला पावुं ।

सुरोखार शेर ०॥ भांग शे. ४ पिपरीमूळ शे. ०। मरी शे. ०। प्रथम वेगडीमां सुरोखार पाथरी ते उपर मरी पाथरी ढांकणुं ढांकी माटी शे. १५ थी मों बंध करवुं. सुरोखार उछळे त्यारे माटीना लोंदा मो उपर मारवा तळे अग्नि बोरडीना लाकडानो देवो. पाकी रहे पछी भुको भस्म लेवी. बेआनीथी पावली भार पाणी साथे लेवाथी भुख लागे ।

वरल वधवो—प्लीहा

कारण—पेटनी डाबी बाजुमां हृदयनी नीचे लोहीने चलावनारी नसोनुं मूळ छे तेने वरल कहे छे. भेंसनुं दहीं दुध गरिष्ठ पदार्थो नास्ता लोही बगाड-नारां पदार्थ, सादा के टाढीया ताव जेवा रोग वगेरेथी कफ प्रकोप पामी वरलने वधारे छे. गीर जेवा के भेजवाळा प्रदेशमां ज्यां झाडवाना मूळनां पाणी पोवाय

छे अने सूर्यनो प्रकाश ओछो मळे छे त्यां रहेनाराओने तथा पांडुरोगथी कमळाथी, परदेशनुं पाणी लागवाथी एम विविध कारणे बरल वधे छे ।

चिन्ह—वायु प्रधान होय तो बरल वधवा साथे पेटमां आफरो उदावर्त वायु चारेकोर दुखावो थाय. पित्त प्रधान होय तो बरल वधवानी साथे ताव बळतरा मुंझारो तरश शरीर पीळुं देखाय. कफ प्रधान होय तो बरल वधवा साथे जाडी कठण होय, अरुचि मोळ वगेरे जणाय छे बरलवाळो दरदी नबळो फेफरी गयेल जेवो कृश चढेला सोजावाळो देखाय. बरलनुं छाती तरफ दबाण थाय तो मुश्केलीये श्वास लइ शके, भुख ओछी झाडो कबज, थोडी महेनत करतां श्वास चढे वगेरे जणाय ।

पथ्यापथ्य—खोराक हळवो प्रवाही दुध भात खीचडी वगेरे आपवो. लीलुं शाक बहु थोडुं देवुं, लोटनी चीज बंध करवी, हमेशां झाडो साफ लाववो. शंखद्राव जेवा पदार्थोथी बरल गाळी नाखवी. दरदीने ठंडी-शरदीमां राखवो नहीं बीजां जे चिन्ह जणाय तेने अनुसरता उपाय करवा ।

प्लीहारि रस—पारद गंधक शंखभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म शेकेली हिंग अजमा सुंठ पिपर मरी रगतरोहिडो चित्रो शरपंखानुं मूळ हरडे वावडींग पळांसवी गळो सिंधालुण अजमोद बधां सरखे भागे लइ खाखराना मूळना रसनी अरडुसीना रसनी अने लींबुना रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुको राखवो. मात्रा २ थी ६ रति पाणी साथे आपवाथी २१ दीमां गमे तेवडो वधेली बरल तथा लिवर, टाढी गांठ मटी जाय छे ।

प्लीहार्णव—पारद तोला १० गंधक तो. २० ताम्रभस्म लोहभस्म मंडुर भस्म शंखभस्म शुक्तिभस्म प्रत्येक तो. ६ छ, सुंठ पिपर मरी कडु हळदर नसोतर कुष्ठ काळिपाठ सिंधालुण जवखार संचळ शिलाजीत हरडे टंकण चित्रो शरपंखो प्रत्येक तो. ४ चार लइ साथे मेळवी गळोना रसनी अने रगतरोहिडाना रसनी अकेक भावना दइ चणोठो जेवडी गोळी वाळवी के भुको राखवो. मात्रा २ थी ४ गोळी पाणी साथे आपवी. बरल लिवर गुल्म मंदाग्नि मोळ उबके वगेरे पेटनां दरद मटी जाय छे ।

महाद्राव—शुद्ध सुवर्ण माक्षिक शुद्ध कांस्य माक्षिक सिंधालुण रसकपूर समुद्रफिण साजिखार संचळ प्रत्येक तोला १० दश, टंकणखार तो ७० नवसार तो. ३५ फटकडी तो. ३५ जवखार तो. १४० हिराकसी तो. १५० बधां साथे खांडी तेमां लींबुनो रस शेर १० नाखी वंकनाळ यंत्रमां नाखो मंद मध्य तिव्र अग्नि आपवाथी प्रवाही क्षार पाणीमां राखेली शीशीमां एकठो थाय छे आ क्षार जलद बहु होवाथी एक जातनो तेजाब जेवो तीव्र थाय छे तेथी आमां ६ गणुं ८ गणुं के २० गणुं पाणी मेळवी रखाय छे ए पाणी मेळवेला क्षारनां ३०-४० टीपां २॥ तोला पाणी साथे पावाथी बरल लिवर गांठ टाढीगांठ गुल्म वगेरे मटे छे चोख्खो पाणी मेळव्या वगरनो ए क्षार घणी वखत कोइ ओसडियानी वचमां राखी मोने अडे नहीं तेवी रीते गळावाय छे परंतु उपर प्रमाणे पाणी मेळवी वापरवो एज उत्तम छे बधा रोगोमां अनुपान भेदथी अपाय छे आठ जातना उदररोग गुल्म

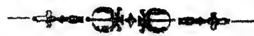
पांडुरोग मंदाग्नि सोजा हरस भगंदर जीवडा उधरस हेडकी उलटी ताव कफ कफक्षय वानां दरद वगेरेमां वापरवाथी सारुं काम करे छे ।

अर्कलवण—आकडाना पान पाकेलां लइ तेने एक माटलीमां उपरा उपर धरना पडे पाथरी वचमां वचमां वाटेला मीठानो थर दइ माटली गळा सुधी भराय जाय पटले मों छांदी गजपुटनो अग्नि देवो. पछी घुंटी राखवुं. आमांथी ०। थी ०॥ तोलो आपवाथी बरल लिवर मटे छे ।

मिश्रण—लोहभस्म १०० पुटी शुक्तिभस्म मधुमंडूर अभ्रकभस्म १०० पुटी दरेक तोलो ०॥ अर्धो साथे वाटी सरखे भागे ४८ पडिकी करी सवार सांज अकेक पडिकी मधमां चाटी उपर पाणी पीवुं जमीने सवार सांज बृहत्-क्रव्याद रसनी बे ओरोग्यवर्धनीनी बबे गोळी पाणीथी खावी ।

रोहितकारिष्ट—रगतरोहिडानी छाल शेर १० पाणी मण ३ उकाळी चतुर्थांश रहे पटले गाळी लइ तेमां गोळ मण अर्धो धावडीना फुल तोला ६४ सुंठ पिपर मरी पिपरीमूळ चवक तज तमाल पत्र एलचि हरडे बेडां आमळां प्रत्येक तोला ४ चार नांखी लाकडाना पिपमां भरवां. १ महिना पछी गाळी लइ शीशा भरवा सवार सांज २॥ थी ५ तोला २१ दिवस पावाथी बरल मटे पेटनां दरद लिवर अर्शोला हरस कुष्ट सोजा अगाउ पछडाटने लीधे थयेलो लोहीनो जमावट पटलां दरदमां पण उत्तम फायदो करे छे ।

महामृत्युंजय लोह—लोहभस्म तो ४०, पारद गंधक अभ्रकभस्म रौप्य भस्म कांतिभ्रांतिरहित ताम्रभस्म जवखार साजीखार बीडलुण सिंधालुण कोडी-भस्म शंखभस्म चित्रो मनशिल हरताळ हिंग कडु रगतरोहिडो नसोतर आंबली इन्द्रामणां धावडो कुष्ट अघेडो परडो अमलवेत हळदर दारुहळदर घउंलो इंद्रजव हरडे अजमोद अजमा शरपंखो कुवाडियो रसवंति प्रत्येक तो १० दश लइ मेळवी आदुना रसनो अने गळोना स्वरसनी अकेक भावना दइ मधमां गोळी चणोठी जेवडी वाळवी अथवा भुकी राखवी. मात्रा ६ थी २४ रति पाणी साथे १ महिनो सेव-वाथी बरलनुं दरद मटे छे तेमज खांसी विषमज्वर आमवा लिवर श्वास हरस गुल्म सोजा उदररोग हृदयरोग फेफसाना रोग वगेरे पण १ महिनो सेवनथी मटे छे ।



यकृद्रोगाः—लिवरनां दरद

कलेजानां दरद—१ लिवरना सर्व रोग. २ लिवरनुं जळोदर. ३ लिवरमां लोहीनो जमाव. ४ लिवरनो दाह ५ लिवर-कलेजानुं शोषण. ६ लिवरनुं विद्रधि ।

१ लिवर-कलेजुं—यकृत ए शरीरमां मुख्य अवयव छे ते पेटमां पांसळी-ओनी अंदर जमणा पडखामां रहेलुं छे. लंबाइ आशरे १२ इंच पहोळाइ ८ इंच अने वजन आशरे ४ रतल होय छे. कलेजानुं मुख्य काम लोही शुद्ध करवानुं अने पित्त उत्पन्न करवानुं छे. रुप कांति सौंदर्य पाचन शक्ति उत्साह ए बधा गुण यकृत् उपर आधार राखे छे. घणे भागे आखा शरीरनो आधार यकृत् छे तेमां बगाडो थये आखुं शरीर बगडे छे ।

पथ्यापथ्य—सादो जुलाब देवो झाडा पेसाबनो खुलासो थवाथी सोजो उतरे छे खोराकमां दुध कांजी दाळ भात वगेरे हळवो खोराक देवो आराम आपवो श्रम करवा देवो नहीं काळजाना तीक्ष्ण वरम होय तो ताव आवे नाडी उतावळी चाले झाडो कबज थाय गरम पाणीनो शेक करवो देवदारु लेपनी पोटीस बांधवी ते पर शेक करवो ताव होय त्यां सुधी खोराकमां दुध आपवुं नही ताव उतरे पछी दुध देवुं मगनुं ओसामण भात खीचडी राब कांजी आपवुं. तेलुं शाक भारे पदार्थ लोटनी चीजुं बंध करवी कलेजाना दीर्घ दरदमां शक्ति आवे तेवा पातला दुध भात वगेरे खोराक देवो. गड नीकळे तो पकवी फोडा बगाड काढो नाखवो झीणो ताव होय तो अभयादि उकाळो आपवो काळजानो संकोच होय तो परसेवो पेसाब झाडा वधे तेम करवुं. घी मांस बंध करवुं दुध कांजी चोखा खीचडी जेवो हळवो खोराक देवो. दारु बीलकुल आपवो नही. दस्त पेसाबनो खुलासो राखवो हळवो प्रवाही खोराक देवो।

रोहीतकारिष्ट—रगतरोहिडानी छाल शेर १० नो उकाळो करी तेमां गांड के गोळ मण १ धावडीनां फुल शेर १॥ सुंठ पिपर मरी चवक नियो तज तमाल पलचि हरडे बेडां आमळां प्रत्येक तोला ४ चार लइ मांडी उकाळामां नाखी रीढाठाममां भरी १ महिना पछी गाळी शीशा भरी राखवा मात्रा २ थी ८ तोला दरदनुं रुप जोइ पावुं. लिवरनां बधी जातनां दरद मटे छे ते उपरांत बरल गुल्म उदररोग अर्शाला हरस कमळा सोजा वगेरे दरदमां पण अपाय छे।

यकृत्प्लीहोदरारि लोह—(सुवर्ण युक्त) सुवर्णभस्म ताम्रभस्म बंगभस्म अभ्रकभस्म माक्षिकभस्म प्रत्येक तो० ४ चार, लोहभस्म तो १० मेळवी आदुरसनी नगोडीना पानना रसनी चीत्रोना पानना रसनी कडुना उकाळानी तुळशीना रसनी अकेक भावना दइ सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा २ थी ६ रति खडसलियाना उकाळा साथे आपवी. काळजा-लिवर यकृतनां बधां दरद बरल श्वास उधरस विषमज्वर गुल्म सोजा उदररोग कमळो पांडु तथा वायु पित्त कफना बीजा रोगोमां उत्तम छे।

यकृत्प्लीहोदरारि लोह—(सुवर्ण रहित) आनी बनावट उपर प्रमाणेज छे मात्र सुवर्णने बदले सुवर्णमाक्षिक नाखवामां आवे छे. गुण घणे अंशे उपरनांने मळता छे।

लिवरनां बधां दरदमां बरलनां प्रकरणनां औषधो लागु पडे छे।

२ लीवरनुं जळोदर—कलेजामां पाणीनो भरावो थाय छे तेथी तेनुं कद वधे छे पाणी घणु भराय जाय पेट तुंबडा जेवुं उपसी आवे छे पेट पर शिराओ देखाय छे श्वास पण मुशकेलीथी लइ शके छे सुतां बेसतां हालतां चालतां क्यांय सुख लागतुं नथी दरदी निर्बळ बने छे शरीर फीकुं पांडुवर्णुं थाय मनने उलटी झाडो कबजीयात वगेरे चिन्हो जणाय छे।

वज्रक्षार—संचळ जवखार सिंधालुण टंकण साजीखार सुरोखार बडागरु बधां समभागे लइ आकडानुं दुध अने मुंगळीया थोरना दुधनी अकेक भावना

दइ एक हांडलीमा उपर नीचे आकडानां पान मुकी हांडलीने कपडमाटी करी गजपुटनो अग्नि देवो स्वांगशित थये तेमां सुंठ पिपर मरी वावडींग राइ हरडे- बुळ बेडां आमळा चवक शेकेली हिंग बघानुं समभागे करेलुंचूर्ण उपला क्षारमां सरखेभागे मेळवी ८। थी ०॥ तोला सुघो छास साथे अपाय छे आनुं सेवन २१ दिवस करावथाथी कलेजानुं जलंधर मटे छे ते शिवाय आठ जातनां पेटनां दरद सोजा गुल्म मुबारकी गांठ मंदाग्नि बरल वगेरे रोग पण मटे छे ।

महानारायण रस—(रेच) पारद गंधक शेकेलो टंकण मरी सुंठ पिपर समभागे अने बधांनी बराबर शोघेला नेपाळाना मींज नाखी मग जेवडी गोळीयो पाणीमा वाळवी हमेशां ३ थी ४ गोळी गरम पाणी साथे आपवाथी अठवाडियामां लिवरमां भरायेलुं पाणी सखत जुलाब लागी नीकळी जाशे बघी जातनां लिवरनां पेटनां दरदमां जुलाब आपवा बगाड काढवा माटे आ जुलाब आपी शकाय छे जरुर पडे तो मात्रामां वधारो के घटाडो करवो ।

महालोकनाथ रस—पारद गंधक सुवर्णमाक्षिक अभ्रकभस्म प्रत्येक तो. १० दश, साबरसींगभस्म ताम्रभस्म शंखभस्म लोहभस्म अने शुक्तिभस्म प्रत्येक तो. २० वीश, कोडीभस्म तो. ३० बधांने साथे मेळवी कुंवारना रसनी अने पीलुडीना रसनी अकेक भावना आपी गोळो वाळी गजपुटनो अग्नि आपी घुंटी राखवुं सवार सांज बबे रति मघ साथे आपवाथी बधी जातनां कलेजानां दरद मटे छे ते सिवाय बरल गुल्म कमळो अने जीर्णज्वरमां पण अपाय छे ।

३ लिवर कलेजामां लोहीनो जमाव—दारु बहु पीवाथी भारे चिकणां बजारनी मिठाइओ तीक्ष्ण मसालावाळा पदार्थ खावाथी, शरदी लागवाथी, विषम ज्वर टाढीया मेलेरियाना तावथी एम अनेक कारणे लिवरमां लोहीनो भरावो थाय छे त्यारे काळजामां भार बोजो लागे· पांसळी नीचे तथा उपर दुखे जम्या पछी पेट तणाय फुले, उबको पेटमां वायु भुख ओछी जीभपर छारी जामे झाडो कबज पेसाब थोडो अने अटकतो उतरे माथुं दुखे उत्साह स्फुर्ति आनंद जतो रहे अरुचि थाय वखते झाडा उलटीमां लोही पडे हाथे पगे सोजा बडे श्वास बडे मोढे थेथर देखाय कमळा जेवुं लागे ।

महामृत्युंजय लोह—बरलनां प्रकरणमां कहेल छे तेनुं सेवन करावबुं शंखद्राव के महाद्राव योग्य मात्राथी आपवां ।

यकृन्मृत्युंजय रस—पारद तो ४ गंधक तो. ८, अभ्रकभस्म लोहभस्म रौप्यभस्म प्रत्येक तोला ४ चार, ताम्रभस्म बंगभस्म माक्षिकभस्म चित्रो सुरण खाखराना बी पिपरीमूळ हरडे बेडां आमळां नसोतर अघेडानां मूळ अतिविष काळोपाठ कळगारी मोथ रससिंदुर टंकण हळदर सिंधालुण जवखार प्रत्येक बबे तोला लइ अघेडानां पाननो रस अरणीनां पाननो रस आदुनो रस बीलीनां पाननो रस प्रत्येकनो अकेक भावना दइ सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ४ थी ८ रति पाणी साथे अपाय· लिवर काळजानी गांठ काळजामां लोहीनो जमाव मुंझारानी गांठ काळजानो पाक वगेरे मटे तथा कमळो पांडु पेटनां दरद कृमि गुल्म मंदाग्नि पटलां दरदमां पण घणो फायदो थाय छे ।

रोहितकादि चूर्ण—रगतरोहिडानी छाल जवखार करीयातुं कडु मोथ नवसार अतिविषनी कळी सुंठ बधां समभागे खांडवां मात्रा पावली भार ठंडा पाणी साथे आपवुं ।

लिवरनो-कलेजानो तीक्ष्णदाह-मुबारकी गांठ-टाढी गांठ-मुंजारानी गांठ—कलेजुं मोटु थाय ताव सखत आवे साथे माथुं कपाळ कळे, जमणी बाजु शूळ नीकळे, कलेजां उपर दाबवाथी दुखे, श्वास लेतां उधरस के छींक खातां वधु दुखे, दरदी डाबी बाजु सुइ शके नहीं, तरस लागे पेसाब थोडो थोडो रतास पडतो उतरे आंख कमळा जेवी पीळी देखाय श्वासनी गती वधे सुकी उधरस हेडकी आवे उलटी थाय पेटना नळ कठण थाय जीभ उपर धोळी छारी वळे जमणो खंभो अने कोइवार डाबो खंभो पण दुखे ।

रोहितक घृत—रगतरोहिडानी छाल शेर १० पाकेलां (सुकेलां) बोर शे ६ बन्नेनो साथे उकाळो करी तेमां बकरीनुं दुध शे. ६, सुंठ पिपर मरी हरडे बेडां आमळां हिग अजमा वावडींग बिडलुंण अजमोद संचळ दाडम देवदार साटोडी इन्द्रामणा जवखार पुष्करमूल चित्रो पळांसवी चवक घज दरेक अकेक तोलो लइ खांडी उपला उकाळामां कल्क करी मेळवो तेमां गायनुं घी शे. ५ नाखी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय एटले गाळी लेवुं. मात्रा २ थी ५ तोला सुधी कोइपण रसायण औषध साथे अथवा एकलुं लिवरनां बधा दरदमां पावुं ।

मिश्रण—यकृत्प्लीहोदरारि लोह तो. ०॥, बृहत्‌कव्याद तो. १, महामृत्युं-जय लोह तो. ०॥, सुवर्णपर्पटी तो. १ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ६४ पडिकी करवी. अकेक पडिकी दंतिहरीतकी अवलेह साथे अथवा हरीतकी अवलेह साथे अथवा भृगुहरीतकी अवलेह साथे चटाडवी जमीने कुमार्यासव के रोहीतकारिष्ट पावो यकृत्मृत्युंजय लोह ३ थी ६ रति गायना घी साथे आपवुं अथवा यकृत्प्लीहोदरारि लोह २ थी ४ रति मधमां चटाडवुं रोहीतकारिष्ट १ थी २ आंस टंके पावो ।

५ लिवर-कलेजानुं शोषण-संकोच—छाती अने पेट उपर ताणीने पटो बांधवाथी दारु पीवाथी विषमज्वर के बीजा ताव लांबो वखत आववाथी रक्ताशयना रोगथी गरमी चांदीना दरदथी वगेरे कारणोथी कलेजुं प्रथम मोटुं थइ पछी संकोचाइ-शोषाय जाय छे. त्यारे ते कठण थाय छे तेनी उपली सपाटी लीसी नहीं रहेता सीताफळ जेवी उंची नीची लागे छे अजीर्ण रहे कोइवार मोढेथी उलटीमां के झाडामां लोही पडे, कमळो मोळ उबको उलटी वायु कबजीयत अशक्ति हरसनो उपद्रव वगेरे जणाय छे अने वखते पगे सोजा चडे छे ।

यकृच्छोथहर लोह—पारद गंधक अभ्रकभस्म ताम्रभस्म सुवर्णमाक्षिक भस्म साबरसींगभस्म शंखभस्म शुक्तिभस्म शिलाजीत प्रत्येक तोला १० दश, लोहभस्म कुंवारमां मारेली तो. २० बधां साथे मेळवी तेने शतावरी रगतरोहिडो कुंवार लींमडाना पान शतावरीरस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ सुकाइजाय एटले तेमां शरपंखो काळीपाट कुष्ठ चित्रो सुंठ नवसार, शुद्ध झेरकोचलुं हिंग नसोतर वावडींग अजमोद हरडे सुरजमुखीमूळ तलवणी वींछीडानां मूळ प्रत्येक तो. २ बे

लइ खांडी कपडे चाळी साथे मेळवी देवुं. मात्रा २ थी ६ रति मध साथे के पाणी साथे आपवाथी लिवरनुं शोषण तथा लिवरनां बीजां बधां दरदो मटे छे. ते सिवाय पेटनां बधां दरद कबजीयत वरल गुल्म वगेरे पण मटे छे ।

आ दरदमां-कुमार्यासव, लोहासव, रोहीतकारिष्ट वगेरे पीवरावाय छे. यकृत्प्लीहोदरारि लोह अथवा महामृत्युंजय लोह अपाय छे ।

६ लिवर-कलेजानुं विद्रधि-पाकवुं—कलेजामां सोजाने लीधे दाहने लीधे के बीजां कारणोने लइ गुमडांनी पेठे परु थावा मांडे छे, आमां टाढ वाइ ताव चडे परसेवो वळे अजीर्ण थाय भुख लागे नहीं चहेरो निस्तेज थइ जाय ताव उतरे तोपण हाडमां झीणो ताव रहे छे नाडी उतावळी चाले छे जीभ पर सफेद छारी वळे छे राते ताव वधे उलटी हेडकी झाडा के मरडा थाय कलेजाना भागमां छातीमां पेटमां वांसामां के जमणा खंभामां दुखे कलेजुं वधे पाकने ठेकाणे लवकारो थाय कलेजामां परु थाय ते केटलीक मुदते बहारना भागमां छातीमां फेफसानी अंदर के पेटमां फुटे छे. बहार फुटे छे त्यारे छाती उपर के जमणे पडखे के वांसा उपर के पांसळीनी वचमां सोजो थइ मोटुं गड थइ तेनी टोच उपर छिद्र पडी परु के लोही निकळे छे छातीमां के फेफसानी अंदर फुटे तो उपरना चिन्हो साथे दम चडे परु पडे उधरस सखत आवे उंघ आवे नहीं पीकदानीओ भराइ जाय तेटलो कफ परु लोही गेरुआ गुगळा रंगनुं पडे आंतरडां अने पित्ताशयमां मोढुं करे छे त्यारे झाडा साथे परु लोही मिश्रित पडे छे, आमाशयमां फुटे छे तो उलटीमां परु पडे छे परंतु जो आमाशयमानुं परु पेटमां फेलाय जाय तो दरदी एकदम मृत्यु पामे छे पेटमां सखत पीडा उपडे छे आखुं पेट भारे लागे छे दरदी बेहोश थइ नाडी क्षीण थइ मरण पामे छे. कलेजानां विद्रधिमांथी ५-१० तोला थी ५-७ रतल सुधी परु निकळे छे कलेजामां परु थया पछी दरदी मजबूत होय अने परु थोडुं होय तो तेनु शोषण थइ जइ आराम थाय छे जो कलेजानुं परु पकाद ठेकाणे मोढुं करी बधुं परु निकळी जाय छे तो आराम थइ जाय छे पण कलेजुं पाक्या पछी परिणाम भयंकर आवे छे आ दरद दारु पीनाराओने वधु थाय छे गरम देशमां दारुनो बहु उपयोग करनाराओमां आ दरद घणे अंशे थाय छे ।

मिश्रण—यकृन्मृत्युंजय लोह अभ्रकभस्म रसपर्पटी अग्निकुमार यकृत्प्लीहोदरारि लोह सुवर्णयुक्त प्रत्येक तोलो १ एक, आरोग्यवर्धनी तो. १॥ बधां साथे मेळवी सरखे भागे ८० पडिकी करवी. सवार सांज अकेक पडिकी पाणी साथे अथवा गायनी छास साथे देवी ।

शिलाजित्वादि योग—शिलाजीत शेकेली हिंग सुवर्णमाक्षीक भस्म सिंधालुण प्रत्येक समभागे खांडी २ थी ३ वालनी मात्रा वायवरणानी छालना उकाळा साथे आपवुं ।

शिग्रुकादि क्वाथ—सरगवानी छाल वज पिपळानी छाल हिंग अने सिंधालुण दरेक समभागे खांडी उकाळो करी पावो ।

१ घोळां फुलनी सादोडीनुं मूळ तोलो १ पाणीमां वाटी हमेशां पावुं ।

२ वायवरणानुं मूळ तोलो १ हमेशां पाणीमां वाटी पावुं ।

३ खेरनी छाल हरडे बेडां आमळां लींमडानी अंतरछाल कडु जेठिमधनां मूळ नसोतर परवळमूळ मसूरनी छडीदाळ बधां समभागे खांडो उकाळो पावो।

४ सरगवानुं मूळ तोलो १ पाणीमां एकदम बारिक वाटी कपडे गाळी लइ तेमां मध तो. १॥ नाखी पावुं ।

५ सरगवानी छाल तोला १० हिंग तो. ०॥ सिंधालुण तो. ०॥ साथे मेळवी तेमांथी २ तोलानो उकाळो करी पावो ।

६ रतांजळी मजिठ हळदर जेठिमधनां मूळ गेरु सममागे लइ खांडी दुधमां वाटी चोपडवुं ।

८ दुखावा उपर दोषघ्न लेप अथवा दशांगलेप चोपडी उपर रु दाबवुं. कुमार्यासव रोहीतकारिष्ट के द्राक्षासव पावो ।

९ केसरादि के कस्तुर्यादि गोळी २ थी शरु करी १८ सुधी वधारी गळाववी।



गोटो-गुल्म-स्त्रीना रक्तगुल्म

कारण—ताव झाडा संग्रहणी वगेरे रोगवाळो के रोगथी मुकायेलो वमन विरेचन लीधेलो माणस वाइडां पदार्थो खाय भुख्यो छतां पाणी पीये जम्या पछी तुरत कसरत करे कुदे पंथ करे दोडे मळमूत्रना वेगने रोके टाढां वासी वाइडां अन्नपाननुं सेवन करे तो वायुनो प्रकोप थइ गुल्मनुं दरद थाय छे. लुखां अन्नपानथी शोकथी वागवाथी मळ क्षीण थवाथी बहु उपवासथी बळवान साथे लडवाथी पण आ दरद थाय छे ।

चिन्ह—गुल्म थवानो होय त्यारे प्रथम घणा ओडकार आवे झाडो कबज थाय तरस लागे आंतरडामां दाह थाय पेटमां गडुडाट थाय पेट चडे मोळ आवे भुख बंध थाय वायुनो गुल्म, बस्ति हृदय नाभी अने बंने पडखांमां होय छे. तेमां माथुं दुखे बरलमा पीडा थाय आंतरडा बोले सोयुं खोसाता होय तेवी पीडा गुल्मने ठेकाणे थाय झाडो कबज थाय शरीर झलाइ जाय मों सुकाय अपान वायु बंध थइ जाय आ गोळो कठण लागतो नथी. पित्तना गुल्ममां बळतरा दाह खाटा ओडकार मूर्छा झाडो नरम परसेवो वळे तरस लागे ताव चडी आवे शरीरमां अगन बळे. कफना गुल्ममां अरुचि सळखम ओडकार गुल्म कठण स्थिर एक जगाए चोटयो होय एम देखाय. रक्त गुल्म स्त्रीओनेज थाय छे ऋतु आवे त्यारे, प्रथम प्रसव वखते, योनिरोगथी, ऋतुना बगाडथी दर मासे आवतुं ऋतु अटकी पेडुमां भेळुं थइ गोळो उत्पन्न करे छे. त्यारे ओडकार शरीर कृश थाय पेडुमां बढाय पीडा जडता दाह झाडा तरस ताव शूळ योनिमांथी दुर्गंधी स्राव वगेरे चिन्हो थाय छे थोडा मास तो गुल्मने गर्भ रह्यो छे एम धारी लेवानी भुल थाय छे पण गर्भ फरके छे गुल्म स्थिर होय छे अने शूळ मारे छे गर्भने हाथ पग अवयवो जाणी शकाय छे गुल्म गोळाकार होय छे गर्भ उतावळो थडके छे त्यारे गुल्म घणी वारे थडके छे ।

पथ्यापथ्य—जे चिन्ह जणातुं होय तेनो उपाय करवो, शेक करवो, झाडो कबज होय तो वायु अनुलोमन थाय तेम करवुं, पेट पेडु चोळाववुं, पेटे हिंग लसण, महानारायण तेल चोळवुं. हिंग घीमां शेकी गळाववी, पेटमां बोजो होय तो वखतो वखत लांघण कराववी. रेच देवो. तुळशीना पान सुंठ मरीनो चा पावो।

गुल्मदावानळ—पारद गंधक अभ्रक लोह ताम्रभस्म टंकण नवसार सुरोखार सिंधालुण सुंठ पिपर वज मरी देवदार पलचि तज हळदर सुवर्णमाक्षिक भस्म चित्रो शिलाजीत हरडे चोपचिनी नसोतर आकडानुं दुध थोरनुं दुध बधां सरखे भागे लइ अरणी चित्रो भांगरो नागरवेलनां पान अने चण्यानो क्षार प्रत्येकनी अकेक भावना दइ सुकावी भुको राखवो. मात्रा २ थी ४ वाल पाणी साथे देवाथी बधी जातना गुल्म मटे ।

प्रवालपंचामृत नं. १—प्रवाळ काचां तोला १०, मोती तो १, मोतीनी छीप कोडी शंख प्रत्येक काचां तो. ५ पाच लइ बधांने झीणां खांडी बधांनी बराबर आकडानुं दुध तेमां नाखी शराव संपुटमां नाखी कपडमाटी करी गजपुटनो अग्नि आपी घुंटी राखवुं. मात्रा ३ रति सवारे ३ रति सांजे पाणी के मध साथे खावी. बधी जातना गुल्म मटे छे तथा उदावर्त वायु मळबंध बरल उधरस श्वास मंदाग्नि कफ वायुनां दरदो अजीर्ण झाडा मरडा मूत्रना दरद प्रमेह पथरी मूत्रकृच्छ पटला दरदने पण मटाडे छे. आमां मोतीने बदले अभ्रकभस्म क्षारहत सफेद तो. ५ नाखवाथी नं. २ नुं प्रवाळ पंचामृत बने छे ।

गहननाथ रस—पारद गंधक अभ्रकभस्म ताम्रभस्म बंगभस्म टंकण फुलावेलो मीठुं वछनाग हरडे जवखार सिंधालुण सुंठ पिपर मरी प्रत्येक तोला ४ चार लींबुनो रस कुंवारनो गरभ अने आदुना रसनी अकेक भावना दइ चण्या जेवडी गोळी वाळो छाये सुकाववी. मात्रा ३ थी ६ गोळी नवशेका पाणी साथे आपवाथी बधी जातना गुल्म स्त्रीनो लोहीनो रक्त गुल्म लोहीनो गांठ तथा पेटनां बधां दरद मटे छे ।

गुल्म कुठार रस—अभ्रकभस्म बंगभस्म अभ्रकभस्म कांतलोहभस्म ताम्रभस्म बधां सरखे भागे लइ लींबुना रसमां गोळी चणोठी भारनी वाळवी. मात्रा २ थी ४ गोळी मध अने आदुना रस साथे आपवाथी बधा गुल्म तथा बधां पेटनां दरद मटे छे ।

कांकायनी गुटिका—अजमा जीरुं शेकेला धाणा मरी गरणीनां बी बोडीअजमोद कलोंजीजीरुं प्रत्येक शेर ४, हिंग शे. ६, जवखार साजीखार मीठुं सिंधालुण वडागरुं बीडलुण संचळ नसोतर प्रत्येक शेर ८ दंतीमूळ कचुरो पुष्करमूळ वावडींग दाडम हरडे चित्रो अमलवेत सुंठ प्रत्येक शे. १६ सोळ, शुद्ध झेरकोचलां शे. ०॥ लइ बधाने साथे खांडी बीजोराना रसमां गोळी २ वाल वजननी करवी मात्रा ३ थी ६ गोळी घी दुध आसव छास के उना पाणी साथे आपवाथी बधा गुल्मरोग मटे वायुना गुल्ममां मध के आसव साथे पित्तना गुल्ममां गायना दुध साथे कफना गुल्ममां गौमूत्र साथे त्रिदोषना गुल्ममां दशमूळना क्वाथ साथे

स्त्रीना रक्तगुल्ममां उंदरणी (सांढणो) ना दुध साथे आ गोळी तथा गुल्म उपर वपरातां बीजा बधा रसो अपाय छे।

गुल्मकाळानल रस—पारद गंधक हरतालशुद्ध ताम्रभस्म टंकण जवखार प्रत्येक बबे तोला मोथ पिपर मरी सुंठ गजपिपर हरडे वज कुष्ठ प्रत्येक अकेक तोलो लइ साथे खांडी चूर्ण करी पीतपापडो मोथ सुंठ अघेडो अने काळीपाठ प्रत्येकनी अकेक भावना दइ सुकावी भुको करवो. मात्रा ३ थी ६ रति मध के नवशेका पाणीमां आपवाथी बधा गुल्म मटे।

हरडेनुं चाटण—चित्रो अरणीमूळ आमळां मोरींगणीनुं पंचांग अने अघेडानुं पंचांग प्रत्येक १ शेर लइ कचरी तेमां बधाथी इसगणुं पाणी नाखी उकाळी चतुर्थांश रहे एटले ते पाणीमां नीचेना ओसडोयानो भुको नाखी पकाववुं सुंठ पिपर मरी जवखार शतावरी शुरोखार टंकण सिंधालुण मीठुं अजमा आसोंध पिपरीमूळ त्रायमाण कडु मोथ धमासो प्रत्येक तोला ४ चार तथा हरडेनो भुको तो. ८० नाखी पकाववुं थोडु घाटुं थवा आवे एटले तेमां गोळ शेर १५ नाखी पकाववुं चाटवा जेवुं थाय एटले उतारवुं. मात्रा १ थी २ तोला कोइपण औषध साथे चाटवुं बधा गुल्म पेटनां दरद उदावर्त वायु कबजीयात पांडु कमळो मटे।

लींबुनो क्षार—लींबुनो रस शेर २ मोटा काचना बाटलामां भरवो पछी तेमां नवसार सुरोखार टंकण फटकडी साजीखार अने जवखार दरेक शेर ०। खांडी नाखी बुच मजबुत दइ सील करी एक महिनो रहेवा देवुं पछी तेमांथी साकरनी भुकीमां ५ थी १० टीपां नाखी पीवराववुं अथवा २॥ तोला पाणीमां ५-१० टीपां नाखी पावुं बधी जातना गुल्म स्त्रीना रक्त गुल्म मटे।

सर्व गुल्महरी गोळी—संचळ कचुरो शंखावळी देवदार नसोतर इंद्रामणां मूळ अरणीमूळ नेपाळो कडु गळो कंपीलो कुष्ठ पिपर लवण उपलेट हळदर मरी चित्रो गरमाळानो गर दारुडीमूळ हरडेदळ बेडांदळ आमळां बधां सरखे भागे लइ खांडी भुंगळीया थोरना दुधनो करमो दइ छाये सुकावी बधाथी बमणो गोळ नाखी वबे वालनी गोळीयो करवी सवार सांज बबे गोळी पाणी साथे आपवी वायुना पित्तना गुल्म मटे खोराकमां मग चोखा खीचडी बाजरो ए आपवुं. आ गोळो चालती होय त्यां सुधी दरदीने दिवसे सुवा देवो नहीं।

चित्रकादि क्वाथ—चित्रो पिपरीमूळ एरंडानां मूळ सुंठ बधां सम-भागे मेळवी कचरी तेमांथी २ तो. भुकाने ३० तो. पाणीमां उकाळी १० तो. रहे एटले गाळी २ तोला मध तेमां मेळवी पीवाथी बधा गुल्म मटे।

रक्तगुल्महर क्वाथ—शतावरी करंजनी छाल देवदार पिपर बधां सरखे भागे खांडवां ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण तलना उकाळा साथे पावुं।

अशेळियाना बी शेर १ खांडी खांड शे. १ मेळवी २ थी ४ तोला गायना दुध साथे देवुं. वायुनो गोळो पेटमां भार रह्यो होय ते मटे।

सुंठ संचळ साजीखार मीठुं हिंग हरडे जीरुं अजमो लविंग जवखार वधां सरखे भागे लइ खांडी लींबुनो पट देवो. गोळा उपर तो. ०। थी ०॥ नवशेका पाणी साथे देवुं ।

चुनो गाइ साजीखार समभागे गोळमां गोळी ०। तोलानी करवी वायुना गोळामां आपवाथी आराम थाय ।

जवखार साजी मोरपींछनी राख सरखां लइ गोळमां गोळी चणियांबोर जेवडी करवी. ४ थी ८ गोळी पाणी साथे देवी. गोळो पेटपीड सर्वे मटे ।

घउंनो लोट शेर १ आकडाना दुधमां मसळी रोटलो करी उपर कपडमाटी करी चुलो खोदीने तेमां डाटवुं उपर अग्नि बाळता रहेवुं ७ दिवस राखी पछी काढीने छायामां सुकववुं मार्टी काढी खांडवु. सवारे बेआनीभारथी शरु करी अर्धा तोला सुधी वधारवुं पाणीथी देवुं. पेटनां दरदमां घणा गुण करे वायुगोळो वायुगांठ जाय ।



मुंढमार

पछडाट आघात कचर धको चोट लोहीजमाव अभिघात

महालाक्षादि गुगळ—पारद गंधक हाडसांकळ भीलामां लाख आम्बा घरो मडसडो आसंध बळदाणा शतावरी सुंठ पिपर मरी तज लविंग संधेसडो समभागे लइ खांडी बधाथी चोथा भागनो गुगळ अने बधाथी आठमां भागनुं भेसगुं घी नाखी कचरी वाळ वाळनी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी २० गोळी घीमां चटाडी उपर दुध पावुं. चोळवामां महानारायण तेल वापरवुं जे जे चिन्ह देखाय तेने अनुसरी उपचार करवा. गोळी अकेक वधारी २० करवी ।

महानारायण तेल तो. १ पाणीमां मेळवी पाइ देवुं. दिवसमां ३ ४ वखत पछडाट के मारना प्रमाणमां पावुं ।

चंपाण लेप १—परडिनां मींज वढवाणियो देशी साबु प्रत्येक तो. १८ अढार, रिंघालुण अने हळदर दरेक तो. १५ पंदर, घोडानी लाद तो. ४० साजीखार तो. ६० बधां साथे मेळवी रोटला जेवुं करी शेकी लोहीना जमावपर के मुंढमारने लइ लोही जामी गयुं होय ते पर बांधवुं जुदे जुदे ठेकाणे मार के पछडाट लागेल होय तो अर्धो इंच जाडो लेप करी उपर शेक करवो ।

चंपाण लेप २—हळदर फटकडी टंकणखार पंचलवण साजीखार नवसार समुद्रफळ दरेक सरखे भागे लइ डांडलीया थोरना रसनो तडके भावना आपी घुंटी राखवुं. जे ठेकाणे चोट के मार वाग्यो होय, घणी मुदत थयां लोही जामी गयुं होय, पीडा थती होय त्यारे प्रथम अडाया छाणांनी भुकीने पाणीमां घुंटी प्रथम चोपडी पछी उपलो लेप चोपडी उपर परडानुं पान मुकी पाटो बांधवो. आ लेपथी २० वर्षनुं जुनुं मुंढमार के पछडाटनुं दरद मटे छे ।

मुमीआइ—पीळी राळ साफ करेली तो. ८० तथा भीलामानां फळ तो. २० लइ टोपी काढी तेने खांडवां पछी तेमां लींडीपिपर तो. १ अकलकरो तो. १

हिंगळो तो. २ दरेक बारिक करी कपडे चाळी उपलामां नाखी फरी खुब बारिक थतां सुधी खांडवुं पछी तेमां तेल तो. १० दशनो करमो दइ माटीनां काळां नवां ठाममां (पाटीया जेवा पहोळा मोंना ठाममां) नाखी ढांकणी ढांकी चुले चडावी आकरा तापमां पकाववुं बधानो रस थाय त्यारे लाकडीवती हलाववुं पाछुं ढांकवुं उफाणो आवे पटले नीचे उतारी हलावी फरी चुले चडाववुं एम ३ वखत उफाणो आवे त्यारे पाकी गयुं जाणवुं पछी नीचे उतारी ढांकी राखवुं १ रात जावा दइ सवारे पाटीयो फोडीने पोपडी जेवी दवा काढी शीशीमां भरवी. प मुमीआइ तो. ०॥ जावंत्री वाल १ लोबान वाल १ साथे घुंटी सवार सांज बचे वाल घीमां चटाडवाथी ममे तेवी पछडाट के मुंढमारने लइ थयेल लोहीनो जमाव वगेरे मटे. झाडा उलटी वायु नबळाइ वगेरेमां उत्तम छे. आ दवा बनावतां हाथे भीलामुं उडे अने ततडे तो टोपरु खावुं अने टोपरुं के टोपरांनु तेल चोपडवुं आ दवा पकावती वखते हाथे घी चोपडवुं. आ दवा ममाइ मुंबइ मुमाइ मुमीआइ वगेरे नामथी ओळखाय छे ।



हाडकुं भांगवुं

कारण-चिन्ह---पडी जवाथी वागवाथी हाथ पग मरडावाथी अथवा कोइ प्रकारनी चोट के झपटथी हाडकुं भांगी जाय छे के खडी जाय छे ज्यां हाडकुं भाग्युं होय त्यां दुखावो सखत थाय छे भांगेलो के खडी गयेलो सांधो बेडोळ होय छे हाडकुं घणे भागे वचला भागमांथी भांगे छे अने अंदर कटकट शब्द थाय छे भांगेल छे के खडेल तेनी बराबर तपास करी पछीथी तेने घटित रीते बेसाडी पाटो पींडी करवो ।

पथ्यापथ्य—प्रारंभमां ठंडा उपचार करवा सोजो होय तो सोजाने लगता उपचार करवा ठंडा लेप चोपडवा ठंडा उकाळाथी धोवुं तथा ठंडा ग्राही उकाळा पावा मीठुं लवण तीखां खारवाळां खारां स्त्रीसंग कसरत रुक्ष लुखां घी दुध विनानां चेवडा भजीयां बजारनी मीठाइ वगेरे नुकशानकारक छे ।

सामान्य उपचार—प्रथम ठंडु पाणी रेडवुं गारो चोपडी उपर दरभ वांधी पाटो बांधवो हाडकुं नीचे उतरी गयुं होय तो उंचुं चडाववुं उंचुं चडी गयुं होय तो दबावी बेसारवुं नीचे तणाइ गयुं होय तो उंचे दबावी बेसारवुं उंचुं धकेलायुं होय तो ताणी सरखुं करवुं पाटो बहु ताणीने तेम बहु ढीलो न बांधवो शीयाळामां पाटो सात सात दिवसे उखेडवो अने उनाळामां त्रीजे त्रीजे दिवसे उखेडवो १ महिनो वित्या पछी पांचमे पांचमे दिवसे पाटो उखेडवो महुडा उंबरो सरल आसोंधरो पिपळो कदंब नेतर पमांनी कोइनी छाल के खपाट साथे बांधवो. जेथी जलदी सांधो के हाडकुं मळी जाय अने सांधो आघो पाछो थवा पामे नहीं ।

१ **लेप**—मजीठ महुडानां फुल सरसडानी छाल चोखानो लोट पाणीमां वाटी सो वार धोयेला घी साथे मेळवी चोपडी पाटो बांधवो ।

२ लेप—आंबाना मूळ आबलीना कातरा सरगवाना पान साटोडीना मूळ समभागे छासमां नाखी चोपडवुं ।

३ क्वाथ—लाख वडनी छाल आसोंदरो अगथीओ बावळनुं मूळ समभागे २ तोलानो उकाळो करी मध अने घी नाखी पावो ।

आभा गुगळ—बावळना पान बावळनी छाल बावळना मूळ बावळना पईडिया बावळनो गुंद लाख आसोंध खराटना बी सुंठ पिपर मरी हरडे बेडां आमळां हाडसांकळ अगथीयानी छाल आसोंधरानी छाल उंबरानी छाल समभागे लइ बधानी बराबर गुगळ मेळवी बधांथी $\frac{1}{16}$ भागनुं घी नाखी वाल जेवडी गोळी वाळवी ४ थी १२ गोळी घीमां चटाडवी ।

भग्नारोग्य तैल—आभा गुगळना वसाणाने कचरी ४ गणा पाणीमां उकाळो करी अर्धो रहे पछी गाळी उकाळा बराबर तलनुं तेल नाखी पकाववुं आ तेलमां कपडुं भींजावी बांधवाथी भांगेलुं के खडेलुं हाडकुं संधाय थोडा रोजमां आराम थइ जाय ।

मुमीआइ—(आ पुस्तकने २३० पाने मुंढमारना प्रकरणमां कहेल छे) ते बबे वाल दुध साथे आपवी ।

१ भग्नस्थान लेप—हीराबोळने वाटी इंडानी सफेदीमां मेळवी गरम करी मलम जेवुं थाय पछी लगाडी पाटा बांधवाथी आराम थाय ।

२ भग्नस्थानकर लेप—गुगळ शेर ०। हिराबोळ टां. २ शिंकोतरो पळियो समामस्तकी चुनो प्रत्येक टां. १ कुटी कुंवारना रसनी भावना दइ राखी मुकवुं जरुर पडे त्यारे पाणीमां वाटी चोपडी पाटो बांधवो ।

घा—मालेंध नामनी वनस्पति सावंतवाडी कोकण तरफ थाय छे तेने संधिनी कहे छे तेनुं पांदडुं कापी जोडवाथी चोंटी जाय छे क्यांथी तुटयुं तेनी खबर पडती नथी. तेने चोळी घा उपर चोडवाथी तुरत रुझ आवे छे ।



मरडाइ जवुं

कारण-चिन्ह—खाडाखबडामां पग पडी जवाथी शरीरना कोइ सांधाने आंचको लागवाथी शरीरनो कोइ भाग एकदम खेंचावाथी भींसावाथी के तेना उपर जोस आववाथी चालतां पग लपसी जवाथी सांधो मरडाइ जाय छे ते मरड खंभो कांडां गोठण पेनी के कमरमां थाय छे ।

उपचार—दशांग लेप पाणीमां वाटी गरम करी चोपडी शेक करवो. महानारायण तेल, महासैंधवादि तेल के महाराज प्रसारणी तेल चोळवुं. सिंहनाद गुगळ ३ थी ६ गोळी, आभागुगळ ३ थी ६ गोळी के सर्वेश्वर पर्पटी २ थी ३ रति गायना घी साथे चटाडो उपर गायनुं दुध पावुं. मरड सखत थयो होय अने ते साथे ताव वगेरे चिन्ह जणातां होय तो लक्षणने अनुसरता उपचार करवा ।

पाणी लागवुं—दुर्जलजन्य रोगाः

कारण—परदेशमां आहार विहारनो नियम न राखवाथी ब्रह्मचर्य न पाळवाथी ते स्थळे उत्पन्न थती वस्तुओना अति उपयोग करवाथी गीर जेवी झाडीवाळा मूळझाडना प्रदेशनां पाणी पीवाथी मुंबइ जेवा गीच वस्तीनां शहेरमां रहेवाथी पाणी लागे छे ।

चिन्ह—त्यारे शरीर फीकुं पडवा मांडे छे हालतां चालतां थोडुं कामकाज करतां हांफ चडे छे खोराक पचतो नथी झाडा अनियमित थाय छे कोइने सखत कबजीयात रहे छे कोइने पातळा झाडा पकथी वधु थया करे छे माथुं फरे छे शक्ति क्षीण थाय छे वीर्य पातळुं थइ कोइवार स्वप्नमां के पेसाबमां स्त्रवे छे. स्वभाव चोडीयो थाय छे कोइ चीज वस्तु के मनुष्य उपर प्रेम रहेतो नथी पेटमा बगाड जामे छे पेट मोटुं थाय छे गरदन पातळी थाय छे नाडीयो जाडी थाय छे आमांथी क्षय के संग्रहणी थइ जाय छे ।

पथ्यापथ्य—भूख लागे तेटलुं खावुं चीकणा भारे पदार्थ खांडनी मीठायुं शाक फळादि ओछा खावा तळेला पदार्थ चेवडा भजीयां काचाकोरां तळीयां खाटां मगफळीनुं तेल मांस लाल मरचां भेंसनी छास तरवुच वगेरे छोडवां हळवो सादो भुख प्रमाणे खोराक लेवो ब्रह्मचर्य पाळवुं ।

दुर्जल लजेना रस—पारद गंधक वछनाग दरेक बबे तोला कोडीभस्म मरी सुंठ पिपर हरडे वावडींग मोथ चित्रो गळो दरेक तोला ४ चार, कडु ते. ८, आदुना रसमां गोळी चणोठी जेवडी करवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी पाणी साथे आपवी।

अपूर्वमालिनी वसंत—वैक्रांतभस्म अभ्रकभस्म ताम्रभस्म सुवर्णमाक्षिकभस्म रौप्यभस्म वंगभस्म प्रवालभस्म लोहभस्म जसतभस्म शंखभस्म मोतीपिष्टी रससिंदुर प्रत्येक तोला ४ चार लइ दुधीयोहेमकंद घोळीमुशळी शतावरी गोखरु बहुफळी प्रत्येकना उकाळानी अकेक भावना देवी अने लींबुरसनी ३ भावना देवी पछी कस्तुरी अने भीमसेनी प्रत्येक अकेक तोलो नाखी घुंटी भुको राखवी. मात्रा २ थी ३ रति मध साथे चटाडवुं पाणी लागेला माणसने दरदनां जे जे लक्षणो जणातां होय तेने अनुसरतां उपाय करवां आनुं सेवन करवाथी पाणी लागे नही।

अपराजिता गुटी—पारद गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म मंडुरभस्म ताम्रभस्म शंखभस्म शुक्तिभस्म प्रत्येक तोला १० दश, सुंठ पिपर मरी गुगळ हरडे बेडां आमळां टंकण चित्रो गळो करियातुं प्रत्येक तोला ८ आठ, कडु तोला ४० साथे भांगराना रसनी २ अने लींमडाना रसनी ३ भावना दइ वाल वालनी गोळी करवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी पाणी साथे हमेशां खावाथी परदेशमां गमे त्यां रहेनारा माणसने त्यांनुं पाणी लागतुं नथी अने लाग्युं होय तो आराम थाय छे।

दुर्जळहर क्वाथ—मोथ गळो अरडुसीना पान सुंठ धाणा करियातुं कडु वापुंभा परवळ काकडाशींगी हरडे बधां सरखे भागे खांडवां १ तोला भुकानो काढो करी हमेशां पावो ।

१ सावरसींग भस्म ३ रति महापंचनिंब के महासुदर्शन तोलो ०। साथे मेळवी पाणी साथे आपवुं ।

२ अभ्रकभस्म १०० पुटी रति २ पिपर रति ३ मधमां चटाडवुं रात्रे आरोग्यवर्धनी गोळी ४ पाणी साथे देवी ।

३ सुवर्णवसंत मालती तोलो ०। लोहभस्म १०० पुटी तोलो ०॥ रसपर्पटी तोलो १ पिपर भुको तोलो ०। साथे मेळवी ४८ पडीकां करवा सवार सांज अकेक पडीकुं मध साथे अथवा भारंगी गुड साथे आपवुं ।

४ पेट मोटुं थयुं होय तो कागडोळियानां मींज पाणीमां वाटी ५ थी मांडी ३० सुधी चडतां पावां. खुब जुलाब थाय त्यारे उतरतां देवां उपर घोळी द्राक्ष पलाळी खवरावची ।

५ गळोनो स्वरस तोला ५ मां साकर तोलो १ नाखी पावुं पेटपर बकरीनी लींडीनो सेक करवो ।

बद्गाठ

ब्रध्न बद बांबलाइ हैयाहोडी

कारण-चिन्ह—बद घणे भागे चांदी-गरमीना दरदने अंगे अथवा उपदंश संबंधी विष शरीरमां होवाथी थाय छे. एक अथवा बेय बाजुये साथळना मूळमां थाय छे. नरम चांदी साथे थयेली बद घणे भागे पाके छे तेमां पीडा बहु थाय छे. आ बद साथे ताव वगेरे पण जणाय छे. साथळना मूळमां बद्गांठ थाय ने ओळींमो घाल्यो एम कहेवाय छे. ते घणे भागे कमर नीचेना कोइ भागने इजा पहोंचवाथी थाय छे अने इजा पामेलुं अवयव जेमजेम पीडाथी मुकातुं जाय छे तेम बद-ओळींमो ओछो थाय छे आवो ओळींमो घणे भागे पाकतो नथी अति विषयथी इन्द्रि उपर जखम के सोजो थवाथी इन्द्रिमां तीक्ष्ण पिचकारी मारवाथी, स्त्रीने गुह्येंद्रीयमां सोजो थवाथी, संधीवाथी एम अनेक कारणे बद के साथळमां गांठ थाय छे. मूळ दरदना उपचार साथे ओळींभा उपर पण लेप वगेरे उपचार करवा. हाथ के बावडामां कांइ दरद थतुं होय तो काखमां गांठ थाय छे ते बांबलाइ पण कहेवाय छे. उपदंशने लीधे पण घणी वखत काखमां बद थाय छे बांबलाइ-काखनी गांठना उपचार पण बद्गांठ प्रमाणेज करवा ।

बद्गांठना के बीजां कारणोथी छातीनी बाजुमां पित्तवात प्रधान गांठ थाय छे तेने लोकभाषामां हैयाहोडी कहे छे ते पण बद्गांठ प्रमाणेना उपचारथी मटे ।

ज्यां बद बांबलाइ के हैयाहोडी थवानी होय त्यां कठण सोजो थइ दाबवाथी के पनी मेळे दुखे छे. धीमे धीमे मोटी थइ लालचोळ थइ अथवा चामडीना स्वाभाविक रंगमांज रही पीडा करे छे. दरदी नबळो होय तो सोजो अने पीडा वधे छे. गांठ पाक उपर आवे त्यारे टाढ वाइ ताव चडे छे. दाबतां परु जणाय छे, पाक्या पछी चचमांथी फुटवानुं करे छे केटलीक वार एकथी वधु गांठो देखाय छे, पाके छे अने फुटे छे ।

पथ्यापथ्य—जोर न कर्युं होय त्यांसुधी लेप शेक वगेरेथी बेसारी देवानोज उपाय लेवो. बेसे नहीं त्यारे औषधथी पकावीने के पाकी गया पछी शस्त्रथी छेको देवो. गरम पाणीनो के धावळीना गोटानो के सादा कपडाना गोटानो शेक करवो दरदीये हरफर कर्या विना आराम लेवो. शरुआतमां जुलाब लेवो पछी हमेशां एक बे दस्त अने पेशाब साफ आवे तेम करवुं. चांदीनी बद होय तो पारावाळी दवा साथे बीजा उपचार करवा ।

ब्रध्ननाशन रस—पारद तोला १० गंधक तो. १५ कांचनारनो छाल तो. १०, गरणीना मूळ कायफळ गळो लींमडानी छाल हरडे पारसपिपळानो छाल लींडीपिपर कडु वावडींग चोपचिनी प्रत्येक तोला ४ चार, गुगळ तो. २० शिलाजीत तो. १० मंडूर तो. १० साथे मेळवी मध अने घी जोइए तेटलां लइ तेमां गोळी २ रतिभारनी वाळवी. मात्रा २ थी १२ गोळी पाणी साथे आपवी. बधी जातनी बदगांठ मटे छे ।

ब्रध्नग्रन्थीहर मलम—पारद गंधक सिंदोर रेवंचीनो शिरो आसोंध सरगवानां बी सरसव दरेक तोला १० दश. राळ तो. ५ मीण तो. १० लींबोळीनुं अथवा करंजीयुं तेल अने ते न मळे तो तलनुं तेल तो. ४० बधांने विधिवत मलम करवो. आ मलम गमे ते जातनी गांठ उपर चोपडवाथी बेसी जाय छे अथवा पाकी फुटी जाय छे ।

ग्रन्थिहर लेप १—सरसव सरसडाना मूळनी छाल सरगवानी छाल अळसी शंखभस्म सरखे भागे मेळवी वाटी लेपरी मुकवी ।

ग्रन्थिहर लेप २—आंबाहळदर शंखभस्म हळदर सरसव सरगवानां बी तुळशी समभागे खांडी पाणीमां वाटी चोपडवुं. दोपघ्न लेप चोपडाय छे ।

जो बदगांठ पाकशे एम जणाय तो वखतो वखत पोटीस मुकी सारी रीते पाकी जाय पटले हथियार वडे फोडवी. फुटया पछी जात्यादिघृत के बीजा रुझावनाना मलम चोपडवा ।

१ कुकडानी चरकने मधमां वाटी चोपडवी ।

२ हुंगळीनी गांठने कचरी गरम करी बांधवी ।

३ अडायां छाणानी राखने पाणीमां कालवी चोपडी उपर शेक करवो ।

४ अशेळियानां पान वाटी गरम करी चोपडवां ।

५ लींमडाना पान वाटी गरम करी बांधवां ।

६ कळीचुनो कमावेलो अने साजीखार पाणीमां वाटी लगाडवाथी बेसी जाय अथवा पाके ।

७ खासडियां केळांने चीरी तेनापर हरतालने घसी चोपडी बांधवाथी मटे ।

चरबी वधवी

मेदवृद्धिः मेदोरोगः

आस्यासुखदिननिद्राऽव्यायामात्यंतकफकरपदार्थैः ॥
अतिमधुरस्निग्धान्नाऽऽहारविहारैर्विवर्धते मेदः ॥१॥ र. तं. ॥

कारण—श्रम शारीरिक महेनत के कसरत नहीं करनारने, दिवसे सुवानी चिकणा पदार्थो के खोराक खावानी टेववाळाने गळपण उपर बहु प्रीती राखनारने घीवाळी चिजो बहु खानारने चरबी वधे छे. चरबीथी मार्ग-स्रोत रोकाइ जवाथी लोही मांस वगेरे धातुओनुं पोषण थतुं नथी त्यारे चरबी वधे छे अने माणस कोइपण काम करवाने लायक रहेतो नथी ।

चिन्ह—चरबी शरीरना घणा भागमां अने खास करी चामडीनी नीचे होय छे अने चरबीनो जमाव पण पेटमां वधु थाय छे. चरबीवाळा माणसने हरतां फरतां कामकाज करतां श्वास-हांफ चडे तरश लागे छातीमां गभराट थाय उंघ आवे कणछे भुख लागे परसेवो गंधाय बळ क्षीण हीमत विनानो स्त्रीसंगनी शक्ति विनानो माणस थइ जाय. चरबीवडे वायुने शरीरमां फरवाना मार्ग रोकाइ जवाथी, वायु घणेभागे कोठामांज रहेतो होवाथी जठराग्निने वधारी खाधेला खोराकने सुकावी नाखे छे तेथी थोडी वारमां खोराकनी दरदीने इच्छा थाय छे जेवी रीते बाह्य पवन अने अग्नि वनने बाळी भस्म करे छे तेम शारीराग्नि अने वायु घणा उपद्रव करी शरीरनो नाश करे छे. चरबी अने मांस बहु वधवाथी पेट कुला स्तन वगेरे अवयवो घणा जाडा थइ बेडोळ बनी जाय छे व स्थूल माणसने कुष्ठ रतवा भगंदर ताव झाडा प्रमेह हरस हाथीपग कमळो वगेरे दरदो थाय छे अने परसेवो गंधावाथी जीणां जंतुओ पण थाय छे ।

पथ्यापथ्य—जुना चोखा मग कळथी कोदरा कांग बंटी धूम्रपान फस खोलावबी जव घउं उपवास कठण शय्या महेनत चिंता विषय पंथ मध उजागरो रींगणां मेथीनी भाजी तांदळजो सामो जीरुं सुंठ पिपर मरी तेल मरचां हिंग छास सुवादाणा सुवानी भाजी वगेरे हितकारक छे. थेगीनो के जवनो साथवो खावो, त्रिफळानो उकाळो मधमां नाखी पीवो परडाना पानने बाळी तेनी राख अने हिंग वाल वाल चोखाना ओसामण साथे पीवुं. शिलाजीत चार वाल सवार सांज खावो परडाना मूळने मधमां चोपडी रात आखी राखी सवारे पाणीमां वाटी पीवुं. धतुराना पान वाटी शरीरे मर्दन करवुं ।

अभ्रसिंदूर रस—अभ्रकभस्म तो. १६, ताम्रभस्म आमलसारो गंधक रसकपूर लोहभस्म प्रत्येक तो. ४ चार, आकडाना पाननो रस थोरना पाननो रस मुशळीनो उकाळो प्रत्येकनो ३ त्रण भावना दइ वालुकायंत्रमां ८ पोर पकाववुं. वधेली चरबी लोहीबगाड उदररोग जळोदर नबळाइ वगेरे मटे. मात्रा सवार सांज बबे रति मधमां देवी ।

लोहरसायन—गुगळ मुशळी हरडे बेडां आमळां खेरसार अरडुसी नगोड नसोतर सुंठ चित्रो प्रत्येक तोला ४० चाळीस लइ १२८० तोला पाणीमां उकाळो

करवो चतुर्थांश रहे पटले गाळी लइ ते उकाळामां ४८ तोला लोहभस्म, जुनुं घी ६४ तोला, साकर तो. ३२ बधां साथे नाखी कलई करेल त्रांबाना वासणमां पकाववुं. घाटुं थवा आवे पटले नीचे उतारी ठारी मध तो. ३२ शिलाजीत तो. ८ पलचि तो. २ तज तो. २ वावडींग तो. १२ मरी पीपो प्रत्येक तो. ८ आठ त्रिफळा तो. ९ हिराकसीनी भस्म तो. ८ बधानो भुको करी राखेलो होय ते साथे मेळवी बारिक घुंटी कपडे चाळी राखवुं. मात्रा २ थी ८ रति दुध साथे अथवा पंचमूळना उकाळा साथे अथवा मधना पाणी साथे आपवी. वधेली चरबी कमळो पांडुरोग सोजो भगंदर मूर्च्छा उन्माद विषविकार वगेरेने मटाडे छे तथा पौष्टिक आयुष्यवर्धक तथा बलीपलित नाशक छे. आनुं सेवन करनारे केळनोकंद सुरको करमदां केरडां कारेलां प न खावां।

मेदःशोषी रस—पारद तोला ८, गंधक तोला ८, लोहभस्म ताम्रभस्म अभ्रकभस्म रससिंदुर प्रत्येक तोला ४ चार, शिलाजीत तो. १२ गुगळ तो. १६ कडु तोला २० चित्रो गळो वावडींग मोथ नगोड नसोतर कुष्ठ गरमाळो मीठुं सिंधालुण प्रत्येक तोला ३ त्रण साथे मेळवी नगोडना रसमां गोळी ३ रतिभारनी वाळवी. मात्रा २ थी ४ गोळी मधना पाणी साथे आपवाथी चरबीनां तथा तेने अंगे थयेला पेटनां आंतरडाना दरद बरल लिवरनां दरदो हरस मळबंध कबजीयत मूत्राघात मूत्रकृच्छ वगेरे रोग मटे छे।

स्थौल्यापकर्षण तेल—नसोतर गळो सरसडानी छाल सरगवानी छाल लोदर सुखड अरडुसी हरडे लींबडाना पांन दाडमनी छाल कुष्ठ त्रिफो बेडां आमळां गरमाळो तुळसी सिंधालुण हळदर आंबाहळदर बीलीनो गरभ प्रत्येक तो. ४ चार, धतुराना पाननो रस तो. ३० बधांने धतुराना रसमां वाटी लुगदी करी तेमां ४ गणुं पाणी मेळवी तथा २०० तो. तलनुं तेल मेळवी धीमे तापे पकाववुं नीचे कदडो जामी जशे पाणीनो भाग बळी जाय पटले नीतारी लेवुं हमेशां मालीस करवुं ०॥ थी १ तो. तेल दुध साथे पीवुं पीचकारी (एनीमा) लेवी नाकमां के कानमां टीपां नाखवां वधेली चरबी शरीरनी खजवाळ परसेवो गंधावो वगेरे दरद मटे।

लोहभस्म ३ थी ६ रति मधमां चटाडवुं. मेद ओछुं थाय।

पाणी शेर २ उकाळवुं पाशेर रहे पटले उतारी ठारी तेमां मध तो. २॥ नाखी सवारमां पावुं. मेदवृद्धि टळे।



शीळस

शीतपित्तं उदर्दः

शीतपित्तहर उद्वर्तन—हळदर आंखफुटामणां इन्द्रामणां लींबोळीनां मींज परडीनां मींज मोरींगणीनां डोडवां आंबाहळदर अडद कपुरकाचली आमळां सिंधालुण चण्यानी दाळ सरसव बधां समभागे खांडो राखवां दिवसमां त्रे वखत ३ थी ४ तोला भुकाने पाणीमां वाटी शरीरे मर्दन करवुं. पछी गरम पाणीथी न्हावुं ३ दिवसमां शीळस मटे।

शीतपित्तशमनी वटी—पारद गंधक प्रत्येक तोला १० दश, वछनाग तो. ५, इन्द्रामणाना मूळ इन्द्रामणानां डोडवां तथा पान मरी पिपर गुगळ सुंठ प्रत्येक तो. १० दश, फुलावेलो टंकण तो ८, जेठिमध महुडाना फुल गळो हळदर धमासो शरपंखो सुखड अजमा लसण अरणीनुं मूळ प्रत्येक तो. ५ पांच नाखी मेळवी नगोडना रसनी भांगराना रसनी अने हरडेनी बबे भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी पाणी साथे आपवी ।

शीतपित्तादि क्वाथ—गळो धमासो इन्द्रामणानां डोडवां लींमडानां पान अजमा अजमोद मरी पिपर अरणिनुं मूळ वधां समभागे लइ तेमांनुं १ थी २ तोला भुकाने उकाळी पावुं. शीळस उपर महारास्नादि क्वाथ अथवा महामंजिष्ठादि क्वाथ पीवाथी पण आराम थइ जाय छे ।

१ कायफळने घसीने के बारिक वाटीने पाणीमां घोळी नवशेकुं करी शरीरे लगाडवुं ।

२ कुवाना पंचांगनी धूणी देवी ।

३ जीरुं हळदर वज समभागे खांडी ०॥ थी १ तोलो भुकामां २ तोला खांड मेळवी गरम घीमां कालवी खवरावुं ।

४ आदुना रसमां जुनो गोळ मेळवी पीवरावो ।

५ सरसव हळदर कुवाडीयानां बी तल समभागे खांडी तेमां सरसियुं तेल मेळवी शरीरे खुब चोळावयुं ।

६ इच्छाभेदी गोळी आपी सखत जुलाब आपवो ।



रतवा—वीसर्पः

कारण—खाटां खारां अने उष्ण पदार्थो खावाथी अनियमित आहार विहारथी गंदा मकान आसपासनो गंदवाड खुल्ली हवा प्रकाशनो अभाव विषैल जंतुनो दंश नवां उगेलां शाक भाजी हद उपरांत खावां वगेरे कारणोथी दोषो कोप पामी आ दरद उपजे छे रतवा ए एक जातनो वरम सोजो छे ते एक ठेकाणे एकदम फेलाय चामडीने रातो चोळ करे छे तेथी तेने रातोवा के रतवा कहे छे आ चेपी दरद छे ।

वात वीसर्पमां—वातज्वरने मळतां चिन्हो उपरांत शरीरे सोजा माथुं छाती वगेरेमां शूळ, शरीर फरके, चामडी उपर के अंदर तणखा पडता होय चीरातुं होय कोइ सोइ जेवी चीज खोसतुं होय एवी पीडा अने रोमांच थाय छे ।

पित्त वीसर्पमां—पित्तज्वरने मळतां चिन्हो उपरांत शरीरना एक भागथी बीजा भागमां फेलाय छे. प्रसरेला भागनी चामडी अतिशय लालचोळ थइ जाय छे ।

कफ वीसर्पमां—कफज्वरने मळतां चिन्हो उपरांत शरीरे खजवाळ बहु आवे छे. चामडी देखावमां लालचोळ होय छे. मिश्र दोषमां बबे दोषवाळां चिन्हो जणाय छे ।

आग्नेय वीसर्पमां—ताव उलटी मूर्छा झाडा तरस फेर बगासां मंदाग्नि हाडकांनो दुखावो वगेरे जणाय छे. आखा शरीरमां अग्निदाह जेवी लाइ बळे छे शरीरना जे जे भागमां रतवा फेलाय ते भाग काळाश पडतो आसमानी तथा लालचोळ अंगारा जेवो देखाय छे देवताथी दाझया प्रमाणे ते उपर फोडला उपसी आवे छे तेनी गति जलद उतावळी थइ हृदय सुधी फेलाय छे. निद्रा उडी जाय छे शरीरनुं भान पण रहेतुं नथी श्वास वधे छे दरदी तडफडया करे छे क्यांय सुख वळतुं नथी तेमांथी घणे भागे मरण पण नीपजे छे ।

ग्रन्थी वीसर्पमां—कफथी रुंधायेलो पवन अने कफ वधेला लोहीने भेदी बगडेलां लोही अने कफने चामडी नाडीयुं स्नायु मांस सुधी खेंची लावी गोळ लंबगोळ खडबचडा वगेरे प्रकारनी गांठयुं उपजावे छे. आ गांठयुंमां सणका सबाका सोइ खोसता होय पछुं भेदन थवा मांडे छे तेनी पीडाये ताव चडे छे ते साथे श्वास उधरस अतिसार हेडकी उलटी फेर मूर्छा वगेरे चिन्हो देखाय छे ।

आगंतुक वीसर्पमां—पछडाटथी जनावरोना नख दांत वागवाथी विषारी जंतुना करडथी शस्त्रना सखत जखम थवाथी वायु कोपी लोही साथे पित्तने व्रणमां लावी रतवा उत्पन्न करे छे आमां झीणी झीणी फोडलीयो थाय छे, सोजो सबाका शूळ ताव बेहद वेदना वगेरे जणाय छे नाडी क्षीण चाले छे जीभ सुकी थइ काळी पडे छे. रतवा थयेलो भाग अंदरथी सडे छे ।

पथ्यापथ्य—दरदीने सारी हवामां राखवो पवन सारो लागे तो थोडो थोडो पंखानो पवन नाखवो पण कुदरती हवा तेना शरीरने लागवा देवी नहीं. उकाळी ठारेलुं पाणी पावुं तेना कपडां बिछाना हमेशां गरम पाणीथी धोइ साफ राखवां. आ चेपी दरद छे एटले जरापण गाफल माणसने के बच्चांने तुरत लागु पडी जाय छे माटे हरकोइ दरदथी पीडाता माणसोने दूर राखवां घणी वखत रतवामां शस्त्रकर्म करवुं पडे छे. दुर्गंध नाशक धूप रात दिवस कर्या करवो. दुध भात मोळीछास खीचडी कांजी वगेरे आपवुं. मिष्टान्न भोजन बजारनी मिठाइ शरुआतमां दुध वगेरे बंध करवुं ।

वाराही गुटिका—पारद गंधक अभ्रकभस्म रौप्यभस्म प्रवालभस्म गळो हरडे आमळां कपूरकाचली कमळकंद शतावरी अरडुसी काथो सातचीण गरमाळो आंखफुटामणां बधां समभागे लइ धराख खजुर अरडुसी लींमडानां पान धमासो समभागे खांडी तेना उकाळानी ३ तथा रतवेलीयानां रसनी एक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी मात्रा ४ थी ६ गोळी गळोना उकाळा साथे आपवी ।

काळाग्निरुद्र रस—पारद तोला ५ गंधक तो. १० अभ्रकभस्म तो. ६ रौप्यभस्म तो. ४ यशदभस्म तो. ५ वछनाग तो. २ जेठीमधनो शीरो तो. ५ तज एलचि लवींग हरडे आमळां हळदर साकर वाक्षकंटोलीनो कंद सणकबीज धावडींग करीयातुं मजीठ आंखफुटामणां प्रत्येक तो. ३ त्रण लइ साथे मेळवी गळो काळीधराख रतवेलीयो प्रत्येकनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुकी राखवी मात्रा २ थी ६ रति मधमां चटाडी माथे नीचे बतावेलो काढो पावो ।

वीसर्पहर क्वाथ—धमासो गळो वाळो सुखडनो भुको लींमडानी छाल मजीठ गुलाबनां फुल कमळफुल हरडे रतवेलीयो गरमाळो समभागे खांडवां ०॥ थी १ तोलाभुकानो उकाळो करी तेमां मध नाखी पावो. महामंजीष्ठादि क्वाथ पावाथी पण आराम थइ जाय छे ।

दशांग लेप—सरसडो जेठीमध नडसळ रतांजळी पडवळ लींमडानी छाल पलचि जटामांसी हळदर दारुहळदर कुष्ठ वाळो समभागे लेवां पाणीमां वाटी चोपडवुं टाढो लेप ठीक न पडे तो जरा गरम करी चोपडवो ।

लेप १—शींगोडां सेवाळ कमळफुल रीसामणी भोंआंबली रतवेलीयो सरभागे खांडी पाणीमां चोपडवुं ।

लेप २—रास्ना सुखड करंजना पान हळदर भांगरो वाळो रतवेलीयो समभागे खांडी चोपडवुं ।



वाळाना रोग

वाळा नीकळवा नारु रोग स्नायु रोगः

कारण चिन्ह—आ दरद घणे भागे खराब पाणी पीवाथी थाय छे केटलाक कुवानां बंधीयार पाणीमां वाळाना जंतुओ होवाथी के कुवानुं पाणी पीवाथी तुरत आ दरद थाय छे कोपेला वात पित्त कफ दोषथी हाथ पगमां सोजो थइ छेद पडे छे अने ते घारामांथी सुकायेलां स्नायुमांथी दोरा जेवो गाळ जंतु उत्पन्न थइ घारामांथी धीमे धीमे बहार आवे छे जो ते दोरो गफलतीथी तुटी जाय तो पीडा वधी पडे छे पाके तो सोजो मटी जइ फरी बीजी जग्याए वाळो नीकळे छे बावडामां के जांघमां वाळो तुटी जाय तो हाथे पगे खोट आवे छे लंगडापणुं आवे छे वायु प्रधान होय तो दोरो काळाश पडतो होय अने पीडा करे पित्त प्रधान होय तो पीळाश पडतो वादळी रंगनो होय अने दाह बळतरा थाय कफ प्रधान होय तो धोळो जाडो होय अने ते अंग भारे वजनदार लागे. वधु दोष मिश्र कोप्या होय तो मिश्रित चिन्ह देखाय ।

स्नायुशूलहर चूर्ण—वाळो सुखड गोरखमुंडी वावडींग चोपचीनी हळदर दारुहळदर गळो सुंठ अजमोद अजमा हरडे पारद गंधक शतावरी आसोंध उपलसरी रौप्यभस्म बधां समभागे लइ खांडवां ०। थी ०॥ तो. पाणी साथे आपवुं ।

स्नायुजयंती गुटी—पारद गंधक रससिंदुर रौप्यभस्म लोहभस्म अभ्रक भस्म प्रत्येक तो. ८ आठ, वावडींग गोरखमुंडी चोपचीनी कांकचीया इंद्रजव हरडे इंद्रामणां कायफळ प्रत्येक तो. ४ चार साथे मेळवी गोरखमुंडीना क्वाथमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी २ थी ४ गोळी घीमां चटाडी उपर त्रिफळानो काढो पावो ।

अतिविषादि चूर्ण—अतिविष मोथ भारंगी सुंठ पिपर बेडांवळ समभागे लइ चूर्ण करवुं गरम पाणी साथे सवार बपोर सांज ०। थी १ तोलो टंके आपवुं ।

सामान्य उपचार

१ अपाटनां पाननी लुबदी करी तेनी पोटिस मुकवी ।

२ बावळनां बी गौमूत्रमां वाटी चोपडवां ।

३ सरगवानां मूळनी छाल सुरकामां वाटी चोपडवी ।

४ वेंगडिनु मूळ पाणीमां वाटी ०॥ थी १ तोलो पावुं ।

५ नगोडनां पाननो रस तो. १ गायना गरम करेला घी साथे पावो ।

६ जंगली पारेवांनी चरक १ पैसाभारनो झीणो भुको करी गोळ साथे ६ गोळी वाळवो गोळी एक सांजे तथा सवारे खवराववी ।

७ रींगणांने शेकी तेमां दहीं मेळवी वाळा उपर बांधवाथी बहार निकळी जाय छे सात दिवस करवु ।

८ भींडीना बी अने घउं सरखे भागे लइ दळी तेनी पुरी करी घीमां तळी गोळ साथे खवरावबाथी ३ दिवसमां वाळो निकळी जाय ।

९ कुकडानी चरक तो १ गळो तो २ गोळ तो. ३ साथे मेळवी गोळी २४ करवी हमेशां ३ वखत अकेक गोळी पाणी साथे आपवी ।

१० अफिण तो. ०॥ हिंग चोखो तो. ०॥ धतुराना रसमां वाटी थेपली करी वाळा उपर बांधवी वाळो मटे ।

११ एरडना पाननो रस तोला ५ मां घी तो. २॥ मेळवी पाइ देवुं तो वाळा निकळा पडे ।

१२ कायफळने पाणीमां वाटी लोपरी करी बांधवी डोढ कलाक पछी वाळाने धिमे धिमे संभाळथी ताणवो तो तेनां मूळ साथे निकळी पडशे ।

१३ तमाकुना लिलां पाननो रस काढी वाळाना छिद्रमां भरवो डोढ बे कलाकमां वाळा निकळी जशे अथवा ते जंतु अंदरज मरी जशे ।

१४ नवसार तोला २ ने बारिक करी गोळमां ३ गोळी वाळवी रविवारेथी आरंभ करी ३ दिवस हमेशां अकेक गोळी खवरावबाथी वाळा निकळी जाय ।

१५ आमलसारो गंधक १। तोलो दहीं साथे रवि सोम मंगळ ३ दिवस खवरावबाथी वाळा निकळी जाय ।

१६ कपुरचिनीयो तो ०॥ अफिण तो. ०॥ साथे वाटी घीमां मेळवी चोपडवाथी वाळो मटे ।

१७ आकडानुं पिळुं पान लावी तेने काथो चुनो चोपडया विनाना नागरवेलना आखा पानमां खवरावी देवुं तो वाळो निकळो जाय ।

१८ मीठुं तेल तोला २। भार तथा इसबगोळ तोलो १ भार लइ प्रथम इसबगोळने पाणीमां बारिक वाटी पछी लोढाना कडायामां तेल नाखी तेमां इसबगोळ नाखी एक रस थाय त्यारे तेमां सिंदोर बे आनी भार नाखी हलाववुं नीचे धिमो ताप राखवो लुबदी जेवुं थइ जाय पटले उतारी गरमा गरम वाळापर बांधवुं. ७ दिवस बांधवाथी वाळा निकळी जाय ।

१९ भुंडनी विष्टा उनी करी बांधीये तो वाळा निकळी जाय ।

२० धतुरानां पान तोला ५ हिंग तो. ०॥ पाणीमां वाटी ३ दिवस चोपडवाथी वाळो जाय ।

२१ सर्पनी कांचळीनी गोळमां गोळी ७ करी ७ दिवस खावाथी वाळा जाय।

२२ अफिण हिंग लीलो काच समभागे पाणीमां वाटी थेपली वाळा उपर बांधवाथी वाळो जाय।

२३ छीपनीयुं बाळी भुको करी तथा तेमां सरखे भागे सुवादाणा बाळीने नाखी धुपेल तेलमां घुंटी चोपडी उपर थोलीनां पान मुकी पाटो बांधवो. वाळो मटे।

२४ कुकडवेलनां डोडवांने झीणां वाटी थेपली बांधवाथी वाळो मटे।

२५ कारेली वाटीने बांधवाथी वाळो मटे।

२६ सिंदोर मरी हिंग मीठुं दरेक टांक १ एक, बाजरानो लोट टां. ४ तेलमां कालवी थेपली बांधवी. वाळो मटे।

२७ भीमसेनी बरासकपूर अफिण जावंत्री फुलावेल टंकण दरेक वाल १ एक वाटी गायना घीमां चण्या जेवडी गोळी करवी. सवार सांज अकेक गोळी देवाथी वाळानु दरद मटे।

२८ नवसार टांक ४ लइने पडिकां ३ करवां पडिकी १ प्रभाते लेवी उपर खीचडी घी जमवाथी वाळा मुळथी नीकरी पडे शांति थाय।

२९ इंगोरीआनी जड खाटी छासमां वाटी थेपली करीने ३ दिवस सुधी पाटो बांधवाथी वाळो नीकळी जाय अथवा बळी जाय पण दुख न थाय।



हाथीपग

कारण-चिन्ह—हमेशां वरसाद वाळी ऋतु के भीनी ऋतु रहेती होय तेवा देशोमां आ दरद घणे भागे वधु थाय छे प्रारंभमां ताव आवी पेडुमां सोजो थइ ते सोजो पगमां उतरे छे जे हाथीपग राफडाना जेवो टेकरा टेकरी वाळो होय कांटा कांटा वाळो होय १ वर्षनो जुनो होय स्राव नीकळतो होय बहु जाडो उंचो होय खजवाळ आवती होय ते असाध्य के कष्टसाध्य गणाय छे।

पथ्यापथ्य—जुना चोखा कळथी जव लसण पडोळां सरगवो साटोडी रींगणा कडवा पदार्थ कफनाशक चीजुं लांघण वायु रेच वगेरे हितकारक छे।

श्लीपद गजकेसरी रस—पारद गंधक रससिंदुर अभ्रकभस्म ताम्र भस्म टंकण प्रत्येक तोला ६ छ, सुंठ पिपर मरी वज गोरखमुंडी चोपचीनी लविंग नसोतर कचुरो काळीपाठ वावडींग प्रत्येक तोला ४ चार, चित्रो नेपाळो भांगरो गोखरु लींबु आदु प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ भुको राखवो अथवा चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी मधमां चटाडवी।

श्लीपदारि लोह—पारद गंधक अभ्रकभस्म शंखभस्म प्रत्येक तोला ६ छ, लींबोळीना मींज बकानना मींज हरडे आमळां शिलाजीत चित्रो नसोतर अरडुसानां मूळ अरणीनां मूळ वज सुंठ पिपर मरी प्रत्येक तो. ४ चार लोहभस्म तो ४० गुगळ तो. २० खांडी भांगरो नगोड कांचनार सातविण प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी करवी अथवा भुको राखवो. मात्रा ३ थी ६ रति मधमां चटाडवी।

नित्यानंद रस—हिंगुलोत्थ पारद गंधक ताम्र कांस्य बंग शंख कोडी प्रत्येकनी भस्म हरताल भस्म तुत्थभस्म लोहभस्म त्रिकटु त्रिफला वावडींग पंच-लवण चवक पिपरीमूळ पळांसवी वज्र कचुरो काळीपाठ देवदार पलचि वरधारो नसोतर चित्रो दंतीमूळ बधां सरखां लइ खांडी हरडेना उकाळानी भावना दइ छाये सुकावी छुंटी राखवुं. मात्रा ४थी ८ रति टंके हरडेना चूर्ण साथे आपवो बधी जातना श्लीपद मटे छे।

सौरेश्वर घृत—तुळसी देवदार सुंठ पिपर चित्रक चवक साटोडी पिपरीमूळ काळो हंसराज गुगळ पळांसवी वज्र जवखार काळीपाठ कचुरो पलचि वरधारो प्रत्येक तो. १ एक लइ कल्क करी दशमूळनो क्वाथ चोखानुं ओसामण दहींनु पाणी प्रत्येक तो. ६४ चोसठ नाखी घो तो. ६४ पकाववुं हमेशां ३ तोला घी पावाथी हाथीपग गमे ते दोष । होय ६ महिने मटी जाय ते शिवाय रसोळी कंठमाळ सारण एपेन्डसाइटीस अर्बुद कोठाना कृमि पटलां दरद मटे छे।

१ लेप—धतुरो परडाना मींज नगोड साटोडी सरगवो सरसव समभागे लइ वाटी चोपडवां।

२ लेप—देवदार अने चित्रो पाणीमां वाटी नवशेको चोपडवो अथवा खपाटनां पान वाटी लुबदो मुकवी।

३ लेप—सरसव अने सरगवानां छाल गौमूत्रमां वाटी गरम करी चोपडवां।

४ लेप—मजीठ जेठीमध रास्ना साटोडी तलवणी कुवाडीयो समभागे खांडी पाणीमां गरम करी चोपडवुं।

५ क्वाथ—कांचनारनी छाल मजीठ वरधारो समभागे खाडवां १ तोलानो उकाळो करी पावो।

६ क्वाथ—करंज बी खाखरानी छाल जेठीमधनां मूळ हळदर गोरखमुंडी काळो हंसराज कडु समभागे लइ १ तोलानो उकाळो करी पावो।



राफी-राफा वल्मीकं

आ दरद घणे भागे पगनी नीचे अने क्वचित हाथ डोक खभो काख सांधा अने गळामां पण थाय छे पगनुं तळीयुं फणो पडी के बोजी जग्याये गांठ थइ पाकी छिद्र पडी तेमांथी परु साथे काळो सफेद पडतो भुखरो के लाल दाणादार राइ जेवो पदार्थ नीकळे छे. आ दरद खेडुतोमां तथा मजुर वर्गमां वधु जोवामां आवे छे तेथी अनुमान करी शकाय छे के खेतरमां उघाडे पगे काम करनारना पगमां ते जातना जंतुओ आळी जग्यामां दाखल थइ आ दरद उपजावे छे वखत जतां साथे वधु छिद्रो पडे छे सोजो वधे छे अने बधां छिद्रोमांथी परु साथे उकेरा (माटी जेवो पदार्थ) नीकळे छे।

पगनी दरद वाळी जग्याये चीरी बगडेलो भाग काढी नाखी जंतुघ्न तेल क्षार के अग्निथी ते भागने बाळी जंतुरहित करी रुजाववुं दरद बहु वधी गयुं होय तो पगने कापवो जोइए।

१ लेप—राळ सिंदोर काथो तपखीर हिरादमण मीण तथा घीनो मलम करी चोपडवुं तथा तेनां छिद्रमां भरवुं तो रुजाय जाय ।



कीडीयारुं—कीडीयानगरुं—कीडोनगरा

हाथे पगे के शरीरना बीजा कोइ भागमां लाइनबंध जीणी फोडकीयो थइ तेमां जीवात पडे छे ते भाग सोजी जाय छे अने सडो अंदर उतरी माणसने हेरान करे छे आ दरदने वखतसर उपचार न करवामां आवे तो जीवलेण नीवडे छे. आ एक कुष्टनी जात छे आ दरद क्वचित जोवामां आवे छे ।

मलम—काथो मोरथुथु चणोठीनी दाळ सरखे भागे खांडी वाटी बारिक करी घीमां मलम करी चोपडवो अने तेना उपर तथा जे भागमां सोजो होय त्यां हळदरने कुंवारना रसमां वाटी लोपरो करी बांधवी तो जीवात मरी जई घारुं रुजाय ।

मलम—सर्पना हाडकां लोटकामां नाखी अडाया छाणामां बाळी ते राखने गायना घीमां मेळवी लगाडवाथी किडियानगरुं तथा गडगुमड मटे ।

लेप—चणोठीनी दाळ पोस्तना डोडा सरखे भागे खांडो आकडाना दुधमां थेपली करी बांधवी. हमेशां नवी थेपली बांधवी तो दरद मटे ।



हडकवा

हडकाया कुतरानो करड

गधेडानुं कुतरानुं के घोडानुं सडेलुं मांस खावाथी कुतराने के शियाळने हडकवा चाले छे तेनो उपाय तत्काळ करवो ।

श्वान विषहर क्वाथ—बेठी उंबरीनुं मूळ पारस पिपळाना फळ बेवडीनुं पंचांग अघेडानुं मूळ शतावरी कडु समभागे खांडी २ तोला भुकामां ४० तोला पाणी मुकी १० तोला रहेतां सुधी उकाळी दिवसमां ३ वखत पावुं ।

श्वान विषहर चूर्ण—शेकेला कांकचीयाना मींज सातविण वायवरणा इंद्रजव लींबोळीना मींज कडु करियातु मोथ गळो गरमाळो वाळो कचुरो भोरींगणी मूळ अघेडानुं पंचांग सिंधालुण मरी पिपर सुंठ पिपरीमूळ बधां सरखे भागे खांडवां ०।थी ०॥ तोलो चूर्ण चोखाना ओसामण साथे आपवुं ।

प्राचेतस चूर्ण—सातविण कडाछाल लींमडानो छाल मोथ कुष्ठ वाळो नडसळमूळ गैरमाक्षिक भस्म लोह्र समभागे खांडवुं. मध साथे १ थी ४ तोला सुधी आखा दिमां चटाडवाथी श्वानविष तथा बीजा विष उतरे ।

सामान्य उपचार

१ सुदर्शन तोला ५ ने ८० तोला पाणीमां उकाळो ४० तोला रहे पछले गाळी पावुं. १–१॥ महिनो महालक्ष्मीनारायण २ थी ४ रति साथे आठ वखत पावुं. तार्क्ष्यसूत ३ थी ६ रति आपवो ।

२ लींबोळीनां मींज मरी सिवालुण समभागे खांडी ८॥ थी १ तोलो आखा दिवसमां ३ वखत पाणी साथे आपवुं ।

३ खाखराना मूळनी छाल तो. १० उकाळी ७ दिवस सुधी पावुं ।

४ इन्द्रामणो मूळ सहित पंचांग शे. ०। कंकोडीमूळ टां ५ बन्नेने वाटी तेनो रस शे. २ करी पाइ देवो ७ दिवस पावाथी हडकवा मटे ।

५ झेरकोचलानो भुको २ वाल पुरुषनुं मूत्र शे. ०। साथे दिवसमां ५ वखत पावुं. १४ दिवस पावाथी हडकवा मटे ।

६ नेपाळानुं मींज १ साजीखार वाल २ वाटी उना पाणीथी आपवुं. खुब जुलाब लागी जंतुओ नीकळी जाशे. अथवा इच्छाभेदी गोळी २ थी ५ देवी ।

७ बेठीउंबरीनुं मूळ तो. ५ धतुराना बी १ आनोभार चोखाना ओसामण साथे वाटी पावुं ।

८ अघेडानुं मूळ १ तोलो वाटी मध साथे चटाडवुं ।

९ कस्तुरी वाल २ बावळना पाननो रस तो. ५ गायनुं घी तो. ५ गरम करी मेळवी पावुं ।

१० शतावरीना मूळनो रस तोला २० मां गायनुं दुध तो. २० मेळवी १४ दिवस पावुं ।

११ कुकडानी चरक गोळ तेल आकडानुं दुध वाटी चोपडवुं ।

१२ कुंवारनुं पान चीरी तेमां सिधालुण भभरावी दंशने ठेकाणे ३ दी बांधवुं ।

१३ अघेडाना मूळने कुंवारना गरभ साथे वाटी तेमां चपटी सिंधालुण नाखी दंश उपर बांधवुं ।

१४ आकडानुं दुध गोळ अने तेल साथे मेळवी चोपडवुं ।

१५ कुकडानी चरक भोंपाथरी साथे वाटी चोपडवुं ।

१६ ह्रीं ह्रीं ह्रां क्रां क्रीं क्रुं फट् फट् स्वाहा आ मंत्रथी २१ वखत पाणी मंत्री पावुं. हडकाया कुतरानुं झेर उतरे. चंद्रग्रहणनां स्पर्शथी मोक्ष सुधी आ मंत्र जपी सिद्ध करवो ।

१७ आकडाना चीरमां बाजरानो लोट नाखी मग जेवडी गोळी वाळवी हडकवा चालतो होय तेने २ थी १० गोळी सुधी मनुष्य तथा पशुने देवी. हडकवा मटे ।

१८ अजमा शेर ०। कडवीतुंबडीनां बी शे. ०। वाटी खाटी छाशमां पाय तो हडकवा मटे ।

१९ काळातल तो १ आकडाना चीरमां वाटी मग जेवडी गोळी करवी ३ थी ४ गोळी पाणी साथे देवी. जुलाब लागी इंडार नीकळे. ३ दिवस देवाथी हडकवा मटे. नानां छोकरांने २ गोळी देवी उपर घी खीचडी खवराववुं पटले जुलाब वळशे खाटुं खारुं खावुं नहीं, करडया पछी ७ जुलाब देवा हडकवा चाले नहीं ।

२० लींडीपिपर तो. १ काळा मरी तो १ कुकडानी चरक तो ३ पारेवानी चरक तो. ४ कनकबीज तो. ४ साथे वाटी पाणीमां मरी जेवडी गोळी करवी. बाळकने १ मोटाने २ थी ३ देवी. २१ दिवस देवाथी श्वानविष उतरे ।

२१ काळातल जुनोगोळ आकडानुं दुध सरखे वजने लइ एकत्र करी चण्या जेवडी गोळी वाळवी. १ थी ४ गोळी पाणी साथे देवी. हडकाया कुतरानुं विष उतरे ।

२२ कुकडवेलनां बी हमेशां पहेले दिवसे १, बीजे दिवसे २, त्रीजे दिवसे ३ एम चडतां ७ दिवस सुधी अथवा १३-२१-३० दिवस सुधी खवराववाथी हडकाया कुतरानुं झेर उतरे ।

२३ मोरींगणीनां डोडवां सेर १ घुंटी गोळ शे ०। मेळवी १ दोकडाभारनी गोळी हमेशां देवाथी हडकवा मटे ।

२४ शोधेलो नेपाळो तो ५ काळा मरी तो. २ टंकण तो. २ परडीनां मींज तो २ हिंगळो तो. २ कडवी तुंबडीनो गर तो. २ समळीनुं सुतर तो. २ कंकोडी तो. २ बधां साथे वाटी गोळमां बोर जेवडी गोळी करवी. गरम पाणीथी १३-२१ के २८ दिवस सुधी देवाथी हडकवा मटे ।

२५ पडवादी अजमो घी गुगळ दरेक सवा सवा पाशेर एकत्र करी कुलेर करी तो. ०। थी ०॥ खवराववाथी हडकाया कुतरा तथा शियाळनुं विष उतरे ।

२६ ओखराडूयनो रस तथा बोडीयाकलारनो रस पाशेर पाशेर भेळा करी ३ दिवस पावाथी हडकवा मटे ।

२७ शरपंखानो रस पावाथी हडकाया कुतरानुं विष उतरे ।

२८ समुद्रफळ संचळ इन्द्रामणीनां मूळ हरडे गरणीनां बी पाणीमां वाटी चणिया बोर जेवडी गोळी देवी हडकवा मटे ।

२९ तकमरीयां मरी हिंग दरेक अकेक तोलो लइ पाणीमां वाटी मरी जेवडी गोळी करवी. आंजवाथी हडकाया कुतरा तथा शियाळनुं विष उतरे तथा भुत डाकिनी वगेरे सर्व टळे २ वखत आंजवुं ।

३० नेपाळानां बी कुकडवेलनां बी हिंगळो दरेक तोलो १ एक गोळ तो. ३ साथे मेळवी ०। तोलानी गोळी वाळवी. हडकायुं कुतरुं आभडया पछी दिवस १३ मे २६ मे के ३९ मे दिवसे अकेकी गोळी देवी पखाल झाडा लागे हडकवा मटे ।

३१ धतुरानां बी अने चुनो वाटी बांधवाथी विष जाय ।

३२ मरी तो. ०। कुकडानी चरक तो. ०। बेइ मेळां करी हडकायुं कुतरुं करडया पछी ७ दिवसनी अंदर पाणी साथे खवरावयुं ।

३३ कंकोडी तो. २॥ घोळी गायना दुधमां ३ दिवस पावाथी हडकायानुं झेर उतरे ।

३४ साटोडी पचांगनो रस तो. ५ तेल तो. ५ मेळवी पावुं ।

३५ कंकोडी तो ६ खांड तो. ३ लींबुरसमां १४ गोळी करवी हमेशां १ देवी ।

३६ ढोरने हडकायुं करडयुं होय तो १४ तोला कंकोडी वाटी घीमां कुलेर करी खवराववाथी हडकायानुं झेर उतरे ।

३७ कडवी तुंबडीनो गरभ खांड घी समभागे लइ खवरावयुं ।

३८ हडकायुं करडे के तुरत डांडलीया थोरनुं दुध चोपडवुं २-३ दिवस पछी लींमडाना पान अने हिंग वाटी थेपली मुकवी ।

३९ धतुरानो रस तो. २॥ पावो विष्टामां कुतरां पडे ।

४० त्रण वरसनुं वणना झाडनुं मूळ तो. २ घीमां वाटी पावुं ।

४१ कडवी तुंबडीनो गरभ सिंघालुण नेपाळानां मींज मरेठी पिपर मालवी-गोळ समभागे लइ गोळी टां. बबेनी करवी. १ मास पछी हमेशां १ गाळो गरम पाणीथी देवी. पथ्य पाळवुं ।

४२ साजी टां. ३ जीरुं वाटी ३ दिवस पाणी साथे पावुं ।

४३ लींमडानो रस तो. १० पावो ।

४४ सरपंखानुं पंचांग सुकवी क्वाथ करी पावुं. श्वान शियाळ तथा काळी-डांडोना उंदरनुं झेर तथा अफिणनुं पटळां झेर उतरे ।



वधरावळ अंडवृद्धिः अने सारणगांठ

वृषणवृद्धि, सारणगांठ—अंतरगळ—अंत्रवृद्धिः

वधरावळ कारण-चिन्ह—सोजाथी पाणी भरावाथी गांठ थवाथी नस फुलवाथी घणो दारु पीवाथो वगेरे कारणे थाय छे. वृषणना सोजाने लीधे वधरावळ थइ होय तो गोळीमां तथा तेना थडमां जे दोरा जेवी नाडीयोथी गोळी लटकेली रहे छे तेमां दुखावो थाय छे बोजो लागे छे गोळी उपरनुं चामडीनुं पड सुजी जाडुं थइ आवे छे अंडकोशने उपाडी राखनारी नाडीयो दोरडा जेवी जाडी थाय छे. ताव उलटी उबको झाडानो कबजीयत वगेरे चिन्ह जणाय छे. वृषणमां पाणी भराय छे ते जळवृद्धि कहेवाय छे कोथळीमां पाणी भराय त्यारे खेंचाय चळके छे अंडकोश नाळीयेर जेवडुं के तेथी पण मोटुं थाय छे पाणीने बदले अंडकोशमां लोहीनो जमाव थाय छे ते रक्तवृद्धि कहेवाय छे तेमां वजन लागे छे दुखावो थाय छे ।

सारणगांठ कारण-चिन्ह—बहु दोडवाथी पंथथी कुस्तीथी कुदका मारवाथी वजनदार वस्तु बळ करी उपाडवाथी भारे चीज खेंचवाथी गाडानी के बाइसीकलनी स्वारी करवाथी दस्त वखते बहु करांजवाथी तथा आहारविहारना अनियमितपणाथी आ दरद थाय छे पुरुषोने पेडुमां एक के बीजी बाजुए आंतरडुं उतरे छे अने बाळकोने डुंटी आगळ उतरे छे पुरुषोने जेम जेम आंतरडुं उतरे वधतुं जाय छे तेम नीचे कोथळीमां उतरे छे ।

पथ्यापथ्य—बन्नेमां वमन विरेचनादिथी संशोधन करवुं हमेशां दस्त साफ लाववा देशी एरंडिनुं तेल पावुं लींमडाना पाननी बाफ वखतो वखत देवी शरगवानी शींगु पडोळां जव राता चोखा कळथी मग मठ रींगणा साटोडी नागरवेल लसण गाजर गायनुं घी मोळीछास तांजळजो मेथीदाणा मेथीनी भाजी उपवास वगेरे हितकारक छे चिकणां खांडनां बजारनो मिठाइ अजीर्ण करनारी वस्तु मदिरा बहु खाटां खारां तीखां पदार्थ दहीं मिष्टान्न वगेरे नुकशान करे छे ।

अंडवृद्धिहर रस—पारद तोला ५ गंधक तो. १०, ताम्रभस्म कांस्यभस्म शंखभस्म कोडीभस्म शुक्तिभस्म हरडे सुंठ आमळां पिपर मरी पिपरीमूळ शरपंखो सिंघालुण संचळ पलचि देवदार प्रत्येक तोला ४ चार साथे मेळवी नगोडनां पान लींमडानां पान अने हरडेनो उकाळो प्रत्येकनी अकेक भावना दइ चणोठो

जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुको राखवो मात्रा ३ थी १२ रति घीमां चटाडी उपर दुध अथवा पाणी अथवा नाचे जणावेला मानो हरकोइ उकाळो पीवरावदो गमे ते दोषनी वधरावळ तथा सारणगांठ मटे छे लांबा वखतनुं दरद होय तो ३ थी ४ महिना सेवन करावदुं ।

अंत्रवृद्धिनाशन रस—पारद गंधक शिलाजीत प्रत्येक तो. १० दश, गुगळ तो. १५ कडु तो. २०, चित्रो सुंठ पिपर मरी चवक कुष्ठ हरडे देवदार मरडाशींगी वावडींग परडिनां मींज गोरखमुंडी सिंधालुण संचळ नसोतर जवखार प्रत्येक तोला ६ छ लइ साथे मेळवी भोरींगणोनां डोडवांनां रसनी अने हरडेना उकाळानी अकेक भावना दइ छाये सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा ४ थी ८ रति घीमां चटाडी उपर बकरीनुं के गायनुं दुध पावुं सारणगांठ पपेन्डीसाइटीस तथा वधरावळ मटे छे ।

वृद्धिबाधिका वटी—पारद गंधक लोहभस्म बंगभस्म ताम्रभस्म कांस्यभस्म हरताळ तुत्थभस्म शंखभस्म कोडीभस्म सुंठ पिपर मरी हरडे बेडां आमळां चवक वावडींग वरधारो पिपरीमूळ काळीपाठ पळांसवी तज पलचि देवदार पंचलवण बधां सरखे भागे लइ खांडी हरडेना उकाळामां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ८ थी १२ गोळी पाणी साथे आखा दिवसमां आपवी वधरावळ सारणगांठ तथा आंतरडानां बीजा बधा रोग मटे छे. आ गोळी रजवाडा माटे बनाववी होय तो तेमां अष्टसंस्कारवाळो पारद तथा लोह ताम्र हरताळभस्म उंचा मायली नखाय छे ।

नित्यानंद रस—हिंगुलोत्थपारद गंधक ताम्रभस्म कांस्यभस्म बंगभस्म हरताळभस्म शंखभस्म कोडीभस्म त्रिकटु त्रिफळा लोहभस्म वावडींग पंचलवण चवक पिपरीमूळ पळांसवी वज कचुरो काळीपाठ देवदार पलचि वरधारानां मूळ बधां सरखे भागे लइ खांडी कपडे चाळी हरडेना उकाळामां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. हमेशां सवारमां ५ गोळी रातवाशी पाणी साथे आपवी. आना सेवनथी वधरावळ सारणगांठ पपेन्डीसाइटीस मटे छे. ते शिवाय हाथीपग अर्बुद कंठमाळमां पण फायदो करे छे ।

महासैंधवादि तेल—सिंधालुण परडिनां मींज सुंठ मालकांकणां कुष्ट धतुरानुं पंचांग झेरकोचलां मींढोळ शतावरी आसोंध वज कुलींजन कायफळ देवदार पिपर मरी नगोड भोरींगणीनां डोडवां हरडे आमळां अजमोद वावडींग रास्ना जीरुं गुगळ लोधान जायफळ प्रत्येक तोला ४ चार लइ खांडी पाणीमां लुबदी करी तेमां बकरीनुं दुध शेर १० तलनुं तेल शे ८ परंडियुं तेल शे. १ नाखी पाणीनो भाग बळी जतां सुधी पकावी गाळी लेवुं. आ तेल ०। थी ०॥ तोलो गायना दुध साथे पावुं तथा वधरावळ सारणगांठ के बदगांठ उपर चोळवुं तथा वाना हरकोइ दरद उपर तथा पपेन्डीसाइटीस उपर बहु फायदो करे छे ।

वृद्धिनाशन मलम—शेषगुंदर तो २० गुगळ तो. २० शिलारस इन्द्रामणानां मूळ परडोनां मींज सुंठ जीरुं पारेवानी चरक आंकडाना मूळनी छाल

प्रत्येक तोला १० दश, घी तो. २०० परंडियुं तेल तो. ५०, मीण तो २० बधां विधिवत पकावनां. बधी जातनी वधराबळमां चोपडवुं अने चोळवुं ।

अंडवृद्धिहर लेप—गोरखमुंडी परंडिनां मींज वज सरसव सरगवानी छाल शेषगुंदर जीरुं समभागे पाणीमां वाटी चोपडवुं ।

अंत्रवृद्धिहर लेप—नागरवेल लविंग सुंठ सरखे भागे खांडी पाणीमां वाटी चोपडवुं ।

सामान्य उपचार

१ उंटकंटानी छाल बेडांनुं मूळ काळामरी अने साकर सरखे भागे लइ खांडी राखवुं पछी परंडियु तेल तो. १॥ लविंग दाणा १४ वाटी पाणी शेर २मां उकाळवुं पाणी शेर ०॥ रहे पटले उतारी कांसानी थाळीमां ठारवुं पछी उपलुं चूर्ण तो. ०॥= दश आनीभार मेमां नाखी कांसानी थाळीमांथी परंडियुं तेल उपर उपरथी प्रथम पीवु अने पछी पाणी पीइ जवुं आम ७ दिवस करवाथी सारणगांठ-अंतरगळ मटे ।

२ उपलेट पुष्करमूळ हळदर साजिखार सिंधालुण आसोंध पळियो प्रत्येक टांक ३ त्रण, कपासिया टां ८ परंडिमींज टां. ७ तल टां ४ सरसव टां. ५ साबु टां. ७ गौमूत्रमां पींड करी उष्ण करी रोटलो करवो वधती अंतरगळ उपर नवशेको बांधवो प्रहर ४ अथवा ८ राखवो एम ३ दिवस करवुं पनुं अर्धुं ओसड वधरावळमां करवुं ।

३ लविंग सुंठ करियातु मालकांकणां पिपरीमूळ नागकेसर नगोडनां बी प्रत्येक टां १ एक, पारेवानी चरक टां ५ गोळ टां. ५ मर्दे वाटी टां. १ नी गोळी करवी ते गोळी १ प्रभाते देवी. वायडी टाढी वस्तु खावी नहीं अंतरगळ गांठ वधरावळ शमे सारुं थाय दिन ७ थी १४ देवुं ।

४ मोटी हरडे घसीने तेनो रस २ पैसाभार अने काळामरीना दाणा १६ वाटी रसमां नाखी ५ दिवस सुधी पावुं अने नगोडना पान सिंधालुण काळामरी ए त्रणेने वाटी १४ दिवस सुधी पाटो बांधे तो आराम थाय ।

५ रींगणुं लइ तेने चीरी तेनापर देशी परंडियुं लगाडी तेमां आंबाहळदरनो भुको भरी शेकी नाखवुं पछी तेनी चीर अकेक बे गोळी उपर उनी उनी बांधवी ४ दिवस करवाथी गोळी एकदम नानी थइ जाशे ।

६ हरडे रास्ना भारंगी मरडासींगी कचुरो शतावरी इन्द्रामणानां मूळ आसोंध समभागे लइ खांडी ०॥ थी १ तोलानो उकाळो करी पावो ।

७ रास्ना जेठिमध गळो बळदाणा गरमाळो गोखरु आंखफुटामणां समभागे लइ खांडी ०। थी ०॥ तोलानो उकाळो करी पावो ।

८ देवदार हरडे परडानां मूळ इन्द्रामणानां मूळ समभागे लइ खांडी ०॥ थी १ तोलानो उकाळो करी पावो ।

९ काळीमुशळी खुंटीया (खसी करेला न होय) तेना मूत्रमां घसी ३ दिवस पावाथी आराम थाय अंतरगळ गांठ वधरावळ मटे ।

१० कुकडवेल अने पळियाने गौमूत्रमां वाटी चोपडवाथी सारण मटे ।

૧૧ કાયફળને ભુકો કરી પાણીમાં વાટી ખદખદાવી જાડો લેપ કરવો માથે સેતો શેક કરવો ।

૧૨ જુના રુને પરંડિયા તેલમાં ભીંજવી પાટો બાંધવો એમ ૪૦ દિવસ પાટો બાંધવાથી સારણગાંઠ મટે ।

૧૩ સિંધાલુણ હિરાકસી અને પરંડિયું તેલ સાથે મેળવી લેપ કરવાથી સારણગાંઠ મટે ।

૧૪ તુંબડું કોરી સિંધાલુણ શેર ૦॥ નાખો કપડમાટી કરો ગજપુટનો અગ્નિ દેવો ટાંક ૨ નરણે કોઠે આપવાથી અંતરગળ ટળે ।

૧૫ રિસામણી અને ગીધની ચરક પાણીમાં વાટી ચોપડવું ।

૧૬ શેપગુંદરને બકરીના દુધમાં વાટી ચોપડવું ।



પથરી–પાણવી–અશ્મરી

કારણ—મૂત્રનો વેગ રોકવાથી કુપથ્ય આહાર વિહારથી મિષ્ટાન્ન બહુ ખાવાની ટેવથી દારુના વ્યસનથી યકૃત્ લિવરના બગાડથી મૂત્રપિંડમાં ક્ષારાદિ પદાર્થોનો જમાવ થવાથી વીર્યનો વેગ અટકાવવાથી કાંકરી કે રેતિવાળો ખોરાક ખાવાથી અતિ વિષયથી હસ્તદોષનો ટેવથી એમ અનેક કારણે પથરીનું દરદ થાય છે।

ચિન્હ—નાભી સિવણ મૂત્રનળીમાં દુખાવો-પીડા થાય ૨-૩ ધારવાળો પેશાબ ઉતરે પથરી ઘસાઇ પેશાબ નિકળવાનો માર્ગ થાય ત્યારે ચાસણી જેવો ઘાટો અથવા કાંકરી વાળો પેશાબ થાય પથરીના ક્ષોભથી ક્ષત પડે તો બહુ પીડા સાથે લોહીમિશ્રિત પેશાબ થાય વાતાશ્મરી હોય તો પીડા સખત થાય દાંત કચકચે ધ્રુજે શિશ્નને ચોળે નાભીને દબાવે પેશાબ ટીપે ટીપે પડે આ પથરીની સપાટી કાળા ભુરા રંગની ફરતી ખરસટ કાંટા જેવી હોય દારુ બહુ પીવાથી શરીરની નિર્બળતાથી આ પથરી થાય છે. પિત્તાશ્મરી ગ્રન્થિવાન અજીર્ણ તાવ અતિ માંસાહાર વગેરે કારણે પિત્તપ્રકોપ થતાં એક જાતની ખટાઇથી આ પથરી બંધાય છે આ પથરી લાલાશ પડતાં પીળાં કે બદામી રંગની હોય છે. કફાશ્મરી અને શુક્રાશ્મરી આ પથરી સફેદ મોટી પોચી હોય છે તે સહેલાઇથી મટી જાય છે મૂત્રાશયમાં પેશાબ સડે છે ગંધાય છે અને પરુ પેદા થાય છે તે પવનથી સુકાઇ પથરીરુપ બને છે તેમ વીર્યના વેગને રોકવાથી કે આવતા વીર્યને અટકાવવાથી પણ આ પથરી બંધાય છે. શર્કરાશ્મરી પથરી જામતી વખતે અથવા જામી ગયા પછી તેના ઉપર દબાણ થવાથી કે બીજાં કારણે રેતિ જેવી કાંકરો થઇ પેશાબ સાથે વાયુના દબાણથી અનુલોમ વાયુ હોય ત્યારે નિકળે છે અને વાયુ અટકી જાય છે ત્યારે તે મૂત્રાશયની પથરી કહેવાય છે દરદથી વાતપ્રકોપ વધતો જાય છે તેમ મૂત્રાશયમાં પીડા સાથે પથરી જામ્યા કરે છે મૂત્રપિંડ ગુર્દાની પથરી પેશાબનાં અમુક પ્રકારનાં ક્ષારતત્વોનો વધારો થવાથી મૂત્રાશયમાં અથવા મૂત્રપિંડ ગુર્દામાં કે મૂત્રપિંડનો બસ્તીમાં આ પથરી બંધાય છે. પથરી મોટી થતી જાય તેમ ગુર્દાનો નાશ થતો જાય છે ત્યારે મૂત્રપિંડમાં અસહ્ય દુખાવો થાય છે પરુ ઉત્પન્ન થઇ પેશાબ વાટે વહે છે કેટલિકવાર તેની

आसपास गड थइ कमरनी पिठमां के पडखाना भागमां के नाभिनो आसपास फुटि त्यांथी परु साथे पेशाब वहे छे पथरी चण्याथी ते मोटी केरो जेवडी होय छे. झालावाड भाल हालार कच्छ मारवाड अने सिंधमां ते दरद वधु प्रमाणमां देखाय छे।

पथरीनो उपद्रव—पथरी मोटी होय अने मूत्रपिंडमांथी मूत्रनळ वाटे मूत्राशयमां उतरे तो अति पीडा थाय छे ते वखते पेटमां घणुं दुखे पीडा थाय उलटी थाय मूत्रपिंडमां दुखावो थाय दरदी अकळाय गभराय बेचेन बने परसेवो बेहद वळे वृषणमां असह्य दरद थाय पेशाब लाल लोहीवाळो के परुवाळो आवे ताव थोडो रहे. आ पीडा केटलाक कलाक के दिवसो सुधी रहे छे अने पथरी मूत्राशयमां पहोंचे त्यारे ए पीडा बंध थाय छे।

पथ्यापथ्य—प्रथम जुलाब आपवो, पिचकारी मारी झाडो उतारवो, पीडा सखत थाती होय तो अफिणवाळी दवा के द्राक्षासव पावो. पेट उपर कमर उपर शेक करवो राइनो लेप करवो, कमर सुधी गरम पाणीमां दरदीने बेसारवो।

साकर खांड दारु मिष्टान्न मरचां तेल खटाइ मसाला अजीर्ण करनारो खोराक बंध करवो. सादो हळवो प्रवाही खोराक दुध कांजी वगेरे आपवुं, खडसलियो धमासो वावडींग बधांनी पोटली बांधी पाणीमां राखी पनुं पाणी पावुं. शंखद्राव के महाद्राव जेवो क्षार आपवो. दस्त १–२ साफ आवे तेम करवुं पेटे कमरे शेक करवो. पाणी नवशेकुं पावुं कमळफुलने पाणीमां भींजावी ते पाणी पावुं. मूत्रल दवा आपवी. पथरी वधी पडी होय अने औषधथी न मटे एम जणाय तो शस्त्रकर्म कराववुं।

त्रिविक्रम रस—ताम्रभस्ममां सरखे भागे बकरीनुं दुध नाखी पकावतुं दुध बळी जाय पटले ताम्र जेटलुं घी मेळवी पकावतुं घी बळी जाय पटले ते ताम्रभस्म ते। १० गंधक ते। १० पारद ते। १० साथे मेळवी नगोडना रसमां गोळी वाळी वालुका यंत्रमां ३ कलाक पकाववुं. मात्रा १ थी २ रति गायना घी साथे चटाडो उपर बिजोरानुं मूळ पाणीमां घसी पावुं १ महिनामां पथरी निकळी जाय छे हमेशां पेशाब साथे थोडी थोडी पडे छे।

पाषाणभेदी रस—पारद गंधक ताम्रभस्म प्रत्येक तो. १० दश, अघेडानी तलसरांनो अने खाखरानी राख हळदर जवखार वांझकंटोलीनो कंद रससिंदुर गोखरु गळो प्रत्येक तो. ८ आठ लइ साथे मेळवी तेने परडानां मूळ साटोडी अरडुसी बकरीनुं दुध बिजोराना मूळनो उकाळो अने पाषाणभेद प्रत्येकनी अकेक भावना देवी. मात्रा ६ थी ८ रति घीमां चटाडी उपर वायवरणानो उकाळो अथवां अश्मरी भेदक क्वाथ पावो।

पाषाणवज्र रस—शुद्ध पारद तो. १० शुद्ध गंधक तो. ३० कज्जळी करी सफेद साटोडीना रसमां १ दिवस घुंटी भूधर पुटनो मंद अग्नि आपवो. पछी पाषाणभेदना रसनी ३ भावना देवी. मात्रा सवार सांज ६ छ रति अने पाषाणभेदनुं चूर्ण ६ छ रति साथे पाणीमां पावुं उपर पोपैयाना मूळनो स्वरस पावो।

अश्मरीभेदक क्वाथ—शिलाजीत अरडुसीनां पान जवखार पाषाणभेद नगोडनां पान परडिनां मूळ दरेक तो. ५ पांच लइ खांडी मेळवी तेना १४ भाग करवा हमेशां १ भागने उकाळो तेमां देशी परंडिनु तेल तो. २॥ मेळवी पाइ देवुं. १४ दिवसमां पथरी गळी जाय ।

सामान्य उपचार

१ गोखरु गाजरनां बी चिभडानां बी, सफेद उंटकटाना मूळनी छाल वरियाळी जेठिमध दरेक तोलो १॥ कैाढ, मूळानां बी तो. ०। मजिठ तो. १॥। खांड तो. ८॥ मध शेर ०। पाणी शेर ३ मां बधांने उकाळी पाणी शे. ०। रहे पटले पाइ देवुं. ७ दिवस पावाथी पथरो गळे ।

२ गोखरु पलचि वायवरणो पिपर पाषाणभेद जेठिमधनां मूळ धाणा परडिना मूळ सरखे भागे लइ खांडी ५ तोलानो काढो करी पावो. उपर २ वाल शिलाजीत अने ८ वाल साकर मेळवी खवराववां ।

३ लींबोळीनां मींज तो ०॥ साकर तो १ वासी पाणीमां वाटी वासी पाणी साथे पावाथी पाणवी गळी जाय ।

४ फुलावेलो टंकणखार तो १ साकर तो. १ साथे वाटी दिवसमां १ २ कलाकने आंतरे ५-७ वखतमां पाइ देवु. एम २१ दिवस पावुं ।

५ सिंघालुण तो. २ खांडी तेनां पडिकां २४ करवां. हमेशां सवारनां पोरमां गायनी ताजी छासमां १ पडिकुं नाखी पाइ देवुं. २१ दिवसमां पथरी कराय ।

६ उंदरनी लींडी तो. ०॥। सुरोखार तो. ०॥। साथे घुंटी पेडु उपर चोपडवाथी पथराने लइ पेशाब अटका गयो होय ते छुटे ।

७ गोखरुनुं चूर्ण तो. १ मध तो. २॥ मेळवा चटाडो उपर बकरीनुं दुध शे ०॥ पावुं. ७ दिवस पावाथी पथरी गळे ।

८ रोखार रेवतचिनी साकर पाषाणभेद दरेक टां. ०॥ अर्धी वाटी दुध शेर ०॥ मां नाखी पावाथी इंद्री रेच लागे पाणवीनो गांठ गळी निकळी जाय ।

९ चंद्रप्रभा गोळा दिवसमां ६ थी ८ त्रिफळाना उकाळामां मध नाखी ते साथे आपवा ।

१० बच्चांने पेशाबमां पथरी बंधाणी होय तो टंकणखार तो. ०॥ पाणीमां पावो।

११ कुकडोनुं इंडु १ लइ तेनी जरदी दुध शे ०॥ मां हलावी १४ दिवस पावुं।

१२ कोडीने पाणीमां घसी पावी ।

१३ काळी हळदर दळेली तो. १ पाणी साथे पावी ।

१४ वज तथा कंटोलीनुं मूळ पाणोमां वाटो पावुं ।

१५ खजुरीनुं मूळ वासो पाणी साथे वाटी पावुं ।

१६ वायवरणानी छालना उकाळामां गोळ नाखी पावुं ।

१७ सरगवाना फुलने अथवा छालने वाटी ते स्वरस पावो ।

१८ नाळियेरनां फुल अने सुरोखार वासी पाणीमां वाटी पावुं ।

१९ कांगसीना बी खाटी छास साथे पावाथी पाणवी टळे ।

२० जुइनां फुल बकरीना दुधमां साकर साथे पावाथी पाणवी टळे ।

२१ हरडे गरमाळो गोखरु पाषाणभेद परडि मींज समभागे खांडी ०। तोलो मधमां मेळवी चटाडी उपर छास पावी पथरी गळे ।

२२ सुरोखार टां. ६ आमलसारो गंधक टां ३ लइ सोनीनी कुयडीमां सुरोखार मुकी गळे पछले गंधक वाटी तेमां नाखवो रस थये थाळीमां ढाळवो ते चकदी बंधाय तेनो भुको टां. १ छास टां. १० मां पावो ३ दिवस पावाथी पाणवी निकळी जाय ।



उनवा

उनाळाना तडकामां मुसाफरी करवाथी सुर्यना तापथी तपेली रेति के जमीन पर पेसाब करवाथी गरम चीजो खावाथी उनवानु दरद थाय छे त्यारे बळतरा साथे पेसाब पीळो के लाल उतरे छे शरीरमां गरमी तपारो थाय छे मगज तपे छे पाणीनी तरस लागे छे हाथ पगनां तळां बळे छे ।

उष्णवातहर चूर्ण—समुद्रफळ तो १, नागकेसर हरडे साकर सुंठ बबे तोला, कोठानो गर्भ वरियाळी आमळां केसुडां कमळपुष्प पलाश मजिठ जीरुं शिलाजीत मींढीयावळ गळो हिरवणीनां फुल दरेक तो. ५ पांच साथे खांडवां. मात्रा ०॥ थी १ तोलो खजुरना पाणी साथे आपवाथी उनवा मुत्रकृच्छ तणखीयो परमीयो मटे पेसाब छुटे ...

बहुफळादि चूर्ण—बहुफळीना पान तो १० काळो धमासो तो. १० धाणा तो. ५ बेवडीना पान तो. १० साथे खांडवु. मात्रा ०॥ तोलो भुको २० तोला पाणीमां पलाळी २ ता साकर साथे पावुं ।

सामान्य उपचार

१ झीलनां मूळ तो. २॥ गायनुं दुध तो ४० मां वाटी तेमां साकर नाखी ७ दिवस पावुं मीठा विनानो घउं चोखा दुध साकरवाळो खोराक आपवो ।

२ लीलां गोखरुनुं पंचांग तो ५ ने गायना दुधमां नाखी पावुं ।

३ मींढीयावळ तथा साकर सरखे भागे खांडी १ तोलो भुको गोळना पाणी साथे आपवो ।

४ धाणा वरियाळी अर्धो अर्धो तोलो कचरी २० तोला पाणीमां रात्रे भींजावी सवारे पावुं ।

५ तांदळीयानुं मूळ तो. १ चोखाना ओसामणमां मेळवी तेमां तवखीर तो. ०॥ एकत्र करी पावुं उनवा मटे ।

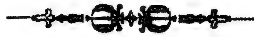
६ केसुडानां फुल सुरोखार पाषाणभेद बावळना परडिया साकर वासी पाणी साथे ७ दिवस पावुं हाक्षीयुं प्रमेह उनवा मटे ।

७ केसुडाना फुल ज. १ चणाना फोतरा ज. १ पहेले दिवसे पलाळी प्रभाते वाटी साकर ज. ३ भार नाखी ७ दिवस पावुं प्रमेह उनवा शांत थाय ।

८ हरडे बेसण धमासो पाषाणभेद गोखरु समभागे लइ टाढा पाणी साथे देवाथी उनवा मटे ।

९ घावडी। देवदार पाषाणभेद उंबरो शतावरी परडिमूळ उंदरलींडो थेडा अजमोद् समभागे लइ पाणीमां कालवी इंडी उपर लेप करवाथी उनवा मटे।

१० सो वखत गाळेलुं एक सालना जुना गोळनुं पाणी पावाथी उनवा मटे।



पेशावनां दरद्–मूत्ररोग

१ मूत्रकृच्छ, २ मूत्राघात, ३ मूत्राशयना रोग, ४ मूत्रनुं अजाणतां वही जवुं, ५ मूत्रविरेचन, ६ मूत्रपिंडना रोग.

कारण—दारु पीवाथी बहु कसरत करवाथी तीक्ष्ण अलद तथा लुखा पदार्थो खावाथी दोडता घोडानी पाछळ दोडवाथी माछलां खावाथी अजीर्ण उपर जमवाथी हिस्टीरियाथी गरमी के शरदीमां वधु वार फरवाथी वगेरे कारणे आ दरद थाय छे।

मूत्राशयथी शिश्नना छेडा सुधी मूत्रवहेवानो-बहार निकळवानो मार्ग ते मूत्रमार्ग कहेवाय छे तेनी लंबाइ लगभग ८ इंच, तेनो पोल पेनसिल जइ शके तेवडी होय छे. आ मूत्रमार्ग सोजो ग्रन्थी के बीजा कारणे संकोचाय जाय के रोकाइ जाय ते मूत्रकृच्छ अथवा मूत्रग्रन्थी कहेवाय छे. मूत्रमार्गना स्नायु संकोचावाथी जे मुतरकछ थाय छे ते [illegible] गरम पदार्थो खावाथी मिष्टान्न खावाथी तडको लागवाथी हिस्टीरियाथी अने तेवां बीजां कारणोथी थाय छे प्रमेहथी अथवा बीजा कारणे मूत्रमार्गनी त्वचा सोजी जवाथी अथवा कोइवार ते मूत्रमार्गनी आसपास गड थवाथी पण मूत्रमार्ग संकोच पामी सांकडो थाय छे तेथी पेसाबनी धार बहु जीणी अथवा घणा जोरथी टीपेटीपे उतरे छे अथवा मूत्रमार्ग साव बंध थइ जाय छे तो गमे तेटलुं जोर करवा छतां पण पेसाब उतरतो नथी प्रारंभमां दरदीने खबर नथी पडती. परमाने लीधे मूत्रमार्गमां घणो वखत दाह रहेवाथी तेनी आसपास रक्तस्राव थाय छे अने संकोचाय छे अने मूत्रमार्ग सांकडो थाय छे।

चिन्ह—आ दरद थया पछी धीमेधीमे धात पातळी पडवा मांडे छे अने ते पहेलां थोडुं जोर करवुं पडे छे पेसाबनी खणस रह्या करती होवाथी वखतो वखत जवुं पडे छे वखतो वखत पेसाब एकदम बंध थइ जाय छे मूत्र जेम जेम अटके तेम तेम मूत्रमार्ग पोळो थइ तथा मूत्रपिंडमां सोजो थइ पेसाबमां कफ उत्पन्न थाय छे. वायुना मूत्रकृच्छमां साथळना मूळमां मूत्राशयमां अने शिश्नमां तीव्र पीडा थाय छे पित्तना मूत्रकृच्छमां पीळुं लोहीवाळुं पीडा दाह साथे वारंवार मुश्केलिथी मूत्र निकळे छे. कफना मूत्रकृच्छमां शिश्न अने बस्ती भारे थइ तेना पर सोजो चडे छे मूत्रनो रंग तेलीयो के चीकाश पडतो होय छे।

पथ्यापथ्य—खावा पीवानी संभाळ राखवी प्रवाही खोराक लेवो तेल मरचां खटाइ दहीं अजीर्ण करे तेवा भारे पदार्थो बंध करवा. मगनुं ओसामण छास भात खीचडी दूध वगेरे खावा देवां. सहन थाय तेवा गरम पाणीमां

राखवुं सळी नखाववी होय तो ते दिवसे दरदीने भुख्यो राखी आराम देवो पेडु पर शेक करवो केसुडां बाफीने पेडुये बांधवां. खसखसना डोडवां उकाळी तेनो शेक करवो. विरेचन चूर्ण ०। थी ०॥ तोलो आपवुं मूत्रशलाका-सळीथी तपास कराववाथी गांठ छे के नहीं अने छे तो क्यां छे ते जाणी शकाशे. कोइपण उपाये पेसाब न उतरे तोज शलाका नखावी पेसाब काढवो बहु हुशियार माणसने हाथे ज आ काम कराववुं ।

मूत्रकृच्छारि रस—रससिंदुर गंधक शंखभस्म क्षारहत अभ्रकभस्म जसतभस्म गोखरु हरडे आमळां मोथ शतावरी काळीधराख कडु शिलाजीत खडसलियो जवखार गौमूत्रमां पकवेली लोहभस्म प्रत्येक तो ५ पांच लइ साथे खांडी बहुफळि लीलां गोखरुनुं पंचांग शेदरडि काळीधराख प्रत्येकना उकाळानी अकेक भावना आपी छाये सुकावी भुकी राखवी अथवा चणोठि जेवडी गोळी वाळवी मात्रा ४ थी १२ गोळी रातवासी पाणी साथे अथवा बहुफळि साथे के नीचे बतावेला हरकोइ उकाळा साथे आपवो. मूत्रनी अटकायतनां गमे ते जातना मूत्रकृच्छ मूत्राघात मूत्रपिंड-गुर्दानां दरद मूत्रनळोनो सोजो वगेरे मूत्राशयना व्याधी मटे छे ।

कौबेरी गुटिका—पारद गंधक वंगभस्म क्षारहत अभ्रकभस्म जवखार गोखरु हरडे शिलाजीत शतावरी साकर तलवणी गरमाळानो गोळ पाषाणभेद पत्ररानां बी आमळां जे[illegible] मळ समभागे लइ खांडी हवाले चाळी शेरडिनो रस धमासानो उकाळो ना[illegible] [illegible]नी अकेक भावना दइ चण्या जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी १२ गोळी शेरडिना रसनी साथे अथवा दुध पाणी सरखे भागे मेळवी ते साथे अथवा नाळियेरना पाणी साथे अथवा नीचे जणावेला कोइपण उकाळा साथे आपवी ।

मूत्रशलाका—आ सळी लोखंडना रुपानी मीणनी गुंदरनी रबरनी आम ४-५ जातनी थाय छे रुपानी अने गुंदरनी सळीओ पोली होय छे तेमां रुपानो पक्क वाळो होय छे ते पेशाब काढवाना काममां आवे छे रुपानी गुंदरनी अने मीणनी सळीओ मूत्रमार्गने पहोळो करवामां के मूत्रकृच्छमां वपराय छे. सळीओ १ थी १२ नंबर सुधीनो होय छे सळी नाख्या पहेलां मध लगाडी हाथमां घसी गरम करी वापरवी डाक्टरो ग्लीसरिन वापरे छे दरदीने सुवरावी तेना गोठणवाळी उभा रखाववा पेट ढीलुं राखवा कहेवुं. दरदीनो डाबी बाजु उभा रही सळीने तेलमां बोळी डाबा हाथमां शिश्न लइ जमणा हाथमां सळी तेना डाबा पडखा पर राखी मूत्रमार्गना छिद्रमां दाखल करवी जेम जेम सळी अंदर उतरती जाय तेम जमणा हाथने दरदीना पेट उपर मध्यभाग सुधी लइ जइ ते हाथ आस्ते आस्ते उपाडवो पटले सळी उभी थती आवशे अने अंदर पेसती जशे मूत्रमार्ग मोकळो हशे त्यां सुधी सळी अडचण विना अंदर पेसशे सळी नाखतां जोर करवुं नहीं जोर करतां मूत्रमार्ग फाटी जवा संभव छे. मूत्रशलाका नाखतां दरदीने थोडुं दुखशे तथा बळतरा थाशे ते न थवा सारु सेंकडे २० भाग वाळुं कोकेन प्रवाही प्रथम मूत्रमार्गमां लगाडवुं. कोइवार लोही निकळे छे पण ते ठंडु पाणी लगाडवाथी बंध थसे कोइवार

ढाढ या तावनी पेठे भुंगारो छुटशे ता ? पण आ शे तो सळी काढी नाखवी. कोइवार दरदी बेशुद्ध थइ जाय छे व्रण सोजो जाय छे सूत्रमार्गमां सोजो आवी अंदरथी रसी निकळे छे ने दरेकना योग्य उपचार करवा कोइवार विशेष संकोचने लीधे सळी जाय नहीं तो कलोरोफोर्म सुंघाडी सळी नाखवानो प्रयत्न करवो पडे छे कोइवार सळी बिलकुल जती नथी त्यारे शस्त्रकर्म करवुं पडे छे आ क्रिया हुशियार माणसनी मददथी करवी.

मूत्रकृच्छना पेशाब लावबाना सादा उपचार

१ भुरा कोरानो रस तो. १० मां २॥ तोला साकर अने ०। तोलो जवखार नाखी पीवरावो देवुं ।

२ दरभमूळ कासडानां मूळ शेरडिनां मूळ गोखरुनां मूळ बहुफळि धमासो समभागे खांडी उकाळो करी साकर नाखी पावो ।

३ गरमाळानो गोळ दरभनां मूळ बहुफळि धमासो गोखरुनुं पंचांग खड सलियो समभागे खांडी उकाळो करी पावो ।

४ आमळां काळीधराख विदारीकंद शतावरी जेठिमधनां मूळ दरभना मूळ बहुफळि समभागे खांडी १ तोला भुकानो उकाळो करी मध नाखी पावुं ।

५ काकडीना बी दारुहळदर आमळां दरभमूळ बहुफळि गरमाळानो गोळ समभागे खांडी उकाळो पावो उपर चोखानुं ओसामण पावुं ।

६ हरडे गोखरु गरमाळो पाषाणभेद धमासो बहुफळि समभागे खांडी उकाळो करी साकर नाखी पावो अथवा गोळनुं पाणी अथवा शेरडिनो रस पावो ।

७ भेंसोगुगळ तो. ०॥ दहींमां पावो. अथवा अशेळियो पाणीमां वाटी पावो. अथवा माळवी गोळ अने दुध पावुं. अथवा द्राक्ष अने साकर दहींमां पावुं ।

८ जवखार अने साकर टांक १ एक पाणीमां पावुं ।

९ चिभडानो गर नाभि उपर बांधवो ।

१० गरमाळानो गर गोखरु धमासो सुंठ अरडुसो पाषाणभेद सरखे भागे खांडी तेनी पडिकी टां २॥ अढोनी करी पाणी शेर २ मां उकाळवी. पाणी शे. १ रहे पटले गाळी पावु. मूत्रकृच्छ छुटे ।

११ पलचि शिलाजीत पाषाणभेद पिपर सांठीचोखाना ओसामण साथे पावुं ।

१२ धोळीमुशळी कौचांबीज पडलुदी सरखे भागे टां. १० खांडी घी खांड साथे चाटाडवाथी पेडुदाह मूत्रपीडा प्रमेह मटे ।

१३ पलचि पाषाणभेद कपूर शिलाजीत पिपर समभागे खांडी चोखाना ओसामण साथे अथवा माळवीगोळना पाणी साथे आपवाथी मूत्रकृच्छ छुटे ।

१४ मोरींगणीनो रस टां. ४॥ मध टां. ३ एकत्र करी पावुं ।

१५ मोंदुवेलीनो रस गायना दुध साथे पावाथी मुतर छुटे ।

१६ पाषाणभेद टां. ०॥ शिलाजीत टां. ०॥ पलचि टां. १। साकर टां. १। एकत्र करी झीणां वाटी ३ पडिकी करवी. सवार बपोर ने सांज एम ३ पडिकी गरम पाणी साथे आपवाथी मुतर छुटे शांति थाय ।

१७ जवखार खांडनुं बुरुं बेइ एकठां करी टां. २ हमेशां गायनुं दुध शे. ०॥ [illegible] टां. २ साथे मेळवी पावुं. मुतर छुटे ।

मूत्राघात–मूत्रावरोध

कारण—मळमूत्रादिना वेग रोकवाथी, लुखां (दूध घी विनानां) भोजन करवाथी, पेशाबमां पथरी उत्पन्न थई आडे आववाथी, मर्माशय अने ग्रन्थीनुं दबाण थवाथी, आघातथी, शस्त्रप्रयोगथी वगेरे कारणे वात पित्त कफ दूषित थई आ दरद थाय छे।

चिन्ह—मूत्रकृच्छ्रमां मूत्रमार्ग संकोच पामे छे अने मूत्राघातमां मूत्राशय बेरं थाय छे के पेशाबनी उत्पत्ति बंध थाय छे। बस्तिनुं मुख नीचुं छे माटे तेनी नळीओ [illegible] सूक्ष्म मुखो आवेलां छे, तेमां मूत्र [illegible] अने [illegible] वातादि दोषोना प्रकोप थवाथी ते मूत्रवाही [illegible] ओना मुखथी बस्ति पूर्ण करना दरद थाय छे। मूत्राघात १३ प्रकारना छे। वातकुंडलिकामां कुंडाळाना जेवो वायु फेरवो करे छे तेथी मूत्रनुं छिद्र रोकाई जाय छे अने पीडा साथे थोडुं थोडुं उतरे छे। अष्ठीलामां वायुथी मळमूत्रने रोकी मूत्राशय तथा गुदाने फुलावी [illegible] कठण फरती [illegible] पथ्थरनी गांठ थाय। वातबस्तिमां मूत्रना वेगने रोकवाथी पेडुमांना पेटमां दबाएलो वायु मूत्रने वहेवारी शिराओने दबावे छे। मूत्रातीतमां मूतरवानी इच्छा थता छतां मूत्र तुरत उतरे नहीं अने थोडुं थोडुं उतरे। मूत्रजठरमां मूत्रनो वेग रोकवाथी कोपेलो अपान वायु पेटमां भराई नाभि नीचे घणी पीडा करे अने मूत्र वहेवाना स्थानने [illegible] मूत्रोत्संगमां कदिरोगीनी नळीमां आवेलुं मूत्र [illegible] करवाथी मूत्रना छीणुं छिद्र मोटो [illegible] थाय, लोही नळी सहित साथे थोडुं थोडुं मूत्र उतरे। मूत्रक्षयमां [illegible] धातुओ सुकाई जवाथी शरीर रूक्ष कृश थई पेडुमां [illegible] पित्त अने मूत्राशयनो वायु मूत्रनो नाश करे छे तेथी मूत्र निकळी बळतरा थाय छे। मूत्रग्रन्थीमां पेडुना मुखनी अंदर गोळ कठण अने आमळां जेवडी गांठ थाय छे तेनी पीडा पथरी जेवी थाय छे तेथी मूत्र बहु कष्टे उतरे छे, पीडा साथे क्वचित लोही पडे छे। मूत्रशुक्रमां मुतरवाना हाजत छतां स्त्रीसंग करनारने स्थानभ्रष्ट थएलो वायु वीर्यने अथवा [illegible] तथा [illegible] पाणी जेवुं अने कष्ट साथे मूत्र उतरे छे। उष्णवात उनवाथी कसरत बहु करवाथी पंथ करवाथी तडकामां फरवाथी वधेलुं पित्त पेडुमां पेसी वायुथी [illegible] शिश्न तथा गुदामां बळतरा साथे थोडुं थोडुं मूत्र पडे छे। विड्विघातमां दुबळ अने शुष्क माणसने मळ वायु अवळे मार्गे खेंचाई मूत्रना मार्गमां आवे छे त्यारे मूत्र बहु कष्टथी उतरे छे, अने मूत्रमां मळ मिश्रित थएलो होय छे अने मूत्रना गंध पण मळवाळी लागे छे। बस्तिकुंडलमां घणा [illegible] [illegible] मारवाथी बस्ति पेडुमां गोळ गांठ थई गर्भनी पेठे कठण थई जाय छे, त्यां शूळ चूंक आवे छे मूत्र टीपे टीपे उतरे छे इंद्रिय सोजो थाय छे।

पथ्यापथ्य—सगवड होय तो हुशियार डाॅक्टर पासे नळी मुकावी पेशाब कढाववो। जे जे लक्षणो जणाय तेनो उपाय करवो जे दोष प्रधान होय तेने

अनुसरी औषधनी तथा आहार विहारनी योजना करवी. गरम पाणीमां दरदीने बेसारवो. शेक करवो अफिणना योगवाळुं औषध देवुं. मूत्रशलाका नाखवी शलाका दाखल न थाय मूत्राघात वधु वखत रहे ने मूत्रमार्ग फुटवानी बीक रहे तो मूत्र बीजे रस्ते काढवानी जरुर पडे छे ।

दिवसमां बे त्रण वखत सळी नाखी पेशाब काढवो अने सळी वाटे गरम पाणीनी पिचकारी मारी मूत्राशय धोवुं ।

मूत्रघातारि रस—पारद गंधक अभ्रकभस्म शंखभस्म प्रत्येक तोला ५ पांच, पाषाणभेद शिलाजीत जवखार सुरोखार सिंधालुण काकडीनां बी तळियानां बी हरडे साकर आमळां प्रत्येक तो. ४ चार लइ साथे खांडी धमासो अरडुसी गळोनां पान अने शेरडिनो रसप्रत्येकनो अकेक भावना आपी घुंटी सुकी कपडे खाली राखवी. मात्रा ३ थी १२ रति दरभमूळना उकाळा साथे अथवा नीचे जणावेलामांना हरकोइ उकाळा साथे अथवा चोखाना ओसामण साथे आपवी ।

सामान्य उपचार

१ पाषाणभेद हरडे धमासो गरमाळानो गोळ गोखरु बहुफलि समभागे खांडी उकाळो करी पावो ।

२ वायवरणो कांचनार गोखरु मुशळी कळथी दरभमूळ बहुफलि समभागे खांडी उकाळो करी पावो

३ वाळो शतावरी कमळकंद केळकंद आसोंध बळदाणा गळो वरियाळी बहुफलि समभागे खांडी उकाळो करी पावो

४ गरमर दुधियो हेमकंद [illegible] पाकेलां उंबरा अथवा अंजिर मोकोळुं टींडोरीनी गांठ बहुफलि समभागे खांडी उकाळो करी पावो ।

५ टींडोरीनी गांठने छाशमां के सुरकामां वाटी डुंटी उपर चोपडवुं ।

६ भुराकोळानो रस तो. १० शेरडिनो रस अथवा गोळनुं पाणी तो. १० जवखार तो ०। दुध तो २० साथे मेळवी पावुं ।

७ झीणुं लुगडुं हाथ ०॥ लइ तेने घी शे. ०। मां मथीने लुगडांने पडांपरे चोपडी ते लुगडांना कुंडली करी बेसणी नीचे दबावा बेसारवाथी मूत्ररोध मटे ।

३ मूत्राशयना रोग

कारण—बस्तिना आगळना भागमां मूत्राशय होय छे, मूत्राशयनी पाछळ मळाशय होय छे मूत्राशयनी उपर आंतरडां होय छे. मूत्राशयमां मुख्यत्वे करी दाह सोजो के जखम थाय छे. शरुआतना सोजामां पेशाब वखतो वखत थाय, थोडो थोडो उतरे पेशाब उतर्या पछी पीडा थाय पेडु अने बेसणीमां दुखावो थाय झाडो उतरता दुखे पेशाबमां परु लोही के धोळो चिकणो पदार्थ पडे कमर दुखे. परमियाथी हथियार नाखतां इजा थवाथी पथरीथी अने शस्त्र क्रियाथी आ त्वरित शोथ थाय छे. जीर्णशोथ पथरीथी मूत्रकृच्छथी हथियार नाखवाथी करोडनी इजाथी कंठमाळ अने गृध्रसी वात वगेरे कारणे थाय छे तेमां पेशाब वारंवार थाय पेशाबमां धोळो चिकणो चिकाशवाळो पदार्थ वधु जाय सखत दुर्गंध आवे पेशाब करतां घणी पीडा थाय हाजत जीरवी शकाय नहीं ।

पेशाब साफ आवे खुले तेवा उपाय करवा. टंकण फुलावी १० रतिमां २॥ तोला पाणी मेळवी पीगाळी कपडे गाळी तेनी पिचकारी मारी मूत्राशय धोवो दुधमां गोळ नाखी स्हेज गरम करी पावुं ।

मूत्राशय रोगांतक रस—शिलाजीत तो. १० पारद तो ५ गंधक तो १०, पाषाणभेद साटोडीमूळ विदारीकंद दर्भमूळ कासडानां मूळ रोसनुं मूळ काळोहंसराज शतावरी घउंलो पखरो गोखरु भोरींगणी फळ पिलुडी सुरोखार नवसार जवखार सिंधालुण साकर दरेक तो. ४ चार लइ साथे मेळवी भोंपाथरीना रसनी १ भावना दइ छाये सुकावी पछी तेमां १० तोला देशी परंडियानो करमो दइ मधमां चणोठीभारनी गोळी करवी. मात्रा ४ थी १२ गोळी पाणी साथे आपवी. गमे ते कारणे थयेली मूत्रना अटकायत मूत्राशयनो दाह सोजो के बीजां दरद मटे छे ।

१ उभी भोरींगणी धावडी काळीपाठ जेठिमध महुडानां फळ इन्द्रजव सम भागे खांडी ४ तोलानो उकाळो करी पावो ।

२ भोरींगणीना पंचांगनो रस तो. ४ मां मध तो ५ नाखी पेशाब छुटतां सुधी वखतो वखत पावुं ।

३ बळदाणाना मूळनो उकाळो पावो ।

४ दरदीने आखा शरीरे तलनुं तेल अथवा महानारायण तेल चोळी वायवरणाना पाननी बाफ [illegible] शरीरे आपवी अने वायवरणानो उकाळो परंडियुं तेल नाखी पावो ।

४ मूत्रनुं अजाणतां वही जवुं

मूत्राशयना मोढानो स्नायु ढीलो थवाथी इच्छा विना के उंघमां पेशाब वही जाय छे आ दरद बाळकोने बधु होय छे अने मोटा उमरे बंध थइ जाय छे केटलाकने पेशाब टपक्या करे छे अने अटकाववानो प्रयत्न कर्या छतां अटकतो नथी ग्रंथी कृमि करोड रज्जुना रोग तथा तेवां बीजां दरदने लीधे पण टपक्या करे छे. बाळकने रातमां एक बे वखत पेशाब करवा जगाडवुं पडखावुं सुवरावबु लोह बंग के अफिण वाळी दवा आपवी मूत्रनो जुलाव आपवो. मूत्रांकुश रस के कर्पूरसुंदरी वटी योग्य मात्राथी आपवां ।

मूत्रातिसारहरी वटी— पारो तो. २॥ हिंगळो तो. २॥ कपूर तो. ३, अफिण शेकेला कांकचीयानां मींज शेकेला इन्द्रजव दरेक तो २ बे कपडछान करी मधमां मेळवी काळी तुळसीना रसनी भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळी छाये सुकाववी हमेशां १ गोळी सवारमां खाइ उपर दुध पीवुं पान बी: खावुं ७ दिवस खावाथी घणी वखत थतो पेशाब अटके अने काबुमां आवी जाय आ गोळीथी गरमी लागे तो भुराकोळानो रस तो. ५ दहीं तो १० साकर तो. ५ गायनुं ताजुं घी तो. ५ बधां मेळवी पी जावुं अथवा काळी घराय पलाळी खावी अथवा जुना गोळनुं पाणी पावुं. आ गोळीथी स्त्रीओने सोमरोग पडतां पाणी पण मटे छे ।

जरिठी-मादरु उपाय

१ देशी चोखा शे० ०॥। कत्थायेर गुंद शे. ०। थेहने शेकी खांडी पछी तेमां साकर शे ०॥। मेळवी खांडी सवार सांज २ तोला खवरावबाथी इच्छी विना थतो के बहु थतो पेशाब अटके ।

२ कांटाळी मायां तो. १० काची फटकडी तो ५ साथे खांडी कपडे चाळी सवारमां ०। तोलो पाणी साथे दिवस १४ सुधी आपवुं बच्चांने के मोटाने उंघमां पेशाब थतो होय ते अटके ।

खेरसार मीठा इन्द्रजव त्रिकटु त्रिफळा नसोतर समभागे खांडवां तेमांथी १ तोला भुकीने २ शेर पाणीमां उकाळी ०। शेर रहे एटले गाळी लइ तेमां बोकडानुं मूत्र १ पैसाभार नाखी पाइ देवुं ।

४ संवादाणा तो १ भांगना बी काळा तल खसखस अजमा दरेक तो. ०॥ साकर चार खांडी कपडे चाळी गोळ शे ०॥ मां गोळी चणिया बोर जेवडी करवी ४ थी ५ गोळी पाणी साथे सवार सांज आपवी तो वारंवार पेशाब टपक्या करतो होय ते अटके ।

५ सुखडनो वेर घाणी वान्डींग लीमडानी छाल एलचि नागकेसर मोथ समभागे खांडी तेमांथी २ तोला भुकामां २ शेर पाणी मुकी उकाळवुं पाणी शेर ०। रहे त्यारे साकर मेळवी ७ दिवस पावाथी आराम थाय ।

६ हरडे आमळां मोथ धाणा धावडीनां फुल कागदी बदामनां मींज एलचो दुधियो हेमकंद गरमाळानो गोळ मरी [illegible] शतावरी तो. १० गोखरु पंचांग लावुं तो. ३० साथे [illegible] उपर प्रमाणे उकाळो करी मध नाखी पावो ।

७ मीठासरगवानुं मूळ लावुं तो. ४ पाणी शेर १ मां उकाळी पाणी शेर ०। रहे त्यारे साकर तो ५ नाखी २१ दिवस पावाथी इंद्रीमे मोढे घडीघडी पाणी के पेशाब आव्या करे ते मटे ।

८ आकडानां फळ शे० ०। ने छाये सुकावी तेमां काळा तल शे. ०। नाखी खांटो तेनी गोळमां गोळी ०। तोला भारनी करवी सवारे १ थी २ गोळी वासी पाणी साथे खवरावबी उंघमां पेशाब थतो अटके ।

९ मीठी दुधेलीना पानना रस तो ४ बकरीनुं दुध शे. ०। बन्ने भेळां करी १४ दिवस सुधी पावाथी घणां वरसनो मूत्ररोग मटे पेशाबनो स्त्राव अटके ।

मूत्रविरेचन-पेशाबनो जुलाब

मूत्रविरेचनी बटी—हिंगळो तो. १॥ जायफळ तो १॥ कस्तुरी वाल १॥ लोहभस्म तो. १॥ टोपरं तो. ८ साकर तो. १४ बधां वाटी चणिया बोर जेवडी गोळी करवी सवार सांज अकेक खावी मूत्रकृच्छ मटे पेशाब साफ आवे ।

१ एक मोटा टोपमां पाणी गरम करी तेमां वींछी नाखवो पाणी उकळी जाय एटले वींछी काढी नाखवो पछी तेमां माणसने बेसारवो तेथी तुरत पेशाब छुटे मूत्रकृच्छ मटे ।

२ केळना थडनो रस तो. १० मां साकर तो. ३ नाखी पावाथी पेशाब छुटे ।

३ गुंदारिनां बी तो. ५ साकर तो. ५ खांडी तेनां १४ पडिकां ... सवारे पडिकुं मधमां मेळवी चाटवाथी मूत्रकृच्छ तथा पेशाबना बधा रोग मटे।

४ नांदळीयानां बी खजुरेनां बी पाषाणभेद नसोतर दरेक तो. ... अर्धी साथे वाटी पाणीमां मेळवी पावाथी पेशाब छुटे।

५ सुरोखार तथा समुद्रफळ सरखे भागे खांडी कपडे ... पाणीमां ... इंद्री उपर चोपडवु तथा रेशमना दोरानी वाट करी तेने ... ... वाट इंद्रीमां चडाववी तो पेशाब छुटे।

६ नवसार तो. ०) साकर तो १ मां मेळवी पाणी साथे पा...।

७ खजुरना रसमां सुरोखार नाखी पावाथी पेशाब छुटे।

८ कांटाळा अशेळियो जेठिमध चंदन समभागे खांडी २ तोला ... पाणीमां वाटी साकर मेळवी पावुं।

९ ... गोखरु वायवरणो पाषाणभेद गरमाळानो ... समभागे ... ३ तोला भुकानो उकाळो करी मध नाखी पावो ... ।

१० जवखार तो. ०॥ छाशमां पावा पेशाब छुटे।

११ एरंडमूळ पाणीमां वाटी ... उपर चोपडवुं पेशाब छुटे।

१२ ... जवखार ... पेशाब छुटे गरमी मटे।

१३ ... पाणीमां वाटी रस काढी तेमां सुरोखार नाखी पावो।

६ मूत्रपिंडना रोग

मूत्रपिंड गुर्दा ... छे. दरेक गुर्दो ... भागमां ... पाछळनी ... पहोळाइ २ ... होय छे ११ मी पांसळीथी ... शरु थाय छे. ... गुर्दा ... अने ऊपर पिंड होय छे मूत्रपिंड ... सूक्ष्म सूत्रनळीयोनो बनेलो ... छे।

चिन्ह—शरुआतमां टाढ वाइने ताव आवे छे माथु ... उलटी ... थाय छे पडखामां दुखावो थाय छे मूत्रपिंडनी जे बाजु ... रोग त्यां भार बोजो लागे छे. वृषणनी गोळी उंची चडी जाय छे. ... लागे छे झाडो कबज थाय छे पेशाब लाल काळो थोडो थोडो उतरे छे. ... दरद साथे शरीरमां पण बीजा विकारो देखाय छे आंखनां पोपचां सोजी जावे छे चहेरा उपर थेथर आवे छे हाथे पगे सोजा चडे छे दरद मटवा आवे त्यारे पेशाब साफ अने घणो उतरवा मांडे छे. मूत्रपिंडना घणा भागमां सोजो थयो होय तो आंख वगेरे इन्द्रिनुं तेज कमी थाय छे. घेन बकवाद उलटी ... स्मरण शक्ति विचार शक्ति नष्ट थवी, बेशुद्धि अने आंचकी एवां चिन्हो जणाइ दरदी मरण पामे छे।

मूत्रपिंडनो तीक्ष्ण सोजो—घणो दारु पीवाथी मूत्रपिंड पर आघात थवाथी, ताव कालेरा गांठीयो वा के पथरी जेवा दरदोथी, जलद दवाओ जलद पदार्थो वखतो वखत खावाथी, शरदी लागवाथी वगेरे कारणे आ दरद थाय छे।

मूत्रपिंडनो दीर्घ सोजो—घणो दारु पीवाथी जेरी तावथी तथा तेवां बीजा कारणोथी थाय छे तेमां प्रथम टाढ आवी ताव चडे छे ...

मूत्रपिंड आगळ भार जेवुं जणाय छे मोळ उलटी थाय छे शरीर पग मोजे चडे छे मोढुं सोजे छे पेटमां पाणी भरावाथी ढोल जेवुं लागे छे हाथ पग चहेरे उपर थेथर थाय छे आंखो पोपचां सोजी जाय छे वृषण अने पगनी चामडी फाटे पाणी झरे छे नजर टुंकी थाय छे खोराक पर रुचि थती नथी भुख लागती नथी

पथ्यापथ्य—तीक्ष्णसोजामां दरदीने हरवा फरवा देवो नहीं स्वेदल अने रेचक दवाओ आपवी अळसिनी पोटीस मुकी शेक करवो दीर्घसोजामां जव, खडसलीयानु मोथनुं के धमासानुं उकाळेलुं पाणी ठारीने पावुं. खोराकमां दुध राब मगनु ओसामण वगेरे आपवुं कमर उपर गरमा गरम पाणीनो शेक करवो शरदीमां के टाढमां रहेवुं नहीं दरदीनुं बिछानुं उपली मोंये के सुकी जगाये राखवुं तेल मरचां मसाला खटाइ आंबली अजीर्ण करे तेवी चिजो वगेरे बंध करवुं लीलुं शाक थोडुं खावुं।

मूत्रपिंड व्याधिशमन रस—पारद गंधक रससिंदूर अभ्रकभस्म लोह भस्म प्रत्यक तो. ५ पांच, शिलाजीत तो. १० कडु तो. २० हरडे तो. १० गोखरु बीलीनो गरभ रसवंति सिंधालुण दारुहळदर आंबाहळदर दरभमूळ धाणा वंशलोचन एलचि जीरुं भोंआंबली हळदर प्रत्येक तो ५ पांच लइ साथे खांडी मेळवी लींमडाना पाननो रस तलवर्णीनो रस कुवानो रस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ वाल जेवडी गोळी वाळवी मात्रा ३ थी ६ गोळी चोखाना ओसामण साथे अथवा शेरडिना मूळना उकाळा साथे आपवी मूत्रपिंड गुर्दानो दाह सोजो तथा मूत्राशयनां बधां दरद मटे छे

सामान्य उपचार

१ मोथ हरडे आमळां जेठिमधनां मूळ कडु बहुफळि समभागे खांडी उकाळो करी मध नाखी पावो मूत्रपिंडनो सोजो मटे।

२ शतावरी केसुडां कुष्ठ देवदार बहुफळि समभागे खांडी उकाळो करी पावो मूत्रपिंडनो दीर्घवरम मटे।

३ राती शेरडिनां मूळ धाणा जीरुं गळोनां पान अरडुसीना पान बहुफळि समभागे खांडी उकाळो करी मध नाखी पावो तो मूत्रपिंडनो सोजो मटे।

४ आंबाहळदर करियातु काळीधराख परडिनां मूळ भोंआंबली बहुफळि समभागे खांडी उकाळो करी मध नाखी पावो मूत्रपिंडनो सोजो मटे।

५ गोखरु शतावरी परडिनां मूळ पाणीमां वाटी दुध नाखी पावाथी मूत्र पिंडमां निकळतुं शूळ मटे।

६ अरडुसीना रसमां साकर नाखी पावाथी मूत्रपिंडमां पकठो थयेलो पेशाब छुटे।

७ [illegible] नां पान धमासो मजिठ समभागे खांडी उकाळो करी पावाथी [illegible] पक थयेलुं पण पेशाब वाटे निकळी साफ थाय।



प्रमेह—परमो—परमीयो

अतिविषयद् दुष्टस्त्रीरजःबलसं मादभिक्रमथात ॥
हस्तक्रियया दूषितरक्तादत्यंतचाहृ पानेन ॥ १ ॥
कामोत्तेजक नाटकसीनेमादर्शनाद् दिवास्वापात ॥
नानामेहाः पुंसामास्यासैर्येर्भवंति कफकोपात् ॥ २ ॥ र. तं. ॥

१ लालामेह २ सांद्रमेह ३ पिष्टमेह शुक्लमेह ४ शुक्रमेह वीर्यस्राव थवात ५ सिक्तामेह ६ उदकमेह ७ रक्तमेह ८ मांजीष्ठमेह ९ वसामेह १० ओजोमेह ११ मधुमेह वगेरे जातना प्रमेह रोग थाय छे।

कारण—बधां प्रमेहनां सामान्य कारण-अति विषयथी दूषित स्त्रीना [illegible]थी अति गरम खोराक खावाथी काचां खोरां के बहु मिष्टान्न बजारनी मिठाइ [illegible]वाथी ऋतुमति स्त्रीना संगथी लोहीना बगाडथी जलद दारु पीवाथी के दारुना [illegible]णथी वानी टेवथी मूत्रल द[illegible]ओ हरवखत खावाथी इन्द्रियमां वारंवार सळीयो [illegible]वाथी मूत्रमार्गनो संकोच थवाथी [illegible]तक्रियानी खराब टेवथी [illegible] [illegible]ो [illegible]वाथी शृंगारिक नाटको जोवाथ[illegible] रात्रे उजागरा अने दिवसे उंघ करवाथी [illegible]रे कारणे आ दरद पेदा थाय छे

चिन्ह—बधा प्रमेहनां सामान्य चिन्ह शरुआतमां इन्द्रियना फुलना [illegible] [illegible]ले खजवाळ आवे छे पछी [illegible] [illegible]चीक निकळे छे. [illegible] [illegible] [illegible]रमो वधती जाय छे. शरुआतमां रसी पाणी जेवी निकळे छे ने थोडे दि[illegible] [illegible] जेवी पण जेनी घोळा के [illegible]श पडतो निकळे छे पछी पेशाब [illegible] [illegible] [illegible] थाय छे. प्रमेह शरु थया [illegible] ३-४ दिवसे इन्द्रिना फुल [illegible] [illegible] [illegible]दा लालचोळ थाय छे अने कोइवार सोजी जाय छे. इन्द्रिना मो[illegible] सोजो [illegible]रे होय छे मूत्रमार्ग सांकडो थइ जाय छे रसी वधे छे. केटलाकने तो रात [illegible] रसो टपक्या करे छे अने ते घाटी पण जेवी पीळी निकळे छे. इन्द्रियमां [illegible] सबाका बहु थाय छे पेशाब करता आखी मूत्रनळीमां पीडा थाय छे [illegible]रण के मूत्रनळीनो अंदरनो भाग सोजेलो होवाथी मूत्र साथेना क्षारने स्पर्श [illegible]ण थाय छे ते तथा मूत्रना धार आवतां मूत्रनळीने तथा इन्द्रिने उपसवुं पडे [illegible]त्यारे दरदी उंचो श्वास राखी धिमे धिमे पेशाब करवानो प्रयत्न करे छे. [illegible]टलीक वार पेशाबनी नळी परुथी पुराइ जवाथी २ ३ धार थाय छे. उंघमांथी [illegible]चानक वेदना थवाथी जागी उठे छे आवी स्थितिमां स्त्रीसंगनी इच्छा थतां [illegible] वश थाय छे त्यारे पीडा बहु वधी पडी दरदी बहु त्रास पामे छे शिश्न [illegible] वळी जाय छे. केटलीक वार पेशाब वाटे लोही पडे छे पेशाब मुश्केलिये [illegible]तो छे. गांठ्यो थाय छे घारां चांदां पडे छे. साथळना मुळमां ओळींयो थाय छे. [illegible] प्रमाणे प्रमेहनां सखत चिन्ह जणाया पछी धिमे धिमे पीड ओछी थाय छे [illegible]नी बहु घट्ट होय ते पातळी थवा मांडे छे अने चिन्हो ओछां [illegible]तां जइ दरद [illegible] जाय छे. परमियावाळा पुरुषथी गर्भ रहेतो नथी अने उपदंशवाळा दरदीथी [illegible]तो गर्भ पडी जाय छे. परमियावाळा स्त्री पुरुषोना परस्पर गुप्त व्यभिचारथी

आ दरद प्रजामां बेहद फेलायुं छे अने घर करी बेठुं छे. आयुर्वेदमां २० जातना प्रमेह वर्णव्या छे पण मुख्य प्रचलित फेलायेलो पोमेलो प्रमेहोज आंही वर्णव्या छे।

[illegible] बधा प्रमेहमां सामान्य पथ्यापथ्य तथा सारवार [illegible] करवा देवो नहीं [illegible] प्रकारवाळा प्रकारनो [illegible] राखवो. हाळवा चालवाथी, [illegible] थवा [illegible] १५–२० दिवस आराम आपवो घणाने [illegible] करवो [illegible] परसेवो मटी जाय छे. ब्रह्मचर्य बराबर पाळवुं मन [illegible] विचार न करवा सारुं पवित्र वांचन वांचवुं खोराक हळवो [illegible] जलद भारे पदार्थो [illegible] औषधमां अने [illegible] (मसाला [illegible]) दाळ थोडुं [illegible] खावी लोटना पदार्थ [illegible] तमाकु [illegible] विशेष [illegible] छोडवुं उकाळी ठारेलुं पाणी [illegible] [illegible] विचकारी वती धुवे छे तेथी के [illegible] [illegible] कोथळीना [illegible] टिंगाइ रहे तेना गोठवण [illegible] इन्द्रिय उपर के पेडु उपर [illegible] मुकावना [illegible] पर [illegible] अणाव जोईए [illegible] लगाडवी [illegible] पाइ देवी [illegible] करवो [illegible] [illegible] आ [illegible] [illegible] विचार करी [illegible] पण [illegible] छोडवो [illegible] लोहने [illegible] अन्नपान खावुं।

जे जे प्रमेहमां विचकारी मारवानी होय तेमां पाणी उकाळीने के [illegible] करवानुं होय तो तेमां १०० थी १२० अंश गरम पाणी [illegible] [illegible] मूत्रमार्ग [illegible] पाणी [illegible] छोडे छे ते निकळी जाय पटले फरी [illegible] पाणी नाखे [illegible] अंदरनो बगाड धोई नाखे छे. आ क्रिया संभाळथी [illegible] थाय छे।

४ लालामेह

[illegible] अस्मिन्‌ [illegible] स्यः ॥

[illegible] प्रमेहः [illegible] रोगः ॥ १ ॥ [illegible] ॥

[illegible] लाळ तातणा जेवो चिकणो पदार्थ लिंगमांथी निकळे छे. आ प्रमे [illegible] छे।

[illegible] गोळी— [illegible] वज ओथ कडियातु [illegible] देवदार हळदर [illegible] पिपरीमूळ [illegible] बेहां [illegible]

गजपिपर सुंठ पिपर मरी सुवर्णमाक्षिक भ . . खर साजीखार सिंधालुण संचळ पानडी प्रत्येक तो ४ चार, तेमांतर दंतिमूळ तमाल तज पलचि वंशलोचन प्रत्येक तो. १६ सोळ, लोहभस्म वडवाइना पुटनी ना ३२ साकर तो. ६४ शिलाजीत तो १२८ शुद्ध गुगळ तो १२८ बधां विधिवत साथे मेळवी वाल वालनी गोळी वाळवी मात्रा ४ थी ८ गोळी घी साथे चटाडवा २० जातना प्रमेहमां तात्कालिक छे. तथा मूत्राघात पथरी वृषणवृद्धि वघरावळ पांडु कबजीयत सारणगांठ श्वास खांसी हरस वरल भगंदर स्त्रीओना ऋतुदोष पुरुषोना वीर्यदोष वगेरे दर्दमां अशाय छे . . . छे ।

मेहारिवटी—शतावरी कमळकाकडीनां मींज पलचि त्रिफळा काळीमुसळी कोठानो गर्भ धोळीमुसळी साटोडी मूळ रोहीष वजमोद आमळा पाषाणभेद दरेक तो ५ पांच, मरी त्रणकभाव नागकेसर दरेक तो. १ एक, आसंध तो. ४ लोहभस्म तथा गळो . . ५ पांच, साकर गुगळ शिलाजीत ईंगोरियानो गरभ दरेक तो. १० दस बधा . . . . पानना रसमां गोळी चणाठि जेवडी वाळवी ६ थी १२ गोळी पाणी साथे आपवी . गोळीयो परमो तथा बीजा कफजन्य प्रमेह मटे ।

१ कुष्ठ धोळीमुसळी कौंचानां मींज आमळां शतावरी पखरी समभागे लइ बधानी चूरणी . . . कर मेळवी १ थी २ तोला पाणी साथे आपवुं लालमेह लाळीया परमो मटे ।

२ . . . . गोखरु समभागे खांडो ५ तोला भुकानो काढो . . . . . नाखी पावाथी लाळीयो परमो तथा बीजा कफजन्य बधा प्रमेह मटे ।

३ मोंआंवळांना . . मां २० दाणा तीखाना नाखी वाटी स्वरस पावाथी बधा प्रमेह मटे

२ सांद्रमेह

> घट्टपदार्थाद्रुग्य घट्टपदार्थेन मिश्रितं मूत्रं ॥
> स्रवतेऽच्छमुपरि किंचित् कफातिरेकेण सांद्रमेहोऽसौ ॥ र. तं. ॥

मूत्र रातवासी राखवाथी नीचे घाटो रगडो जामे अने पेशाब करती वखते पण पेशाब डोळो लागे ते कफप्राधान्य सांद्रमेह कहेवाय छे ।

भीमपराक्रम रस- पारद तो. ८ गंधक तो. ८ नागभस्म तो. ४ साथे मेळवी पर्पटी ढाळी खरल करी तेमां कांतलोहभस्म राजावर्तभस्म शिलाजीत शुद्ध प्रत्येक तो २ बे मेळवी चणोठिना मूळनो उकाळो रिंगामणीनो स्वरस कोठाना पाननो रस लींमडाना पाननो रस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ सुकावी लोटानी खरलमां नाखी त्रिफळाना उकाळानी ७ भावना दइ सुकावी घुंटी राखवुं पछी रिंगामणी अने बावळनो गुंद बन्ने सरखे भागे खांडी उपला भुकानी बराबर सरखे भागे मेळवी शीशो भरवो मात्रा ३ थी ६ रति वासी पाणी (रातनुं वासी) साथे लेवुं खाटां पदार्थ वजारनी मिठाइ अजीर्ण करे तेवी चिजो खावा

नहीं थयी आतना प्रमेह तथा मधुमेह मटे. धातुस्राव सोमरोग स्त्रीओने थतो श्वेतस्राव वगेरे मटे छे ।

पिचकारी—हरडेदळ मासा ९ आमळां मासा ९ गळो उंचा मारली मासा ५ फटकडी फुलावेली मासा ३ बधांने पाणी शे. १॥ मां नाखी उकाळवुं पाणी अरधु रहे त्यारे मोरथुथु फुलावेलुं मासा ५ वाटीने नाखवुं गळी जाय पछी कपडे गाळो पिचकारी मारवाथी परमो बळतरा रसी मटे ।

हळदर दारुहळदर हरडे बेडां आमळां समभागे खांडी ४ तोला भुकामां २० तोला पाणी अने २ तोला मध नाखी रात्रे पलाळी राखवुं सवारे गाळी लई दिवसमां २ वखत पावुं सांद्रमेह मटे ।

२ पिष्टमेह-शुक्रमेह

श्वेत पिष्टसमं वा मुहुर्मुहुर्मूत्रमुत्सृजन्पुरुषः ॥
शुक्रं पिष्टवदत्यर्थं क्षीणं विद्याच्च पिष्टमेहार्तं ॥ १ ॥ र. तं. ॥

आमां पेशाब करती वखते रुंवाडां उभां थाय रोमांच थाय अने पेशाबनी साथे लोटना जेवी कणिआ पडे मूत्र सफेद रंगनुं अने वखतो वखत आवे ।

हरिशंकर रस—रससिंदुर अने अभ्रकभस्म समभागे लई लीलां आमळांना रसनी ७ भावना दई घुंटी राखवुं अथवा चणोठि जेवडी गोळीयो वाळवी. सवार सांज बबे गोळी पाणी साथे के द्राक्षासव साथे आपवी ।

[illegible] रस—[illegible] पाई [illegible] रससिंदुर शुद्धगंधक प्रत्येक तोला १० दश, शेमळाना गुंद बावळना गुंद शेमळानी छाल [illegible] चिकणीसोपारी अभ्रकभस्म लाल प्रत्येक तो. ५ पांच लई साथे मेळवी [illegible] रसनी १ अने गळोना रसनी १ भावना देवी. मात्रा ३ थी ६ रति पाणी [illegible] आपवाथी बधी जातना प्रमेह बहुमुत्र मधुमेह धातुस्राव वगेरे मटे तथा [illegible] छे ।

मस्तक्यादि चूर्ण—रुमीमस्तकी बहुफळिनां पान गळोसत्व गोखरु उंटीगणनां बीनो मगज इंद्रजव मीठा, चणकबाब धोळीमुशळी काळीमुशळी कौचांना बीनो मगज पखरो बधां सरखे भागे खांडी कपडछान करी बधांनी बराबर देशी खांड मेळवी हमेशां १ तोलो पाणी साथे आपवुं वार्यस्राव शुक्रमेह धातुस्राव परमो मटे ।

मेदालकडीने खांडी कपडछान करी तेमांथी ४ मासा साकरवाळा दुध साथे आपवाथी धात जती अटके शुक्रमेह मटे ।

४ शुक्रमेह-वीर्यस्राव-शुक्रपात

वीर्ययुतं वीर्याभं मेहति मूत्रेण बलवदुत्सृष्टम् ॥
निष्कटकाचसमं वा क्षीणनरं शुक्रमेहिनं विद्यात् ॥ १ ॥ र. तं. ॥

वीर्य सरखो घाटो धोळो अथवा वीर्य मिश्रित पेशाब वखतो वखत आवे छे आ प्रमेहवाळो दरदी नबळो बेचेन निस्तेज अने क्षीण थतो जाय छे आ प्रमेह कफदोषजन्य छे ।

महावंगेश्वर रस—पारद तो. १० लइ तेमां सोनानो वरख तोलो १ मेळवी पछी तेमां गंधक तो १० नाखी कज्जळी करी अग्नियो पीगाळी केळना पान पर पाथरी ढाळी घुंटी तेमां वंगभस्म तो ५ लोहभस्म अभ्रकभस्म मोतिनी पिष्टी प्रवालपिष्टी भीमसेनी कपूर जावंत्री बावळनो गुंद शेमळानो गुंद चणकबाब पत्रज शेमळानो छाल प्रत्येक तो. २॥ अढी मेळवी केळना कंदना रसनी १ एक भावना आपी सुकावी घुंटी राखवुं मात्रा ३ थी ६ रति मध साथे चटाडी उपर पाणी पावुं बधा प्रमेह मधुमेह बहुमूत्र स्त्रीओना श्वेतप्रदर रक्तप्रदर धातुस्राव वगेरे मटे छे तथा घणो पौष्टिक छे।

५ गुगळ वटो—भेंसो गुगळ शे. १ सरगवानां पान राता शेतुरनां पान चमेलीनां पान मोगरानां पान त्रिफलापरानां पान देशी चानां पान उंबरानां पान दरेक शेर १ एक लइ साथे मेळवी अधकच्चां करी एक कोरी हांडलामां अर्धां पान भरी वच्चमां गुगळ मुकी उपर पान नाखी हांडलाने मोंढे बंध करी ॥ शेर मीठा तेलनो दीवो नीचे बाळवो तेल बळी रहे त्यारे [illegible] करी तेमांथी ०। थी ०॥ तोलो गायना घी साथे खवराववाथी [illegible] शक्ति आवे परमो मटे।

१ बावळनां पान चमेलीनां पान मोगरानां गुलेखार समभागे वांटी १ तोलो पाणी साथे आपवाथी बधी जातना प्रमेह मटे।

२ हिंग्दणीना पाली [illegible] तो १० थी ३ तोला [illegible] नाखी पावं प्रमेह वीर्यदोष मटे।

सिकतामेह—रजोमेह—सिकतामेह

कंकणिका [illegible] सह मूत्रेणाऽऽयांति [illegible] मूत्रे।
क्षीणबल [illegible] सोऽश्मनाद्गिनो नभो त्रिलोकयेत ॥ १ ॥ [illegible]

पेशावमां [illegible] जेवी कणिकाओ आवे छे अने पेशावने स्थिर रहेवा देतां नीचे रेति जेवी कणिकाओ देखाय छे आनो दरदी दिवसे दिवसे क्षीण थतो जाय छे जठराग्नि मंद पडे छे झाडो अनियमित होय छे पेशावनी हाजत थवानो वखत लागे छे इंद्रिमां अंदरना भागमां खजवाळ आवे छे तेथी दरदी लिंगने मसळया करे छे तेथी सोजो चडे छे।

वसंततिलक रस—लोहभस्म वंगभस्म माक्षिकभस्म सुवर्णभस्म अभ्रकभस्म रौप्यभस्म प्रवालपिष्टी मोतिनी पिष्टी जायफळ जावंत्री प्रत्येक तो. ४ चार, तज तमाल पत्रज नागकेसर प्रत्येक तो १० दस साथे मेळवी त्रिफळाना उकाळामां घुंटी मात्रा २ थी ३ रति मध के पाणी साथे आपवी २० जातना प्रमेह धातुस्राव मधुमेह बहुमूत्र प्रदर मूत्र वीर्य अने स्त्रीना ऋतुनां दरदो मटे छे तथा पौष्टिक छे।

सिकतामेहहरी वटी हिंगुलभस्म केसर लविंग जायफळ चणकबाब मरी पत्रज अफिण अकलकरो बधां समभागे लइ नागरवेलना पानना रसमां चणोठि जेवडी गोळी वाळवी सवार सांज २ गोळी घी साकरमां खवरावयो परमो मटे।

मालमादि चूर्ण—तालममिश्री अथवा सकाकुलमिश्री धोळीमुशळी काळीमुशळी पिपरीमूळ रुमीमस्तकी तज झोणी जावत्री दरेक तो. ०॥ अर्धो, केसर तो. ०। बधाने खांडी कपडे चाळी २१ पडिकां करवां पाणी शेर ०। मां १ पडिकुं नाखी उकाळी तेमां १॥ तोलो साकर तथा १॥ तोलो घी नाखी पाइ देवुं खाटुं खारुं तीखुं खावा देवुं नहीं धात जती होय शुक्रमेह कमर दुखती होय ते मटे ।

६ उदकमेह (बहुमूत्रना)

मुहुरच्छं शीतं सितमुदकोपममूत्रमुत्सृजेत्पुरुषः ॥
निर्गंधं कृशदेहो मंदाग्निर्निर्बलो ह्युदकमेही ॥ १ ॥ र. तं. ॥

पेशाबमां गंध आवती नथी धोळो अने ठंडो पाणी जेवो स्वच्छ पेशाब थाय छे तेम वखतो वखत पेशाबनी हाजत थाय छे दरदीनुं शरीर निर्बळ कृश निस्तेज बने छे पाचनशक्ति मंद थाय खोराक पर के कोइपण कामकाज पर दरदीने प्रीति रहेती नथी ।

इंद्रवटी—रससिंदुर बंगभस्म आमोंधगनी छाल साकर बधां सरखे भागे मेळवी शेमळाना मूळनी छालना रसमां घुंटी चणोठि जेवडी गोळी वाळवी मात्रा २ थी ४ गोळी पाणी साथे आपवाथी बधा प्रमेहना तथा धातुस्रावना दरदमां उत्तम छे ।

शुक्रमातृका वटी—पारद, गंधक, अभ्रकभस्म, लोहभस्म दरेक तो. ४ चार, गोखरु हरडेदळ बेडांदिळ आमळां तमालपत्र पलविरुलाल रसवंति धाणा शेकेला, चवक जीरुं तालीसपत्र टंकण फुलावेलो दाडमनी छाल दरेक तो. २ बे साथे मेळवी तेमां ५ तोला गायना घीनो करमो दइ बकरीना दुधमां वाटी गोळी चणोठि जेवडी करवी सवार सांज ३ गोळी पाणी साथे [illegible] मीठा दाडमनो रस २-३ तोला पावो अथवा बकरीनुं दुध पावुं ।

१ काळा तलनो खोळ टां. १५ गोळमां गोळो करी ५ दिवस खावाथी उंघमां पेशाब थतो अटके ।

२ पखरो टां. १ उटींगण टां. १। मुशळी काळी तथा धोळी टां. २॥ साकर टां. ५ दुध साथे फाकी भरवी बहुमूत्रता टळे ।

३ नदीनो सेवाळ टां. १ खांड टां. १ दिवस ३ खावाथी बहु पेशाब थातो अटके ।

७ रक्तमेह

सक्षारमुष्णमस्रं विस्रं मेहेन्नरः सदाहं वा ॥
पित्तात्सदाहहृद्गलनेत्रोऽसौ रक्तमेहवान्मनुजः ॥ १ ॥ र. तं. ॥

दरदीने पेशाब वाटे खारुं उष्ण फाटी गयेलुं लोही पडे छे अथवा तेवा लोही मिश्रित पेशाब उतरे छे अंदरना भागमां दाह थाय छे दरदीने मोढे शोष तृषा आंखो हृदयमां जलन झाडा पातळा अथवा कबज होय छे आ पित्तप्रकोपजन्य प्रमेह छे ।

गोक्षुरादयवलेह—लीलां गोखरुनुं पंचांग शेर २० लइ कचरी तेमां आठ गणुं पाणी मुकी चतुर्थांश पाणी रहेतां सुधी उकाळी गाळी लेवुं पछी ते पाणीमां बिदो चारोली खेरसार सुंठ पिपर मरी हरडे धावडीना फुल जेठिमधनां मूळ गळो पलचि नागकेसर तज जावंत्री वंशलोचन आसोंधरो शेमळानां मूळ मजिठ अगथियाना फुल बावळनो गुंद बळदाणा तुळसीनां बी हळदर आमळां अतिविष मोथ बीलीनो गरभ कचुरो कपुरकाचली वंगभस्म माक्षिकभस्म कासोंधरो दरेक तोला १० दश, शतावरी तो २० आसोंध तो. १५ केळकंद सुको तो. २० गोखरु तो. ३० बधांने खांडी चाळी उपला उकाळामां नाखी पकाववुं सारी रीते घाटुं थवा आवे पटले तेमां घोयेली साकर शेर ४० नाखी चाटवा जेवुं थतां सुधी पकाववुं उपला कोइपण औषध साथे अथवा पकलुं आ चाटण १ थी ३ तोला सुधी चटाडवुं. बधा प्रमेह तथा मूत्र वीर्यना तमाम दरदमां तात्कालिक फायदो करे छे, शक्तिप्रद तथा पौष्टिक छे ।

रक्तमेहांतक रस—शुद्धरसकपूर वंगभस्म यशदभस्म रौप्यभस्म मुक्ताभस्म वंशलोचन दरेक बबे तोला, प्रवालपिष्टी तो. ८ साथे मेळवी केळनो कंद शतावरी रिसामणी रसवंती चणोठिनां पान प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ गुंटी राखवी. मात्रा ३ थी ६ रति मध माखण साथे आपी उपर पाकेलां उंबरां के अंजीर खवराववां ।

१ मोटी दुघेली छा[illegible] ओटींगण बेइ सरखां लइ बन्नेनी बराबर साकर मेळवी [illegible] २ तोला भुको पाणी साथे औषधथी रक्तप्रमेह मटे ।

२ कांसकीनां पा[illegible] तो ४ नागकेसरनो भुको तो ०॥ साकर तो. २ साथे मेळवी पावुं. ७ [illegible] पेशाबमां लोही पडतुं अटके परमो मटे ।

३ हरडेदळ छी[illegible] गोपीचंदन दरेक टां ३ त्रण लइ त्रण पडिकां करी त्रण टाणा चोखाना [illegible] साथे पावुं रक्तपित्त पडतुं लोही अटके ।

४ वरियाळी साकर वाटी पावुं ।

५ गुंदीनां पान दाडमनां पान मेंदीनां पान दरेक दोकडा ४ चारभार लइ पकठां करी कोरी कुयडीमां नाखीने पाणी शे. १ मुकाने कुयडीनुं मुख [illegible] करी तेने राखवुं प्रहर ४ राखा प्रभाते ते पाणी गाळीने साकर दोकडा २ थी ३ भार नाखो पावु तणखीयो प्रमेह जाय ।

६ उभो गोखरु दोकडा ४ भार कचरीने कुयडीमां ४ पोर पलाळीने प्रभाते ते गाळीने ते पाणीमां साकर दोकडा २ भार नाखो पावाथी तणखीयो प्रमेह मटे ।

८ मांजिष्टमेहः तणखीयो परमो–व्रणमेह

मंजिष्ठारस सदृशं चोष्णं दाहेन संयुतं मेहेत ॥
तप्तशरीरः पित्तजमेहो मांजिष्टसंज्ञकः प्रोक्तः ॥ १ ॥ र. तं. ॥

लोही जेवा रंगनो ने केसरी रंगनो मजिठना रंग जेवो लाल उष्ण बळतरा साथे पेशाब उतरे छे पेशाब करवा सिवायना वखतमां पण अंदरना भागमां बळतरा थया करे छे अने पेशाब वखते तो असह्य बळतरा थाय छे ते साथे

कोश्यार लोहा देखाय छे दर्दी नबळो गरमोथी विव्हळ अने दीन बनी जाय छे आ पित्तजन्य प्रमेह छे आ प्रमेह घणे अंशे खराब स्त्रीना संगथी थाय छे ।

वसंतकुसुमाकर रस—सुवर्णभस्म ते. ८ अभ्रकभस्म ते. ८ लोह भस्म ते. १२ रससिंदूर ते. १८ त्रिवंगभस्म ते. १२ प्रवालपिष्टी ते. १६ मुक्ता पिष्टी ते. १६ बधां साथे मेळवी गायनुं दुध अरडुसो हळदर केळनोकंद गुलाबनां फुल चमेलीनां फुल तुळसीनो रस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ सुकाया पछी तेमां कस्तुरी ते. १ अने भीमसेनीकपूर ते. २ मेळवी घुंटी राखवुं मात्रा १थी२ रति मध घीमां चटाडवुं बधा प्रमेह मधुमेह धातुस्राव नबळाइ धातुक्षीणता स्वप्नस्राव प्रदर बहुमूत्र वगेरे धातुना दरदमां उत्तम छे तथा पौष्टिक कामोत्तेजक वीर्यवर्धक छे।

मूत्रान्मार्ग चूर्ण—सुरोखार कलमी तो २ रेवंचिनी तो ०, नणकवाव चलचिदाणा जीरुं देशीखांड दरेक तो. १ एक लइ बधाने खांडी कपडछान करी सात पडिकां करवां १ पडिकुं दुध तथा पाणी साथे पावुं पेशाबनी बळतरा मटे पेशाब खुलासे आवे ।

महाभ्र वटिका—अभ्रकभस्म ता. १०, गंधक पारद लोहभस्म सुवर्ण भस्म दरेक तो ५ पांच बधाने भांगराना रसना २१ अने त्रिफळाना क्वाथनी एक भावना दइ चणोठि जेवडा गोळा करवी सवार सांज बबे गोळी मध माखण साथे आपवी ।

१ वंगभस्म १ वाल त्रिफळा लोह [illegible] के दुध साथे पावुं ।

१ बावळना पाकल [illegible] ते. ४ने वाटी साकर [illegible] पावुं. १४ दिवस पावाथी परमो मटे ।

३ रसवंति तो. २ गुलाबजळ शे ०॥ साथे [illegible] पडे गाळी इन्द्रियमां पिचकारी मारवाथी पेशाबनी अगन-दाह मटे अंदरनी [illegible] छूटे ।

४ फटकडी तथा टंकणखार फुलावेलो दरेक मासा [illegible] आठ तथा मोरथुथु फुलावेलुं तो ०॥ बधाने पाणी शे. १ मां घुंटी कपडे गाळी शीशीमां भरी राखवुं ३ दिवस सुधी तडकामां तथा ठंडीमां मुकी राखवु पछी तेमांथी पिचकारी भरी मारवाथी पेशाबनी दाह बळतरा मटे ।

५ बोदार मा. ४ मोरथुथु मा. ६ सफेद चणोठि मा २ दहीं शे. १॥ बधाने खांडी खरल करी मेळवी कपडामां बांधी अधर टींगाडी राखवुं नीचे पाणी टपके तेनो पिचकारी मारवी तो अंदरनी टांकी बळतरा मटे ।

६ जुइना पानना काढामां के त्रिफळाना नवशेका उकाळामां शिश्नने बुडाडी राखवुं तेथी वेदना ओछी थाय छे अने अंदरनुं के बहारनुं चांदुं रुझाय छे ।

७ बावळनो गुंद तो. १ नुं पाणी करी तेमां ०। तोलो जवखार तथा बकरीनुं दुध नाखी पावुं ।

९ वसामेह

मेहति नरो वसाभं मुहुर्वसामिश्रसंयुतं मूत्रम् ॥
असाध्यमाहुरार्या वसाप्रमेहं हि वातकोपेन ॥ १ ॥ र. तं. ॥

पेशाबनी साथे चरबी जेवां के आप जेवां जळपटां पडे छे अथवा चरबी जेवो घाटो चिकणो पेशाब उतरे छे आ प्रमेहमां दरदी एकदम क्षीण–अशक्त कृश थइ जाय छे हरवा फरवानी शक्ति रहेती नथी खोराक चावी शकतो नथी हस्त अनियमित रहे छे अने पेशाब वाटे आखुं शरीर नीचोवाइ जतुं होय तेम दरदीने लागे छे आ प्रमेह वातजन्य छे ।

कामधेनु रस—रससिंदूर अभ्रकभस्म नागभस्म सुवर्णमाक्षिक भस्म यशदभस्म रौप्यभस्म प्रत्येक तो. १० दस लइ साथे मेळवी कमळकंदना रसनी भावना आपी सुकावी तेमां कपूर तो. १० नाखी घुंटी राखवुं मात्रा २ थी ४ रति पाणी साथे आपवाथी बधा प्रमेह प्रदर शुक्रमेह जीर्णज्वर क्षय पटलां दरद मटे ।

मालती कुसुमाकर रस—सुवर्णभस्म तो. १ रससिंदूर तो. २, बंगभस्म नागभस्म लोहभस्म प्रत्येक तो ३ त्रण, अभ्रक प्रवाल मोति दरेक तो. ४ चार साथे मेळवी गायना दुधना केळना फुलना रसनी शेरडिना रसनो कमळफुलना रसनो पाकेलां उंबराना रसनी प्रत्येकनी ७ भावना देवी. प्रत्येक भावना वखते छाये सुकाववुं मात्रा २ थी ४ रति मध माखण साथे आपी उपर वात प्रमेहना नीचेना उकाळा पैकी हरकोइ पावो तो वसामेह मटे तेम जुदा जुदा अनुपानथी २० जातना प्रमेहने मटाडे छे ।

१० आजोमेह

मेहति मुहुर्मेढ्र[illegible]जा [illegible]पयःप्रतिमम् ॥
[illegible]र जोमेहं पुरातनैः पापैः ॥ १ ॥ र. तं. ॥

आनो दरदी पा[illegible]करीना दुध जेवो पेशाब करे छे अने पेशाब करती वखते शक्तिबळ उत्सा[illegible] चतन्य हराइ जतु होय तेम लागे छे तेम दरेक अवयवनी के दरेक [illegible] शक्ति के पोतपोतानु कार्य करवानी शक्तिओ क्षीण थता जाय छे प्रारंभ[illegible]रो हरो फ[illegible]ी शके छे पण थोडाज दिवसमां ते पथरी वश थइ जाय छे पेशाब वखतनो वखत थाय छे ।

सारिवाद्यासव—उपलसरी मोथ लोदर वडछाल पिपळानी छाल कचुरो अनतमूळ पद्मकाष्ठ वाळो काळीपाठ आमळां गळो काळोवाळो [illegible] अजमोद कडु तमाल नानो तथा मोटी एलचि कुष्ठ मींढीआवळ हरडे प्रत्येक तो. १६ सोळ, पाणी मण १॥ गोळ शेर १५ धावडीनां फुल तो. ४० द्राक्ष शेर ६ बधाने विधिवत मेळवी एक महिना पछी गाळी लेवुं मात्रा ४ थी ८ तोला आपवु. २० जातना प्रमेह मटे हरकोइ प्रमेहना औषध उपर पण पीवराबाय छे ते सिवाय लोहीं बगाडनां दरद चांदी गरमी पन भगंदर वगेरे पण मटे छे ।

मिश्रण १—स्फाटिकमणिभस्म बेआनीभार मोतिभस्म ०। तोलो सुवर्ण-वसंतमालती ०। तोलो साथे मेळवो ३० भाग करी सवार सांज च्यवनप्राश अवलेह साथे चटाडवुं ।

मिश्रण २—वसंतकुसुमाकर तो. ०॥ महावंगेश्वर तो. ०॥ भीमपराक्रम तो. ०॥ चंद्रप्रभा तो. १ साथे मेळवी ४८ सरखा भाग करवा गोक्षुराद्यावलेह साथे सवार सांज अकेक भाग आपवो उपर सारिवाद्यासव के द्राक्षासव पीवराववो ।

११ मधुमेह

मेहाः सर्वे कालादुचितप्रतिकारहीनमनुजस्य ॥
मधुमेहत्वं प्राप्ताः प्रायः कष्टेन साध्यतां यांति ॥ १ ॥ र. तं. ॥

कारण—दीर्घकाळनुं अजीर्ण खानुं व्यसन चिंता शोक चरबी के घीवाळा मिष्टान्नोनो बहु टेव साकरवाळां पदार्थो खावानो मावरो शरबतो बहु पीवाना टेव मगजमारीनो धंधो मन उश्केराय तेवां कामो काळजानां दरद दारुनुं व्यसन प्रमेहनुं लांबा काळथी लागु पडेलुं दरद वगेरे कारणे आ दरद थाय छे वरोणमां चरेला ब्राह्मणो के जेओ महिनाओ सुधी मिष्टान्न के साकरवाळां पदार्थो खाय छे तेओमां तथा बेठाडु माणसोमां आ दरद वधु प्रमाणमां जोवामां आवे छे ।

चिन्ह—आ दरद लोकोने भयंकर रुप पकडी थोडा महिनामां मृत्यु निपजावे छे त्यारे घणा केसोमां दरद वर्षो सुधी लंबाय छे पेशाब घणो अने वधु वखत थाय छे पेशाबनुं वजन २४ कलाकमां १० थी ३० रतल सुधी वधे छे तेमां साकर [illegible] थी ६० तोला [illegible] जाय छे तरस वधु लागे छे पेशाबनो रंग फीको पाणी जेवो स्वाद तथा वासमां गळपणवाळो होय छे थोडो वखत राखवाथी फीण [illegible] मांडे छे जमीन पर पडे त्यां कीडीयो के मकोडा चडवा मांडे मो [illegible] ताळवुं सुकु रहे छे मोमां अमी रहेतां नथी भूख [illegible] वधे छे [illegible] थाय दांतनां पेढामांथी कोइवार लोही पडे छे झाडो [illegible] रहे [illegible] मोमां [illegible] वायु [illegible] खरमट सुकी [illegible] चिंतातुर [illegible] जणाय छे. दिवसे दिवसे नबळाइ [illegible] पुरुषातन घटे छे [illegible] ओछी थाय छे [illegible] हाडी ताव रहे छे शरीर [illegible] जाय छे २॥ तोला पेशाबमां ५ थी १० रति करतां वधु साकर जणाय [illegible] समजवुं दरदनी साध्यासाध्यता अने दरद केटलुं विषम छे ते दरदी [illegible] स्थिति उपरथी पारखी उपचार करवा ।

प[illegible]—आ दरदीये खोराकमां बहु संभाळ राखवानी छे साकर गोळवाळां [illegible] घीनां चरबीवाळां मांस चिकणां घउं चोखा बटेटां रताळु बजारना मिठाइ वगेरे खावां नहीं. दुध माखण जव बाजरो कळथी मग मठ मेथी तांजळयानी भाजी रिंगणा कारेलां तुरीयां वगेरे खावां दुध जेम बने तेम वधु कोठे पाडवुं अने अन्न थोडु खावुं दुधमां गळपण नाखवानी जरुर जणाय तो थोडो गोळ नाखवो सेकेरान (साकरनुं सत्व) वापरवानी दाक्तर लोको भलामण करे छे पण तेनाथी हृदयने तथा आंतरडाने नुकशान पहोंचे छे. बनतां सुधी गळपणनी इच्छाज न करवी तरस लागे त्यारे बरफनुं पाणी पीवुं नहीं पण पाणी गरम करी ठारी तेमां खडसलीयो मोथ धाणा वावडींग पनी पोटली नाखवी पछी ते पाणी थोडु थोडु पीवुं थोडा दिवस आ पाणी भावशे नहीं पण पछी पज पाणी रुचिकर जणाशे. खुल्ली सुकी हवा प्रकाशवाळा स्वच्छ मकानमां रहेवुं ।

शुद्ध शिलाजीत तो. १० खाखरानां फुल तो. १० दस, सुरोखार तो. ७॥ साकर तो. २० बधा साथे खांडी सवार सांज अकेक तोलो चूर्ण पाणीमां आपवुं तेना पर मगनी दाळ भात खीचडीनुं पथ्य राखवुं ।

बहुमूत्रांतक रस—रससिंदुर शेमळाना मूळनो भुको केळनो कंद उंबरानां फळ लोहभस्म वंगभस्म प्रवाळपिष्ठी मोतिनी पिष्ठी अफिण बधां समभागे लइ साथे मेळवी चमेलीना फुलना रसमां घुंटी चणोठि जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २ थी ४ गोळी पाणी साथे आपवी. मधुमेह सोमरोग स्त्रीओने धोळां पाणी पडवां घणी वखत पेशाब थवो वगेरे मटे छे. भुकी राखी होय तो २ थी ४ रति आपवी ।

१ दुधीनां मूळ तथा सफेद शेमळानां मूळ दरेक तो. २॥ अढी, वंगभस्म तो. ०॥ पारदभस्म तो ०। साथे मेळवी ३ थी ६ रति घीमां चटाडवुं ।

२ शेपजुंदर वंगभस्म सींगोडां दरेक तो. १। सवा, शिलाजीत तो. ०॥ साथे मेळवी ६ थी १२ रति घीमां चटाडवुं ।

३ सर्षप तेल शेर ०। ऊंटनुं दुध शेर १ मेळवी पावुं. साकरियो प्रमेह मटे ।

४ हिंगबोळ हळदर साजीखार फटकडी अरणीनी राख सरखे भागे लइ सांडी तेमांथी टांक १ वाछडाना मूत्र साथे पावाथी १८ जातना प्रमेह मधुमेह मटे ।

२० जातना प्रमेह तथा ते पर औषध

आयुर्वेदमां २० जातना प्रमेह कहेला छे तेमां कफजन्य १०. १ उदकमेह, २ इक्षुमेह ३ सांद्रमेह ४ सांद्रप्रसादमेह, ५ शुक्लमेह, ६ शुक्रमेह, ७ शीतमेह, ८ सिकतामेह, ९ शनैर्मेह १० लालामेह आ दश साध्य सहेलाइथी मटी शके छे।

पित्तजन्य प्रमेह ६ जातना छे. १ क्षारमेह, २ कालमेह, ३ नीलमेह, ४ रक्तमेह, ५ मांजिष्ठमेह, [illegible] हरिद्रमेह आ कष्टसाध्य छे ।

वातजन्य ४ [illegible] प्रमेह छे. १ वसामेह, २ मज्जामेह, ३ हस्तिमेह, ४ मधुमेह आ चार [illegible] प्रमेहपिडका प्रमेह अन्य पावुं पमां सेवन करवानां औषधो प्रमेह प्र[illegible] चोपडवा माटे व्रणमां लखेला लेप मलमो वापरवां ।

नीचे जणावेला क्वाथ कफ पित्त अने वातजन्य प्रमेह उपर वपराय छे. बबे दोष के त्रण दोष साथे प्रमेहमां जणाय तो ते प्रमाणे बे के त्रण दोषना क्वाथनां आसाडयां साथे मेळवी उकाळी पावुं. कोइपण रसौषध साथे के एकला क्वाथ अपाय छे ।

कफजन्य प्रमेह उपर १० क्वाथ

१ हरडे कायफळ मोथ लोदर. २ काळीपाट वावडींग आसोंधरो धामणां ३ हळदर दारुहळदर तगर वावडींग. ४ कदंबछाल आसोंधरो अजमोद ५ दारुहळदर वावडींग खेरसार धावडो. ६ देवदार कुष्ठ अगर चंदन. ७ दारुहळदर अरणी त्रिफला काळीपाठ. ८ काळीपाठ मोरवेल गोखरु. ९ अजमोद वाळो हरडे गळो. १० चवक हरडे चित्रो सातवीण ।

पित्त प्रमेह उपर १० क्वाथ

१ वाळो लोदर आंजणियो सुखड. २ वाळो मोथ आमळां हरडे. ३ परवल लींमडानी छाल आमळां गळो. ४ मोथ हरडे पद्मकाष्ठ इन्द्रजव बेलिया पिपळानां

के पान [illegible] पिपळानी छाल. ५ लोदर मोथ अगर धावडी. ६ लींमडो आसोंधरो अघेडो हळदर कमळ. ७ सडमडो राळ आसोंधरो नागकेसर. ८ घउंलो [illegible] पुष्प कमळकंद केसुडां ९ पिपळानी छाल काळीपाठ विये नेतर. १० दारुहळदर कमळ मोथ ।

[illegible] प्रमेह उपर १० क्वाथ

हरडे कायफळ मोथ लोदर २ काळीपाठ वावडींग आसोंधरो धामणा. ३ हळदर दारुहळदर तगर वावडींग. ४ कदंबनी छाल राळना झाडनी छाल आसोंधरो अजमा. ५ दारुहळदर वावडींग काथो धावडो ६ देवदार कुष्ठ [illegible] सुखड. ७ दारुहळदर अरणीमूळ हरडे बेडां आमळां वज. ८ काळीपाठ मो[illegible] गोखरु. ९ वज वाळो हरडे गळो १० अरडुसो हरडे चित्रो सातविण ।

प्रमेहकु[illegible]ांनका वटी—ताम्रभस्म अभ्रकभस्म हिंगुलभस्म दरेक तो. ५ पांच, केळकंद नागकेसर कुंवार श्वेतकणेरनां मूळ दरेक ते। ६ छ अफिण आक-डाना फुल दुधिया हेमकंद अकलकरो ऊंटकटानां मूळ दुधियोवछनाग जायफळ जावंत्री बहुफळि धोळी तथा काळी मुशळी गोखरु बळबीज लविंग पलचिदाणा खरसाणाअजमोद दरेक ते. ७ सात, बरासकपूर ते. ६ बधाने साथे खांडी मधमां चण्या जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी पाणी साथे आपवाथी २० प्रकारना प्रमेह अने बधा मूत्रदोष मटे ।

चं[illegible]नासव—चंदन ते. ४०, वाळो मोथ शि[illegible]कमळ नीलकमळ [illegible] लोद्र पद्मकाष्ठ मजिठ रक्तांजळी काळीपाठ करियातु वडनी छाल पिपळानी छाल कचुरे खडसलियो जेठिमध रास्ना परवळ कांचनार [illegible] मोचरस दरेक ते. ४ चार, पाणी मण १॥ साकर शेर १० गोळ शे[illegible]नां फुल ते. ६० काळीधराख शे. ५ बधांने विधिवत आसव करवो [illegible] मुख्यत्वे करी शुक्रमेह-वीर्यस्त्रावमां वपराय छे ते शिवाय बीजा बधी जातना प्रमेहमां घणो उप-योगी छे. बळपुष्टि शक्तिवर्धक अने पौष्टिक छे. पडतुं लोही श्वेतरक्तप्रदर लोहीना हरस पमां घणो फायदो करे छे ।

देवकुसुमादि पाक—गायनुं दुध शे. १६ मां आखा लविंग शे. ०॥ नी पोटली नाखी पकाववुं चोथा भागनुं दुध रहे अने दाणादार थाय पटले उतारी तेमां घी शे. ०॥ कमळकाकडीनां मींज टां. १० सुखड टां. ३ केसर टां. २ कपूर टां. ०॥ अगर टां. २॥ तगर टां. २॥ लोहभस्म टां १० बंगभस्म ते. १० साकर शे. २ सर्व वाटी पकत्र करी दररोज टां. १ खवराववुं. प्रमेह ८४ जातना वायु नबळाइ वगेरे मटे. बळ वधे ।

धातुपौष्टिक वटी—खरसाणीअजमोद काळी तथा घोळी मुशळी गोखरु आसोंध सुंठ मरी पिपर तज शिलारस मस्तकी जावंत्री जायफळ लविंग बलदाणा पलरी केसर कौचां पलचि बदामनां बी हिंगळो दरेक टां. १० दस, कस्तुरी वाल ५ रुपानो वरख टां. २॥ शिलाजीत टां. १० लोबाननां फुल टां. २॥ गळोनुं सत्व टां. ५ बधां साथे वाटी नागरवेलना पानना रसमां चणिया बोर जेवडी गोळी

करवी. सवार सांज अकेक गोळी खवरावी उपर दुधपाक मिष्टान्न पदार्थ मिठाइ वगेरे खवराववां उपर पानबीडां २-४ देवां. धात वधे, १८ जातना प्रमेह मटे, शरीर पुष्ट थाय भुख लागे कांति बळ वधे, स्तंभन ४-६ घडी थाय महाकामिक छे. वायु तथा खोटो गरमी मटे ।

चंद्रकळा गुटी—पलचि बरासकपूर साकर जायफळ गोखरु शेमळानां मूळनी छाल पारदभस्म बंगभस्म बधां सरखे भागे लइ खांडी गळोना रसनी १ तथा शेमळाना रसनी १ भावना दइ चणिया बोर जेवडी मधमां गोळी वाळवी. मात्रा २ थी ३ गोळी पाणी साथे देवाथी सर्वे प्रमेह मटे ।

शतावर्यादि गुटी—सतावरी मुशळी कोठांनो गरभ साटोडी धामणां अजमोद जीरुं पाषाणभेद पलचि नागकेसर आसोंध घउंलो लोहभस्म अभ्रकभस्म गळोनु [illegible] साकर सरखे भागे लइ खांडी मधमां सोपारी जेवडी गोळी वाळवी दररोज १ पाणी साथे देवी ।

वाजीकर मोदक—अजमा मुशळीकंद गोखरु आसोंध सुंठ तज मरी मोथ अशोळयो कांटाळांमायां अकलकरो जायफळ पत्तरो कपूर पडवास दरेक टांक १० दश, घउंनो लोट जवनो लोट अडदनो लोट चोखानो लोट गुद दरेक शेर । सवा, गोळ शे ४ घी शे. ५ बधां मेळवी विधिथी लाडु ५ पांच तोलाना कर ४० दिवस खावाथी प्रमेह मटे स्थंभन १॥ कलाकनुं थाय ।

प्रमेहहर चूर्ण—पलचि पाषाणभेद शिलाजीत खिरामूळ दाडमसार अमलवेत तज पा[illegible] आबलीना कातरा दरेक तो ४ चार, साकर जायफळ धावडी दरेक तो [illegible] लइ खांडी ०। थी ०॥ तोलो चोखाना ओसामण साथे आपवुं उपर चोखाना [illegible] घोळवुं वगेरे आपवाथी प्रमेह मटे ।

पौष्टिक [illegible]—जायफळ जावंत्री लविंग पलचि इन्द्रजव खरसाणीवज लोहभस्म तगर अगर सुखड वंशलोचन तपखीर रतांजळी दरेक टांक ५ पांच, कस्तुरी वाल ७ बरासकपूर टां. २॥ बदामनां मींज टां ७ द्राक्ष शेर १॥ खांड शे. २॥ गायनुं घी शे. ५ बधां खांडी मेळवी करी गोळा ठाममां नाखी मो बंध करी ७ दिवस घउंनी कोठीमां राखवुं पछी काढी तेमांथी टांक ५ दररोज खावुं धात जतो बंध थाय भुख लागे स्थंभन २ घडी थाय. महा जोगवर छे बधा प्रमेहमां उत्तम छे ।

पौष्टिक चाटण—खसखस पिपर दरेक टां १० दश, जायफळ जावंत्री अकलकरो टंकणखार बळबीज इसपन धतुरानां बी हिंगळो कालीतुळसीनां बी कसुंबानां बी कमळकाकडी लविंग पलचि आसोंध मोथ समुद्रशोषनां बी खरसाणी अजमोद भारंगी कमेलां पिपर दालचिनी घउंलो चणकबाब दरेक टां. ५ पांच, मरी टां. १ केसर टां. २॥ हेमना पानां टां. १। अफिण टां. २ मालकांकणां टां. २ सणनां बी टां. २॥ लोबाननां फुल टां. १। कस्तुरी वाल ०॥ रुपानां पानां टां. १॥ गोखरु शे ०। कौचां शे. ०। धोळीमुशळी शे. ०। सुंठ तो. ५ गुंद शे. ०॥ ए सर्व एकठां करी खांडी पछी दुध उकाळवुं घाटुं थाय त्यारे उतारी सर्व

ओसडियां नाखी पछी तेमां घी शे. २॥ खांड शे. ५ नो पाक करी राखी मुकवुं. मात्रा रोज ४ रोकडाभार खवरावबुं. खाटं खाटुं खावा देवुं नहीं १८ जातना प्रमेह मटे ११ प्रकारनी धात जाती अटके. बळ वधे पराक्रम वधे नबलाइ मटे भुख लागे अन्न पचे कांति तेज वधे. घणी कामोत्तेजक छे. बळहिण थाय नहीं पानबीडां २-४ खवराववां उपर दुध पावु मिष्टान्न खवराववुं. जोरावर थाय।

बधा प्रमेहना सामान्य उपचार

१ भांगरानां पान छाये सुकवेलां टांक २ घी साथे ४ दिवस चटाडवाथी पित्त गरमीनो प्रमेह मटे, मगजनो भ्रम मटे।

२ पखरो टां. २॥ वाटी पछी साकर टां. ५ पाणीमां मेळवी तेमां अगर रति ६ घसी पाणी करवुं. पखरानो फाकडो भरी उपर साकर अगरवाळुं पाणी पावुं. एम ७ दिवस पावाथी १८ जातना प्रमेह मटे।

३ तकमरियां टां. १। पलाळी अगासिये ८ पहोर मुकी पछी तेमां साकर टां. ५ मेळवी पावुं. १८ जातना प्रमेह मटे।

४ पाषाणभेद जवखार एलचि सुंठ हरडे बेडां आमळां जुनोगोळ दरेक टां ४ चार लइ वाटी भुको करी वासी पाणी साथे ०॥ थी १ तोलो आखा दीमां आपवुं. एम ७ दिवस आपवाथी १८ जातना प्रमेह मटे।

५ [illegible]नुं पंचांग जवखार साकर दरेक टां. १० दश, लींडीपिपर टां. १ साथे खांडी पाळवीगोळमां सोपारी जेवडी गोळी वाळवी. रोज १ आपवाथी लाळो प्रमेह मटे।

६ उंटकटानुं पंचांग छाये सुकवी बारिक वाटी तेमां [illegible] बीजेभागे नाखी ०॥ थी १ तोलो दुध साथे आपवाथी प्रमेह मटे बहु [illegible] धात थता अटके।

७ शेमळानो गुंद टां. १९ जायफळ टां. १२ स[illegible] २१ गोळी वाळी २१ दिवस सुधी खवरावबाथी गयेलो काम जागे सवायो [illegible] प्रमेह मटे।

८ सीसुं तो. ३ मनशिळ तो. १ ठाबमां मुकी चुले चडावी ४ घडी पकावी भुको थाय पटले उतारी तेमां सुंठ पिपर मरी जायफळ जावंत्री दरेक तो. ३ त्रण साथे खांडीने नाखवां पछी मधमां बबे रतिभारनी गोळी वाळवी. सवार सांज बबे गोळी पाणी साथे देवी बधा प्रमेह मटे।

९ सतावरी तथा चण्यानो लोट सरखे भागे लइ तेनां भजीयां करी धराय पटलां ३ थी ७ दिवस सुधी खवराववाथी प्रमेह मटे।

१० वडना टेटा सुकवी ०॥ थी २ तोला खांड साथे आपवाथी वधा प्रमेह मटे।

११ बावळना फुलनुं चूर्ण तथा साकर बरोबर लइ ०। थी ०॥ तोलो आपवुं।

१२ मोंयुधेलिनुं पंचांग छाये सुकवी तेमां साठीचोखा तथा साकर समभागे मेळवी वासी पाणी साथे ०॥ थी १ तोलो आपवुं ७ दिवसमां प्रमेह मटे।

१३ जायफळ टां. १ लविंग टां. १ तज टां. ३॥। नागकेसर टां. ३। बदामनां बी टां. २॥ लींबोळीनां मींज टां. ०॥ साकर टां. ७॥ साथे खांडी चणिया बोर जेवडी गोळी करवी रोज १ पाणी साथे दइ उपर राळ रोकडा ३॥ भार साकर रो. ७ भार घउं रो. १४ भार मेळवी खवराववुं. एम ७ दिवसमां प्रमेह मटे।

१४ गुलाबी खजुर खवरावबाथी प्रमेह मटे ।

१५ मरी तज [illegible] कबाब खसखस दरेक टां. ९ तज, भंगनां [illegible] शेर १ नाग-भस्म टां. ३ बधां वाटो चणिया बोर जेवडी गोळी करवो २ थी ४ पाणी साथे आपवाथी ७ दिवसमां बधा प्रमेह मटे शक्ति आवे ।

१६ पखरो शेर ०॥ कौचां नो ५ उटींगण शे. ०॥ काळीमुशळी शे ०॥ खेरनो गुंद शे. ०। खांड शे १॥ घी शे. २॥ बधां साथे मेळवी ३ थी ४ तोला दुध साथे पावुं प्रमेह मटे नपुंसकपणुं मटे गयेल काम वधे ।

१७ रायगुंदा शे. १ धावडीनो गुंद शे. ०॥ मोंदुवेलि शे. ०। तलनां पाननो भुको शे. ०॥ खांड शे. १ साथे खांडी गायना घीमां ३ पैसाभारनी गोळी करवी रोज १ पाणी साथे देवी. खारुं खाटुं बंध करवुं १४ दिवसमां प्रमेह मटे ।

१८ जलभांगरो बहुफळि बोडियो कलार दरेक तो. १० दश, गोखरु तथा जेठिमध दरेक तो २ बे वावडींग अगर पलचि दरेक तो. १। सवा. खेरनो गुंद तो. ५ पाषाणभेद तो. २॥ साकर तो. २० साथे खांडी तेनी फाकी ०॥ थी १ तो. पोस्तना डोडाना पाणी साथे देवाथी प्रमेह पेशाबनी बळतरा तणखीयो मटे ।

१९ वछनाग [illegible] सोंधु [illegible] लवंग जावंत्री लविंग मरी अकलकरो सुंठ अफिण रुमीमस्तकी उटकंटो [illegible] सरखे भागे लइ खांडी नागरवेलना पानना रसमां चणिया बोर जेवडी गोळी वाळवी. २ थी ४ पाणी साथे देवी प्रमेह मटे ।

२० रगतरोहिडो [illegible] खांड नाखी पाणीमां वाटीने [illegible] भावे पटली पावी ४ [illegible] पछी जुलाब लागे. अलोणुं जमाडवुं ७ थी २१ दिवस ।

आंखनां दरद

मनुजस्य [illegible] क्षा कुर्यादाचक्षुर्जीवितकांक्षा ॥

रात्रिदिनतुल्यानामन्धानां निरयतुल्य इह विश्वम् ॥ १ ॥

" नेत्रनी रक्षा माटे जीववानी आशा होय त्यां सुधी मनुष्योए हमेशां यत्न करवो रात दिवस जेने सरखा छे एवां अंध मनुष्यो भले धनाढ्य होय छतां आ जगत तेओने माटे नरक रुप छे " ।

सर्व नेत्ररोगनां [illegible] कारण—तडको वेठवाथी टंडे पाणीये बहु नावाथी पदार्थोने एक नजरे जोवाथी उंघ न लेवाथी उजागरो करवाथी धुड उडवाथी धुंवाडो लागवाथी उलटी रोकवाथी मदिरा पीवाथी मळमूत्र के अधो वायु रोकवाथी बहु खाटां बहु तीखां बहु गरम पदार्थो खावाथी बहु पवन लागवाथी काम क्रोध शोकना अतिरेकथी झीणा पदार्थो जोवाथी रोवाथी सुतां सुतां वांचवाथी तथा बीजां अनेक कारणोने लीधे आंखना अनेक रोग थाय छे ।

आंख उठवी कारण-चिन्ह—घासलेटने दीवे बहु वांचवाथी धुंवाडो लागवाथी वा लागवाथी तडके फरवाथी आंखमां डांको वागवाथी कणुं पडवाथी गरम चिज खावाथी उठेली आंखवाळानो चेप लागवाथी आंख उठे छे. त्यारे पोपचा

ડોળો લાલ થાય શીળી ઓરી તાવ વગેરે દરદોમાં પણ આંખ ઉઠે છે આંખમાં ચીપડા વળે તે કાંકરાની પેઠે ખટકે છે અંજવાળું સહન થતુ નથી પોપચાં સુજી આવે છે સોજો થાય છે ।

અંજન—ફટકડી લોદર હળદર સુરમો લીંડીપિપર પલચિદાણા ચિલાણું ઘોળું, હિમેજ હરડે દરેક ટાં. ૧ પક્ મોતીચૂર લવિંગ સુંઠ દરેક ટાં. ૦॥ અર્ધો, પરવાળાં ચૂર્ણ, મોરથુથુ દરેક ટાં. ૦। પા, ખાપરિયું ટાં ૨ પ સર્વ બારિક કરી તેમાં સાકર ટાં. ૫ મેળવી વાટી સૂક્ષ્મ ચૂર્ણ કરી કપડછાન કરી અંજન કરવાથી વાયુ ગરમી પિત્તની આંખ દુખતી ગળતી રહે પીડા ખટકો મટે ।

૧ કસ્તૂરી ઘોડાની લાદમાં ઘસી અંજન કરવું ।

૨ હળદરની ગાંઠને લીંબુમાં ૪૯ દિવસ રાખી તેને મધમાં ઘસી આંજવાથી ખરજ ખજવાળ વાખધ મટે ।

૩ સાકર લોદર ટાઢા પાણીમાં ઘસી અંજન કરવાથી બધી જાતની આંખ દુખતી મટે ।

૪ દેવદાર પુરુષના મૂતરમાં ઘસી આંજવાથી ચીપડા વળતા મટે ।

૫ લીંમડાનાં પાન તો. ૧૦ માં સુંઠ બે આનીભાર નાખી વાટી આંખ ઉપર પાટો બાંધવો આંખ દુખતા મટે ।

૬ ઉંટની ડાઢ ગાયના દુધમાં ઘસી ૨૧ દિવસ આંજવાથી આંખનાં બધા રોગ મટે ।

૭ સમુદ્રફળ તેલમા ઘસી આંજવું વાખધ જાય ।

૮ મોરથુથુ ભાગ ૩ બેડાંનાં મીંજ ભા ૧ આમળાનાં [illegible] ભા. ૧ લઇ પાણીમાં ગોળી કરી ઘસી આંજવાથી ખરજ વાખધ મટે ।

૯ ખાપરિયું ટાં. ૨ ગોળ ટાં ૧ વાટી ગોળી [illegible] ખે લોહી ચડયું હોય તે ઉતરે ।

૧૦ હળદર વરિયાળી સુવાદાણા સાકર લોદર રસવાત અફીણ હિમેજ દરેક તો. ૧ પક. ફટકડી તો. ૨ લઇ પોટલી કરી આંખ પર મુકવાથી દુખતી આંખ મટે ।

૧૧ સિંધવ ટાં. ૧૧ સરસિયા તેલમાં કાંસાની થાળીમાં ત્રાંબાને વાટકે ઘસવું ૧ પ્રહર ચોપડવાથી આંખ દુખતી મટે ।

૧૨ ભદ્રમોથ બકરીના દુધમાં ઘસી ૭ દિવસ આંજવી લાલપ ગરમી મટે ।

૧૩ લીંડીપિપર શંખનાભી મોરથુથુ હિરાબોળ ખાપરિયું બધા સરખે વજને લઇ બારિક વાટી લીંબુના રસની ભાવના દેવી પછી મધમાં ગોળી વાળવી ધાવણ સાથે ત્રાંબાના કળશિયાને તળેથી ઘસી આંખે આંજવું પીડા ખટકો વળતરા મટે દુખતી આંખ મટે છાયા ટળે શાંતિ થાય ।

૧૩ રસવંતિ લોદર હરડે ગેરુ હળદર સરખાં લઇ પાણીમાં કાલવી આંજવું તથા ઉપર ચોપડવું નેત્ર પીડા ટળે ।

૧૪ ફુલાવેલ ફટકડી રસવંતિ સ્ત્રીના ધાવણમાં કાંસાને વાટકે ઘસી અંજન કરવાથી નેત્ર પીડા ટળે ।

૧૫ નિર્મળીનાં બીને મેંદીના રસમાં ઘસી આંજવાથી આંખનાં બધા રોગ મટે ।

कुम्भ आंजन—चिमेड शे. ०॥ लइ मलमलना लुगडामां ढीलो पोटली बांधी घडामां नर गधेडानां लींडा अर्धो घडो भरी तेमां पोटली मुकी उपर बीजां लींडा भरी पाणी नाखी ६ कलाक धिमो अग्नि आपवो. पछी काढी छांये सुकवी चिमेडनां फोतरां काढी नाखी वाटवुं पछी तेमां काळो सुरमो तो. ५ अने भीमसेनी कपूर तो. ०॥ घुंटी सुरमानी पेठे आंजवाथी पाणी गळतुं अटके. खील तथा आंख दुखती मटे ।

नेत्ररक्तहर बंधाण—माथाना ताळवा उपर माखण लगाडी ते उपर आंबाहळदरनो भुको भभरावी पछे कुंवारना लफराने चीरी तेनापर आंबाहळदरनो भुको छांटी ते लफरुं राते ताळवे बांधी सुइ रहेवुं सवारे जोवुं ते लफरुं काळुं दाझेला जेवुं देखाशे एम ३ दिवस बांधवाथी आंखनुं लोही तुटी जाय अने आंख सफेद थइ जाय ।

त्रिमधांजन—पत्रीनी साकर तो. ४ हिमेज दाणा ४ चणकबाब दाणा १० खर्डीयो खार वाल ५ बधां साथे घुंटी आंजवाथी पाणी गळतुं मटे. नेत्री तथा छारी मटे फुलुं कपाय ।

नेत्रपोटली—वरियाळी तो. १॥ मोरथुथु मासो १॥ साथे वाटी सांजे पाणीमां भींजवी राखवुं सवारे लुगडांनी पोटली करी ते पाणीमां भींजवतुं जवुं अने आंख उपर मुकतुं जवुं तेथी लोही तुटी आंख सफेद थाय ।

नेत्रशलाका—त्रिफळा भांगरो आदुरस घी गोमूत्र मध बकरीनुं दुध दरेकमां अकेकवार ओगाळेलुं सीसुं बुझावा पछे तेनी सळी करावबी. ते सळो हमेशां सुती वखते पाणीमां फेरववाथी आंखना रोग थाय नहीं आंख सारी रहे. कोइपण नेत्र रोगना दर्दीने आराम थाय कोइपण रोगमां अंजन आंजवामां आ सळी वापरवाथी फायदाकारक छे ।

चंद्रोदयांजन—हरडे वज कुष्ठ पिपर मरी बेडानां मींज शंखनाभी मनशिळ बधां सरखे भागे लइ खांडी चाळी गायना दुधमां घुंटी सोगठी करवी. घसो आंजवाथी आंख खंजवाळ पडळ अर्बुद फुलुं वधेलुं मांस रतांधळापणु उठेलो आंख ए सर्वमां उत्तम छे ।

मूळानां पानमां धाणिया बोर जेवडी मीठानो कांकरी वाटी लोपरी आंखे बांधवाथी लोही तुटी अइ २ दिवसमां आंख दुखती मटे ।

गळोनो स्वरस टांक ५ सिंधालुण टां. १ मध टां ९ साथे मेळवी घुंटी कांसानी डाबलीमां भरी राखवुं. आंजवाथी आंख दुखती, पीडा खटको नाश मटे ।

• वावलुं कारण–चिन्ह—कंठमाळनुं दरद थयुं होय तेने हरवखत थाय छे. बाळकोमां वधु थाय छे. प्रथम जोइ शकातुं नथी आंख उठी होय तेम आंख उपर हाथ मुकी राखे छे. खटको आवे छे आंसु पडे छे आंख लाल थइ काळा डोळाना किनारापर राइ जेवडी सफेद पीळी फोडली १ के वधारे थाय छे ते वावलुं कहेवाय छे. थोडा दिवसमां फुटी सारुं थइ जाय छे ।

દ્રષ્ટિપ્રદ વર્તિ—ત્રિફળા કુકડાનાં ઇંડાંનો ફોતરો ફિરાકસી લોઢાનોકાટ કમળફુલ [illegible] સમુદ્રફીણ [illegible] દુધમાં ત્રાંબાની ખરલમાં ૨ દિવસ ઘુંટી વાટયો કરવી. [illegible] ઘસી આંજવાથી વાયલુ આંખના પાણી વગેરે મટે ।

વેલ કારણ–ચિન્હ—૩૦ વર્ષની ઉમર પછી ઘણે ભાગે આ દરદ થાય છે આંખનું રસપટલ પક ખુણામાંથી જાડુ થઇ સ્નાયુની માફક વધે છે અને કાળા ડોળા ઉપર જાય છે તે વેલ કહેવાય. પાતળી નાની અથવા જાડી લોચા જેવી હોય છે ને ધિમે ધિમે કૃષ્ણમંડળ ઉપર [illegible] ઉપર આવી જાય છે કીકી ઉપર આવે તો દેખાતું બંધ થાય છે ।

[illegible] વર્તિ—નિર્મળી [illegible] સુંઠ પિપર મરી સિંધાલુણ [illegible] સમુદ્રફીણ [illegible] મધ મનશીલ કુકડાના ઇડાનાં ફોતરાં સરખે ભાગ લઇ ૩ દિવસ ત્રાંબાની [illegible] ખરલમાં ઘુંટી [illegible] વાટવુ કરવી. [illegible] પાણીમાં ઘસી ૧ માસ આંજવું. વેલ ઘસાઇ આંખ સાફ થાય ।

[illegible]—આંખની પાંપણના અંદર તથા પોપચાંમાં થાય છે [illegible] બારિક લાલ દાણા દેખાય છે તે ખોટાં [illegible] હોય છે અને તે કેટલિક [illegible] થાય છે. [illegible] થાય ત્યારે આંખ સખત ઉઠે [illegible] થાય છે સોજો આવે છે પાણી નિકળે છે, [illegible] થતું [illegible] છે કૃષ્ણમંડળ ઉપર [illegible] થાય છે [illegible] ડોળો [illegible] થઇ જાય છે નજર [illegible] થાય છે પાંપણનો [illegible] ભાગ [illegible] જાય છે [illegible] ડોળા સાથે [illegible] છે [illegible] સુંચી થાય છે ।

[illegible] અને લીંબુના રસ સાથે [illegible] પાણીમાં ઘસી [illegible] ડીયાં કપાય ।

[illegible] હરડે બેડાં આમળા સુંઠ પિપર મરી સિંધાલુણ જેઠિમધ [illegible] પાંટેરબો (પ્રા[illegible]) વાવડીંગ લોદ્ર ત્રાંબાનો કાટ બધા સરખે ભાગે [illegible] બારિક કપડ ચાળી આકાશ જળમાં ૨ દિવસ ઘુંટી વાટયું [illegible] ખાલમાં કેસુડાના પાણીમાં ઘસી આજવું. બોકડાના મૂત્ર સાથે ઘસી આંજવાથી પડળ ડોળ મટે. આંખ બીડાઇ ગઇ હોય ઘણો વખત થયા ઉઘાડી [illegible] ન હોય કે મુશ્કલિથી માંડ જરા ઉઘડતી હોય તે સારી થાય. ઉઠેલી આંખ [illegible] સ્ત્રીના ધાવણમાં આંજવુ ।

આંખનુ ચાંદુ, ચિન્હ—કાળા ડોળામાં સોજો થઇ તેમાં સફેદ કે પીળા ડાઘ પડી જાય છે તેને ચાંદુ કહે છે ।

નયનામૃતાંજન—પારદ અને સીસું સરખે ભાગે લઇ તેને સાથે ઘુંટી પક કરવું. તે બેઇનો બરાબર શોધેલો સુરમો મેળવી પારદથી ચોથા ભાગનું કપૂર ૧ દિવસ [illegible] કે ત્રાંબાની ખરલમાં ઘુંટવું પછી આંજવું. તિમિર પડળ કાચ અર્મ [illegible] અર્જુન વગેરે રોગ મટે ।

कृष्णमंडळनो दाह तथा गड. कारण-चिन्ह—कणुं पडवाथी वाग वाथी के बीजा कारणोथी कृष्णमडळ रातुं थाय छे तेना पर रातो दोरीयो जोवामां आवे छे अजवाळु खमातुं नथी आंसु वहे छे पोपचां सोजी आवे छे पीडा खटको थाय छे कृष्णमंडळ झाखुं पडी डोळाइ जाय छे. वखते कृष्णमंडळमां गड थइ पर थाय छे ते ठेकाणे पीळो डाघ देखाय छे पछी आराम थइ कृष्णमडळमां फुलुं थइ रहे छे अथवा जळरुप रसमां पर थइ कृष्णमंडळ फुटे छे. डोळामां रहे तो रस बहार निकळी जाय छे त्यारे आंख बेसी जाय छे अथवा डचो निकळी पडे छे।

पंचामृतपुष्पांजन- बरासकपूर तो. १ पलविनां बीयां मासा ३ लविंग मासा ३ नवसार मासो १ मरी मासो १ बधांने गुलाबजळ शेर ०। साथे खरल करवु पछी तेनी वाटकी करी छाये सुकाववी. लोबानना फुल पाडवानी रीते फुल पाडवां ने आंजवाथी कृष्णमडळनो दाह गड सोजो तथा आंखनां बधां दरदो मटे।

लेप—फोतरा विनाना जव शतावरी मग त्रिफळा बधां सरखे वजने लइ साथे वाटी नवशेकुं करी बहारना भागमां लेप करवो।

खावामां चंद्रप्रभा गुगळ २ थी ४ गोळी त्रिफळाना उकाळा साथे आपवी. अथवा महाचंद्रकळा गोळा ३ थी ६ मध घी साथे चटाडो उपर त्रिफळानो क्वाथ पावो मनोरमपुष्पांजन आंजवुं।

कनीनिकानो [illegible]-सोजो, कारण-चिन्ह—[illegible] उपदंश शरदी झोंको वागवो, शरदी [illegible] पाणीमां [illegible] कारणे आंखने त्राम पहोंचवाथी कृष्णमडळनी पाछळ जे कनीनिका [illegible] छे त्यां सोजो थाय छे त्यारे आंख लाल थाय छे आंखमां कपाळमां द[illegible] छे कीकी संकुचित थाय छे कनीनिका डोळो तथा झांखो देखाय छे. [illegible] सहन थतुं नथी राते पीडा वधु होय छे आंसु आवे छे।

हरीतक्यादि लोह—मोटी हरडेदळ तो. २० जेठिमधनां मूळ तो. १२ वांसकपूर तो. ३ पिपर तो ३ सिंधालुण तो. ३ बधां खांडी कपडछान करी तेमां लोहभस्म तो. ६ मेळवी मध घी साथे ८ रति सवारे एक वखत खवरावबुं खाटुं खारुं तीखुं बंध करवुं. आंखनां तमर आंखनुं लोही रतांधळापणुं आंखनो रतवा सोजो पडळ पाणी छुटतुं होय ते मटे।

चंद्रोदयावर्ति आंजवी. चंद्रप्रभा गोळी २ थी ४ त्रिफळा तो ०। साकर तो. ०॥ मध तो. १ साथे मेळवी चटाडवुं. महात्रिफळ घृत ०॥ थी १ तोलो हमेशां साकर मेळवी चटाडवुं. भांगरो जेठिमधनां पान मग अने हळदर सरखेभागे लइ वाटी गरम करी बहारना भागमां चोपडवुं।

फुलुं अव्रण शुक्र, चिन्ह—कृष्णमंडळ उपर चांदां पडया पछी अथवा सोजो थया पछी तेनापर सफेद डाघ रही जाय छे ते राइना दाणाथी मांडी आखा कृष्णमंडळ जेवडुं मोटुं थाय छे. दरमां कीकी उपर होय तो जोवामां हरकत पडे छे।

यवभस्मांजन—जवना लोटने पाणीमां बांधी गोळो वाळी सळगाववो राख थाय (बळीने काळो थाय) एटले वाटीने कपडछान करी भेंसना घीमां खरल करी पछी कांसानी थाळीमां घुंटवुं आंजवाथी फुलुं जाय ।

लोध्र पोटली—लोद्र तथा दाडमनो छाल डोढ डोढ तोलो लइ वाटो दहींना पाणीमां मेळवी लुगडामां पोटली बांधो राते आंख उपर बांधी सुवाथी ८ दिवसमां फुलुं कपाय ।

महामुक्तांजन काळुं अथवा भुरुं, दंतवर्ति, नयनशोणांजन, भुजगवसांजन आमांना कोइ आंजवाथी वधु ओछी मुदते फुलुं कपाय छे ।

सामान्य उपचार

१ आंबलीयो खारेकनो ठळीयो लइ घसी आंजवाथी फुलुं मटे ।

२ आरसपाण घसी आंजवाथी फुलुं मटे ।

३ कपूर साकर समभागे वाटी थाळीमां राखी वाटके कचरी पछी अंजन करवुं फुलुं छाया दुखती मटे ।

४ बरास मासो १ कनक बोज सुंठ मरो पिपरीमूळ समुद्रफीण दरेक टां १ एक, जुइना फुल ५० ना रसमां गोळी करवी घसी आंजवुं जन्मनुं फुलुं मटे ।

५ फुलावेल फटकडी टां. १ घीनुं काजळ टां. २ गौघृत शे. ०। त्रांबाना पात्रमां कांसानी वाटकीथी ३ दिवस घुंटवुं जसतनी डाबलीमां राखवुं आंजवाथी बाखध खजवाळ उठणीं छाया फुलुं सर्व मटे ।

६ बरासकपूर मासो १ कनकबीज टां. ५ सुंठ टां. १ पिपर टां. १ मरी टां १ समुद्रफीण टां १ बधांने वाटी जुइना फुलनो रस तो. १० मां गोळी वाळवी पाणीमां घसी आंजवाथो जन्मनुं फुलुं कपाय ।

७ इंगोरियानो रस आंखे आंजवाथी फुलुं जाय ।

८ इंगोरियानां मींज जीरुं पारसपिपळानां मींज ए सरखे भागे वाटी बकराना दुधमां ४ पहोर परती गोळी वाळी आंखे आंजवाथो बधो जातनां फुलां मटे ।

९ गधेडानी डाढ स्त्रीना धावणमां घसी १ मास आंजवाथो शीतळानां फुलां मटे

१० आंबलोया वणनुं मूळ गधेडाना दांत सरखे भागे पाणीमां वाटी गोळी वाळवी पाणीमां घसी आंजवाथी शीतळानां फुलां मटे ।

११ मोरथुथु टां. १ साठोचोखा टां १ साथे वाटी गधेडोनां दुधमां १ पहोर परती चणया जेवडी गोळी वाळवी. गधेडोना दुध साथे घसी ८ दिवस आंजवाथी शीतळानां फुलां मटे ।

१२ मरी अफिण कपूर सरखां लइ वाटी आंबलीना पानना रस साथे अंजन करवाथी फुलां मटे ।

१३ गाडानुं दुध शेर २ गरम करी खीर जेवु थाय त्यारे सिंधालुण टां. ४ रसनज्योतनां डोडवांनां मींज टां. ४ पिपर टां. २ सुरोखार टां २ अडायानो राख टां. ४ बधां वाटी खीरमां नाखो उतारी कांसानी थाळीमां नाखी कांसाना वाटकाथी १। पहोर मर्दवुं पछी घीना रोढा ठाममां भरी राखवुं. सुती वखते आंजवुं. २१ दिवस आंजवाथी शीतळानां फुलां मटे ।

१४ गधेडाना न र बाळी दहींमां मलम करी ३ दिवस आंजवाथी शीतळानां फुलां जाय ।

१५ इंगोरियानां मींज चकलोनी चरक देशी साबु समभागे वाटी गोळी करी पाणीमां घसी आंजवुं. फुलुं छाया मटे ।

१६ वनचकलीनी चरक साकर समभागे लइ अंजन करवुं. बाळकनुं फुलुं मटे ।

१७ कांग बाळी वाटी भरण भरवुं. ढोरनां घोडानां माणसनां फुलां मटे ।

१८ इंगोरियाना पाननो रस बेडांनां मींज समभागे घसी अंजन करवुं. शीळीनां फुलां मटे ।

१९ घोडाना मोवाळा खजुरना ठळीया तेलमां तळी बाळवा पछी खापरियुं काळो तथा धोळो सुरमो अफिण हरडेदळ द्रिमेज पलविदाणा लविंग चणकबाब तांजळी फुलावेल फटकडी साकर समभागे वाटी बारिक चाळी लींबुना रसथी कांसाना ठाममां परतवुं. सुकाय पछी तुळसीना रसमां परती गोळी वाळवी. तुळसारसमां अथवा पाणीमां घसी आंजवुं. छाया फुलुं तिमिर मटे ।

२० मींढडाना मस्तकनुं हाडकुं लइ थुकमां घसी आंजवु. शीळीनुं फुलुं मटे. माणसनुं होय तोपण मटे ।

२१ जुइना पानना रसमां खापरियुं वाटी आंजवाथी फुलुं मटे ।

२२ वननी चकलीनी चरक वासी पाणी साथे घसी आंजवाथी फुलां मटे ।

२३ पुरुषना माथाना वाळ बाळी भरण भरवाथी शीतळानां फुलां जाय ।

२४ अरणीनो रस आंजवाथी शीतळानां फुलां मटे ।

२५ उटनी डाढ पाणीमां घसी आंजवाथी शीतळानां फुलां जाय ।

२६ काळा गधेडाना दांत शेमरसींग समभागे लइ बारिक वाटी स्त्रीना धावणमां मेळवी गोळी वाळवी. धावणमां घसी आंजवाथी ३ दिवसमां फुलुं मटी आंख साफ थइ जाय ।

आंखनो डह्यो कारण-चिन्ह—वांदां अथवा सोजाने लीधे कृष्णमंडळ कुटया पछी-रुझाया पछी वधवा मांडे छे बोरनी पेठे उपसीने बहार आवे छे कठण थइ वधे नहीं तो तेमां पीडा थती नथी पण जो ते मोटो थतो जाय छे तो पीडा थाय छे आंख वारंवार राती थाय छे माथु दुखे छे आंसु आवे छे पांपण वींचाती नथी ।

चंद्रोदयावर्ति अथवा महामुक्तांजन आंजवुं ।

मोतियो पडळ तिमिर कारण-चिन्ह—आंखनो जळरूपरस पारदर्शक होय छे ते अपारदर्शक थाय तेने मोतियो कहे छे. घणेभागे ४०-५० थी वधु उमरनाने आ दरद थाय छे. तेम प्रमेहना दरदने लीधे के लाकडी कांटो अथवा सोय वागवाथी के नबळाइने लीधे आ दरद थाय छे बाळकोने पण घणी वार मोतियो थाय छे आंगळां न गणी शके ते मोतियो पाकयानी निशानी छे. मोतियाथी नजर बंध थाय छे पण अंधारुं अंजवाळुं ओळखी शकाय छे पण तदन न देखाय तो ते मोतिया साथे अंदर बीजा दरद छे एम समजवुं ।

गुटिकांजन—पिपर हरडे बेडां आमळां लाख लोद्रानो काटोडो निधा लुण सरखे भागे लइ बारिक करी भांगराना रसमां २ दिवस घुंटी गोगठो करवी हमेशां पाणीमां के धावणमां घसी आंजवुं मोतियानुं पाणी गळी जाय छे आंख फुलुं खजवाळ वेल वावलुं वगेरे मटे ।

युनानी क्वाथ—उशने खुदुश गुलेबनफशा हरडेदळ हिमेज गुलेखेरु काशनी दरेक तो. ७॥ साडासात उनाब दाणा १८५ काळी धराख साफ करेली तो ११ साकर तो. ३० पना पडिका १५ करवां हमेशां १ पडिकुं उकाळीने पावुं अने हरडेनो मुरब्बो हरडे नंग १ खावो तो नजुलो मटे मोतियो गळे ।

१ चणोठिनु मूळ बकरीना दुध साथे घसी आंजवाथी पडळ मटे ।

२ शंखनाभी पाणीमां घसी आंजवाथी तिमिर पडळ मोतियो मटे ।

३ लींमडाना मूळनी छाल घोडाना मूत्रमां घसी अंजन करवाथी पडळ उतरे ।

४ कुवाना पान साठोचोखाना ओसामणमां वाटी रस काढी नाके नास देवी २१ दिवसमां आंखनां पडळ उतरे ।

झामरवा कारण-चिन्ह—आ दरदमां माथुं दुःखे छे वांची शकातुं नथी आंखे झांख वधवा मांडे छे आंखनो डोळो कठण भारे थाय छे आंखनी शिराओ लोहीथी भरेली अने फुलेली जणाय छे कीकी मंद अने विस्तृत थाय दीवा सामे जोवाथी तेनी आसपास इंद्र धनुष्य जेवु मंडळ देखाय छे आंखनी भमर कपाळ लमणामां दुःखावो चसका थाय छे आ चिन्हो केटलाक महीनाने अंतरे थाय छे धिमे धिमे प अंतर ओछुं थइ एक दिवस असह्य पीडा थइ आंख जाय छे केटलाकने झामरवा आखी जींदगी सुधी पहोंचे छे मटी जाय छे उपडे छे पण थवा करे छे धिमे धिमे आंखनुं तेज कमी थतां देखातु साव बंध पडे छे ।

ससामृत लोह—हरडे बेडां आमळां लोहभस्म जेठिमधनो शिरो सरखे भागे टंके ३ थी ६ रति मध घीमां चटाडी उपर दुध पावुं तेथी झामरवा तथा आंखनां घणा दरद मटे छे. आंजवामां नागार्जुनी वर्ति चंद्रोदया वर्ति के महा मुक्तांजन वापरवुं. बहार चोपडवामां आंबाहळदर मरडाशींगी काकडाशींगी रसवंति सरखे भागे खांडी बकरीना दुधमां वाटी नवशेकुं चोपडवुं ।

परवाळां कारण चिन्ह—उपली पांपण के नीचली पांपण अंदर वळी जइ पांपणनां वाळ आंखमां खुंचे छे कणानी पेठे खटके छे आंसु वहे छे आंख थोडी घणी लाल रहे छे पांपणने खेंचावी काढे छे त्यारे पीडा ओछी जणाय छे पाछी पांपणुं उगे छे त्यारे पहेलाने पेठे पीडा थवा मांडे छे आंख बेडोळ कुरुप थइ जाय छे. पांपण कृष्णमंडळ पर वखतो वखत घसावाथी तेना पर सफेद फुलां जेवा छारी वळी जाय छे अने दिवसे दिवसे नजर टुंकी थती जाय छे झांखु देखाय छे आ दरद स्त्रीओमां वधु होय छे ।

उपचार- ससामृत लोह ३ थी ६ रति मध तथा महा त्रैफळघृत साथे चटाडवुं. चंद्रोदयावर्ति नागार्जुनीवर्ति के महामुक्तांजन आंजवुं ।

१ मरी गेरु लुण समभागे वाटी गोळना पाणीमां चोपडवुं. परवाळां मटे ।

२ देवदार बकराना मूत्रमां घसी दस दिवस आंजवाथी परवाळां मटे ।

३ अजा मूत्रमां आंबलीयाने घसी ३ दिवस आंजवाथी परवाळां मटे ।

४ रतनजोतनुं पांदडु त्रोडो पांदडाना डींटनो रस लइ ७-१४-२१ दिवस आंखमां आंजवाथी परवाळां मटे ।

आंजणी चिन्ह—आंखनो पांपणो पर नानी फोडली थइ पाके छे तेने आंजणी कहेवाय छे ।

काळो देशी साइ चोपडवी अथवा कपुरकाचली अथवा आंबाहळदर अथवा साबरशींगुं अथवा चंद्रोदयावर्ति घसीने चोपडवी ।

आंखनुं कणुं कारण-चिन्ह—आंखमां धुळ रेतिनो कण लोढुं के धातुनी कणो वगेरे आंखमां पडे छे त्यारे पाणो वहेवा मांडे छे पांपणु पटपटाववाथी के पाणी छांटवाथो कणुं निकळी जाय छे पण ते कणुं कृष्णमडळमां के धोळा डोळामां ग्वुची गयुं होय तो निकळतुं नथी पोपचामां कणु ग्वुची गयुं होय तो आंख उथलावी काढी नाखवुं पण डोळामां ग्वुची गयुं होय तो काढवामां संभाळ राखवी आंखे पाणी छांटवुं आंख उघाडी कणुं होय त्यांथी अंगरखानी कसवती काढी लेवुं उपला पोपचामां होय तो पोपचु उथलावी काढी लेवुं काथाना एक रेसाने चोकडानी पेठे बेवड वाळी तेनो पोलथी कणांने काढी लेवुं कोइ जगोये पेशो गयुं होय अने निकळी शके तेम न होय तो वैद्य के डाक्टरना सलाह लेवी ।

लांबीदृष्टि चिन्ह—दीर्घदृष्टि एटले लांबी नजरवाळा आंखथी छेटेनी वस्तु बराबर देखाय छे पण पासेनी चिज स्पष्ट देखाती नथी

नयनचंद्रलोह ३ थी ६ रति मध घी साथे आपवी अथवा हरीतक्यादिलोह बे आना भार मध घीमां चटाडवुं चंद्रोदयावर्ति आंजवी. प्रवालपिष्टी १ वाल के मुक्तापिष्टी २ रत च्यवनप्राशमां चटाडवी ।

टुंकीदृष्टि कारण चिन्ह- ह्रस्वदृष्टि टुंकी नजरवाळी आंखथी पासेनो चिज स्पष्ट जोइ शकाय छे लखवा वांचवामां अडचण आवती नथी पण छेटेनी वस्तु के माणस स्पष्ट देखातुं नथी नानपणमां लखवा वांचवानो बोजो वधु पडवाथी टुंकी नजर थाय छे हालनी केळवणीमां दृष्टि टुंकी थाय एवा घणा ओपो छे अने विद्यार्थीओ तेनो भोग थाय छे गामडाना लोकोमां टुंकी दृष्टि क्वचित जोवामां आवे छे त्यारे शहेरमां घणी छे बीजां कारणो साथे चश्मा पेरवानी फेशन पण आंखने टुंकी नजरवाळा बनावे छे ।

उपचार—ममीरा मुक्तांजन के महामुक्तांजन आंजवुं ।

नयनचंद्रलोह- पिपर मरी हरडे बेडां आमळां काकडाशींगी कचुरो रास्ना द्राक्ष नोलकमळ शतावरी जेठिमध केसर बेठा भोरींगणी उभी भोरींगणीमूळ सुंठ प्रत्येक तो ४ चार, लोहभस्म तो. ८ अभ्रकभस्म तो. ८ साथे मेळवी त्रिफळाना क्वाथनी अने भांगराना रसनी अकेक भावना आपी अर्धा वालनी गोळी वाळवी मात्रा ३ थी ६ गोळी मध घीमां चटाडी उपर दुध पावुं आंखनुं तेज वधे महामुक्तांजन चंद्रोदयावर्ति पाणी साथे आंजवा ।

नबळो दृष्टि चिन्ह—निरोगी आंख नजीकनी चिजथी आकाश सुधी स्पष्ट देखी शके छे बहु लखवा वंचवाथी वधु बोजो पडवाथी आंख निकळी पडे छे त्यारे छापेला अक्षरो लींपाइ गया जेवा देखाय छे चक्कर आवे छे छातीमां धबकारो थाय छे ।

समामृत लोह ३ थी ६ रति अथवा नयनचंद्रलोह २ थी ४ गोळी च्यवनप्राश के मध साथे चटाडो उपर दुध पावु महामुक्तांजन अथवा ममीरामुक्तांजन आंजवुं ।

आंख उपर वागवुं—लडी जवाथी मारामारीथी ठोसो मुठी ठपाट के तेवुं जोरथी वागवाथी के बीजा कोइ पछडाटथी आंख उपर चोट वागे छे त्यारे तेनी आसपासनो भाग सुजी आवे छे सखत मार वाग्यो होय तो आंखमांथी लोही पडी आंख जाय छे ।

वायुनाशक उपचार करवा. आंबाहळदर कपुरकाचली उपलेट मरडासींग बधां साथे वाटी गरम करी नवशेकुं चोपडवु. पेट साफ राखवु पेटमां ग्राड थवा देवो नहीं आघात वधु हशे अने पेट बगडेलु हशे तो पीडा वधु थाशे. आघात वधु पडेलो होय तो वैद्य डाक्टरना सलाह लेवी ।

आंखनो सोजो—बन्ने पोपचां सुजी आवी बन्ने खुणा लालचोळ थाय छे ने ठंडी हवाथी झेरी दवाना वाफ लागवाथी के पछडाटथी सोजो थइ आवे छे ।

समामृत लोह अथवा नयनचंद्र लोह च्यवनप्राश साथे आपवुं. महामुक्तांजन काळु के नयनशोणांजन आंजवुं ।

आंखनी झांख—आंखना अंदरना तंतुओ नबळा पडी जवाथी आंख नबळा पडी झांख आवे छे ।

उपचार—जमीने भीना हाथ आंखे फेरववां तथा पाणीनो कोगळो मोंमां राखी आंख उपर पाणी छांटवुं. महामुक्तांजन काळु अथवा ममीरामुक्तांजन आंजवुं. अठवाडिये दशी परोडियाने गुलाब आपवो ।

रतांधळापणु—दिवसे स्पष्ट देखाय अने राते मुद्दल न देखी शकाय ते रतांधळापणुं कहवाय ।

उपचार—चंद्रप्रभावटि के महामुक्तांजन आंजवुं. चंद्रप्रभा २ थी ४ गोळी अश्वगंधाद्यवलेह के च्यवनप्राश साथे खवराववी. षडबिंदु तेलना ६ टीपां नाकना अकेक फोरणामां तथा कानमा नाखवा ।

१ अरिठानी छाल स्त्रीना धावणमां घसी २१ दिवस आंजवाथी रातअंधो टळे।
२ आमळांना मींज बेडांना मींज बारिक वाटी भरणनी पेठे आंजवुं ।
३ गायनु खीर शे. १ साकर शे. ०। ३ टंक पावुं रातअंधो टळे ।
४ देशी साबु स्त्रीना धावणमां घसी आंजवाथी रातअंधो टळे ।
५ घोळांवरा पोताना थुकमां घसी आंजवाथी रातअंधो टळे ।
६ गायना छाणना रसमां लिंडीपिपर ७ दिवस आंजवाथी रातअंधो टळे ।
७ साकर अने समुद्रफीण सरखे भागे घुंटी भरवुं रातअंधो टळे ।
८ जीयापोता कायफळ खाखरानीजड बोलांगर्भ समुद्रफीण समभागे लइ घुंटी कपडे चाळी राते आंजवाथी रतांधळापणुं फुलुं परवाळां मटे ।

नाकसुर-आंखनुं नासुर चिन्ह—बन्ने पांपणोनी अंदरना खुणामां अकेक छिद्र होय छे तेमांथो नाक तरफ सूक्ष्म रस्तो छे ते वाटे आंखनु स्वाभाविक पाणी नाकमां जइ वराळ थइ श्वासोश्वास साथे उडी जाय छे ते रस्तामां प्रतिबंध थतां आंखने खुणेथी पाणी गालपर वह्या करे छे कोइवार ते नळी पाकवाथी परु निकळे छे तेने लीधे खुणामां जीणी फोडली थइ ते वारंवार फुटे छे ते मटवुं बहु मुश्केल छे ।

उपचार—डाक्टर पासे शस्त्रकर्म कराववुं अथवा ओरींगण अने खेरसार स्त्रीने धावणमां अने पुरुषने पुरुषना पेशाबमां वाटी चोपडवुं ।

गळजीभी-भोंयाथरीनुं मूळ वाटी चोपडवुं सर्पनी कांचळी बाळी राख करीने दाबवी ।

नासाग्रव्रणहर लेप—रुमीमस्तकी तो. ०॥ राळ तो. १॥ काथो हिंगळो बोदार सिंदोर सोनामखीना कांकरा खापरियुं बेरजो दरेक तो. २ ये साथे खांडी कुंवारना रसमां घुंटी चोपडवुं ।

आंखना बधा रोग उपर वपरातां अंजनो तथा औषधो

चक्षुरक्षांजन—पारद तो. ८ मां शोधेलुं सोसु तो. ८ मेळवी तेमां सुरमो तो. ८ मेळवी एक दिवस घुंटवुं पछी नीचेनी चिजो कपडे चाळेली मेळवी बे दिवस घुंटवुं जसत पिपर भांगरो शंखनाभी हळदर निर्मळी घसेली सुखड लाख साकर मनशिळ समुद्रफीण चणकबाब फळत्रि रसवंति चेडांना मींज मीठुं प्रत्येक तो. ०॥ अर्धो अने भीमसेनी तो. १ साथे मेळवी घुंटवां. आंख उठवी वादळु वेल तपोडीयां-खील चांदु कृष्णमडळनो सोजो फुलुं परवाळां आंख पडळ पटलां आंखना दरदो आ अंजनथी मटे छे ।

महामुक्तांजन—पारद मोति कपूर अगर मरी पिपर सिंधालुण सुंठ चणकबाब हळदर मनशिळ शंखनाभी मोरथुथु कुकडाना इंडाना फोतरी बेडांना मींज कांसाभस्म कलइभस्म अभ्रकभस्म केसर हरडे जेठिमध राजाबर जुइनां फुल तुळसीनां मांजर बीयो करंजदी लोंमडानां कुणा पान आसोंधरानां [illegible] मोथ चांवाने। अने लोढानो काट बधां सरखे भागे लइ ३ दिवस घुंटवां. मध साथे के एमने एम आंजवाथी आंखना बधा रोग मटे छे ।

सूर्यांजन—सुरोखार कलमी तो. ५ अने चिनाइ फटकडी तो. ५ बन्नेने फुलावो तेमां सोसुं तो. २ नां पातळां पतरां करी जीणी कटकीओ करी घुंटवुं बारिक भुको थइ जाय एटले तेमां लींबु कागदीनो रस धिमे धिमे नाखतुं जवुं कुल २५ लींबुनो रस समाइ जाय एटले सुकावी घुंटी राखी मुकवुं उंचो सुरमो थाय बधां दरदमां आंजवु ।

अमृत कज्जळ—नर गधेडानां लींडा लावी छाये सुकववां एक खाडो गज एक उंडो करी तेमां अडाया छाणा सळगाववां पछी ते उपर गधेडानां लींडा नाखी उपर कांसानी थाळी मुकवी ते थाळीमां पाणी भरवुं पाणी गरम थाय तेम बीजुं नाखतुं जवुं थाळीने तळे काजळ जामे ते लइ लेवु ए काजळ तो १

फुलावेली फटकडी मासा २ ते बन्ने मेळवी तेमां गायनुं माखण तो. २ मेळवी कांसानी थाळीमां त्रांबाना कळशीयाथी ३ दिवस घुंटवुं पछी डाबलीमां भरी राखवु ते आंजवाथी आंखना बधा रोग मटे ।

ममीरा मुक्तांजन नं. १—सुरमो लाल तो. १ ममीरो मासा ६ गुलाब जळमां वाटेलां मोति मा ३ राणनां बीनो गर्भ मा. ३ सरसडाना बीनो गर्भ मा ३, परवाळां सुवर्णमाक्षिक कावी, रतनजोतनां पान सुकां, समुद्रफीण दरेक मा. ६ छ, खापरियुं तो १ शंखनाभी मा. १॥ बधाने बारिक करी केळना थांभलानो रस तो ४ गुलाबजळ तो. २ लींमडाना पाननो रस मा ६ कागदी लींबु न. १ नो रस आंबलीना पाननो रस मा ६ बधां मेळवी खरल करवु उत्तम सुरमो छे आंखना बधा रोग मटे ।

ममीरा मुक्तांजन न २—ममीरो तो. ०॥ रसवंति तो ०॥ मोरथुथु फुलावेलु तो. ०। लविंग तो ०। काळो सुरमो तो २॥ कस्तुरी वाल ४ काळा मरी तो. ०। पिपर तो. ०। खापरियु तो. २॥ जसद भस्म सफेद तो २॥ हिराबोळ तो ०॥ बरासकपूर वाल ४ सर्वने वाटी कपडे चाळी पछी लींबुना रसमां दिवस ३ घुंटी खरल करी छायें सुकवी पाणीमां घसी आंजवाथी आंखना बधा रोग मटे आंखनु तेज वधे ।

मदग्यांजन—मोगरेल तेल शेर १ लइ तेनी मश पाडवी तेमां चणक बाब २ पैसाभार खापरियु २ पैसाभार सुरोखार कळमी मासा ६ काळो सुरमो शेर ०॥ ए सर्वने खरल करी शीशामां भरवुं. आंजवाथी आंखना बधा रोग मटे ।

सर्वनेत्र गदांजन काळो सुरमो तो १ फुलावेला फटकडी तो १ काळां मरी दाणा ८ वाळेली कोडी नंग २ बधाथी चारगणी साकर लइ बधाने साथे घुंटी राखवुं ।

अमृतांजन—पारो तो. ४ काळो सुरमो तो १६ सोनुं तो ४ भीमसेनी कपूर तो. २ बधाने २ दिवस सुधी खरल करवुं. आंजवाथी आंखना बधा रोग मटे ।

षड्बिंदु तेल—एरंडानुं मूळ अगर शतावरी खरखोडी रास्ना सिंधालुण भांगरो वावडींग जेठिमधमूळ सुंठ दरेक तो. ४ चार काळा तलनुं तेल तथा बकरीनुं दुध भांगरानो रस दरेक शे. ४ चार मंदाग्निथी पकाववु. छ छ टीपां नाकना फरणामां नाखवा आंखनु तेज वधे गरुड सरखी दृष्टि थाय दांत मजबुत थाय धोळा वाळ काळा अने दृढमूळ थाय ।

नेत्रामृत लोह जेठिमध पिपर वंशलोचन दरेक तो ४ चार, लोहभस्म तो. ६ आमलां तो. ३२ साकर तो. ३२ हरडेदळ तो. ८ बेडांदळ तो १६ बधां साथे खांडवा हमेशां रात्रे ०। तोलो चूर्ण मध घीमां चटाडवाथी बधा आंखना दरदोमां उत्तम छे ।

नागार्जुनी शलाका सीसाने पिगाळी पिगाळी त्रिफळाना क्वाथमां १०० वखत बुझावबुं पछी सळीयो करी शुद्ध पारद चडाववो हमेशां आ सळी आंखमां फेरववाथी आंखनु तेज वधे गरुड सरखी नजर थाय आंख उठवी अधिमंथ वावलुं तिमिर पडल वगेरे आंखना रोग मटे ।

मातंगी गुटिका—शंखनाभी टां ४ मनशिळ टां. २ मरी टां १ सिंधालुण टां. ०॥ प्रथम शंखनाभी बकरीना दुध साथे वाटवी अने मनशिळ गायना दुध साथे वाटवी मरी स्त्रीना धावणमां वाटवां सिंधालुण पाणीमां वाटी पछी सर्व भेळा करी ४ प्रहर मर्दी चणोठा जेवडी गोळी वाळवी. घसी आंजवाथी आंखना बधा रोग मटे छाया फुलुं तिमिर वालव त्रिपडा सर्व मटे एक मास आंखे आंजवाथी शीतळाना फुलां मटे. सात वरसनो अंध देखतो थाय।

मुक्ताभस्म रति २ समामृतलोह रति ३ च्यवनप्राश साथे सवारे एक वखत चटाडवु बधा नेत्ररोग मटे चंद्रकांत पिष्टी रति २ लोहभस्म ५०० पुटी रति २ मध माखणमां चटाडवुं बधा नेत्ररोग मटे. माणिक्यपिष्टी रति २ प्रवालपिष्टी रति ३ गुलकंद अथवा आमळाना मुरबा साथे चटाडवु बधा नेत्ररोग मटे।

नेत्ररोगहर लेप- फुलावेली फटकडी तो. ८ केसर तो. ०। अफिण तो. ०। बोदारसींग तो. ०॥ सर्वने लींबु २० ना रसमां घुंटी मोगटा वाळी छाये सुकावी पछी जरुर पडे त्यारे लींबुना रसमां के पाणीमां घसी आंखना बहारना भागमां आजुबाजु चोपडवाथी आंखनां दरद मटे।

अरडुस्यादि क्वाथ—अरडुसो सुंठ गळो दारुहळदर रसांजळी चित्रो करियातुं लींमडानी छाल बहु परवळ हरडे बेडां आमळां मोथ हळदर इन्द्रजव कडाछाल सरखे भागे खांडी राखवां ०॥ थी १ तोला भुकाने ४० तोला पाणीमां उकाळी १० तोला रहे एटले गाळी लइ तेमां - तोला मध नाखी दिवसमां बे वखत पावुं आंख्यना बधा दरद मटे तेमज साद बेसी जवा सळखम श्वास खांसीने पण मटाडे।

पथ्यापथ्य—बधा नेत्ररोगमां चोखा घउं मग गायनुं घी गायनुं दुध साकर मध सिंधालुण मेथी तांदळजो बथवो खरखोडीनी भाजी वगेरे खोराक ठंडा स्निग्धोष्ण पदार्थ शेक निर्वातस्थान अंजन वगेरे हितकारक छे. शरदी पवन महेनत वेजीटेबल घी बजारनी मिठाइ झीणी वस्तुने जोवी मगफळी कोळु सरसंग मगफळीनुं तेल उजागरो बहु खारां खाटां गरम वाइडां ठंडा वगेरे हानिकारक छे. हजामतमां अवळा वाळ लेवरावबा नहीं नाकमांथी वाळ खेंचावबा नहीं।

आंख्य रोगना सादा जटोली उपाय

१ मिश्रहळदर अंजन

हळदरना गांठीयाने लींबु कोरी तेमां नाखवो पछी लींबु सुकाय जाय एटले बीजा लींबुमां नाखवो एम ३ लींबुमां नाखवो पछ तेने सांचवी राखवो. जेने मीटभाव होय आंख राती होय तेने मधमां घसी आंजवाथी ८ दिवसमां आंख सारी थाय आंख दुखती होय तेने टाढा पाणीमां घसी आंजवाथी गुण थाय. आंख खाजवती होय अने कोर राती होय तो भांगराना रसमां घसी आंजवाथी आंख सारी थाय. झांझवा आवतां होय तेने पहेलवेत्री दीकरानी माना धावणमां घसी आंजवाथी सारु थाय. पडळ वळ्यां होय तेने पारसीमोजना पाणीमां अथवा खाखराना मूळना अर्कमां घसी आंजवाथी गुण थाय. रातअंधो होय तेने

उना पाणीमां घसी आंजवाथी सारुं थाय. आंखमां वाळ आव्या होय तेने साटोडीना रसमां घसी आंजवाथी सुख थाय वगेरे रोग मटे ।

२ बरासादि अंजन

बरास छुटा १ भार, लींडीपिपर पिपरीमूळ पलचि चणकबाब जेठिमधनां मूळ साकर फटकडी दरेक छुटा ०॥ अर्धाभार लइ सर्वने खांडी तेनो भुको एकत्र करीने पीतळनो थाळीमां वचमां ढगली करवो ते उपर कांसानी नानी थाळी ढांकवी तेने फरतो घउंनो लोट छांदी कपड करवुं पछी ३ पाणानो मंगाळो करी ते उपर थाळी मुकवी अने थाळामां ढांकेली थाळी देखाय नहीं तेटली वेलु भरी पछी नोचे तेलनो दीवो करवो तेल पाशेर बळे त्यांसुधी राखवुं पछी उतारी ठंडु थये वेकरो वेलु तथा लोटनी वाड काढीने थाळी उपाडवी थाळीने तळे अरग चोंटयो होय ते लइ शीशीमां राखवो आंखे आंजवाथी वात पित्त खरज फुलुं परवाळां वगेरे मटे ।

३ खापरियादि अंजन

सुरती खापरियुं पलचि सुरोखार भीमसेनो बरास चिणीनुं कपूर कस्तुरी चणकबाब लविंग पिपर पिपरीमूळ फटकडी मोरथुथु लोद्र मरी अशेळियानां बी अमदावादी जीरुं लालसुरमो चिमेड हळदर शंखनाभी मनशिळ सिंधालुण हिमेज हरडेमोटी सोयरुं गधेडानां दांत नारमळो दरेक टांक १ एक लेवां रुनी वाट करी आकडाना दुधमां पलाळी मुकवी सरसियाः तेलथी काजळ पाडी ने काजळ दोकडा १॥ भार लेवुं पछी उपला वसाणाने बारिक घुंटी तेमां काजळ मेळवी त्रांबाना त्रासमां नाखी अरणीनो रस नाखी त्रांबाना कळशीयाथी घुंटवुं. पछी गोळी वाळी राखवी. पाणीमां घसी आंजवाथी बधा आंखनां रोग मटे ।

४ मर्यादि अंजन

मरी पिपर सुंठ नोरमळी घोसो अथवा खापरियुं उपलेट समुद्रफीण सुरमो वावडींग सुवर्णमाक्षिक साकर दरेक टां. १ एक लइ वाटी बकरीनुं दुध शेर ०॥ मां मर्री गोळी वाळवी. घसी आंजवाथी तिमिर पडळ वाखव बिंद चिपडा वगेरे मटे. आकडाना मूळ साथे घसी आंजवाथी परवाळां मटे ।

५ मोरथुथादिवटी अंजन

मोरथुथु ज. १॥ भार हिमेज ज ८ भार मेळां वाटी पछी पांचशेर लींबुनो रस काढी तेमां मेळवी ५-७ दिवस सुधी घुंटवु घाटुं थाय त्यारे मरी जेवडी गोळी वाळवी. हमेशां १ गोळी गळाववी ८४ जातना फीरंग वायु मटे आंखमां आंजवाथी आंख दुखती मटे ।

६ सर्पादि अंजन

काळो सरप तुरत मरेलो होय तो लइ तेने मोढेथी वेंत १ कापी लइ पछी लोटकामां नाखी तेमां गायनुं घी शे. १ नाखो मों बीडी गजपुटनी अग्न ४ पहोर देवी पछी काढो ते राख तो. १ मोरथुथु तो. १ सुवर्णमाक्षिक तो. १ खापरियुं तो १ बधां ६ दिवस परती भरण करवुं तल जेटलुं आंजवाथी आंधळो देखतो थाय ।

७ कळश्या अंजन

कळसीयो १ त्रांबानो लइ तेमां पाणी शे. १॥ तथा घी शे. १॥ नाखी म्रों बंध करी एक खाडो खोदी तेमां मागशर शुद १५ थी जेठ शुद १५ सुधी राखी पछी काढवुं तेमांथी सळीथी आंखे आंजवाथी छाया पडळ धुंधलो तिमिर तथा आंखना सर्व रोग मटे ।

८ आकडादुध प्रयोग

आकडानु दुध पगना दसे नखे चोपडवुं तथा ४ पगनी आंगळीना मूळमां ३ वार चोपडवुं आंख दुखती मटे ।

मोतीयो

९ मोटी हरडेदळ तो ५ तथा खडी साकर तो. ५ बन्ने साथे वाटी खुब घुंटी अकेक तोलानो सोगठो करवी सुती वखते पाणीमां घसी आंजवाथी मोतीयो आवतो नथी अने आव्यो होय तो गळी जाय छे ।

१० खापरियुं टां ९ सुरोखार टां. ९ साथे ३ दिवस सुधी वाटवां कपुर १ वाल कस्तुरी १ वाल मेळवी आंजवाथी छाया पडळ तिमिर खरज वगेरे मटे ।

११ गळो जुनुमध सिंधालुण दरेक टां. ४ चार भेळा करी वाटी कुंपी भरी राखवी ४ दिवस आंजवाथी छाया छारी हटे ।

१२ तांदळजानी भाजी सांजे मोळी बाफी अगासीये ४ पहोर राखवी प्रभाते गायनुं घी नाखी २१ दिवस आंजवाथी आंखनुं तेज वधे ।

१३ चोखा टां १० सिंधालुण टां. १० आंकडाना दुधमां थेपली करी संपुटमां मुकी बाळवुं तेनी राख तथा सुरमो टां २ खापरियुं टां २॥ बारिक वाटी गायना माखणमां कांसाना पात्रमां परनी शीशी भरवी राइ मात्र अंजन करवुं अनेक चक्षुरोग मटे ।

१४ आकडाना दुधमां रु पलाळी वाटयुं करी सुकवी पछी लींमडाना रसमां पलाळी सुकववी ते वाटने सरसिया तेलमां पलाळी काजळ मस पाडवी ते काजळ गायना घीमां कालवी आंखे आंजवाथी आंखना बधा रोग मटे ।

१५ कपूर वाल २ सिंधालुण वाल ४ आबलीना मींज गर्दी ५ करंजनी गर्दी २ घुंटी अंजन करवु सर्व रोग जाय ।

१६ अडाया छाणानी राख वाल ४ चाळवी सिंधालुण वाल १ हिंग मम्मर वाल १ तेमां लींबुनो रस नाखी थाळीनी बचाळे मर्दी २ पहोर अंजन करवुं आंख उठी होय वाखध खजवाळ बळतरा छाया पडळ फुलुं जाय ।

१७ लींडीपिपर लोदर मोरथुथु फटकडी दरेक टां १ पक. साकर टां. ४ गायनां दुध साथे कांसानी थाळीमां नाखी त्रांबाना लोटाथी १ प्रहर घुंटी आंखे आंजवुं आंखना सर्व रोग समे ।

१८ वज उपलेट शंखनाभी बेडांमींज पिपर दरेक टां. १ पक, मरी टां. ०॥ बकरीना दुध साथे घुंटी गोळी वाळवी. पाणी साथे घसी आंजवाथी पडळ जाय स्त्रीना धावण साथे घसी आंजवाथी वाखध जाय गायना दुध साथे घसी आंजवाथी रातअंधु टळे, मध साथे घसी आंजवाथी आंखना सर्व रोग जाय ।

१९ कस्तुरी खापरियुं हिराबोळ हिमेज काळो सुरमो धोळो सुरमो परवाळा फुलावेली फटकडो लविंग पलचिदाणा लोहचुर लोदर शंखनाभी फुलावेलुं मोरथुथु कपूर छडीलो उपलेट दरेक टां. ०॥ अर्धो लइ लींबुना रसमां घुंटी गोळी वाळवी. घसी आंजवाथी छाया फुलुं परवाळां झांखु सुजतुं झांझवा वगेरे मटे।

२० मरी काननो मेल धावणमां घसी आंजवुं छाया झांझवा मटे।

२१ पारेवानी चरक टां. ५ सुंठ टां. ५ वाटी भरण करवुं छाया पडळ टळे।

२२ फुलावेली फटकडी अने साकर समभागे वाटी भरण जेवी करी नेत्रांजन करवुं छाया टळे।

२३ धाणा सुंठ पडसुदि साकर साथे चटाडवो आंखे तिमिर मटे तेज वधे।

२४ इंगोरियानो गरभ अने मरीनी गोळी चणिया बोर जेवडी करवी ए गोळी आंजवी आंखनी छाया झांझवा छारी मटे. सरप अने वींछीना करडमां आंजवी पावी चोपडवी एमां पण गुण करे छे।

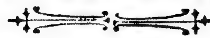
२५ राती चणोठी धोळो चणोठी बरासकपूर सरखां लइ वाटी भरण करवुं ७ दिवस आंखे आंजवाथी अनेक चक्षूरोग मटे।

२६ हरडे बेडां आमळां साकर दरेक टा. ३ त्रण, जेठिमध टां. २ लींडोपिपर टां. १ तपखीर टां १ बारिक चूर्ण करी मध घीमां ०। थो १ तोला सुधी रोज सांजे चटाडवुं कपालरोग नेत्ररोग मटे।

२७ लींमडाना पाननो रस अरणीपत्र रस ए बे रसनी मध्ये गधेडानी डाढ घसी ८ दिवस तडके छाये सुकवी पछी मध साथे गोळी वाळी ते गोळी पाणीमां घसी आंखे आंजवाथी घणा रोग मटे।

२८ सुरमो सिंधालुण शंखनाभी मनशिळ त्रिकटु निर्मळी समुद्रफीण साकर समभागे वाटी बकरीना दुध साथे गोळी करी घसा आंजवाथी तिमिर फुलुं नेत्रपिडा पडळ मटे।

२९. भांगरानो रस आंजवाथी झांझवा छाया पडळ मटे।



नाकनां दरद-नासा रोगाः

कारण बहु पाणी पीवाथी धुडख श्वासमां जवाथी बहु बोलवाथी बहु उंघवाथी बहु उजागराथी पाणीमां बहु नावाथी उलटी तथा आंसुनो वेग रोकवाथी तथा बीजां केटलांएक कारणोने लीधे नाकनां दरद थाय छे।

चिन्ह- हाडमां झीणो ताव रहेतो होय एम लागे छे माथुं भारे थइ जाय छे माथामां लमणामां गालमां कळतर अने झीणो दुखावो जणाय छे ते उपर दाबवाथी के लुगडुं राखवाथी सारुं लागे छे नाकमांथी पाणी पडया करे छे नाक बाझी जाय छे मुश्केलीये श्वास लइ शकाय छे झाडो कबज थाय छे भुख ओछी लागे छे।

पथ्यापथ्य—एकादो सादो जुलाब लेवो भुख वधु लागे त्यारे जमवुं कपडां पहेरी राखवां उघाडुं रहेवुं नहीं ठंडे पाणीये नावुं नहीं प्रवाही पदार्थ

ळुं पीवुं दुध भात दाळभात वगेरे हळवो खोराक लेवो महासुदर्शन चूर्ण अने गाइक साथे फाकवां लविंग वाटी गरम करी कपाळे चोपडवां पवन माथे गवा देवो नहीं माथे जाडुं कपडुं बांधी राखवुं. घरमां बहु पवनने आवजा वा देवी नहीं चण्यानुं के कळथीनुं ओसामण मसालो नाखो वघारी पावुं।

प्रतिश्याम- सळखम

कारण—ऋतुना फेरफारथी वरसादनां ताजां पाणी पीवाथी बहु नावाथी मासामां खुली हवा लेवाथी भेजवाळी के छोबंध जमीनमां सुवा बेसवाथी रदी थइ सळखम थइ आवे छे।

मळमूत्रनो वेग रोकवो अजीर्ण धुड उडवी बहु बोलवुं क्रोध ऋतुपरिवर्तन थुं तपवु उजागरो बहु निद्रा ठंडा पाणीमां बहु नावुं वगेरे कारणे आ दरद थाय . वायुना सळखममां माथुं भारे थाय झकडाइ जाय आळस आवे रुंवाडां उभां थाय नाक रोकाइ जाय श्वास मुश्केलीये लेवाय गळुं होठ सुकाय लमणामां पीडा थाय साद बेसी जाय पित्तना सळखममां पीळो स्राव थाय माणस दुबळो पडे ांडुवर्णो थइ जाय शरीर अने माथुं तपेलुं रहे नाकमांथी अग्नि अने धुंवाडा नेकळता होय तेम जणाय. कफ शरदीना सळखममां ठंडो धोळो घणो त्रिकणो स्राव थाय आंखो सोजी जाय माथुं भारे थाय गळुं ताळवुं होठ माथामां खजवाळ आवे त्रिदोषनामां मिश्र लक्षण जणाय।

सळखमवाळाने निर्वातस्थानमां राखवो माथे गरम अने वजनदार कपडुं वींटी राखवुं।

विडंगादि नस्य—वावडींग सिंधालुण हिंग गुगळ मनशिल वज सम-भागे खांडी कपडे चाळी सुंघाडवुं।

पीनसहर नस्य—वजर पिपर सरगवानां बी वावडींग मरी समभागे खांडी घुंटी कपडे चाळी सुंघाडवुं वधा दोषनां सळखम मटे छे।

चित्रघंटा वटी—पारद तोला १० गंधक तो. २०, ताम्रभस्म लोहभस्म शंखभस्म अभ्रकभस्म टंकण मरी सुंठ पिपर लविंग तज प्रत्येक तो ५ पांच, बोडी अजमोद अजमा हळदर वडागरु प्रत्येक तो. ४ चार साथे मेळवी फोदीनाना रसनी तथा आदुना रसनी अकेक भावना दइ चणोठो जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी मधमां चटाडी उपर तुळशीना पानने चा गोळ नाखी पावो।

चित्रकहरीतकी अवलेह—चित्रो रतल २०, भोरींगणी पंचांग अरणीनां मूळ अरडूसीनां मूळ भोरींगणीनां डोडवां प्रत्येक रतल १० दस, हरडे रतल २० दाम्डोनुं पंचांग रतल २॥ नागरवेलनां पान रतल २ वधां साथे अधकचरां करी तेमां वधांथी सोळगणुं पाणी नाखी चतुर्थांश रहेतां सुधी पकाववुं पछी गाळी लइ हरडे जुदी काढी सुकावी भुको करवो. गाळेला उकाळामां ते भुको नाखी तथा सुंठ पिपर मरी तज लविंग वंशलोचन वावडींग शेकेलां बेडांनो छाल जव-खार अजमोद अजमा हळदर आंबाहळदर काळीपाठ सिंधालुण गजपिपर अरडू-सीनां पान प्रत्येक तो. ४० चाळीस, अभ्रकभस्म रससिंदुर लोहभस्म प्रत्येक तो.

८ आठ नाखी पकाववुं. खदखदवा मांडे अने जरा घाटुं थाय पटले तेमां गोळ मण २॥ नाखी चाटवा जेवुं थतां सुधी पकाववुं. मात्रा २ थी ४ तोला सुधी चटाय छे उपर गरम दुध पावुं. सळखम नाकनां दरद क्षय छातीनां दरद कफ श्वास उधरस पेटना जीवडा वगेरे दरद मटे छे ।

षडबिंदु घृत—भांगरो लविंग जेठिमध कुष्ठ सुंठ समभागे लइ लुबदो करी तेमां गायनुं घी पकाववुं. पनां टीपां ६ नाकमां नाखवां. सळखम मटे ।

कलिंगादि नस्य—इन्द्रजव हिंग मरी लाख कायफळ कुष्ठ वज सरगवानां बी वावडींग समभागे खांडी कपडे चाळी सरखे भागे सुंघवानी बजर मेळवी सुंघाडवुं जरुर जणाय तो अत्तर मेळववुं ।

चित्रकहरीतकी चाटण तो १ नासारोगहरी गोळी बे साथे अथवा सर्वेश्वर पर्पटी रति २ साथे चटाडवु ।

रत्नपर्पटी रति १ ताम्रभस्म श्वेत रति २ मेळवी २ भाग करो भृगुहरीतकी साथे चटाडवुं ।

सुवर्णवसंत मालती तो. ०। मुक्ताभस्म तो. ०। अग्निरस तो ०॥ साथे मेळवी ३० भाग करवा सवार सांज च्यवनप्राश साथे देवुं ।

१ खसखस तो. १ ने कानापाकां शेकी खवराववाथी सळखम मटे ।

२ केसर पिपर सुंठ जुनो गोळ समभागे वाटी पाणीमां मेळवी ६ टीपां नाकमां नाखवाथी नाकनां बधां दरद मटे ।

३ नवसार तथा कळीचुनो सरखे भागे लइ स्टोपर्ड बुचनी बाटलामां भरी राखवो सळखमवाळाने शीशी उघाडी सुंघाडवुं ।

४ उपलेटनी धुंवाडो मोमां बीडानो पेटे पीवो अने नाक वाटे काढवी ।

५ राळ आसोंदरो कडाछाल उंबरो प्रत्येकनी छालनो उकाळो पावो ।

६ वायवरणानी छालनो उकाळो पावो ।

७ गोळ तो. ५ मरीनो भुको तो. ०। सुंठ तो. ०॥ साथे मेळवी खवराववुं ।

८ कायफळ काकडासींगी पुष्करमूळ सुंठ पिपर मरी धमासो काळीजीरी बधांनो उकाळो करी पावो ।

९ काळीपाठ हळदर दारुहळदर मोरवेल लींडीपिपर चमेलीनां पान बधांनो लुबदो करी तेल पकावी नाकमां टीपां नाखवां ।

पीनस-जुनुं सळखम

चिन्ह नाक बांझी जाय श्वास मुश्केलिये लइ शकाय नाक सुकाय अने भीनुं रह्या करे धुंवाडा निकळता होय पम लागे-तपे सारो नरसो गंध न जाणी शके अने सळखमना सरखा चिन्हो देखाय ।

कट्फलादि चूर्ण—कायफळ पुष्करमूळ काकडासींगी सुंठ पिपर मरी धमासो कलोंजीजीरुं समभागे खांडी खवराववाथी पीनस सळखम मटे ।

पीनसहर धूम्र—हिंगळो टां. २॥ मरी टां. २॥ झीणां वाटीने आकडाना दुध साथे घुंटी परती झीणां लुगडानां हथेळी जेवडा बे त्रण कटका करी तेमां भींजवी पछी तेनी वाटयुं करी सकववो. ते वाटने अग्नि लगाडीने नाके नास

धुंवाडो आवे तेम करवुं ज्यारे सहन थाय नहीं त्यारे बंध करवुं एम १ दिवसमां पांच वखत करवुं अने १ बाद ४ दिवस पोंचाडवी. पीनस तथा नाकनां रोग मटे.

मरीचादि वटी—मरी चित्रो हरडे जीरुं कंकोल पिपरीमूळ कनकबीज तपखीर काथो दाडमसार सुंठ बधां सरखे भागे लइ वाटी तेनाथी बमणो गोळ नाखी मेळवी चणिया बोर जेवडी गोळी वाळी २ थी ४ गोळी पाणी साथे देवी. पीनस मटे शांति थाय पाणी गळतां अटके ।

केसरादि मलम—केसर टां. १, एलचि हळदर समुद्रफळ हिंगळो मरडासींगी दरेक टां. २ ने बधां बारिक वाटी गायना घीमां कालवी मलम करवो. नाकमां चोपडवाथी पीनस मटे ।

केसरादि घृत—केसर टां २, टंकण साकर टां. ४ चार लइ त्रणेने पाणी तो. २० मां वाटी तेमां गायनुं घी तो. २० मेळवी लोढाना ठाममां अथवा तपेलामां पकावी घी बाकी रहे त्यारे उतारी लेवुं तेनां टीपां ६ थी १० नाकमां नाखवां पीनस मटे ।

पीनसहरी वटी—अकलकरो पारद हिंगळो केसर अफिण लविंग सम भागे लइ पाणीमां घुंटी चणोठी जेवडा गोळा करवी सवार सांज अकेक गोळी दुध साथे आपवी पीनस मटे ।

१ मोळा दहींमां गोळ ,अने मरी नाखी पावुं अथवा अभ्रकभस्म सहस्त्रपुटी रति १ अने पिपर रति ३ मधमां चटाडवी ।

२ लोहभस्म ५०० पुटी रति २ वासावलेह तो. १ मां चटाडवी तथा आंबानां रानां पान वाटी स्वरस काढी तेमां छास मेळवी नाकमां टीपां नाखवां अने आंबानां पान वाटी नाक उपर मुकवां ३ दिवस करवाथी नाकमांथी जंतु निकळी जइ पीनस मटे ।

३ केसर द्राक्ष खजुर दरेक टां. १ एक, बरास टां. ०॥ बधांने पाणीमां वाटी पछी माखण शेर ०॥ मां ए सर्वे पकावी नाकमां ८-१० टीपां हमेशां नाखवां तथा खारेक साथे हमेशां खवराववुं पीनस मटे ।

४ गोळ तो. २ दुध तो. १० मरी तो. ०। पकडां करी पावुं पीनस मटे ।

५ सुंठ पिपर जीरुं सिंधालुण वज समभागे खांडी तेमांथी थोडुं पाणी साथे वाटी नाकमां टीपां नाखवां. ७ थी १४ दिवसमां पीनस मटे ।

पूतिनस्य-नाकमां परु

गळुं अने ताळवानां मूळमां कोपेला दोषो वायुद्वारा मों अने नाक वाटे परुने बहार काढे छे ते पूतिनस्य कहेवाय छे ।

व्याघ्री तेल—भोंरींगणीफळ दंतीबीज वज सरगवानां बी तुळसी सुंठ पिपर मरी सिंधालुण एमां तेल पकावी तैयार करी नाकमां टीपां नाखवां ।

सुवर्ण पर्पटी रति ३ सुवर्णवसंतमालती रति २ त्रिफळा चे आनी भार मेळवी मधमां चटाडवुं अथवा केशरादि गोळी ३ त्रण सवार सांज घी मां गळाववी राते सुतो वखते आरोग्यवर्धनी गोळी ३ पाणी साथे आपवी ।

नासापाक–नाकमां पाक

घ्राणमां रहेलुं पित्त अंदर गुमडुं उत्पन्न करी पाक उपजावे छे ।

सो वखत धोयेलुं घी चोपडवुं. पिपर वड पिपळो उंबरो प दरेकनी छाल लइ उकाळो करो तेनां टीपां नाकमां नाखवां तथा नाक उपर छांटवुं ।

जात्यादि मलम अथवा व्रणरोपण मलम लगाडवो अथवा दशांगलेप बहारना भागमां चोपडवो अने प्रवाळपिष्टी रति ३ मुक्तापिष्टी रति २ मध माखणमां चटाडवी.

रसपर्पटी रति ३ कैशोर गुगळ गोळी २ दुध के पाणी साथे आपवी ।

क्षवथु छींकनुं दरद

घ्राण स्थित मर्ममां कोपेलो कफ साथे संबंधवाळो वायु नाक वाटे शब्द साथे बहार पडे छे ते क्षवथु ।

क्षवथुहा तेल— सुंठ कुष्ठ पिपर बीलीगर्भ द्राक्ष पनां कल्कमां पकावेलुं तेल नाकमां नाखवाथी छींकनुं दरद मटे महानारायण तेल अथवा महालाक्षादि तेलनां टीपां नाकमां नाखवां ।

क्षवथुहा धूप—घी गुगळ अने मीणनी धुंवाडी पावाथी छींकनुं दरद मटे।

वातविध्वंस रति २ सर्वेश्वरपर्पटी रति २ साथे मेळवी २ भाग करी बे वखत भृगुहरीतकी अवलेह साथे चटाडवुं. एम २१ दिवस सेवन करावबुं ।

भ्रंशथु

पित्तथी तपेला मस्तकमां आगळनो जामेलो कफ निकळ्या करे छे ते भ्रंशथु

क्षवथुहर धूप अने तेलनो उपयोग करवो नासारोगहरी गोळी ३ तथा रत्नपर्पटी रति २ मेळवी चित्रकहरीतकी चाटण साथे चटाडवुं जुनो द्राक्षासव पावो

दीप्त–दाह

दाह बळतरा साथे धुंवाडानां पेठे गरम वायु नाकमांथी बहार निकळे अने नाक बळया करतुं होय एम जणाय ।

लींमडाना पाननो रस अने रसवंतिने मेळवी नाकमां टीपां नाखवां माथाने लींमडाना पाननी बाफ आपवी ।

षडबिंदु तेलनां के भृंगराज तेलनां टीपां नाकमां नाखवां. दशांगलेप चोपडवो सुधापर्पटी रति ३ महापित्तांतक रति २ साथे मेळवी मध साकरमां चटाडवुं अथवा प्रवाळपिष्टी रति ५ बे वखत मधमां आपवी ।

प्रतिनाह–श्वास रुंधन

वायु अने कफ प्रकोप पामी श्वासने रोकी दीये अने नाक वाटे श्वास न लइ शके ते प्रतिनाह ।

दशांगलेप बहारना भागमां चोपडवो. फळघृतने गरम करी तेनां टीपां नाकमां नाखवां वातराक्षस रति २ श्वासकुठार रति ३ मेळवी बे भाग करी कंटकार्य वलेह साथे बे वखत चटाडवुं. सुवर्णवसंतमालती अने पिपर मध साथे आपवी ।

स्राव

पीळो धोळो पातळो घाटो प्रवाही पदार्थ नाक वाटे निकळे छे ते स्राव ।
कलिंगादि नस्य सुंघाडवुं. मगजपौष्टिक सुंघणी सुंघाडवी. दशांग लेप चोपडवो अथवा सुवर्णवसंतमालती तो ०। लोहपर्पटी तो. ०॥ चोसठपोरी पिपर तो. साथे मेळवी ३० भाग करवा सवार सांज अकेक भाग मधमां के वासावलेह साथे चटाडवो ।

नासाशोष-नाक बाझवुं

वायु अने पित्त वडे घ्राण इंद्रियमां रहेलो कफ सुकाइ जवाथी माणस दु कष्टे करी श्वास लइ शके ते नासाशोष ।
दशांग लेप चोपडवो गायना घीना टीपां नाकमां नाखवां. माथामां भृंगराज ल नाखवुं चित्रकहरीतकी के वासावलेह साथे अमृत पर्पटी बन्ने रति चटाडवी. मीने अभ्रककल्पवटी ४ चार गोळी पाणी साथे आपवी ।

नासार्श तथा नासार्बुद

नासार्शोहर तेल—घरनो धुवाडो पिपर देवदार करंज सिंधालुण अघे नां के अघेडानो क्षार पमां तलनुं तेल पकावी १ मास नाकमां टीपां नाखवां कना हरस मटे ।

नासार्शोनाशन तेल—अघेडानां पाननो रस अघेडानां बी करं चवक त्येक तो १० दश, लींबुरस तो. २०, अजमोद भोंरींगणी डोडवां रातांकणेरनां ल प्रत्येक तो. ४ चार साथे वाटी तेमां तलनुं तेल तो. ४० पकावी नाकमां पां नाखवां. कैशरादि गोळी ३ त्रण टंके दुध साथे गळाववी अने राते आरोग्यवर्धनी ३ गोळी पाणी साथे देवी ।

नाकसुर

गधेडानां लींडां सुकां लीलां लइ हांडलामां नाखी नीचे अग्नि करवो हांडला उपर थाळी मुकवी थाळीमां पाणी भरवुं. थाळीने तळे मस जामे तेने गायना घी साथ मेळवी चोपडवाथी नाकसुर मटे ।

शियाळनां अथवा जरखनां लींडां साजीखार बोकडानुं हाडकुं चोखा मोरथुथु जुनो माणसना वाळ समभागे बाळी राख करवी. नाकसुरने ठेकाणे दाबवाथी मटे ।

नाखोरी फुटवी पूयशोणित-नासारक्त

ललाटना भागमां चोट वागवाथी अथवा दोषनो प्रकोप थवाथी लोही अथवा लोहीमिश्रित परु नाकमांथी निकळे छे ते पूयशोणित कहेवाय छे ।

गरमी कमळो पांडुरोग आंबलिया बहु खावाथी ऋतुनां अटकायत वगेरे कारणे तथा सख्त ताव आवी गयो होय तो नाखोरी फुटे छे. नाकमां मस्सा थवाथी तथा जंतु थवाथी पण लोही पडे छे. स्त्री करतां पुरुषने आ दरद वधु थाय छे १-२ रतल सुधी लोही पडे छे अने तेथी मगज खाली नबळुं थइ जइ चक्कर फेर आवे छे ।

षडबिंदु तेलनां के भृंगराज तेलनां टीपां नाकमां नाखवां. दशांग लेप उपरना भागमां चोपडवो अथवा घीमां तळेलां आमळां अने दशांग लेप समभागे छासमां वाटी उपरना भागमां चोपडवो. रससिंदूर रति १ महाचंद्रकळा गोळी ३ माखण साकर साथे चटाडवी ।

१ टंकणखार २ चण्या जेटलो बारिक वाटी नाकमां कागळनी भुंगळीवाटे फुंक मारी चडाववाथी पडतुं लोही बंध थाय ।

२ पाकेला कातरानो गरभ राळ जवखार दरेक तो. २ बे लई बधां चोखाना ओसामणमां वाटी ललाटे ताळवे चोपडवुं. नाकमांथी पडतुं लोही अटके ।

३ माथे सेवाळ बांधवो. हरडेने ओरसीया पर घसी तेनां टीपां नाखवां ।

४ अघेडाना पानना रसनां टीपां नाखवां अथवा वडवाईने पाणीमां वाटी तेनां टीपां नाखवां अथवा बावळनां पानने पाणीमां वाटी तेमां फटकडी साकर नाखी तेनां टीपां नाकमां नाखवां ।

५ आमळांने घीमां तळी छासमां वाटी माथे चोपडवुं के थेपली मुकवी ।

नाकमां बाह्य पदार्थ

चणोठी कचुको आंबलीयो चण्या वटाणा वगेरे चिज बाळको रमतां रमतां नाकमां मुके छे ते वधु उंचे चडी जवाथी निकळतुं नथी ते चिज वधु वखत रहेवाथी नाक अंदरथी पाके छे परु निकळे छे चसका सणका मारे छे अरीठानुं मींज के चणोठी जेवी चिज बे दिवस अंदर रहे छे तो माणस मरण पामे छे ।

जंबिरादि तेल—लींबुनो रस २ वर्षनो पडतर होय ते तोला ४० जवखार साजीखार खुरोखार वावडींग गोळ प्रत्येक तो. ५ पांच, नाक छींकणी तो १० बधा साथे मेळवी तेमां पाणी रतल ६ तथा तलनुं तेल रतल ४ नाखी पाणीनो भाग बळी जतां सुधी पकावी गाळी लेवुं आ तेलनां टीपां नाखवां.

नाक छीकणीनां पांदडां हथेळीमां चोळी सुंघाडवाथी छींकु आवीने पेसी गयेली वस्तु घणी वार बहार निकळी जाय छे ।

नाकनी दुर्गंध

रींगणाने अग्नि पर शेकी नीचोवी रस काढवो ते पाणीए नाकने धोवुं पछी मोटी हरडेनुं दळ आंबलीना आंबलोया लइने घसी नाकमां टीपां नाखवां तो नाकनी गंध मटे ।

नाकना जीवडा–नासाजंतु

१ इंगोरीयाना मींज तथा उपलो गरभ (गोळ) ए बेय वाटी गोळी चोखा प्रमाणे करवी काम पडे त्यारे ते गोळी १ तथा जड केसर गौघृत ए ४ वाना अरडूसाना रसमां ते न मळे तो फेरकणीना रसमां ते न मळे तो पाणीमां वाटी नाकमां टीपां नाखवां कीडा निकळी पडे २ अथवा ३ वखत टीपां नाखवा कानमां नाखीये तो बगां निकळी पडे ।

२ मुळांनो रस काढी पछी तेमां पारो नाखी घुंटी हाथे चोपडी तडके बेसी हाथे भुंसीने बे हाथ खुब चोळवाथी जीवडा निकळे ।

३ अमारदुधेलीना पानना रसमां कपूर घोळो तेना टीपां नाकमां कानमां नाखवाथी मगजना जीवडा निकळे ।

नाकनां बधां दरदोमां उपयोगी ओषधो

छींक लाववानुं नस्य—आकडाना दुधमां पीळी मटोडी ७ वखत भींजावी छाये सुकावी बारिक करवी छींक न आवती होय तो जरा सुंघाडवाथी छींक आवे ।

चित्रकहरितकी—चित्रकमूळ अरणीमूळ अरडुसोमूळ बेठो समेरवो उभो समेरवो गोखरु पंचांग गळो लीलां आमळां मोटी हरडे दरेक शे ५ पांच, पाणी शे. ४ मां पकावी चतुर्थांश रहे पटले गाळी तेमां गोळ मण १ नाखी घाटुं थाय पटले सुंठ पिपर मरी तज तमाल पलचि अघेडानो क्षार लविंग अकलकरो आंबा हळदर काकडाशींगी पिपरीमूळ मरेठी रसवंति वंशलोचन प्रत्येक तो. २० वीश नाखी हलावी उतारो तेमां मध शे. ५ नाखवुं. नाकनां श्वासनळीना उलटी सळखम करूनां मगजनां वगेरे दरदो मटे ।

सर्व नासारोगहर बीडी—तज तमाल पलचि नागकेसर गुगळ वज कुष्ट बीलीनो गरभ सरगवानां बी लविंग कलोंजीजीरु तमाकु सरखे भागे खांडी बीडी वाळवी धुंवाडा पावाथी नाकना बधा रोग मटे ।

नासारोगहर नस्य—इंद्रजव बीलीनो गरभ वावडींग जेठिमधनो शीरो कलोंजीजीरुं वज पलचि कांटाळां मायां नागकेसर सरखे भागे खांडवां बधाथी चोथे भागे सुंघवानी बजर मेळववी पछी गुलाबना अत्तरनां १५-२० टीपांनो करमो देवो नाकनां बधां रोगमां सुंघाडाय ।

रत्न पर्पटी—पारद तो. १० गंधक तो. २० प्रवालपिष्टी मुक्तापिष्टी रससिंदूर अभ्रकभस्म प्रत्येक तो. ५ पांच लइ पर्पटी ढाळी घुंटी धतुराना पाननो रस सरगवानी शींगुनो रस चित्रानो उकाळो अने आदुरस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ सुकावो घुंटी राखवुं मात्रा २ थी ४ रति मध साथे नाखोरी फुटवी सळखम वगेरे नाकनां बधां दरदोमां अपाय छे तथा छातीना रोग उधरस श्वास मूत्ररोग संग्रहणी अने प्रमेह प्रदरमां बहु गुण करे छे ।

नासारोगहरी गुटी—वरधारो मरेठी चोपचीनी वज चित्रो पलचि तज लविंग सुंठ पिपर मरी कायफळ पुष्करमूळ जवासो बधां सरखे भागे लइ ३ वर्षना जुना गोळमां गोळी वाल वालनी वाळवी मात्रा ३ थी ६ गोळी पाणी साथे अथवा चित्रकहरीतकी चाटण साथे आपवी. नाकनां बधां दरद मटे छे. आ गोळी उधरस श्वास साद बेसी जवो छातीना बधां दरद अने दमने पण मटाडे छे ।



काननां दरद-कर्णरोगाः

कारण—कानने बहारने भाग अंदरने भाग पडदे वगेरे सुजो आवी पीडा थाय छे परु वहे छे चसका निकळे छे के तेवां बीजां दरदो थाय छे. कानमां बी ठळीयो कांकरी वगेरे उंघतां के रमतां पेसी जाय छे तेमांथी कान पाके मुख्य वायु कोपे अने पछी तेमां पित्त कफनो संबंध थइ जइ अनेक प्रकारनां दरद थइ आवे छे. माथाना पछडाटथी कान उपर ठगाट लागवाथी जळमां डुबकी मारवाथी कानमां गुमडुं थइ पाकवाथी परु के पाणी स्रवे छे अने बीजा रोग पण थाय छे ।

कानना चसका

शरदीथी चोमासानी भीनो हवा के ठंडो पवन लागवाथी ठंडुं पाणी कानमां जवाथी कानमां हरस थवाथी के बहारनो पदार्थ जवाथी वगेरे कारणे पीडा शूळ चसका निकळे छे ।

कल्याण तेल—लसण इंद्रामणाना डोडवा कुणा मुळाने सुकवी तेनी करेली राख आदु हिंग सुंठ सुवादाणा वज कुष्ठ देवदार सरगवानी छाल रसवंति संचळ जवखार खाजीखार वडागरुं सिंधालुण भोजपत्र बिडलवण मोथ दरेक तो. ४ चार, केळनो रस तथा मध तो. २० गोमूत्र तो. ४० लइ खांडी तेनो पाणी रतल १२ मां उकाळो करी पाणी रतल ४ रहे पटले गाळो तेमां लींबुनो रस रतल २ तथा तलनुं तेल रतल ४ नाखो पकावंवुं पाणीनो भाग बळी जाय पटले गाळी लइ शीशो भरवो. कानमां टीपां नाखवा कानना शूळ वगेरे बधा रोगोमां फायदो करे छे ।

तेल—टंकणखार काचो तथा समुद्रफीण एकठुं करी तेलमां ककडावी तेनां टीपां कानमां नाखवाथी कानने दुखावो शूळ पीडा मटे ।

तेल—घोडानां लींडानो रस तो. २० मां सरसीयुं तेल तो. २० पकाववुं पाणी बधुं बळी जाय पटले कपडे गाळी लेवुं. कानमां नाखवाथी दुखावो शूळ पोडा मटे ।

स्वरस—आकडाना पीळा पान उपर एरंडियुं तेल चोपडी अग्नि पर तपावी हाथे चोळी रस काढी ए नवशेको रस कानमां नाखवाथी दुखावो चसका बहेरापणु मटे. आ स्वरसमां तेल पकावी ए तेल कानमां नाखवाथी शूळ मटे ।

मूत्र—बकरीनुं मूत्र तो. ४ मां बे आनीभार सिंधालुण नाखो नवशेकुं करी कानमां टीपां नाखवाथी काननुं शूळ-सबाका मटे ।

१ सिंधालुण पिपर वावडींग साकर समभागे घीमां पकावो ते घी कानमां भरवाथी कान वहेतो रहे दुखतो मटे आराम थाय ।

२ साजीखार १ चण्या भार वाटी कानमां मुको उपर लींबुना रसनां टीपां नाखवां आराम थाय ।

३ वज करीयातुं तेलमां पकावी ए तेल कानमां नाखवाथी कानपीडा मटे ।

४ सरगवानां रसमां तेल मेळवी कानमां नाखवुं ।

५ शतावरीनो रस मधमां मेळवी कानमां नाखवो ।
६ सिंधालुण बोकडाना मूत्रमां उकाळी कानमां नाखवुं ।
७ कडाछालनो भुको वाल १ कानमां भरवो ।
८ बळधनुं मूत्र उनुं करी कानमां नाखवुं ।
९ स्त्रीनुं धावण कानमां नाखवुं ।
१० मीठानी धुंणी कानमां देवी ए बधा उपायथी काननुं शूळ सबाका मटे ।

काननुं पाकवुं कानमांथी परु निकळवुं

वागवाथी खोतरवाथी शीळी ओरी नबळाइने लीधे बाळकोना कान वहे छे मोटा माणसने आ दरद क्वचित जोवामां आवे छे शरदी सोजो थइ पाकी परु निकळे छे अंदर खजवाळ आवे छे कानमां हरस थाय तो पण परु निकळे छे ।

कुष्टाद्य तेल—कुष्ठ वज देवदार वरियाळी सुंठ सिंधालुण प्रत्येक तो. ४ चार लइ पाणीमां वाटी लुबदी करवी तेमां २ रतल पाणी तथा १ रतल तेल नाखी हलावी पकावबुं पाणीनो भाग बळी जाय पटले गाळी लइ शीशो भरवो. कानमां टीपां नाखवां ।

उंटनी पांसळी बाळी राख करवी पछी एक कागळनी भुंगळी वडे दिवसमां चार वखत ते राख कानमां मोंनो फुंक वडे चडाववी गमे तेटली मुदत थयां कान पाक्यो होय तो मटे ।

शंबूककीट तेल—,शंखना जीवडाने गोमूत्रमां वाटी तेमां सरसियुं तेल पकावबुं कानमां टीपां नाखवाथी लांबा वखतनो स्राव पाक मटे ।

१ फटकडी लोढामां फुलावी तेल मेळवी टीपां नाखवां कान वहेतो टळे ।

२ मजिठ देवदार सिंधालुण हिंग उपलेट समभागे बकरीना मूत्रमां वाटी कानमां टीपां नाखवां काननो पाक परु मटे ।

३ समळीनुं कोकडुं तेलमां भींजवीने चुवो वाटकामां पाडवो ते चुवानां टीपां कानमां नाखवां कान वहेतो रहे दुखतो मटे ।

कानमां मसा—हरस

ते आगळ देखाय तेवा अथवा ठेठ अंदर न देखाय तेवा थाय छे तेनुं मूळ पातळुं अथवा जाडुं थाय छे पीडा शूळ भणकारा परु वहेवुं वगेरे होय छे अने बहेराश आवे छे मथाळे कहेलुं कल्याण तेल नाखवुं दरद वधी गयुं होय तो हरस कपाववा अथवा कर्णामृत तेल लांबो वखत सुधी नाख्या करवुं ।

कानमां कांइ पेसी जवुं

कांकरा ठळीया वगेरे चिज रमतां रमतां सुतां के कोइ अकस्मातथी भराइ जाय छे ते पदार्थ काढवा पिचकारी सळी चीपीया वगेरे हथियारनो उपयोग करतां कान छोलाइ सोजो थाय छे अथवा ते पदार्थ भराइ रहेवाथी सोजो थइ आवे छे तुरको अथवा १ वर्षनुं जुनुं पाणी नाखवुं अथवा पाकेला आंकडानां पान पर एरंडियुं तेल चोपडी तपावी हथेळीमां चोळी रस काढी ते नवशेको रस नाखवो. कर्णामृत तेलनां टीपां नाखवां. बहु उंडुं पेशी गयुं होय तो इस्पी-तालमां जइ घटता उपाय लेवा ।

कानमां नाद भणकारा

कानमां वासळी वागती होय तेवो नाद थया करे अथवा शंख नगारां के ढोल वागतां होय तेवा शब्द संभळाय कर्णामृत तेल अथवा महानारायण तेलनां टीपां २१ दिवस नाखवां ।

बिल्वतेल—बीलांना गर्भने गोमूत्रमां वाटी तेमां थोडुं पाणी अने दुध नाखी तेल पकाववुं ए तेल कानमां नाखवाथी भणकारा बहेरापणुं मटे छे ।

बेरापणुं

कानमां मेल भरावाथी पडदो फुटवाथी कोइ चिज भराइ जवाथी पडदो जाडो थवाथी पवन भराइ जवाथी मगजनां दरदथी उपदंशना रोगथी गळानां दरदथी शरदीथी गढपण सुवावड सखत तावथी क्वीनाइन सोडा सेलीसीलास अने तेवां बीजां इंग्रेजी ओसडथा तमाचो वागवाथी तोप बंदुकना अवाजो बहु सांभळवाथी नबळाइ वगेरे कारणोथी माणस बेरो थाय छे. कर्णामृत तेल नाखवुं ।

बाधिर्यहर तेल—अघेडाना क्षारनुं पाणी तो. २०० बीलीनो गरभ तो. ५ गौमूत्र तो ५० बकरीनुं दुध तो. ५०, बीलीमूळ अरणीमूळ बेठी तथा उभी भोरींगणीमूळ गोखरुमूळ बेठा तथा उभा समेरवानां मूळ अरडुसानी छाल प्रत्येक तो. ४ चार लइ तेमां तेल तो. १०० पकाववुं पाणीनो भाग बळी जाय एटले तेल गाळी लेवुं. कान वहेवो बहेरापणुं कर्णशूळ वगेरे काननां बधां दरदो मटे ।

तेल—एरडानां पान मूळानां पान सरगवानां पान तथा केसुडां समभागे लइ तेलमां पकववुं. पाणीनो भाग तमाम बळी जाय एटले गाळी लेवुं कानमां नाखवाथी बहेरापणुं तथा बीजा बधा दरद मटे ।

१ नगोडना पाननो रस काढी तेनां टीपां ५-१० हमेशां नाखवां ४० दिवस सुधी नाखवाथी बहेरापणुं गमे तेटलुं जुनुं होय तोपण मटे ।

२ सफेद डुंगळीनो रस तो ५ फोदीनानो रस तो. ५ मोठुंतेल तो. १० मां ककडावी रस बळी जाय एटले ए तेलनां टीपां नाखवां ।

३ उंटनां मूत्रनां टीपां हमेशां कानमां नाखवाथी लांबा वखतनुं बहेरापणुं मटे।

४ लोढानी कडछीने तपावी तेमां मध अढी त्रण तोला नाखी कांसानी थाळी उपर नाखो ठारवुं पछी घुंटवुं ते कानमां नाखवाथी बहेरापणुं मटे ।

५ हिराकसी बोदारसींग त्रिफळा दरेक टां. १॥ डोढ हिरादखण टां. १॥ सिंदोर टां. ०॥ बावळनी पती टां. ३ बधानो भुको करवो पछी गायनुं घी कांसानी थाळीमां धोइ तेने थाळीमां चोपडी उपर उपलो भुको भभराववो अने तडके मुकवुं ओगळी तेल निकळे ते लइ लेवुं. कानमां नाखवाथी बहेरापणुं मटे।

कर्णगुथ—कानना मार्गमां गरमीथी कफ सुकाय मेल जामे छे ते कर्णगुथ आंकडाना पाकेलां पाननो रस अथवा कर्णामृत तेल नाखवुं ।

कृमिकर्ण—मांसना सडाने लीधे जंतु पडे छे अथवा माखीयो आवी मुकी जवाथी जंतुओ थाय छे त्यारे मगजनो दुखावो खजवाळ चटको बीजो फेर वगेरे चिन्ह जणाय छे ।

कृमिकर्णारि तेल—कळगारी सुंठ पिपर मरी वावडींग वज तलवणी प्रत्येक तो. ५ पांच, नगोडनुं पंचांग तो. १० पाणीमां वाटो सरसियुं तेल तो ४० पकाववुं आ तेलना टीपां कानमां नाखवाथी कानना जीवडा निकळी जाय छे ।

१ लींमडाना पाननो रस तो. २० मां उभी भोरींगणीना २ डोडवां वाटी तेमां तलनुं तेल तो. १० नाखी लोढानी कडाइमां पकाववुं रस बळी जाय पटले गाळी तेमां कपुर तो. ०॥ मेळवी गरम करवुं गळी जाय पटले कानमां रेडवाथी बगां खजुरो समाप्त थाय ।

२ शिकोतरो पळियो पाणीमां घोळी तेनां टीपां कानमां नाखवाथी जंतु निकळे ।

३ डुंगळीना कांदानो रस काढी कानमां नाखवो खजुरो निकळे ।

४ कारेलीना पाननो रस कानमां रेडवाथी बगां खजुरो निकळे ।

५ खेरना अंगारा सूक्ष्म करी जम्बेल तेलमां नोळी करवी पछी कार्य समे तेलमां वाटी उनुं करी कानमां नाखवुं बगां निकळे ।

६ सुंठ वज हिंग लसण बधा गौघृतमां पकावी कानमां टीपां नाखवां कानना कीडा मरे पीडा मटे ।

७ घी गरम करी कानमां रेडवुं खजुरो निकळे ।

८ कंबोइना पानना रसनां टीपां नाकमां नाखवां कीडो निकळे ।

९ गोहील पानना रसमां सिंधालुण घसी कानमां टीपां नाखवां कीडा निकळे

१० कागफळनां बी टां १२ जिणीयुं कपूर टां. २ तेलमां वाटी नाकमां टीपां नाखवां कीडो निकळे ।

कानमां गड-विद्रधि

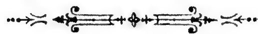
चिन्ह—क्षतथी के अभिघातथी विद्रधि थयो होय तो राता पीळा लोही-युक्त स्राव थाय छे. मोंकायां जेवी पीडा धुंवाडो निकळतो होय तेवी बळतरा अने अंगारा मुकया होय तेवो दाह थाय छे. दोषथी विद्रधि थयेल होय तो जे जे दोष प्रधान होय तेवां लक्षणो जणाय छे. कल्याण तेल कानमां नाखवुं ।

पथ्यापथ्य—बधां कानना दरदोमां शरदी थवा देवी नहीं. टाढुं पाणी अडाडवुं नहीं परु आवतुं होय तो हरवखत रुनां पुंभडां नाखी लुछुं जवुं. चसका आवता होय तो शेक करवो. झाडो कबज होय तो सादो जुलाब देवो. काने फाळीयुं वींटी राखवुं. चळ आवती होय तो उपर कहेलुं कोइपण जातनुं तेल गरम करी टीपां नाखवाथी आराम थाय ।

कर्णामृत तेल—केळनो रस तो. ४० लींबुनो रस तो. ६० जेठिमधनां मूळ तो. ८ दारुहळदर तो. ६ आंबाहळदर तो. ४, अरणीनां मूळ अरडुसानां मूळ भोरींगणोनां मूळ दारुडीनां मूळ देवदार जवखार साजीखार बीडलुण कळगारो वावडींग सिंधालुण मीठुं सुवादाणा सरगवानी छाल वज उपलसरी कुष्ठ पारद गंधक प्रत्येक तो. २ बे तथा आंकडाना पान पाकेलां ३० लइ पाणीमां लुबदी करी उपला रसमां डोइ तेमां तलनुं तेल रतल ५ नाखी पकाववुं. पाणीनो भाग बळी जाय पटले तेल गाळी लेवुं. बधां कानना दरदोमां टीपां नाखवां. काननुं

शूळ सणका चसका भणकारा कर्णनाद कान पाकवो कानना मसा कानमां कांइ जीवजंतु के बी ठळीया पेशी जवाथी थतुं दरद बहेरापणुं कानने अंदर के बहारने सोजे कानमां पडेलां जंतु कानमां गड वगेरे कानना रोग मटे ।

कर्णरोगहरी गुटी—रससिंदूर तो ४ पारद तो. २ अभ्रकभस्म तो. ३ लोहभस्म तो ३ शिलाजीत तो. ५ गुगळ तो ६ सुवर्णभस्म तो. ०॥ ताम्रभस्म तो. १, उपलसरी रास्ना वणोठीनां मूळ तज तमाल पलचि सुंठ मरी टंकण सिंधालुण संचळ प्रत्येक तो. २ बे लइ साथे मेळवी भांगरो आंसोधरो केळने कंद प्रत्येकना रसनो अकेक भावना दइ वालना दाणा जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी पाणी साथे आपवाथी कानना बधां दरद मटे ।



स्त्रीना रोग

ज्यारे स्त्री १३ थी १५ वर्षनी तरुणावस्था तरफ जाय छे त्यारे दर महिने रजोदर्शन देखाय छे ते ३० वर्ष सुधी टके छे अर्थात् ५० वर्षनी उमरे बंध थाय छे प्रसव थया पछी २ थी ६ महिने के वर्ष बे वर्ष ऋतु आवे छे के धवावडी थया पछी के धावतुं बाळक गुजरी जवाथी ऋतु जलदी आवे छे मनने उद्वेग शोक चिंता झाडानी कबजीयत अजीर्ण जीवडा वगेरे कारणे ऋतु अनियमित के ओछुं आवे छे तेम हवा स्वभाव संभोग टेव संसारनी सुख दुःखमय स्थिति रोग मानसिक आनंद के उद्वेग वगेरे कारणो उपर पण ऋतु नियमित के ओछुं वधु आववानुं अवलंबे छे ऋतु समये निरोगी स्त्रीने ७॥ थी १० तोला जेटलुं लोही पडे छे अने वधुमां वधु २० तोला सुधी पण पडे छे महेनतु स्त्रीओने ओछुं पडे छे बेठाडु आळसु शारीरिक श्रम नहीं करनारी स्त्रीने मजबुत करतां नबळी स्त्रीने गामडानी करतां शहेरनी स्त्रीने लोही वधु पडे छे ऋतु ३ थी ७ दिवस सुधी देखाय छे ।

प्रथम ऋतु वखते स्त्रीने थोडो ताव पेट कमरमां दुखावो जननेंद्रियमां जरा सोजो भार स्तनमां दुखावो वगेरे चिन्हो जणाइ ऋतुदर्शन थाय छे त्यारे उपलां बधां चेन आपोआप बंध थइ जाय छे ।

नष्टार्तव अथवा अल्पार्तव के अनार्तव

ऋतु न आववुं, ऋतु ओछुं आववुं, ऋतु बंध थइ जावुं

कारण—पांडुरोग मननी चिंता शोक उद्वेग कबजीयत अजीर्ण क्षीणता कोइपण रोगथी थयेली नबळाइ करम अतिविषय रजस्वला वखते बहु लोही पडवुं शरदी लोहीना बगाडना दरद, अंडाशय न होवुं के तेमां कांइ दरद होवुं, गर्भाशयमां के गुह्यभागमां कांइ रोग होवो वगेरे कारणे आ दरद थाय छे ।

चिन्ह—ऋतु आववानो समय आवे त्यारे दर महिने पेडुमां चुंका दुखावो जरातरा ऋतु वींट साथे देखाइ बंध थइ जाय छे. पाछी तेवीज पीडा बीजे महिने थाय छे. थोडा महिनामां पेडुमां लोहीनो जमाव थइ गर्भ रह्यो होय तेवुं

देखाय छे झाडो पेशाब अटके छे गर्भस्थाननी बाजुमां गांठ जणाय छे ताव आवे उलटी थाय ऋतुनो गर्भाशयमां भरावो थाय अने ते उतरो आवे अने पेडुमां गांठ जेवुं देखाय अने ते दर महिने वधे. दस्त पेशाब वखतो वखत थाय छे पण बहु थोडा थोडो उतरे छे आ दरदने लइ ऋतु पांडु थाय छे त्यारे आंख होठ चेरो मवाळु फीकां पडी थेथर देखाय छे माथुं दुखे भुख मंद थाय उंघ उडी जाय. कळतर अने छातीमां दुखावो थाय छे ।

पथ्यापथ्य—स्त्रीने आखे शरीरे तेल मर्दन करवुं ऋतु वखते ठंडो पवन लेवो नहीं टाढे पाणीये नहावुं नहीं शरीरे उघाडुं बेसवुं नहीं वरसाद के ठंडी शरीरे लागवा देवी नहीं मन आनंदमां राखवुं शरीरने आराम आपवो बहु श्रम करवो नहीं दस्त पेशाब साफ आवे तेवो आहार विहार राखवो वाइडां टाढां शीळां वाळा पदार्थ खावा नहीं दळ भात जुज रोटली खीचडी दुध घी वगेरे खावां मांस बंध करवां चरबीवाळां पदार्थ थोडा खावां खांड साकर लींबु अथाणां तेल तेलमां तळेलां पदार्थ बंध करवां गरम पाणीमां बेसवुं जननेंद्रिय स्नान करवुं ।

कष्टार्तव अथवा वायुना विकारने लीधे थतो पीडितार्तव

कारण—गर्भस्थाननी वक्रस्थिति अतिविषय झाडानी कबजीयत वायुनो प्रकोप वगेरे कारणे बहु शरदी लागवाथी कसुवावडमां शरदी लागवाथी के सुवारोगथी तथा ऋतुने विकृत करनारां बीजां अनेक कारणे आ दरद थाय छे ।

चिन्ह—ऋतु आववाने वखते केडयमां दुखावो शूळ निकळे माथुं दुखे बेचेनी जणाय आ दुखावो कमरमांथी पेटना भागमां थइ ठेठ जांघ सुधी फेलायेलो जणाय छे आ दुखावो उपडया पछी एक बे दिवसे ऋतु आवे छे. ऋतुस्राव वखते कमळ सोजेलुं अने पोचुं देखाय छे वायुने लीधे पीडितार्तव थाय तो ऋतु आव्या पहेलां एक बे दिवसे चमका चुंकनी पेठे रही रहीने आवे प्रसवनी वेणनी पेठे दरद थाय घणी वखते पीडा असह्य थाय छे उलटी मस्तकशूळ हेडकी भ्रम आंचकी जेवां चिन्ह पण जणाय छे ऋतु आववा मांडे छे त्यारे ए उपद्रवो ओछा थाय छे अथवा ऋतु आवे तेटला दिवस थोडा थोडा रहे छे गर्भ रह्या पछी आ पीडा बंध थाय छे पण केटलीक स्त्रीओने आ व्याधिने लीधे गर्भ रहेतो नथी अने पीडा दर महिने उपडी आवे छे उष्णोपचारथी आ वेदना शमे छे अने ठंडा उपचारथी वधे छे, दरद कायम थइ जाय छे ।

शोकजन्य पीडितार्तवमां—लोही भरावाथी अथवा गर्भाशय सुजी आववाथी पण ऋतु वखते पीडा थाय छे सोजाने लीधे गर्भाशयमूळनो रस्तो सांकडो थइ ऋतु निकळवामां अडचण पडे छे अने पीडा थाय छे कष्ट साथे बहार पडतुं लोही गांठावाळुं चासणी जेवुं घाडुं होय छे गर्भाशय पाछळ अगर आगळ ढळवाथी बहारना भाजाने लीधे गर्भाशय जड थइ जवाथी अंतरमुखनो संकोच थवाथी संयोग समये पीडा ऋतु वखते पेडुमां दुखावो कमर फाटे जांघमां चरका ऊणाय ऋतु सारी राते निकळ्या पछी पीडा मटे. फळवाहिनीना मार्गमां अवरोधथी अने अंडाशयना विकारने लीधे पण पीडितार्तव थाय छे ।

पथ्यापथ्य—स्त्रीने सारुं लागे तेवा गरम पाणीये हमेशां पवन न लागे तेवी जग्याये नवरावबी गरम पाणीथी भरेली पीपमां गळा सुधी बेसारी बाफ आपवो थोडी कसरत करावबी खंडावबुं दळावबुं पाणी भरावबुं रसोइ करावबी पेडु उपर सेतो सेतो शेक करावबो ब्रह्मचर्य पळावबुं दस्त पेशाब साफ आवे तेवा उपचार कराववा शरदी लागवा देवी नहीं वाइडां वायु करनारां टाढां वासी अन्नपान खावा देवां नहीं मांस छोडबुं सादो हळवो स्निग्ध दुध घीवाळो हळवो खोराक देवो गळपणनी इच्छा थाय तो गोळ देवो खांड साकर बजारनी मिठाइ दाडम संत्रां सुको मेवो चिकणां पदार्थ देवां नहीं उजागरो करावबो नहीं विहार निद्रा अने भोजनमां नियम राखवो लांघण करावबी अजीर्ण थवा देवुं नहीं भुख प्रमाणे खोराक आपवो पेटमां बादी वायु थवा देवुं नहीं दुधनो खोराक वधु राखवो टाढे पाणीये नहावुं नहीं कुमार्यासवनुं सेवन करावबुं ।

एळीयादि गोळी—एळियो हिराबोळ जवखार सिंधालुण वावडींग इन्द्रामणानां मूळ प्रत्येक तो. १० दश, गोळ तो. ७० साथे मेळवी बबे आनीभारनी गोळी वाळवी दिवसमां २ थी ४ गोळी पाणी साथे आपवी तथा १ गोळी जननेंद्रियमां रखाववी. नष्टार्तव पीडीतार्तव कष्टार्तव वगेरे मटी ऋतुनो खुलासो थाय छे ।

कासीसादि वटी—हिराकसी हिंग सिंधालुण सुंठ चित्रो इन्द्रामणानां मूळ तथा फळ जवखार साजीखार टंकण हळदर समुद्रफीण कपूर दारुहळदर बधां समभागे लइ खांडी कुंवारना रसमां घुंटी चणा जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ३ थी ६ गोळी पाणी साथे देवी तथा जननेंद्रियमां रखाववी ।

ऋतुकरी वटी—सुंठ नसोतर हिराबोळ दरेक तो. १ एक, सिकोतरो एळियो तो. २ बे साथे खांडी बावळना गुंदना पाणीमां चणा जेवडी गोळी करवी. मात्रा २ थी ४ गोळी आपवाथी चडी गयेलुं ऋतु आवे ।

१ इन्द्रामणानुं मूळ ६ थी ८ तसु साफ करी जननेंद्रियमां रखाववुं ।

२ चित्रानुं मूळ तो ०॥ नगोडना रसमां वाटी गुह्य भागमां चोपडवुं ।

३ परडाना पाननी वचली सळी ८ थी १० तसु लांबी लइ जननेंद्रियमां रखाववी.

४ सुरावीज लींडीपिपर गोळ दंतिमूळ मींढोळ कडवीतुंबडोनां बी जवखार खरसाणीथोरनुं दुध बधां पाणीमां वाटी ६ थी ८ तसुनी वाटो करी जननेंद्रियमां रखाववी ।

५ सुंठ पिपर मरी भारंगी समभागे लइ खांडी ०॥ तोलो चूर्ण तलना उकाळा साथे पावुं ।

६ कडवीतुंबडोनां बी दंतिमूळ पिपर गोळ मींढोळ जेठिमधनां मूळ स्नुहीदुध समभागे लइ ४ थी ६ तसुनी वाटो करी गुह्य भागमां रखाववी ।

७ जासुदनां फुल सुरका साथे मेळवी पावुं अथवा मालकांकणीनां पानने शेकी पाणी साथे पावां अथवा धोने पाणीमां वाटी पावी ।

८ इन्द्रामणानां मूळ तो. ४ पाणी शेर २ मां उकाळी तेमां मीठुं तेल तो. १ नाखी पावाथी ऋतु आवे ।

९ ऋतुनी अटकायतथी पेडुमां गांठ थइ होय तो पाकेला केळाना कटका ३ करी तेमांना १ कटकामां चण्या जेटलुं कपूर नाखी चाव्या विना उंबरा उपर बेसारी गळावबुं पम ३ दिवस गळाववाथी लोहीना कटका पडशे. ऋतु आववानुं होय त्यारे गळाववुं वधु सारुं ।

१० तुखमेकरफ तो. ०।, वरियाळी अने मजिठ अकेक तोलो साथे खांडी उकाळी तेमां २ तोला खांड नाखी पावुं ।

११ काळातल भांगरो समभागे खांडी २ तोला हमेशां पाणी साथे १४ दिवस आपवाथी ऋतु आवे ।

१२ नवसार टां. ३ कुष्ठ टां ३ साथे खांडी हमेशां १ टांक घीमां चटाडवाथी ऋतु आवे ।

१३ रायणना ठळीयानां मींज टां ५ पापडियोखारो टां ५ साथे बारिक वाटी गोळमां मोटा बोर जेवडी गोळी करवी. १ गोळी ठेठ कमळमां उंचे लेवरावबी. २-३ गोळीथी ऋतु आवे ।

१४ गावसुकडानुं मूळ गुह्य भागमां रखाववुं ।

रक्तप्रदर-लोहीवा-अत्यार्तव

कारण—गर्भाशयमां अर्बुद थयुं होय मसा थया होय स्त्रीअंडमां सोजा थयो होय शरीर बहु लोहीवाळुं प्रसव थया पछी गर्भाशयनुं आकुंचन बराबर न थयुं होय गर्भाशयमां जखम थयो होय गर्भाशयमां ओर के गर्भनां पड चोटी रह्यां होय बगाड रहीगयो होय के दाह थाय तो लोही बहु पडे छे ।

चिन्ह—कुदरती रीते जोइए तेनां करतां वधु स्राव थाय थोडा थोडा दिवसने अंतरे ऋतु देखाया करे देश काळ शरीरनुं जाडापणुं कृशपणुं वगेरेने अनुसरी जोइए ते करतां वधु रक्तस्राव थाय अथवा रजोदर्शनना वखतनी वचमां स्रवे प्रसूति थयां पहेलां के पछी थाय ते अत्यार्तव कहेवाय छे लोही बहु पडवाथी शरीर कृश फीकुं धोळुं थइ जाय माथुं दुखे तरस लागे आंखे अंधारां आवे रक्तस्राव बहु थवाथी मरण निपजे श्वास चडे थेथर चडी आवे भुख ओछी लागे झाडो कबज थाय ।

पथ्यापथ्य—पौष्टिक खोराक आपवो गरम तीखां दाह करनारां वाइडां पदार्थ बंध करवां ग्राही स्तंभक औषधो तथा पदार्थो दाडम सफरजन धराख वगेरे खावां. मोचरस के कांटाळा मायांना भुकानी कपडामां पोटली करी गुह्य भागमां रखाववी ।

रक्तस्रावहरी वटी—पारद तो. ६ गंधक तो. ६ जांबुमां पकवेली लोहभस्म तो. ५ अभ्रकभस्म तो. ५ रसवंति तांदळजानुं मूळ कडाछाल केळनो कंद कमळकंद कमळकाकडीनां मींज इंद्रजव रौप्यभस्म शतावरी दुधीयो हेमकंद प्रत्येक तो. ४ चार साथे मेळवी कडाछालना उकाळानी अने बहुफळिना रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. २ थी ६ गोळी चोखाना ओसामण साथे आपवी ।

बोल पर्पटी—पारद गंधक समभागे लइ तेनी कज्जली करी पर्पटी ढाळी घुंटी तेमां हिंगबोळ तो. २ खेरसार तो. १ केवडोयो कथो तो १ शिलाजीत तो. १ जसदभस्म तो. १ मेळवी बधां साथे घुंटी राखवां. मात्रा ३ थी ६ रति मध गाखण साथे के मध घीमां चटाडवुं. बधी जातना रक्तस्राव मटे।

१ काथो मांयाफळ पडवास लोद्र मोचरस रुद्रवंति सुधी खेरीयोगुंद मुसळीकंद पखरो पलासगुंद बधां सरखे भागे लइ बधांथी बमणी साकर नाखी हमेशां ०॥ थी १ तोलो पाणी साथे ७ दिवस सुधी आपवुं।

२ कसेलां कांटाळामायां कपूर पलचि दरेक तो. २ बे, सोनागेरु पडवास दरेक तो. १ एक साथे वाटी हमेशां ०। थी ०॥ तोलो ७ दिवस पाणी साथे देवुं. स्त्रीनां रक्तप्रवाह मटे।

३ पलचि टां. ५ नागकेसर टां २॥ आंबलिया टां. १० सोनागेरु टां. ५ बोखरु टां १५ पाषाणभेद टां. १५ साथे खांडी भांगरानां रसमां नाना बोर जेवडी गोळी वाळवी. हमेशां १ गोळी ७ दिवस सुधी देवाथी स्त्रीने लोहीनो प्रवाह अटके।

४ आरसपाषाण बारिक वाटी साकर साथे बे आनीभार हमेशां आपवुं. रक्तप्रवाह मटे. पुरुषने लोहीनो बडखो निकळतो होय तेने पण देवाथी लोही आवतुं अटके आराम थाय।

५ गळीनुं मूळ चोखाना ओसामण साथे ०। थी ०॥ तोलो देवुं।

६ वालिगडनां पान साकर साथे वाटी गुह्य भागमां लेप करवाथी रक्त-प्रवाह अटके।

७ मठ बळदाणा अडद खेरीयेगुंद समभागे झीणा वाटी २॥ तोला गायना घीमां चटाडवाथी प्रदर मटे।

८ वेकरियानुं चूर्ण करी ०। थी ०॥ तोलो पाणी साथे देवुं रक्तप्रवाह मटे।

९ नांदरुखानुं मूळ मो. १ रसवंती मो १ चोखाना ओसामणमां वाटी पावुं।

१० शरखानुं मूळ तो ०। चोखाना ओसामणमां वाटी पावुं।

११ जेठिमधनां मूळ सुखड लाख कमळगुप्त रसवंति दरेक सरखे भागे लइ खांडी उकाळो करी मध नाखी पावुं।

१२ वाळो मरडुमी आसोपालवनी छाल बोळीनो गरभ दरेक समभाने लइ उकाळो करी मध नाखी पावुं।

१३ कमळफुल काळीधराख आंबानी गोठली शतावरी दुधियो रेमकंद दरेक समभागे उकाळो करी मध नाखी पावो।

१४ वणनां फुलां झीणां अघेडानां पान वडनी छाल चोखाना ओसामणमां वाटी मध नाखी पावुं।

१५ गोपीचंदन चपडीलाख खांड सरखे भागे खांडी १ थी २॥ तोला गायना दुध साथे देवाथी ऋतु बहु आवतुं होय ते तथा बधी जातना प्रदर मटे।

१६ कांकसीनां पाननो रस तो. १० सवारमां हमेशां ३ दिवस पावाथी रक्तस्राव बंध थाय।

१७ शेतुरनां फळ अथवा पान तथा साकर पाणीमां वाटी पावाथी रक्तस्राव अटके।

श्वेत प्रदर तथा सोमरोग

कारण—कोइपण रोगने लीधे थयेली नबळाइ गुह्यभागनी अस्वच्छता तेमां दाह थवो अतिविषय उपदंशनी असर प्रमेह के उपदंशवाळा पुरुषनो संग अति मदिरापान अजीर्ण पर भोजन बहु खाटां तीखां तीक्ष्ण पदार्थो खावानी टेव गर्भपात घणो शोक घणा अपवास धातुनी क्षीणता आघात दिवसे उंघवानी टेव वगेरे कारणोने लीधे श्वेतप्रदर-सोमरोग-रक्तप्रदर तथा तेने लगतो स्राव थाय छे अने ते वधे छे त्यारे प्रवाहनी पेठे बहार पडी कपडां बगाडे छे आ स्रावनो रंग कारण परत्वे काळो पीळो धोळो मिश्रित रंगनो के डोळा पाणी जेवो होय छे।

चिन्ह—कमळना भागपर सोजो थाय छे सोजो वधारे होय तेम घात चिकणी पडे छे कपडां पर पीळो लाल डाघ पडे छे ताव आवे कमर जांगमां दुखावो थाय पेडुमां बोजो लागे पेशाब वारंवार थाय छे घात पडी गया पछी गर्भस्थानमां पीडा ओछो जणाय छे भुख ओछी अन्ननो पचाव थतो नथी झाडो अनियमिते कमर माथानो दुखावो शक्ति ओछी चेरो फीको मन उदास काम-काज करवामां के हरवा फरवामां कंटाळो पेट चडी आववुं वगेरे चिन्हो जणाय छे।

पथ्यापथ्य—पुरुषसंग छोडवो ब्रह्मचर्य पाळवुं मद्य मांस गरिष्ठ खोराक वाहडां पदार्थ छोडवां हळवो खोराक लेवो गरम पाणीये हमेशां नहावुं स्निग्ध खोराक लेवो स्वच्छ हवामां रहेवु बे वखत गुह्यभाग गरम पाणीथी स्वच्छ करवो ठंडु पाणी सारुं लागे तो ठंडे पाणीये प्रक्षालन करवु दीपन पाचन ग्राही औषध खावुं मन प्रसन्न राखवुं चिंता उद्वेग शोक छोडवां।

प्रदरारि लोह—पारद तो ८ गंधक तो ८ सुवर्णभस्म अथवा वरख तो. १ रौप्यभस्म लोहभस्म वंगभस्म यशदभस्म प्रत्येक तो. २ चे रिलामणी तो. १२ शेमळाना मूळ काळ पाठ बीलीनो गरभ आंबनी गोटली इंद्रजव पाषाण-भेद रसवंति कमळकंद अतिविष शतावरी दुधीवो हेमकंद सुंठ काळी धावडी जेठिमधनो शिरो ब्राम्हणानां मूळ साकर बहुफळि मोथ धावडीनां फुल प्रत्येक तो ८ आठ लइ साथे मेळवी कडाछाड शे. १०, आमोपालवनी छाल शिमानी छाल वडनी वडवाइ उंबरानो छाल प्रत्येक शे. २॥ अढी बधानो उकाळो करी ते उकाळामां बधा वसाणा नाखी घाडुं थतां सुधी पकाववु सुकाइ गुंटी राखवुं मात्रा ३ थी ८ रति चोखना ओसामण साथे अथवा मध साथे आपवी सफेद लाल पीळा प्रदर वारां लोहीवा सोमरोग पाणी पडवां वगेरे गुह्य भागना रोग मटे।

प्रदरांतक लोह—लोहभस्म जांवुमां मारेलो तो. २० पारद गंधक रस-सिंदूर वंगभस्म रौप्यभस्म यशदभस्म शंखभस्म अफिण इंद्रजव वाटीने शेमळानो गुंद आवळनो गुंद लींडानो गुंद प्रत्येक तो २॥ अढी, बाकळना पांदडां पडेंडियानो रस तो. १० बधा साथे मेळवी कडाछालना उकाळामां पकावी सुकाइ घुंटी राखवुं मात्रा ४ थी २ रति मधमां चटाडो उपर पाणी पावुं वधी जातनां लांबा वखतनां असाध्य प्रदरनां दरद तथा रक्तस्राव मटे छे।

प्रदरारि रस—रससिंदूर तो. १० बंगभस्म लोहभस्म यशदभस्म अफिण कमळकंद केळनो कंद शतावरी प्रत्येक तो. ३ अण लइ साथे मेळवी आसो-पालवनी छालना उकाळानी ३ भावना दइ घुंटी भुको राखवो मात्रा २ थी ३ रति मधमां चटाडवी बधी जातना प्रदर मटे ।

अशोकारिष्ट—आसोपालवनी छाल शे. ३० ने कचरी सोळगणुं पाणी मुकी उकाळवुं चोथा भागनुं पाणी रहे पटले गाळी लइ एक पीपमां भरी तेमां साकर शे. ८० तथा कमळफुल चमेलीनां फुल गुलाबनां फुल शतावरी आसोंध बळदाणा आंबाना कुणा रातां पान जांबुना ठळीया अरडुसी जीरुं कलोंजीजीरुं सुखड मोथ सुंठ दारुहळदर कपुरकाचली बेठी उंबरोनां मूळ शेमळाना फुल काथो प्रत्येक शे. ०॥ अर्धो अधकचरां करी नाखवां पछी बरणीनुं मों छांदी देवुं दर अठवाडिये हलावी पाछुं छांदी देवुं १ महिना पछी बधाने गाळी लइ निर्मळ प्रवाहीना शीशा भरी बुच मजवुत दइ देवां मात्रा ४ थी ८ तोला आखा दिवसमां पावुं बधी जातना प्रदर मटे छे तथा पडतुं लोही झाडा मरडा संग्रहणी लोहीना हरस पित्तनां दरद वगेरे पण मटे छे ।

सोम जीवन रस—पारद तो ५ मां सोनानां पानां तो. २ मेळवी पछी १० तोला गंधकने चुलापर पीगाळी तेमां पारदवाळुं मिश्रण नाखी पर्पटी ढाळवी पछी तेने वाटी तेमां षोडशगुण गंधक जारित पूर्णचंद्रोदय तो. १ तथा लोहभस्म अभ्रकभस्म समदरशोषनां बी प्रवाळपिष्टी माणेकपिष्टी सुवर्णमाक्षिकभस्म बंगभस्म यशदभस्म बावळनो गुंद खेरनो गुंद शेमळानो गुंद गोरडनो गुंद प्रत्येक तो. १ पक, मोतिपिष्टी हीमजीहरडे घीमां तळेली, साकर बावळना पाकेला पईडियानो रस लविंग एलचि काळांमरी सुखड रसवंति जेठिमधनां मूळ बीलांनो गरभ प्रत्येक तो. २ बे लइ साथे खांडी घुंटी शेमळाना मूळना उकाळानी अने लींमडाना पानना रसनी अकेक भावना दइ छाये सुकावी घुंटी तेमां कस्तुरी तो १ घुंटी मेळवी पछी भुको राखवो अथवा मधमां चणोठी जेवडी गोळी वाळी तेनापर गुलाबना अत्तरनो हाथ देवो. मात्रा ३ थी ६ रति सवारे तथा सांजे अपाय छे. पथ्यमां मरचां खांड साकरनी मिठाइ खाटां पदार्थ बंध करवां. बधी जातनां प्रदर सफेद धात जवी तथा स्रावने लइ स्त्रीनुं शरीर क्षीण कृश मरणतुल्य थइ गयुं होय तेने नवुं जीवन आपे छे स्राव अटकी जाय छे. स्त्रीना ऋतुदोष गर्भा-शयना विकार हिस्टिरीया मगजनुं खालीपणुं वगेरे पण मटे छे ।

शार्दुल वटी—हिंग भाग १ वज भाग २ वावडींग ३ सिंधालुण ४ अजमा ५ सुंठ ६ मरी ७ लींडीपिपर ८ कुष्ठ ९ हरडे १० चित्रो ११ बोडीअज-मोद भाग १२ ए लख्या वजने बधी चिजो लइ बधाथी बमणो गोळ मेळवी चणिया बोर जेवडी गोळी करवी. सवार सांज अकेक गोळी पाणी साथे देवी. स्त्रीना स्राव मधुमेह मटे, पुरुषना १८ जातना प्रमेह हरस वाना बधा रोग गुल्म छातीना रोग कुष्ठ शूळ गळगंड श्वास संग्रहणी पांडु मंदाग्नि अरुचि वगेरे रोगमां आपवाथी गुण करे छे. अनुपान भेदथी घणा रोग मटे छे ।

योनिदाहमां शामक जुलाब—युनानी-गुलेबनफशा तो. ०॥ गुलाबनां फुल तो. ०॥ तुखमेखतमी तो. ८। खत्राजी तो. ०। काकडीनां बी तो. ०॥ मींढीनां पान तो. ०॥ बधां साथे पाणी शेर २ मां उकाळी पोणो शेर पाणी रहे एटले तेमां गरमाळानो गोळ तो. ५ तथा सुरखेश तो. ३ भींजवी मुकवुं रात रहेवा दइ सवारे कपडे गाळी तेमां मीठो बदामनुं तेल तो. ०॥ नाखी पावुं. गुह्यभागनां फुल उपर वरम सोजो थयो होय के सोजाने लइ दाह बळतरा थातो होय ते मटे।

सामान्य उपचार

१ मुळानां पाननो रस तो. ५ मां १ खाटुं लींबु निचोवी पाइ देवुं. एम त्रण दिवस पाया पछो खेरनो गुंद खाखरानो गुंद मोचरस समदरशोशनां बी साकर बधां सरखे भागे खांडी ०। थी ०॥ तोलो सवारमां एक वखत पाणी साथे ७ थी १४ दिवस सुधी देवुं एटले धात जती बंध थाशे दाह मटशे।

२ कांटाळांमायां पडवाश कशीलो मजिठ मोटां पाननी दुधेली एखरो खेरनो के बावळनो गुंद पाताळतुंबडी बधां सरखे भागे खांडी सवारमां एक वखत गायना ताजा दुध साथे ०॥ थी १ तोला सुधी दरद अने उमरना प्रमाणमां आपवाथी सफेद धात श्वेत प्रदर सोमरोग तथा गुह्य भागनो दाह बळतरा मटे।

३ बावळनां पान तथा पईडिया तथा फुल हीमजीहरडे साकर बधां सरखे भागे लइ खांडवां ०। था ०॥ तोला सुधी सवारमां वासी पाणी साथे देवुं. सफेद धात जती बंध थाय।

४ हरणीनां पानने वाटी गोळी करी रुमां वींटी गुह्यभागमां राखववी तेथी धात जती बंध थाय आ हरणीने सफेद फुल थाय छे अने तेनी सुगंध राते फेलाय छे आने रातनी राणी कहे छे।

५ दारुहळदर रसवंति मोथ अरडुसी करियातुं भिलामां तल सरखे भागे उकाळो करो मध मेळवी पावुं।

६ लाख तो. ०॥ आसोपालवनी छाल तो. १ धावडीनां फुल तो. ०। बधां साथे उकाळी मध नाखी पावुं।

७ जीरुं जेठिमधनां मूळ कमळफुल प्रत्येक तो. ०॥ अर्धो पाणीमां वाटी मध नाखी पावुं।

८ धावडीनां फुल तो. ०॥ सोपारीनां फुल तो. ०॥ पाणीमां वाटी मध नाखी पावुं।

९ तांजळीयानुं मूळ तो. ०॥ रसवंति तो. ०॥ चोखाना ओसामणमां वाटी पावुं।

१० आसोपालवनी छालनो उकाळो मध नाखी पावो।

११ पाकेलां उंबरा के अंजीरने वाटी प्रवाही करी मध नाखी पावुं।

१२ बळदाणानुं मूळ पाणीमां वाटी पावुं।

१३ बेठी भोंउंबरीनुं मूळ पाणीमां वाटी मध नाखी पावुं।

१४ भोंआंबलीने पाणीमां वाटी मध नाखी पावुं।

१५ पाकेलां केळामां आमळानुं चूर्ण तो. ०॥ मध तो. ४ मेळवी खवरावबुं।

१६ नागकेसर ०। थी ०॥ तोलो छास साथे आपवुं. खोराकमां छास भात देवां।

१७ मामेजवो हमेशां तो. ०॥ पाणी साथे २१ दिवस सुधी पावाथी स्त्रीना तथा पुरुषोना मधुमेह मटे।

१८ महुडानी छाल मधुमेहना पाठां उपर ७ थी १४ दिवस सुधी बांधवाथी स्त्रीना मधुमेहनां पाठां मटे।

गर्भिणी रोग

गर्भधारण काळ—बार वर्षनी उमर पछी अने पंचावन वर्षनी उमर सुधी स्त्रीओने महिने महिने ऋतु आवे छे रजस्वला थयाना १ ला दिवसथी मांडी १६ दिवस सुधी एटले ४ थे दिवसे नहाया पछी १२ दिवस सुधीमां गर्भ रही शके छे केटलाक शास्त्रकारोये एम पण लख्युं छे के चोथे दिवसे नहाया पछी ब्राह्मणोमां १२ दिवस सुधी, क्षत्रियाणीमां १० दिवस सुधी, वैश्याणीमां ८ दिवस सुधी अने शुद्राणोमां ६ दिवस सुधी गर्भ धारण करवाना शक्ति होय छे पण सामान्य रीते ऋतुस्नान कर्या पछी १०-१२ दिवस सुधी गर्भधारणनो समय गणी शकाय।

रजस्वला नियम—ऋतु देखाय त्यारथी स्त्रीए अहिंसा ब्रह्मचर्य पाळवुं जमीन उपर सादडी के घाबळी पाथरी सुवुं बनी शके त्यांसुधी पतिनुं मुख जोवुं नहीं एकांत स्थळमां रहेवुं पत्रावळामां जमवुं मसालादारथां तीखां खाटां जलद गरमागरम खोराक लेवो नहीं सादो हळवो खोराक लेवो रोवुं नहीं नख उतारवा नहीं शरीरे तेल मालीस करवुं नहीं आंखो आंजवी नहीं नहावुं नहीं दिवसे उंघवुं नहीं उंचे सादे राडो पाडीने बोलवुं नहीं राडुं पाडतां होय ते सांभळवुं नहीं हसवुं नहीं बहु भाषण करवुं नहीं बहु महेनत करवी नहीं पृथ्वी खोदवी नहीं पवन लेवो नहीं जो तेमांना करे तो तेथी गर्भने अर्थात जन्म लेनार बाळकने हानि पहोंचे छे रजस्वला स्त्री रुवे तो बाळक खराब आंखोवाळुं नख उतारे तो खराब नखवाळुं तेल मालीस करे तो कोढवाळुं शरीरे कांइ पदार्थ चोळे के स्नान करे तो दुखवाळु आंखे आंजे तो आंधळुं दिवसे सुवे तो उंघण दोडे तो अस्थिर चित्त-चंचळवृत्तिनुं मोटा शब्दो सांभळवाथी बेरुं हसवाथी ताळवुं दांत अने जीभना विकारवाळुं बहु बोलवाथी प्रलापी परिश्रमथी गांडु भूमि खोदवाथी परे खोटवाळुं पवन सेववाथी उन्मत्त बाळक थाय छे तेम पुरुष पण रजस्वला स्त्रीनो संग १ ले दिवसे करे तो आयुष्यनो नाश थाय, २ जे दिवसे बुद्धिनो नाश थाय, ३ जे दिवसे शक्तिनो नाश थाय ४ थे दिवसे स्त्री ऋतुस्नान करे त्यार पछीज स्त्री पासे जावुं ए धर्म गणाय छे।

ऋतु देखातुं होय कोइपण रोग शरीरमां होय कामवासना न होय मलिन होय सगर्भा कुब्जा एवी स्त्रीए तथा पेट तणाय तेटलुं जम्यो होय धर्य विनानो भुख्यो दरदग्रस्त पीडातो तरस्यो बाळक वृद्ध मळमूत्रादिना वेगथी पीडातो रोगी एवा पुरुषे संगनी इच्छा करवी नहीं कारण तेथी बन्नेने हानि पहोंचे छे।

गर्भाधान नियम—स्त्रीये ४ थे दिवसे नहाइने प्रथम पतिनुं मुख जोवुं कारण नाह्या पछी स्त्री जेवा पुरुषनुं मोढुं जुवे छे तेना आकारनो गर्भ रहे छे माटे पति गेरहाजर होय तो पुत्र के पवित्र पुरुषोनी छबीनुं दर्शन करवुं. ४ थे

दिवसे ऋतुस्त्राव बंध थइ गयो होय त्यारे सुंदर वेश पहेरी सुगंधि पदार्थो चोपडी पौष्टिक खोराक खाइ पुत्रनी कामनाथी स्त्रीए पति पासे जवुं अने पुरुषे पण स्त्रीपरना प्रेम साथे अने पौष्टिक पदार्थो खाइ सुगंधि पदार्थो चोपडी सारो वेश पहेरी स्त्री पासे जवुं।

गर्भाधान—शुक्र शोणितनो संयोग थतांनी साथेज तेमां जीव प्रवेशे छे अंतर्वायुथी स्त्री पुरुषना बीजना विभाग थइ जाय छे तो बेलडां छोकरां जन्मे छे वीर्य अधिक होय तो पुत्र ऋतु अधिक होय तो पुत्री अने बन्ने समान होय तो नपुंशक थाय छे गर्भ रह्याना तात्कालिक लक्षण ए छे के स्त्रीने शुक्र शोणितनो स्त्राव न थाय श्रम लागे साथळ फाटे तरश लागे बेचेनी जणाय गुह्य भागमां स्फुरण थाय. पछीथी दिवसे दिवसे स्तनोना अग्रभाग सुकाय वखतो वखत रुंवाडा उभां थाय (रोमांच थाय). पांपणो वखतो वखत वींचाय सादो खोराक ल्ये छतां उलटी थाय सुगंधि चिजनी गंध पण गमे नहीं मोळप आवे. बीजे के त्रीजे महिने गोळाकार लाडवा जेवा आकारनो गर्भ होय तो पुत्र अने लंबगोळ आकार होय तो गर्भमां कन्या छे एम जाणवुं।

गर्भिणीनी स्थिति— गर्भाधान थया पछी चेरो फरी जाय छे ऋतु बंध थाय छे गर्भाधान थया पछी घणी स्त्रीओने १-१॥ महिने उलटी थवा मांडे छे ते ४ ५ महिना सुधी रहे छे कोइने उनवाना जेवो वखतो वखत पेशाब थाय छे झाडो घणे भागे कबज रहे छे गर्भ रह्या पछी कमळनुं मोढुं बंध थाय छे।

आहार विहार—सादो हळवो पौष्टिक प्रकृतिने माफक आवे तेवो खोराक लेवो. टाढो वासी वायडो खोराक मिष्टान्न पदार्थो मदिरा वगेरे बंध करवुं बे वखत पचे तेवुं थोडुं हळवुं जमवु गांठीया भजीयां दाळिया चेवडा मिठाइ तीखा दाह करनारां मसाला खाटां पदार्थ खावां नहीं दुध दाळ के प्रवाही गरमा गरम खावां नहीं पान सोपारी खावानी टेववाळी स्त्रीए बहु ओछा प्रमाणमां खावां खुल्ली हवा राखवी महेनत विनानां काम करवां नीचे प्रमाणे काम ओछां करवां जेवां के दळवुं खांडवुं नहीं कुवामांथी पाणी काढवु नहीं दोडवुं नहीं कुदका मारवा नहीं झाडपर के चडाणवाळी जगाए चडवुं नहीं मळमूत्रादिना वेग रोकवो नहीं गाडा घोडे मुसाफरी करवी नहीं उजागरो करवो नहीं स्मशान उजड घर शुन्य देवालय वगेरेमां जावुं नहीं ठंडे पाणीये नहावुं नहीं ब्रह्मचर्य पाळवुं आ सद्वर्तन बीजे महिनेथीज राखवुं।

सगर्भा स्त्रीने झाडानी कबजीयत हमेशां होवाथी मळनो संकोच थइ जवाथी छोकरांनुं माथुं बहार आवतां मुश्केली पडे छे माटे हमेशां दस्त पेशाब साफ आवे तेम करवुं. टाढना दिवसोमां जाडां पुरतां कपडां पहेरवां. चोखा मग तुवेर दुध रोटली दुधी तुरियां बटाटां वगेरेनुं वघारवाळुं घीवाळुं शाक थोडुं अथाणुं वगेरे खावा देवुं. छठे महिनेथी खोराकनी बहु संभाळ राखवी पेटमां बोजो थवा देवो नहीं. कबजीयत थाय तेवुं कांइपण खावुं नहीं चावीने खावुं जमतां जमतां बहु पाणी पीवुं नहीं पण तरस लागी होय तो ते प्रमाणे थोडुं थोडुं पाणी पीवुं. मरकी कोलेरा जेवा चेपी रोग चालता होय त्यां सगर्भा

स्त्रीने जावा देवी नहीं अने होय त्यांथी बीजे गाम मोकली देवी. कोइपण स्त्रीनी प्रसूति जोवा देवी नहीं. प्रथमना त्रण मासमां खावा पीवा हरवा फरवानी संभाळ न राखवाथी गर्भ पडी जाय छे।

कसुवावड गर्भपात-गर्भस्राव

कारण—प्रथम त्रण के चार मासमां पडे ते गर्भस्राव कहेवाय अने त्रण चार मास पछी के ज्यारे गर्भना शरीरनुं बंधारण बराबर थइ गयुं होय छे एटले ४ थी ९ महिनामां पडे ते गर्भपात के कसुवावड कहेवाय छे. स्त्री आहार विहारनी संभाळ न राखे तो त्रण मासनी अंदर गर्भ स्रवी जवानो वधु संभव छे कारण के त्यांसुधी गर्भाशयमां तेनी बरावर स्थिति थयेली होती नथी. सुवावडमां घणी वखत घणो रक्तस्राव थवाथी अने ते बंध न थवाथी मरण पण निपजे छे. मळमूत्रना वेग रोकवाथी बिहामणी वस्तु जोवाथी कसरतथी बहु गरम जलद चिजना सेवनथी बहु ओछो खोराक लेवाथी अभिघातथी पडवाथी फाळथी कुवामां पडवाथी अप्रिय वस्तु जोया करवाथी बहु श्रम पूर्वक धको लागवाथी बहु भार उपाडवाथी भयंकर उजागरथी शोक क्रोध भय उद्वेग घोडा उपर बेसवुं बहु हसवुं विषयसेवन पंथ सखन ताव उपवास अजीर्ण दोडवुं जुलाब उलटी गर्भपात करनारी दवा माठा समाचार कोठामां गरमी वधी जवी गर्भाशयनी नबळाइ भयंकर धडाको विजळीनो कडाको थवाथी वगेरे कारणे गर्भस्राव के गर्भपात थाय।

चिन्ह—कसुवावड थवानी होय छे त्यारे प्रथम दुखावो थाय छे लोही वहेवा मांडे छे लोही बहु पडे छे दुखावो धिमे धिमे वधतो जाय छे बन्ने पेडुमां वांसामां दुखावो थाय छे साथळ फाटया करे छे. आ दुखावो ते गर्भने बहार काढनारी वेणो छे अने घणा लोही साथे गर्भनो लोचो निकळी पडे छे. गर्भ ३ महिनानो के वधु मुदतनो होय तेम पीडा वधु थाय छे. उलटी थाय छे भोमां अमी रहेतुं नथी पाणी बहु पीवुं पडे छे ताव चडे छे अथवा तो शरीर पाणी पाणी जेवुं थइ जाय छे. गर्भ पडवानो वखत नजीक आवे छे तेम पीडा वधे छे लोही बहु पडे छे आ वखते कमळमुख खुल्लुं थइ गयुं होय छे वेणो वधे छे अने गर्भ पडी जाय छे. वखते गर्भ मरेलो आवे छे के बहार निकळीने तुरत मरी जाय छे. रक्तस्रावनी साथे वेण आववा मांडे तो गर्भ पडया विना रहेतो नथी. पेटमां गर्भ निर्जीव थाय तो तुरत स्त्रीने अंदर बोजो लागे छे जीवतो गर्भ भाररूप लागतो नथी. पेटमां गर्भ मरी जवा साथे पेट ठंडु थइ जाय छे शरीरे धुज वछुटे छे छोकरुं बिलकुल फरकतुं नथी पेटनी उंचाइ जरा ओछी थाय छे तेम थाय तो तुरत गर्भने बहार काढवानो यत्न करवो. वेण आवती होय पेटमां दुखावो थतो होय रक्तनो स्राव थवा मांडयो होय तो पण ते बधां चिन्हनुं शमन करी शकाय छे पण ते बहु जोरमां होय अने गर्भनुं मुख खुल्लुं थइ गयुं होय तो गर्भ पडीज जाय छे सातमां महिना पछी कसुवावड थाय तो सुवावडीनी पेठेज स्त्रीनी सारवार करवी. कसुवावड थइ गया पछी केटलोक स्त्रीओने ओरनो कांइ भाग रही जाय छे कोइने गर्भनुं पड रही जइ जाडुं थइ छोड जेवुं जणाय छे कोइने गंधातो स्राव गर्भाशयमां सोजो प्रदर गर्भाशय मोटुं देखावुं अत्यार्तव माथामां फेर ताव मुख बंद वगेरे दरद थइ आवे छे अने केटलीक मुदत रहे छे।

पथ्यापथ्य अने मारवार—स्वच्छ खुल्ली हवावाळा ओरडामां स्त्रीने राखवी आराम आपवो. कसुवावडथी फलाणीने आम थयुं के तेम थयुं पवी गभराइ जाय तेवी वात करवी नहीं, हिंमत देवी तेनी पासे कोइपण जातनी गंदकी थवा देवी नहीं. खोराक हळवो पातळो गोळ बाजरो घी विनानी राब मगनुं ओसामण वगेरे आपवुं. लीलुं शाक बंध करवुं, चिकणां के साकरवाळां टाढा पदार्थ आपवां नहीं।

कसुवावडनां चिन्ह बहु जोरमां न होय तो गर्भ पडतो अटके एवा उपचार करवा. वेण सखत होय अने गर्भ टकशे नहीं एवुं जणाय तो स्त्री पीडामांथी तुरत मुक्त थाय तेम करवु. ऋतु चडी गयु छे के गर्भाधान छे एम पण नक्की करवुं. ऋतु त्रण चार महिना चडी गयु हशे तो गर्भ वखते थनारां उलटी ताव वगेरे देखाशे नहीं. ऋतु चडी गयुं हशे तो रक्तस्राव जेम जेम वधु थशे तेम तेम दुखावो ओछो थतो जाशे पण कसुवावड हशे तो रक्तस्राव वधवा साथे दुखावो वधशे।

गर्भपाळ—पारद गंधक मंडूरभस्म सुवर्णमाक्षिकभस्म रौप्यभस्म प्रवाळभस्म शुक्तिभस्म प्रत्येक तो. ४ चार, सुंठ पिपर मरी जीरुं शाजीरुं शेकेलाधाणा तज एलचि नागकेसर झेरकोचलां रससिंदूर रौप्यभस्म लोहभस्म बळदाणा हरडे आमळां शतावरी आसोंध देवदार आंबाहळदर कडु प्रत्येक तो २ बे लइ चांडी लींमडाना पानना रसमां चणोठो जेवडो गोळी वाळवी. मात्रा २ थी ४ गोळी सगर्भा स्त्रीना झाडा मरडा कबजीयत सोजा शूळ उलटी ताव उधरस वगेरे दरदो मटे।

गर्भेन्दुशेखर रस—प्रवाळचंद्रपुटी तो १०, शिलाजीत अभ्रकभस्म पारद गंधक रससिंदुर लोहभस्म यशदभस्म वंगभस्म माक्षिकभस्म रौप्यभस्म आमळा जावंत्री शतावरी बळदाणा आसोंध कडु सुंठ मरी हळदर कपुरकाचली प्रत्येक तो. ३ त्रण लइ साथे वाटी भांगरो अरडुसी ब्राह्मी प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडा गोळी वाळवी अथवा भुको राखवो मात्रा २ थी ४ रति मधमां चटाडी उपर दुध पावुं. अजीर्ण करे एवा पदार्थो देवा नहीं।

बृहत् गर्भचिंतामणि रस—पारद गंधक सुवर्णभस्म लोहभस्म रौप्यमाक्षिक हरतालभस्मरक्त वंगभस्म अभ्रकभस्म मोतिभस्म बधां सरखे भागे लइ ब्राह्मी अरडुसी भांगरो दशमूळ प्रत्येकनी सात भावना दइ छाये सुकावी घुंटी राखवुं. मात्रा १ थी २ रति मध माखण साथे आपवाथी गर्भिणीना बधा रोग मटी बाळक निरोगी जन्मे जेने कोठामां–गर्भाशयमां रतवाने लीधे के बीजा कारणे अधुरे महिने गर्भ स्रवी जातो होय जन्म थवा पछी थोडा दिवस महिना के अमुक मुदते बाळक मरण पामतुं होय तेवी स्त्रीए गर्भ रह्यानी जाण थाय त्यारथी काळाहंसराजनो भुको बे आनीभार साथे आनी मात्रा शरु करी प्रसव थतां सुधी सेवन करवाथी गर्भ तंदुरस्त जन्मे छे अने बाळक जन्म्या पछी पण निरोगी रहे छे।

गर्भिणीना जुदा जुदा रोगना उपचार

१ ताव—परडानुं मूळ गळो मजिठ रतांजळी देवदार समभागे १ तोलानो उकाळो करी पावो अथवा गर्भेन्दुशेखर १ थी २ रति पाणी साथे आपवो।

२ **संग्रहणी**—आंबानी छाल के जांबुनी छालनो उकाळो करी चोखाना साथवा साथे मेळवी खवरावबो अथवा गळो अतिविष मोथ शेमळानो गुंद के छाल समभागे ०॥ तोलानो उकाळो करी ग्रहणी गजकेसरी रस २ रति मध नाखो पावो अथवा सुवर्णपर्पटी २ थी ३ रति मधमां चटाडवी ।

३ **झाडा**—वाळो अरडुसो रतांजळी बळदाणा धाणा गळो मोथ धमासो खडसलियो अतिविष समभागे ०॥ तोलानो उकाळो करी मध नाखो पावो. झाडा मरडा रक्तस्राव वगेरे दरदोमां उत्तम छे अथवा कर्पूरसुंदरी गोळी २ थी ३ मधमां चटाडवी ।

४ **शूळ**—हिंगाष्टक बे आनीभार घीमां चटाडवुं अथवा बृहतक्रव्याद गोळी २ मधमां चटाडवी ।

५ **उधरस**—सितोपलादि चूर्ण = थी ०। तोलो मधमां चटाडवुं अथवा चोसठपोरी पिपर मध घा साकरमां चटाडवी अथवा गर्भचिंतामणी १ थी २ रति मधमां चटाडवो अथवा द्राक्षासव के वासावलेह आपवो ।

६ **रक्तस्राव-लोहीनो स्राव**—वाळो अरडुसी खडसलियो गळो जेठिमध बहुफळि धामणां रिसामणी समभागे १ तोलानो उकाळो करी पावुं अथवा महाचंद्रकळा गोळी २ थी ४ कडाछाल बे आनीभार मध साथे चटाडवी ।

७ **छातीनो दाह-बळतरा**—गोखरु जेठिमध सुखडनो भुको बहुफळि वेवडी समभागे १ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो अथवा प्रवाल चंद्रपुटी २ वाल अथवा मुक्तापिष्टी १ थी २ रति मध माखण साथे चटाडवी ।

८ **कबजीयत**—आरोग्यवर्धनी राते सुती वखते २ थी ३ गोळी पाणी साथे देवी अथवा त्रे आनीभार मधुविरेचन चूर्ण पाणी साथे आपवुं अथवा संशमनी नं ३ नी गोळी ४ थी ८ पाणी साथे आपवी ।

गर्भस्राव तथा गर्भपात अटकाववाना उपाय

नीचेना कोइपण प्रयोग साथे गर्भचिंतामणी रस बृहत अथवा सुवर्णवसंत-मालती अथवा मुक्तापिष्टी अथवा प्रवाळचंद्रपुटी योग्य मात्राथी अपाय छे ।

१ पारेवानी चरक रति रति चोखाना ओसामण साथे पावी ।

२ कमळतंतु कालातल कमळकाकडी साकर समभागे खांडी १ तोलो भुको मधमां २ थी ३ वखत चटाडवो ।

३ सींगोडां कमळफुल काळीधराख जेठिमध बहुफळि समभागे खांडी एक तोलो भुको मधमां चटाडवो भोंपाथरीनो रस ४ तोला मध नाखी पावो ।

४ गोखरु जेठिमध धराख समभागे उकाळो करी मध नाखी पावो ।

५ भोंपाथरी शेरडिनां मूळ दरभनां मूळ कांसडानां मूळ समभागे लइ खांडी २तोलानो उकाळो करी मध के साकर नाखी पावुं ।

७ कुंभार वासण उतारतो होय तेने हाथे चोंटेलो गारो तो. २ लइ तेमां बकरीनुं दुध तो. १० अने मध नाखी पावुं. आ प्रयोगथी गर्भ स्थिर थइ पोषाय ।

नीचेना कोइ महिनाना गर्भरक्षक चूर्ण साथे १ थी २ रति गर्भचिंतामणी अथवा गर्भेन्दुशेखर रस अपाय छे ।

नीचेना दरेक महिनाना चूर्णनी मात्रा ०)= थी ०। तोलो समजवी अने कोइपण महिनानुं चूर्ण पाणी दुध के मध साथे आपवुं ।

१ ला	महिनानुं	गर्भरक्षक चूर्ण	सुखड वरियाळी साकर मेंदीनां पान समभागे ।
२ जा	,,	,,	कमळफुल शींगोडां शतावरी समभागे ।
३ जा	,,	,,	शतावरी विदारीकंद आमळां केळकंद समभागे ।
४ था	,,	,,	गोखरु कमळफुल धाणा नागकेसर समभागे ।
५ मा	,,	,,	शतावरी बळदाणा बहुफलि समभागे ।
६ ठा	,,	,,	आसेंाध शतावरी गोखरु गळोसत्व समभागे ।
७ मा	,,	,,	शतावरी आमळां गोखरु बळदाणा समभागे ।
८ मा	,,	,,	शेकेला धाणा वरियाळी जेठिमधनां मूळ कुष्ठ समभागे ।
९ मा	,,	,,	परडानुं मूळ शतावरी आसोंध अशेळियानां बी समभागे ।
१० मा	,,	,,	कमळकंद शतावरी आसोंध जेठिमध समभागे ।
११ मा	,,	,,	आसोंध शतावरी बळदाणा अशेळियानां बी कुष्ठ समभागे ।

छोड-नागोदरः

शोकोपवासरूक्षाऽस्निग्धान्नैर्योन्यतिस्रवाद्वातात् ॥
अनुचितचर्याभिर्वा शुष्येन्नागोराख्यगर्भः सः ॥ १ ॥ र. तं. ॥

कारण—शोक अपवास लुखां अस्निग्ध पदार्थो खावाथी के बहु स्रावथी वायुनो प्रकोप थइ गर्भ सुकाय छे अथवा तो गर्भ रह्या पछी स्त्रीना विरुद्ध आहार विहारादिने कारणे वृद्धि न पामतां थोडा महिना ओधाननां चिन्हो जणाइ पछीथी सुकाय छे अने गर्भ फरकतो बंध पडे छे गर्भना पडनी वचमां रक्तस्राव थइ गर्भनो लोचो थइ जाय छे ते नागोदर कहेवाय छे ।

चिन्ह—प्रथम त्रण चार महिना गर्भाधान जेवुं ज जणाय छे पछी कांतो पनो मेळे सुकावा मांडे छे के स्राव थया पछी सुकावा मांडे छे उलटी स्तनमां दुध वगेरे चिन्हो जणातां होय ते पण बंध पडे छे. छोड पडवाने वखते गर्भपातनां जेवां लक्षणो जणाय छे अने सगर्भ स्थितिनां लक्षणो बंध पडे छे जो प गोळो के छोड पडी जाय तो स्त्रीने आराम थाय छे केटलांक स्त्रीओने ५-१०-१५ महिने प छोड पडी जाय छे अने कोइने १-२ के ३ वर्ष पछी पालवे छे त्यांसुधी गर्भाधाननुं के पेटमां गर्भ छे तेवां चिन्ह जणातां नथी छोड पेटमां होय त्यारे कोइ स्त्री महिने महिने के वधु ओछी मुदते बहार बेसे छे अने कोइने ऋतु बंध रहे छे जो छोड हमेश माटे पेटमां रह्यो जाय छे तो पछी ते स्त्रीने संतान थतुं नथी ।

पथ्यापथ्य अने उपचार—गर्भपतन माटेना उपचार करवा कमळ पहोळुं थाय तेवा उपाय लेवा पण ते पहेलां गर्भ पूर्ववत् वधवा मांडे तेना उपाय करी जोवा तेम थाय नहीं तोज पातनां उपाय करवा ।

छोड–शुष्कगर्भने पालववाना उपाय

१ शुष्कगर्भ पुष्टियोग १—शतावरी आसोंध केळकंद कमळकंद बळदाणा अडदत्रेल मगत्रेल गोखरु रास्ना उपलसरी प्रत्येक तो. ५ पांच शुद्ध गुगळ तो. २० गुगळना झाडवाना बी-गुगळीयां तो. २० (न मळे तो काळोधगरा) साथे मेळवी चणीया बोर जेवडो (४ रतिभारनी) गोळी वाळवी मात्रा ३ थी ६ गोळी दुध के पाणी साथे ३ थी ४ महिना खवराववी ।

२ शुष्कगर्भ पुष्टियोग २—आसोंध रास्ना गुगळ समभागे लइ वधांनी बराबर शतावरी साथे मेळवी ०। थी ०॥ तोलो पाणी साथे आपवुं ।

३ शुष्कगर्भ माटे सर्वस्त्रीगदांतका वटी २ थी ४ गोळी शतावरी तो. ०॥ साथे मधमां चटाडा दुधनो खोराक राखवो ।

४ गर्भेन्दुशेखर तो. ०॥ जीवितप्रदा गोळी तो. १ साथे घुंटी सरखे भागे ४८ पडिकां करी सवार सांज घीमां चटाडवां ।

५ महालक्ष्मीविलास रति १॥ लक्ष्मणा लोह रति १॥ चंद्रप्रभा गुटी २ गोळी अभ्रकभस्म १॥ रति साथे मेळवी ३ पडिकां करी दिवसनां बे वखत मध घी साथे चटाडी दुधनो खोराक रखाववो ।

६ कालुं जीरुं नाळकेसर वरधारो तज प्रत्येक तो. ३॥ साडात्रण लइ खांडी कपडे चाळी १४ पडिकीं करी हमेशां १ पडिकी वासी पाणी साथे आपवो ।

७ कांटाळा अशेळियाना पंचांगनी ७ पडीकां अकेक तोलानी करवी क्वाथ करी आपवुं मृत गर्भ पडे जीवतो होय तो वधे ।

८ कायफळ भुकी बे आनीभार दुध साथे १४ दिवस पावुं छोड जामे ।

९ उंटकंटानी जड साठी चोखाना पाणी साथे ७ थी १४ दिवस पावुं छोड पालवे अने मरेलो होय तो तेल हिंग साथे पावाथी छोड पडे ।

१० घरियाळी तथा खांड टां. ५ घृत साथे २१ दिवस चाटवाथी छोड पालवे

११ मोरशिखा गुंदी वरधारो दरेक टां. ७ सात लइ भुकी करी गायना दुध साथे टां. २॥ आपवुं. पथ्य चोखा खांड घृत छोड पालवे ।

छोड काढवाना उपाय

छोड के पेटमां मरेलो गर्भ के पेटमां गर्भ मरी जवानी तैयारीमां होय अने स्रीने बचाववा अने गर्भने बहार काढवा जरुर होय अने डाक्टर हाजर न होय ते वखते नीचेना उपाय करवा.

छोड पेटमां सुकाइ जइ उपाय कर्या छतां पालवतुं नथी अने निर्जीव शल्यनी पेठे स्रीने कष्ट आपतुं होय अने पालववानो कोइ उपाय चाले नहीं त्यारे तथा छोड सुकाइ अंदर मरी गयुं छे अने तेने वखतसर काढवामां न आवे तो स्रीना जीवने जोखम छे एम लागे त्यारे आ उपायो करवा ।

१ विषखाखरो जेने साटोडो पण कहे छे तेनी जड लइ छोली साफ सुंवाळी करो तेनापर सिकोतरो तथा खीरणीना बी बन्नेने बारिक खांडी कपडछान करी पाणीमां मेंदा जेवुं करी उपली जड उपर लेप करवो तेनापर करो-

ळियानुं पड वींटी तेनापर लेप करवो अने सुकाववुं एम २४ लेप करवा अने आगळथी पातळी अने पाछळथी जाडी एवी वाटना आकारनी वर्ति करवी पछी तेने दोरो बांधी स्त्रीना गुह्य भागमां मुकवुं ७ दिवस सुधी करवाथी छोड मरेलुं के सुकाइ गयेलुं होय ते गळी पडे ।

२ लींमडानी अंतरछाल सरगवानी अंतरछाल भैंसो गुगळ दरेक तोलो १ एक तथा सरपनी कांचळी तो. ०॥ लइ बधाने बारिक खांडी पाणीमां गोळी करी गुह्य भागमां धुणी देवी तथा एज दवाने खुब उकाळी पावुं तो सुकाइ गयेलो छोड के मरेलुं बाळक तुरत बहार निकळी पडे ।

३ ब्राह्मीनां पान अने सिंधालुण खवराववाथी पेटमां मरेलुं बाळक निकळे ।

४ इन्द्रामणांमूळ सुवादाणा मेथी गाजरना बी लीलां वांसनी जड साजीखार कुलंजन हरडेदळ दरेक तो. २॥ अढी लइ खांडी तेनी पडिकी ३ करवी एक पडिकी बे शेर पाणीमां उकाळी शेर ०॥ रहे एटले गाळी पावुं ३ दिवस पावाथी छोड के मरेलुं बाळक निकळो जाय ।

५ इंद्रवरणीनुं मूळ ८ तसु लइ एळियो चोपडी चडाववाथी मृत छोड पडे ।

६ गाजरनां बी टां. २ राइ टां. २ तेल टां १० मां पकावी तेमां गोळ टां. १० मेळवी पावुं मृत छोड पडे ।

७ गाजरना बी रायणबी तेलीयो देवदार उकाळी ३ दिवस पावाथी मृत छोड पडे ।

८ गाजर एळियो टंकणखार फटकडी राइ दरेक टां ३ त्रण लइ वाटी भुको टां. १५ ना ३ पडिकां करी हमेशां १ पडिकुं सरसिया तेलमां पकावी ३ दिवस पावुं ।

९ पलासपापडो साकर समभागे चूर्ण करी मधमां गोळी चणीया बोर प्रमाणे करी जननेंद्रियमां राखवाथी ऋतु आवे अने छोड के मृत गर्भ पडे ।

सुवावडीनो सारवार

प्रसूतिशास्त्र

बाळक कांइपण हरकत विना जन्मे ते सुखप्रसव कहेवाय कोइपण प्रकारनी अडचणथी हेरानगति साथे प्रसव थाय ते कष्टप्रसव कहेवाय अने गर्भ आडो अवळो थाय के गर्भाशयमां बीजी विक्रियाने लीधे कापकूप करवी पडे ते विषम प्रसव कहेवाय विषम प्रसवमां घणीवार ओर-मेली अंदर रही जाय छे लोही वधारे पडे छे गर्भाशय फुटे छे अने महा मुश्केलीये शस्त्र क्रियाथी के हाथनाखीने गर्भ बहार काढी शकाय छे ।

सुवावड माटे पूर्वतैयारी

सुवावड करवानो ओरडो साफ भेज विनानो खुल्लो हवा प्रकाशवाळो राखवो. बहारनी हवा सुवावडीना शरीरने न लागे तेवी जगाये राखवी अने प्रसव थइ गया पछी सुवावडीने वाणना खाटला पर सुवरावबी ते ओरडीनी बाजुमां नानी ओरडी राखवी त्यां सुवावडो स्त्री मळमूत्रोत्सर्ग करे जे तुरत साफ करी नाखवां. ए ओरडोनी खराब हवा ओरडामां दाखल न थाय तेवी गोठवण करवी

ओरडानी भींतळीयानी जमीन गार करेली होय तो वधु सारु छे-धाबो दीधेल होय तो आखा ओरडामां आजम पाथरवी ओरडो १०-१२ फुट लांबो अने ८-१० फुट पहोळो होवो जोइये ।

नवमो महिनो बेसे एटले वृद्ध पीढ अनुभवी सुयाणी साथे ओळखाण करावबी सुयाणीने कायमने माटे साथे राखवी सुवावड जेने आवी होय अने घणी सुवावडुं जेणे करेली होय गर्भिणी स्त्री पर प्रीति राखनारी मधुर रुचाकर आनंदजनक वातो करी स्त्रीनुं मन रंजन करती होय आनंदी स्वभावनी पवी सुयाणी साथे अगाउथी आळखाण करावबी के मैत्री बंधावबी प्रसवनो क्रिया चालु थया पछी अजाणी सुयाणने एकाएक बोलाववाथी जणनारी स्त्रीने संकोच के शरम उत्पन्न थइ वेण आववामां प्रतिबंध थइ प्रसव लंबाय छे ।

तैयार राखवाना पदार्थो पथारी ओछाड गरम तथा टाढुं पाणी नाळ बांधवा माटे सुतरना के रेशमना बे त्रण कटका नाळ कापवा माटे एक कातर अथवा सारी धारवाळी छरी के अस्त्रो पेटे बांधवानो पाटो गोदडीयो बाळोतीयां बाळकने नवराववा माटे त्रांस मीठुं तेल कपडाना कटका रुमाल बाळकने वींटाळवा माटे पाणकोरानो के जाडो कपडानो कटको कापेला नाळने बांधवा माटे पाटो छाणाली सगडीयो तथा जरुरनी दवाओ ।

प्रसव थवामां मुख्य आधार गर्भाशयना संकोचनो अने पेटना स्नायुना दबाणनो छे वेण आववी ते गर्भाशयनो संकोच छे अने ते कमळ तरफ दबाण करे छे गर्भाशय उपरना भागथी संकोचाया मंडी नीचे उतरे छे वेण आवतां वांसो तथा कड फाटे छे गर्भस्थानमां पातळा पडनी थेलीमां पाणी भरेलुं होय छे ते गर्भामृत कहेवाय छे तेने लीधे बहारनो धको गर्भने लागतो नथी तेमज प्रसव वखते गर्भाशयना मुखने पोळुं करवामां तेनी मदद मळे छे गर्भना शरीरनो मोटो भाग माथुं छे ते मोटुं होय अथवा व्याधीथी मोटुं थयुं होय तो प्रसवमां अडचण पडे छे गर्भाशयमां मूत्राशय गुदा अने बस्ति प्रदेश छे ते अनेक नाना मोटा अवयवो अने बीजा स्नायु बंधनोथी भरेलो छे तेना उपरना द्वारने आगमन द्वार अने निर्गमन द्वार कहे छे आगमन अने निर्गमननी वच्चेना मार्गने बस्ति प्रदेश के बस्ति कक्षा कहे छे प्रसव वखते कमळनुं मुख ६ थी १२ के वधु कलाके पूर्ण विस्तृत थाय छे ।

वेण आववा मांडे एटले बधी बाजुना दबाणथी गर्भामृत कमळ तरफ रस्तो करवा मांडे छे अने जेम जेम वेण वधती जाय छे तेम कमळ विस्तृत थतुं जाय छे आ प्रवाही पदार्थने लीधे कमळना सर्व व्यास पर समान दबाण थइ तेने कांइ अडचण आव्या विना खुलतुं जाय छे कमळ संपूर्ण विस्तृत थइ रहे एटले गर्भामृतनी थेली फुटे छे कोइवार कमळ पूर्ण विस्तृत थया पहेलां थेली फुटी जाय छे तो गर्भना मस्तकनुं दबाण कमळपर थाय छे तेथी कमळनो सोजो थइ आवे छे पहेली सुवावडमां कमळनो भाग वधु कठण होय छे तेथीज प्रथम वार स्त्रीने बहु कष्ट वेठवुं पडे छे कमळ स्वाभाविक कठण होय छे अथवा तेनो सोजो होय तो विस्तृत थवाने घणो वखत लागे छे ।

कमळ विस्तृत थया पछी गर्भने बस्ति पिंजरमांथी बहार आववानुं बाकी रहे छे गर्भाशय जोरथी संकोचावा मांडे छे प्रथमनी वेणमां कपातुं होय तेवी पीडा थती हती हवे स्त्रीने करांजवुं पडे छे अर्थात् पोताने बळ करवुं पडे छे घणे भागे प्रथम माथुं निकळे छे अने माथुं निकळ्या पछी बीजा भागने बहार निकळतां वधु अडचण पडतो नथी घणीवार बाळक कुदरती नियमथी विपरीत रीते बहार निकळे तो बेसणो फाटवानी धास्ती रहे छे बाळक बहार आव्या पछी १०–१५ मिनीटे वेण बंध पडे छे दरमियान थोडुं घणुं लोही पडे छे स्त्री शिथिल थइ जाय छे त्यारपछी वळी जीणो वेण आववा मांडे छे तेने लीधे रक्तप्रवाहनी साथे ओर बहार पडे छे आ प्रमाणे गर्भनो पुरो प्रसव १२ थी २४ कलाकमां थाय छे।

वेण—गर्भने बहार काढवा माटे गर्भाशय संकोचाय छे तेथी पीडा थाय छे ते वेण कहेवाय छे वेण खोटी अने खरी होय छे. खरी वेण नव महिना पछी उत्पन्न थाय कपातु होय तेवी पीडा कमर नीचे प्रथम थवा मांडीने धिमे धिमे बधा पेटमां अने जांगोमां फेलाय नियमितपणे उपडे अने प्रत्येक वखते वधु पीडा थाय योनिमांथी जळपटां जेवुं पडवा मांडे गर्भाशयनुं मों धिमे धिमे उघडे. खोटी वेण नव महिना पहेलां कोइपण वखते उपडे अजीर्ण कबजीयात श्रम चिंता वगेरे कारणे थाय पीडा कापवा जेवी न थतां अजीर्णथी जेम आंतरडामां शूळ चुंक निकळे तेवो दुखावो थाय तेम ते एकज ठेकाणे दुखे सर्व पेटमां अने जांगोमां फेलाय नहीं दुखावो धिमे धिमे वधे नही पण ओछो थाय जळपटां पडे नहीं गर्भाशयनुं मुख उघडे नहीं. खरी वेणमां कापवा जेवी पीडा थाय अने ते वधे तेम आ वेण पुरे दिवसे उपडे।

रक्षा—प्रसव करनारी स्त्रीने रक्षा करतां कहेवुं के "हे समजु बाइ, पृथ्वी पाणी आकाश तेज वायु विष्णु अने ब्राह्मण तारुं रक्षण करो तने जलदी गर्भथी मुक्त करो हे सुंदर मुखवाळी बाइ कार्तिकस्वामीथी रक्षायेला पुत्रनो तुं प्रसव कर हे स्त्री अमृत चंद्र चित्रभानु अने उच्चैःश्रवा अहीं आवी तारुं रक्षण करो समुद्रमांथी काढेलुं अमृत तारा गर्भने उतावळे प्रसूत करो अग्नि वायु सूर्य इंद्र अने वरुण देवता तारुं रक्षण करो"।

बोध—पछी स्त्रीने शिखामण आपवी के धिमे धिमे गर्भने सेरव वखत आव्या विना जोर करीशमां तेथी जन्म पामनारुं बाळक खोटवाळुं अने रोगी थाशे तारा मुख उपर सुंदर कांति झबकी उठे छे एटले तने जरुर पुत्र उत्पन्न थशे ए प्रमाणे आनंद उपजवाथी स्त्रीने वधु उत्साह अने बळ आवे छे जलदी प्रसव न थतो होय तो काळा सरपनी कांचळीनो धुंवाडो योनिने देवो प्रसव थइ गया पछी मेली न पडे तो भोजपत्र कळगारी तुंबडी सरपनी कांचळी उपलेट सरसव एमानां जेटला मळे तेनी धुंवाडी आपवी तथा पाणीमां वाटी चोपडवां खरी वेण उपडया पछी एकदम प्रसव थवा माटे जननेंद्रियने काळा सरपनी कांचळीनी अथवा मींढाळनी धुंवाडी आपवी कळगारीनुं मूळ दोरावती हाथे तथा पगे बांधवुं. पिपर तथा वज बन्ने सरखे वजने पाणीमां वाटी तेमां एरंडियुं तेल मेळवी नाभिये चोपडवुं दाक्तरो २५ थी ३० ग्रेन क्वीनाइन एक साथे आपी दीए छे तेथी कमळमुख खुली जलदी प्रसव थाय छे एम कहे छे।

प्रसव पूर्वे—खरी वेण उपडे त्यारे सुयाणीये पासे रहेवुं. स्त्रीने डाबे पडखे सुवराववी उपर कपडुं ओढाडी स्त्रीनी वांसे उभा रही गर्भिणोना पग पेटपर वळावी (ढुंटीयुं वळावी) गरम पाणीये साबुथी धोयेली अने स्वच्छ कपडे लुयेली बे आंगळी योनिमां दाखल करी कमळ सुधी लइ जवी अंदरनी भिनाश अने गरमी केटली छे ते जोइ लेवुं तथा कमळमुख केटलुं उघडयुं छे ते तपासवुं. कमळमुख विस्तृत थवानी तैयारीज होय तो थोडुं बेसवा के हालवा चालवामां अडचण नथी पण बनतां सुधी सुवरावीज राखवी. सुयाणीये वांसे बेसवुं अने गर्भामृतनो स्राव थया पछी प्रसव थवानो समय आवे त्यारे हाथे रक्षा बांधो पुल्लिंगवाचक फळ हाथमां आपी स्त्रीने शरीरे तेल मर्दन करीने गरम पाणीथी नवरावबी. घउं बाजरानी गोळवाळी घी साथे करेली गरम राब पीवरावबी. पछी कोमळ पथारीमां चिती सुवरावबी पग वांका वळाववा वायु कोपे नहीं ते माटे डुंटी नीचे तेल मर्दन कर्या करवुं. उपलेट कळगारी वज वचक चित्रो करंजनुं चूर्ण वारंवार सुंघाडवुं. भोजपत्र राळ वगेरेनो धूप देवो. पडखां वांसो कमर साथळमां गरम करेलुं तेल तेने सारु लागे तेम चोळवुं. छोकरुं पडखामां गरी गयुं होय तो धिमेथी हथेळीवडे चोळी नीचे उतारवुं. वेण उपराउपर आववा मांडे त्यारे योनिद्वारने तेल चोपडीने तेनुं मो पहोळुं करवुं पछी स्त्रीने धिमे धिमे बळ करवानुं कहेवुं. प्रसव थया पछी स्त्रीने पुत्र के पुत्री जेनी तीव्र इच्छा होय ते जन्म्यानुं कही आनंद पमाडवो ।

नीचेना मंत्रथी ७ वखत पाणी मंत्री पीवरावबु तेथी तुरत प्रसव थशे

इहामृतं च सोमश्च चित्रभानुश्च भामिनि ।
उच्चैःश्रवाश्च तुरगो मंदिरे निवसन्तु ते ॥
इदममृतमपां समुध्धृतं वै तव लघु गर्भमिमं विमुंचतु स्त्रि ।
तदनलपवनार्कवासवास्ते सह लवणांबुधरैर्दिशंतु शांतिम् ॥
मुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येन्दुरश्मयः ।
मुक्तः सर्वभयाद् गर्भ एहि मा चिर मा चिर ॥

नीचेनुं पनरियुं अथवा त्रिशुं जंत्र कागळ उपर अष्टगंधथी आळखीने स्त्रीने बतावबुं अथवा पावुं तेथी जलदी प्रसव थाय छे

पनरियुं जंत्र

८	३	४
१	५	९
६	७	२

त्रीशुं जंत्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

सुखप्रसवकर चूर्ण—सुंठ पिपर मरी अजमोद रास्ना कडु सिंधालुण जीरुं शाजीरुं शेकेलीहिंग अजमा प्रत्येक तो. ५ पांच लइ बधाथी अर्धे वजने आसोंध साथे खांडी ३ थी ६ तोलानो उकाळो करी पावो ।

सुखप्रसवकर लेप—कालीपाठ कलगारो अरडुसी अघेडानां मूळ समभागे लइ पाणीमां वाटी, नाभि जननेंद्रिय पेडु उपर चोपडवाथी जलदी प्रसव थाय।

सुखप्रसवकर अंजन—सर्पनी कांचळी गायना दुधमां भींजवी राखी पछी सुकावी बाळी राख करवी पछी ते आंजवाथी तुरत प्रसव थाय. बकरीनुं ताजुं दुध स्त्रीनी इंद्रीथी गुह्य भाग सुधी चोळवुं तथा घोडाना नखनी धुंवाडी गुह्य भागमां आपवी. तुरत प्रसव थाय।

प्रसव थया पछी—पेट उपर गर्भस्थानने दाबीने मशळवुं एटले ते संकोचाइने पेडुमां एक पिंडनी माफक बंधाइ जशे अने ओर छुटी पडी गुह्यद्वारमां आवशे. जरुर पडतां आंगळीना स्पर्शथी खात्री करी नाळने खेंचीने ओर तथा पडने बहार काढी लेवां. बाळक बहार आव्या पछी गर्भाशय दशेक मिनिटनो विसामो लइ एक बे वेण लावी ओरने जुदी काढी नाखे छे. अरधा कलाकनी राह जोइ ओर न पडे तो आंगळां के हाथ गर्भस्थानमां नाखी बहार काढवी ओर बहार काढवी ए जरुरनुं छे ते न निकळे त्यांसुधी स्त्रीना जीवने भय समजवो. बाळकनो श्वासोश्वास शरु थाय त्यारे अने ओर पडी गया पछी नाळ कापवुं. ओर पडया विना नाळ कापवामां आवे तो ओर काळजे चडी जइ बाइ मरी जाय छे ए ध्यानमां राखवुं. नाळ कापवा पहेलां बाळकनी नाभिथी छ थी दश इंचने छेटे एक दोरो ताणीने बांधवो, अने एक बीजो दोरो बांधेला दोराथी बे इंचने छेटे बांधवो. ए बे दोरानी वच्चे कातर के अस्त्रा वती छेद मुकवो. नाळ कापी बाळकने एक बाजु मुकवुं. गर्भाशय पूर्ण संकोचाइने कठण थाय एटले तेना उपर साफ रु मुकी गरम के सुतराउ कपडानो पाटो बांधवो, पाटो बहु ढीलो नहीं तेम बहु कठण पण नहीं सुवावडीने सुख थाय तेटलो तंग राखवो, पाटो बांध्या पछी बाइने पथारीमांथी खाटला उपर सारा बिछानामां सुवरावबी अने गुह्यद्वार उपर रुमाल मुकवो. ते थाकी गयेली होय छे तेथी तेने तुरत उंघ करवा देवी।

ओर डाटवा माटे १ हाथ उंडो खाडो खोदी तेमां पांच शेर मीठुं नीचे अने पांच शेर उपर नाखी उपर धुड दाबी उपर पाणो मुकवो. ओर उंडो डटाय अने वधु मीठुं नखाय तेम बाळक दीर्घायुषी विद्वान अने भाग्यशाळी थाय छे. जो ओरने उंडी डाटवामां नथी आवती अने ज्यां त्यां रजळे छे के जनावर खाय छे तो ते बाळक कमनशिब मूर्ख थाय छे. मीठुं न नाखे के ओछुं नाखे तो ते मनुष्य मीठा विनानुं निर्माल्य बुद्धि शौर्य हीन बने छे।

बाळकने नवरावी कपडां पहेराववां नाळने कपडामां वींटी उपर रु दाबी बाळकना पेट पर ढीलो पाटो बांधवो. सुवावडीने शांत स्थिति राखवी. तेना ओरडामां जरा अंधारुं राखवुं. तेने शांत अने आनंदी राखवी. तेनी पासे सुयाणी सिवाय कोइने जवा देवुं नहीं. उंघ आवी गया पछी ते तेजीमां आवे छे. सुवावडीने बनतां सुधी ४ दी सुवरावीज राखवी, बेठी थवा देवी नहीं के उभी करवी नहीं. तेथी अचानक लोही घणुं पडी जइ भयंकर स्थिति थवानो संभव छे. सुवरावी राखवाथी गर्भाशय पोताने ठेकाणे आवे छे. प्रसव पछी ६-८ कलाके पेशाब करवानी सूचना आपवी पेशाब प्रथम २४ कलाक सुधी सुतां सुतां थाय

तो वधारे सारुं. पेशाब करवानी तेने यादी आपवी जेम न करीये तो गुह्यद्वारमां बळतरा थवानी बीके पेशाब दबावी राखे छे तेनाथी खराब परिणाम आवे छे. जण्या पछी ४८ कलाकनी अंदर तेने झाडो न थाय तो परंडियुं तेल आपी झाडो लाववो तेना ओरडामां ठंडो पवन आववा देवो नहीं अने तेना खाटला नोचे छाणानो निर्धूम अग्नि थोडो थोडो नाखो शेक करवो अने शियाळा चोमासामां शेक सारी रीते करवो ।

पश्चात्‌वेण—प्रसव थया पछी केटलोक वखत सुधी स्त्रीओने झीणो झीणी वेण्य आव्या करे छे. कोइने बे चार कलाक अने कोइने एक बे दिवस रहे छे. प्रथम प्रसववाळी स्त्रीने आ वेण्य आवती नथी पण जेने बे चार प्रसव थइ गया होय तेने घणे भागे थाय छे. पीडा सहन न थाय तो अफिणवाळी दवा आपवी।

पथ्यापथ्य—सुवावडीने खावानी संभाळ राखवी शरुआतमां भारे खावा देवुं नहीं पहेलां बे दिवस बाजरो के घउंना लोटनो राब गोळवाळो पावी पछी भुख लागे तेम घउंना लोटनो गोळवाळो शोरो भावे ते प्रमाणे आपवो तथा बाजरानो पातळो रोटलो सारो रीते घी नाखोने तथा गोळ रींगणा मेथीनुं शाक केरडां आदुनुं अथाणुं आपवुं चोखा दाळ काठियावाडी स्त्रीने सदतां नथी जेने रुचि होय तेमणे कोकम आंबलो विनानी दाळ अने चोखा खावां. ८-१० दिवस पछी काटलुं खवराववानुं शरु करवुं ।

सुवावड आव्या पछी १ महिना सुधो मांस खावुं नहीं बहु शरदी के शरद प्रकृति होय तो जुनो द्राक्षासव के मृतसंजीवनी सुरा अर्धाथी एक औंस आपवी. महानारायण तेल महामाष तेल महाराज प्रसारणी तेल महाविष्णु तेल के तलना तेलमां वावडींग मरी ककडावी ते तेल हमेशां आखे शरीरे चोळवुं. सुवावडोने ९ मे के १० मे दिवसे पेलुं नाण नवराववुं खावामां तेल आपवुं नहीं तथा आंबली दहीं वाल वटाणा चण्या केळां काकडी तरबुच तळोयां सिताफळ जामफळ रामफळ फणस लींबु केरी वगेरे आपवां नहीं ।

सुवावडीनी संभाळ—सुवावडीनां कपडां वगेरे हमेशां स्वच्छ राखवां तेल हमेशां शरीरे चोळवुं अने तेनापर हळदरनो भुको घसवो तेलवाळां कपडां रोज के एकांतरां बदलवां. आठ दिवसने अंतरे गरम पाणीये नवराववी, नवरावीने तुरत शरीर साफ करो नाखवुं सगडो हाजर राखवी शेक खुब लेवो २० वासा पछी हमेशां के एकांतरां नावुं बे महिना वित्या पछी यथेष्ट वर्तन करवुं अने त्रण महिना पुरा थता सुधो ब्रह्मचर्य पाळवुं. शियाळो चोमासु होय तो सहन थाय तेटलो शेक लेवो वधु नहीं तो एक छाणानो निर्धूम देवता खाटला नीचे रात अने दिवस रहे तेम करवुं १ महिना सुधी दुध आपवुं नहीं. चानुं बंधाण होय तो सुंठ नोखां नाखी चा करी थोडुं दुध नाखी पावो. बाळकने माटे जुदुं बिछानुं राखवुं अने तेनी गोदडी के वाळोतीयां छ छ कलाके बदलाववां तथा ज्यारे ज्यारे मळमूत्र करे त्यारे पण ओछाड बदलावी नाखवा कपडां बिछानां स्वच्छ रहेवाथी सुवावडोनुं मन प्रसन्न रहेशे ।

प्रसव थया पछी तुरत आपवानां औषधोमां लविंग अने जायफळ केटलाक आपे छे. कोइ हिरण्यगर्भनी गोळी घसीने अथवा हिरण्यगर्भनी भुकी १ रतिभार तथा आदुनो रस ०॥ तोलो मेळवी आपे छे. कोइ अडदना दाणा जेटली कस्तुरी पान साथे आपे छे. १ रति शेकेलीहिंग अने शेकेला कांकचिया बंने साथे मेळवी गोळ साथे आपे छे. आमांनुं कोइ औषध ३ दिवस अपाय छे. अने देवशर्वादि क्वाथ पहेले दिवसथी शरु करवो. सुवावडीनुं शरीर सारुं होय कांइपण रोग न होय तो पण क्वाथ १५-२० दिवस चलाववो. हमेशां जम्या पछी सुवाशणा चवराववा ।

बाळकनी संभाळ—नाळ-नारडुं जे छ थी दश इंच डुंटीने वळगी रहेलुं होय छे तेना पर रुनी गादी मुकी पाटो बांधवो ते पाटाथी पेटने दबाण न थाय ते संभाळवुं नाळ उपर हमेशां तलनुं तेल मुकवुं. ते ५-६ दिवसे सुकाइ खरी पडे छे वचमां ते नाळ तणाय तो बाळक रुवे छे तेम तेम डुंटी उपडी आवे छे पण ते पाछी पनी मेळे बाळकना शरीरमां लोही भरातां बेसी जाय छे. जो नाळ वधु तणाय तो डुंडी पाकी पडे छे जो नाळ डुंडीनी बहु नजीक बांधी कापे के डुंटी तरफ बांध्या विना कापे तो लोही घणुं पडी बाळक मरी जाय छे. नाळ लांबुं कपाय तेम बाळक दीर्घायुषी बुद्धिमान निरोगी रहे छे नाळ खरी जाय एटले शीशीमां मुकी राखवुं ते माणस बिमार पडे त्यारे ते नारडुं जरा घसी पावाथी आराम थाय छे ।

बाळक जन्मे के तुरत थाळी वगाडवी तेथी बाळक बीइ जातुं नथी. जन्मे त्यारे तेनुं शरीर चरबीथी भरेलुं चिकाशवाळुं होय छे तेने साबु के अरिठाथी गरम पाणीये नवरावी लुइ नाखवुं पछी बन्ने दिवसे नवराववुं सुवावडीना ओरडामां प्रथम अंधारुं राखवुं पछी थोडो थोडो क्रमे करी वधु प्रकाश लाववो. बाळकने पण एकदम प्रकाशमां लाववुं नहीं जन्म पछी ४-६ दिवस सुधी गळसुदी पाय छे कारण घणीवार प्रथम १-२ दिवस सुधी धावण आवतुं नथी कदाच धावण तुरत आवे छे तो पण गळसुदी पावानी बधी कोममां रीत छे गोळनुं पाणी गायनुं घी मेळवी नवशेकुं करी पाय छे तेथी मळ निकळी जाय छे. कहेवत छे के जेणे गळसुदी पाइ होय तेना जेवा स्वभावनुं बाळक थाय ।

बाळकने १ वरसनुं थाय त्यांसुधी धवराववुं ते दरमियान गर्भाधान थइ जाय तो धिमे धिमे धावण छोडाववुं जेवुं गर्भाधान थया पछी धावतुं बाळक नबळुं पडवा मांडे छे माटे धावण छोडव्या पहेलां गायना दुध उपर बाळकने धिमे धिमे चडाववुं १० महिनानुं थाय त्यारे थोडो थोडो करी खोराक शरु करी देवो ।

मूढ गर्भ-बाळक आडु आववुं—माथा शिवायनो शरीरनो भाग प्रथम आवे तो तेने मूढ गर्भ कहे छे तेमां कांतो माथाने बदले पग गुदा गोठण साथळ देखाय छे अथवा माथाने बदले खभो के हाथ देखाय छे त्यारे बाळक आडु आव्युं एम कहेवाय छे आम थाय तो हुशियार सुयाणीने अंदर हाथ नाखी बाळकने समु करी बहार काढवुं पडे छे तेम करवामां खुब अनुभवी अने घणी सुवावड जेणे करेली होय तेवी सुयाणी होवी जोइये. गामडानी सुयाणी पण

बाळक सरखुं करी प्रसव करावी शके छे अने इस्पिताल्मां रहेनारी सुयाणीयुं आवे वखते गभराय जाय छे अकल पहोंचती नथी तेथी हो हो करी स्त्रीने गभरावी मुके छे अने प्रथम हाथ के पग देखातां खेंचे छे तेथी स्त्रीनी भयंकर स्थिति थाय छे अने दाक्तरो तुरत कापकूपनी तैयारीमां पडे छे पण प्रथम हाथथी शक्तिपूर्वक बाळकने सरखुं करी प्रसव करावता माटे दरेक कोशिश करवी सुयाणी वृद्ध ठरेल स्वभावना अने अनुभवी होय तेनीज अगाउथी गोठवण करवी अने ते सुयाणी निरुपाय थाय तोज शस्त्रकर्मथी छुटको करनार डाक्टरना ताबामां स्त्रीने मुकवी ।

कृच्छ्रप्रसव—आ प्रसवमां वेण्य आवी वचमां ४-८ कलाक बंध पडी जाय छे फरी वेण्य उपडे छे पण १ थी वधु दिवसो निकळी जाय छे त्यारे सुयाणीये वैद्यें के डाक्टरे जलदी प्रसव करी नाखवा उतावळां पगलां भरवां नहीं पण कुदरती रीते प्रसव थावा माटे धिरज राखवी. प्रथमनो सुवावड होय तो गर्भमार्गनो भाग सखत होवाथी गर्भनुं माथुं अने कटोरनो भाग नानो मोटो होवाथी गर्भाशय फुलेलुं होवाथी गर्भाशय अत्यंत वांकुं वळी जवाथी स्त्रीनुं मन उदास रहेवाथी हिस्टीरिया ताव उधरस झाडानी कबजीयत वगेरे दरदथी रुक्ष-लुखां काचां कोरां खावानी टेव, छेवट सुधी दादर चडवा, दुध घी उपर अभावो भजीयां दाळीया गांठीया चेवडा वाल वटाणा जेवी वायु करनारी अने लुखी अस्निग्ध चीजुं खावानी लत वगेरे कारणथी गर्भाशयनुं मुख ग्रीवा के योनि संकुचित थवाथी प्रसव थतां स्त्री बहु कष्टाय छे ।

आम थाय तो बहु चतुराइथी उंचाइये गर्भना पडमां छिद्र पाडी गर्भाम्रत धिमे धिमे वहेवा दीधाथी गर्भाशय पहोळुं थइने वेण्यनुं जोर वधी प्रसव थाय छे कष्टाती स्त्रीने घणीवार सुयाणी अपशब्दो बोलीने तथा बीजी रीते तेना मनने धक्को पहोंचाडे छे तेथी मनने आघात थइ प्रसव लंबाय छे. स्त्री बहु कष्टाती होय तो तेने बहुज धिरज आपवी तेना मननुं समाधान करवाना यत्नो करवा ए तेनुं काम छे. स्त्राना मनने खोटुं लागे एवो एक पण शब्द बोलवो नहीं. प्रसव अगाउ जुलाब आपी कोठो साफ करवो. पीडाशामक दवा आपवी के बीजा उपचार करवा घणा डाक्टरो एकस्ट्रेक्ट अरगट आपे छे पण ते बहु भुल छे. प्रसव थइ ओर पडी गया पछी ए आपवानुं छे के जेथी गर्भाशय संकोचाइ मूळ स्थितिये आवे बगाड निकळी जाय अने लोही वधु पडतुं वही जाय नहीं. स्त्री कष्टाती होय त्यारे अरगट आपवाथी उलटी अवळी क्रिया थइ प्रसव थतो अटकी जाय छे अने मृत्युना भयमां स्त्री आवी पडे छे. बाळक मरी गयुं छे एम लागे तो ब्राह्मीनां पान तो. १० सिंधालुण तो. १ साथे खवरावबां अथवा वाटी पीवरावबुं. तो मरेलुं बाळक पडी जाय।

हालमां अनुभव विनाना डाक्टरो बीजाना शरीर पर चीरफाडना अखतरा करी शीखवानी इच्छाथी अथवा अज्ञानने लइ उतावळ करीने अथवा बाइ कष्टाती होय तेनुं दुख जोइ नहीं शकवाथी अधीरा थइ गयेला घरना माणसोना मननी नबळाइने लीधे समय विना पुरा महिना थया विना के प्रसवनो समय समज्या विना

બાળકને બહાર કાઢવા કુદી પડે છે અને બાઇને મારી નાખે છે. એક દાખલામાં બ્રાહ્મણ બાઇને દીકરીનાં લગ્ન કરવાની ઉતાવળ હતી જટ સુવાવડ આવી જાય તો પોતે જલદી નાઇ ધોઇ પરવારી લગ્ન કરી શકે આ વાત તેના પતિના મિત્ર ડાક્ટરની હાજરીમાં થઇ ડાક્ટર કહે અરે એતો હવે સહેલી વાત થઇ છે એવી દવા આવે છે કે તે પીધા ભેળી સુવાવડ આવશે અને છોકરાને કાઢી લઇશ. તુરત બજારેથી દવા લાવી પાઇ અને સાથે હથીયારો લાવ્યા તે બાઇ જુવાન તંદુરસ્ત હતી તેણે ચાકરી તેના ધણીને અને ડાક્ટરને પાયો તુરત બાઇને ખાટલે સુવરાવી. તેના ધણીયે તેડાવેલ સુયાણીયે આવું સાહસ કરતાં અટકાવવા ડાક્ટરને કહ્યું કે ભાઈ 'આવી અજડાઇ રેવા દે' પણ તેણે કીધું કે "તમે જંગલી લોકો શું જાણો હવે તો સહેલાઇથી સુવાવડ્યું થાય છે" તુરત હથીયાર અંદર ખોસ્યાં અને ગર્ભાવરણ ચીરી છોકરાને બહાર કાઢયું સાથે ગર્ભાશય નિકળી પડયું બાઈ બેશુદ્ધ થઇ ગઇ ગર્ભાશયનો લોચો પાછો ખોસ્યો અને ૦॥ કલાકમાં બાઈ મરી ગઇ ।

બીજા એક દાખલામાં કણબીની ૧૫ વરસની છોકરીને પ્રથમ સુવાવડ આવવાની હતી તે ગોંડલથી થોડા માઇલ છેટે ગામડામાં રહેતી. પેટમાં દુખાવો ઉપડે અને બેસી જાય તેનો સાસરો વગેરે ગોંડલ કામે ગયા ત્યારે છોકરીને પેટમાં થોડું થોડું દુખતું હતું તેથી પોતાને ગામ આવતા એક ડાક્ટરને તેડતા આવ્યા તે વખતે શીરો ખાઇ છોકરી ઓશરીમાં બેઠી ભરત ભરતી હતી. તેની સાસુયે કીધું કે હવે પેટમાં દુખતું નથી માટે ડાક્ટરનું કામ નથી ડાક્ટરે કીધું અરે હમણાં સુવાવડ આવી જાશે છોકરીને સુવરાવી હાથપગ ખાટલે બાંધી હથીયાર ખોસી સુવાવડ કરી છોકરું આવ્યું અને બાઈ ૦। કલાકમાં મરી ગઇ આ બેઇ કિસ્સા એકજ ડાક્ટરને હાથે બન્યા છે. જાણવામાં નહીં હોય તેવી કેટલી સ્ત્રીઓ આ ડાક્ટરના અને એના જેવા બીજા શીખાઉ ડાક્ટરના હથીયારની ભોગ થાતી હશે થઇ હશે? આ રીતે આખા હિંદુસ્થાનમાં કેટલી સગર્ભા સ્ત્રીઓ અણઘડ ડાક્ટરોના હાથે કમોતે મરતી હશે? ।

આ દાખલા એટલા માટે ટાંકયા છે કે ડાક્ટરોના આગ્રહથી સમય વિના ઉતાવળું થઇને પ્રસવ કરવાને રવેડે કોઇ ન ચડે અને શાંતિ ધિરજ રાખી કુદરતી રીતે પ્રસવ કરવાથી બાઇના જીવને જોખમ નથી એ સમજે. પ્રસવવેદના જેઓ પહેલવેલી જુવે છે તેઓ ગભરાઇ ઉતાવળા થઇ જાય છે અને ડાક્ટરોને ઘેર દોડે છે અને કેટલીક સુયાણી કે નર્સ પણ પોતાના બાંધેલા ડાક્ટરોની કમાણીમાં પોતાને કમીશનના પૈસા મળવાની લાલચે સુવાવડ સીધી હોય તો પણ ઘરનાને બીવરાવી ડાક્ટરને તેડવા દોરે છે ।

બાળક નાળયે છે કે કેમ તે જોવું પછી ચોળી નીચે ઉતારવું બન્ને ચણોઠી ભાર ચોખી કસ્તુરી દુધમાં ઘોળી ૦। પા કલાકે પાવી બહુ અસુખ થાય ત્રેણ ટાઢો પડી જાય તો થોડું મદ્ય પાઇ ટેકામાં રાખવી અને ધિરજથી સુવાવડ થાવા દેવી ।

सुवारोग तथा तेने अंगे थतां दरदो।

क्लेशाद्विषमाजीर्णाद्विषमात्खाद्यादयोग्यचर्यातः ॥
उचितोपचारदोषात् कुपितैर्दोषैर्भवंति विविधरुजः ॥
शोथातिसारशूलज्वरतंद्रानाह वातकफकोपाः ॥
बलहीनतांगमर्दः कासो गुरुगात्रताथ मुखशोषः ॥
रोगाश्च सूतिकाया विषमा बहुकालकष्टदातारः ॥
क्षयसंग्रहणीश्वासा एभ्यो रोगेभ्य एव जायंते ॥

सूतिकाज्वर—कोइपण जातना दाहमांथी सोजामांथी के बीजां दरदमांथी आ ताव लागु पडी जाय छे. वखते ४-८ दिवसमां उतरी जाय छे के लांबो वखत लागु रहे छे सुवावड पछी २४-४८ कलाकमां के वधु ओछे समये ताव लागु पडे छे. सुवावड पछी भुख लागे अने काचा दिवसमां भारे पदार्थ वधु पडतो खवाय अने कोठो बगडे तो पण ताव लागु पडे छे. प्रथम टाढ वाइ परसेवो वळे के न वळे, माथुं दुखे छातीमां मुंझवण मन खिन्न उलटी शरीरे रुक्षता झाडो कबज वगेरे चिन्ह जणाय. ताव चडतां वखते पेटमां गर्भाशयमां के आजुबाजु दुखावो थाय छे पेट फुले छे अने तेमां बेहद दुखावो थाय छे जीभ सुकाय छे जीभपर छारी वळे छे मळ बंध थाय अथवा काळा पडतो फीण जेवो दुर्गंधी निकळे छे, तरस घणी लागे छे अने जे पीये ते उलटी वाटे निकळी जाय छे. आ ताव भयंकर रुप पकडे तो थोडा कलाकमां स्त्री मरण पामे छे अने लांबो वखत चाले तो धिमे धिमे आराम थाय छे अथवा तो आ तावमांथी क्षय जेवी स्थिति थइ आवे छे ए सिवाय झाडा शूळ वानी पीडा सांधानो दुखावो माथामां फेर चक्कर रक्तस्राव गुह्यभागमां शरीरे के चोजे सोजा, कमळो पांडु दाह कब जीयत उधरस वगेरे सुवावडानां बधां दरदोमां नीचेनां औषधो अपाय छे।

सुवावडीनां बधां दरद उपर वपरातां औषधो।

बत्रीसु-काटलुं—बावळनो गुंद तो. १० टोपरुं तो. १०, बदामनां मींज पिस्तां सुंठ प्रत्येक तोला ५ पांच, बळबीज तो २, मेथी चिमेड खसखस वरियाळी सुवादाणा गोखरु काळोमुशळी वापुंभां धाणा पखरो अशेळियानां बी लींडीपिपर सफेदमुशळी कौचाबीज काळांमरी प्रत्येक तोलो १ एक, जावंत्री पिपरीमूळ तज जायफळ शतावरी नागकेसर तमालपत्र वावडींग कुलींजन जीरुं हळदर प्रत्येक तोलो ०॥ अर्धो. घउंनो लोट तो. २२ गोळ तो. ८८ घी तो ८८ ए प्रमाणे बधी वस्तुओ लइ गुंदने घीमां तळी लेवो पछी लोटने घीमां शेकी गोळ घीनो पाक करी तेमां टोपरुं बदाम अने पिस्तांनु खमण करो पाक तैयार थाय एटले नाखवुं अने वसाणां खांडी तेनी कोटी घीमां करवी पण बहु बळी न जाय मात्र जरा ताप देखाडवो अने पछी पाकमां नाखी मेळववुं. दीपन पाचन वसाणां जुदां करीने कोटी करवी. तज तमाल पलचि जायफळ जावंत्री नागकेसर ए बधां जुदां खांडी पाक तैयार थाय एटले उपर छांटवां अने खसखस पण उपर छांटवां. आ काटलुं काठीआवाडमां अने ज्यां ज्यां कच्छी काठीआवाडी वसेछे त्यां प्रसिद्ध छे।

सूतिकारोगांतक रस—पारद गंधक अभ्रकभस्म ताम्रभस्म लोहभस्म सुंठ पिपर मरी बळदाणा अशेळियानां बी कलोजी जीरूं शोकेलाधाणा हरडे सुवादाणा अजमा प्रत्येक तोला ५ पांच साथे मेळवी देवदार्वादि क्वाथनी ३ भावना अने ब्राह्मीनी १ भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुकी राखवी. जुदां जुदां दरोमां २ थी ४ रति अनुपानथी आपवुं. सुवावडीना ताव झाडा मरडा संग्रहणी हरस अजीर्ण उलटी क्षय उधरस छातीनां दरद पांडु रक्तस्राव वगेरेमां वापरवो।

सूतिकाविनोद रस—पारद गंधक रससिंदूर अभ्रकभस्म लोहभस्म ताम्रभस्म प्रत्येक तोला १० दश, सुंठ पिपर मरी पिपरीमूळ सिंघालुण जायफळ जावंत्री तज लविंग हळदर वज अतिविष सुवादाणा अशेळियानां बी प्रत्येक तो. ४ चार साथे मेळवी देवदार्वादि क्वाथनी ३ भावना अने नगोडना रसनी १ भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुकी राखवी. मात्रा २ थी ४ रति सुवावडीना ताव झाडा संग्रहणी उलटी मोळ आफरो अजीर्ण क्षय छातीनां दरद वगेरे रोगमां उत्तम फायदो करे छे।

महाप्रतापलंकेश्वर रस—रससिंदूर तो. १०, ताम्रभस्म पारद गंधक शिलाजीत माक्षिकभस्म प्रत्येक तो. ५ पांच, अभ्रकभस्म लोहभस्म सुंठ पिपर मरी पिपरीमूळ शंखभस्म शुक्तिभस्म प्रत्येक तो. ८ आठ तथा अडाया छाणानी भस्म तो. २० लइ बधां साथे मेळवी देवदार्वादि क्वाथनी २ भावना दइ सुकावी भुको राखवो. मात्रा २ थी ४ रति मधमां चडाडी उपर देवदार्वादि क्वाथ पावो सुवावडीनां बधा दरदमां अपाय।

महासूतिकावल्लभ रस—पारद गंधक माक्षिकभस्म अभ्रकभस्म रौप्यभस्म सुवर्णभस्मलाल हरताळभस्म भीमसेनीकपूर अफिण जायफळ जावंत्री सम भागे लइ मोथ बळदाणाना छोडनुं पंचांग शेमळानां मूळ प्रत्येकनी अकेक भावना दइ छाये सुकावी भीमसेनीकपूर पछीथी नाखी घुंटी राखवुं. मात्रा २ थी ३ रति पाणी साथे अथवा मधमां चटाडवी. झाडा मरडा मंदाग्नि दुर्बळता वायु आफरो नबळाइ क्षय उधरस हृदयरोग तथा बीजां बधां सुवावडीनां दरदोमां उत्तम छे।

सूतकेश्वर रस—सुवर्णभस्म ताम्रभस्म अभ्रकभस्म शुद्धपारद वछनाग गंधक टंकण सुंठ पिपर मरी कनकबीज तज तमाल पलचि नागकेसर शंखभस्म बीलांनो गरभ कचुरो बधां समभागे लइ भांगराना रसमां १ दिवस घुटी छाये सुकवी भुको अथवा चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा २ रति मध घीमां आपवी. सुवावडीना बधा रोगोमां उत्तम छे ते सिवाय अम्लपित्त उलटी शूळ गुल्म खांसी संग्रहणी झाडा श्वास हेडकी उदावर्त वायु छातीना रोग वगेरे दरदमां पण उत्तम काम करे छे।

सूतिकाभरण रस—सुवर्णभस्म रौप्यभस्म प्रवाळभस्म शुद्धपारद गंधक अभ्रकभस्म हरताळभस्म मनशिलभस्म सुंठ पिपर मरी नगोडनां बी बधां सरखे भागे लइ आकडाना दुधनी चित्रामा मूळना उकाळानो अरडुसीना रसनी अकेक

भावना द्द मूसमां पेक करी वालुका यंत्रमां ४ प्रहर पकाववुं. सुवावडीना बधा दरदमां ०॥ रति दरद प्रमाणेना अनुपान साथे आपवाथी बधां दरद मटे ते सिवाय धनुर्वा आंचको त्रिदोष रोग वगेरे मटे छे ।

सुवावडीना बधा दरदमां आपवाना औषधोना योग

योग १—अभ्रकभस्म सहस्त्रपुटी महालक्ष्मीनारायण सुवर्णवसंत मालती मुक्ताभस्म महा प्रतापलंकेश्वर कस्तुरी दरेक तोलो ०। साथे घुंटी सरखे भागे ४२ पडीकां करी बे वखत जुना गोळ साथे अथवा घी साथे चटाडवुं देवदार्वादि क्वाथ पावो राते सुती वखते संशमनी नं. ३, १२ गोळी पाणी साथे देवी ।

योग २—वसंतकुसुमाकर सुवर्ण पर्पटी सूतशेखर दरेक तोलो ०॥, सुवर्ण माक्षिक भस्म सुवर्णभस्म कासीसभस्म लाल दरेक तोलो ०।, कलोंजी जीरु तोलो १ साथे घुंटी ४८ पडीका करवा सवार सांज अकेक घीमां चटाडवां राते सुती वखते १ आनी भार आरोग्य वर्धनी पाणी साथे आपवी ।

बत्रीसुं—कांटाळांमायां हीमजीहरडे वापुंभा मरवी साथर नागकेसर काळी घराख सागफळ हरडे गुंद दरेक तोला ५ पांच, हाउबेर लींबोळीनां मींज वाणवटीवेलुं कायाथंभ बळदाणा तज तमालपत्र चणकबाब जायफळ लविंग पलचि वांसकपूर दरेक तो. २॥ अढी, मांगफळ जावंत्री पानडी वायसुर कागदीबदामनां मींज दरेक तोलो १। सवा, लोहभस्म तोलो १, भीमसेनीकपूर वाल ४, साकर शेर १ शतावरी शेर १ बधां साथे खांडी चाळी तेमां मधनो करमो दइ फुलेल तेलनो पट देवो उपर प्रमाणे पक जुना हस्तलिखित चोपडामां बत्रीसानो पाठ छे. आ बत्रीसुं पमने पम अथवा घी गोळनो पाक मुकी चोसलां पाडी सुवावडी स्त्रीने १२ दिवस पछी खवराववामां आवे छे । (जुनो वहीमांथी)

बत्रीसुं—चणकबाब समुद्रशोष धमासो लोह कंकोल खेरसार मुशळी तगर मस्तकी अगर सुंठ गजपिपर वावडींग वरधारो जावंत्री अकलकरो केसर खुरासाणीअजमो काळुंजीरुं पाषाणभेद तपखोर सुखड मरी जीरुं अफिण प्रत्येक टांक १ पक, चवक चितरो आसोंध दारुहळदर लविंग जायफळ धाणा हिंगळो सोनमुखी प्रत्येक टांक २ बे, नागकेसर पलचि सुंठ पिपर मरी हरडे प्रत्येक टांक २॥ अढी, तज तमाल प्रत्येक टांक ५ पांच, खापरियुं टांक ०॥, सुंठ शेर १, दुध शेर २॥ खांड शेर २॥ घी शेर ०॥। (जुनो वहीमांथी

सौभाग्यसुंठी अवलेह—सुंठ तो ८० नो भुको करी १० रतल दुधमां मावो करवो पछी ते मावाने ४ रतल घीमां सांतळवो (जरा शेकवो) पछी २ रतल बावळनो के गोरडनो गुंद अधकचरो करी घीमां तळी खांडी नाखवो पछी टोपरुं सुकुं तो. ४०, सुवादाणा तो. ३२, पिपर पिपरीमूळ वरियाळी पलचि तज लविंग मोथ शंखभस्म रससिंदूर अभ्रकभस्म कचुरो नागकेसर शतावरी जायफळ जावंत्री जीरुं शाजीरुं अजमोद अजमा शींगोडां हरडे आसोंध शेकेलाधाणा मुशळी कपूर घसेलीसुखड प्रत्येक तो. ६ छ, चारोली तो. २० पिस्तां तो. २० आमळां तो. २० बधां साथे खांडी पछी साकर रतल २० नी चासणी करी तेमां उपरनां

बधां वसाणां नाखी पकावबुं. चाटवा जेवुं थाय पटले उतारी ओइप तेटलुं मध (२ थी ४ शेर) मेळवी बरणीमां भरी राखवुं. मात्रा २ थी ४ तोला चटाडवुं. आहार विहार प्रकृतिने माफक आवे तेवो आपवो. सुवावडीना बधा रोग मटी शक्ति आवे घी गोळनो पाक मुकी चोसला पाडीने पण खवाय छे ।

काटलुं-सुंठ-पाक—नीचे प्रमाणे करीने खवरावबुं गुंद शेर १ ने घीमां तळी लेवो पछी घउंनो लोट शेर २ ने घीमां शेकी घी शेर २॥ गोळ शेर २ नो पाक मुकी तेमां करी राखेलो नीचेनो भुको नाखी हलावी चोसलां ढाळवां. खांडेलुं टोपरुं तो. ५० सुवादाणा तो. २० आसोंध तो. ४ शतावरी तो. २॥ तज तो. १ पलचि तो. १ वावडींग तो. ४ सुंठ तो. १० मरी तो. ४ पिपर तो. २॥ पिपरीमूळ तो. १॥ नागकेसर तो. १ जीरुं तो. २ अजमा तो. २ धाणा तो. २ अतिविषनी कळी तो. २॥ ।

देवदार्वादि क्वाथ—तेलीयो देवदार वज कुष्ट लींडीपिपर सुंठ कायफळ नागरमोथ करियातुं धाणा मोटीहरडे गजपिपर धमासो गोखरु अतिविष गळो काकडाशींगी शाजीरुं कौचां मोरींगणीना मूळ बधां सरखे भागे लइ खांडी जाडी चारळणीमां चाळी हमेशां ०॥ थी १ तोला भुकामां ३० तोला पाणी मुकी उकाळवुं १५ तोला रहे पटले गाळी लइ दिवसमां २ थी ३ वखत पावुं ।

लविंगादि क्वाथ—लविंग मोरींगणी बोरडीना पान भारंगी समुद्रफळ इन्द्रजव करियातु गजपिपर कचुरो त्रायमाण खुरासाणीवज देवदार कडाछाल सुंठ पुष्करमूळ कडु धमासो खडब्राह्मी मोथ काकडासींगी चित्रो रास्ना पिपर पिपरीमूळ अरडुसो दशमूळ दरेक टां. २ बे लइ सर्वेने अधकचरा करी तेनी पडिकी ७ करवी. पाणी शेर २॥ मां १ पडिकी नाखी उकाळवुं पाशेर पाणी रहे पटले उतारी मध नाखी पावुं एम ७ दिवस पावाथी बधा सुवारोग भ्रम वायु मटे ।

सुवावडीना सामान्य रोगना उपाय

अपरापातन धूप—ओर न पडती होय तो कडवीतुंबडीनां बी सरपनी कांचळी गरमाळानो गोळ समभागे लइ मेळवी तेने सरसिया तेलनो करमो दइ तेनी धुंवाडी गुह्यभागमां देवी ।

अपरापातन योग—कळगारी (धोळो वछनाग) पाणीमां वाटी हाथे पगे चोपडवाथी ओर पडे ।

योनिशूळ—कलोंजीजीरुं लींडीपिपर संचळ समभागे खांडी ०। थी ०॥ तोलो पीवरावबुं, हिंग्वादि तेलना पोता गुह्यभागमां राखवां ।

ताव—देवदार्वादि क्वाथ के महासुदर्शननो क्वाथ पावो ।

झाडा-मरडा—कडाछाल पिपर्यनी छाल कुणीवडवाइ सुंठ समभागे उकाळो करी मध नाखी पावो अथवा चणियाबोरनो बोरडोनां मूळ साथे चोखा रांधी खवराववा कर्पुरसुंदरी गोळी २ थी ६ पाणीमां देवी ।

उधरस—बेठी उभी भोंरींगणीनां मूळ मोथ सुंठ पिपर धाणा धमासो सम भागे खांडी १ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो लवंगादि गोळी देवी।

शूळ—देवदार्वादि क्वाथ पावो. कोइपण ठेकाणे निकळतुं शूळ मटे ।

वानी पीडा-प्रसव थया पछीनो पीडा—देवदार्वादि क्वाथ महायोगराज गुगळ साथे पावो ।

पांडु—देवदार्वादि क्वाथ पावो अथवा कडु अतिविष गळो कायफळ समभागे खांडी १ तोलानो उकाळो करी पावो अथवा आरोग्यवर्धनी ३ थी ६ गोळी आपवी।

कबजीयत- देवदार्वादि क्वाथ पावो अथवा आरोग्यवर्धनी गोळी २ थी ४ पाणी साथे आपवी अथवा गळो कायफळ हरडे लींडीपिपर समभागे खांडी ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण पाणी साथे देवुं ।

क्षयरोग-छातीनां दरद—सितोपलादि चूर्ण तोला ५ तोलो श्वासकुठार तोलो ०॥ अने सुवर्णवसंतमालती १ तोलो साथे वाटी ३२ पडीकां करवां हमेशां १ पडीकु नीचेना उकाळा साथे देवुं. अरडुसी आदु जीरुं सुवादाणा पिपर समभागे खांडी ०॥ तोलानो उकाळो करवो ।

रक्तमिश्रित स्राव—कडाछाल वडनी छाल उंबराणी छाल अशोकानां पान पिपरनी छाल रिसामणी समभागे खांडी १ थी २ तोला भुकानो उकाळो करी मध नाखी पावो अथवा कासीसभस्म लाल १ रति मधमां चटाडवी ।

गर्भाशय दाह—देवदार्वादि क्वाथ मध के गोळ नाखी पावो अथवा गळो सुंठ अशोळिये। अरणीनां मूळ उभीभोंरींगणीनां मूळ मोथ हरडे परडानुं मूळ देवदार समभागे खांडवां १ थी २ तोला भुकानो उकाळो करी मध नाखी पावो अथवा अशोकारिष्ट पावो अथवा सुतशेखर २ थी ४ रति देवो ।

सोजा --प्रथम ताव आवी बने पग के आंगमां थाय छे त्यारे आंग साथळ पींडी घुंटी खोळण वगेरे ठेकाणे दुखावो थइ पग सोजे छे त्यारे धावण अटके छे सुतिकाद्मय वध थाय उंघ नहीजाय चीकणो परसेवो वळे १०-१५ दिवसे जोर ओछुं थाय देवदार्वादि क्वाथ पावो अथवा देवदार कळथी मडु करियातु अतिविष हरडे मोथ समभागे लइ खांडी १ थी २ तोलानो उकाळो करी पावो अथवा आरोग्यवर्धनी तोला २ अभ्रकभस्म तोलो १ मुक्ताभस्म तोलो १ साथे वाटी ३० पडीकी करी हमेशां सवारे १ पडीकी मधमां चटाडवी ।

गांडपण—सुवावडमां बहु कष्ट थवाथी तथा बीजा अनेक कारणे गांडपण थाय छे सुतशेखर २ रति देवो, धमासो आसोंध शतावरी सुंठ पिपर मरी गळो अशोळियो पुष्करमूळ देवदार समभागे खांडी १ थी २ तोलानो उकाळो करी पावो सुवावडीनां उपर जणावेलां तथा बीजां दरदो उपर सूतिकाविनोद सूतिकान्तक महाप्रतापलंकेश्वर वगेरे रसो अनुपान भेदथी अपाय छे ।

सारवाणी चरक टां. १५ सारवाणीना मूळनो भुको टां. ५ खांड टां २० ए वधां वाटी १४ पडिकी करी मूळाना पानना रस साथे १ पडिकी हमेशां खवरावी उपर चोखा मग जमाडवा, खारुं खाटुं बंध करवुं १४ दिवसमां सुवारोग मटे ।

जननेंद्रिय रोग-योनिरोगाः

कारण—आहार विहारना अनियमितपणाने लीधे सगर्भावस्थामां प्रसव पछी २ महिना थया पहेलां पुरुषसंगथी, बहु तीखां बहु गरम पदार्थ खावाथी बहु चा पीवाथी बजारनी मिठाइओ के खांड साकरनां मिष्टान्न बहु खावानी टेवथी उपदंश प्रमेहवाळा पुरुषना संसर्गथी गर्भपात माटेना उग्र ओसडोनो उपयोग करवाथी एम अनेक कारणे स्त्रीयोने योनिरोग थाय छे ।

उदावर्ता वंध्या विप्लुता परिप्लुता वातला लोहितक्षरा प्रस्रंसिनी वामनी पुत्रघ्नी पित्तला अत्यानंदा कर्णिनी चरणा अतिचरणा षंढी अंडिनी महती सुचिवक्त्रा वगेरे योनिरोगो छे तेमां मुख्य मुख्य अहीं बताव्या छे ।

१ वातज जननेंद्रिय रोग

पीडा दुखावा साथे फीणवाळुं ऋतु आवे के ऋतु बिलकुल न आवे हमेशां पीडा थया करे शूळ निकळे स्पर्श खरसट होय संग वखते बहु पीडा थती होय तो सर्वस्त्रीगशांतका वटी ३ गोळी अष्टामृत पर्पटी रति १॥ साथे मेळवी २ पडिकां करी सवार सांज अकेक पडिकुं मधमां चटाडी उपर देवदार्वादि क्वाथ पावो. अथवा सवार सांज घोडाआसोंधनो भुको ०।थी ०॥ तोलो आपवो. अथवा कुष्ठ अशेळियाना पान नगोड पुष्करमूल हळदर देवदार सुंठ परडानां मूळ गोखरु गळो बधां समभागे खांडी १ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो ।

२ पित्तज जननेंद्रिय रोग

बळतरा थाय साथे लोही पडे मुश्केलीये प्रसव करी शके गर्भाधान घणे भागे थाय नहीं पाके वगेरे चिन्हो जणाय चंद्रप्रभा गोळी ३ अभ्रकभस्म १०० पुटी रति १॥ रौप्यभस्म रति १॥ कासीसभस्मलाल रती १ ३ भाग करी सवार बपोर सांज एक एक तोलो च्यवनप्राश अवलेह साथे चटाडवुं अथवा नीचेनो उकाळो पावो दारुहळदर रसवंती वडनी छाल अरडुसी मोथ करियातु जेठिमध हरडे समभागे खांडी २ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो ।

३ कफज जननेंद्रिय रोग

संगथी तृप्ति न थाय खजवाळ आवे संग [illegible] सोजो [illegible] गर्भ रहे नहीं [illegible] पाणी पडे शिथिलता जणाय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मूळ भांगरो आदु तुळसीनां पान देवदार [illegible] कडु हरडे बधां समभागे लइ खांडी १ तोलानो उकाळो पावो अथवा चंद्रप्रभा २ गोळी [illegible] पर्पटी रति २ लोहभस्म १०० पुटी रति २ साथे मेळवी २ भाग करी [illegible] चटाडी उपर उपलो उकाळो पावो ।

४ जननेंद्रिय कंड—जननेंद्रियमां चळ खजवाळ

[illegible] तेल—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इन्द्रावणां [illegible] [illegible] आनलां ओसडियामां पकवेल तेल [illegible] [illegible]

गुह्यमां थता अंकुर योनिकंद योनिहरस योनिक्लेद स्मरोन्माद दाह वगेरेने मटाडे छे. गुह्यरोगेश्वरी गोळी ४-६ महामंजीष्ठादि क्वाथ साथे आपवी अथवा सर्वस्त्रीगदांतका वटी तोलो १ सुवर्णपर्पटी तोलो ०॥ साथे वाटी २४ पडिकि करी २ वखत घीमां चटाडवी, पाणी साथे आपवी महालाक्षादि तेल चोपडवुं ।

५ जननेंद्रिय दाह–जननेंद्रियमां बळतरा

सुधासार तेल—भो बळदाणानुं पंचांग हनुमानवेलो भांगरो धावडो पारिभद्र कमळफुल लाख आमळां धाणा मोथ शतावरी आसोंध रसवंति मजिठ धमासो कपूर पलचि लविंग पटलां ओसडियामां तेल पकावबुं. आ तेल पावामां तथा चोपडवामां वपराय छे. गुह्यनां बधां पित्त–गरमी प्रधान दरदो मटे छे. योग:–गुह्यरोगेश्वरी तोलो १ प्रमदानंद रस सुवर्णवसंतमालती मुक्तापिष्टि दरेक तोलो ०॥ अर्धो, साथे वाटी ४२ पडिकि करी बे वखत घी के माखणमां चटाडवी, शतावरीना उकाळा साथे आपवो ।

६ जननेंद्रिय शूळ–सबाका

हयमारादि तेल चोपडवुं तेमां रुनुं पोतुं भींजवी गुह्यभागमां रखाववुं. जटामांसी बळदाणा पलचि आसोंध चणोठिनुं मूळ कुष्ठ परडानां मूळ वावडींग कुष्ठ समभागे १ तोलानो उकाळो करी पावो. गुह्यरोगेश्वरी गुटिका ३ थी ४ पाणी साथे के आ उकाळा साथे आपवी. अघेडानां बे पान गुह्यभागमां राखवां अथवा साटोडीनो रस पिचकारीथी गुह्यभागमां दाखल करवो. अथवा महानारायण तेलमां रुनी वाट बोळी गुह्यभागमां मुकवी तो तुरत शूळ मटे ।

पिचुमंद सोगठी—लींबोळीना मींज अने परडीना मींज समभागे वाटी लींमडाना पानना रसमां घुंटी वाल वालनी लंबगोळ गोळी करवी गुह्यभागमां राखवाथी योनिशूळ सबाका मटे ।

७ जननेंद्रिय हर्ष–जननेंद्रियमां स्पर्श थातां बळे दुखे पीडा थाय

गुह्यरोगेश्वरी गोळी २ थी ४ पाणी साथे देवी उपर आसोंध दारुहळदर अरडुसी मोथ करीयातु बीलीनां मूळ मजीठ जीरुं समभागे खांडी एक तोलानो उकाळो करी पावो. अथवा चंद्रप्रभा गोळी ३ थी ४ पाणी साथे आपवी. हयमारादि के हिमसागर तेल चोपडवु ।

८ जननेंद्रिय कंद तथा जननेंद्रिय हरस

हयमारादि तेल .महाकासीसादि तेल के जात्यादि तेल चोपडवुं. प्रमदांतक भैरव रस २ थी ३ रती पाणी साथे अथवा महामंजीष्ठादि क्वाथ साथे आपवो. आरोग्यवर्धनी ३ थी ६ गोळी महामंजीष्ठादि क्वाथ साथे आपवी. अथवा केसरादि गोळो ३ थी ४ कांचनारना उकाळा साथे आपवी अथवा एकली कांचनारनी छालनो उकाळो पावो के कांचनार गुगळनी ४ थी ६ गोळी पाणी साथे आपवी।

९ जननेंद्रिय भ्रंश–जननेंद्रियनुं बहार आववुं

वडनी छाल पिपरनां झाडनी छाल मोंआंबली लीमडानी छाल मजीठ दारुहळदर मोथ अने लीमडाना पान समभागे लइ ५ थी १० तोला भूकानो उकाळो करी ते वडे घोवुं. हिमसागर तेल चोपडवुं. कांचनार गुगळ लक्ष्मणा लोह स्फटिकमणी पिष्टि अभ्रकभस्म सहस्रपुटी दरेक तोलो १ एक, साथे मेळवी ६४ भाग करी सवार सांज घीमां चटाडवुं उपर कडाछाल मजीठ लीमडानी अंतरछाल बावळना पडीया समभागे लइ ०॥ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो. तथा आ उकाळाथी घोवुं. कारेलीनुं मूळ पाणीमां वाटी चोपडवुं. कांटाळा मार्या तोलो ०॥ भांगना बी तोलो ०। भीमसेनी कपुर मासो १ साथे वाटी मलमलना कपडामां पोटली करी गुह्यमां मुकी जरा उचकवी तो चडी जाय ।

१० जननेंद्रिय शोथ–जननेंद्रिय सोजो

हयमारादि तेल महानारायण तेल के प्रसारणी तेलमानुं कोइ चोपडवुं चोळवुं रुनु पोतुं भींजवी पेराववुं. २ थी ४ गोळी केसरादिनी घीमा गळाववी. कांचनार गुगळ ३ थी ६ गोळी पाणी साथे आपती अथवा गुह्यरोगेश्वरी वटी ३ थी ६ गोळी पाणी साथे आपवी. लीमडाना पान मेंदी अने आसोपालवनी छाल त्रणेनो उकाळो करी पावो तथा ते उकाळाथी घोवरावबुं ।

जननेंद्रिय शोथ हरी वटी––पळीयो तोला ४ ने गुलाबजळमां के बरीयाळीना पाणीमां ३ दिवस भींजवी राखी पछी तेमां रुमीमस्तकी तो. ०॥ रेवंचानो शीरो तो. १ नसोतर सफेद तो. ०॥ खांडी मीठी बदामना तेलनो करमो दइ पाणीमां गोळी चणोठी भारनी वाळवी २ थी ४ गोळी उना पाणीमां खावी ।

११ जननेंद्रिय स्राव

महालाक्षादि तेल चोपडवुं पोतुं मुकाववुं लीमडाना पान आसोपालवनी छाल वडनी छाल बावळना पडीया बांवळना पान पना नवशेका उकाळाथी रोज बे वखत घोवरावबुं तथा ए उकाळो पावो प्रदरांतक लोह कासीसभस्मलाल लक्ष्मणा लोह प्रमदानंद दरेक तोलो १ एक, वाटी ४८ भाग करी २ वखत मधमां चटाडवो दाडमनी छालने उकाळी सफेद लुगडुं भींजवी छाये सुकाववुं पछी तेमांथी कटको कापी गुह्यभागमां राखवाथी पाणी पडतां अटके स्राव मटे अथवा लीमडानी छाल हीराकशी दाडमनी छाल मायां हरडेदळ बेडांदळ दरेक पैसा ४ चार भार लइ उकाळी गज १ लुगडु लइ भींजावी छाये सुकाववुं एम ३ वखत पलाळी सुकावी तेमांथी कटको गुह्यभागमां राखवाथी स्राव पाणी निकळतां बंध थाय ।

१२ जननेंद्रिय व्रण

हयमारादि तेल लींबोळीनुं तेल जात्यादि तेल के जात्यादि घृत चोपडवुं रुनु पोतुं भींजावी मुकाववुं. केसरादि गोळी २ थी ४ घीमां गळावी उपर महामंजीष्ठादि क्वाथ पावो तथा लीमडाना पान आसोपालवना कुणा पान बावळना पान दारुहळदर पना उकाळाथी घोवरावबुं ।

१३ जननेंद्रिय शैथिल्य

प्रसव वखते बहु कष्टाया पछी घणी मुश्केलीथी बाळक आववाथी, जननेंद्रिय चिरावाथी, गर्भ विकृत रीते बहार आववाथी के गर्भ आडो थातां ओपरेशन वगेरे क्रियाथी बाळकने बहार काढवानी जरुर पडवाथी एम अनेक कारणे ते भागना स्नायुओ शिथिल थइ एक प्रकारनो स्राव थया करे छे तेथी घणी वखत स्त्री गर्भ धारण करवाने लायक रहेती नथी एवा अनेक कारणोथी शिथिलता थाय छे नीचेना प्रयोगो उपयोगमां लेवाथी संकोच थाय शिथिलता स्राव मटे।

प्र. १ घो मध अने सिंधालुण मेळवी गुह्यभागमां लेप करवो।

प्र. २ राइ धाणा जीरु गुगळ एकत्र करी धुणी आपवी।

प्र. ३ दाडमनां फुल छाल फळ पान मूळ तथा सरसव साथे समभागे वाटी जननेंद्रियमां चोपडवुं।

प्र. ४ गोरोचंदन अने मत्स्य पित्तने साथे वाटी डाबा हाथनी कनिष्ठिका (टचली) आंगळीवती स्त्रीने तिलक करी पति पासे जवुं।

प्र. ५ हळदर दारुहळदर कमळकेसर देवदार समभागे खांडी पाणीमां वाटी गुह्यभागमां चोपडवुं।

प्र. ६ धावडीना फुल हरडे बेडा आमळां जांबुनी छाल जेठीमध सम-भागे बारीक चूर्ण करी मध घीमां चोपडवुं।

प्र. ७ कमळना केसर अने कमळनुं फुल के पान समभागे वाटी पाणीमां गोळी वालना दाणा जेवडी करी पेरावर्वी।

प्र. ८ फुलावेली फटकडी लोदर एडवास हीराकसी मायां समभागे करी संध्या समये गुह्यभागमां राखवुं।

प्र. ९ आमळांनु चुरण कारेलीना मूळ ए बे वाना पाणीमां वाटी लेप करवो। ॥ गुह्ये भवति संकोचः कठिनं कन्यकासमं ॥

प्र. १० मरेठी मध फटकडी कपुर ए वधा समभागे लइ पाणी साथे लेप करवो।

प्र ११ काळी तुंबडीनां पत्र लोदर बेइ वाटी गोळी करी राखवुं।

प्र. १२ मायां फुलावेली फटकडी धावडी फुल समभागे वाटी चणीया जेवडी गोळी करी गुह्यभागमां राखवी।

प्र. १३ मायां त्रिफळा धावडीफुल जेठीमधमूळ समभागे खांडी लेप करवो।

प्र. १४ एलचीना बीने पाणीमां वाटी गुह्यभागे चोपडवुं. शरपंखा मूळ पाणीमां घसी गुह्यभागमां चोपडवाथी पडतां पाणी अटके।

प्र. १४ कारेलीना मूळ घसी ३ दिवस चोपडवा।

प्र. १५ त्रिफळाना पाणीमां कपडु भींजावी सुकाववुं एम ८ पट देवा पछी फटकडीना पाणीना ७ पट देवा तेनी वाट १ इंचनी करी गुह्यभागमां राखवाथी पाणी पडतां अटके उपरना प्रयोगोथी कठिन संकोच थाय. स्राव–धोळां पीळां रातां पाणी पडतां अटके।

प्र. १६ भांग शोधेली ३ रतिभार रुना पोलमां मुकी पेरावथी. कांटाळामायां तो.१। मां कपुर तोलो ०)॥ मेळवी मधमां कालवी चोपडवुं. मेंदी आसोंध शेमळानो गुंद समभागे उकाळो करी धोवुं. कमळना फुल अने पानने छाये सुकावी भुको करी ते भुको तोला ५ मां घी तोलो १ नाखी दुधमां वाल जेवडो गोळी वाळी पेरावथी।

संकोचनी सोगठी—शुद्ध भांग तोलो १। मायांनो भुको तोला ५ कपुर तोलो १ मेंदी सुगंधी तोलो १॥ आसोंध तोला २॥ शेमळानो गुंद तोलो १॥ जायफळ तोला २ दारुहळदर तोला २ साथे मेळवी वालना दाणा जेवडी चपटी गोळी वाळी रुना पोलमां गोळी मुकी गुह्यद्वारमां पहेरावथी संकुचित थाय. अथवा (१) कांटाळामायाने खांडी कपडे चाळी शिलारसमां चणोया बोर जेवडी गोळी वाळी गुह्यभागमां राखवाथी शेथिल्य मटी तंग थाय. अथवा (२) मोटा मायां नाना मायां धावडीना फुल फटकडी सरखे वजने लइ खांडी कपडे चाळी शिलारसमां गोळी चणोया बोर जेवडी वाळवी ते गुह्यभागमां राखवी. अथवा (३) घोडी वियाणा पछी वछेरुं धाव्या पहेलां तेनुं खोरुं लइ पमां लुगडु भींजावी छाये सुकावबुं पछी तेमांथी लुगडानो कटको गुह्यमां मुकवो तो तंग थाय शिथिलता मटे।

१४ स्त्रीयोना सर्व गुह्यरोगना उपचार

गुह्यरोगेश्वरी वटी—पारद गंधक रससिंदुर प्रत्येक तोला ५ पांच टंकण दारुहळदर साकर हळदर बाबची हरडे वंशलोचन आमळां लवींग बहुफळी दरभनुं मूळ गोखरु गळो मजीठ लोद्र सुंठ पिपर मरी कासीस भस्म लाल पिपरीमूळ वायवरणो कांचनार अतिविष वावडिंग सिंघालुण शिलारस प्रत्येक तोला अढी साथे मेळवी देवदार्वादि क्वाथनी १ भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी मात्रा ३ थी ६ गोळी पाणी साथे देवी उपर कहेला तमाम योनिरोग उपर उत्तम काम करे छे।

फळघृत—मजीठ जेठीमध कुष्ट त्रिफळा साकर बळदाणामूळ पुत्रजीवकनां पान लक्ष्मणामूळ अजमोद हळदर दारुहळदर घउंलो कडु कमळपुष्प कमळकंद द्राक्ष विदारीकंद केळकंद प्रत्येक तोला ५ पांच, शतावरी तोला १० अश्वगंधा तोला २५ वाछडु जीवतुं होय तेवी एकरंगी गायनुं घी शेर १० शतावरी अने गायनुं दुध प्रत्येक शेर ३२ लइ अडाया छाणाने धीमे तापे पकावी घी करवुं आ घीना सेवनथी स्त्रीना बधा गुह्यरोग मटे छे गमे ते कारणे गर्भ पडी जातो होय तो स्थिर थाय छे. मृत बाळक अवतरतुं होय जन्मीने थोडा वखतमां मरी जातु होय बाळक अल्पायुषी थतां होय तेवी स्त्रीये आ घृत साथे लक्ष्मणालोह तथा प्रमदानंद रस छ महीना आनु सेवन करवुं तो बधी जातना योनिविकार गर्भाशयना दोष ऋतुदोष मटे छे. पुरुषो सेवन करे तो बधा वीर्यदोष मटे छे मात्रा १ थी २ तोला. पुरुषे महालक्ष्मीविलास वसंतकुसुमाकर साथे सेववाथी वधु लाभ थाय. उपरनां वसाणां साथे अष्टवर्ग वगेरे मेळवी पकाववाथी राजवंशी फळघृत थाय छे।

१५ वंध्यापणुं—वंध्यात्वं

स्त्रीने संतान नही थवानां कारणो तथा तेना उपायो

१ स्त्रीने जननेंद्रियमां जंतुओ पडया होय अने माथु सुनी खोपरीनुं होय तो संग वखते माथु दुखे तेमां कपासना फुल मुरगीनो पित्तो घुंटी स्त्री बहार बेसे त्यारे १ ले दिवसेथी रुमां वींटी गुह्यभागमां ३ दिवस मुकवुं शिवलिंगीनां बी ७ वाटी मुक्तापिष्टि रति २ साथे मधमां चटाडवा तो संतान थाय ।

२ स्त्रीने जननेंद्रियमां रतवा होय तो संग पछी गळुं तथा मोढुं दुखे तेमां तलनुं तेल मजीठनो भुको जेठीमध मूळने वाटी ककडावी ए तेलनां पोतां स्त्री बहार बेसे त्यारे ३ दिवस मुकवां, मुक्तापिष्टि रति १॥ लक्ष्मणालोह रति १॥ गायना घी साथे चटाडवुं तो संतान थाय ।

३ गुह्यभागमां चरबी चडी गइ होय तो संग वखते स्त्रीनुं ह्रदयुं दुखे उजळु जीरुं शिवलिंगनां बी शतावरी विदारीकंद समभागे पकठां खरी बहार बेसे त्यारे गुह्यभागमां राखवुं तथा प्रमदांतक भैरव रति १॥ सर्वस्त्रीगदांतका वटी २ गोळी आरोग्यवर्धनी ३ गोळी साथे मेळवी पाणी साथे आपवुं तो संतान थाय ।

४ गुह्यभागमां जंतुओ पडया होय तो संग वखते माथु तथा कोणी कांडा दुखे तेमां साजीखार हळदर बेडां कणेरना बी गुलाबजळ बधांने उकाळवां ते उकाळामां रु भींजावी तेना पर कपुरनुं तेल नाखी गुह्यभागमां राखवुं तथा महा गंधक रति ३ शिलाजीत वाल २ संशमनी गोळी ६ साथे मेळवी आपवुं तो संतान थाय ।

५ गुह्यभागमां शरदो थइ गइ होय तो संग पछी स्त्रीने पगनी जांगोमां खजवाळ आवे तेमां मोगरीनां बी आसोंदरीनां बी तथा लिंडीपिपर समभागे खांडी कपडानी पोटली करी गुह्यभागमां नहाया पछी राखवी तथा चोसठपोरी पिपर सुवर्णवसंतमालती अभ्रकभस्म सहस्त्रपुटी दरेक रति १॥ डोढ मेळवी चटाडवुं तो संतान थाय ।

६ गुह्यभागमां वधु गरमी होय तो संग वखते अंदर दुखावो थाय मरी बेहेडां जेठीमधमूळ मजीठ बधानो उकाळो करी रु भींजवी गुह्यभागमां नहाया पछी पोतां मुकवां तथा प्रवाल चंद्रपुटी रति २ मुक्तापिष्टि रति १॥ जीवितप्रदा गोळी ३ साथे मेळवी गायनुं घी तोलो १ साथे चटाडवाथी संतान थाय ।

७ भुतप्रेतपळितना वळगाडने लइ संतान थतुं न होय तो शरीरमां थती पीडा बाबत पुछवामां आवतां जवाब आपे नहि तेमां माहेश्वर धूपनी धुणी आपवी लीमडाना पानमां हळदर उकाळी तेथी प्रक्षालन करवुं तथा नवार्णव मंत्रने अष्टगंधथी भोजपत्रपर लखी गुगळनो धूप दइ रुपानी मादळीमां नाखी स्त्रीने डाबे हाथे बांधवी मोतीनी पिष्टि प्रवाळ पिष्टि सुवर्णभस्म दरेक अकेक रति गायना घीमां चटाडवुं ।

संतान नहीं थवानां बीजां कारणो अने उपाय

१ संग पछी डोल धुजे तेने कमळ फरी गयुं छे एम जाणवुं तेमां पासियाना मींज १ भाग, मोरपिछ २ भाग उकाळी जननेंद्रिय ३ दिन धोवरावतुं तो आ दोष टळे गर्भ रहे ।

२ संग पछी कम्मर दुखे तो वायु वधतो जाणवो तेमां ४ थे दिवसे न्हाया छी तलना तेलमां हींग ककडावी ए तेलथी जननेंद्रिय धोवरावतुं तो गर्भ रहे ।

३ संग पछी पगनी पींडी दुखे तो कमळ उपर मांस वधतुं जाणवुं तेमां ळुं जोरुं हाथीनख वाटी सरसोया तेलमां ककडावी जननेंद्रिय ३ दिवस धोव-रावतुं तो गर्भ रहे ।

४ संग पछी हैयुं दुखे तो कमळ पर जंतु जाणवा तेमां खाकर हरडे डां पलाळी ३ दिवस जननेंद्रिय घोवरावतुं तो गर्भ रहे ।

५ संग पछो दाझ-दाह उपडे ते कमळ तपत कहेवाय तेमां लोही स्रवे धिर काळुं होय तेमां हरडे बेडां आमळां चण्या तरियाळी एनो उकाळो करी दिवस जननेंद्रिय घोयरावतुं गर्भ रहे ।

६ संग पछो शीत वळे शरीर टाढुं पडे तेमां तल मरीनो उकाळो करी दिवस जननेंद्रिय घोवरावतुं गर्भ रहे ।

७ संग पछी जीव मुंझाय बोली शके नहि तो ग्रह भूत प्रेत बाधा णवी तेमां कपुर केसर चंदन गोरोचंदनथी भोजपत्र पर नीचेनो तावीज लखी गळनो धूप दइ रुपानी मादरडीमां मुकी गळे के हाथे बांधवी हमेशां गुगळनो देवो तो दोष दूर थइ गर्भ रहे भोजपत्र पर लखवानो मंत्र नीचे प्रमाणे ।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते ॥

अथवा श्वेत भोरींगणीनुं मूळ चोखाना धोणमां वाटी पावुं तो ग्रह बाधा टी गर्भ रहे अथवा पुत्रप्रद रस सवार सांज बबे रति घीमां चटाडी उपर तावरीनो उकाळो पावो माहेश्वर धूपनी धुणी शरीरे अने गुह्यभागमां देवी ।

पुत्रप्रद रस—अभ्रकभस्म तोला ५ पुर्णचंद्रोदय षडगुण गंधक जारित १ लोहभस्म तो. ५ सुवर्णभस्म मुक्तापिष्टि रुपाना वरखनां पानां त्रिबंगभस्म ळी स्फाटिकपिष्टि शुद्ध शिलाजित एलचि चणकबाब प्रत्येक तोलो १ एक, दारीकंद तोला ५, लविंग तज केसर कस्तुरी प्रत्येक तोलो १ एक, शतावरी सोंध गळोसत्व अने नागकेसर प्रत्येक तोला २॥ अढो, शिवलींगोनां बी तोला दस, श्वेत भोरींगणी मूळ तोला ५ पांच, धोळा फुलना शरपंखाना मूळ बळ-ना मूळ पारस पिपळानां फळ जीरुं बीजोरानां बी दरेक तोलो १ एक, लइ तावरीना रसनी पुत्रजीवकनां रसनी अने ब्राह्मी रसनी अकेक भावना दइ छाये कावी घुंटी राखवुं. मात्रा २ थी ६ रति गायना घी साथे स्त्री पुरुषे बन्नेये लेवाथी ान थाय स्त्रीना गर्भाशयना बधा रोग मटे कस्तुरी केसर पाछळथी उमेरवुं ।

गर्भप्रदा वटी—अभ्रकभस्म तोला ५ मींढोळ तो. ४ काळुं नागकेसर शतावरी आसोंध मोरशिखानुं मूळ हनमान वेलो जेठीमधनां मूळ बळदाणानां मूळ प्रत्येक तोला ३ त्रण, साथे मेळवी जीवता वाछडा वाळी गयना दुधमां चणोठी जेवडी गोळी वाळवी. मात्रा ४ थी ९ गोळी अने एक खाखरानुं पान वाटी गायना दुध साथे पावी।

लक्ष्मणालोह—लोहभस्म तोला २० रससिंदूर तोला २॥ आसोपालवनी छाल दरभनुं मूळ महुडाना फुल जेठिमध बळदाणा काळीपाठ बीलीगरभ शतावरी आसोंध मींढोळ प्रत्येक तोला ४ चार, साथे मेळवी हनुमान वेलो (लक्ष्मणा) अथवा धोळां फुलनी सोरींगणीना १ रतल पंचांगना उकाळानी भावना दइ सुकावी घुंटी भुको राखवो मात्रा २ थी ४ रति मध अने फळघृत साथे चटाडवुं।

सोमघृत—धोळा फुलना शरपंखाना मूळ वज सरसव्र ब्राह्मी शंखावळी साटोडी मूळ शतावरी सुगंधी कुष्ठ जेठिमध मूळ कडु हलदर मजिठ काळीपाठ भांगरो देवदार तलवणी अरडुसीनां फुल गेरु प्रत्येक अकेक भाग, हरडे बेडा आमळां प्रत्येक बबे भाग उपलसरी ३ भाग गायनुं घो ४० भाग पकाववुं आनु सेवन करवाथी गमे ते दोषने लइ गर्भमां विकार थयो होय ते मटी जइ गर्भ रहे, सगर्भा स्त्री छ महिना सुधी सेवन करे तो पुत्रज उत्पन्न थाय।

गर्भधारिणी वटी—शिवलिंगीनां बी तोला २० पूर्णचंद्रोदय तो. २ सुवर्णभस्म रौप्यभस्म प्रवाळचंद्रपुटी मुक्तापिष्टि स्फटिकपिष्टि लोहभस्म बंगभस्म पिळी त्रिबंगभस्म मींढोळ शरपंखानु मूळ जेठिमध मूळ सुखड घसेली प्रत्येक तोलो १ एक, आसोंध शतावरी वाराहोकंद केळकंद बहुफळिना पान नागकेसर संधेसडानां पान पुत्रजीवकनां पान सुगंधी कुष्ठ ब्राह्मी तलवणी अरडुसीनां फुल प्रत्येक तोलो १॥ डोढ साथे घुंटी शतावरीना रसनो अने विदारीकंदना रसनो अकेक भावना दइ छाये सुकावी तेमां कस्तुरी अने केसर प्रत्येक तोलो ०॥ अर्धो मेळवी घीमां २ रतिभारनी गोळी वाळवी गर्भाशयना बधा रोगो मटी संतान थाय सगर्भा स्त्री आनु सेवन करे तो बाळक निरोगी अवतरे मात्रा ३ गोळी सवारे गायना दुध साथे देवी।

वंध्यास्त्रीने संतान नही थावाना दोष-कारण

धन्वंतरी भगवान पासे वंध्या स्त्रीओये मेळी थइ पुछयुं, स्वामी अमने संतान नथी थाता तेनु कारण शुं धन्वंतरी भगवाने भूत प्रेतादिने तेडावो पुछयुं, जवाब दीधो के वंध्या स्त्रीने संतान नहि थावाना सात दोप छे।

१ लो दोष—कमळ खस्युं होय त्यारे विर्य स्थिर न थाय तेनु लक्षण संग पछी डील धुजे तेने कपासीया मींज अने मोरपिछथी ऋतु आवे त्यारे ३ दिवस गुह्यभागे धोवरावबुं तो गर्भ रहे।

२ जो दोष—कमळ वध्युं होय तेथी विर्य ठेकाणे न पडे संग पछी दुखावो थाय जेठिमधनां मूळ गळीनां मूळना उकाळाथी ३ दिवस धोवरावबुं गर्भ रहे।

३ जो दोष—कमळ पर मांस बध्युं होय तेथी विर्य वींखाइ जाय तेमां संग पछी पगनी पींडी दुखे घोळुं जीरु तेलमां वाटी तेनाथी ३ दिवस धोवरावबुं गर्भ रहे ।

४ थो दोष—संभोग पछी हइयुं दुखे आमां कमळमां कीडो छे एम जाणवुं ते कीडो विर्यनु भक्षण करी जाय एटले संतान थाय नहि त्रिफळा साकरने उकाळी ऋतु आवे त्यारे धोवरावबुं तो कीडो मरे ।

५ मो दोष—पित्तथी गुह्यभाग बंध रहे आमां संग पछी हइये बळतरा थाय ऋतु वहेलुं आवे गरमी जणाय त्रिफळा चण्या वरियाळीना पाणीथी ३ दिवस धोवुं पित्त टळे संतान थाय ।

६ ठो दोष—शीत रहे गुह्यभागमां शरदो रहे तेथी अंदर दाखल थयेलुं वीर्य पचे नहि संग वखते टाढ वाय रुंवाडा उभां थाय, तलना तेलमां मरीनो भुको नाखी ३ दिवस धोवरावबुं ।

७ मो दोष—भूत प्रेत पिशाचनो दोष तेथी गर्भ रहे नहि संग वखते शरीरे टाढ जेवी धुजारी थाय रोवाइ जाय सुखड तुलसी हळदरना पाणीथी ३ दिवस धोवरावबुं ।

दोष निवारण—एलचि त्रिकटु समुद्रफिण जायफळ वावडींग नागकेसर सरसवनां कुंपळ समभागे वाटी एक इंचनी वाटसुं करवी संग वखते स्त्रीये गुह्य-भागमां राखवी संतान न थातां होय ते बधा दोष मटे ।

भाग्यमां संतान छे के नही तेनुं पारख्युं

बे कुंडामां के लोटकामां के जमीनमां बे खाडा करी तेमां राइ वाववो स्त्री अने पुरुषने वाडे अंधाण करवुं रोज स्त्री पुरुष तेनो उपर ३ दिवस सुधी पेशाब करे जो बेइनी उगे तो बेइना भाग्यमां संतान छे एम समजवुं, एकनी उगे तो तेना भाग्यमां छे अने बेइनी न उगे तो बेइना भाग्यमां संतान नथी एम जाणवुं ।

इंद्रि रेच

रेवंचिनो शिरो एलचि सुरोखार दरेक टां. १ एक, साकर टां. ४ दुध शेर १। पाणी शेर २॥ बधां साथे मेळवी पावुं, पेशाब खुब आवी जाय पछी संतान थावानी दवा खावी ।

गर्भाधान करावनारा सामान्य उपायो

काकवंध्या—जे स्त्री एक वखत जन्म आपी फरी सगर्भा थती न होय ते काकवंध्या कहेवाय छे तेमां तथा गमे ते कारणे स्त्रीने संतान थातु न होय तेमां नीचेना उपचारो करवाथी गर्भ रहे तथा बाळक थइ जीवतु रहे. कांगसीनु मूळ तोलो १। शनिवारे नोतरी रविवारे लइ आवी गायना दुधमां वाटी ३ दिवस सुधी काकवंध्याने पावुं ।

२ सहस्रमुखी गळजीभी जेवी थाय तेने छाये सुकावी चूर्ण करी गायना दुध साथे प्रभातमां पावलीभार १ महिना सुधी पावुं अने खारु खाटुं १२ मास सुधी छोडवुं स्त्रीए सवारमां उठी पुरुषनु मोढुं जोवुं साकर भात घउंनो खोराक

खावो बाळक जन्म्या पछी नाळ बधेर्या पछी तेने उपलु चूर्ण रति रति दुध साथे ३ दिवस पावुं पछी गधेडाना लींडाने सुकावी कपडे चाळी तेमांथी बवे रति पाणीमां घोळी ३ दिवस पावुं तो जे स्त्रीने बाळक जन्मी मरी जतु होय तेनु बाळक जीवे ।

३ ऋतुस्नाता स्त्रीने बळदाणा मूळ साकर खपाट मूळ जेठिमध मूळ वडवाइनां कुणां अंकुरो नागकेसर समभागे खांडी तेमांथी ०॥ अर्धो तोलो चूर्ण मध घीमां चटाडो उपर गायनुं दुध पावाथी २ महिनामां गर्भ रहे ।

४ आसोंधना उकाळामां घी पकावी दुध साथे प्रभात समये ऋतुस्नाता स्त्रीये पीवुं तो १ महिनामां गर्भ रहे ।

५ अशेळीयानां मूळ धावडीना फुल वडवाइना अंकुरो नीलकमळ समभागे खांडी १ तोलो चूर्ण गायना दुध साथे सवारमां आपवाथी २ महिनामां गर्भ रहे ।

६ पारस पिपळानां फळ जीरु धोळा फुलना शरपंखाना मूळ बधां सम-भागे खांडी ०। थी १ तोलो मात्रा दुध साथे १ महिनो पावाथी गर्भ रहे ।

७ हमेशां खाखरानु १ पान दुधमां वाटी पावुं १ महिनो पावाथी पुत्र थाय ।

८ बिजोरानां बी तोलो ०। दुधमां वाटी ऋतुस्नाता स्त्री ८ दिवस पीये तो गर्भ रहे ।

९ फळघृत सवार सांज बवे तोला चटाडवुं उपर गायनुं दुध पावुं गर्भ रहे ।

१० १ मींढोळने वाटी कपडे चाळी ऋतुस्ताना स्त्रीने घउंनी लापशी के चुरमानो लाडु करी तेमां मेळवी स्त्रीना जाणवामां न आवे तेम खवरावबुं पछी जरुर पडे तो बीजे महिने ऋतुस्नाता थया पछी १ दिवस ए प्रमाणे फरी खव-रावबुं तो गर्भाधान थाय ।

११ मोरशिखानु मूळ तोलो सवा दुधमां वाटी ऋतुस्नाता स्त्रीने ४ थे दिवसेथी ३ दिवस सुधी पावाथी गर्भ रहे ।

१२ पुत्रप्रद रस लक्ष्मणा लोह सिद्ध महालक्ष्मीविलास प्रत्येक तोलो ०॥ मेळवी तेनां सरखे भागे ४२ पडीकी करी सवार सांज अकेक पडीकु मध घीमां चटाडी उपर गायनुं दुध पावुं गर्भ रहे ।

१३ अभ्रकभस्म सहस्रपुटी महालक्ष्मीविलास शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक तोलो ०॥ अर्धो लइ मेळवी ४२ पडीकी करी सवार सांज अकेक फळघृतमां चटाडी उपर गायनु दुध पावुं ।

१४ आमळां अने साकर दरेक २ पैसा भार लइ तेनी २१ पडकी करी सवारमां एक पडीकी पाणी साथे देवी ।

१५ काळो सुरमो ४ पैसा भार जीणो वाटी तेनी १६ पडीकी करी हमेशां सवारमां १ पडीकु पाणी साथे आपवुं पछी १ तोला हाथीदांतना भुकाने राते भींजवी राखी सवारमां तेनु नितरुं पाणी पावुं ७ दिवस सुधी ए प्रमाणे हाथी-दांतनु नितरुं पाणी पावुं हमेशां हाथीदांतनो भुको नवो नाखवो तो संतान थाय ।

१६ एखराना बी टांक २॥ खांडी कपडछाण करी ऋतु वखते चोथे दिवसे गायना दुध साथे ३ दिवस आपवाथी गर्भ रहे ।

१७ नागकेसर ऋतु पछी ४ दिवस गायना घी साथे हमेशां टांक २॥ चटाडवुं संतान थाय ।

१८ शतावरी सुंठ आसोंध वरधारो गोखरु साकर समभागे खांडी हमेशां टांक २॥ गायना घी साथे चटाडवुं १ महिनामां गर्भ रहे ।

१९ संदेसडो तुलसीपत्र नागकेसर आसोंध पारसपिपळानां फळ वरधारो सुंठ दारुहळद्र खांड समभागे खांडी एक वर्णी गायना दुध साथे हमेशां टांक ३ नाइ उठया पछी शरु करवुं पुत्रप्राप्ति थाय ।

२० इश्वरलिंगी मोरशिखा वरधारो दरेक टांक १ एक, आंबानो मोर नगन-वाबवो दरेक टांक ४ चार, ए सर्वे वाटी सूक्ष्म करी ३ पडीकी करवी. नहाया पछी ३ दिवस देवी, अलुणु तथा चुरमु खावुं संतान थाय ।

२१ साकर शेर ०। घी शेर ०। घउंनी हाथे करेली पडसुदी शेर १ साथे मेळवी तेमांथी ५-१० तोला लइ ते कुलरमां भगलिंगी बी १ इश्वरलिंगी बी १ पारसपिपळाना बीनुं मींज १, ए त्रणे आखे आखा चाव्या विना नहाया पछी ४ थे दिवसेथी ४ दिवस कुलरमां खवरावबुं. जरुर जणाय तो घी साकर वधु नाखवां संतान थाय ।

२२ वरधारो नागकेसर साठीचोखा जीरु पारसपिपळानां मींज दरेक टांक ९ नव, इश्वरलिंगी टांक ३ पतंशारी टांक ३ साकर टांक १८ ए सर्वे वाटी ७ पडीकी करवी, रुतु आव्या पैछी ४ थे दिवसे नहाइने एक वर्णी गायना दुध साथे ७ दिवस सूर्य सामे उभा रही पी जावुं उपर पुत्रवंती स्त्रीना हाथनीं रांधेल खीर जमवी खाटु खारु न खावुं संतान थाय ।

२३ एखरो टांक १॥ मींढोळ टांक १ दुध साथे २१ दिवस पीवुं गर्भ रहे ।

२४ नागकेसर शुद्ध भांग दरेक टांक ७ सात, एकठा करी ७ पडीकी करवी स्नान कीधा पछी दुध साकर साथे ७ दिवस पावी संतान थाय ।

२५ उत्कंटा शुळीयाना मूळनी छाल दो. ९ भार वाटी ९ गोळी करवी स्नान कीधा पछी ९ दिवस सुधी देवी संतान थाय ।

२६ नागकेसर साकर ए बे वस्तु टांक ५ पांच, लइ साथे खांडी ३ भाग करवा नहाया पछी पडीकु एक जीवता वाछडा वाळी गायना दुध साथे ३ दिवस ३ पडीका आपवा साठी चोखानी खीर ३ दिवस खवरावबी संतान थाय ।

२७ समुद्रफळ टांक १॥, पारसपिपळाना मींज वरधारो नागकेसर आसोंध जावंत्रि दरेक टांक २॥ अढी, चणकबाब जीरु दरेक टांक ९ नव, इश्वरलिंगीना बी नंग २१, ए बधा एकत्र करी ९ पडीकी करवी पडीकी १ ऋतुस्नान कर्या पछी एक वर्णी गायना दुध साथे ३ दिवस सुधी हमेशां १ आपवी खीर खांड घृत चुरमु जमवुं खारु खाटु निषेध ३ दिवस आपी बंध करवुं पछी बीजे महिने ३ दिवस त्रीजे महिने ३ दिवस नहाया पछी आपवाथी संतान थाय ।

२८ छोकरीमांथी छोकरो गर्भमां थइ जाय—गर्भ रह्या पछी बे मास पछी ६१-६२-६३ त्रण दिवस अने ८१-८२-८३ त्रण दिवस बबे मासा (२४ रति)

भांग बी सवारे १ वखत दुध साथे खाय अने २५ रति पाणीमां वाटी गुह्यभागमां लगाडे तो दीकरी थाती होय तेने नाळ परावर्तन थइ दीकरो आवे ।

२९ शंखावळी पंचांग वडवाइ ए बे एकठां करी स्नान कर्या बाद ३ दिवस सुधी ०॥ तोलो हमेशां गायना दुध साथे आपवाथी संतान थाय ।

३० वरधारो नागकेसर हाउबेर पारसपिपळानां मींज दरेक टांक ४ चार, भगलिंगी टांक २ इश्वरलिंगी टांक २ खसखस टांक १२ टोपरु टांक १२ संघे-सडानी जड टांक ३ साकर टांक १२ ए सर्वे वाटी टांक ९ नी पडीकी १ गायना दुध साथे नहाया पछी आपवी खांड चोखा खीर जमाडवां ४ दिवस पडीकी देवी महेनत कामकाज थोडु करवु थोडो पवन लेवो संतान थाय ।

३१ पलचि मींढोलबीज दरेक टांक १ एक, ऋतुस्नान पछी लापसीमां खवरावीये वमन थाय तो स्त्री वंध्या रहे वमन थाय नहि अने पेटमां रहे तो संतान थाय ।

३२ ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्र पद्मावती सहिताय अट्टमट्टे क्षुद्र विघट्टे क्षुद्रान् स्थंभय २ दुष्टान् वारय २ चूरय २ स्वाहा

श्री पार्श्वनाथ सामे भोग धरी ए मंत्रथी १०८ वार नाळियेर मंत्री पछी जे स्त्रीने संतान न थातु होय ते स्त्रीने ऋतु आवे त्यारे पहेले दिवसे अर्धु नाळियेर बीजे दिवसे दोढ अने त्रीजे दिवसे एक, नाळियेर पुरु खवरावबुं चोथे दिवसे स्त्री ऋतु स्नान करे त्यारे तज तमालपत्र बावची नागकेसर पलचि मोथ धाणा साकर दरेक टांक २ बे लइ तेना ३ भाग करी सवारमां १ पडीकामां ९ शिवलिंगीनां बी आखां नाखो गायना घी साथे चाटो जावुं बी आखां गळवां एक वर्णी गायनु घी लेवुं खीर खांडनु भोजन करावबुं खारु खाटु बंध करवुं अग्नि तथा तटको थोडो लेवो संतान थाय द्रष्ट प्रत्यय ।

३३ काकवंध्याने संतान थाय—रविवारे दिवसे संध्या समये चोखा पैसो सुत सोपारी काकजंघाना मूळमां मुकी कहेवुं के हे ओषधी देवी संतान थावा माटे हु आवता आवता रविवारे तने लइ जइश मारी मन कामना पुरी करजे एम कही तने नोतरी तेना मूळे आवता रविवार सुधी ७ दिवस प्रतिदिन दुध सींचवुं पछी आवता रविवारे प्रभाते काकजंघा पंचांग लइ छाये सुकवी वाटी चूर्ण करी कपडछाण करी मुकीये पछी शनिवारे संध्या समये धमासो पूर्व रीते नोतरी रविवारने दिवसे प्रभाते धमासो पंचांग लइ छाये सुकवी वाटी कपडछाण करी शिवलिंगी भगलिंगी पिपर अविंध मोति सुखड केसर एकठां करी टांक १ नी गोळी मधमां करवी. ऋतुस्नान करी नरणां १ गोळी ७ दिवस लेवी खीर दुध चोखा रोटली जमवा तो काकवंध्या स्त्रीने संतान थाय ।

३४ इश्वरलिंगी भगलिंगीना बी २४ रति लइ बिजोराना रस साथे ३ दिवस चाटी उपर दुध पीवुं संतान थाय ।

३५ धोळां फुलनी भोरींगणीना मूळ पैसाभार खांडो धराख साथे ऋतुस्नान पछी देवुं उपर गायनुं दुध पावुं अलुणु खीर चोखा खांड दुध जमवुं संतान थाय।

३६ सफेद आकडाना मूळनी छाल हरडेदळ मुका आमळां त्रणे मळी २ पैसाभार चूरण लइ तेनां पडीकां ३ करी १ पडीकामां शेर १ पाणी मुकी माटीनी हांडलीमां उकाळवुं ०। शेर रहे त्यारे गाळी लइ सवारमां ऋतुस्नान करेली स्त्रीये उभी रही पी जावुं ए कुचाने फरी सांजे उपर प्रमाणे उकाळी उभी रही पी जावुं बीजे दिवसे बीजी त्रीजे दिवसे त्रीजी पडीको उकाळी पावी खीर खांड मिष्टान्न लाडु लापसी दुध रोटलो वगेरे अलुणु जमाडवुं तो वांझणी स्त्रीने संतान थाय ।

३७ रायण भींज टांक १ अकलकरो टांक १ जोणा वाटी जुना गोळ साथे गोळी चणया जेवडी करवी नहाया पछी रोज संग पहेलां अकेक गोळी ११ दिवस गुह्यमां राखवाथी संतान थाय ।

१६ गर्भ प्रतिबंधक—गर्भप्रतिबंधकं

केटलीक स्त्रीओने घणां संतान थया पछी अवयव शिथिल थइ पाणी पडे छे. शरीर कृश निर्बळ थइ जाय छे त्यारे तेने संतान थाता अटकाववानी जरुर पडे छे तेम न करवाथी ए निर्बळ स्त्रीने संग्रहणी क्षय के तेवां असाध्य दरद थवा संभव छे तेवी स्त्रीना शरीरना रक्षण माटे नीचेना उपचार संतान थता अटकाववा माटे लख्या छे ।

वंध्याकर चूर्ण—त्रिडीपिपर टंकण वावडींग समभागे खांडी ०। तोलो बहार बेसे त्यारे १ ले दिवसेथी ४ दिवस सुधी सवारमां एक वखत दुध साथे आपवुं।

गर्भनिग्रह मलम—खाखरानां बी तोला २० टंकण तो. ४ वावडींग तो. ४ फटकडी तो. १ दाडमनां फुल तो. २ बारीक वाटी घी मध गोळ मेळवी मलम करवो ऋतुस्नाता थया पछी गुह्यभागमां चोपडवो ।

प्र. १ जासुदनां फुल ३ सुरकामां वाटी ऋतु देखाय त्यारे १ ले दिवसेथी ४ दिवस खावा उपर जुनो गोळ खावो ।

प्र. २ तांजळजानां मूळ तोलो १ लइ चोखाना ओसामणमां वाटी ऋतुस्नाता थया पछी ४ थे दिवसथी ३ दिवस पावुं ।

प्र. ३ खाखराना बीनी राख ०।थी १ तोलो टाढा पाणीमां पीये ।

प्र. ४ ऋतु आव्या पछी सिंधवनो कटको १ टांक ४ नो लइ तेल चोपडी राखवो ।

प्र. ५ गेरु पलचि हळदर कचुरो तज समभागे खांडी १ थी २ पैसा भार स्नान पछी वासी पाणी साथे ७ दिवस सवारमां नरणां आपवुं ।

प्र. ६ लाख शेर २ प्रथम लाख ३-४ वार धोवी पछी पाणी शेर १० नाखी पाणी लाल पकडां करी उकाळवां पछी पाणी शेर ४-५ रहे त्यारे ऋतु पछी पाणी शेर १ घृत टांक ९ दिवस १४ पावुं संतान नास्ति ऋतु आवे पण छोरु न थाय ।

प्र. ७ सिंधव टांक १ फुलावेली फटकडी टांक १ तेलमां गोळी ३ करी ३ दिवस राखवी पण छोरु न थाय ।

प्र. ८ काळा खापरीयाना खंड कृष्ण सरपनी कांचळी कांटाळा थोरमां हिरवणी तेनो कपास राती धावलीना खंड धावडीना फुल ए पांच वाना सरखा लइ बाळी गोळमां गोळी चणीया बोर जेवडी करी ऋतु आव्या पछी ३ दिवस राखवी ।

प्र. ९ ऋतुस्नाता थया पछी ३ दिवस सुधी लीमडानी अंतरछालनी धुंवाडी गुह्यभागमां अंदर जाय तेवी युक्तिथी आपवी ।

प्र १० काळी चौदशने दिवसे काळा धतुरानुमूळ काढी राखवुं ते मूळ काळा दोराथी संग वखते स्त्रीए बांधवुं तो गर्भ रहे नहि अने ए मूळ न बांधे तो गर्भ रहे ।

प्र ११ ऋतुस्नाता स्त्रीने कारेलीनां बी तोला ४ अथवा चग शेकी भुको करी घउंना लोटमां नाखी रोटली करी ३ दिवस खवरावबी चुनानी आछ साजीनी आछ साचोरानी आछ दरेक तोला २॥ अढी, अने तेल तोला ८ साथे मेळवी पाइ देवुं ।

प्र १२ पुरुषे जननेंद्रियने फोदीनो वाटी चोपडवो ।

प्र. १३ वडगारु मीठुं २ आनी भार अने तेर्मा १ रति पारो मेळवी घुंटी लुगडानी पोटलीमां बांधी संग पछी तुरत स्त्री ए पोटली गुह्यभागमां राखे तो ते वखते गर्भ न रहे ।

प्र. १४ वाल ४ फटकडीने ५ तोला पाणीमां, ओगाळी संग पछी पिचकारी आपवी ।

प्र. १५ काळीपाठनां पान तोला २॥ पाणीमां वाटी ऋतुस्नाता स्त्रीने ४ थे दिवसेथी ३ दिवस पावां ।

प्र. १६ रसवंति हरडे आमळां समभागे चूर्ण करी १ तोलो ऋतुस्नाता थया पछी ३ दिवस सुधी पाणी साथे खवरावबु ।

१७ स्तन रोग

१ स्तन पाक (थानेलुं पाकवुं) स्तनपाकः

१ कांटा अशेळियानां पानने पाणीमां वाटी घीमां जरा सांतळी चांदां वारां उपर मुकवुं ४ दिवसमां रुझाय ।

२ लीमडाना पान वडनी छाल हळदर बकाननां पान कीडामारी पना उकाळाथी धोवुं ।

३ जात्यादि मलम चोपडवो जात्यादि तेलनां पोतां मुकवा व्रण गुमडा प्रमाणे उपचार करवा ।

४ लोहपर्पटी १॥ रति कैशोर गुगळ २ गोळो मेळवी घीमां चटाडी उपर महामंजिष्ठादि क्वाथ पावो ।

२ स्तन शोथ (थानेला पर सोजो दुखावो) स्तनशोथः

१ दशांग लेप चोपडवो ।

२ सोनागेरुमां मध मेळवी गरम करी चोपडी उपर रु दाबी पाटो बांधवो।

३ इन्द्रामणांना मूळने वाटी चोपडवाथी दुखावो पीडा मटे ।

४ हळदर अने धतुरानां मूळ समभागे वाटी चोपडवाथी पीडा सबाका दुखावो मटे ।

५ आरोग्यवर्धनो २ गोळी लोहपर्पटी २ रति मेळवी महामंजिष्ठादि क्वाथ साथे आपवी ।

६ इन्द्रामणाना मूळ तथा मींढोळने आकडाना पानना रस साथे वाटी लेप करवो स्तन पीडा टळे ।

३ स्तन ग्रन्थी (स्तन परनी गांठ गड) स्तनग्रन्थिः

१ थानेला पर गांठ थइ होय गुमडु थयु होय के कठण सोजो पाक पर आव्यो होय छतां पाकतो न होय तो पाकेलुं खासडीयुं केळुं लइ तेमां खारो पाडी तेमां धमासानो जीणो भुको भभरावी बांधवाथी गांठ सोजो पाकी फुटी जाय ।

२ खडी माटी घोळी अशेळीयानां पान रतांजळी घसेलो सुखड घसेली आंबाहळदर सुरोखार बधां सरखां लइ कोथमीरना के तांजळजानी भाजीना रसमां घुंटी गरम करी लगाडवुं उपर केळांनी लुमना पांदडा उपरा उपर मुकवां एटले गांठ फुटी बगाड निकळी जइ आराम थशे ।

४ स्तन शैथिल्य—स्तन शैथिल्यहरं

स्तननी शिथिलताथी बाळकने धावण ओछु आवे छे अने बाळक पुष्ट तृप्त थातु नथी तेम केटलीक स्त्रीओने ते बिलकुल शुष्क होवाथी स्त्रीत्वहीन देखाय छे तेवे वखते नीचेना उपचारोथी स्तन कठण भरावदार अने बाळकने तृप्ति थाय तेवां पुष्ट बने छे ।

स्तन काठिन्यकर मलम—भोरींगणीनां बी बळदाणा सरसव उपलेट आसोंध वज गजपिपर समभागे खांडी गायना घीमां मेळवी चोपडवुं ।

स्तन काठिन्यकर मलम—खरेटीनां बी उपलेट बळदाणा वज बारीक खांडी भेंसना माखणमां मेळवी मलम करी मर्दन करवुं ।

श्रीपर्णी तेल—शिवणीना फळ तथा छालने वाटी तेमां तलनु तेल पकावी एमां रु भींजावी स्तन उपर पोतां मुकवाथी पतित पयोधर उत्थित थाय ।

प्र. १ हिराकसी आसोंध लोदर गजपिपर एना कल्कमां पकवेलुं तलनु तेल मर्दन करवुं ।

प्र. २ गजपिपर आसोंध वज समभागे खांडवा वासी पाणीमां वाटी तेमां घोडीनु माखण मेळवी चोळवुं चोपडवुं ।

प्र. ३ वज दाडम समभागे लइ तेमां सरसवनुं तेल पकावो चोळवुं चोपडवुं ।

प्र. ४ गोरखमुंडीने खांडी ४ गणुं पाणी मुकी उकाळवु अधु पाणी रहे एटले गाळी लेवुं तेमां उकाळाथी अर्धे वजने तेल नाखी पकाववुं ए तेलनां टीपां नाकमां नाखवा ।

प्र. ५ वाराहवसादि मलम चोपडवो ताल तेल चोपडवुं सुवरनी चरबी चोळवी आसोंध वज कुष्ट उभीभोरींगणी शतावरी बधांथी ४ गणुं तलनुं तेल नाखी पकाववुं ए तेल चोळवुं भेंसना घीमां सरखे भागे सिंधालुण मेळवी हमेशां

चोळवुं हळदर साकर घोडाआसोंध पारो समभागे मेळवी पाणीमां वाटी चोपडी चोळवाथी १ महिनामां शिश्न कान स्तन वधे पुष्ट थाय ।

प्र. ६ सुवर रींछ वाघ वगेरे जंगली अने शिकारी हरकोइ पशुनी चरबी चोळवाथी पण स्तन पुष्ट थाय छे ।

बाजराना लोटमां शिलारस मेळवी छाती पर लेप करी पछी तेना पर काचनी रकाबी बे बांधवी कलाके कलाके छोडी नाखी फरी बांधवी एम ८ दिवस करवाथी स्तन पुष्ट कठिन थाय ।

१८ धावणनां दरद

दुग्धवर्धन (धावण वधारवानुं) चूर्ण—अतिविष तो. २॥ शतावरी तो. १० विदारिकंद तो. १० आसोंध तो. १५ साकर तो. २५ शेरडीना मूळ तो. ५ आमळां तो. ४ बळदाणा तो. १५ साथे खांडवा मात्रा ०। थी १ तोलो गायना घी साथे आपवुं ।

दुग्धशोधन (धावण सुधारवानुं) चूर्ण--काळिपाठ हरडे आमळां भारंगी देवदार दुधीयो वज अतिविष आसोंध शेरडीना मूळ वन कपासनां मूळ बळदाणा कौंचां समभागे खांडवा ०॥ तोलो चूर्ण गायना दुध साथे पावुं ।

दुग्धशोधन क्वाथ—उपलसरी (अनंत मूळ) काळीपाठ देवदार करियातु मोरवेल कडु गळो सुंठ मोथ इन्द्रजव समभागे खांडवा. १ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावाथी बगडेलु धावण शुद्ध थइ बाळक निरोगी रहे ।

स्तन्यसुधा रस—पारद गंधक अभ्रकभस्म सुवर्णमाक्षिकभस्म कडु आमळां विदारिकंद प्रवाळभस्म अतिविष रौप्यभस्म लींबोळीनां मींज आंबाहळदर कुष्ठ शतावरी आसोंध बधां सरखे भागे लइ उपलसरीना उकाळानी ब्राह्मीना पानना रसनी अने शतावरीना रसनी अकेक भावना दइ छाये सुकावी घुंटी राखवुं सवार सांज ३ थी ६ रति गायना घीमां चटाडी उपर महामंजिष्ठादि क्वाथ पावो तो स्त्रीना धावणने लगता बधा रोग मटी धावण शुद्ध थाय तथा वधे ।

१९ सौंदर्य वर्धन

कुंकुमादि तैल— रतांजलि लाख केसुडां जेठिमध बीजोरानां केशरां कसुंबो वउंलो मेंदी हळदर दारुहळदर गोरोचन मनशिळ शतावरी विदारिकंद पद्मकाष्ट कमळपुष्प वडनी वडवाइ पिपळानां मूळ कमळनां केशर सुखड कांग सरसव कृष्णागरु केसर प्रत्येक तोला ८ आठ, बधांथी बमणुं बकरीनुं दुध जोगणी तोला १० लाख तोला २० बधांने पाणीमां उकाळो करी घसाणाथी ४ गणुं तेल पकावबुं आ तेल शरीरे के मोढे चोपडवाथी-चोळवाथी काळी के शामळी स्त्री रुपाळी थाय छे मों सुंदर बने छे अने पोताना पतिनी प्रिति वधे छे पुरुष चोपडे-चोळे तो ते पोतानी पत्नीने प्रिय थाय छे अने रुपाळो थाय छे. खील मसा डाघ मोढामी झांइ वगेरे पण मटे छे ।

मोंनी झांइ—इंगोरियानो गर्भ पाणीमा वाटी २१ दिवस चोपडवाथी मोंनी झांइ जती रहे ।

मोंनी झांइ व्यंग—काळा तल शाजीरु जीरु समभागे खांडी दुध साथे चोपडवुं अथवा वातवरणांनी छाल बकरीना दुधमां वाटी चोपडवी ।

सौंदर्य वर्धक लेप—लोद्र जेठिमध सरसव समभागे खांडी पाणीमां वाटी चोपडवुं तो मुख सुंदर कांतिवाळुं थाय ।

२० दौर्गंध्यहर

शरीरसौगंध्यकर लेप (नरमोहन लेप)—एलचि कचुरो तमालपत्र चंदन वाळो हरडे सरगवानी छाल मोथ कुष्ठ समभागे खांडवां न्हाती वखते पाणीमां वाटी चोळवुं ।

मुखसौगंध्यकर चूर्ण—केसर कुष्ठ जटामांसी एलचि समभागे खांडवा मात्रा ०)॥ थी ०। तोलो पाणी साथे आपवाथी मोंनी दुर्गंध मटे छे ।

शरीर दौर्गंध्यहर लेप—हरडे लोद्र लीमडाना पान सानविण दाडमनी छाल समभागे हमेशां न्हाती वखते पाणीमां वाटी चोपडवाथी शरीरमांनी खराब वास दूर थाय छे ।

कांखमांथी खराब वास दुर करवा—हरडे टीपरुं मोथ पाकेला कातरा बेडां आमळां करंज बी समभागे पाणीमां वाटी चोपडवुं न्हाती वखते चोळवुं ।

गंधानो परसेवो मटाडवा—हरडे सुखड मोथ नागकेसर वाळो लोद्र कुष्ठ हळदर समभागे खांडी न्हाती वखते पाणीमां वाटी चोळवुं ।

प्रस्वेद दौर्गंध्यहर उद्वर्तन—आंबाहळदर हळदर कपुरकाचली कचुरो शतावरी आसोंध प्रत्येक तोला १० दश, आमळां तोला ६० मसुरनो लोट तोला ४० कपुर तोला २ बधां साथे खांडी हमेशां न्हाती वखते पाणीमां काळवी शरीरे चोळी स्नान करवाथी शरीर सुगंधी थाय छे परसेवो गंधातो नथी ।

स्त्री जननेंद्रिय दौर्गंध्यनाशन प्रयोगो

दौर्गंध्यहर घृत—वडनां पिपळानां आंबानां जांबुनां पिपरनां कुणा पानना काढाथी प्रक्षालन करवुं तथा ते वसाणामां सूर्यने तडके पकवेलुं घी चोपडवुं ।

दौर्गंध्यहर तेल—साचुं कुष्ठ पद्मकाष्ठ कपुर वाळो पुष्कर मूळ मोथ समभागे पाणीमां वाटी तेमां सरसवनुं तेल पकावी चोपडवाथी दुर्गंध मटे तथा गुह्यभागना बधा रोग मटे ।

दौर्गंध्यहर प्रक्षालन—लीमडाना पान हळदर कमळ मायां धावडीना फुल जांबुनी छाल समभागे लइ ५ तोला उकाळी तेनाथी प्रक्षालन करवुं ।

दौर्गंध्यनाशन धूम्र—लीमडाना पानथी धोवरावबुं लीमडानी अंतरछालनी धुंवाडी देवी ।

दौर्गंध्यहर धूप—कपूर केसर नखलो लाख लोबान गुगळ सुखड अगर कुष्ठ कपुरकाचली कचुरो पावडी चोखा घी साथे मेळवी गुह्यभागने धुंवाडी देवी ।

दौर्गंध्यहर प्रक्षालन—लीमडानां पान आसोपालवनां पान आंबाना पान धावडीना फुल समभागे लइ तेनो उकाळो करी धोवुं ।

दौर्गंध्यनाशन तेल—आंबानां जांबुनां वडनां पिपरनां आसोपालवना कुणा पान चमेलीनां फुल गुलाबना फुल पचुरो पानडी जेठिमधनां मूळ सुगंधी मेंदी आसोंध कुष्ठ लोबान गुगळ कपुर केसर मजिठ सुखड अगर मायां शेमळानो गुंद सादी मेंदी प्रत्येक तोला ५ पांच, बधाथी ८ गणुं तेल ओसडीयाने खांडी कल्क करी तेलमां नाखी बरणीने मजबुत बुच दइ तडके १ महिनो राखवुं पछी गाळी लइ ए तेल चोपडवुं पोतुं मुकवुं ।

२१ स्त्रीओना सर्व रोग

नीचेनां औषध स्त्रीओना हिस्टीरिया मगज हृदय आंतरडां गर्भाशय अने धावणना रोग प्रसुती पछीना ... कमर सोजो ... धातु पाणी स्राव फेर चकर वगेरे स्त्रीओना बधा रोगो मां लागु पडे छे ।

सर्व स्त्रीमदांतक वटी—सुंठ पिपर मरी हरडेदळ बेडांदळ आमळां वावडींग नागकेसर शिवलिंगीना बी तज तमाल पलचि मोथ अश्वगंधा पिपर मरी सुंठ पिपरीमूळ सिंधालुण चित्रो उपलसरीमूळ कचुरो अतिविष कपुरकाचली दुधीयो वज देवदार वायवरणो मजिठ साकर हळदर लींबोळीनां मींज प्रत्येक तोला ४ चार, पारद गंधक लोहभस्म सुवर्णमाक्षिकभस्म वंशलोचन अभ्रकभस्म प्रवालपिष्टि प्रत्येक तोला १६ सोळ, शिलाजित ... गुगळ ... तोला ३२ बत्रीस बधां साथे ... भांगराना रसनी भावना आपी चणोठी जेवडी गोळी करवी सवार सांज २ थी ४ गोळी आपवाथी ऋतुदोष गर्भाशयना विकार हिस्टीरिया नबळाइ कळतर माथाना फेर चकर भुख ओछी लागवी पेटना वायु सुवावडीना रोग गर्भिणीना रोग वगेरे स्त्रीओना बधा रोग मटे छे ।

प्रमदांतक भैरव रस—पारद गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म सावरसींग भस्म माक्षिकभस्म रौप्यभस्म प्रवाळभस्म मुक्ताभस्म प्रत्येक तोला ४ चार, सुवर्ण भस्म वंशलोचन सुंठ पिपर मरी तज लविंग पलचि चणकबाब नागकेसर तुळशी बी अगर घसेली सुखड रसांजली अतिविष कपुरकाचली हंसराज हरडे बेडां आमळां उपलसरीमूळ मजिठ प्रत्येक अकेक तोलो मेळवी घुंटी राखवुं केवडानो पोटो १ दिवस १५ तेमां राखी मुकी पछी वापरवुं स्त्रीओना बधा रोग मटे छे मात्रा टंके २ थी ३ रति घीमां के दुधनां आपवी ।

प्रमदानंद रस—पारद गंधक लोहभस्म सुवर्णभस्म शिलाजित रौप्य भस्म प्रवाळभस्म बधां समभागे लइ तेने चित्राना अने त्रिफळाना उकाळानी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुको राखवो सवार सांज ३ रति पाणी साथे आपवाथी सुवारोग सुवावडीने थनारां बधां दरद मटे छे तथा ऋतुदोषनां गर्भाशयना दरद उपर पण अपाय छे ।

कामनाश—स्त्रीनपुंसकत्व

कारण चिन्ह—पुरुषने जेम नपुंसकपणुं थाय छे तेम स्त्री पण नपुंसक होय छे. स्त्रीने गुह्यभागमांनां लिंग अवयवना विकारथी आ दरद थाय छे तथा पुरुष

जेम हस्तदोषथी विषय वासनानी शांति मेळवे छे तेम लिंगाकृति वस्तु के तेथी कृत्रिम विजथी स्त्रीओ वासना तृप्ति करे छे तेथी तथा कोइ स्त्रीने जन्मथीज अंतर्गत लिंग अगाव के जे काम वासनाने जागृत करनाम अंग गणाय छे ते मृतवत थइ जातां स्त्रीने काम वासना बिलकुल मरी जाय छे अने ए वासना प्रत्ये तिरस्कार उपजे छे तेमां आनंद मळतो नथी सेंकडे १० टका स्त्रीओमां आ दरद वाल जोवामां आवे छे नपुंसक के नबळा पुरुषो माटे कामोत्तेजक उपचारो कराय छे ते स्त्रीओने पण आपी शकाय छे।

वसंतकुसुमाकर तोलो १ महालक्ष्मीविलास तोलो ०॥ अभ्रकभस्म तोलो १ साथे मेळवी ४८ पडीकी करी सवार सांज दुध साथे आपवी।

पूर्णचंद्रोदय तोलो ०॥ अनुपान चूर्ण तोलो १ [illegible] साथे मेळवी ४८ पडीकी करी नागरवेलना पाननी पटी साथे [illegible]।

[illegible] फुलावेली फटकडी कतवुनी चरक प्रमाणे [illegible] पानना रसमां चणाया बोर जेवडी गोळी करी २थी४ गोळी पाणी साथे लइ उपर दुध पीवुं ३ दिवसमां स्त्री फरी कामातुर थाय।

कामोन्माद्–हिस्टीरिया स्मरोन्माद:

कारण—गर्भाशयना व्याधी ऋतुनो बगाड मगजनी नबळाइ भय शोक खेद कामविकार हाथरस अतिविषयासक्ति मनने धाक्को लागे तेवां बाजां कारणोथी आ दरद थाय छे. शृंगारिक वार्ता नाटकनां दृश्य के तेवी वस्तु सांभळनारी छोकरीओनां मन विषयासक्त थवाथी अतृप्तिथी मगज उपर अवळी असर थवाथी बेठाडु थइ जवाथी शरीरने श्रम नहि आपवाने लइ मेद वधी जवाथी हृदय नबळु पडवाथी संसारनी चिंतानो बोजो मगजपर असह्य थवाथी के पोते मानी लीधेलु दुःख असह्य जणावाथी देव पितृ वगेरे ग्रहनी नडतरथी वगेरे कारणे आ दरद थाय छे।

चिन्ह—गळु बंध थइ जाय बोली शके नहि खेचताण थाय हसे रडे धुणे राडुयो पाडे उलटो खोटा ओडकार आवे दांत जकडाइ जाय अनाज बेसी जाय पेटमां गोटो चडे आंखो विचित्र आकारनी थइ जाय आमां दरदी साव बेशुद्ध घणीवार थातो नथी दरद उपडतां पहेलां घणीवार दरदी शुद्धिमां होय छे श्वास वधे छे जोर ओछु थया पछी दरदी सावचेत थवा मांडे छे आंखमां खेचताण बहु थाय छे श्वास रुंधाय वाळ खेचे कोटने मारु [illegible] गेरे ठेकाणे चसका निकळे छे ऋतु वधु ओछु के बंध थाय छे जुदा जुदा चिन्हो [illegible] छे कोइ कारणसर स्त्रीओ आ दरद होवानो [illegible] थवानो ढोंग पण करे छे।

पथ्यापथ्य—हिस्टीरिया थवानु जे कारण होय ते तपासी उपचार करवो वायु पित्त कफ जे दोषनुं शरीरमां जोर होय तेने शमाववाना उपाय लेवा. सांसारिक बाबतमां तेने कांइ चिंता के दुःख छे के नहि ते तपासवुं. उमर, परणेल छे के नहि, शरीरनो बांधो वगेरे जोइ कारण नक्की करवुं तेनु खाली वर्णन

व्यसन ऋतु केम छे ते केवा आहार विहारथी वर्ते छे वगेरे बाबतो जाणी लइ ते प्रमाणे उपचार करवा चुनो नवसार एक शीशीमां मेळां करी तेमां पाणी छांटी ते वराळ सुंघाडवी वायुनाशक पदार्थोथी उपचार करवा हमेशनो खोराक दुध भात खीचडी रोटली थोडु शाक वगेरे खावो झाडो कबज करे तेवां खाटां मीठायुं अथाणा तळेलां वगेरे पदार्थो खावा देवां नहि अने जे कारणे ए दरद थावानु जणाय ते दुर करवानी तजवीज करावची ।

मुकुटेश्वरी वटी—पारद गंधक लोहभस्म रससिंदूर अभ्रकभस्म कांचनार वावडींग भीलामां तल परडानां मूळ शिलाजित सुंठ पिपर मरी मोथ एलचि गोखरु गळो हरडे नसोतर अजमोद वज प्रत्येक तोला ५ पांच, शुद्ध गुगळ तोला ३० साथे मेळवी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी मात्रा ६ थी १२ गोळी घीमां चटाडी उपर दुध पावुं हिस्टीरिया मगजनी नबळाइ छातीनी नबळाइ स्त्रीओनां बीजां दरद गर्भावस्थाना दरद सुवारोग मटे छे आ गोळी हिस्टीरियानी खास दवा छे।

सिंहनाद गुगळ—पारद गंधक रससिंदूर प्रत्येक तोला ५ पांच, सुंठ पिपर मरी वायवरणो कांचनार हरडे कनकबीज गळो चित्रो नसोतर दंतीमूळ मोथ वावडींग बळदाणा शतावरी वरधारो चणोठी मूळ हळदर धाणा शेकेला माक्षिकभस्म शिलाजित प्रत्येक तोला ४ चार, गुगळ तोला १०० साथे मेळवी चणोठी जेवडी गोळी वाळवी मात्रा ६ थी १२ गोळी घीमां चटाडवी ।

अश्वगंधारिष्ट—आसोंध ५० पळ मुशळी २० पळ मजिठ हरडे हळदर महुडां रास्ना विदारिकंद अर्जुन मोथ नसोतर प्रत्येक १० पळ अनंतमूळ उपलसरीमूळ चंदन रक्तचंदन वज चित्रक प्रत्येक ८ पळ बधां खांडी ८ द्रोण पाणीमां उकाळो करी १ द्रोण रहे पटले गाळो धावडीना फुल १६ पळ मध १०० पळ नागकेसर सुंठ पिपर मरी प्रत्येक २ पळ तज वडेलो तमाल एलचि प्रत्येक ४ पळ सारा ठाममां आथो नाखी १ महिना पछी गाळी २ तोला पावुं मगजनां दरद हिस्टीरिया मूर्च्छा वाइ गांडपण भ्रम चकरी मटे छे ।

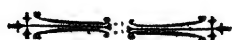
प्र. १ कांचनार वायवरणो सरल सुंठ मरी समभागे लइ ०॥ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो ।

प्र. २ वज मोथ गळो सुंठ हरडे आसोंध रास्ना समभागे ०॥ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो ।

प्र. ३ काळोपाठ परडाना मूळ जीरु अजमोद अतिविष भारंगी समभागे लइ १ तोलानो उकाळो करो मध नाखी पावो ।

प्र. ४ अरणोमूळ घोडाआसोंध शतावरी संघेसडानी छाल समभागे लइ १ तोलानो उकाळो करी मध नाखी पावो ।

चंद्रप्रभा चंद्रांशुगुटी सर्वस्त्रीगदांतका वटी महायोगराज सुवर्णवसंतमालती जीवितप्रदा मुक्ताभस्म महालक्ष्मीविलास प्रमदातंक भैरव रस वगेरे ओषधो हिस्टीरियामां वपराय छे।



बाळरोग—बालरोगाः

१ जन्मकृत्य. २ ग्रहबाधा. ३ तरश—शोष. ४ गळुं पडवुं ५ बाळ रतवा ६ कथवो—कुकुणक. ७ डुंटीशोथ. ८ गुदपाक. ९ गुदानुं व्रण. १० दांत आवती वखतनां दरद. ११ दुबळापणुं. १२ बाळज्वर. १३ अछवडा. १४ मो आववुं. १५ आमण निकळवी. १६ मोटी उधरस, कुकडोया खांसो, उंटाटीयुं. १७ ओरी. १८ शोळी—शीतळा. १९ ससणी २० थुलीयो. २१ रंगीलुं. २२ गालपचोळां. २३ बाळकनी आंचकी २४ बाळ पौष्टिक. २५ बाळकना सर्व रोग. ।

१ जन्मकृत्य (बाळकना जन्म वखते करवानुं)

बाळक जन्मतां वेत पहेलेज श्वासे रोवा मांडे छे ते बहु सारुं छे, रोवाथी शरीर उपर सारी असर थाय छे, तेनां फेफसां फुले छे, अने श्वासोच्छ्वासने मदद मळे छे. स्त्रीने ओर बधी पडी गया पछी बाळकनुं नाळ वधारवुं—कापवुं जो ओर पडया पहेलां नाळ कापवामां आव्युं होय तो ओर उंची काळजे चडी जइ श्वास रोकाइ जइ स्त्री मरण पामे छे माटे बाळक जन्म्या पछी ओर पडे त्यांसुधी बाळकने जमीन उपर कपडाना कटका पर सुवरावी राखवुं ओर पडी जाय पटले डुंटीथी ४ थी ६ तसु छेटे सुतरना मजबुत दोराथी सख्त बांधी ओर तरफना भागमां बे तसुने छेटे अस्त्राथी के तेज कातर वती कापी नाखवो. डुंटी पासेथी नारडुं जेम लांबु बंधाय तेम बाळक नशीबदार थाय छे नारडुं टुंकुं कपाय तेम बाळक टुंका आयुष्यवाळु थाय छे आगळना वखतमां वेंत एक छेटेथी नारडुं कापता पण वधु लांबु नारडु साचववुं मुश्केल छे माटे ४–६ इंच पछी बांधी कापवुं एज उत्तम छे. कापती वखते डुंटी साथे जोडायेलुं नारडुं तणाय नहि ते संभाळ राखवी नाळ टुटी जाय तो लोहीनो स्राव थइ बाळक मरी जाय छे बहु टुंकुं बाळ कापवाथी अने मजबुत बांध्या विना कापवाथी पण घणीवार बाळक मरी जाय छे नाळ काप्या पछी बाळकनी कुणी चामडी उपर एक जातनो चीकणो तेल जेवो पदार्थ चोपडायेलो होय छे ते काढती वखते बाळकनी कुणी चामडीने इजा न थाय तेनी संभाळ राखवी साबु के बहु गरम पाणीथी शरीर धोवुं नहि तेथी मृदु चामडीने इजा थाय छे. प्रथम टोपरानुं ताजुं तेल हळवे हळवे चोळी कोरा कपडाथी बधुं शरीर लुइ नाखवुं पटले चोकाशवाळो पदार्थ निकळी जशे पछी नवशेका पाणीथी बाळकने आंख उपर अने मोढे गरम पाणी लगाडी लुइ नाखवुं अने उंचा साबु अने नवशेका पाणीथी आखे शरीरे नवरावी लुइ नाखी गरम के सुतराव कपडे वींटी २–३ चमची पाणी पीवरावी खाटलो पर सुवराववुं अने तेने शांतिथी सुवा देवुं ।

नाळ कापी नाख्या पछी ओर पडी जाय ते ओरने एक हाथ उंडा खाडामां बशेरक मीठुं नीचे नाखी तेमापर ओर नाखी तेनापर बशेरक मीठुं नाखी ते पर धुड दाबी खाडाना मोढा उपर पाणो दाबवो ओरमां वधु मठुं नाखी जेम उंडी डटाय तेम बाळक भाग्यशाळी बुद्धिशाळी अने नीरोगी थाय छे. माटे ओर उंडी डाटवानी अने उपर नीचे सारी रीते मीठुं नाखवानी काळजी राखवी.

लोकोमां पण नवळा मूर्ख के मंदबुद्धिना माणसने "मीठां विनानो" आ जातनी गाळ देवामां आवे छे तेनुं रहस्य ओर साथें मोठुं ओछुं नाख्युं होय के मुदल न नाख्युं होय ए छे. बाळकने नवराव्या पछी नाळवाने काचा सुतरने। ४-६ वडो देरो बांधी बाळकना गळामां नाखवो अने नाळपर रु दाबी पाटो पोचो बांधी राखवो बाळकनी डुंटीयें नाळ चोटयुं होय त्यां धुपेल तेल मुक्यां करवु १०-१२ दिवसे नाळ खरी जाशे ते सुकायेलु नाळ नाम जन्मनो टाइम तिथी लखा शीशीमां भरी राखी मुकवु तो बाळक साजुं थइ जाय छे ।

प्रसव थया पछी ४ थी ६ दिवसे स्तनमां धावण आवे छे माटे तेटलो वखत गळसुदी पावानो देशचाल प्रमाणे रिवाज छे. १ सालनो जुनो गोळ १ तोलामां ५ तोला पाणी अने ०। तोलो गायनु घी मेळवी नवशेकु पावुं आ गोळनु पाणी रुना पुंभडा वतो पीवरावाय छे गळसुदी पावाथी पेटमां जामेलो मळ निकळे छे कोइ बाळकने मळ ओछो निकळे के निकळतो अटके तो बाळक रुवे छे तो गळसुदी साथे २-४ टींपां एरंडीयानां नाखी पावां पटले बगाड निकळी जशे जे माणस प्रथम गळसुदी पाय छे तेना जेवा स्वभावनुं बाळक थाय छे बाळक बीजे त्रीजे दिवसे धवरावबुं प्रथम हाथ वडे स्तनमांथी थोडु दुध काढी नाखी पछी बाळकना मोमां आपवुं पटले ते आपोआप धाववा लागशे अने स्त्रीने पानो छुटशे ते वखते अथवा क्यारे पण बाळक धावे नहि तो हरडे अने सींधवनी भुकी मधमां मेळवी बाळकना होठ अने जीभ उपर आंगळी वती घसवुं पटले तुरत धाववा लागशे कोइ स्त्रीना स्तन मोटां के लांबा होय तो धवरावती वखते बाळकनुं नाक दबाइ जइ श्वास रोकाइ जाय नहि ते संभाळ राखवी तेम धावण पुष्कर भराइ जाय अने बाळक अहोंतराय जाय तेवी रीते धवरावबुं नहि धवरावतां धवरावतां बीजानी साथे वातचीत करवाथी पण बाळक अहोंतराय जाय छे अने तेथी बाळकने सळखम शरदी श्वास उधरस के बीजा रोग थाय छे स्त्रीने धावण न आवे तो स्त्री रोग प्रकरणमां कहेलीधावण वधा रवानी दवानु सेवन स्त्रीये करवुं अथवा बाळकने गाय के बकरीनु दुध आपवुं. छ के सातमे महिनेथी हळवो खोराक आपवानी शरुआत करवी ।

बाळकनी गळसुदी—कोठानो गरभ अजमोद वावडींग वापुंभा मरडाशींगी सरसव राइ वरियाळी जायफळ हरडे साथेर सुंठ संचळ सुवा अजमा काथो फटकडी लवींग हीराबोळ पलचि जावंत्री कणझर तज समभागे खांडी कपडे चाळी राखवुं तेमांथी चणोठी जेटलु गोळना पाणीमां नांखी तेमां गायनुं घी जरा नाखी गरम करी जन्मेला बाळकने पहेले दिवसे पावुं पछी बीजे दिवसेथी एकला गोळना पाणीमां गायनु घी नानी चमची नाखी नवशेकु पावुं बाळक धावे तो पण गोळनु पाणी ६ दिवस सुधी पावुं तेथी पेटमां जामेला मळ निकळी जाय छे आ मळ न नीकळे के थोडा घणा रही जाय तो बाळक हमेशने माटे नबळुं के बीमार रहे छे तेम मोटी उमरे पण तेने ए नडे छे एक वरसना जुना गोळनुं पाणी गरम लागतुं नथी ।

२ ग्रहबाधा

कारण—जे कुटुंबमां देवता पितरो ब्राह्मणो साधुपुरुषो गुरुओ अतिथिओनां पूजन सत्कार थता नथी वेदादिनां पठन होम हवन थता नथी पवित्रता शौच आचार पळाता नथी निंदित आजिविका होय छे भिक्षा मागवा आवनारने दान अपाता नथी श्राद्धादि करातां नथी भांगेला कांसाना ठाम जेना घरमां छे तेवां मनुष्योना बाळकोने विविध ग्रहो नाश करे छे तेवा ग्रहोथी पीडाता बाळको घणा कष्टे साजां थाय छे अने तेमां औषधोपचार साथे ग्रहबाधा शांतिना दैवी उपायो पण करवा जोइये ।

चिन्ह—ग्रहबाधावाळुं बाळक घडीकमां मुंझाय छे बीये छे रुवे छे नख अने दांतवडे माने के पोताना शरीरने करडे उंचे जोया करे छे दांत कचडे छे चीस पाडे छे बगांसा खाधा करे छे भ्रुकुटीने उंची नीची करे छे होठ करडे छे मोंमांथी फिण निकळे छे शरीर दुबळु पडे छे रात्रे जागे छे शरीरे सोजो चडे छे झाडा थाय छे साद बेसी जाय छे खातु पीतु नथी शुद्धि रहेती नथी बधी ग्रहबाधामां तुलसी हळदर गोरखमुंडी अने वाळो उकाळी ते नवशेका पाणीथी बाळकने नवरावबुं ।

ग्रहबाधामां सामान्य रीते चंडीपाठ-सप्तशतीनो पाठ करावबो गुगळ शेष-गुंदर लीमडो लोबान हळदर समभागे खांडी तेमां घी मेळवी ३ टाणां धूप करवो गळोना स्वरस अथवा हरडे घसीये अथवा संशमनी सवार सांज १ था २ गोळी पाणीमां वाटी पावी ।

१ स्कंदग्रह—नी पीडा होय तो बाळकनु शरीर ढीलुं पडी जाय लोहीना जेवी गंध शरीरमांथी निकळे धावे नहि मों वांकु थइ जाय एक बाजुना हाथ पग के आंख खोटा पडी जाय उदास रहे आंखमां पाणी आवे थोडु रुवे मुठीयो बीडी जाय ।

अरणी अरडुसो लीमडो परडी एना पाननो उकाळो करी बाळकने पीव-रावबो तथा शरीरे नवरावबुं खरड करवो × × × देवदार रास्ना काळीद्राक्ष जेठिमधनां मूळ महुडां अंजीर एना उकाळामां दुध के घीने पकावी पीवरावबुं × × × सर्सव सरपनी कांचळी वज सफेद चणोठी घी उंटना बकरीनां अने गायना रुंवाडा साथे खांडी तेनी धुणी देवी × × × सोमवल्लीनु मूळ कडानु मूळ सोनामां मढेला सावजना नख इन्द्रामणानुं मूळ के बीलीनुं मूळ घुवडनी नळी के चांच एमांनु कोइ एक रेशमी कपडामां बांधी बाळकने घोडीये के जमणे हाथे बांधवुं ।

× × × स्कंदग्रहनी शांति माटे त्रांबाना ठाममां राता फुल राती धजा कंकु रक्तचंदन घउं गोळ नाखी महादेवना मंदिर पासे बळिदान रस्ता उपर मुकी आववुं गायत्री मंत्रथी जळ मंत्री ते पाणी बळतणने छांटी अग्नि सळगावी तेमां खीर घीनो होम करवो पछी गायत्री मंत्रथी बाळक पर जळनुं बीलीपत्रथी मार्जन करवुं ।

२ स्कंदापस्मार ग्रह—बाळक घडीमां शुद्धि विनानु थइ जाय घडीकमां शुद्धि आवे जड जेवुं थइ जाय हाथ पग हलाव्या करे पेशाब अने झाडो घणो थाय बगांसा आवे फीण निकळे ।

सफेद धो बीलीपान सरसडो तुळसी मरवो भारंगो कमळपुष्प रोइडो काळीपाठ राइ कायफळ कासोंदरो वावडींग नगोड कणेर उंबरो पीलुडो एना उकाळाथी बाळकने नवराववुं

× × × अष्टमूत्रमां पकवेलुं तेल शरीरे मर्दन करवुं रांधेलां अन्न मांस मध दुध मग चोखानुं बळिदान वडना झाड नीचे मुको आववुं चार मार्गे बाळकने नवरावबुं.

३ शकुनीग्रह—बाळकना अवयवो शिथिल थइ जाय, भयभीत रहे, आकाशमा जोया करे, स्रावबाळां गुमडां थाय आखा शरीरे फोडला थाय, फोडलामां बळतरा थाय अने पाके.

नेतर, आंबा अने कोठानां पानने पाणीमां उकाळी तेनाथी बाळकने नवरावबुं × × × वाळो, जेठीमध उपलसरी, कमळपुष्प. पद्मकाष्ठ, लोदर, घउंलो, मजीठ,, गेरु सरखे भागे खांडी मेंदा जेवुं वाटी शरीरे चोपडवुं. × × × शतावरीमूळ. इंद्रामणीमूळ, मोरींगणीमूळ एमांनुं कांइ गळे के चोटीए बांधवुं. × × × तल, चोखा, फुल, हरताळ, मनशील एनुं बळिदान करंजना झाड नीचे आपी आववुं अने ए बळिदानना नजीक बाळकने नवरावबुं, × + × अष्टमंगळघृत पीवरावबुं सर्व ग्रहहरधूपनी धुणी देवी सर्व ग्रहहर क्वाथ के महामरिष्टादि क्वाथ पावो × × × गळो मजिठ सरसडानां फुल शतावरी समभागे खांडी तेनो उकाळो करी पावो ।

४ रेवती ग्रह—थी पीडाता बाळकनु मों रातुं थइ जाय मळ लीला उतरे शरीर पांडु वर्णु के काळाश पडतुं थाय मों अने हाथ पाके पोडा थाय पोताना कान नाक पकडया करे × × × आसोंध मरडाशींगी उपलसरी सटोडो गुलाबनां फुल विदारीकंद एना क्वाथथी स्नान करावबुं × + × कुष्ठ राळ गुगळ नडसल हळदरवो एमां पकवेलुं तेल मालीस करवुं × × × शतावरी विदारीकंद पद्मकाष्ट वंशलोचन मरडाशींगी खरखोडी जेठीमध द्राक्ष मजिठ हरडे एनो उकाळो करी पावो अथवा ए उकाळामां घी पकावी चढावबुं के गरम करी पावुं श्वेतपुष्प कमोद दुध चोखा दहीं एनु बळिदान मायोने मोंदरे आपवु ।

५ पूतना ग्रह—पातळा झाडा थाय रात दिवस उंघे नहि उलटी थाय रुंवाडां उभां थाय तरस लागे ।

ब्राह्मी अरडुसो धायवरणो लींमडो गरणी एना उकाळाथी बाळकने नवरावबुं।
× × × विदारीकंद सफेद धो हरताळ मनशिळ कुष्ठ राळ एमां पकवेलुं तेल चोळवुं × × × वंशलोचन जेठिमध कुष्ठ तालीसपत्र खेरसार पिपळानीछाल आसोंदरो फणसनी छाल सादडो बोर कुकडानां हाडकां घी एनी धुणी देवी × × × सफेद चणोठी गावलुकडानां मूळ के टींडोरीना मूळ गळे

[illegible] × × × ओली लितांव अरडुसी वायवरणो जेठिमध खेरनो [illegible] उकाळो करी पावो अथवा तेमां घी पकावी चटाडवुं × × × [illegible] खीचडी शरावसंपुटमां नाखो उजड घरमां जइ बळिदान आपवुं बळि- [illegible] आपी बाळकने नवरावबुं ।

६ गंधपूतना ग्रह—धावे नहि झाडा उधरस हेडकी उलटी थाय ताव [illegible] वान खराब थइ आय शरीरमांथी लोही जेवी गंध आवे × × × लीमडो परवळ गळो मोरींगणी अरडुसीनां पांदडा उकाळी बाळकने नवरावबुं पिपर पिपरीमूळ चित्रो जेठिमध समेरवो मोरींगणी एमां घी पकावी चटाडवुं × × × अने कपुरने घसी शरीरे के आंखो उपर चोपडवुं × × × कुकडानी चरक माणसना वाळ सरपनी कांचळी जुनु कपडुं बधां खांडी तेनी धुणी देवी × × × कुकडवेल कौचानां मूळ अनंतमूळ एमानु कोइ बांधवुं × × × मांसनु चौटामां बळिदान देवुं अने बाळकने घरनी अंदर नवरावबुं ।

७ शीतपूतना ग्रह राडयुं पाडे चकरवकर जोया करे कंपे आंतरडां बोले शरीर शिथिल थइ जाय शरीर ठंडु थइ जकडाइ जाय × × × गोमूत्र अश्वमूत्र मोथ देवदार कुष्ठ केसर अगर कपुर चंदन एमां तेल पकावी चोळवुं × × × नगोडनां बी लीमडाना खेरनां पान केसुडां आसोंद्रानी छाल उकाळी तेमां उकाळा जेटलुं गायनु दुध नाखी घी पकावी ए घी खवरावबुं × × × लीमडाना पान सरपनी कांचली वज हळदर घी एनी धुंवाडी देवी × × × चणोठी बळदाणां मूळ इन्द्रामणानां मूळ एमांनु कांइ गळे बांधवुं × × × मग भातनु नदीने कांठे बळिदान आपवुं अने जळाशयमां वाळकने नवरावबुं ।

८ मुखमंडिका ग्रह—शरीर मलिन थइ जाय हाथे पगे मोमां लोही निकळे बहु खाय पेट पर शिराओ देखाय शरीरमांथी मूत्रना जेवी गंध आवे [illegible] युक्त लागे ।

कोठानो गर्भ बीलीगर्भ अरणीमूळ अरडुसो दरडानु मूळ कांकचना पान एनो उकाळो करी शरीर उपर छांटवो तथा पावो × × × भांगरो आसोंध एमां तेल के चरबी पकावी मालीस करवुं × × × वज गळो कुष्ठ अने घीनी धुंवाडी देवी × × × लोट फुल सुरमो पारो मनशिळ खीर अने बाकळांनु बळिदान गोंदरे आपवुं × × × नदीने पाणीये वाळकने नवरावबुं ।

९ नैगमेय ग्रह—फीण ओके वचमांथी वळी जाय विव्हळ देखाय [illegible] उंचु जुवे चीसो पाडे चरबी जेवी गंध शरीरमांथी आवे बेशुद्ध थइ जाय ।

बीलीगर्भ अरणी करंज एनो उकाळो करी शरीर पर छांटवो तथा [illegible] × × × घउंलो गाळ अनंतमूळ गोमूत्र दहीनु पाणी सुर[illegible] मोथ एमां तेल पकावी चोपडवुं × × × घोडावज [illegible] दुधीयो वज एमानु कांइ गळे बांधवुं × × × [illegible] गीधना सुकेला मळनी धुणी अधराने आपवी × × × [illegible] मिठाइ एनु बळिदान पिपरना झाड नीचे आपवुं अने दुधाळा झाड नीचे बाळकने नवरावबुं ।

सर्वग्रहहर धूप—सरपती कांवळी लसण मोरवेल सरसव लीमडानां पान भींदडाना वाळ मरडासींगी रींछना वाळ अने वज समभागे बारीक करी गायनु तथा मधने करमो दइ धुंवाडो देवाथी बधी जातना ग्रहोनो नड... मटी जाय छे अने बाळकना ताव वगेरे रोग मटे छे अथवा माहेश्वर धूपनी धुणी देवी।

...शादि लेपन—सातवीण कुष्ट हळदर चंदन सरखे भागे वाटी आखे शरीरे मर्दन करवुं बधा ग्रहनी पीडा मटे।

अष्टमंगळ घृत—वज ब्राह्मी कुष्ठ सर्सव सिताब काळी तुळसी उपलसरी ... पिपर पटला वसाणामां गायनु घी पकाववुं आ घी चटाडवाथी कोइपण प्रकारनी ग्रहबाधा-बाळग्रहोनी नडतर थाती नथी हमेशां चटाडवाथी बाळक बुद्धिमान स्मरणशक्तिवाळुं नीरोगी अने विद्वान थाय छे।

बाळरोगनां कारण—बाळकने धवरावनारी माता भारे वायडां नुकशान करनारां पदार्थो खाय छे आहार विहारमां अनियमित पणे वर्ते छे नावा धोवानो स्वच्छता राखती नथी कपडां अने बिछाना मलिन वापरे छे त्यारे तेना शरीरमां कोपेला वातपित्त कफ धावणने बगाडी बाळकने विविध रोग उत्पन्न करे छे।

वायुथी धावण बगडयुं होय तो पेट फुले, पेशाब अने झाडो कबज थाय, साद बेसे शरीर दुबळुं रहे. पित्तथी धावण बगडयुं होय तो झाडा थाय परसेवो वळे कमळो-शरीर पीळु देखाय तरश लागे शरीर तपेलुं रहे. कफ. शरदीथी धावण बगडयुं होय तो लाळ पडया करे कफ उधरस थाय घेन रहे सोजो चडे आंखो त्रांसी थाय उलटी थाय।

३ तरस शोष

धावणा बाळकने तरस लागती होय तो वाळो साकर अने मध माताने आपवुं अने बाळकने चटाडवुं तो तरस शोष मटे वखतो वखत खडसलीयानु पाणी पावुं।

४ गळुं पडवुं तालुकंटक सुकागरुं आगरुं आगळुं

बाळक पडवाथी बहु रोवाथी ताळवानां मांसमां कफदोष प्रकोप पामी आ दरद थाय छे त्यारे ताळवामां खाडो पडे छे धावतु नथी पातळा झाडा थाय तरश ... आंख गळु अने मोनी पीडा थाय डोक पातळी पडी जाय अने नमी ... नागरवेलनां पान ७ वाटी थेपली करी ताळवे मुकी ... ३ दिवसे काढवी शिशुसंजीवन अकेक चमची पावुं अथवा बाळारोग्य ... वडे गोळी पाणीमां घोळी पावी अथवा अष्टमंगळ घृत चटाडवुं अथवा ... कुष्ट समभागे खांडी कपडे चाळी आ चूर्ण १ थी २ रति अथवा संशमनी ... २ थी ६ पाणीमां पावी दाडमनी छाल इन्द्रजव पलचि अजमोद कोटानो ... वापुंभां समभागे खांडवां तेमांथी बाळकनी उमर प्रमाणे रति १ थी ६ ... लइ तेमां तुलसी पान ३ नाखी पाणीमां वाटी गरम करी पावुं।

बाळशोष हरीवटी—पलचि जायफळ जावंत्री लवींग हरडे राळ धावडीना फुल मोचरस बीलीगर्भ अजमोद अजमो पिपर अतिविष अफीण साकर

...तो वावडी ...गर खादरीनुं मस्तकी हिंगळो सुंठ केसर करमाणी अजमो वावडींग इन्द्रजव वापुंभा सालर दरेक शेर ०। बधा साथे खांडी कपडछाण करी पाका दाडमनी कळीना रसमां अथवा दाडमांपिंचांगना रसमां २ दिवस घुंटी मग जेवडी गोळी करी शरुआतमां सवार सांज अकेक देवो पछी बबे त्रण त्रण वधारी पाणीमां घुंटी पावी ।

५ बाळ रतवा महापद्मक

बाळकने माथुं अने मूत्राशयमां के लिंगना भागमां रतवा थयो होय तो बाळकनो जीव ल्येछे रतवा लमणामांथी हृदयमां अने त्यांथी गुदाना भागमां उतरे छे तेमज मूत्राशयमां थयेलो रतवा गुदामां जइ त्यांथी हृदयमां अने हृदयमांथी माथामां जाय छे x x x रास्ना कमळ चंदन जेठिमध बळदाणानु मूळ देवदार सरखे भागे खांडी गायना दुधमां वाटी थोडु घी नाखी चोपडवुं. दशांग लेप चोपडवो. सरसडो जेठिमध तगर चंदन पलचि जटामांसी हळदर दारुहळदर कुष्ठ वाळो समभागे खांडी गायना दुधमां वाटी तेमां जरा गायनु घी मेळवी चोपडवुं ।

वीसर्पहर क्वाथ—गळो अरडुसी परवळ लीमडाना पान हरडे बेडां आमळां खेरसार गरमाळो समभागे खांडी उकाळो करी पावो सुखड रतांजळी देवदार पाणीमां घसी चोपडवुं x x x रगतरोहडानु मूळ रतांजलि ...ता ढीमडानु मूळ मींढीआवळ. दुधीयो हेमकंद देवदार वीयो पदमख अगर ...यमाण करियातुं समभागे पाणीमां वाटी पावुं तथा डीले चोपड... रतवा ...य x x x गोरखनंबोळ पाणीमां वाटी पावुं तथा चोपडवुं तो र... ।

६ कथवो कुकुणक

मोतानु बगडेलुं धावण धाववाथी बाळकोने आ आंखनु दरद था... ...णामां पीडा थाय, खजवाळ आवे, पाणी पडे. बाळक कपाळ, आंख, ...ळया करे, प्रकाश तरफ जोइ शके नहीं अने आंखो उघाडी शके नहीं x x x ...रडे, बेडां, आमळां, लोदर, मारोडी, आदु, भोरींगणी बेठी तथा ...समभागे ...ांडी पाणीमां वाटी आंख उपर नवशेकुं चोपडवुं, मोटी हरडे घसी पावी, अमृतावटी ...थी ४ गोळी आपवी ।

७ डुंटीनो सोजो

डुंटीमां वायु कोपवाथी ते जग्याये पीडा थइ सोजो आवे. नाडु तणावाथी ...ते जग्याये वागवाथी एम बने छे. x x x माटीना पींडाने तपावी ...ना पर दुध रेडवुं तेमांथी जे वराळ निकळे तेनो शेक करवो x x x ...ळदर, लोदर घउंलो जेठीमध पना उकाळामां पकवेलुं तेल चोपडवुं तथा एज ...ोमडीयाना भुकाने डुंटी पर दाबवो ।

८ गुदानो पाक

पित्तना प्रकोपथी आ दरद थाय छे जात्यादि मलम के गुदभ्रंशशामक ...लम के सिंदूरादि मलम चोपडवो पिपळानो छाल तथा वडनी छालना

उकाळाथी ते भाग धोवो रसवंति चेाापडवी पावी शंखनो काचो भुको जेठिमध सुरमो पनो बारीक भुको करी गुदा उपर दाबवो ।

९ गुदानुं व्रण

बालकने मळमूत्रनी जग्याये धोइ साफ करवानी ओछी काळजी राखवाथी ते जग्याये खंजोळ आवतां खंजोळवाथी, गुदामां के आसपास फोडला थइ तेमांथी स्राव थाय छे पछी ए बधा फोडलानी जग्या एक थइ भयंकर व्रण-गुमडुं थाय छे. x x x शंखनो भुको (काचो) सुरमो काळो जेठीमध समभागे खांडी कपडे चाळी पाणीमा वाटी लेप करवो. हरडे घसी पावी. गळो पावी. महामंजिष्ठादि क्वाथ पावो ।

१० दांत आवतो वखतनां दरद

दांत आवती वखते बाळकने अनेक रोग उत्पन्न थाय छे तेमां खास करीने ताव, झाडा, उधरस, माथुं दुखवु, रतवा, आंख उठवी तथा बीजां आंखनां दरद के दुवळापणुं एमांनुं कोइ दरद घणेभागे थाय छे. ए रोग लांबो वखत टकता नथी के नुकसान करता नथी दांत आवी जाय एटले एनी मेळे मटी जाय छे ।

दंतोद्भेद गदांतक रस—अभ्रकभस्म, शंखभस्म, लोहभस्म माक्षिक भस्म पिपर पिपरीमूळ चवक चित्रो सुंठ अजमोद अजमा हळदर दारुहळदर जेठिमध देवदार रसवंति वावडींग एलचि नागकेसर वाळो कचुरो काकडाशींगी बीडवलण समभागे लइ गायना दुधमां मग जेवडी गोळी वाळवी दांत आवती वखते थतां हरकोइ दरदमां १ थी ४ गोळो पाणीमां पावी ।

धावडीना फुल अने पिपर समभागे खांडी मधमां कालवी दांत आववाने ठेकाणे पेढां उपर आंगळीवती घसवुं अथवा फुलावेल टंकणखार मधमां कालवी घसवो।

११ दुबळापणुं

सुवर्णभस्म कुष्ट अने वज समभागे मेळवो मध घीमां चटाडवुं अथवा ब्राह्मी शंखावळी सुवर्णभस्म समभागे मेळवी मध घीमां चटाडवुं अथवा सुवर्ण भस्म कायफळ श्वेत दूर्वा समभागे मेळवी मध घीमां चटाडवुं ।

एमांनो कोइ प्रयोग १ वरस सुधी बाळकने सेवन कराववाथी शरीर पुष्ट थाय छे अने बाळकनो बळ बुद्धि स्मरणशक्ति वधे छे ।

१२ बाळज्वर

माना कफळतोथी अने बाळकने उछेरवानी वीन आवडतने लीधे ताव आवेछे।

शिशुरक्षक तेल—राळ रासना चंदन कुष्ट आसोंध हळदर शतावरी देवदार जेठिमध मोरवेल कडु घउंलो बधा समभागे अने बधाथी ४ गणुं दहींनु पाणी अने तेटलुंज तेल विधिवत पकाववां आ तेल बाळकने शरीरे हमेशां चोळवाथी बधो जातना ताव उतरे छे ग्रहबाधा नडतो नथी अने बाळक नीरोगी पणे उछरे छे ।

૧૩ અછબડા

બાળકને શરીરે ચામડી જેવા રંગના કોઇપણ જાતની પીડા વિના મગ જેવડા દાણા થાય છે તે પછી મેળે બેસી જાય તે કફવાત પ્રકોપજન્ય હોય છે તેના પર મહાનારાયણ તેલ કે ષડ્બિંદુ તેલ ચોળવું દશાંગ લેપ કે સુગંધી મલમ ચોપડવો ।

કારણ—નાનાં બાળકોને સ્વચ્છ નહિ રાખવાથી પેટમાં બગાડો થવાથી અશુદ્ધ બગડેલાં દુધ કે ધાવણથી ગંદા બીછાનાં ઘોડીયાં કે હવાનો આવજા વિનાના મેલા મકાનમાં રાખવાથી ઘણીવાર તેવી હવા ફેલાવાથી થાય છે ।

ચિન્હો—એક કે બે દિવસ જરા તાવ આવ્યા પછી બીજે દિવસે છાતી વાંસો અને ખભા પર રાતા દાણા દેખાય છે પછી મોટા થઇ તેમાના થોડા ઘણામાં પાણી ભરાઇ મોતીના દાણા જેવા થાય છે અછબડાના દાણા શીળી જેવા થાય છે પણ થોડા અને છુટા છવાયા દેખાય છે તથા તેમાં પરુ રહેતુ નથી ।

પથ્યાપથ્ય—શરુઆતમાં એક બે દિવસ પાણી સિવાય કાંઇ આપવું નહિ બીજે કે ત્રીજે દિવસે પાણી જવી ગોળવાળી ઘઉંના લોટની રાબ આપવી અથવા મગનુ ઓસામણ પાવું ૪-૫ દિવસ પછી હળવો ખોરાક દેવો ઝાડો કબજ હોય તો હરડેની ફાકી કે મીંઢીનો ઉકાળો સાકર નાખો પાવો સંશમની ગોળી કે સુદર્શન ચુરણ પાવું ।

૧૪ બાળકનું મો આવવું

ચણકબાબ કેઘડાયો કાથો કાગદી બદામનાં મીંજ સરખે ભાગે વાટી બકરીના દુધમાં દિવસના ચોપડવું અથવા ફુલાવેલ ટંકણખાર કે તપખીર છાટવું હરડે ઘસી પાવી ।

૧૫ બાળકની આમણ

બાળકને આમણ નિકળતી હોય તો સુરણકંદના રસમાં સિંઘાલુણ વાલ ૨ નાખી આમણે ચોપડી બેસારી દેવી તો આમણ નિકળે નહિ ચાંગેરી ઘૃત ચટાડવું કે દ્રાક્ષાસવ પાવો ।

૧૬ મોટી ઉધરસ-કુકડીયા ખાંસી-ઉટાટીયું

કારણ—આ દરદ ચેપી હોવાથી એકાદ બાળકને થયા પછી તેના સહવાસમાં આવનારાં કે સ્પર્શ કરનારાં બીજાં બાળકોને થાય છે ઘણું કરીને દરેક બાળકને એક વખત થાય છે પછી બીજી વાર થતી નથી બાળકની માતાયે સ્વચ્છતા કે ખાવા પીવાની સંભાળ ન રાખવાથી થાય છે ૨ થી ૧૦ વરસની ઉમરના બાળકોને આ દરદ લાગુ પડે છે ।

ચિન્હ—આ દરદમાં ઉધરસ આવે ત્યારે સિસોટી જેવો વિચિત્ર અવાજ નિકળે છે આમાંથી ઘણાં બાળકો મરણ પામે છે આ ચેપી દરદ છે પહેલાં આઠ દિવસ થોડો થોડો તાવ આવ્યા કરે છે પછી સખત થઇ ઉધરસ ઉપડે છે ઉધરસ આવે છે ત્યારે બાળક નીચું જોઇ શ્વાસ વખતો વખત લઇ ઉધ્રસ્યા કરે છે

मो रातुंचोळ थइ जाय छे आंखो फाटी रहे छे थोडी वारे उधरस नरम पडे छे त्यारे रमते वळगे छे पाछी १५-२० मिनीटे के एक बे कलाके उधरस आवे त्यारे उपर प्रमाणे थाय छे दिवस करतां राते वधारे होय छे रातनुं जोर घटे त्यारे दरद घटवा पर छे एम समजवुं कोइवार एटला जोरथी उधरसे छे के बाळकने झाडो पेशाब थइ जाय छे अने मो नाक कानमांथी लोही पडे छे आ दरद १५ थी ३० दिवस सुधी रहे छे आ दरद मटी गया पछी थोडा दिवस खावा पीवानी संभाळ न राखवामां आवे अने शरदी लागी जाय तो पाछो उथलो मारे छे।

पथ्यापथ्य—बाळकने स्वच्छ हवा प्रकाशवाळा अने आजुबाजु गंदकी विनाना मकानमां राखवुं कपडां बीछानां साफ राखवां उननां कपडां पहेरावववां शरदी लागवा देवी नही बाळक धावतुं होय तो तेनी माये गरम खोराक खावो तेल मरचां खटाइ बजारु मिठाइ बंध करवां. बाळक मोटुं होय तो बजारना गांठीया भजीयां मिठाइ के तेलमां तळेली चीजो खावा देवी नहीं छातीये के वांसे महानाराण के नीलगीरी तेल चोळवु. भुख होय तोज खोराक आपवो. ताव होय तो दुध कांजी न देवुं. ताव न होय तो गरम करेला दुधमां चमचो (०। थी ०॥) तोलो गरम करेलुं गायनुं घी मेळवी दिवसमां ३-४ वखत पावुं. तुलसीनां पाननो रस आपवो ठंडी के चोमासानी मोसम होय तो निर्धुम देवतानी सगडी राखवा करवी गुगळ वगेरेनो धूप करवो गरणीना १०-१५ बी शेकी वाटी गोळनां गरम पाणी साथे पावां झाडा पेशाब लाल के नाकनो मळ दूर फेंकी देवां जरुर पडे तो परंडीया तेलनो जुलाब देवो लविंग भारंगी अरडुसानी छाल समभागे खांडी तेनो उकाळो करी ३ दिवस पावाथी ससणी भराणी उधरस उटाटीयुं मटे सिताबनां अढी पान पाणीमां पावां सुदर्शन तोलो ०। हळदर अने मोठु बबेआनीभार सातावनां पान १० थी १५ २ प्याला पाणीमां उकाळवुं एक प्यालो रहे एटले गाळी दर अकेक कलाके पावुं दुध चा काफीमां गोळ नाखवो।

बाळकास हरी गोळी—पळीयो लसण हींग इन्द्रामणानां मूळ सिंधालुण सरखे भागे वाटी आदुना रसमां गोळी मग जेवडी वाळवी २ थी ४ सुधी बाळकने उपर प्रमाणे देवी उटाटीयुं उधरस मटे उंटनु मूत्र मीठु नाखी पावाथी उटाटीयुं जाय।

बाळसमभद्र चूर्ण—काकडाशींगी अतिविष धावडीना फुल बीलीनो गरभ वाळो मोथ हरडे समभागे खांडवा मात्रा २ थी ८ रति सुधी मधमां आपवुं अथवा बाळारोग्य वटी बबे गोळी पाणी साथे वाटी पावी. संशमनी हमेशां खवरावावामां आवे तो आवुं दरद थतुं नथी।

१७ ओरी गोवरु मसूरिका

कारण—तीखां खाटां खारां क्षारवाळां विरुद्ध अजीर्ण उपर भोजन खराब अन्नपान खराब सडेलां शाकपत्र वगेरे खोराकथी कुग्रहनी नजर पडवाथी आखा देशमां वातावरणना बगाडथी पवन जळ वगेरे बगडी जइ बगडेला लोहीमां मळी जइ आ दरद थाय छे।

चिन्ह—प्रथम ताव आवे खजवाळ आवे शरीर तुटे बेचेनी रहे फेर आवे चामडोथी बोजा रंगनो सोजो थाय आंखो राती थाय. वायु प्रधान होय तो काळा राता खरसट तीव्र पीडावाळां कठण लांबो वखते पाकनारा मसूरनी दाळ जेवा दाणा थाय. पित्त प्रधान होय तो सांधा अने हाडकामां त्रोड कळतर थाय खांसी आवे शरीर कंपे बेचेनी चकरी आवे ताळवुं होठ जीभ सुकाय तरस लागे अरुचो थाय दाणा लाल पीळा के धोळा उपडे तेमां दाह अने वेदना थाय अने जलदी पाके x x x कफ प्रधान होय तो दाणा धोळा सुंवाळा जाडा खजवाळवाळा ओछी वेदनावाळा थाय अने पाकतां विलंब लागे x x x लोहीना दोषथी थयेल होय तो झाडा थाय शरीर तुटे दाह तरस अरुचि मोनो पाक आंखो उठवी नीर ताव ए चिन्हो जणाय ।

ओरी चामडीमांज होय तो पाणोना परपोटा जेवा फोडला दाणा थाय फुटे तो पाणी निकळे x x x लोहीमां उतरी होय तो रताश पडता फोडला थाय x x x मांसमांथी उत्पन्न थइ होय तो फोडला कठण सुंवाळा पाकतां वार लागे चामडी पातळी होय शरीरमां शूळ निकळे खजवाळ आव्या करे मूर्च्छा दाह तरश वगेरे चिन्ह जणाय x x x मेदमांथी उत्पन्न थइ होय तो फोडला चकरडा जेवा पोचा जरा उपडेला जाडा सुंवाळा वेदनावाळा होय तेमां बेशुद्धि ग्लानि संताप अने भयंकर ताव आवे छे x x x अस्थि अने मज्जा सुधी पहोंची होय तो फोडला चामडोना रंगना चपटा जरा उंचा वेदना बेचेनीवाळा थाय अने हाडकामां भमरीयुं बटकां भरती होय तेवी पीडा थाय आ जातनो ओरीथो २४ कलाकमां मरण नीपजे x x x वीर्य सुधी पहोंची होय तो फोडला काचा छतां पाक्या जेवा लागे सुंवाळा बहु पीडावाळा जडता बेचेनी मोह दाह उन्माद ए लक्षणो देखाय आनाथी २४ कलाकमां मरण निपजे ।

साध्य—जे ओरी चामडीमां के लोही सुधी गइ होय पित्त कफ दोषप्रधान होय ते साध्य छे आराम थइ जाय छे ।

कष्टसाध्य—वायुना द्विदोष पटले वायुपित्त के वायु कफनी ओरी कष्टे करी मटी शके छे ।

असाध्य—त्रणे दोषनां चिन्हो जणाता होय फोडला परवाळाना दाणा जेवा जांबुडाना फळना रंग जेवा अळशीना दाणा जेवा होय उधरस हेडकी तीव्रताव बकवाद गभराभण मूर्च्छा तरश दाह खराब वास ए चिन्हो देखातां होय मोमांथी नाकमांथी के आंखमांथी लोही पडतु होय श्वास लेतां गळामां अवाज थातो होय घेन होय ए बधां लक्षणो असाध्य छे ओरीनो जे दरदी नाकेथी घणो श्वास ल्ये तरश लागती होय वायुनो प्रकोप होय ते मरण पामे छे जे दरदीने कोणीमां कांडामां खभामां सोजो थाय ते बचे नहीं ।

सामान्य कारण—ओरी गरम ऋतुमां नानां बाळकोने निकळे छे गंदा बाळकोने थाय छे आ दरद चेपी होवाथी गाममां एकाद छोकराने निकळ्या पछी आखा गाममां फेलाय छे बाळकोने नवराववा धोवरावबानी सफाइ राखवामां आवे तो बची जाय छे ।

सामान्य चिन्हो—शरुआतमां शळेखम थाय छे आंख नाकमांथी पाणी पडे छे कफ छींको ताव तरश बेचेनी वगेरे जगाय छे श्वास जलदी चाले छे माथु घणुं दुखे छे ताव सखत आवी शरीरनो दाह फरी जाय छे पछी ओरीना दाणा देखावा मांडे छे अळाइओ जेवा दाणा देखाय छे आनु जोर शियाळामां घणु होय छे त्रीजे चोथे दिवसे डोक छाती मो उपर राती छांटो देखाय छे अने आखा शरीरे फेलाइ जइ वखत जतां जांबुडा रंगना थता जाय छे छांटो देखाया पछी ५-६ दिवसे तावनु जोर नरम पडे छे त्यारे उधरस झाडा थइ आवे छे।

सारवार—तावनु जोर होय त्यांसुधी पातळो खोरक देवो शरुआतना ३ दिवस सुधी दुध कांजी देवुं नहीं पातळी गोळ बाजराना लोटनी राब के मगनु ओसामण आपवुं दाह थाय तो धराख दाणा साकरनु पाणी थोडु थोडु पावुं झाडो कबज होय तो मींढो के हरडेनो उकाळो थोडो पावो शरुआतमां सफेद सुखडने घसी तेमां तलवणीनो रस नाखी पावुं।

वायुनी ओरीमां मजीठ वड पिंपळो सरसडो उंबरो ए बधानी छालने पाणीमां वाटी चोपडवुं x x x गळो जेठिमध द्राक्ष शेरडीनु मूळ अने चमार दुधलीनो उकाळो गोळ नाखी ओरीना दाणा पाकवा मांडे त्यारे पावो तो वायुनी ओरी मटे चोखा मसूरनी दाळ मगनी दाळ गोळ बाजरानो रोटलो बाजराना राब ए खोराक आपवो x x x पित्तनी ओरीमां लीमडानी छाल खडसलीयो काळीपाट परवळ मूळ चंदननो उकाळो पावो रतांजळी रतवा व्रण चिन्हो वगेरे जणाता होय तो ते पण शमे x x x परवळ अने लीमडाना पानने वाटी तेनो रस पावाथी कफजन्य ओरी मटे x x x मरसडानी तथा उबरानी छाल खेरनां तथा लीमडानां पान सरखां वाटी कफ के पित्तदोष प्रधान होय तेमां चोपडवुं।

निंबादि क्वाथ—लीमडाना पान खडसलीयो काळोपाट पडाळ कडु चंदन रतांजळो वाळो आमळां अरडुसी धमासो समभागे खांडी बधी जातनी वधा दोषनी ओरीमां पावो x x x जो ओरीना फोडला अंदर पेसवा मांडे-समाइ जवा मांडे तो तेने फरी बहार काढवाना उपचार करवा कारण ओरी समइ जाय तो बाळक मरी जाय छे कांचनारनी छालना उकाळामां काची सुवर्णमाक्षिकना बारीक भुकाने वाटी चोपडवाथी सुकाइ जतां फोडला उपडे x x x मोमां के गळामां चांदां थयां होय तो आमळा जेठिमधनो उकाळो करी तेमां मध नाखी कोगळा करावया x x x आंखमां फोडला थया होय तो थेगो अने जेठिमधनो उकाळो करी आंखे छांटवुं राखनो अथवा अडायानो बारीक भुको शरीरे भभरावो।

मसूरिका रक्षक रस—पारद गंधक अभ्रकभस्म चंद्रपुटी प्रवालभस्म लोहभस्म रससिंदूर टंकण हरडेदळ बेडांदळ हळदर आमळां धुंटेली सुखड जेठिमध मूळ सुंठ पिपर मरी नगोडनां बी घउंलो मामेजवो लोबान प्रत्येक तो. ५ पांच, शिलाजित गुगळ लींबोळीना मींज शतावरी आसोध प्रत्येक तो. १० दश कडु तो. ३० करियातु तो. २० गोरखमुंडो फळ तो. १० बधां साथे मेळवी

खांडी कपडे चाळी गायनु घी तो. २० नो [illegible] दइ अरडुसीनां पान जुइना पान खडसलीयो कोडामारी अने लीमडाना पान प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ सुकावी घुंटी कपड चाळी शीशो भरवो बाळकनी उमरना प्रमाणमां टंके २थी १० रति सुधी पाणी साथे बे वखत अपाय छे ओरी के शीळी निकळ्यां होय ते बाळकने आपवाथी बाळक बची जाय छे ओरीथी नुकशान थतु नथी अने ओरी माता शिळीनो उपद्रव चालते। होय त्यारे आनु सेवन करावबाथी तेना उपद्रवमांथी बची शकाय छे।

१८ शीळी शीतळा माता नीकळवा

शीळीनु दरद आयुर्वेदना मत प्रमाणे सात प्रकारनु थाय छे मह [illegible] नामनी शीळीमां प्रथम सखत ताव आवे दाणा मोटा थाय ते सात दिवसे निकळी रहे बीजा सात दिवसे दाणा पुरा भराइ रहे त्रीजे सप्ताहे सुकाइ जाय अने भींगडा उखडी जाय छे ए प्रमाणे २१ दिवसनी मर्यादा छे तेमां कोइ फोडला फुटे तो ते उपर अडाया छाणानी राख दाबवी अने लीमडाना पानथी मार्जन [illegible] तावमां पाणी ठंडु आपवुं उकाळेलुं आपवुं नहीं दरदीने शुद्ध पवित्र [illegible] अने ठंडी जग्यामां सुवरावबो अपवित्र माणसे तेनो स्पर्श करवो [illegible] घणे भागे औषध अपातु नथी।

शीतळानु दरद चेपथी लागु पडे छे काचां सडेलां फळादि खावाथी टाढां वासी खोराकथी घणे भागे बाळकोने आ दरद थाय छे अने तेना चेपथी मोटा माणसोने पण लागु पडे छे घणे भागे वसंत ऋतुमां थाय छे पण केटलाकनार गमे त्यारे पण फाटी निकळे छे।

शीतळानु विष शरीरमां दाखल थया पछी १२-१४ दिवसे टाढ आव सखत ताव चडे छे तावमां टाढ गरमी माथानो दुखावो वांसामां पीडा अने उलटीओ थवा मांडे छे पछी गळामां सोजो थुंकनो वधारो आंखनां पोपचां लालचोळ खराब दाग वगेरे जणाय छे मोटां छोकरांने घेन तथा [illegible] छे तावने त्रीजे दिवसे शीतळाना दाणा प्रथम [illegible] अने [illegible] [illegible] कपाळ छाती अने पग पर मालुम पडे छे दाणा [illegible] पहेला [illegible] छे के मादो ते जाणी शकातुं नथी कमर अने [illegible] अति वधु उलटी ते घणीज थाय छे [illegible] निकळवानो संभव छे सघळी स्त्रीने शीतळा निकळे [illegible] छे दाणा बहार देखाइ रहा पछी ताव नरम पडे छे दाणा [illegible] त्यारे पाछो ताव उथलो मारी सखत आवे छे तावने [illegible] दिवसे शीळीनो [illegible] दाणो देखाय छे ते लाल कठण अने झीणो होय छे ते दाणा उपर मोती बंधाइ तेमां पाणी भराय छे अने टोच पर झीणो खाडो पडे छे तेनी आसपासनी चामडी लाल थइ जाय छे बे दिवस पछी तेमां परु थवाथी ते पाणी डोळुं थइ जाय छे अने ते मोतीके फोडला जेवुं रुप ल्ये छे. बीजा बे दिवस पछी ए फोडलानो उपलो भाग काळो पडी करमावा मांडे छे कोइवार फुटी जाय छे अने ४-५ दिवसमां भींगडु खरी पडे छे आंखमां शीळी निकळवाथी सेंकडे ७५ टका दरदाओने आंखमां फुलुं पडे छे अथवा आंधळां थाय छे।

...नो रोटलो अने दुध साकरने ठेकाणे दुधमां गोळ नाखनो दुध चोखा कांजी घउना लोटनी राब वगेरे पेटमां बराबर भुख छे के नहि ते खात्री कर्या पछी खोराक आपवो सुदर्शनना उकाळो नवशेको दिवसमां ४-५ वखत पावो।

लींबोळीना मींज नेडाला मींज अने हळदर समभागे खांडी हमेशां बे आनोभार भुकाने ठंडा पाणीमां वाटी पावाथी शीळीनो विकार थातो नथी।

जेठिमधना मूळना बे आनीभारथी पावलीभार भुकाने केळना थांभलाना रसमां अथवा सुखडना घसारा साथे अथवा अरडुसोना रस साथे अथवा मध साथे पावाथी शीळीना दरदथी बची शकाय छे।

पथारी उपर मकानमां चोतरफ लीमडाना पान बांधवा पठवाड मोढे कोइने अंदर दरदी पासे दाखल थवा देवुं नही फोडकामां दाह-बळतरा थाय तो अडायानी राख छांटवी-दाबवी।

शीळीना तावमां सुखड अरडुसी मोथ गळो अने द्राक्ष पनो उकाळो पावाथी ओछो थाय छे।

जप होम बळीदान स्वस्तिवाचन दान महादेव पार्वतीनुं पूजन तथा शीतळा स्तोत्रनो व्राह्मण पासे धुप दीप करी पाठ करावचो तेथी शीळी-शीतळा शांत थाय छे शीळोनो उपद्रव चालतो होय त्यारे पण सवार सांज धूप दीप करी कुलेरनुं नैवेद धरी शीतळा स्तोत्रना ९ नव पाठ करावचामां आवे तो शीळीनो उपद्रव थतो नथी।

शीतळा स्तोत्र

अस्य श्री शीतळा स्तोत्रस्य महादेव ऋषिः अनुष्टुप् छंदः शीतळा देवता शीतळोपद्रवशांत्यर्थं जपे विनियोगः।

स्कंद उवाच भगवन्देवदेवेश शीतलायाः स्तवं शुभम्॥
वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम्॥ १॥
ईश्वर उवाच वंदेऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगंबरीम्॥
यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत्॥ २॥
शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः॥
विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति॥ ३॥
[illegible] तु कृत्वा संपूजन्नरः॥
विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते॥ ४॥
शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धगतस्य च॥
प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवितौषधम्॥ ५॥
नमामि शीतलां देवीं रासभस्थां दिगंबराम्॥
मार्जनीकलशोपेतां सूर्पालंकृतमस्तकाम्॥ ६॥
शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्तरान्॥
विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेकामृतवर्षिणी॥ ७॥
गलगंडग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम्॥
त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यांति ते क्षयं॥ ८॥

न मंत्रो नौषधं किंचित् पापरोगस्य विद्यते ॥
त्वमेका शीतले धात्री नान्यत् पश्यामि दैवतम् ॥ ९ ॥
मृणालतंतुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ॥
यस्त्वां संचितयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥ १० ॥
अष्टकं शीतलादेव्या यः पठेन्मानवः सदा ॥
विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥ ११ ॥
श्रोतव्यं पठितव्यं च नरैर्भक्तिसमन्वितैः ॥
उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ १२ ॥

शीळीने मळता बीजा रोग

कोद्रवा—वात कफथी कोदराना दाणा जेवा दाणा थाय छे शरीरमां कांटा वाग्या होय तेवुं दुखे छे ते दस के बार दिवसे पनी मेळे शांत थइ जाय छे कांइ औषध देवानी जरुर पडती नथी खदिराष्टकनो उकाळो के खदिरारिष्ट चमची चमची पावो ।

पाणिपद्मा—गरमी अने शरदोथी उत्पन्न थाय छे खजवाळ आवे छे उपर हाथ फेरवे ते सारुं लागे छे राइना जेवा दाणा थाय छे ते सात दिवसे पनी मेळे सुकाय जाय छे केसर कपूर नाखी घसेली सुखड चोपडवी ।

सर्षपिका—पीळा सरसवना दाणा जेवी फोडकीयो थाय ते पण पनी मेळे मटी जाय छे सुखड घसी चोपडवी ।

रोमा—लाल अने उपडेलां चांभां थाय छे पीडा थाय छे आने मगध देशमां हाम कहे छे आमा त्रण दी ताव रहे छे गळोनो स्वरस पावो ।

चर्मजा—आमां जीणो परुवाळो फोडीयो थाय छे ते एक बीजो साथे मळेली होय छे वच्चमां एक फोडकी काळी अने आजुबाजु मळेली बीजी फोडकीयो ए प्रमाणे थाय छे आने मगध देशमा चमर गोटी कहे छे दशांग लेप चोपडवो ।

१०. ससणी भराणी

कारण—शरदी लागवाथी वरसादना दिवसमां उघाडुं सुवाथी श्वास नळीमां रु धुळ के बाह्य रजकणो जवाथी धुंवाडो गंदो हवा लेवाथी तावथी फेफसां अने रक्ताशयना व्याधिथी भराणीवाळां बाळकनो स्पर्श थावाथी आ दरद थइ आवे छे त्यारे श्वास लेवाथी नळीयो सोजी आवी लाल थाय छे प्रथम ते पड कोरु होय छे पछी तेमांथी कफ शरुआतमां फीण जेवो अने पाछळथी पाकेलो पीळो के धोळो पडे छे आ सोजाने लीधे उधरस आवे छे तथा श्वास चडे छे ।

चिन्हो—तीक्ष्ण ससणीमां हमेशां ताव आवे झाडो कबज थाय जीभपर छारी वळे छाती भींसाय ससणी (सराण) बोले सुइ रहेवाथी खांसी वधे छे कफ बोले छे वराधमां छाती उपसेली होय छे पांसळां तथा पेट उछळे छे श्वासनो अवाज जाडो कफनु जोर वधु होय छे वराध ८ थी २४ दिवसमां मटी जाय छे के ८-१० दिवसमां मरण निपजावे छे ससणी जुनी थइ घणा वर्ष चाले छे अथवा तेमांथी दम के क्षयना रोग लागु पडे छे वराधथी घणा बाळको मरण

पामे छे. ए[illegible] ससणीमां उपरत्न थती अने कफ पडे छातीमां दुखे आणी रीते मरण पामतो नथी पण फेफसानां अने छातीनां बीजां दरदमां सपडाय छे ससणी अने वराध ६ महिनाथी २ वर्ष सुधीना बाळकोने थाय छे तो बहु संभाळ राखवी।

पथ्यापथ्य—खुल्ली सुकी हवा प्रकाश तडको सगडो भेज विनाना सुका थारडा उननां के जाडां खादीनां कपडां शेक प हितकर छे तुळसी बकान अरणी आकडा पत्नां पान बाफीने तेनी वराळ भी वाटे लेवरावयी भुखना प्रमाणमां प्रवाही गरम खोराक ओसामण वगेरे आपवुं कबजीयत होय तो हरडेनो घसारो के एरंडीयु के मोंढाआवळनो उकाळो सुंठ गोळ नाखी पावो।

लवींग गोरोचन अघेडानां बी गरणीनां बी खरसाणी वज्र अजमो वावडींग साथेर समभागे खांडी कपडे चाळी राखवुं मात्रा २ था ३ रति पाणीमां घोळा सवार सांज पावुं पाणीमां ठीकरां जमावा प पाणी पावुं एक माटीना ठीकरी लाल[illegible]ळ तपावी पाणीनी माटलीमां बुझावयी प ठीकरी जमावो कहेवाय।

अघेडानां बी पिपरीमूळ इन्द्रजव लविंग बधां पाणीमां वाटी पावाथी कफनां जाळां ससणी मटे. × × × लसण कळी ७ दोरे परोवी गळे बांधवाथी ससणी मटे. × × × कांकचीयानां मींज गरणी बी लसण कळी वाटी पावाथी ससणी मटे. × × × लविंग तावडीमां शेको तुळसी रसमां वाटी पावाथी ससणी मटे. × × × झोंपटीना बी मोंढाळनो गरम वाटी पावाथी उलटी थइ ससणीनां जाळां निकळे ससणी मटे।

ससणीमां बाळकने गळामां कफ बोले निकळी शके नहीं तो अश्वचोळी १ गोळी आपवाथी उलटी थइ कफ निकळी जइ आराम थइ जाय छे।

बाळतुत्थ वटी—मोरथुथु तोलो १ काचु अरीठाना बोनो मगज (मींज) तोलो १ साथे वाटी आदुना रसमां १ कलाक घुंटी मग जेवडी गोळी वाळवी गोळी १ धावणमां के बकरीना दुधमां आपवी उलटी थइ जाळां कफ निकळी ससणी-भराणी मटे केसर रती १ कस्तुरी मगना दाणा जेटलो पाणीमा वाटी प[illegible] देवुं २ वखत पावुं संशमनी नं. ३ एकथी ३ गोळी ३ टाणां पाणीमां वाटी पावुं।

नागरवेलनां पान ७ ने वाटी पाणी नाख्या विना रस काढवो तेमां आदु रस पावलीभार नाखी तेमां लविंग २ वाटी जरा जरा पावाथी वावली ससणी भराणी मटे।

बाळक रोतु होय अने छानु न रहेतु होय तो जायफळने गुलाबजळमां घसी आखे शरीरे चोपडवुं तथा ताळवे लगाडवुं तो तुरत रोतु रही जाशे।

२० थुलीयो

धावणा बाळकनी माताने अजीर्ण थवाथी के तेवा बीजां कारणे बाळकने आ दरद थाय छे तेथी मोंढामां वेदना थाय दुध के पाणी मुश्केलीए गळी शके मोंढामां जीभ पर ताळवा उपर अने घणीवार गळा सुधी सफेद रंगनां चाठां-चांदला पडे छे तेथी बाळक गभराय छे खांसी झाडो थाय छे मोंढामांथी लाळुं पडया करे छे।

मलमलना कपडाथी मो अंदर अने बहार लुइ नाखवुं काथो के खेरसार के तपखीर छांटवुं के मधमां कालवी चोपडवुं टंकणखार फुलावेलो मधमां वाटी चोपडवो गुलाबजळमां बावळनी छालनो उकाळो नाखी कोगळा कराववा हरडे घसी पावी हरडे गळो अने लींबडानो अंतरछाल पाणीमां वाटी मध नाखी २-३ वखत पावुं ।

२१ रंगीलुं-लुलीयुं

आमां प्रथम ताव आवी सांधा पकडाइ जाय छे मोटा सांधा के आंगळांना नाना सांधा पण सुजी आवे मुश्केलीए उठी बेसी सके उलटी थाय अन्नभर अभावो माथु दुखे शरीर तपेलुं रहे तरश लागे झाडो कबज पांच छ दिवसे आखुं शरीर लाल हींगळा जेवुं थइ जाय आ दरद मारक नथी १५-२० दिवसमां पनी मेळे आराम थइ जाय छे जे जे चिन्हो जणाय तेना उपचार करवा शरीरे सुखड चोपडवी खडसलीयानो उकाळो के महासुदर्शन चूर्णनो उकाळो करी पावो आ दरद बाळकोने वधु अने मोटा माणसोने क्वचित थाय छे गोळनुं पाणी १०० वखत गाळी पावुं ।

२२ गालपचोळां-गालपचोरियां

कानना हेठलो गालनो भाग सुजी आवे के साथे ताव होय छे ते पनी मेळे मटी जाय छे छतां वधु पडतो सोजो होय तो बाळकने पीडा थाय छे दशांग लेप के दशांग मिश्रलेप के सर्वपीडाहर मिश्रलेप चोपडवो देवदार घसी चोपडवुं जुलाब देवो अमृतावटी ३ गोळी पावी अश्वचोळीनो जुलाब आपवो ।

२३ बाळकनी आंचकी

पेटमां बादो थवाथी पेटमां जीवडानो उपद्रव वधवाथी दांत आवता होय ताव उधरस नबळाइ के मांये खावा पावानी संभाळ न राखवाथी आ दरद बाळकने थाय छे ।

आंचकीनु कारण तपासी उपचार करवो. झाडो कबज होय तो हरडे घसीने के परंडीयुं तेल पावुं खुल्ली हवामां बाळकने राखवुं शरीरे महानारायण तेल चोळवुं. आंचकोना प्रकरणमां कहेला उपचार नानी मात्राथी बाळकने पण करवा द्राक्षासव के कुमार्यासव पावो दवा पी शके नही तो परंडोयानी पीचकारी गुदा वाटे आपी झाडो काढवो माथे ठंडा पाणीनां पोतां जरुर जणाय तो मुकवां. अश्वचोळी १-२ गोळी आपवाथी झाडो आवी आंचकी मटी जाय छे रसराजनु एकाद टीपुं दुधमां पावुं कस्तुरी रति ०॥ अरधी के केसर रति १ मधमां घोळी पावुं के तेलमां मेळवी चोळवुं महालक्ष्मी नारायण रस ०। थी ०॥ रति दुधमां के आदु रस अने मधमां घोळी पावुं आंचकी घणे भागे झाडानी कबजीयत अने वायु शरदीनी थाय छे पटले दस्त लावनारा अने उष्ण उपचार करवा ।

२४ बाळपौष्टिक-नबळुं दुबळुं बाळक पुष्ट थाय

अश्वगंधा घृत—आसोंध तोला पांचने दुधमां वाटी तेमां ४० तोला दुध अने १५ तोला घी नाखी पकाववुं दुधनो भाग बळी जाय पटले गाळी लेवुं ए घी साकर साथे बाळकने चटाडवुं ।

बाळारोग्य वटी—वावडींग हरडेनी छाल गौमूत्रमां पकवेलो लोहभस्म दरेक तोला ५ अतिविष तोला १० शेकेलां कांकचीयानां मींज तो. १० गळोघन तोला ५ कडाछाल तोला ५ गोमूत्रनी तथा पोस्तना डोडाना उकाळानी भावना दइ मग जेवडी गोळी करवी २ थी ४ गोळी पाणीमां वाटी पावी ।

बाळागोळी— जायफळ वज वावडींग हरडे छाल कोडीयो लोबान प्रत्येक तोला ५ पांच, कमळकाकडीना मींज तोला २॥ इन्द्रजव तो. २॥ कांकचीया मींज तोला २॥ एळीयो तोलो ०॥ मीं आमली तोला ०॥ एलचि तो. २॥ रससिंदूर तो ० शेमळानी छाल शेर १ ना उकाळामां गोळी अडद जेवडी करवी २ था ४ गोळी पाणामां वाटी पावी ।

बाळपौष्टिक चाटण—गोखरु अरणी अरडुसी भोरींगणी प्रत्येकनां लीलां पंचांग शेर बे बे लइ खांडी ४० शेर पाणीमां उकाळवुं १० शेर पाणी रहे पटले गाळी लइ तेमां गोळ शेर ५ अने साकर शेर १० नाखी चासणी जेवुं थाय पटले आमळांनो भुको तोला २० हरडे तोला १० मुशळी आसोंध शतावरी वरियाळी तुळसीनां बी हळदर काकडाशींगी कौचां बळदाणा बोलीगर्भ लविंग सुंठ पिपर मंडुर मरी तज एलचि मेंआमली प्रत्येक तोला ५ पांच, लइ खांडी कपडे चाळी नाखी चाटवा जेवुं थतां सुधी पकववुं मात्रा ०। थी ०॥ तोला सुधी बाळकना बधा दरदमां अपाय तथा हमेशां चटाडवाथी बाळक पुष्ट थाय ।

बाळपौष्टिक सोगटी—जायफळ जावंत्रि लविंग चणकबाब बोडी अज मोद मागो एलचिदाणा गोरख तंबोळ सोनावनां पान मरडाशींगी प्रत्येक तोला १० दश अतिविष तोला ५ केसर तोलो १। सुंठ तोला ५ पोस्तना डोडाना उकाळामां बधाने घुंटी सोगटी वाळवी १ थी २ रात घसी पावाथी बाळक पुष्ट थाय बाळपौष्टिक सत्वार्क के शिशुसंजीवन नानो अकेक चमचो सवारमां पावाथी पण बाळक पुष्ट थाय ।

२५ बाळकना सर्व रोगना उपचार

सर्वौषधी स्नान—लींबडानां पान मरडाशींगी वज कुष्ठ शिलारस हळदर दारुहळदर कचुरो चंपानां फुल मोथ बधां सम भागे खांडी राखवां बाळकने नवराववुं होय त्यारे ५ तोला भुको पाणीमां नाखी उकाळी ठारी नवशेकुं रहे त्यारे ए पाणीथी बाळकने नवराववुं तो बाळक निरोगी रहे कोइ पण दरद थाय नहीं, थयुं होय तो मटी जाय छे. ग्रह बाधा नडती नथी ससणो वराध मोटी उधरस वगेरे हरकोइ दरदमां आ पाणीथी बाळकने नवरावाय छे ।

बाळग्रह निवारण धूप—शिव उपरनां फुल चोखा गुगळ सरपनी कांचळी लोबान राळ खोचडी खाखरो तुळसीनां मांजर लींबडानां पान देवदार लवींग गळो सरसव वज घोळीचणोठी इंद्रामणां करियातुं खेर सुखड पीपळो कळुं रेशमी लुगडुं बधां सम भागे खांडी गायना घीनो करमो देवो पछी हमेशां बाळकने आ धूपनो धुणी आपवाथी स्कंदग्रह अपस्मारग्रह शकुनीग्रह रेवतीग्रह

पुतना गंधपूतना शीतपूतनाग्रह मुखमंडिकाग्रह नैगमेयग्रह वगेरे ग्रहोनी झपटमां बाळक आवी गयुं होय तो साजुं थाय तथा बधां दरद मटे ।

शिशुसंजीवन (प्राही)—काळीद्राक्ष मण १ ने कचरी वाटी तेमां पाणी मण २ नाखी बे दिवस पलाळी राखी पछी तेमां धावडीनां फुल शेर २॥ हरडेदळ अतिविषनी कळी आसेंध शतावरी काकडाशींगी एलची लींडीपीपर चोपचीनी मरी सुंठ मजीठ लवींग सुखड कपुरकाचली वायडींग धाणा तुळसीपान देवदार प्रत्येक तोला १२ बार मध शेर १० सोनावनां पान तोला १० अरडूसीनां लीलां पान तोला २० लोहभस्म तोला १० साकर देशी शेर २० सोनानुं पातळुं पत्रुं तोलो १ एक बधां साथे मेळवी पेक बंध पीपमां नाखी राखवां दर अठवाडीये हलाववुं डोढ महाने बधांने गाळी शीशा भरी लेवा बाळकने ।। थी ०॥ तोला सुधी पीवराय छे बधा रोगमां अपाय छे हमेशां पावाथी बाळक पुष्ट थइ दीर्घायुषा थाय छे ।

न धावतु होय तो—हरडे अने आमळानुं सरखे भागे खांडेलुं चूर्ण मध के घीमां कालवी जीभ पर घसवु तो बाळक धावे ।

डुंटी पाके सोजो थाय तेमां—हळदर लोद्र घउंलानो अने जेठामधनो उकळा करी नवशेको उकाळो डुंटी पर रेडवो अथवा लुगडावती ते भाग पर ते उकाळानो शेक करवो ।

मरडो—अजमा जीरुं लवींग जायफळ बीडलवण सरखे भागे लइ जुदां जुदां तावडी पर शेकी खांडवां १ थी २ रति चूर्ण पाणीमां वाटी पावुं ।

उलटी—काकडाशींगी मोथ अतिविष सरखे भागे लइ तावडीमां शेकी खांडी राखवुं १ थी २ रती मधमां चटाडवुं ।

हेडकी—पीपर अने मरी समभागे खांडवां मध साकर अने बीजोराना रस साथे १ थी २ रती देवुं के एकला मधमां चटाडवुं ।

झाडा—सुंठ अतिविष मोथ वाळो इंद्रजव समभागे खांडवुं आनो उकाळो पावो।

लोहीना झाडा—मोचरस रांसामणी धावडीनां फुल पद्मकेसर समभागे खांडवां उकाळो करी मध नाखी पावो ।

आफरो पेट चडवुं तथा शूळ—सिंधालुण सुंठ एलची शेकेली हिंग भारंगी बधां समभागे खांडवां १ थी २ रती पाणी साथे पावुं ।

गळुं पडवुं—हरडे वज कुष्ठ समभागे खांडवुं १ थी २ रती मधमां चटाडवुं ।

मो आवी गयुं होय—दारुहळदर जेठीमध हरडे जुइनां पान समभागे खांडवां मधमां कालवी मो के गळामां अंदर चोपडवुं ।

कानमां परु-कान वहेवो—बेडां कुष्ठ हरताळ मनशिल समभागे खांडी तेमां तलनु तेल पकवी ए तेल कानमां नाखवुं अथवा कर्णामृत तेल नाखवुं ।

दाह-तरश—मोरपीछनी राखने पाणीमां घोळी मोमां चोपडवी ।

आंखनां दरद—दारुहळदर मोथ गेरु साथे वाटी बहार लेप करवो चमेडनु भरण के घीना दीवा उपर त्रांबाना टाममां पाणी रेडी मस पाडी ते मस घीमां कालवी ने कोरी आंजवी महाभुक्तांजन काळुं आजणमां मेळवी आंजवुं ।

चामडीना दरद-खस वगेरे—कनकबीज हळदर कुष्ठ राइ इन्द्रजव समभागे खांडी छासमां वाटी चोपडवुं ।

कपाण लागवुं—तडके रजळवाथी कपाण लाग्युं होय तो गायना घीमां के माखणमां वाटेलुं मीठुं कालवी पगनां तळा कांसानी वाटकीथी घसवां जुना मोळनु पाणी पावुं केसुडाने उकाळी ते पाणीथी बाळकने नवरावनुं ।

क्षुद्ररोग-नाना परचुरण रोग

१ अग्निदग्ध-अग्निथी दाझवुं

आज काल विलायती विलास अने साधनोनी विपुलता थतां प्रायमस जेवां साधनो द्वारा घणे भागे स्त्रिओना नसीबमां बळीमरवानुं विशेष लखायुं होय एम नजरे पडे छे तेमज कजोडां तथा गृहकलहनां कुटुंब क्लेशने लीघे बळी मरवाना के विघ्नरुप लागती निर्दोष स्त्रिओने बाळी नाखवाना बनाव पण हमेशां बनता रहे छे ते विशेष करी हिंदुओमां अने ते पण उंच्च गणाती हिंदु ज्ञातिओमां वधु बने छे ए शिवाय अनेक कारण दाझी जवानां थाय छे तेना योग्य उपाय करवा

बळी जवाथी माणसने आखा शरीरमां पीडा उपडे छे मोटा माणसो करत नानी उमरनांने वधु पीडा थाय छे शरीरनो वधु भाग माथुं छाती के गुप्त भा दाझे तो घणे भागे मृत्यु थाय छे साधारण बळे तो चामडा लाल थाय छे तेथ वधु बळे तो फोडला उपडे छे तेथी वधु बळे तो चामडी उपरनो पडदो बळ जाय छे तेथी वधु बळे तो उपली चामडी अने तेनी नीचेनी चामडी बळी जाय छे तेथी वधु बळे तो स्नायु धमनी अने रक्तवहिनी शिरा बळी जइ बळेलो भा काळो पडे छे तेथी अधिक बळे तो हाडका सुधी पहोंचे छे ।

१ ली अवस्था—ग्लानि थाय अंदरना अवयवोमां लोहीनो जमाव थाय ए स्थिति लांबो वखत रहे तो भयंकर परिणाम आवे शरीर ठंडु पडे नाडी क्षीण चाले वेदना न थाय ठंडी वधु वखत रहे ए खराब चिन्ह छे ए स्थितिमां मगजम लोही भराइ जइ रोगी मरण पामे छे ।

२ जी अवस्थामां ग्लानी ओछी थइ कांइ हुशियारी आवे दाह उत्पन्न था ते स्थिति आठेक दिवस रहे छे अंग गरम रहे कोइवार ताव चडे पेट अ छातीमां दाह थाय आंतरडाना भागमां व्रण पडे लोही मिश्रित झाडो के उलट थाय कोइवार ते दाह पेटमां रक्तवाहिनी शिरामां उत्पन्न थवाथी रक्तस्राव थ दरदी मरण पामे छे ।

३ जी अवस्था—आमां बळेलो भाग नीकळी जाळ छे जखममांथी परुने स्राव थाय दाडो ताव लागु पडी क्षीणता वधवा मांडे अने एक अठवाडीयाम दरदी मरण पामे छे घणीवार आमां धनुर्वा के रतवानो विकार उत्पन्न थाय छे

उपचार

थोडुं घणुं दाझेल होय तो ते भागने सादा पाणीमां बोळी राखवाथीदाह के फोडला थाशे नही तेथी वधुबळेल होय तो टोपरानुं अथवा तलनुं तेल अने चुनानी आछ सरखे भागे मेळवो रु भींजवी बळेला भाग उपर मुकवुं पछी तेने पवन लागे नही ते माटे रु दाबी गरम कपडुं वीटवुं उपरनुं निश्रण बखतो वखत रेडतुं जवुं ।

कळीचुनानुं पाणी—कळी चुनो तोलो १ लइ तेमां पाणी पोणा बे रतल नाखी मजबुत बाटलोमां नाखो २-३ मिनीट खुब हलावी बुच दइ ३ कलाक सुधी स्थिर रहेवा देवुं पछी उपरनी आछ धीमेथी बीजा शीशामां लइ बुचमारी राखवुं आ पाणी जरुर पडे त्यारे सरखे भागे टोपरानुं के तलनुं तेल मेळवी उपर जणाव्या प्रमाणे उपयोगमा लेवुं नानां बच्चां दुध ओकी काढे छे तेने २-४ टीपां दुधमां नाखी पावाथी दुध पचे छे मोटा माणसने पीवानी मात्रा ०। थी ०॥ तोलो छे ।

१ जव बाळी राख करी तलना तेलमां मेळवी चोपडवुं ।
२ त्रिफळा माटलोमां बाळी ते राख तलना तेलमां मेळवी चोपडवी ।
३ रेशमी लुगडांने बाळी तलना तेलमां चोपडवुं ।

अग्निदग्धशामक मलम—(रसो तंत्र) मीण गोवागरी, तेल मोगरेल यशद भस्मना योगथी बनावाय छे आ मलम दाझेला उपर कपडा पर चोपडी ते पटी मारवी ।

वह्निशमन मलम—(रसो तंत्र) आ मलमराळ अने तलनुं तेल बने छे तेथी पण दाह बळतरा शमे छे अने रुझ आवे छे ।

पथ्यापथ्य—दुध साबुचोखानो के घउना लोटनो साकर के गोळवाळी कांजी मांसरस (सुप) खोराकमां आपवुं पाणी उकाळी ठारी पावुं शरीरे के दाझेला उपर पवन लागवा देवो नही शरीर परनुं कपडुं सळगे तो एकदम भागवुं नही तेमा उभुं पण रहेवुं नही एकदम आळोटवुं अने जे कांइ जाडुं कपडुं हाथ लागे ते वती बळता कपडाने के शरीर उपर वींटाळी देवुं पटले पवन अटको जइ वधु सळगतुं अटकशे पाणी हाथ आवे तो शरीर उपर के सळगता उपर रेडी देवुं ।

२ रंगीलु

कारण—बहुखाटां बहुतीखां बहुतीक्ष्ण क्षारवाळां पदार्थो खानाराओने पेट बगडवाथी घणीवार आ जातनो ताव आवे छे आ ताव वायु पित्त अने रक्तना प्रकोपथी थाय छे ।

चिन्हो—आ ताव ओचिंतो आवे छे माथामां तथा आंखना डोळामां शुळ नीकळे छे शरीरनुं मांस तथा सांधाओ सुजी आवी तेमां वेदना थाय छे ताव आव्या पछी त्रीजे दिवसे चामडी पर राता छांटा छांटा जेवुं जणाय छे ते २४ थी ४८ कलाक रहे छे नाडी १२० थी १४० वार चाले छे आखुं शरीर तथा सांधाओ झलाइ जइ माणस ठुंठीयुं वळी जाय छे संधीवा प्रमाणे पीडा थाय छे

अने हाथ पग हलावी शकतो नथी पथारीमांथी उठी शकतो नथी उलटी अरुचि माथानो दुखावो कान नीचे शूळ पेट के कमरमां पीडा वगेरे दरद थाय छे ।

पथ्यापथ्य—चिन्हो प्रमाणे सारवार करवी पेट तपासवुं बोजो बादी के अजीर्ण होय तो खोराक बंध करी बे त्रण लांघण कराववी हमेशां बे त्रण झाडा थाय तेवी तजवीज करवी अभयादि क देवदार्वादि क्वाथ तोला १ भुकामां गरम छणछणतुं पाणी तोला १० थी १५ रेडी अरधी कलाक ढांकी राखवुं पछी गाळी गोळ साकर के मध नाखी पावुं १५ थी २५ दिवसमां दरदी सारो थइ जाय छे त्यारे शरीर परथी चामडीनुं झीणुं पड उतरी जाय छे ।

उपचार—सादो जुलाब देवो लांघण करावबी पकलुं महालाक्षादि के महानारायण तेल अथवा तेमां धतुरानां पाननो रस के वींछीडाना पाननो रस के अरणीनां पाननो रस मेळवी गरम करी चोळवुं ए तेल हाजर न होय तो सरसोयुं के तलनुं तेल गरम करी तेमां लीवडानां पाननी लुबदी नाखी ककडावी चोळवुं सांधामां बहु पीडा थाय तो अफीण वाळी दवा शामक तरीके आपवी ।

रक्तज्वरध्न रस—पारद गंधक फुलावेलो टंकण काची फटकडी शुद्ध हरताळ सुंठ पीपर मरी अभ्रकभस्म दारुडीनां मूळ कनकबीज वछनाग बधां सरखे भागे लइ चमार दुधली खडसलीयो अने काळीद्राक्षना उकाळाना एकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळी वाळवी अथवा भुको राखवी मात्रा ३ थी ६ रति मध साथे चटाडवुं उपर गरमाळो गळो कडुं अने लींवडानी छाल खडसलीयो समभागे लइ तेनो उकाळो पावो ।

वायु पित्त के कफ जे दोष प्रधान होय तथा चिन्हो जणाय तेवा पित्तज्वरने लगता अथवा जे दोष अने चिन्ह प्रधान जणाय तेवा तावना प्रकरणनी दवा देवी उपायथी वधु फायदो थाय छे ।

३ घा वागवो—घायल थवुं जखम

कारण चिन्ह—चाकुं अस्त्रो तरवार वगेरेथी कपायेला घसावाथी खेचावाथी पथरा वगेरेथी चुंदायेला खंजर सोइ छरा वगेरेथी भोंकायला झेरी जंतु के पशुओना नख दांतथी थयेला जखमोमांथी लोही पडे छे अने वधु लोही पडवाथी घणी वखत मरण पण थाय छे ।

शस्त्राघात रोपण अर्क—बाळवानो सादो स्पीरीट शेर ५ लइ तेमां बावळनी छाल तो. ५ चपडालाख तो. १० गुंद तो. ५ राजन तो. ५ पोळीयो तो. ५ हाडसांकळ तो. ५ आसोंधरानी छाल तो. ५ खाखरानी छाल तो. ५ अघेडानां लीलां पान तो. २० बधां साथे मेळवी ४ दिवस राखी मुकवुं पछी गाळी मजबुत बुचना बाटलामां भरी राखवुं आनो उपयोग करवो होय त्यारे कपडुं भींजवी जखम वाळी जगाए लोही निकळतुं होय त्यां मजबुत बांधवुं पछी बीजे दिवसे धीमे धीमे पाटाना बंध उखेडवा जो लाकडा जेवुं थइ गयुं होय तो उपलो अर्क तेना पर छांटी पोचुं करवुं बंध उखेडी मात्र जखम उपर चोटी गयेलुं कपडुं रहेवा दइ साधारण पोचो पाटो बांधी राखवो ।

घा तेल— लींबडानां पान तोला १० हींगळो मोरथुथु सिंदोर बोदार ढालकावबानी पीठ मजीठ बकरानां शींगडां दरेक ४ चार तोला सरसीयुं तेल तोला ४० पकावबुं लगाडवाथी बधो जातना जखम मटे ।

सुरको अंगुरी शेर १ एक बोदार शेर ०)= प्रथम बोदारने बारीक करी कपडछान करी एक माटीना टाममां सुरको बोदार साथे मेळवी पकाववुं येक तोला सुरको बळी जाय पटले उतारी गाळी शीशामां भरी राखवुं दसक तोला पाणीमां आ अर्कनां बे चार टीपां नाखी जखम धोवाथी रुझ आवे ।

अरणीनां पानने वाटी तेनो रस जखममां रेडी पाटो बांधवो तो ३ दिवसमा जखम रुझाय अघेडानां पानने वाटी घा पर थेपली मुकवी तुरत लोही बंध थाय ।

४ उंघमां पेशाब थइ जवो

कारण चिन्ह—आ दरद घणे भागे नानां बाळकोने थाय छे. मोटा माणसने मधुमेह के बहुमूत्र जेवुं दरद होय तोज थाय छे ६ थी १२ वर्षनां बाळकोने वधु थाय छे वधु गळपण शेरडी तळीयां तरबुच बजारनी मिठाई के नुकश चीजो तथा चा पीवानी वधु टेव वाळां बाळकने तुरत लागु पडे छे ।

मूत्रांकुश रस—लोहभस्म बंगभस्म अफीण बीलीनोगर्भ चणकबाब नागकेसर केरीनी गोठली आंबुना ठळीया अंजीर धराख रससिंदुर प्रत्येक एकेक तोलो लइ जांबुनां पाकां फळना रसमां घुंटी चणे रती जेवडी गाळी वाळवी दिवसमां २ था ६ गोळो दुध साथे आपवी पथ्यमां गळपण आर्डु खाटुं आपी इच्छा विना थइ जातो पेशाब अटके छे तथा मधुमेह बहुमूत्र सोमरोग प्रदर अने प्रमेहमां पण घणो गुण करे छे ।

५ उंघ नही आववी–अनिद्रा–उंघ ओछी आववी

कारण चिन्ह—तावथी तावनी गरमीथी वायु प्रकृतिथी उधरसथी श्वास चडवाथी जीवडाना उपद्रवथी पेटमां वायु भराइ जइ पेट चडी आववाथी अम्लपित्तथी वानी पीडाथी मगज खाली थवाथी उन्माद-गांडपणथी विचारवायुथी क्रोधथी शोकथी भयथी आघातथी अप्रियस्त भळवाथी नुकसान थवाथी रात्रे पेट तणाय तेटलुं खावाथी काफी चाना वेधाणथी उंघ उडी जाय छे के बहु ओछी आववानुं दरद थाय छे ।

उपचार—निद्रानाशनुं जे मुख्य कारण होय ते तपासी दूर करवुं दस्त साफ लाववो वाइडां गरम पदार्थ चा कोफी अथाणां अजीर्ण करनारां पदार्थो तजवां खोरक सादो लेवो घी दुध विशेष खावां ।

निद्राप्रद क्वाथ—मोथ वावडींग नागकेसर चणकबाब तज एलची तमालपत्र अतिविष लवींग गळो वडनी वडवाइ पाकेलां उंबरां मीठां बोरनी सुकवणी धराख खजुर खडसलीयो पाकेलां अंजीर जडदालु बधां सरखे भागे लइ खांडी तेमांथी १॥ तोला भुकीमा ३० तोला पाणी मुकी उकाळवुं पछी गाळी तेमां २ थी ३ तोला साकर मेळवी पावुं उंघ आवे तथा उंघ उडी जवाथी थनारां

दरद मटे झाडा मरडा दाह अम्लपित्त लोही पडवुं वगेरे दरदमां पण फायदो करे छे आ क्वाथ साथे महाचंद्रकळानी गोळी ३ थी ६ लेवाय छे ।

निद्रावर्धन रस—पारद गंधक शुक्तिभस्म बंगभस्म अभ्रकभस्म प्रवालभस्म प्रत्येक तोला ५ शिलाजीत त्रिफळा गुगल कडुं प्रत्येक तोला १० गजपीपर सुंठ चणकबाब एलची लवींग जायफळ तज रास्ना कांकचीया शेकेला उपलेट वावडींग सिंधालुण प्रत्येक तोला ५ लइ बधाने विधिवत् साथे मेळवी मेंदीना रसमां गोळा चणोठी जेवडी वाळवी २ थी ६ गोळी पाणी साथे आपवी कोइपण कारणथी उंघ न आवतो होय तो आ गोळी ४ दिवसमां फायदो करे छे ते शिवाय दाह बळतरा अम्लपित्त खाटा घचरका पेशाबनी बळतरा वगेरे दरदोमां पण अपाय छे ।

१ रतांजळी रती १ गोळना पाणीमां घसी आंखमां आंजवुं सुखे उंघ आवे ।
२ अघेडी काकजधानी जड मुखमां राखवी अनिद्रा जाय उंघ आवे ।
३ मनसील मधमां आंजवुं निद्रा आवे ।
४ खसखस घी खांड खवरावबुं ।
५ बिजोरु कपडे बांधी ओसीके मुकवुं निद्रा आवे ।
६ गरमालानां बीनो मगज तरबुचना बीनो मगज सरखे भागे घुंटी आंखे आजवुं निद्रा आवे ।
७ सर्पनी कांचळीने रुनी वाटमां वींटी तेलनो दीवो करी काजल पाडी आंखे आंजवुं ।

६ उंघ बहु आववी–घेन–उंघणापणुं

कारण—कफप्रकृति होवाथी शरदी लागवाथी शरदी प्रधान तावथी सन्निपात ज्वरथी तावने लीधे तथा स्वभाविक रीते उंघण स्वभाव होवाथी माणसने उंघ बहु आवे छे त्यारे उंघ ओछी थाय तेवा उपाय करवा ।

निद्रानाशन रस—पारद गंधक सुंठ पीपर मरी अभ्रकभस्म लोहभस्म घोळो वछनाग टंकण सिंधलुण संचळ जीरुं वडागरुं बीडलुण तज लवींग बधां सरखेभागे लइ नगोडनो रस भांगरानो रस अरडुसीनो रस अघेडाना पाननो रस कुवाडीयाना बीनो उकाळो बुंदनो उकाळो अने आदुनो रस प्रत्येकनी अकेक भावना दइ चणोठी जेवडी गोळीयुं वाळवी ३ थी ६ गोळी टंके पाणी साथे आपवो उंघ घेन सुस्ती बेचेनी तथा उपरथी गरमी देखाय अने अंदरथी टाढ वाती होय तेमां उपयोगी छे ।

निद्रारि क्वाथ—सुंठ पीपर मरी तज लवींग रास्ना आसोंध कुबानां छोडवां तुलशीनां पान पीपरीमूळ बळदाणां वावडींग प्रत्येक एक एक तोलो शेकेलां बुंद १० तोला साथे मेळवी १ तोला भुकामां ४० तोला पाणी तथा ३ तोला गोळ अथवा साकर नाखी उकाळवुं दश तोला पाणी बळी जाय पटले गाळी तेमां दश तोला दुध मेळवी यथारुचि पीवुं कोइ पण कारण के दरदने लइ उंघ बहु आवती होय घेन सुस्ती बहु होय तेमां उपयोगी छे ।

७ अफीणनुं बंधाण छोडवा माटे

अफीण व्यसन हरीवटी—राती करेणनां मूळनी छाल घोळी करेणना मूळनीं छाल दाडमनां मूळनी छाल इंद्रामणां मूळनी छाल शुद्ध झेरकोचलां सम-भागे लइ खांडी चणोठी जेवडी गोळी पाणीमां करवी सवार सांज बबे गोळी दुध साथे २१ दिवस आपवी अफीणनुं बंधाण छुटे दिवसे दिवस अफीण ओछुं करतुं आवुं ।

अफीण केसरी गोळी—धतुरानां मूळ अने फळ समभागे खांडी मग जेवडी गोळी करवी सवार सांज अकेक गोळी दुधथी आपवी घउंनो लोट अने घी साकरनो शिरो करी खवरावो ।

अफीणारि चूर्ण—कलोजीजीरुं खोरासाणी अजमो मेथी पिस्तां शोधेलो भांग समभागे खांडी राखवां ०। थी १ तोला सुधी अफीणना बंधाणना प्रमाणमां आपवुं उपर ३-४ तोला मावो खवरावबो क्रमे क्रमे अफीण छुटशे ।

अफीण मुकवानी जडी—कनक मूल अफीण लेता होय तेटलुं आपवुं ४ दिवस आपवुं माथे घी चोखा खांड साकर खावुं अफीण मुके. कर्पूर सुंदरी गोळी अफीणना मापथी चालु करी क्रमे क्रमे घटाडवी ।

८ इंद्रि जुलाब

(इंद्रिय जुलाव इंद्रि पखाळ—मूत्रविरेचन)

मूत्रनळीना रोग पेशाबनो गरमी के पेशाबने लगता बीजां दरदोमां इंद्रिय जुलाब आपवानी जरुर पडे छे तेथी मूत्रनळीमां रहेलो बगाड नीकळी जई दाह वगेरे मटे छे प्रमेहना दरदीने पण मूत्रविरेचन आपी औषध चालु करवामां आवे तो घणो फायदो थाय छे ।

मूत्रविरेचन चूर्ण—शुद्ध करेलो रेवंचीनो शीरो तोला १० साकर तोला १५ साथे खांडी हवाले चाळवां मात्र ०॥ तोलो वासी पाणी साथे आपवुं उपर बकरीनुं के गायनु दुध अने पाणी एक एक शेर मेळवी पाइ देवुं जमवामां छाश भात आपवा. जरुर पडे तो १ तोला सुधी चुरण देवुं ।

पाषणभेदादि योग—पाषणमेद शिलाजीत सुरोखार रेवतचीनी सरखे भागे लई खांडवां छाश पाणी अने दुध दरेक २० विश तोला मेळवी तेमां चूर्ण तोला ०॥ भार पाइ देवुं उपर छाश भातनो खोराक देवो ।

सिलाजत्वादि चूर्ण—शिलाजीत हजरते हाउ बावळनी पत्ती त्रणे सरखे भागे खांडवां मात्रा १॥ तोलो तथा साकर शेर ०। पाणी शेर ०॥। दुध शेर ०॥। बधांने मेळवी पावाथी इंद्रिय जुलाब लागे ।

शिवादि चूर्ण—मोटी हरडेदळ पाषणमेद गोखरु काळीधराख धाणा धमासो वावडींग सरखे भागे खांडवां तेमांथी ५ तोला भुकाने १॥ शेर पाणीमां उकाळी ०। शेर पाणी रहे एटले गाळी तेमां साकर तोला ५ पाणी शेर ०॥ दुध शेर ०॥ मेळवी पीये तो पेशाबनो जुलाब लागी गरमी मटे ।

९. खीली

हाथ पगनां आंगळामां पोंचामां पगना तळीयामां के हाथ पगमां कोइ पण ठेकाणे खीली नीकळी पीडा करे छे तेना पर नीचे प्रमाणे उपचार करवा।

लेप १—तलसरांनी राख कळीचुनो सरखे भागे लइ पाणीमां वाटी आंगळीनी खीली पर लोपरी भुको पाटो बांधवो २ के ३ पाटे मटी जाय।

लेप २—कुकडानी चरक होकानो गोळ चुनो समभागे लई गोमूत्रमां वाटी लोपरी मुकी पाटो बांधवो सात पाटे खोली मटे।

लेप ३—धावडीनां फुल गेरु धतुरानां पान सरखेभागे पाणीमां वाटी बांधवुं.

लेप ४—वज अने बीलीगर्भ उना पाणीमां वाटी चोपडी पाटो बांधवो।

लेप ५—आंकडनु दुध टां. ४ परंडी मींज टां. १ साबु टां. ०॥ अफीण चणा ३ भार तेल टां १ वाटी थेपली कर खीली उपर बांधवो खीली टळे।

लेप ६—आमळांने दुधमां राते पलाळी राखवां सवारे जोणां वाटी थेपली बांधो पाटो बांधवो ७ दिवस सुधी, तो सातपडो खीली अंदर सडो नीकळी जाय।

१० मांसाजीर्ण

हद उपरांत भुख विना के नियम विरुद्ध मांस खावाथी तेनुं अजीर्ण थाय छे तेम थाय तो तुरत जुलाब वगेरे उपायथी ते बगाड काढो नाखवो तेम करवामा न आवे तो तेमांथी गळत्कोढ पत्त लोही बगाड आंतरडांनो सडो के तेवां दरदो थाय छे मांसनां अजीर्णमां क्रव्यादवृहत सवार सांज वचे गोळी अथवा अजीर्ण कंटक सवार सांज बचे रती अथवा राक्षसमुख सवार सांज वचे रती पाणी साथे आपी शकाय छे आ पुस्तकने पाने ५६ मां अजीर्णना उपचार छे ते करवा।

(१) मांसनुं अजीर्ण थयुं जणाय तो दरदीने उभो राखी इच्छाभेदी गोळी १ थी २ मां म्राकर भुकी तोलो ०। मेळवी मोंमां नाखी उपर गायनुं के बकरीनुं नवशेकुं दुध ४० तोला पावुं जुलाब खुब लागी गया पछी सादो हळवो अने थोडो खोराक आपवो।

(२) खांड तोला ५ मां देशी परडीयुं तेल तोला २॥ दुध तोला ४० नाखी हलावी दरदीने उभो राखो पाइ देवुं पाया पछी ५-१० मिनीट आंटा मरावबा दस्त थइ बगाड नीकळी जाशे।

(३) नसोतर इंद्रामणानां मूळ हरडे धमासो सरखे भागे खांडी ०॥ थो १ तोलो भुकी १० नो गोमूत्र साथे पाइ देवी जुलाब लागी मांसनो भार नीकळी जाय।

११ लुखस-वसडी-त्वचा विकार

चिन्ह—आखा शरीरे घणी चळ आवे छे जीणी बारीक फोडलीयुं थाय छे खंजोळी खंजोळी लोही नीकळे छे पछी बळे छे चामडा लुखो खरसट थइ जाय छे।

महेन्द्र चूर्ण—पारद गंधक मनशीळ जीरुं शाजीरुं हळदर दारुहळदर हडताळ मरी सींदुर फुवाडीया बावची प्रत्येक ४ चार तोला लई तेमां घी तोला १०० पकाववुं चोपडवाथी लुखस खस दादर करोळीया वगेरे मटे आ पुस्तकने पाने १५७ मां कहेला कुष्ठ लोही बगाडना उपचार करवा।

लुग्वसमां—आरोग्यवर्धनी गोळी सवार सांज बन्ने पाणी साथे आपवी अभ्रकभस्म बे बे रती च्यवनप्राश अवलेह साथे चटाडवी ।

करोळीयामां—ब्राह्मीतेल लक्ष्मीविलास तेल चंदनादि तेल जात्यादि तेल वगेरे चोळवां लेडी क्रीम के लेडी स्नो चोपडवां ।

१२ हाथ पगनी व्या फाटवी

हाथ पगनी व्या फाटवी चीरा पडवा चामडी तरडवी हाथ पग उखळवा पाददारी

कारण चिन्ह—कोइने शियाळामां अने कोइने बारे मास व्या फाटी पीडा करे छे ते जग्यानी चामडी फाटी जइ चीरा पडे छे पीडा बळतरा थाय छे आ घणे भागे पगनी पेनीये के फणापर वधु थाय छे उघाडे पगे फरवाथी पग भींजावाथी के सुवावडमां गरम चीजुं खावाथी खोटी गरमीथी आ दरद थाय छे ।

मदनादि मलम—मीण सिंधालुण गुगळ गेरु घी मध राळ साथे मेळवी मलम करी चोपडवो ।

प्र. १ घी तावमां कीटुं नोकळे ते पगे हाथे चोपडवाथी व्या फाटी पीडा मटे छे.

प्र. २ मीण तोला २० घी तोला २० कपुर तोला ५ साथे मेळवी गरम करी एक जीव थाय पछले नीचे उतारी तेमां पाणी नाखी खुब मथवुं पछी पाणी काढी नाखवुं ते मलम चोपडवो ।

प्र. ३ त्रिफला पीपर सुंठ वायवींग गळो धाणा काकडासींगी मींढीआवळ पंचांग हळदर दारुहळदर अकलकरो नसोतर मजीठ ए खांडी जीणा हवाले चाळी तोला ०॥ थी १ भार वासी पाणी साथे आपवाथी हाथ पग उखळता मटे ।

प्र. ४ राळ गंधक आमलसागे टंकणखार सिंदोर हींगळो सोरठी मोरथुथु हीरादखण कंपीलो कंकु ए दरेक टां. २॥ मीण टां. १० घी शेर ०॥ गायनु मलम करवो हाथे पगे चोपडवुं तो हाथ पग फाटता मटे ।

प्र. ५ बकरीनु दूध शेर ०॥ काचु मेळववुं पछी दही थाय तेमां कंकु शेर ०॥ थाळीमां नाखी कांसाने वाटके घसवुं घडी १० सुधी पछे चोपडवुं पग हाथ उखळता मटे ।

प्र. ६ अकडानुं दूध शेर ०॥ गायनुं घी शेर ०॥ मीण टां. ५ सींदूर टां. ५ एकत्र करी गरम करवु पछे चोपडवुं पग फाटता मटे ।

प्र. ७ सरसव टां. १० ठीबमां सेकवा पारो टां. २॥ मेळवी घुंटवुं पछी गायनुं धृत मेळवी चोपडवुं पग फाटता मटे ।

प्र. ८ माण भेंसनी चरबी घी अघेडानो खार एनो मलम करी चोपडवुं पगे फाटेली व्या मटे ।

प्र. ९ गोळ मीठुं घी आंबलीना कातरा समभागे लइ तेमां बमणुं गोमूत्र मेळवी घुंटी तडके सुकाववुं घाटुं थाय पटले पगे चोपडवुं तो हाथ पगनी व्या फाटी होय ते बुराय कोमळ थाय ।

प्र. १० राळ सिंधालुण मध घी अने सरसीया तेलनो मलम करी चोपडवो.

प्र. ११. पोयोनां पान सरसब लींबोळीनां मींज मोचरस चोभडानां अने काकडीनां बी ए बधां बाळी तेना खारना पाणीमां सिधालुण नांखी परडीयुं तेल पकाववुं ए तेल चोपडवाथी हाथ पगनी व्या फाटेली रुझाय।

प्र. १२ देशी परडीया तेलमां रु. बोळी फाटी गयेल भागपर पोतां मुकी उपर पाटो बांधवो उघाडे पगे चालवु नही घरमां कपडाना जोडा पेरा राखवां

१३ बगासां-जृंभा

उजागरा करवानी टेव निद्रानुं अनियमितपणुं शरदी वायु प्रकोप वखतो वखत थतुं अजीर्ण अनि उपवास वगेरे कारणे बगासांनुं दरद थाय छे त्यारे वखतो वखत दरदी बगासां खाधा करे छे तेमां आंखा बळे घेरायेली रहे छे आंखोमां पाणी आवे छे माथुं भारे रहे छे दरदीने सारो पथारोमां सुवराववो यथेच्छ निद्रा लेवा देवी सरसीयुं तेल शरीरे चोळवुं दिवसमां ५-७ वखत नागर-वेलनुं पान खवराववुं स्वादिष्ट भोजन कराववुं

जृंभाहर चूर्ण—सुंठ पीपर मरी अजमा सिंधालुण समभागे खांडो ठंडा के नवशेकां पाणी साथे ०। थी ०॥तोलो सवार सांज आपवुं।

हिंगाष्टकचूर्ण ०। थी ०॥ तोलो अथवा वृहत् कर्पूराद ३ थी ६ गोळी अथवा शंखवटी गोळी ३ थी ६ पाणी साथे आपवी मृतसंजीवनी सुरा के सारस्वतारिष्ट १ थी २॥ तोला पीवराववो।

१४ कखवा

काखमां के आजुबाजु अचानक लाल रंगनी चामडी थइ जायेना दाणा जेवी के मोतीना दाणा जेवी फोडलीओ थाय आग बळे पीडा थाय।

१ कुवाडीयानां बीने बकरीना दुधमां वाटी गरम करी चोपडवुं।
२ गायनुं घी धोयेलुं तेमां जसदनी भस्म मेळवी चोपडवुं।
३ गोपीचंदनने धोयेला घीमां घुंटी चोपडवुं।
४ दशांग लेप लगाडवो.

१५ कांटो वागवो

हाथे पगे के शरीरना बीजा भागमां थोरनो के बीजो कांटो वाग्यो होय अंदर भांगी गयो होय अथवा नीकळी गया छतां तेना अंबाडने लीधे दुखावो पीडा के बीजो उपद्रव थयो होय तो नीचे प्रमाणे उपाय करवाथी कांटो अंदर भांगी गयो हशे तो पाकी नीकळी जाशे अने बीजा उपद्रव मटशे।

लेप—जायफळ काळांमरी कीडामारी पाणीमां वाटी लुबदी बांधवी।

लेप—सोपारीनो राख गोळ टंकणखार नागरवेलनां पानना रसमां घुटी लुबदी करी बांधवुं।

लेप—आंबलीनां पान गोळ वंशलोचन अडदनो लोट सरखे भागे बकरीना मुत्रमां वाटी चोपडी पाटो बांधवो।

१६ मसो-मस

कारण—गरम वस्तुओ खावाथी ते जग्याए लोहीमांना विकृतअणुओये गति रोकवाथी के तेवां बीजां कारणे थाय छे जन्मथी लोहीमां फेरफार थवाथी थाय छे मस केटलाक सजीव अने केटलाक निर्जीव होय छे निर्जीव मसो तंतुओ के मृत मांसकणिकाओथी बंधायेलो होय छे आंख डाढी डोक तथा शरीरना घणा भाग उपर थाय छे ।

१ सजीव मसाने शस्त्रथी कापी ते ठेकाणे डाम देवो ।

२ नाकना मसा—सिंधालुण संचळ बन्ने सरखे भागे लइ पाणीमां घुंटी गोळी वाळी चीकणी माटीना पोंडानी अंदर मुकी गोळो लाल थाय तेटलो पकाववो पछी तेनी बराबर कळीचुनो नाखी लसणना रसमां गोळी वाळी छायामां सुकाववुं पछी जरुर पडे त्यारे लसणना रसमां घसी लगाडवाथी ७ दिवसमां नाकना मसा खरी पडे ।

३ आंखना मसामां—काळां मरी कळीचुनो अने पारो सरखे भागे लइ पाणीमां घुंटी मसा पर चोपडवुं मूळमांथी मस सुकाइ जाशे ।

४ बधी जातना मसामां—सुंठ पीपर मरी संचळ मनसीळ चित्रकमूळ मोरथुथु फुलावेलुं दाडमीयो सोमल बधां साथे मेळवी घुंटी राखवुं प्रथम मसा उपर घी चोपडी पछी आ लगाडवाथी मूळमांथी मस सुकाइ जाशे ।

५ नागरवेलना पानना डींटीयांनो रस काढी चोपडवाथी मस मूळमांथी खरी जाय अथवा डींटीयुं कापी चपटीमां चोळी मसापर घसवुं ।

६ टंकण पाटीओ कळीचुनो मीठुं-लवण बधां सरखां लइ घुंटी बारीक करवुं तेमांथी चपटी भरी लइ मस उपर चोळवुं त्रण वखत चपटी नाखी चोळे एटले मसो मूळमांथी नीकळी जाय ते ठेकाणे लोही नीकळे त्यारे ए चूर्णनी चपटी दाबवी एटले लोही बंध थाशे मस फरीने उगशे नहीं. आ पुस्तकने १८५ मे पाने आना उपाय छाप्या छे ।

१७ काखनी बांबलाइ

(१) गोळ गुगळ धुंसो (धुंह) राइ सरखां लइ पाणीमां वाटी लोपरी करी बांधवुं बांबलाइ मटे आ पुस्तकने पाने २३४ मां कहेला बदगांठ्यना उपचार करवा ।

(२) दशांग लेप के दोषघ्न लेप गोमूत्रमां के पाणीमां वाटी लोपरी मुकवी ।

(३) कंकोडो ते।. ५ वाटी चाळी नरमूत्रमां कालवी पोटीसनी घोडे बांधवी ।

(४) आरोग्यवर्धनी गोळी अथवा किशोर गुगळनी गोळी सवार सांज बन्ने पाणी साथे आपवी ।

(५) स्त्रीना ऋतुनुं लुगडुं बाळी राख करी बांबलाइ उपर दाबवी ।

१८ हाथ पगनी कळतर

(१) प्रीयळानी पाकेली के काची पेपडी तोले १॥ पाणीमां वाटी पावी पगनी कळतर मटे ।

(२) अजमोद खापरीयुं जावंत्री केसर वावडींग वायुंभां अतिविश अगर-कालो एलचो जायफळ हींळळो मोचरस हरडेदळ लींबडानी सूकी सळी अफीण दरेक तोलो ०॥ साकर तोलो १॥ चणोठी जेवडो गोळी पानना रसमां वाळवी पगनी कळतरमां २ थी ४ देवी तथा झाडा मरडामां देवी ।

(३) मालकांकणी तोला ८० आसंध अकलकरो असेळीयो हलद्र दरेक तोलो ०॥ जुनो गोळ तोला ५ साथे गोळी चणीयाबोर जेवडो करवी १ थी २ प्रभाते खावी पगनी कळतर मटे ।

१०. लु लागवी—(सूर्यातप रोग-अंशुघात)

उनाळामां तडकामां चालवाथी सामो गरम पवन लागवाथी तडकामां उघाडे पगे फरवाथी लु लागे छे त्यारे कपडां काढो नाखो उघाडे डीले थइ टाढो पवन आवतो होय तेवां झाडवां हेठे बेसारवुं तथा पंखे पवन नाखवो. केळनां पान पाथरी ते पर सुवरावत्रुं टाढा पाणींमां भींजवेलां लुगडां शरीर पर ढांकवां माथे टाढु पाणी रेडवुं सुखड्य घसो आखे डीले चोपडवी एक सालनो जुना गोळनुं पाणी करो १०० वखत गाळी पावुं लु लागवाथी माणस बेभान थइ गयुं होय मूर्च्छा आवी गइ होय तो मृतसंजीवनी सुरा द्राक्षासव सारस्वतारिष्ट वगेरे बरफ नाखीने अथवा माटलाना टाढा पाणी साथे मेळवीने पावुं ।

काळो वाळो आमळां पाणीमां वाटी हाथ पगनां तळीये लेप करी उपर भीनु लुगडुं ढाकवुं गायनुं घी शरीरे माथे हाथे पगे चोपडवुं गायनुं घी के माखणमां सींधालुण जीणुं वाटेलुं कालवी हाथ पगनां तळीयांमा चोपडी कांसानी वाटकीथी घसवुं ।

सुखड वरीयाळी एलची शतावरी तरबुचनां बीनां मींज बदाम भांग बधाने वाटी तेमां साकर दुध पाणी मेळवी पावुं ।

मोतीनी पिष्टी २ रती च्यवनप्राश साथे के गुलकंद साथे चटाडवी ।

सोनानां पानां १ रती हरडे भुकी बे आनीभार प्रवालपिष्टी ३ रती मध माखणमां के माखण साकरमां चटाडवुं ।

सूर्यतापहरीवटी—मोतीनी पिष्टी प्रवालपिष्टी वैक्रांतपिष्टी माणेक पिष्टी पारो गंधक दरेक अकेक तोलो सोनानां पानां तोलो ०॥ चांदीनो वरख तोला २ चणकबाब एलची हरडेदळ आमळां बेडांदळ भीमसेनी कपुर जेठीमधनो शीरो दरेक ०॥। पोणो तोलो वर्धा साथे मेळवी रतवेलीओ भोंपाथरी भांगरो शतावरी विदारीकंद भुराकोळानो रस मुसंबीनो रस अने द्राक्षनो रस दरेकनो अकेक पट दइ चण्या जेवडी गोळी वाळी छाये सुकाववी दिवसमां ३ थी ४ वखत माखण साकर साथे अथवा पाणी साथे देवी लु लागवाथी के सखत गरमीथी बेभांनो थइ गइ होय तेमां आपवी तथा पित्त खोटी गरमी आंख्यनी बळतरा छातीनो दाह लोहीश्राव हरसमां लोही पडवुं स्त्रीओनो प्रदर प्रमेह रक्तश्राव नाखोरी मगजमांथी लोही पडवुं कळतर पेशाबनी बळतरा वगेरे दरदोमां पण उत्तम काम करे छे ।

२० आमण निकळवी-गुदभ्रंश

कारण चिन्ह—आ दरद घणे भागे नानां बाळकोने थाय छे मोटां माणसो बहु गरम वस्तु खाय बहु दारु पीए उंचेथी कुदका मारे पछडाट लागे हरसनी पीडा होय गुदानो रोग होय तेने लीधे आ दरद थाय त्यारे दस्त जतो वखते गुदानो भाग बहार नीकळे अने झाडो आवी गया पछी धीमे धीमे बेसी जाय अने केटलाकने बहु दबावे त्यारे पोडा साथे बेसे आमण साथे झाडा मरडानुं दरद होय तो दरदीने वधु वसमुं लागे दस्त जाय त्यारे घणो वखत बेसी रहेवुं पडे झाडानो खणस रह्या करे ।

उपचार अने पथ्यापथ्य—महाचंद्रकळा २ थी ६ गोळी मध माखणमां चटाडवी अथवा चंदनादि चूर्ण तोलो ०। घी साकरमां चटाडवुं अथवा चांगेरीघृत ०। थी १ तोला साकर मेळवी तेमां प्रवालभस्म चंद्रपुटी ३ थी ४ रती मेळवी चटाडवुं. प्रवालचंद्र पुटी वाल २ मुक्तापिष्टी वाल १ च्यवनप्राश तोलो ०॥ मेळवी चटाडवुं. फटकडीना पाणीथी ते भाग धोवरावबो गायनुं घी चोपडी आमणने बेसारवी तेने माछलानी धुणी देवी ।

गुदभ्रंशहरो वर्ती—गुगळ झेरकोचला अफीण सरखे भागे लइ तसुतसुनी वाटो करवी एक वाट गुदामां मुकवी लंगोट बंधाववी ।

गुदभ्रंश शामक मलम—काथो काळोपाठ बीलीनो गर्भ पलची चणकबाब गळो आमळां दाडमनी छाल प्रत्येक तोला ४ अने खाटी लुणीनी भाजी तोला ३० लइ उकाळो करी गाळी तेमां घी शेर १॥ ने पकाववुं पाणी बळी जाय पटले ते घीमां शंखजोरु तोला २ कपुर तोलो ०॥ साकर तोला १॥ नुं बारीक चूर्ण साथे मेळवी राखवुं ते चोपडवुं ।

चांगेरी घृत—काळो उंबरीनां मूळ रतवेलीओ (जळपीपर) लींडीपीपर चित्रो बीलीनो गर्भ शतावरी काळो हंसराज कोथमीर आदु अजमोद अंदरजव गोखरु लीलानुं पंचांग काळीपाठ केळनो कंद प्रत्येक तोला १० दश गायनुं घी शेर २० विश खाटी लुणीनो रस शेर ४० दही शेर ४० बधाने साथे मेळवी धीमे तापे पकाववुं पाणीनो अंश बळी जाय पटले गाळी लेवुं मात्रा १ थी ४ तोला आमणमां खास उपयोगी छे ते सिवाय संग्रहणी हरसमां पडतुं लोही हरसनो दुखावो पेटनो आफरो तथा पेशाबनी गरमी वगेरेमां उत्तम छे ।

(१) हींगळो मोचरस जायफल अफीण अजमोद दरेक टां. १। सवा, पलची नंग ४ लवींग नंग ४ अजनो खाकर विलो खारेकना गर्भ दरेक टा. १। सवा तुलसीनां पानमां गोळी मग जेवडो करवी १ थी २ गोळी आपवी आमण नीकळती अटके ।

(२) अडदनो आटो भांग पडवास दरेक टां. २ वे ए त्रणे वानां वाटीने ते भुको आमणने छांटवो तो आमण नीकळती अटके ।

(३) खेरीयानो गुंद तोलो ०॥ मगनु पीठु तोला २ घी साथे चाटवुं तो आमण नीकळे नही ।

(४) गोखरु लसण वाटी घी साथै लेप करवाथी आमण नीकळती अटके ।

(५) कुणां कमळनां पानने वाटो साकर नाखी पावुं अठवाडीयामां आमण मटे.

(६) भोंपाथरी अथवा रतवेलीबे। २ थी ४ भार वाटी साकर नाखी पावुं ।

(७) कोकम चित्रो खारी लुणी सुंठ काळीपाठ जवखार समभागे खांडी ०। था ०॥ तोलो गायनी छाश साथे आपवुं ।

(८) आमण नोकळी होय तेने गायना दुधथो खुब धोइ बेसारवी ।

(९) उंदरनी चरबी चोपडवी ।

२१ खाली चडवी

१ कळीचुनो हळदर समभागे मेळवी घीमां गोळी चण्या जेवडी करी सवार सांज अणटाणा गोळी पाणी साथे देवी दिन सातमां खाली चडवानुं दरद मटे ।

२ पूर्णचंद्रोदयनी गोळी २ थी ४ अथवा किशोर गुगळ २ थी ४ पाणी साथे देवी गुगळ वाळी दवा आपवी ।

६ महानारायण तेल चोपडवुं ।

२२ पाणी लागवुं–दुर्जल–जन्यरोगः

१ हळदर राइ समभागे खांडी वासी पाणी साथे सवार सांज ०। तोलो फाकवुं पाणी विकार मटे आ पुस्तकने पाने २३३ मां कहेल उपचार करवा ।

२ टंकण हळदर कपड छाण करी कुंवारना रसमां ०। तोलो पाणी साथे नरणे कोठे आपवी पाणी विकार मटे ।

३ मनसील वछनाग पारो मरि पीपर बधां सरखे भागे लइ धुंटी नागर वेलना पानमां चोखा १॥ भार नित्य खवराववुं पथ्य चोखा मग घउं घृत दूध आपवुं खटाश बंध करवी ।

४ काळां मरी गरम घीमां रोज ०। तोलो चाटवां ।

५ आकडानुं मुळ २ बे रती घीमा चाटवुं ।

६ गंधक शुद्ध करी लीबु रसमां चण्या जेवडी गोळी करवी दिवसमां २ थी ४ गोळी पाणी साथे आपवी ।

७ साकर अफीण लवींग जायफळ त्रणे अकेक दोकडा भार लइ नाळीयेरना गोटामां नाखी घउंनो लोट चोपडी गोळो करी अग्निमां पकावीये पछी वाटी भुको करी तोलो ०। भार फाकी पाणी साथे दिवस २१ आपवुं पाणी विकार मटे ।

२३ कपाण लागवुं

मोटां माणसो तथा नानां बाळको उघाडे पगे तडके फरे तडके तपेला पाणा रेती धुडमां बेसे के पेशाब करे अने रजळे तो कपाण लागे छे. तेथी ताव आवे छे शरीर तपे बळे झाडा थइ आवे आंख्युं राती थाय मोढुं रातुं थाय हाथ पगनां तळीयां लाल थाय बाळकोने कपाण जलदी लागी जाय छे माटे उनाळामां दिवसे १० थी सांजे ६ वाग्या सुधी बाळकोने तडके रजळवा देवां नही के आंबानी काची कैरी खाखटो आंबलीना कातरा वगेरे खावा देवां नही ।

(१) एक शेर केसुडाने एक घडा पाणीमां ३ कलाक तडके पलाळी बाळकने नवरावबाथी कपाण लागतुं नथी चैत्र वैशाख बे महीना सुधी दर अठवाडीयामां बेक वखत नवरावबुं ।

(२) वाटीलुं मीठुं माखण के गायना घीमां मेळवी हाथ पगनां तळां घसवां ।

(३) जुना गोळनुं पाणी करी १०-१५ वखत गाळी पावुं ।

(४) गळोनुं सत्व २ थी ४ रती साकरमां चटाडवुं ।

(५) संशमनी गोळी १ थी ४ पाणीमां घोळी पावी ।

(६) महाशुदर्शन तो. ०)= हळदर तो. ०)= मीठुं तो. ०)- तुळसीनां पान २० पाणी तो. १० मुकी उकाळवुं ५ तो. रहे पटले गाळी तेमां गोळ रुपीया ८॥ भार नाखी दिवसमा ४-५ वखत पावुं ।

२४ राफी-किडीयानगरू वल्मीक

आमां घणां छिद्रो होय छे अने स्राव नीकळ्या करे छे हाथे पगे थाय छे खजवाळ आवे छे दाह थाय छे आ दरदमां सोजो होय गंधाय मर्मस्थानमां थयुं होय तो असाध्य गणाय ।

(१) मनशीळ हळताळ भीलामां जीणो एलची अगर सुखड चमेलीनां पान ए बधामां लींबोळीनुं तेल पकावबुं राफीने गरम पाणी अने अरीठाथी धोइ आ तेलमां लुगडुं भींजावी माथे मुकवुं २४ कलाके पाटो छोडवो हमेशां तेम करवाथी एक महीने राफी मटे ।

(२) आरोग्येवर्धनी किशोर गुगळ केसरादी गोळी महामंजष्ठादि क्वाथ वगेरे दवा आपवो ।

(३) दोषघ्न लेपना भुकाने गोमूत्रमां वाटी तेमां उपन्नुं तेल मेळवी पाटो बांधवो.

२५ अकाळ मरण

जलमग्नो वृक्षादेः पतितो वज्राग्निना हतो मनुजः ॥
श्वासानयनक्रियया ऽऽनीते श्वासे प्रयत्नतो जीवेत् ॥१॥
यावच्छिथिलावयव२चोष्णशरीरश्चिकित्सितुं योग्यः ॥
जलमग्नमधः शिरसं कृत्वा निःसारयेज्जलं सद्यः ॥२॥
पार्श्वे शायितमास्ये स्वमुखेन धमेन्नलीययंत्रेण ॥
संपीड्यानयननयनविधिना जिव्हां च दर्शिनीयंत्र ॥३॥
तीव्रांजननस्योषधयोगा योज्या२च सन्निपातोक्ताः ॥
तालुनि हिरण्यगर्भघषेद्यावच्च रक्तसंयोगः ॥४॥ (रसोद्धारतंत्र)

पाणीमां बुडवाथी गळाफांसो खावाथो विजळी पडवाथी भयंकर भय लागवाथो भयंकर अप्रिय बनाव सांभळवाथी किल्लो झाडवुं घर अगासो वगेरे उपरथी पडवाथी मगज छाती पडखां लमणां लीवर बरल वृषण के तेवा मर्मस्थानमां सखत चोट लागवाथी, छाती दबावाथी वायु नळोमां बाह्य पदार्थ जइने श्वासनी गति अटकी जवाथो नानां बाळकने सखत चोट लागे के तेवा कारणे एकदम रोवामांडे अने श्वास वळे नही अने हृदय बंध थइ जाय तेथी, झेरी हवाथो गुंगळाय जावाथो आम अनेक कारणे श्वासनी गति रोकावाथी मनुष्यनुं आयुष्य होवा छतां मरण नीपजे छे.

आ वखते कृत्रिम श्वास लेवरावनानी क्रियाथी अने तेने लगता उपचारथी दरदीनो श्वास चालु थइ दरदी बची जाय छे ।

पाणीमां पडी मरण पामेलांने बहार काढ्या पछी तेने उंधे माथे टांगी पाणी बहार काढी नाखवुं अथवा माथानो भाग पकडन नमतो राखी मो उघाडुं करी जीभ चीपियाथी खेंची राखवी एटले पाणी नीकळी जाशे. श्वास बंध होय तो कृत्रिम श्वास चालु करवो प्रथम दरदीनां कपडां काढी नाखवां पछी सन्निपातमां के सर्पदंशमां कहेलां तीव्र नस्य के अंजननो उपयोग करवो. भुंगळी द्वारा फुंकमारी नस्य सुंघाडवुं ताळवे छेको दइ हिरण्यगर्भ के सन्निपात भैरव के अघोर नृसिंह जेवी तीव्र दवा घसवी चीपीया वती जीभ पकडी नाक बंध करी गळामां नळी द्वारा फुंक मारी श्वास चालु करवो ।

जीभने वारेघडीये खेंची ढीली करवी एटले छींक के उलटी थाय तो जीभने खेंची राखवी एटले श्वास चालु थाशे आम जीभ खेंचवी ढीली करवानी क्रिया एक मीनीटमां ८-१० वखत करवी. डोढ बे फुट पोळुं अने चार पांच फुट लांबु कपडुं लइ छाती उपर भरडो लइ सामसामा बे माणसे खेंचवा अने ढीला करवा एम एक मीनीटमां १०-११ वखत करवुं माणसने पेट नीचे ओसीकुं मुकी उंधुं सुवरावी वांसाना भागमां दाबवुं एटले छाती दबाशे दाबीने पडखावो करी फरी उंधुं नाखवुं आम एक मीनीटमां १०-१२ वखत करवुं वळी माणसने चीतुं सुवरावी वांसा नीचे एक के बे ओसीकां मुकी तेना पर सुवरावी पेट दाबवुं अने जीभ चीपीयावडे पकडी राखी मोढुं खुलुं राखवुं आम एक मीनीटमां १०-१२ वखत करवुं. माथे पाणी छांटवुं पछी माणसने चीतुं सुवरावी वैद्ये माथा तरफ उभा रही तेना बे हाथ कांडेथी पकडी प्रथम लांबा करी माथा तरफ खेंचवा तुरतवाळी छाती उपर वाळवा आम एक मीनीटमां १०-१२ वखत करवुं आम एक डोढ कलाक करवुं. छाणां के अडायां बाळी तेनी गरमां गरम राखमां नाक खुलुं राखी नखथी शिख सुधी दरदीने भारी देवो उपर नीचे राख दाबी दाबी भरवी ।

माणसने भुंगळी के नळीने गळामां राखी मो वडे फुंक सखत मारवी अने भुंगळी वाटे मृत संजीवनी सुरा आकरी ब्रांडी के दवा अंदर दाखल करवी आ वखते जीभने चीपीयावती पकडी जरा खेंची राखवी. महासरस्वती सुरा के बीजो सन्निपात ज्वरमां कहेली तीव्र दवा आपवी. आखे शरीरे सुंठनो भुको घसवो. ब्रांडी चोळवी. महानारायण तेलमां अर्धु नीलगीरी तेल मेळवी चोपडवुं डोढ बे कलाक उपचार कर्या छतां श्वासनी गति चालु न थाय तो दरदीने मरण पामेलु जाणी आशा छोडवी बीजां जेजे कारणे दरदीने श्वास बंध थयो होय तेमां श्वासनी गति चालु करवाना आ प्रमाणे उपचार करवा ते शिवाय जेजे कारण बन्युं होय तेने लगता उपचार करवा ।

२६ कुनख–खराब नख

१ टंकणखार काचो के फुलावीने पाणीमां कालवी नखना अग्र भागमां चोपडवो. दोवघ्न के दशांग लेप वाटी पोटीस बांधवी किशोर गुगळ खवराववो ।

२७ वृषणकच्छु–मुंवाळी जग्यानी धाधर

(१) छोराकसी गोरोचन मोरथुथु हडताळ रसवंती बधां समभागे लइ आटो छाशमां के लींबुना रसमां घुंटी चोपडवाथी वृषणना भागमां थयेलो खजवाळ सुकी लीली धाधर मटे । (२) कच्छुराक्षस तेल चोपडवुं ।

विषविकार–(स्थावर जंगम झेर)

प्राणिज वनस्पतिज अने खनिज एम त्रण प्रकारनां झेर चडे छे. सर्प वींछी कानखजुरो मधमाखी भमरी मींदडो वगेरे प्राणिज विष. अफोण झेरकोचलां धतुरो भांग भीलामां वछनाग वगेरे वनस्पतिज विष अने पारो सोमल वगेरे खनिज विष छे. तेना उपचार क्रमवार नीचे प्रमाणे छे ।

१–सर्पदंश–साप सरपनो करड डंख–नाग करडवो।

झेरी सर्प करडयो होय तो करडने ठेकाणे बे काणां होय छे पण त्रण त्रणनी बे हारमां छ काणां होय तो जेरी साप नथी एम मानवुं करडतांनो साथे झणझणाट थाय छे पछो फेर आवे न उबको उलटो करवानुं मन थाय छे पगमां जोर रहेतुं नथी श्वास घुंटाय छे अने मुश्केलीये श्वास लइ शके छे. नाडो उतावळी आंचका खाती चाले छे. बोली शकातु नथी जीभ टुंकी पडवा मांडे छे थुंक गळवानी शक्ति रहेती नथी जीभ बहार निकळे छे मोढे फीण कोइने आवे छे अने कोइने नथी आवतां. ठंडो परसेवो वळे छे बेभान थइ धीमे धीमे नवळो थइ मरण पामे छे. झेरी सर्प होय तो २ थी ४ कलाकमां मरण निपजे छे जो सर्प झेरी होतो नथी तो माणस मरतो नथी ।

तुरतनी सारवार—सर्प करडे के तुरत जखमथी २-४ इंच उपर पाटो मजबुत बांधवो के जेथी लोहीनुं हरवुं फरवुं बंध थाय पछी कोइ मजबुत माणस पासे झेर चुसाववुं चुसनारना मोमां चांदुं न होय के दांतना पेढामांथी लोही निकळतुं न होय चुसी चुसी 'सर्वविषहर' क्वाथना कोगळा करो जाय चुसवानुं न बने तो उंडो छेको दइ लोही वहेवरावुं धोरी नस कपाय नहीं तेम छेको देवो पछो दशवाळो भाग घासलेट तेलथी भरेला ठाममां अथवा केळना गरम करेला रसना ठाममां बुडाडवो विषवज्रपात रस अथवा नीचे लखेला रसोमांना कोइपण रसनी भुकी जखम पर दाबवी घसवी डंखमां लालचोळ करेलो सरीयानो डाम देवाय छे. पुरुषनु मूत्र पीवरावाय छे ।

विषवज्रपात रस—सोमल वछनाग टंकण मोरथुथु मरी मनशीळ हरडे अभ्रकभस्म कलगारी प्रत्येक तोला १० लइ केळना कंदनो रस कुकडवेलनो रस अघेडानुं पंचांग सरसडाना पान प्रत्येकना रसनी एकेक भावना दइ भुको राखवी पछी सर्पदंश थयेला माणसने ०। पा कलाके छछ रति मात्रा अघेडाना रस अथवा केळना थांभलाना रस साथे अथवा सरसडानां पानना रस साथे अथवा खाखराना मूळना क्वाथ साथे आपवाथी सर्पनुं झेर उतरे आ रसनी मात्रा ताळवे छेको दइ लोहीमां मळी जाय तेम घसवो आंखमां आंजवो नाके सुंघाडवो वींछीनां करडवाळाने तथा सोमल अफीण जेवां जेरने पण उतारे छे आनी मात्रा पाया पछी उपर दर ०। कलाके उनुं करेलुं गायनुं घी अथवा पुरुषनुं मूत्र पावुं ए वधु सारुं छे ।

मृत्युपाशच्छेदी घृत—आंकडाना मूळनी छाल कुकडवेल अघेडानुं पंचांग खाखराना मूळनी छाल सरसडाना मूळनी छाल नृमूत्र केळनो कंद प्रत्येक तोला ४० चाळीस उंदरकनी धमासो रींसामणी वेवडी शतावरी कळगारी मजीठ रास्ना तुळसी मरवो प्रत्येक तोला २० कुष्ठ गोरोचन उंदरकनी हळदर प्रत्येक तोला ५ बधांने कचरी केळना थांभलाना रसमां पलाळवां बधां वसाणांथी ४ गणुं घी नाखवुं २ दिवस पछी पकाववुं घी मात्र बाकी रहे एटले गाळी लेवुं आ घी विषवज्रपातनी मात्रा साथे आपवुं अथवा दर ०। कलाके गरम करी पावुं बधां स्थावर जंगम खनिज वनस्पतिज झेर उतरे ।

सर्वविषहर क्वाथ—आंकडानुं मूळ कुकडवेल धमासो नगोड करोयातुं वज अरणीनां पान सरसडानां पान मूळ फुल, अतिविषनी कळी मोथ हरडे खाखरानां मूळ केळनो कंद सिंधालुण वधां समभागे बधांथी अरधे वजने कुशनुं पंचांग खांडवां आ उकाळो एकलो अथवा कोइ पण औषध साथे पावाथी सर्पनुं वींछीनुं सोमल अफीण वगेरेनुं झेर उतरे छे ।

अरिष्टयोग—अरोठानां फळ पाकेलां सुकां रसदार १५ लेवां तेमां पाणी तोला २० नाखा उकाळवुं बे त्रण उफाणा आवे एटले नीचे उतारी खुब चोळवां एटले सफेद फीण वळशे पछी ए पाणी कपडे गाळी नाखवुं एटले आछा पीळा रंगनुं पाणी बनशे तेमांथी पांचक तोला पाणी पावुं चमची चमची करीने पावुं बधुं एकदम पाइ देवुं नहीं पा कलाकमां उलटी न थाय तो फरी बीजुं पांचेक तोला चमची चमची करीने पावुं पछी उलटी एकदम थाशे सर्प झेरी हशे तो उलटीमां लीला रंगनी जांइ हशे. उलटी लीला रंगनी न होय तो जाणवुं के सर्प झेरी नथी गमे तेम होय पण उलटी थया बाद सर्पनुं झेर उतरी जाशे उलटी थया पछी दरदीने गरम चा के गरम दुध पाइ गरम कपडां ओढाडी राखवां ।

(१) कुकड वेलना पान पाणीमां मसळी पाइ देवां सर्व विष उतरे ।

(२) इंगोरीयानो गर खावाथी सर्व विष उतरे ।

(३) मग मोळा रांधि बांधियें तथा गोपीचंदन घसी खरड करवो सर्पनो सोजो उतरे ।

(४) हींग टांक पांच खवरावीए तो सर्प विष आघुं न चाले ।

(५) बकरीनु दुध शेर २ मुशली शेर १। माहे रांधिए पछे छाये सुकवी जीणी खांडी भुको करी मुकीए पछे गौमूत्र साथे टांक २ आपवुं दीन त्रण तो समस्त झेर मात्र जाय ।

(६) इंगोरीआनां मींज हरताल नवसार साबु नेपाल गोटा टंकणखार वछनाग समभागे वाटी लींबु रसनी भावना ३ देवी चणीया बोर प्रमाणे पछे ते गोळी डंख उपर चोपडवी तथा पावी सर्प झेर उतरे ।

(७) तांदळजानां मूळ वाटी चोखाना धोण साथे पावी वार २-३ गमे तेवा सर्पनुं विष उतरे मरे नही ।

(८) समुद्र फळ पाणीमां वाटी घसी नाकमां टिपा पाडवां सर्प विष उतरे ।

(९) गरणी बिज ४२ मरी टांक २ जीणां वाटी घी साथे पावुं ।

(१०) फटकडी वाटी नर मूत्रमां पिये सर्प विष उतरे ।

(११) केरडानी जड घसी पावी तथा आंजवी सर्प विष उतरे ।

(१२) हींग वज्र घसी वकरीना मूत्र साथे पावी सर्प विष उतरे ।

(१३) शरसडानां मूळ जोणां चावी जावां अथवा वाटी पीवराववां अथवा चावीने दरदीने खवराववां सर्प विष उतरे उपर जुनुं घी पावुं ।

(१४) कडवीनाइनो गांठ्योनो भुको करी विचार करी आपवो तेथी उलटी जुलाब थइ झेर उतरशे ।

(१५) केवडीयो वछनाग पीळां फुलनो जो ते न मळे तो लाल फुलनो लेवो तेनी गांठ्य डंख उपर मुकवी एटले बेशुद्ध हशे मरी गयो हशे तो पण १० दिवस सुधीमां ब्रह्मरंधमां जीव होय छे तेथी गांठ्य मुकवी एटले झेर बधुं चुसी लइ गांठ्य फाटी जाशे अने दरदी जागशे ।

(१६) धोळां फुलना आकडानां मूळ खोदी तोले। १ पाणीमां वाटी पीव-राववुं एटले उलटी झाडा थइ झेर उतरी जाशे अने दरदी बची जाशे । आ अनुभव सिद्ध छे ।

(१७) भयंकर सर्प विष उतरे—सर्प विषथी निश्चेष्ट थइ जाय मरी जाय तो ३ कलाक सुधीमां आ उपाय थाय तो माणस जीवतो थाय अनुभवेल चम-त्कारी अने एकदम गुप्त राखवा जेवो प्रयोग छे ।

छछुंदरने पकडी तेनुं पेट चीरी तेमां २५ लवींग (लावां) तथा २५ काळां मरीना दाणा नाखी तुरत बंध करवुं लोही पडवा देवुं नही बंध करी उपर दोरा बांधी कपडुं वींटवुं पछी एक अगासी उपर के मकान पर कोइ चडे नही उपाडे नही तेवी जग्याये अने तडको पुरो लागे तेवे ठेकाणे ४० दिवस सुधी राखी मुकवुं तडके राखवुं ४१ मे दिवसे लेवुं ते छछुंदर सुकाइ गइ हशे पछी ते लवींग मरीने काढी लेवां शीशीमां भरवां सर्प दंशथी मरवानी तैयारीमां होय तेने अर्धुं लवींग अर्धुं मरी घसी जीभ पर चोपडवुं अने डंख पर चोपडवुं तुरत माणस जीवतो थाशे जो माणस मरी गयो होय बेशुद्ध थयो होय तो ताळवे छेको दइ उपर प्रमाणे ताळवे घसी ताळवे चोपडवुं तो तुरत जीवतो थाशे ।

आ प्रयोग बहुज बहुज गुप्त राखवो हजारो माणसो पर अजमावेल छे. एम बतावनारे कहेल छे. (छछुंदरने जनावर मात्र खाता नथी एटले तडके सुकाती हशे तेने कोइ नहीं अडे)

(१८) सरसडानुं मूळ चोखाना धोणमां वाटी पावुं ।

(१९) खाखरानुं मूळ चोखाना धोणमां वाटी पावुं ।

(२०) केळना थांभलानो रस दर ०। कलाके १० थी २० तोला पावो दसक शेर रस पीवाशे एटले झेर उतरी जशे दस्त अने पेशाब वाटे झेर नीकळी जशे कोइने उलटी पण थाशे ।

(२१) मोंपाथरी काळो हंसराज कणेरनां बी हळदर दारु हळदर गेरु आसोंध खेरसार समभागे मेळवी वाटी चोपडवुं ।

(२२) कासोंदरानां पान गलनां बी-भंगोडां, कणेर धोळीनां मूळ कुकडवेल वांझकंटोलीनो कंद आंख फुटामणां समभागे खांडी उकाळो करी पावो ।

(२३) कुवारनुं पंचाग तोला २० ने शेर २ पाणीमां उकाळवुं २-४ उफाणा आवी जाय पछले नीचे उतारी देवुं पछी तेमांथी १० तोला पाणी पाइ देवुं पम ०। थी ०॥ कलाकने अंतरे बधुं पाणी पाइ देवुं ।

(२४) टंकणखार घसी आंखमां आंजवो ।

(२५) मोरनी चरक तोलो ०॥ अने घी पाणीमां उकाळी पावुं ।

(२६) लसणनी कळी २० ने लींबुरसनी भावना दइ आंखे २ वखत आजवुं ।

(२७) कडवी तुंबडीनां बी गायना मूत्रमां वाटी पावां ।

(२८) करंजबीज पलाशबीज मधमां घसो आंजवुं ।

(२९) डुंगळी खवरावनी ।

(३०) वणना मूळ खांडी उकाळो करी पावाथी सर्प विष धतुरा विष स्थावर जंगम विष उतरे ।

(३१) हींग मरी मोरथुथु लींबोळी मींज भिलामां रायण ठलियानां मींज पुत्रजीवानां मींज नेपाल गोटा मींज दरेक टां. ९ लसण कळी टां १८ लींबु ५०० ना रसनी भावना २१ देवी त्रांबाने ठामे दिन रात्री घसोये पछे त्रांबाना ठामे मर्दीये दिवशे तडके राखिये तैयार थयुं. त्रांबाना ठाममां भरी राखवुं सर्पदंशमां थुकमां घसी अंजन करवुं दरेक अंजन आंखे आंसु आवे त्यां सुधी आंजवुं सर्प विष उतरे अंजनथी आंखने पीडा थाय छे दरेक जातना सर्प दंशमां अंजन आंज्या पछी आंख उपर बकरीना दूधनां पोतां बांधिये शांति थाय ।

(३२) काळीपाठ वांझकंकोडो (वांझकंटोली) पलास बीज समभागे लइ नागला दूधेलीना रसमां गोळी करवी आंजवी दुख उपर चोपडवी सर्प उतरे ।

(३३) लेप—धुसो धुंह मजीठ दळदर लुण वाटो लेप करवो सर्प विष उतरे.

(३४) मोरपीछ लींबडानां पत्र धूप करवो घरमांथी साप जाय ।

(३५) अंजन—अफीण साबु लींबोळी मींज रायणमींज हींग वज लोद्र मरी मरेठी हळदर ए वधां समभागे वाटी पाणीथी गोळी करवी थुंकमां घसी आंजवुं जमणे पडखे डंख होय तो डाबी आंखे आंजवुं डाबे पडखे होय तो जमणी आंखे आंजवुं ।

(३६) रतांजली शोधेल नेपाल गोटा एरंडी मींज लींबोळी मींज हींग अफीण लींब पत्र रसमां प्रहर १ मर्दी गोळी चण्या प्रमाणे वाळवी त्रांबा उपर गोळी पाणीमां घसी अंजन करवु अरधी आंखे सोजो चढे तो दहीं घेस बांधवी गुण थाय महा सर्प विष उतरे ।

(३७) लसणनी कळी टां. ४ मरी टां. ४ सापनी कांचली टां. ४ थोरनु दुध टां. १ मीठुं टां. १ लींडी पीपर टां. १ लींबुनो रस नाखो त्रांबानां तपेलामां मर्दी गोळी करवी आंजवाथो सर्प विष जाय उपर आंकोल जड घसी पावी सर्प विष उतरे.

(३८) चणोठी जड घसी अंजन तथा समुद्र फल नर मूत्रमां घशी अंजन आंजवु सर्प विष उतरे ।

(३९) वजनी धुणी घरमां देवी तो सर्प घरमां न रहे ।

(४०) समळीनी हगार्यनी धुणी देवी तो सर्प घरमां न रहे ।

(४१) अकलबेरनी लाकडी घसी आंखे आंजीये तो सर्प विष उतरे।

(४२) सर्प विष नस्य—पीपर सींधव मरी लींबडाना मींज बधां सरखे भागे पाणीमां वाटी चोपडीये तो सर्प विष उतरे।

(४३) ॥सिद्धधूपः॥

कपिकच्छुफलं मुस्ताऽर्कफलं सिद्धार्थकश्च संर्जरसः॥
भल्लातं धूपोऽयं समभागकृतश्च सिद्धाख्यः॥१॥
मूषकमत्कुणसर्पा नश्यंति विषैल कीटकाः सर्वे॥
चांचड मच्छर डांसा विषोर्णनाभाश्च जंतवोऽदृश्याः॥२॥

भेरवसींग (कौचानी आखी शींग) मोथ आकडानुं आंकोलियुं सरसव राळ भीलामां समभागे खांडी धूप करवाथी उंदर मांकड सर्प झेरी जंतुओ चांचड मच्छर डांस झेरी करोळीया अने आख्यथी न जोइ शकाय एवा जंतु मरी जाय भागी जाय छे.

२ वींछीनो डंख

चिन्ह—वींछी करडे त्यारे सोइ खोसी होय तेम जणाय छे पण थोडी पळमां दरद वधी पडे छे अग्नि बळे छे ५–१० मिनिटमां आखे शरीरे फेलाय छे बहु झेरी वींछी होय तो दरदीने पीडा साथे बेहद परसेवो वळे छे अने ठंडो पडी जाय छे. काळा पहाडी वींछीथी घणी वखत मृत्यु थाय छे।

१ विषवज्रपात १थी२ रति अघेडाना रस साथे पावो तथा डंख पर चोपडवो.

२ सरसडानां फुल वाटी पाणी साथे पीवराववां।

३ केळना कंदनो रस पावो।

४ नेपाळानां मींज लींबुना रसमां वाटी थेपली मुकवी।

५ इच्छाभेदीनी गोळी अथवा नाराच रसनी गोळी तोलो १ लींबुना रसमां वाटी चोपडवो।

६ अघेडानुं मूळ पाणीमां वाटी चोपडवुं तथा मूळ उपरथी नीचे उतारवुं.

७ सुरजमुखीना पान हथेळीमां चोळीने रस सुंघाडवो।

८ फटकडीनां पाणीनां टीपां कानमां नाखवां।

वृश्चिक विषहर लेप—हरताळ मनशील जवखार इंगोरीयांनो गरभ जीरु सरसडानां फुल प्रत्येक तोला ५ पांच नेपाळानां मींज तोला १० जवखार तोला ८ धतुरानां पाननो रस तोला २० साथे मेळवी राखवुं डंख उपर चोपडवुं तथा धुंवाडी देवी।

९ इंगोरीयांना गरभनी थेपली मुकवी तथा तेनी धुंवाडो डंख उपर तथा शरीरे देवी।

१० केरीनो छीर-काची केरी कापतां जे पाणी पडे छे ते शीशीमां भरी राखवो डंख उपर मुकवो।

११ सुंठने आकडाना दुधनी १२ भावना देवी पछी सोबटी करी राखवी छाये सुकववी पाणीमां घसी डंख उपर चोपडवुं।

१२ नेपाळानां मींज नवसार कळीचुनो अफीण मोरथुथु सरखे भागे लइ लींबुनी ३ भावना दइ सोगटी करवो पाणीमां घसी चोपडवुं।

१३ कंकोडां नेगळानां मींज मोरथुथु मरी सुंठ पीपर काळो वछनाग गंधक अश्वनख अफीण इंगोरीयांना फळनुं मींज नवसार समभागे लइ लींबुना रसमां सोगठी वाळवी पाणीमां घसी डंख उपर चोपडवी ।

१४ वींछी झेरी होय अने माणसने बहु बसमुं लागवा मांडे तो अरीठानां फळने पाणीमां उकाळी ते पावुं तो उलटी थइ झेर उतरी जाशे ।

१५ मीण उनुं करी डंख उपर मुकवुं ।

१६ तुळशीरस तोला ४ घी तोला २० उनुं करी साथे मेळवी पाइ देवुं ।

१७ वज तो. ०॥ हींग तो. ०॥ गायना मूत्रमां वाटी गोळी करवी घसी लगाडवी.

१८ जीराने पाणी साथे वाटी लुबदो करी तेमां थोडुं घी अने सिंधालुण नाखो थोडुं पाणी तथा मध नाखो गरम करी नवशेकुं चोळवुं ।

१९ हाडसांकळने वाटी थेपली मुकवी ।

२० डंख उपर आकडानां दुधनां टीपां ४-५ वखत मुकवा तुरत उतरी जाशे ।

२१ आकडानां पान चोळी ते नाकमां रेडवुं तो छींक आवी वींछी उतरी जाशे जेम छींक आवती जाशे तेम वींछी उतरतो जाशे *

२२ वींछी उपर मीण अने सोपारीनो भुको करी होकामां पीवो तो उतरे ।

२३ समलीनुं कोकडुं १ तेलमां भींजवी धुप देवो तो वींछी उतरी जाय ।

२४ केवडीयो वछनाग रातां फुलनो के पीळां फुलनो सींगडीयो वछनागनी गांठ घसी चोपडवी अथवा डंख उपर मुकवी पछी झेर चुसी लेशे ।

२५ आंकडानां फूल कळीचुनो मरी नवसार मोरथुथु साबु मींढोळ गंधक गोळ कंटाळा थोरना दुध साथे गोळी करवी डंख उपर चोपडवी वींछी उतरे ।

२६ ढेढ गरोळीने तेलमां तळी नाखवी पछी ते तेलनुं टीपु मुकवाथी तुरत वींछी उतरी जाशे ।

२७ मनशीळ सींधालुण हींग चोखी मध समभागे लइ गायना छाणना रसमां गोळी करवी डंख उपर चोपडवी धुणी देवी वींछी उतरे ।

२८ अघेडानां पानना रस चोपडवो ।

२९ चमार दुधलीनां पान वाटी वींछी चड्यो होय त्यांथी नीचे उतरता चोळवुं अने डंख पर थेपली मुकवी ।

३० मोरपीछ मीण गंधक वाटी गोळी चणीया बोर जेवडी करवी धुणी हींगना अर्कमां आ गोळी देवी डंखे लगाडवी ।

३१ नवसार गंधक हींग वाटी धुणी देवी ।

३२ घोळी साटोडीनी जड घसी चोपडवी पावी तथा देखाडवाथी वींछी उतरे.

३३ कळीचुनो साबु वाटी डंख पर लेप करवो ।

३४ इंद्रामणी मूळ घसी डंखे चोपडवुं ।

३५ मरी घसी अंजन करवुं वावडींग मोथ लींबोळी मींज सुंठ पीपर मरी दारुहळदर जीणां वाटी गौमुत्रमां गोळी करवी आंजवाथी वींछी उतरे ।

३६ आंकडानुं दुध अने घी मेळवी चोपडवुं तथा घी गरम करी सिंधव साथे पावुं वींछी उतरे ।

३७ पुष्यनक्षत्रे लीधेल तुलशीमूळ डंख हेठे राख्ये तो विष उतरे उंचे राख्ये तो विष चढे ।

३८ कपास जड मुखमां राखीने डाढे चावी फुंक देवी वींछी उतरे ।

३ मींदडीनो करड

मींदडो-बीलाडो (नर के नारी जाती गमे ते) करडयुं होय तो तेनुं झेर चडी माणस मरण पामे छे ढेढगरोळी भयंकर झेरी प्राणी छे. एक ढेढगरोळी एक हजार माणसनां मरण करवाने पुरतुं झेर धरावे छे तेने मींदडुं खोराकनी पेठे खाय जाय छे मींदडामां कुदरते बीकणपणुं दाखल कर्युं छे एटले तेना करडवाना बनाव क्वचितज बने छे ते खोजाय तो घणे भागे नोर भरावे छे तेथी झेर चडतुं नथी मींदडीना वाळ झेरी गणाय छे तेथी तेना स्पर्शने लइ ते हाथे पगे चोटी गया होय अने पेटमां जाय तो झेरी असर थाय छे तेथी मींदडोने अडवुं ए हिंदु धर्म शास्त्रमां निषेध ठराव्युं छे. सुधरेला लोको के युरोपीयनो अने एनी फेशनमां तणाता देशी लोको मींदडांने खास करी मींदडीने पाळे छे तेथा कोइ वार करडवानो प्रसंग आवे छे मींदडां बीकथी दूर भागे एज उत्तम छे सने १९४२ ना मे महोनामां अकलकोटना राज महेलमां एक रखवाळने मींदडी करडी हती तेनुं थोडा कलाकमां मरण नीपज्युं हतुं ते म्यांउ म्यांउ करवा लाग्यो हतो आंख्यु पीळी पडी गइ हती बगीचाना झाडमां लपातो हतो अने मींदडां जेवो बीकण स्वभाव तुरत थइ गयो हतो तेनो चेरो विचित्र विकृत थइ गयो हतो छेवटे थोडा कलाकमां मरण नीपज्यु हतुं ।

मींदडु करडे के तुरत ते माणसमां मींदडा जेवु बोकणपणु दाखल थाय छे आंख्युं पीळी थाय छे ते मींदडानो घोडयें ज्यां त्यां लपाय छे छुपावा प्रयत्न करे छे म्यांउ म्यांउ बोले छे अने २४ कलाकमां मरी जाय छे ।

१ खाखराना मूळनो उकाळो करी पावो तथा तेनु प्रवाही इन्जेक्शन वाटे लोहीमां भेळववुं ।

२ जुनु घी पावुं विषवज्रपात ०। थी ०॥ तोलो अथवा सोमल ०। थी ०॥ तोलो घी साथे पावो के माणसनो पेशाब पावो ।

४ ढेढगरोळी

आ भयंकर झेरी जंतु छे ते करडती नथी पण भुले चुक्ये प्रवाही वस्तुमां पडी जाय अने खबर न रहे अने ते खोराक खवाइ जाय तो मरण निपजे छे आना दरदीने महासरस्वती सुरा तथा शिरिपारिष्ट के तेवीं दवाओ आपवी ।

कोठानो गरभ चीमेडय आंकडाना बी सुंठ पिपर मरी बे जातनी करंज हलदर दारुहळदर आनो उकाळो करी पावाथो ढेढगरोळीनुं झेर उतरे ।

सरसडाना फळ मूळ छाल फुल अने पानडा एनो उकाळो करी घी नाखी पावो ।

कुतरां सिंह वाघ शियाळ रींछ नोळीयां नार वगेरे झेरी जंतुओ छे ते करडवाथी झेर चडे छे विचार करी तेने लगता उपचार करवा ।

५ कानखजुरानो डंख

१ सर्वकीट विषारि चूर्ण—वज हिंग वावडींग सिंधालुण गजपोपर काळीपाठ अतिविष सुंठ पीपर मरी खाखरानां मुळ समभागे खांडवां ०। थी ०॥ तोलो चूर्ण पाणी साथे पावुं तथा डंख उपर चोपडवुं ।

२ घीने गरम करी ते साथे सिंघालुणने वाटी चोपडवुं ।

३ हळद्र दारुहळद्र गेरु मनशीळ समभागे वाटी चोखाना धोणमां वाटी चोपडवुं ।

४ सरसडानां बी हरडे आमळां बेडां अजमोद समभागे लइ चोखाना धोणमां वाटी चोपडवुं ।

५ सरसडानां बी पान मूळ फुल छाल समभागे लइ गौमूत्रमां वाटी चोपडवुं ए उपचारोथी बधी जातनां जंगम विष उतरे ।

६ साकर अने घी मेळवी लगाडवुं ।

७ हाथीनो लादनी धुंवाडी देवी ।

दीवानुं बळेलुं—तेल चोपडवुं तथा तेमां रुनु पोतु भींजवी मुकवुं तत्काळ शांत थाय ।

६ जुंवानो करड

१ हरडे अने मीठुं पाणीमां वाटी चोपडवुं ।

२ मीठुं थुंकमां मेळवी चोपडवुं ।

३ दशांग लेप गरम करीने चोपडवो ।

७ भमरी मधमाखो कांदरनो डंख–विषमक्षिकादंशः

लेप—गेरु भुतडो धोळीमाटी आंबाहळद्र, कपुर भोंपाथरी काळोहंसराज खाखरानां फुल एमांथो जेटलो चोज हाजर होय ते साथे वाटी चोपडवुं ठंडा उपचार करवा. डंखनी जगाये कुंची दाबी लाळ काढी नाखी अथवा सोयवती लाळ काढी नाखवी तो सोजो थशे नहिं. आंख नाक गाल गळुं के तेवी जगाये डंख थयो होय तो तुरत चांपतां उपाय लेवां ।

१ सिंघालुण सुंठ संचळ मरी सरखे भागे लइ मामेजवाना रसनी भावना दइ छाये सुखववुं पछी जरुर पडे त्यारे पाणीमां वाटी चोपडवुं ।

२ महासुदर्शन चूर्णनी थेपली मुकवी ।

३ सुवादाणा सिंघालुण बेइ पाणीमां वाटी चोपडवुं ।

४ धोळी माटी चोपडवी ।

८ झेरी करोळीयानुं झेर—(Button Spiders)

(बटन स्पाइडर्स) आ जंतुनो उपद्रव हिंदुस्तानमां क्यांय होय एवुं जाणवा वांचवामां आव्युं नथी छतां क्यांय ए उपद्रव थतो होय तो बनवा जोग छे. प्राचीन ग्रन्थोमां आनु वर्णन छे एटले झेरी करोळीयानो करड आगळ जाणीतो हतो सने १९३३ मां ट्रान्सवाळनां लेडन बर्ग वगेरे गामोमां आनो उपद्रव बहु वधी पड्यो हतो त्यांना अमारा एजंटे ते संबंधे ता. २०-४-३३ ना कागळमां लखेलुं के “ हालमां आ तरफ घरो घर झेरी करोळीया नीकळी पडया छे तेना करडथी बहु माणसो मरण पामे छे आ करोळीया बहुज झेरी छे करडे त्यारे फक्त थोडीक चळ के जराक न दीठामां आवे तेवो सोजो थाय छे माणस जंगलमां होय के घरमां होय अकस्मात क्यांक हाथ घाले तो वळगी पडे छे अने पांच के दश

मीनीटमां माणसनुं मृत्यु थाय छे अही डाकटरोनी दवा ते उपर असर करती नथी ” आना पर सर्प दंशने लगता उपचार करवा. खाखरानां मूळनो उकाळो तथा पुरुषनुं मूत्र पावुं. विषवज्रपात ०। तोलो घीमां पाइ देवुं अघोर नृसिंह के सन्निपात भैरव ०। थी ०॥ तोलो पीपळाना मुळने उकाळी साथे पावुं इच्छाभेदीनो जुलाब देवो ।

उंदर विष

झेरी उंदर करडे तो उंदरवा थाय छे त्यारे चळ आवे छे मोळ आवे छे उघ आवे छे शरीरे फोडला थाय छे झेर शरीरमां धीमे धीमे महीने पंदर दिवसे फेलाय छे लोही बगडे छे गड गुमड गांठ्य थाय छे ।

१ काकजंघा—बेठी अघेडीनुं मुळ घसी मध मेळवी २१ दिवस पावुं उंदर विष उतरे ।

२ हडताल उपलेट तुलशी रस वाटी डंखे लगाडवुं काळी पूंछडीना उंदरनुं विष उतरे ।

३ सिंदूर मोरथुथु तमाकु राख सरखे भागे घीमां मलम करी राखवो. उंदरनां डंख उपर चोपडवुं विष उतरे ।

४ मींदडानी विष्ठा पाणीमां घोळी पावो डंख उपर बांधवी खरड करवो दिवस २१ थी २८ कालिडांडीना उंदरनुं विष उतरे ।

५ मनुष्य विष्ठा बाळी कडायामां राख करवी ते राख अने कपूर गाडरना माखणमां मलम करी चोपडवुं उंदर विष उतरे ।

६ खूरासांणी वज आसंध दरेक टां. ३॥ कुकडवेलनां पान टां. १० पाणी साथे २१ दिवस आपवुं । उंदर विष उतरे ।

७ सरगवानां मूळ जीरुं समभागे चूर्ण करी टांक १ छाश साथे देवुं उंदर विकार गांठ मटे ।

८ सरसडानां फुल टांक १॥ वासी पाणी साथे ४ थी ५ दिवस आपवां अने डंख उपर सरसडानां पान वाटी दिवस ५ बांधवां उपर मग मोळा खवराववा बीजुं कांइ खाय नहि तो उंदर विष उतरे दिवस ४९ सुधी तेल खावुं नहि ।

९ बिलाडी दाढ घसी डंखे चोपडवी काळी दांडीनो उंदर विष उतरे ।

१० उंदर लिंडी बकरीना दूध साथे वाटी चोपडवी उंदर विष तथा छछुंदर विष उतरे ।

१० शियाळ विष

शियाळ हडकाइ थइ होय के न थई होय अने करडे तो तेनुं हडकाया कुतरानी पेठे तेनुं झेर चडे छे उपचार तेने लगता करवा इच्छाभेदी ३-४ गोळी आपी जुलाब देवो करड उपर तुरत हींग वाटी चोपडवी.

हरडे लोदर हींग वज सींधव सरखे भागे लइ अढी तोला भुको पाणीमां वाटी पावुं तथा तेनी नास देवी नाकमां ते पाणी रेडवुं सखत जुलाब आपवो खाखरानां मुळनो उकाळो दिवसमां दश वखत पावो ।

११ वाघना वाळनुं झेर

वाघना वाळ जीणा वांतरी खोराकमां आपवाथी झेरी असर थाय छे पेटमां बळतरा वाद्य वींट आवे आंतरडां वीधांय लोहीं पडे बेचेनी गभराट पीडा थाय छे तेना तात्कालिक उपचार करवा नोकर मरण नीपजे छे नोचेना उपचारथी झाडा वाटे तथा बीजी रीते वाघ वाळ निकळी जाय छे ।

१ उटनु दूध शेर १० दस २-३ वार पावुं ।

२ ससलानी मूंछना वाळ जीणा वाटी दहीमां पावां ।

३ काळीयार हरणनु काळजुं कटका करी हीरनो दोरो बांधी गळाववुं घडो एक राखी काढवुं तो वाळ वळगो आवे ।

४ सांढणीना दुधमां जवनो लोट उकाळिने तथा गंगेटी बी खाडणोये खांडो गाडरना दूध साथे पावुं तथा स्वेत दूर्वा-धो दूध साथे पावी वाघ वाळ निकळे ।

५ चणोठी पत्र टां. २ हरडेदळ टां. १ गोळ टां. ९ वाटी गोळी करवी दिवस ३ उष्णोदके देवी जुवाब लागे वाघ वाळ तथा सर्व विष निकळे ।

६ हरडे भाग १ चणोठी पान भाग २ गोळ भाग २ वाटी गोळी सोपारी जेवडो प्रभाते देवी उपर उनुं पाणी पावुं पछे पहोर २ पछो कूलर दही जमाडवुं ।

७ कोळानी जड पाणीमां घसो पावो वाघ वाळ निकळे ।

८ जवनो लोट शेर ०। पा उंटना दूधमां खीर रांधी खवरावयो वाघ वाळ निकळे.

९ ससलाना माथाना वाळ वाटी दही साथे पावुं वाघ वाळ विष उतरे ।

१० जेठीमधनुं स्थुल काष्ट पांणीमां घसी रस शेर ०॥ पावो दिवस ३ थी ७ उभडक बेसारवो वाघ वाळ नीकळे तेनुं पारखुं केळनुं पान कुले फेरववुं घडी २ पछे जोवुं ते पानने कांणां पडे तो साचु जाणवुं के वाघ वाळ निकळ्या तथा पेटमां कलमले नहि टाढुं थाय तो जाणवुं के वाघ वाळ निकळ्यो ।

११ तांजळजानुं मूळ तथा तुलशी मूळ घृतयुक्त चोखाना धोणमां पावुं किटक विष उतरे ।

२-वनस्पतिज विष

१ अफीण

अफीण ए पीडा शामक औषध छे वधु लेवाथी मरण थाय छे बाळकोने पीडा शामक तरीके रोज सांजे अमल अपाय छे घणो वखत वधु प्रमाणमां अपाइ जातां झेरी असर थाय छे अफीण वधु लेवाय तो तेनी झेरी असर थाय छे फेर आवे जीव उंडो उतरे बेचेनी मो सुकाय शरीर टाढुं पडे घेन चडे श्वासनो गति ओछी थाय श्वास टुंको थाय झाडो पेशाब बंध थाय पेट चडे नाडीनी गति धीमी पडतो बंध पडी जाय स्नायुनुं ताण आवे. गुह्य भागमां पेरावयाथी स्त्रीयोनुं मृत्यु थाय छे ९ थी २४ कलाकमां मरण थाय छे ऊंघ आववा मांडे आंख बंध थाय छाती भींसाय कीकी नानी थाय शरुआतमां परशेवो वळी शरीर टाढुं पडवा मांडे ३-४ चणोठी भारथी वधु खवाय तो झेरी असर थाय ।

उपचार—तुरत झाडा उलटी करावेवा इच्छाद्मेनी गोळी के महानाराच ४ थी ६ गोळी आपवी. मींढोळनो उकाळो मीठुं नाखी नवशेको पावो तेथी उलटी थइ झेर निकळी जशे. राइ १ थी २ तोला वाटी पाइ देवी पाणी चडावी होजरी धोवी.

विषवज्रपात २ थी ३ रति दर ०। पा कलाके आपवो. सर्वविषहर क्वाथ पावो खाखराना मूळनी छालनो उकाळो पावो. तांजळजो शरपंखो लींबडानां पान सम-भागे खांडी पावुं. अरणीनां मूळनो छाल परडानां मूळ खाखराना मूळनी छाल समभागे खांडी उकाळी पावुं हींग पाणीमां वाटी पावी अरीठानुं पाणी पावुं उभी भोरींगणीनां डोडवां तोला २ दारुडी मूळ तोलो १ पाणीमां वाटी पावुं ।

(१) उंधाफुलीनां मूळ तोला ६ छ पाणीमां वाटी बे वखत पावां । अफीण सोमल वछनाग सिंदोरनुं झेर मटे ।

(२) अरीठानां फळने पाणीमां उकाळी ते पाणी पावुं उलटी थइ झेर निकळी जाय ।

(३) सहदेवी टां. ९ तथा लुण टां. ९ पाणीमां हलावी पावुं अफीण धतुरो तथा सर्प विष उतरे ।

(४) अफीणना झेरमां सुंठ चवरावबी कागळ कोरो पाणीमां पलाळी पावुं तथा मींढोळ घसी पावो अफीण उतरे ।

(५) भोरींगणी पत्र रस तोलो १ पावो अफीण उतरे ।

(६) भांगरा रस तोला २० तुलशी रस तोला १० एकठा करी तोला १५ पावुं नवटांक डीले चोपडे तुलसीना कुचा खवरावबा भांगराना कुचा पग तळे चोळवा अफीण झेर उतरे ।

(७) मनुष्यनां हाडकां पाणीमां वाटी पावां अफीणनुं झेर उतरे ।

२ आकडानुं दुध

आकडानुं दुध गर्भपात माटे केटलाक चोपडे छे तथा पीये छे आनाथी उलटी झाडा बेचेनी गभराट बळतरा वींट पीडा थाय छे ।

(१) जुनो गोळ शेर एक खवरावबो तो आकडानुं दुध १० थी २० तोला पीधुं होय तो पण मरे नहि ।

(२) जुनुं घी उनुं करी पावुं ।

(३) खाखराना मूळना उकाळामां घी तथी गोळ मेळवी पावुं ।

(४) गायना दहीनुं घोळवुं छाश ५ थी १० शेर थोडी थोडी करी पावी ।

(५) हरडेना ठळीयामांथी मींज काढी ते ५-१० तोला छाशमां वाटी पीव-राववां उपर छाश पावी ।

३ एरडीनां मींज

एरडीनां बीमांथी काढेलुं एरडीयुं तेल ०। शेर के वधु पीवाय तो नुकसान नथी पण तेनां मींज झेरी छे २० थी १०० मींज खावाथी मरण नीपजे छे मीणो चडे छे छाती भींहाय छे बेचेनी थाय छे वखते झाडा उलटी थाय छे ।

हरडेनो भुको २-३ तोलानो उकाळो करी पावो. ग्वासगनो मूळनो उकाळो पावो. छाश दही जुना गोळनुं पाणी जुनुं घी चोपडवुं ।

४ कणेर

घोळां रातां गुलाबी के पीळां फुलनो थाय छे मूळीयां झेरी छे तेथो उलटी घेन फेर गभराट बेशुद्धि थाय छे शरीर खेंचाय शरोर टाढुं पडे श्वास घुंटाय अने मरण थाय छे ।

खाखराना मूळनो उकाळो पावो. जुनुं घी पावुं. गायनुं घी पावुं. दरभ मूळ भ्रो खाखरो मूळ पीपळो मूळ उकाळी पावुं मधनुं पाणी पावुं छाश घोळनुं पावुं ।

५ जमाल गोळा–नेपाळानां मींज

१ थी २ रती जेटलुं लेवाथी उलटी झाडा थाय छे पण वधु लेवाय तो झाडा उलटी रक्तस्राव बेशुद्धि थइ शरीर टाढुं पडी गोठलां चडो मरण पामे छे ।

छाश पावी आंबलीना पाकेला कातरा ने पलाळी पाणी करी तेमां गोळ नाखी पावुं द्राक्षासव गोळनुं पाणी दही साकर वगेरे आपवुं दही खीचडो खवरावकुं अफीण १–२ चणोठी देवुं ।

६ झेरकोचलां

झेरकोचलानो विलायती पावडर वधु झेरी छे १५ थी १६ रती आपवाथी मरण नीपजे छे त्यारे देशी झेर कोचलांने शुद्ध करी तळीने करेलु चुरण ओछुं झेरी छे अने गुण सारो करे छे. आनी मात्रा ३० थी ४२ रती झेरी असर उपजावे छे आ झेर कोचलाना सत्त्व रुपे स्ट्रीकनीया नामनी दवा छे ते बहु झेरी अने मारक छे वधु प्रमाणमां झेर कोचलां लेवाथी श्वास घुंटाय छे ,हाथ पग स्नायु खेंचाय छे. धनुर्वा के आंचकीने मळतां चिन्ह जणाय छे दांतनी बत्रीशी खीली जाय छे चेरो काळो पडवा मांडे छे तुरत उपचार करवा नीकर ४–५ कलाकमां दरदी मरण पामे छे स्ट्रीकनीयाथी ०॥ थो १ ग्रेनमां मरण नीपजे छे ।

उपचार—इच्छाभेदीनी ५–७ गोळी आपी देवी तेथी झाडा उलटी थइ झेर नोकळी जाशे मींढोळ उना पाणीमां वाटी पीवरावी उलटी करावची घेनमां दरदीने राखवो ।

(१) उनुं घी पावुं माखणने गरम करी ककडाव्या विना पावुं टंकणखार फुलावेलो दर पांच पांच मिनीटे २ त्रे वाल मधना पाणी साथे पावो ।

(२) हळदर सादी के राजापुरीनो भुको गरम घोमां मेळवी दर ०। कलाके पावो. घी वधु पीवाय तेम झेर उतरे ।

(३) साकर वरीयाळी धाणानुं सरखे भागे चूर्ण करवुं तेमांथी दर ०। कलाके अर्धो तोलो चूर्ण दुध साथे पावुं ।

७ थोरनुं दुध

पीवाथी झाडा उलटी थाय छे २ थी ६ टीपां लेवाथी ४–५ जुलाब लागे छे आंखमां दुध जावाथी लाल थइ जइ घणी वखत फुलु पडे छे वधु प्रमाणमां पेटमां आवाथी असह्य दाह झाडा उलटी रक्तस्राव वळतरा थाय छे अने मरण पामे छे.

(१) हींगनुं पाणो करो पावुं हींगनो भुको करी घोमां गळाववो ।

(२) खाखरानां मूळ वडनी वडवाइ पीपळानां मूळनो उकाळो करी पावो छाश पीवरावची. जुना गोळनुं पाणी करी ५०–६० वखत गाळी पांच पांच मीनीटे पावुं.

८ धतुरानुं झेर

धतुरानां बी बधु झेरी छे. खाधा पछी अरधी कलाके चिन्ह जणाय छे. माथामां चकरी गळे शोष तरस आंखोनी कीकी पोळी आंखो चेरो लाल थाय छे बेशुद्ध गांडा जेवो थइ जाय छे श्वास टुंको पडे छे हाथना चाळा करे छे घणाने मृत्यु नथी थतुं तो हमेशने माटे गांडपण रहे छे ।

१ मींढोळनो उकाळो पावो इच्छामेदी ३ थी ४ गोळी उना पाणी साथे आपवी । २ समुद्र फळ गौमूत्र साथे वाटी पावुं । ३ घोडावज साकर मोंपाथरी धराख समभागे खांडी उकाळो के शरबत करी पावुं । ४ घीं उनुं करीने पावुं माखण चटाडवुं । ५ खाखरानां मूळनी छालनो उकाळो मध नाखीं पावो । ६ सरसडानां मूळनी छाल अथवा संधेसडाना मूळ अथवा कासोंद्राना मूळनो उकाळो के शरबत करी मध नाखी पावुं । ७ घेटानु शींगडु पाणीमां घसी पावुं । ८ काथो लींबुना रसमां पावो । ९ गायनी छाश पावी । १० वणनां मूळ उकाळी पावां । ११ माखण खवरावबुं, माथे पाणी रेडवुं । १३ खांड अथवा साकरनु पाणी पावुं । १४ वणना पान तथा झींडवा पाणीमां वाटी पावां । १५ मोरींगणीनु मूळ चोखाना ओसामण साथे वाटी पावु । १६ वणनां फुल. झींडवा उकाळी पावां ।

९ भांग गांजो चरस माजमनुं झेर

आ बधी पकज छोडवानो वस्तु छे, भांग पांदडां छे, गांजो फुल छे, चरस रस छे, माजम ए भांग चरसनो बनावेलो पाक छे· आमां कोइ चीज वधु प्रमाणेवामां आवे छे तो आंखो अने चेरो लालचोळ थइ जाय छे तोफान करे छे, हसे छे गाळ्युं दिये छे अने गांडपण थइ जाय छे वधु मात्रा लेवाणी होय तो मरण निपजे छे ।

१ मींढोळनो उकाळो सींधालुण साथे पावो । २ मोंपाथरीनो रस पावो । ३ दहीं अथवा छाशमां मध नाखो पावुं । ४ इच्छामेदी ३ थी ४ गोळीनो जुलाब आपवो । ५ जडदो ०। थी ०॥ तोलो अथवा आकडानां मूळनी छाल ०। तोलो पाणीमां वाटी पाइ उलटी करावबी सर्वविषहर क्वाथ पावो । ६ खाखराना मूळ आसोंघरो अगथीयानां मूळ के पान समभागे खांडो उकाळो करी पावो । ७ लींबु चुसाववा ।

१० भीलामानुं झेर

भीलामा उडवाथी शरीर सोजी आवे छे खंजोळ आवे छे ।

१ खोजडोनां पान तोला २॥ अने साकर तोला ५ पाणीमां वाटी पावुं तथा शरीरे चोपडवुं ।

२ तपखीरने गायना घीमां मेळवी चोपडवुं । ३ तलने दुधमां वाटी लगाडवा ।

४ काळां तीखां गायना दुधमां वाटी पावां ।

५ काळा तल उकाळीने पाणीना कोगळा करवा तथा ते पाणी पावुं तो मोमां छालां पड्यां होय ते मटे तथा अंदरनुं भीलामांनुं झेर शमे ।

६ कळी चुनानुं पाणी पावुं तथा चोपडवुं ।

७ मुळाना पानने रस काढी चोपडवो ।

८ हळदर जेठोमध पुरुषना मूत्र साथे वाटी चोपडवुं ।

९ राळ घीमां मथी चोपडवी ।

१० तेल तोला ५ माखण तोला ५ भेसनुं दूध तोला २० सूक्ष्म वाटी डोले ३ दिवस खरड करवो चोखानी खीचडी ७ दिवस लुखी घी वीनानी खावी ।

११ बिलिना पानने रस काढी लुगडुं पलाळी भीलामुं उडयुं होय ते पर मुकवुं ।

१२ आंबलीना कातरा पाकी पाणीमां चोळी रस काढवो तेमां तेल नाखी खरड करवो ।

१३ हरडेदळ आमळां राळ कंपीलो बोदार काथो मीण दरेक टांक ३ आंबलीयानी राख टां. २० गायनुं घी ते. ३० मलम करी डोले चोपडवुं भिलामुं उडयुं होय ते शांत थाय ।

११ वछनागनुं झेर

आ वधु लेवाथी जीभ, होठ, मों हृदयमां झणझणाट थइ लागणी बहेर मारी जाय छे पेटमां अग्नि बळे छे गळु दाझो गयुं होय एम लागे छे आंखे ओछु देखाय छे कान बेरा थाय छे शरीरनी रगेरग ढोली थइ जाय छे वखते ताण आवे छे झेरनी वधु असर थाय तेम कोको मोटो थाय छे मगज अने शुद्धि छेवट सुधी सारी रहे छे वछनागनी भुकी नाक वाटे सुंघवामां आवी जाय अने ते कांइ प्रमाणमां अंदर पेसे तो हृदय आंतरडां पेटमां हमेशां बळतरा थाय छे अने दरदी पटलो बधो गभराइ जाय छे के आपघात करवा तैयार थाय छे ।

१ उलटी करावची इच्छाभेदीनो जुलाव देवो लींबोळीनां मींज भेंदो उंबरानी छाल खाखरानां मूळ भोंपाथरी मूळाना पान एमांना जेटला मळे तेटलां ओसडायां साथे मेळवी रस काढी तेमां ०। थी ०॥ तोलो फुलावेलो टंकणखार नाखी पावो, मधनु पाणी हरवखत पावुं २ गायनु दुध वखतो वखत साकर नाखी पावु । ३ धाणा अने खेरना पान पाणीमां वाटी पावां । ४ सरसडानी छाल तथा खाखरानां मूळनी छालनो उकाळो करी घी नाखी पावो । ५ वणना झींडवानो रस पावो । ६ कपासीया कूटी उकाळी पावां । ७ काळां मरी चवराववां अथवा दुधमां वाटी पावां । ८ सांभरलुण पाणी साथे पावुं ।

१२ दगाथी आपेला झेर

स्त्रीओ पतिने वश करवा माटे शरीरनो मेल शरीरना जुदा जुदा भागना मेल (मळ) खोराकमां आपे छे तेथी तेम शत्रुए कपटथी आपेला जुदा जुदा झेरथी पहेरवाना कपडामां दागीनामां जोडामां चोपडेला झेरथी नोखनोखां चिन्ह थाय छे पांडुरोग कृशता मंदाग्नि गभराट बेचेनी उदासीनता वगेरे चिन्हो जणाय छे अने घणीवार मृत्यु थाय छे चिन्ह जोइ झेरनो निश्चय करी तत्काळ तेने लगता उपचार करवा ।

१ सरसडाना पान मूळ फळ छाल फुलनो उकाळो करी पावो अने पनी साथे खाखरानां मूळ नाखी उकाळी आखे शरीरे चोळवो ।

३ खनिज विष

१ पारो

रसकपुर दाल चीकणो हींगळो पारद भस्म सफेद एवी चीज प्रमाण विना के योग्य अनुपान विना देवामां आवे के तेनी मात्राथी वधु लेवामां आवे तो ते झेरी असर करे छे कोइने तात्कालिक चिन्ह जणाय छे तो मोढु आवे मोढामां गळामां चांदा पडे लाळुं पडे दाह थाय लांबे वखते विकार करे तो दांत हली जइ पडी जाय छे चेरो फीको थाय शरीर दुबळुं पडे मोढु गळुं अन्ननळ होजरी आंतरडा वगेरेमां चांदा पडे छे तेथी संग्रहणीनु दरद पण थाय छे. पेटमां छातीमां बळतरा पीडा झाडामां लोही पडे झाडानी खणस रह्या करे जळस पडे शरीरमां दुखावो शरीरे चांदा घारां गुमडां कोइने पेशाब अटकी जाय पारो शुद्ध करी बीजां औषधो साथे शास्त्रीय रीते उपयोग करवामां आवे तो ते अमृत छे सेंकडो वर्षनुं आयुष्य आपवानी अने दरेक प्रकारना आ लोक परलोकनां सुख आपवानी शक्ति पारामां छे. पारो शंकरनु वीर्य कहेवाय छे तेना गुण प्रमाणे यथार्थ नाम छे. आयुर्वेदमां दरेक रोगने मटाडवाना औषधमां रसायनिक औषधमां पारो पडे छे अने ते चमत्कारीक रीते रोगने मटाडे छे. गोंडल रसशाळामां बनतां औषधोमां दर वर्षे सेंकडो शेर पारो वपराय छे अने तेनु सेवन करी लाखो दरदीओ रोग मुक्त थाय छे मात्र मुरखाइथी तेनो उपयोग थयो होय तोज नुकशान करे छे ।

१ अमलसारो गंधक तोला २ गोपीचंदन तोला २॥ साथे वाटी गायना दुधमां १॥ तोलो चूर्ण पावुं त्रण दिवस पावाथी पेशाबवाटे पारो निकळी जशे । २ केळना थडनो रस अने जवासो वाटी गाळी पाइ देवुं ३ हमेशां शोधेलो गंधक ४ आनी भार घीमां चाटवो पाराना विकारनु औषध गंधक ज छे । ४ कुंवारनो रस-गरभ खवराववो डोले खरड करवो । ५ झीलना रसनो खरड करी तडके बेसीये पारो विकार टळे । ६ जळपिपर जेने रतवेलीयो कहे छे नदीने कांठे थाय छे तेनो रस काढी तोला १० पाइ देवो ७ दिवस पावाथी पारो फुटी निकळ्यो होय ते मटी काया कंचन जेवी थाय । ७ गंधक एकआनीभार नागरवेलना पानमां खावाथी पारा विकार मटे । ८ धोळी धोनो रस तोला ५ रोज पावाथी १४ दिवसमां विकार मटे पारो पेशाबमां निकळे । ९ नागरवेलना पाननो रस भांगरानो रस तुलसीनो रस बकरीनु दुध बधां मेळवी शरीरे चोपडीये पारा विकार मटे । १० सरपंखाना पान पाणीमां वाटी डीले चोपडवां तथा पावाथी पारानो विकार तथा हडताळनु झेर मटे ।

२ सोमल

सोमल ए भयंकर झेर छे सोमलथी घणेभागे आपघात के दगा थाय छे. आमां स्वाद नथी सोंघो छे उंदर वगेरेने मारवा ते वपराय छे हरताळमां सोमलनां तत्व छे पण ते जुदी वस्तु छे हरताळने पीळो सोमल अने मनेशिळने लाल सोमल डाक्तरो कहे छे ते बराबर नथी पीळो अने लाल सोमल थाय छे पण ते जुदी वस्तु छे. हरताळ मनशिळमां गुण धर्म थोडा घणा मळता छे पण ते

सोमल नथी. सोमल पेटमां गया पछी पकार कलाकमां झेरी असर देखाय छे प्रथम पेटमां दाह अने शुळ थाय छे मोळ आवे उलटी थावा मांडे झाडे जवानी खणस थाय मरडा जेवुं लागे लोही पडे पेशाबमा बळतरा थाय तरस लागे आंख लाल थाय माथु पकडाय नाडी उतावळी चाले श्वासनी गति वधे पगे गोठलां चडे मोढु लाल थइ जाय ।

१ उपचार—मींढोळ पाइ उलटी करावावी इच्छामेदी ५-७ गोळी आपी जुलाब उलटी करावावी. तांदळजानो रस साकर अने दहीं साथे पावो । २ सरपंखाना उकाळामां दही के साकर मेळवी पावु । ३ लीमडाना पानना रसमां मध नाखी पावुं । ४ खाखराना मूळनी छालनो उकाळो पावो । ५ खाखरानी छाल खाखरानां मूळ सरसडानां फुल सरसडानां पान मोंपाथरी बेठीउंबरीनां मूळ कडाछाल बीलीनो गरभ कोठानो गरभ अतिविषनी कळी आमळां काळीधराख समभागे खांडी १० तोलामां ४ रतल पाणी मुकी उकाळवुं. ४० तोला रहे पटले गाळी लइ तेमां मध नाखी थोडुं थोडुं पावुं. उपर साकरवाळुं दहीं पावुं । ६ सोमल खवाणो होय तेथी ८ गणो काथो पाणीमां वाटी पावो झेर उतरे । ७ आंबलीनो रस पावो । ८ टंकणखार काचो तोलो ०॥ लींबुना रसमां पावो । ९ मीठानुं पाणी करी पावुं । १० कोळाना रसमां घी नाखी पावुं । ११ हीरवणीनां मूळनां के पानना रसमां साकर नाखी पावुं । १२ छाश पाइ उलटी करावावी । १३ अघेडानां मूळ तोलो १॥ इन्द्रामणीनां मूळ तोला ३ बेइने पाणीमां वाटी पावुं । १४ सरसडानी छालनो रस पावो । १५ दही तो. ८० घी तो. १ गोळ तो ५ मेळवी पावुं । १६ काथो तो. ३ भार दुधमा मेळवी अथवा पाणीमां मेळवी पावो । १७ तांजळजाना रसमां साकर मेळवी पावुं । १८ हीरवणीनां झींडवां वाटी पाणी साथे पावां सोमल तथा धतुरानुं विष उतरे । १९ चण्यानी दाळ पलाळी वाटी साकर दूध साथे पावुं शरीरे चोपडवी सोमल विष उतरे । २० वणनां झींडवां तथा फुलने पाणीमां वाटी पावुं डीले खरड करवो दाह मटे दाझ शमे । २१ गायनुं दूध खुब पावुं । २२ तांजळजानो रस तोला ८० घी तोला ८० मेळवी पावुं ।

३ हडताळ तथा मनशीळ

आ वस्तु वधु प्रमाणमां काची खवाइ जाय तो झेरी असर थाय छे उलटी झाडा दाह बेचेनी गभराट शोप तरश झाडा मरडा लोहीस्राव वगेरे थाय छे तात्कालिक उपाय करवा तीव्र जुलाब देवो उलटी करावावी ।

उपचार—१ शरपंखाना पाननो रस तो. २० साकर तो. ४ मेळवी पावो । २ आंमळां तोला २० गायना दुधमां पलाळी वाटी ७ दिवस पावाथी शांति थाय । ३ शरपंखाना पान पाणीमां वाटी आखे शरीरे खरड करवो तो हरताळ अने पारानुं झेर उतरे । ४ शरपंखाना पान तोला १० साकर तोला ५ गायना दुधमां वाटी गायना दुधमां घोळी दही पावुं । ५ पळीओ टांक १ वज टांक २ गुगळ टांक २ राय टांक २ मीठुं (लुण) टांक ४ खाटी छाशमां वाटी पावुं । ६ अरणीनां पाननो रस तो २० मां साकर तो. २॥ मेळवी पावाथी हडताळ विष उतरे ।

४ त्रांबुं

त्रांबाना ठाममां पाणी पीवुं ए अमृत सरखुं अने तंदुरस्त छे पण त्रांबाना ठाममां कोइ पण जातनो खोराक खावो नही त्रांबाना ठाममां रसोइ करवी होय तो सारी रीते बहार अंदर कलइ देवरावको काट वाळा त्रांबाना ठाममां रसोइ करवाथी घणी वखत उलटी झाडा थइ मरण थाय छे एक कंसाराने त्यां लग्न प्रसंगे आखी गुंदीना लाडु कर्या तेने ठारवा माटे त्रांबाना पत्रां पर लाडु पाथरी दीधा ए खनाराने झाडा उलटी थइ पडया अने अमुक मरण पण थयां आम गफलतीथी मनुष्यनां मरण थाय छे जर्मन सील्वरनां वासणमां तथा कासाना वासणमां पण घी दुध खटाइ एवी चीज कटाइ जाय छे अने झाडा उलटी डइ पडे छे कलइ चांदी सोनु एल्युमीन अने लोढाना वासणमां काट लागतो नथी ।

४ अज्ञात झेरथी मरण

१ विलायती दवा

विलायती दवाओ घणे भागे झेरी होय छे कंपाउंडरनी भुलथी प्रमाण वधु अपाइ जाय एकने बदले बीजी अपाइ जाय तो माणस मरी जाय छे घणी वखत पीवानी अने लगाडवानी दवामां अदली बदली थइ जाय तो पण मरण थाय छे वेलायती दवाथी आम अकस्मात मरण आखा देशमां सेंकडो थातां हशे त्यारे देशी दवामां एक पण अकस्मात थवानुं कारण रहेतुं नथी कारण तेमां विषेल वस्तुनु प्रमाण एटलुं बधुं ओछुं होय छे के ते मात्राथी विश गणी खवाइ जाय तो पण मरण नीपजतुं नथी तेम देशी दवामां लगाडवाना तेल मलम वगेरे ओळखाय एवां होय छे तेम झेरी होतां नथी ।

२ इन्जेकशन

इन्जेकशनने खेडे हद उपरांत लोको चडया छे दाकतरोनी गफलतीथी इन्जेकशन आपतां असंख्य मरण नीपजे छे एटले तेथी दूर रहेवुं ए पण एक अकाळ मरणथी के झेरथी बचवा जेवुं छे एना दाखला गोतवा जावा पडे एम नथी. लालपुरना एक मेमण लाखोपति गृहस्थने भायावदरना एक दाकतरे हरसनो दुखावो मटाडवा इन्जेकशन दीधुं अरधी कलाकमां मरण थयु हतुं १८ वरसना एक छोकराने पगे गुमडांनु ओपरेशन करवा एक काठीआवाडना प्रसिद्ध दाकतरे इन्जेकशन दीधुं तुरत मरण थयु एक गोंडळना पर्शयन शिक्षक मुसलमान गृहस्थना पिताने मेलेरिया तावनु इन्जेकशन नासीकना एक दाकतरे दीधु ४० वरसना जुवान जोधा जेवा पुरुषना आखा शरीरे दाह थइ ४ दिवसमां आखा शरीरनी चामडी निकळी गइ मांसना लोचा जेवुं आखुं शरीर थइ गयुं अने ५ दिवसमां मृत्यु थयु. एक ग्रहस्थने डाबे साथळे संधोवानो दुखावो मटाडवा इन्जेकशन दीधुं अरधी कलाकमां जमणी आंखमांथी पाणीनी धारा छुटी आंख मांसना लोचा जेवी थइ गइ अने काळो डोळो धोळां थइ गयो आंख गइ जे हाल (ता. २८-४-४५) रसशाळामां सारवार नीचे छे. वेरावळमां एक जुवान २५ वर्षना कम्पाउन्डरने मृत्यु पाम्युं हतुं एक दिवस दम वधु चडेलो देखाणो एटले १२ वागे पोतानी स्त्रीने शाक

ओढीने अथवा चांडीगुं पहेरीने, माथुं कपडे ढांकीने, जनोइ जमणे काने चडावीने उतरादे के दक्षिणादे मोढे कळशे बेसवुं. सूर्य सामे दस्त पेशाब करवा बेसवुं नही. कळशे बेसती वखते एकाद घडो पाणी बने । साथे लइ जावुं अने गुदा प्रक्षालन सारी रीते करवु घणाने गुदानी कुंडलीमां मळ भराइ रहे छे तो तेमांथी हरसनु दरद थाय छे माटे जरुर जणाय तो आंगळी वती मळ काढी नाखो सारी रीते धोवुं ।

पछी धहार 'आवी साबुथी अथवा माटीथी प्रथम डाबो हाथ एकलो धोवो पछी बेइ हाथ भेळा करी धोवा ज्यांसुधी विष्टानी गंध आव ी बंध थाय त्यां सुधी हाथ धोवा. नखमा मळ भराइ जावा संभव छे तो नखमांथी मळ पण काढोने धोवा. साबु करतां माटोथी हाथ वधु स्वच्छ थाय छे. पछी पग धोइ कोगळा करवा. पेशाब करती वखते पण जननेंद्रिय पाणीथी धोवी पछी हाथ पग धोइ कोगळा करवा।

कळशे जइ आव्या पछी दातण करवुं पछी नहाइ पछी दुध चा जे कांइ पीवानी टेव होय ते पीवुं. बनी शके तो संध्या कर्या पछी दुध चा वगेरे पीवुं पण तेटलो वखत रही न शकाय तो नहाइ चा दुध पी पछी संध्या करवी पण नहाया पहेलां तो कांइपण पेटमां नाखवु नही. नहाया विना जो कांइ खाइ लीये छे तो ते यज्ञोपवीतादि संस्कारथी भ्रष्ट थाय छे तेने फरीने जनोइ वगेरे दे[illegible] जोईए बीमारी मुसाफरी के एवां अनिवार्य कारणसर नहाया विनां खावुं पी[illegible] पडे ते जुदी वात छे पण हमेशना वहेवारमां तो नहाया पछी खावा पी[illegible] [illegible] पज आरोग्य तथा धार्मिक दृष्टिये योग्य गणाय. कळशे बेसतां पोताने मळ पोते जोतो नही पोताने के पारको मळ-विष्टा जोवामां आवे तो सू[illegible]नु दर्शन करी आचमन करवाथी शुद्ध थाय छे. सवारमां शौच जवानी टेववाळाने आंतरडांनु दरद, आफरो, पेटनु भारेपणुं वगेरे दरद थातां नथी. कोइ पण वखते मळमूत्रादिना वेगने रोकवा नही रोकवाथी विविध दरदो थाय छे. मळनो वेग रोकवाथी पेट चडे, पेटमां शूळ निकळे, वाढ्य थाय, वायु उंचो चडे, मळ अटकी जाय अने केटलीकवार मों वाटे मळ निकळे । अधोवायु रोकवाथी पवन. मूत्र अने मळ अटकी जाय, पेट चडे अने पवनना रोग पेटमां थाय । पेशाबनो वेग रोकवाथी मूत्रनळी अने इन्द्रीयमां शूळ निकळे, मूतरकच्छना, मगजनां दरद थाय पेडु फुले, शरीर वांकुं वळी जाय. । मळमूत्रादिनो वेग आव्यो होय त्यारे बीजां बधां काम छोडी देवां तेम कोइपण वेगने जोर करीने काढवा नही. काम, शोक, भय, क्रोध वगेरे मनना वेगने विकारने रोकवा. गुदा जननेंद्रियादि मळमार्गोने मळमूत्रोत्सर्ग कर्या पछी हमेशां प्रत्येक वखते पाणीथी धोवुं तेथी कांति, बळ, पवित्रता वधे, क्लेश पाप अने निर्धनतानो नाश थाय छे. मळोत्सर्ग पछी हाथ पगने सारी रीते माटीथी धोवाथी शुद्धि रहेवा साथे आंख्युंने फायदो थाय छे लक्ष्मी वधे छे ।

केटलाक देशमां कळशे जइ आव्या पछी कागळथी के बीजी चीजथी गुदा लुइ नाखे छे आ खराब रीत छे तेथी आरोग्य बगडे छे बुद्धि अने वृत्ति तमोगुणी थाय छे । कळशे जइ आवी हाथ पग आंखु मोढु धोइ कोगळा करी पछी दातण करवुं ।

दातण—मळोत्सर्ग पछी दातण करवुं. ते ताजुं, आठथी बार आंगळ लांबुं, पोताने माफक आवे तेवुं जाडुं, सीधुं, गांठ्यो के सडा विनानुं लेवुं. दातणना सुंवाळा कूर्चे कुचा पीछाथी पेढांने इजा न थाय तेम अकेक दांतने घसवो. दांत साफ करवाना कोइ मंजनथी अथवा सुंठ, पीपर, मरी, सींधालुण समभागे वांटी तेमां मध अने सरसीयुं तेल मेळवी तेनाथी दांतने घस्या होय तो वधु सारुं. वडनुं दातण करवाथी कांति वधे, करंजथी विजय थाय, पीपर अने बीलीथी धनलाभ, उंबराथी वचन सिद्धि थाय, खेर अने बावळथी मेधा वधे. आजकाल वधे बावळनुं दातण करवानोज रिवाज छे खेरनी जात होवाथी तेनुं दातण सारुं छे तेम ओळ उतारवामां तेनी चीरुं सरखी थाय छे. समय, देश अने प्रकृति प्रमाणे ठीक पडे तेनुं दातण करवुं. दातण करवाथी मोनी खराब गंध बेस्वादपणुं जाय छे, दांत जीभ अने मोना रोग थाता नथी, खोराकपर रुचि थाय छे अने शरीर हळवुं पडी जाय छे. दातण कर्या पछी तेज दातणनी [illegible] करी तेनाथी जीभनी ओळ उतारवी अने कोगळा करवा घणा लोको [illegible] चांदीनी पटी राखे छे ते पण ठीक छे पण ए पटी न होय [illegible] तेवी वखते दातणथी ओळ उतारवानुं तेओने ठीक पडतुं नथी अने जीभ [illegible] पेटमां उतरी नुकसान थाय छे एना करतां दातणनी चीरथीज ओळ [illegible] रीवाज राखवाथी वनस्पतिनो स्पर्श जीभने थावाथी गुण करे छे अने [illegible] मटे छे. जेओने दांत पडी गया होय के पडावी नाख्या होय तेओने पण [illegible] कचरीने मोना दरेक भागमां फेरवी चली तेनी चीर वनी ओळ उतारी [illegible] करवा. गळुं ताळवुं, होठ, जीभ अने दांतनां दरद, मोनो पाक, [illegible], श्वास, उधरस, उलटी, हेडकी, मूर्च्छा, माथानी पीडा कर्णशूळ, नेत्ररोग, [illegible], पटलां दरदवाळाये तरस्या माणसे, थाकी गयेलाये, दारू पीनेला ए [illegible] नहीं. आजकाल ब्रश वापरवानो रीवाज वधी पडयो छे तेथी नुकसान थाय छे एम युरोप अमेरिकामां साबित थयुं छे. ब्रशमां जीणा मळना रजकणो [illegible] दांतमां दाखल थइ जंतु उत्पन्न करे छे तेथी दांतना विविध रोगो थाय छे. [illegible] उपयोगने लीधे अमेरिकामां हजारो जुवानीयाओने बधा दांत कढावी नाखवा पडया छे हवे ते लोको पण हिंदुस्तानने अनुसरी दातण करवा लाग्या छे. युरोप अमेरिकामां घणी संस्थाओ उभी थइ छे के जे ब्रशथी दांत साफ करवानी सामे मोटो प्रचार करी रही छे. दातण करी लीधा पछी ओळ उतारवा माटे सोनानी रुपानी त्रांबानी पटी कराववी होय तो जीभने इजा न थाय तेवी जातने ओळ उतारीने ठंडा के नवशेका पाणीथी कोगळा करी मों धोवुं तेथी जीभनो मळ दुर्गंध जडता मटे छे शुद्ध थाय छे. कोगळा करवाना पाणीमां थोडुं मीठुं दंतमंजन के सींधालुण मेळव्युं होय तो सारुं. (दांतना प्रकरणमां मंजन लख्यां छे)

दांतनुं चोगठुं होय तेओये दातणना सुंवाळा कुचाथी चोगठाना दरेक दांतने तथा बे दांत वच्चेनी जग्याने घसवी तेम चोगठाने अंदर बाहर बरोबर घसवुं अने साफ करवुं. चोगठामां क्यांय पठवाड चिकास जामी न रहे तेनी संभाळ राखवी. सवारमां उठीने तथा खाधा पीधा पछी चोगठाने साफ करवुं गले सुनी

वखते चोगठाने ठंडा पाणीमां बुडाळी राखवुं सवारे दातणथी साफ करीने पेरवुं तेम चोगठावाळाये मोढाना दरेक भागमां चीकाश मेल जाम्यो होय ते दातणना कुचा वती घसी साफ करवुं अने दातणनी चीरथी के चांदीनी पटीथी जीभ उपरनी ओोळ उतारी कोगळा करी मो साफ करी पछी चोगठु पेरवुं ।

नस्य—अणुतैल अथवा प्रकृतिने अनुकूळ आवे तेवां सुंघवाना ओेाषधनो नस्य तरीके उपयोग करवो· तेथी मों कांतिवाळुं, स्वर स्वच्छ, दांत मजबुत, आंख तेजस्वी, मगज पुष्ट थाय छे वळीयां पळीयां आवतां नथी षडबिंदु तेलनां अथवा अणुतेलनां टीपां अकेक फर्णामां नाखवां अथवा मगज पौष्टिक सुंघणी सुंघवी ।

अणुतैल-(च. सू. अ. ५६०)—चंदन अगरत मालपत्र दारुहळदरनी छाल मधुडा बळदाणा मूळ कमळफुल लीली पलची वावडींग बीली कमळ वाळो हरडे तज मोथ उपलसरी स्थिरा जीवंती पृश्निपर्णी देवदार शतावरी रेणुकाबीज उभी मशा बेठी भोर्रीगणी मूळ सुरभी पद्मकेसर ओसडीयांथी १०० गणा वरसादना अधरथी जीली लीधेला पाणीमां बधाने उकाळवुं दशमा भागनो क्वाथ रहे पटले गाळी तेमां उकाळाथी दशमां भागनु तलनु तेल नाखी पकाववुं पाणी बळी जाय पटले फरीवार उपरना वसाणानो उकाळो करी पज तेल पकाववुं पम १० वखत पकाववुं दशमी वखत पकावती वखते ते तेलमां उकाळा जेटलुं बकरीनु दुध नाखी पकाववुं पाणीनो भाग बळी जाय तेल बाकी रहे पटले गाळी लेवुं ।

आ तेलने चांदीना ठाममां भरी राखवु आनो मात्रा २ तोलानी छे नाक वाटे नाखी गळामां तेल उतारवु पण प्रथम ०। तोलाथी आरंभ करी २ महीने २ तोलानी मात्राये पहोंचवु प वधु सारुं छे ।

तेलनां रुनु पुंभडुं बोळी धीमे धीमे नाकमां टीपां नाखवां के जेटलु तेल नाक वाटे चडाववुं होय तेटलुं अर्धा के पक पक कलाकने आंतरे त्रण वखत मळी चडावं, भुरये रीते तेल चडाववुं. जे ओरडामां पवन आवतो न होय त्यां पथारी करी सुवुं अने जेटली गरमी ओरडामां होवी जोइये प रीते दर ३ दिवसे के दर ७ दिवसे आ तेल नाकमां चडाववुं दर वर्षे श्रावण भादरवो आशु कार्तक अने चैत्र वैशाख आ ६ महीना सुधी दर ७ दिवसे पटले महीनामां ४ वखत नाक वाटे अणुतेल चडाववुं ।

आ रीते नाक वाटे अणुतेल चडावनार माणसने आंख्युं नाक अने काननी इन्द्रीयु मरण सुधी सारी रहे छे कोइ जातनो हानी पहोंचती नथी वाळ काळा रहे छे अने वाळ वधे छे ।

नाक वाटे अणुतेलनु नस्य लेवाथी डोकनां मगजनां दरद मस्तक शुळ माथानो दुखावो नजलो पक्षाघात डोक मरडाइ जावी सळखम पीनस आधाशीशी मस्तक कंपवा वगेरे दरदो थतां नथी थयां होय तो मटी जाय छे मुखनी कांति वधे छे. मोढुं रुपाळुं थाय छे प्रसन्न रहे छे मुख लोहीथी भरेलुं रहे छे गढपण आवे तो पण वाळां मळी आतां नथी के कडचलीयुं मोढा पर आवती नथी केन्सर साद बेसी जावो के बीजा गळानां दरद थातां नथी अने बधी इन्द्रियो बळवान रहे छे आंख्युंमां झांख मोतीयो आवतां नथी अने गढपण आवे तोपण मस्तक गळु अने छाती पर गढपणनी असर देखाती नथी जुवान जेवी कांति टकी रहे छे ।

अंजन—हमेशां महामुक्तांजन-मोतीनो काळो सुरमो के बीजुं अंजन आंजवुं तेथी आंख्युं सारी रहे छे. आंखनी खजवाळ दाह चीपडा दुखावो वगेरे मटे छे. रात्रे उजागरो कर्यो होय, थाक लाग्यो होय, उलटीनुं औषध लीधुं होय, ताव आवतो होय तेवा माणसे तथा जमीने अंजन आंजवुं नही सवारे भुख्ये पेटे तथा राते सुती वखते अंजन सुरमो आंजवो।

क्षौर—दर पांच पांच दिवसे के एकांतरा हजामत करावबी. नख, डाढी, माथाना तथा बीजा वाळ कढाववा तेथी शरीरनी कांति पुष्टि आयुष्य वधे छे. नाकना वाळ कदि पण खेंचाववा नहि तेथी आंख नबळी पडे छे. हजामत करावी वाळ ओळी अरीसामां मुख जोवुं, हजामत पोताने हाथे के वाणंदने घेर के दुकाने जइ करावबी नही। माथाना डाढीना वाळ वधारनारनुं आयुष्य वधे छे।

कसरत—व्यायामथी शरीर हळवुं थाय, काम करवानो उत्साह वधे, शरीरना अवयवो द्रढ थाय कोइपण विकार के रोग थयो होय तो मटे भुख लागे. व्यायामथी शरीर मजबुत थयां होय छे तेओने शारीरिक के मानसिक कोइ पण रोग थतो नथी, तेम शरीरनी शिथिलता आवती नथी. कसरत करनारा माणसोने दुध घी वगेरे स्निग्ध खोराक मळे तोज कसरतथी फायदो थाय छे. वसंतऋतुमां अने शियाळामां, वधु अने बीजी ऋतुमां ओछी कसरत करवी. हृदयनो श्वास मोमां एकदम आवे हांफो जवाय अने मोढुं सुकाय ए अर्ध बळनु निशान छे त्यां सुधी अथवा कपाळे नाक उपर शरीरना सांधाओमां काखमां परसेवो वळे त्यां सुधी कसरत करवी. जम्या पछी, स्त्रीसंग पछी कसरत करवी नही. उधरस, श्वास, कृशता, क्षय, रक्तस्राव, क्षत शोष पटला दरदोवाळाए कसरत बीलकुल करवी नही. हद उपरांत अथवा असमये कसरत करवाथी अति व्यायामथी उधरस, ताव, उलटी, ग्लानी. तृषा, शोष, श्वास, रक्तस्राव अने क्षय रोग थाय छे. हालमां विद्यार्थीओने स्निग्ध खोराक मळतो नथी अने असमये अयोग्य रीते घणी कसरतो करावी शरीर तोडी नाखवामां आवे छे, ते हानिकर छे हद उपरांत कसरतनी टेवथी वृद्धावस्थामां कसरत नथी करी शकाती त्यारे सांधा झलाय छे, वानी पीडा थाय छे।

धूम्रपान-बीडी होको पीवो—धुंवाडो पीवानी प्रथा अनादि काळथी चाली आवे छे तेमां समय प्रमाणे परिवर्तन थया करे छे. प्राचीन समयमां विविध ओसडीयाथी बनावेली वस्तुने नळी रुपे करीने तथा होका वाटे धुंवाडो पीवामां आवतो. त्यारपछी क्रमे करीने बीडी अने सीगारेटनो जमानो आव्यो तेथी प्रजाने अनेक प्रकारनी शारीरिक हानी थावा मांडी. पाणीमांथी पसार थइ ठंडो धुंवाडो होकानो होय छे तेथी ते आंख्युंने हानी न करतां फायदो करे छे. आगळना वखतमां केळवेली तमाकुनो धुंवाडो पीवामां आवतो नही पण विविध वनस्पतिओना योगवाळा औषधनो धुंवाडो होका वाटे पीवातो काळे करीने तमाकुये तेनुं स्थान लीधुं छतां होका वाटे पीवातो धुंवाडो नुकसानकर्ता नथी।

धूम्रपान वर्ति (च. सू. अ. प. १७)—हरेणुका घउंलो कलोंजीजीरुं केसर नखलो वाळो चंदन तमालपत्र तज पलचि कालावाळानां मूळ पद्मकाष्ठ हमरो जेठीमध जटामांसी गुगळ अगर काष्ठ साकर वड उंबरो पिपळो पिपर अने लोद्रनी छाल वन्य राळ मोथ शिलारस काळां लाल कमळ पुष्प लोबान सालेडानी छाल बधाने बारीक करी घीनो करमो दइ एक इंचना एक दोरा जेटली जाडी शरनामना पोली वासनी सळी उपर ए वसाणा चोपडी अंगुठा जेटली जाडी सीगारेट आंठ इंच लांबी करवी सुकाइ जाय पटले तेना पर घी चोपडवुं वचमां छिद्रवाळी ते बीडी धुंवाडो पीवानी नळीमां खोसीने आगळने। भाग सळगावीने पीवी ।

उपला वसाणामां चरबी घी मीण मध वगेरे वसाणां मेळवी टोकडीगुं करी होका वाटे के होकली तथा चलम वाटे तेनो धुंवाडो पीवाय छे तो हृदय गळु ताळवुं मस्तक एमां वायु गरमी कफनो उपद्रव कदी थातो नथी ।

धुंवाडो पीवाथी माथानु भारेपणुं माथानो दुखावो चसका सळखम आधाशीशी कान अने आंख्युंनो दुखावो उधरस हेडकी श्वास दांतनु ढीलापणुं कान नाक आंख्युं मोढामांथी पाणी पडवां नाकमां के मोढामांथी खराब वास आववी दांत डाढना दुखावा खोराक पर अभावो डोक झकडावी शरीरे खजवाळ पेटमां जीवडा पांडुरोग लोहीनु फीकापणुं कफ लाळुं पडवी साद घोघरो थइ गयो होय गळाना विविध रोग वाळ खरी जाता होय वाळ पोंगळा थइ गया होय चहेरानी फीकाश छींकु बहु आवती होय घेन सुस्ती आळस बुद्धिनी जडता बहु उंघ आवती होय वगेरे रोग धुंवाडो पीवाथी मटी जाय छे अने थाता अटकी जाय छे. धुंवाडो पीनारने डोक उपरना रोग कदी थाता नथी ।

दातण करीने, कळशे जइ आवीने, नहाइने, जमीने, छींक खाधा पछी नस्य सुंघ्या पछी अंजन आंज्या पछी उंघमांथी उठीने तथा आनंद माटे धुंवाडो पीवो. पण रात दिवस मरजी पडे त्यारे टाणे कटाणे पीधा करवो नही खरी रीते सवारे राते जमीने दुध वगेरे पीइ एम ३-४ वखत धुंवाडो पीवानो टेव होय तो सारी गणाय धुंवाडो बहु हद उपरांत टाणा विना के नियम विना पीवाथी काने बेरापणुं आवे आंख्युं नबळी पडी अंधापो आवे छे जीभ तोतडाय छे वाक्य शुद्धि जाती रहे छे लोही पडे छे मगजमां फेर चकर आवे छे ।

जुलाब लीधो होय तेणे लोही पडतु होय झेरनी असर होय शोक आवी पडयो होय सगर्भा स्त्रीये बहु महेनत करी होय दारु पीधो होय फेर चक आवता होय बे शुद्धि थइ गइ होय शरीर क्षीण थइ गयु होय क्रोध चडये होय शोष पडतो होय माथामां लाग्युं होय प्रमेहनु दरद होय तेओये धुंवाडो पीवो नही पीवाथी ते ते रोग वधे छे. धुंवाडो पीनारे मोढेथी धुंवाडो खेंची ते गोटा नाक वाटे कदी काढवा नही एम करवाथी आंख्योने नुकशान पहोंचे अने पछी ए जातनो टेव पडी जातां परिणामे अंधापो आवे छे. मस्तक नाक अ आंख्यना रोगमां ते ते दोषना शमन माटे नाक वाटे धुंवाडो पीवाय छे अ मोढामांथी कढाय छे नाक वाटे धुवाडो पीवो होय तो एक फरणुं दवा-

एक फरणे पीइ मोढेथी धुवाडो काढवो आ क्रिया दरदने अंगे तेने अनुसरतां ओसडीयांनी बनावेलो बीडी के होका वाटे ते पीवाय छे. होकानी नळी ठेक ठेकाणे गांठयुंवाळी होय अने जेम बने तेम लांबी नळी होय ते फायदा कारक छे छेटेथी आवेलो पाणीमांथी पसार थयेलो गांठये गांठये कपाता वेगनो अने लांबी नळीथी पातळो थयेलो धुवाडो आंख मस्तक वगेरेने नुकसान करतो नथी माटे धुवाडो पीवामां नळी जेम लांबी होय तेम सारी रबरनी नळी सारी नथी ।

अभ्यंग-तेल मर्दन—आखे शरीरे तेल चोळवुं तेमां खास करी कान, माथुं अने पगे वधु चोळवुं. चोळवामां ब्राह्मी तेल, लक्ष्मीविलास तेल, आमळांनुं बीजुं सुगंधी के सादुं तलनुं तेल वापरवुं. तेथी शरीर पुष्ट, शक्तिवाळुं, सुवाळुं अने वान सारो थाय छे, वायु कफ मटे छे, उंघ सारी आवे छे, आयुष्य वधे छे. माथामां तेल नाखवाथी आंखनुं तेज वधे छे, वाळ सुवाळां, लांबा अने मजबुत मूळना थाय छे. हमेशां सांजे अथवा सुती वखते कानमां तेल नाखवाथी कानना रोग थता नथी. अने आंखनुं तेज वधे छे, मगज शांत, स्निग्ध थाय छे. रात्रे पगे तेल चोळी सुवानी टेवथी मगजने, आंखने फायदो छे ।

उद्वर्तन—तेल चोळ्या पछी तेलनी चिकाश काढी नाखवा माटे तथा नहाती वखते वनस्पतिनो भुको कोरो के पाणीमां कालवी शरीरे चोळवो ते उद्वर्तन. आमळां खांडी भुको करवो तेमांथी हमेशां ५-७ तोला भुकाने पाणीमां कालवीने अथवा कोरे कोरो शरीरे अंगे मोप घसी न्हावुं. तेथी चामडी सुंवाळी थाय छे, मोंनी कांति वधे छे, चरबी ओछी थाय छे, बळ वधे छे, आयुष्यवर्धक प्रकरणमां कहेलां उद्वर्तन चोळवाथी शरीर नीरोगी रहे छे. चण्यानो अथवा मसुरनो लोट पाणीमां डोई शरीरे चोळाय छे ।

स्नान—हमेशां नहावाथी भुख लागे छे, ओज बळ आयुष्य वधे छे, शरीर पुष्ट थाय छे, खजवाळ, मळ, श्रम, परसेवो, तंद्रा, ग्लानि, तरश, दाह अने पापनो नाश थाय छे. बहु गरम पाणी माथे रेडवुं नही. ठंडा अथवा नवशेका पाणीथी हमेशां नहावुं. उनाळामां ठीक पडे तो ठंडे पाणीए नहावुं. हमेशां आमळांना पाणीए नहावाथी वळीयां पळियां आवतां नथी अने सो वर्ष सुधी जीवी शकाय छे. ताव, झाडा, आंखना कानना वायुना रोग, आफरो, सळखम, अजीर्ण ए दरदोवाळाये नहावुं नहीं. नहाइ टुवालथी घसीने डील लुइ नाखवाथी खजवाळ के चामडीनां दरद थतां नथी साबुये कदी नहावुं नही पण शरीरनी चिकास काढवा माटे आमळांनो भुको चण्यानो लोट मसुरनो लोट अथवा अरीठाना पाणीथी नहावुं ।

वस्त्र—न्हाया पछी रेशमी, उननां अथवा सुतराउ ऋतु प्रमाणे हमेशां स्वच्छ, धोयेलां कपडां पहेरवां. हिंदमां शियाळामां २-३ महीना शरीरे सीवेलां कपडां पहेरवानी जरुर पडे छे बाकीनी ऋतुमां एक धोतीयुं बस छे. हिंदुस्ताननां हवा पाणी माटे घणे भागे सुतराउ सफेद कपडांज फायदाकारक छे. हालमां सुधरेलाओ कोट पाटलुन अने अंदरना भागमां ४-५ कपडां पहेरी आखो दिवस आफीसनुं काम करता होय छे तेओ नीरोगी रहेता नथी घणे भागे धोती-

यांज उत्तम छे तेथी कमर सुधी शुद्ध हवाने आववा जावानो अवकाश रहेतां आरोग्य वधे छे. कपडां पहेरवानी जरुर मर्यादाना रक्षण पुरती अने टाढ वरसादथी रक्षण मेळववा माटे छे. शरीर पर कपडुं पहेरवानी जरुर न होय छतां पटीकेट खातर कपडां पहेरी राखवां ए आरोग्यने आयुष्यने हानी पहोचाडवा रुप छे. कुदरती रीते ऋतुपरत्वे शरीर कपडाने मागील्ये त्यारे कपडुं पेरवुं पण उचित छे. हद उपरांत जरुरीयात करतां वधु कपडां पहेरवाथी पैसानो दुर्व्यय थाय छे अने कपडांनी मोंघवारी करवाना कारणरुप मनाय छे. माटे स्त्रीयो पुरुषो विद्यार्थीओ वृद्धो बाळको बधांये जरुरीयात जेटलां कपडां पेरवांनुं ध्यानमां राखवानुं छे ।

संध्या

संध्या करावो ए प्रत्येक मनुष्य उपर आरोग्यशास्त्रना नियमने अनुसरीने धार्मिक फरज गणाय. आ जगतमा नीरोगी जोवन टकावी राखो परलोकमां सद्‌गति मेळववानु साधन ए संध्या वैश्वदेव स्वाध्याय वगेरे धार्मिक क्रियाओ छे संध्यामांनी दरेक क्रिया आयुर्वेद अने योग साथे संबंध धरावे छे संध्यामां सूर्यनी उपासना मुख्य छे. सूर्य मनुष्योना जीवननो आधार छे. प्राणायाम ए आयुष्य वधारवानो मुख्य उत्तम क्रिया छे. मनुष्यना जीवनमां जे नित्य २१ हजार श्वासोच्छ्वास लेवामां आवे छे ते ओछा लेवाय तेटलु आयुष्य वधे छे ते प्राणायामथी बने छे. हालमां पश्चिमना संस्कारवाळा लोको पश्चिमनु अनुकरण करी लांबा श्वास लइ फेफसाने कसरत आपवाथो तंदुरस्ती वधवानुं माने छे पण नियम विनाना लांबा श्वास लेवा ए निष्फळ छे तेथी कांइ लाभ थातो नथी प्राणा-याम करवामा मंत्र साथे श्वास लोधा पछी श्वास रोकवो पडे छे ते अंदरनां आयुष्य ओछुं करनारां तत्वोने उखेडी रेचकद्वारा बहार काढे छे एटले आर्यशास्त्रकारोए संध्यानी योजना करी छे तेवी आयुष्य वधारनारी क्रिया दुनीयाना कोइ शास्त्रमां नथी. ऋषिमुनोयो सेंकडो वर्ष जीवता ए संध्या अने प्राणायामने लीधेज माटे आरोग्य दीर्घायुष्य बळवान शरीरनी इच्छा राखनारे संध्या तथा बीजो धार्मिक क्रियाओ अवश्य करवी ।

स्नानं—नहाया पहेलां हाथमां पाणी लइ संकल्प करवो. **अत्राद्य संवत मास पक्ष तिथि वासरे मम कायिक वाचिक मानसिकदोष निवरणार्थे मनःसंकल्पित कार्यसिद्ध्यर्थे प्रातःस्नानमहं करिष्ये** एम कही पाणी हेठुं मुकवु नदीमा के घर आगळ ज्यां नहावुं होय ते जळने प्रणाम करो नहावुं. शंनोदेवो० द्रुपदादिवे० आपोहिष्ठा० गंगेचयमुने० वगेरे मंत्र नहातां भणवा ।

आचमन—नहाया पछी सफेद धोयेलुं धोतीयुं पेरी रेशमी उनना दर्भना आसन मृगचर्म के व्याघ्रांबर उपर बेसी संध्या करवी त्रभाणुं पंचपात्र आचमनी अर्घ्यु पात्र पासे राखवां पछी ॐ **भूःपुनातु** ॐ **भुवःपुनातु** ॐ **स्वःपुनातु** भणी मन लेवां. पछी विष्णुना २४ नामनु स्मरण करवुं. ओं केशवाय नमः नारायणाय० वाय० गोविंदाय० विष्णवे० मधुसूदनाय० त्रिविक्रमाय० वामनाय० श्रीधराय० केशाय० पद्मनाभाय० दामोदराय० संकर्षणाय० वासुदेवाय० प्रद्युम्नाय० अनिरुद्धाय० षोत्तमाय० अधोक्षजाय० नारसिंहाय० अच्युताय० जनार्दनाय० उपेंद्राय० हरये० कृष्णाय नमः ॥ पछी गायत्री मंत्रथी शिखा बांधवी पछी जमणे हाथे माथे रि पाणी छाटतां नीचेनो मंत्र भणवो ।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा ॥
यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥

संकल्पः—अत्राद्य महामांगल्यप्रद अमुक संवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे मुक तिथौ अमुक वासरे ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं प्रातःसंध्योपासनं करिष्ये हाथमां के आचमनीमां जळ लइ जे संवत जे महीनो कृष्ण के शुक्ल क्ष जे तिथि वार चालतो होय तेनो उच्चार करी जळ हेठुं मुकवुं पछी बे हाथ नीने अडाडी नीचेनो मंत्र भणी भूमि प्रार्थना करवी ।

भूमिप्रार्थना—पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥
त्वंच धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनं ॥

भस्म धारण—पछी डावा हाथमां भस्म लइ तेमां आचमनीथी पाणी नाखी उपर जमणो हाथ ढांको गायत्री मंत्र तथा **अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वं ह वा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मास्यानि आपोज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्** आ मंत्र भणी पछी बन्ने हाथे भस्म चोळो ॐ **त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषं ॥ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनं ॥ ऊर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्** आ मंत्र भणतुं जावुं अने कपाळ डोक बावडां छातीमां भस्मनां त्रिपुंड्र करवां पछी गायत्री मंत्रथी रुद्राक्षनी माळा पेरवी पछी **ओं अपहता रक्षांसि वेदिषदः** आ मंत्र भणी जमणा हाथमां जल लइ जमणे पडखेथी डावा पडखा तरफ फेंकवुं पछी गायत्री मंत्रथी तथा आपोहिष्ठा० मंत्रथी शरीरे माथे जलथी मार्जन करवुं पछी प्राणायाम करवो ।

प्राणायामः—नीचेनो मंत्र भणतु जावुं अने तर्जनी अने मध्यमा शिवायनी २ आंगळी (टचली अने तेनीपांसेनी) अने अंगोठा वडे प्राणायाम कराय छे. प्रथम नाकनुं

डावुं फरणुं आंगळीथी दबावी जमणे फरणेथी श्वास चडाववो तृप्तिपर्यंत श्वास चडव्या पछी अंगोठेथी जमणुं फरणु दबाववु ते पूरक कहेवाय. पछी ते श्वासने रोकवो अने मनमां मंत्र भण्या करवो ते कुंभक कहेवाय पछी डावे फरणेथी ते पवनने धीमे धीमे बहार काढवो अने मनमां मंत्र भणवो. पछी डावे नाखोरेथी श्वास चडावी रोकी अने जमणे नखोरेथी श्वास काढवो ए एक प्राणायाम थयो कहेवाय. तेवा ३ प्राणायाम करवा. श्वास रोकवो ते सारी रीते श्वास लीधा पछी गळेथी रोकवो श्वासनो धको नाकने लागवो नहो जोइए. गळेथी श्वास रोक्यो होय पछी पकडेलुं नाक छोडी दइए तोपण श्वास बहार आवतो नथी. रोकेला श्वासनो धको नाकने लागे तो आंखुंने नुकसान थाय मनमां मंत्र भणतु जावु बन्ने फेफसां श्वासथी भराइ जाय त्यारे गळेथी श्वास रोकवो आ कुंभक कहेवाय श्वास जेम वधु वखत रोकवानो अभ्यास थाय तेम शरीरनुं आरोग्य अने आयुष्य वधे छे. शरूआतमां १—२ के ५ मीनीट रोको शकाय छे पण अभ्यास वधारतां १०—१५—३० के वधु वखत सुधी श्वास रोकी शकाय छे. जाणीतु पहेलु पगथियुं प्राणायाम द्वारा श्वास रोकवानी शक्ति केळववी ए छे [illegible] दरम्यान कुंभक वखते केटला मंत्र भणवा ए गणत्री अंतश्चक्षुथी थइ शके छे. कुंभकनो अभ्यास मनमां मंत्रनी गणत्री करतुं जावु तेना उपरथी वधारे [illegible] संध्या वखते ३ प्राणायाम करवा आ प्राणायाम भुख्ये पेटे करवा च [illegible] पण नहीं. मंत्र: ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जन ॐ तपः ॐ सत्य ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ आपोज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥ आ मंत्रथी प्राणायाम करवा पछी नीचेनो मंत्र भणी आचमनीथी जळ पीवुं पछी न्यास करवा

न्यासः—ॐ वाङ्मे मुखेस्तु । ॐ नासिकयोर्मे प्राणोस्तु । ॐ नेत्रयोर्मे चक्षुरस्तु । कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु । ऊर्वोर्मे ओजोस्तु अरिष्टानि मेंगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु इति ए प्रमाणे बोलतुं जावुं अने मुख नाक आंख्यु बे कान बे बावडां बे साथळ अने बधां अंगोनो जमणे हाथे स्पर्श करतुं जावुं

अंगुप्राशनम्—ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यःपापेभ्यो रक्षंतां यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किंचिद्दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा आ मंत्र भणी आचमन लेवुं. पछी ॐ केशवायनमः स्वाहा । ॐ नारायणायनमः स्वाहा । ॐ माधवायनमः स्वाहा । ए दरेक मंत्रे अकेक आचमन लेवुं पछी ॐ गोविंदायनमः स्वाहा । ए मंत्रथी हाथ धोइ नाखवा पछी नीचेना मंत्रथी शरीरना जुदा जुदा भाग उपर मार्जन करवुं जमणे हाथे पाणी छांटवुं ।

मार्जनं—ॐ आपो हिष्ठामयो भुवस्तान ऊर्जेदधातन महेरणाय चक्षसे । योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः उशतीरिव मातरः । तस्मा अरंग-मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा चनः । माथे पृथ्वी उपर अने छातीये मार्जन करवु पछी

अघमर्षण-सुमित्रिया न आप ओषधयः मन्तु ॥ दुर्मित्रियास्तस्मैसन्तु योस्मान् द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः ॥ ए मंत्र वडे जमणा हाथमां जळ लइ नैर्ऋत्य खूणा तरफ पडखे फेकवु ते जळ सामुं जोवु नही ।

पाप पुरुष निष्कासनं—द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ॥ पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुंधंतु मैनसः ॥ जमणो हाथ गायना कान जेवो करी तेमां जळ लइ नाक आगळ धरी उपलो मंत्र भणवो अने जमणा नसकोरामांथी पाप पुरुषने निकळतो कल्पीने ते जळ जोया वगर डाबे पडखे धरती पर नाखवु पछी आचमन लइ १ प्राणायाम एक करी सूर्यने अर्घ्य आपवा ।

सूर्यार्घ्य—उभा थइ गायत्री मंत्रथी सूर्यने अर्घ्य आपवा ओं भूर्भुवः स्वः ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् । ब्रह्म स्वरूपिसविता सूर्यनारायण एष तेर्घः एम कही अंजलीमां जळ लइ पुष्प साथेनुं जल राखो उपलो मंत्र भणो सूर्य सामे अर्घ्य देवो एम ३ अर्घ्य आपवां संध्यानो समय वीती गयो होय तो चोथो अर्घ्य आपवो. अर्घ्य आपती वखते अंगुठाने आंगळीथी छुटो राखवो. पछी गायत्री मंत्रथी सूर्यने जळ वडे प्रदक्षिणा करवी पछी सूर्योपस्थान करवुं ।

सूर्योपस्थानं

ओं उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यंत उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् ॥ १ ॥ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ २ ॥ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा द्यावा पृथिवी अंतरिक्ष ५ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥ ३ ॥ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्र-मुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ५ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ ४ ॥

सूर्य सामा उभा रही बे हाथ ऊंचा करी उपल्या उपस्थानना मंत्र भणवा पछी बनी शके तो सूर्य सामे उभा रहीने अथवा आसन पर बेसीने तुळसी अथवा स्फाटिकनी माळाथी गायत्रीनो एक हजार अथवा सो अथवा दश अवकाश प्रमाणे जप करवो. पछी जळ लइ **अनेन जपेन भगवान श्री सूर्यनारायणः प्रीयतां** एम बोली पाणी मुकवु पछी सूर्यने गुरुने माता पिताने प्रणाम करवा । ॥ इति संध्याविधि ॥

ए प्रमाणे संध्या कर्या पछी देव पूजा करवी पछी अवकाश होय तो शतरुद्रीय १०० मंत्रोना पाठ करी पछी चा काफी दुध वगेरे पीवानी टेव होय ते पीवु पछी पोताना कामकाजमां जोडावुं पछी जमवा टाणे ब्राह्मण द्वारा के पोते वैश्वदेव करी पछी जमवा बेसवुं ।

चा काफी–हालमांघेर घेर अने अढार आलममां सेंकडे ७० टका चा, १० टका काफी, १० टका दुध अने १० टका कांइपण पीवानी टेव वीनाना आ रीते अखा हिंदमां चाली रह्युं छे. श्रीमंतोना घरमां तो आंग्युं चोळतां उठे के तुरत चा जोइए पछी दातण पाणी करी चा नास्तो पछी बपोरे जमवानुं पछी सांजे चा नास्तो अने राते जमवानुं तेमां चानो नियम नथी दिवसमां ४–५ वखत चा पीवो एतो सामान्य रीवाज थइ गयो छे. केटलाक माणसो घणघणनो चा पीये छे, चा पीवाथी फेफसां अने हृदय नबळां पडे छे ५–७ वखत चा पीवानी टेववाळाने क्षयरोग अने केन्सर थयाना केटलाक केस रसशाळामां नोंधाणा छे तेम चा पीनाराने भुख ओछी लागे छे पाणीनी तरस ओछी लागे छे, कुदरती रीते खोराक पचवा माटे जेटलुं टाढुं पाणी पीवानी जरुर छे ए कुदरती नियमने चा अटकावे छे एटले अंदरना अवयवो ते प्रमाणे नबळा थाय अने विविध रोगमां सपडाय छे हालमां क्षय केन्सर अने हृदय बंध थइ जावाना दरदो वधी पड्यां छे तेनुं मुख्य कारण चानुं वधारण छे. शरीरनुं आरोग्य जाळवी राखवा इच्छनार सवार सांज बे टाणां जमवु दुध छाश वगेरे जमवा टाणे पीवां ते शिवाय वचमां कांइ पण चीज पेटमां नाखवी नही नानी उमरनां बाळकोने सवारमां भुख लागे छे तेमने दुध रोटलो दही रोटलो के तेवी चीज सवारमां खावा आपवां पण मोटा माणसाये तो सवार १२ थी १ वाग्या सुधीमा अने राते ८ था ९ वाग्या सुधीमां जमवुं. वचमां लांबा दिवसोमां भुख लागे तो कांइ फेरफार करवो आ राते चा काफीनुं व्यसन छोडी सादो खोराक अने आहार विहारमां नियम राखवाथी हालमां हिंदनुं सरासरी आयुष्य सात घटी गयुं छे ते मटी प्रजा दीर्घायुषी थाशे. चा, काफी, कोको, पान, बीडी, सीगारेट वगेरे जातनां व्यसनोथी अने धार्मिक संस्कार अने क्रियाओ ओछी थतां प्रजानां आरोग्य आयुष्य क्षीण थयां अकाळ मरण वधी गयां छे ।

आजनी जुवान प्रजा स्त्री अने पुरुषोनी शरीर संपत्ति क्षीण थावा लागी छे, उपरथी मोटी उमरे लग्न करवानी वातो करनारा ब्रह्मचर्यथी भ्रष्ट थइ शारीरिक अने मानसिक क्षीणताने आधीन थइ गया छे. आ बधुं धार्मिक शिक्षणनो अभाव स्वच्छंदता व्यसननी पराधीनता अने स्वच्छंदी उच्छृंखल वर्तन ए छे.माटे शरीर अने मनने बळवान दीर्घायुषी करवा इच्छनारे कोइ जातना व्यसनने आधीन रहेवु नही ।

सवार सांज जमता वखते न्हावुं. घर आगळज रहेता होइये तो सांजे जमती वखते हाथ पग धोइ कोगळा करी सांजनो संध्या करी जमवुं. ओफीस के धंधा माटे बजारमां जावुं पडे अनेक माणसोनो संसर्ग स्पर्श थयो होय गरमीने लइ आखो दिवस परसेवो वळ्या होय तो सांजे जरुर न्हावुं. कळशे गया पछी न्हाइने बधां कपडां बदलवा

कार्पासं कटिनिर्मुक्तं कौशेयं भोजनोत्तरम् ॥
क्षालनात् शुद्धिमाप्नोति ऊर्णं वातेन शुद्ध्यति ॥ १ ॥

सुतराउ लुगडुं पहेरी काढी नाख्या पछी अने रेशमी लुगडुं जम्या पछी अशुद्ध थाय छे. ते धोया पछी शुद्ध थाय छे. उननां लुगडांने मळमूत्र के एठवाड अडी जाय तो ते धोवुं जोइए, न करता उननां लुगडांने खंखेरी नाखवांये एटले पवनथीज शुद्ध थाय छे।

घरमां पाणी भरनारा ठाम वासण उटकनारा कपडां धोनारा के रसोइ करनारा माणस बाइ के जाय गमे ते होय तेणे कळशे जइ धुळथी सारी रीते हाथ धोवा न्हाइने धोयेलां लुगडां पहेरवां. अठवाडीये नख उतारवा. नाक छींकीने हाथ धोवा. पेशाब जइ आवी पाणी लइ हाथ पग धोइ कोगळा करवा अने कळशे जइ न्हाइ लुगडां बदलाववा आ रीते स्वच्छता राखनारा नोकर माणसो के रसोया ने घरधणी जे पुण्य करे तेमां छठ्ठो भाग मळे छे अने स्वच्छता न राखे तो पाप भागी थाय छे. धोयेलां लुगडां पहेर्या पछी नवुं काम करवुं तेज ते पाणीथी करेली रसोइ देवने धराय छे के देवकार्यमां [illegible] ।

वैश्वदेवः

आरोग्य रक्षण दीर्घायुष्य तथा आलोक परलोकना कल्याण माटे आयुर्वेदे नित्य नैमित्तिक कर्मो करवानो आज्ञा करी छे पण हालना जमानामां प्रजामांथी ते घणेभागे अस्त थया छे तेथो प्रजा अल्पायुषो बळ पराक्रमहीन तथा निर्धन थाती चाली छे. प्रजाने तेमां प्रवृत्त करवानो सरळता माटे आयुर्वेदना आ शास्त्रोय ग्रन्थमां संध्या वैश्वदेव वगेरे आप्यां छे. संध्या ए पोताना शरीर अने आत्माने शुद्ध नीरोगो राखवानुं कर्म छे अने वैश्वदेव यज्ञ ए पोताना, पाडोशीना, गामना अने पोताना देशना सर्व प्रकारना हित साथे संबंध धरावे छे, वैश्वदेव ए घर घरनो हमेशां करवानो नित्य यज्ञ छे तेथी हवानी शुद्धि थइ वरसाद नियमित वरसे छे देवताओ प्रसन्न थइ राजा प्रजाने दरेक प्रकारे सुखी राखे छे गीतामां श्री कृष्ण भगवान कहे छे के:-

" ब्रह्माये प्रजानी उत्पत्ति साथेज यज्ञो पण सरज्या छे अने कह्युं के आ यज्ञथी तमे प्रजाने उत्पन्न करी पोषण करो. आ यज्ञ तमने मनवांछित सिद्धि आपशे. तमारा यज्ञथी संतोष पामेला देवताओ तमने दरेक रीते मदद रुप थाशे, तमारु रक्षण करशे, देवताओये आपेलुं तमे भोगवो छतां एमने तमे न आपो तो तमे चोर कहेवाव दरेक माणस देव निमित्त रांधी शके पोताने माटे रांधनारो पापी गणाय छे पापनो भोक्ता थाय छे पण यज्ञ द्वारा देवताओने आप्या पछी बाकी वधेला अन्नने खानारा बधा दोषथी मुकाय छे माटे वैश्वदेव रुपी नित्य यज्ञ कर्या पछी अने देव पितृ वगेरने तेना बलि आप्या पछी दरेक मनुष्ये जमवुं जोइए "

गीता उपनिषद तथा बीजां शास्त्रोनो आज्ञा प्रमाणे दरेक माणसनी नित्य नैमित्तिक धार्मिक कार्योथी शरीरनी आरोग्यता जळवाय छे, लांबु आयुष्य भोगवी आ संसारमां दरेक रीते सुखी थइ शकाय छे. श्रीमंतो अने राजकर्ताओ मोटा यज्ञो करी देशने समृद्ध सुखी बनावी शके छे तेम दरेक मनुष्य वैश्वदेवद्वारा घरघरनो यज्ञ करवा बंधायेल छे. छेवटे जेओ वैश्वदेव न करी शकता होय तेवा माणसोये पोताना घरमां जे देवने पोते पूजता होय तेने नैवेद्य (निवेद) धरीने पछी जमवुं. आ रिवाज जोके जुना संस्कारवाळी प्रजामां प्रचलित छे पण नवी सुधरेली प्रजा आवा कोइपण धार्मिक संस्कारो विनानी होवाथी अकाळे मरे छे क्षय केन्सर हृदय बंध जेवा रोगने आधीन थइ अने वेळी मरी जाय छे. पोतानु अने पोताना देशनु कल्याण इच्छनारे आयुर्वेद साथे संबंध धरावनार त्रिकाळज्ञ ऋषिमुनीयोये उपदेशेला धार्मिक क्रियाओ करवी अने पोताना स्नेही मित्र आडोशी पाडोशीओने पण तेमां प्रवृत्त करवा।

वैश्वदेव माटे कुंड त्रांबानो १२ इंच ओरस चोरस अने छ इंच उंडो करवो कांठे फरतो मेखला कंदोरो २ इंचनो करवी. उगमणे मोढे दर्भासन उपर बेसी अत्राद्य अमुक संवत्सरे मासे पक्षे तिथौ वासरे मम पंचसूनोत्पन्न पाप परिहार पूर्वक अन्नसंस्कारार्थं देवपितृ मनुष्य तृप्त्यर्थं प्रातःसायं वैश्वदेवाख्यं कर्माहं करिष्ये एम संकल्प करी हाथमां दर्भना बंटो पेरी पाणीथी कुंडने गायत्री मंत्र वडे मार्जन करी चुलानो अग्नि पधरावो ।

ॐ जुष्टोदमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुपयाहि विद्वान् ॥
विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामाभरा भोजनानि ॥
एह्यग्न इह होतानिषीदादब्धः सुपुर एता भवानः ॥
अवतां त्वा रोदसी विश्वमिन्वे यजामहे सौमनसाय देवान् ॥ १ ॥

आ मंत्र भणी कुंड पर चोखा छांटी आवाहन करवुं पछी तेमां लाकडां मडाय नाखी वांसनो भुंगळीथी धमी प्रज्वलित करी अग्निनुं ध्यान नीचेना मंत्रथी करवु

ओं चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य ॥
त्रिधाबद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यान आविवेश ॥ १ ।

ए प्रमाणे ध्यान धरी पावकनाम्ने वैश्वानराय नमः आ मंत्रथी अग्निनी चंदन पुष्पथी पूजा करी पछी इशान खुणेथी आरम्भी इशान खुणा सुधी जळ वडे प्रदक्षिण करी पछी घरमां जे अन्न रंधाणुं होय तेनी आहुतीयो आपवी. शक्ति होय तो वैश्वदेव माटे रोज चोखा रांधवा. होमवाना अन्नमां घी मेळवी गायत्री मंत्रथी जळ वडे अन्न प्रोक्षण करी आहुतीयो आपवी ।

१ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम
२ ,, भुवः ,, इदं वायवे ,,
३ ,, स्वः ,, इदं सूर्याय ,,
४ ,, भूर्भुवः स्वः ,, इदं प्रजापतये ,,
५ ,, देवकृतस्यैनसो वयजनमसि स्वाहा इदमग्नये न मम
६ ,, मनुष्यकृतस्यैनसो ,, ,,
७ ,, पितृकृतस्यैनसो ,, ,,
८ ,, आत्मकृतस्यैनसो ,, ,,
९ ,, एनस एनसो ,, ,,
१० ,, यच्चाहमेनो विद्वांश्चकार यच्चाऽविद्वांस्तस्य सर्वस्यैनसो वयजनमसि स्वाहा इदमग्नये न मम
११ ,, प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम
१२ ,, अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम
१३ ,, विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम

॥ ततो भूतबलिं दद्यात् ॥

त्यारपछी भूतबलि आपवा अग्निना कुंडनी पश्चिम पूर्व उत्तर दक्षिण भागमां मंडळ करी दर्भ पाथरी तेनापर बलिदान मुकवां ।

१ ओं धात्रे नमः इदं धात्रे न मम
२ ,, विधात्रे नमः इदं विधात्रे न मम
३ ,, विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम
४ ,, विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः ,, ,, भूतेभ्यो ,,
५ ,, भूतानां पतये नमः ,, भूतानांपतये ,,
६ ,, गृह्योतदेवताभ्यो नमः इदं गृह्योतदेवताभ्यो न मम
जनेइ अपसव्य करीने
७ ,, पितृभ्यः स्वधा नमः इदं पितृभ्यो न मम
जनेइ सव्य करीने
गाय माटे गोग्रास हाथमां लइ

सौरभेयाः सर्वहिताः पवित्राः पापनाशनाः ॥
प्रतिगृह्णंतु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥ १ ॥

इदमन्नं गोभ्यो नमः इदं गोभ्यो न मम

आ मंत्र भणी गायने गोग्रास अपवो. पछी घरबहार जइने नीचे प्रमाणे बोली कुतराने कागडाने अने कीडीयुंने बलिदान जमीन उपर नाखवुं ।

श्वभ्यो नमः इदं श्वभ्यो न मम । वायसेभ्यो नमः इदं वायसेभ्यो न मम । पिपीलिकादिभ्यो नमः इदं पिपीलिकादिभ्यो न मम पछी आचमन लइ त्र्यायुषं **जमदग्नेः०** आ मंत्र भणी ललाटमां गळे स्कंधे हृदये वैश्वदेवना कुंडनी भस्म लगाडवी पछी कांइ न्यूनाधिक थयु होय तो अग्निनी प्रार्थना करवी. **अनेन वैश्वदेवाख्य कर्मणा श्री परमेश्वरः प्रीयतां न मम** बोली पाणी हेठे मुकवुं ।

॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥
॥ इति वैश्वदेवः ॥

चंदनादि धारण—न्हाया पछी केसर, सुखड, कृष्णागुरु, कपूर, कस्तूरी वगेरे साथे घसेली चंदननुं त्रिपुंड्र कपाळे, छातीये, गळे, बाहु उपर, पर पेट करवुं. तेथी तृषा, मूर्छा, दुर्गंध, परसेवो, दाह मटे छे. भाग्यनो उदय थाय छे. लक्ष्मी मळे छे, तेज, कांति, ओज अंगबळ वधे. चंदन लगाडी पुष्पोनी तथा रुद्राक्षआदिनी माळा पहेरवाथी कांति वधे, पाप ग्रहबाधानो नाश थाय, लक्ष्मी वधे छे. चंदन लगाडया पछी इष्ट स्मरण पूजन ध्यानादि करवुं ।

भोजन—जमवा बेसवा पहेलां विद्वान ब्राह्मण, गाय, अग्नि, पुष्पनी माळा, घी, सूर्य, जळ अने राजा ए आठ मंगळ वस्तुओ कहेवाय छे तेमांना कोइनुं दर्शन करवुं. हमेशां मनुष्योने चार प्रकारनी इच्छा थाय छे जमवानी, पाणी पीवानी, निद्रानी अने रतिस्पृहा (विषयेच्छा). भूख मारवाथी, आळश, अरुचि, श्रम, शिथिळता, तंद्रा, आंखुंनी नबळाइ, धातुशह अने बळक्षय थाय छे. तरश रोकवाथी गळुं मोढानो शोष थाय, कान बेरा थाय, लोही सुकाय हृदयमां व्याधि थाय. निद्रा रोकवाथी बगासां आवे, माथुं, आंख भारे थाय, अन्न पचे नहीं, आळश अने तंद्रा थाय. जमवाथी मन प्रसन्न थाय छे. बळ वधे छे, देह टकी रहे छे. स्मृति, आयुष्य, शक्ति, कांति, ओज, सत्व, अने शोभा वधे छे. देश काळ अने प्रकृतिनो विचार करी बे वखत जमवुं. सवारे पहेला पहोरनी अंदर (लगभग नव वाग्या पहेलां) अने बीजा प्रहर पछी-मध्यान्ह पछी जमवुं नहो. आगलो खोराक पची गयो होय त्यारे जमवुं. शुद्ध ओडकार आवे, उत्साह होय, पवन छुटे, शरीर हळवुं लागे, भुख अने तरस लागे ते खोराक पची गयानां लक्षण छे. भोजन, मळमूत्रोत्सर्ग अने संग एकांतमां करवां. जुदी जुदी धातुनां वासणमां जमवाथी जुदा जुदा गुण थाय छे. सोनानां वासण नेत्रने हितकारक आयुष्य वधारे. रुपानां नेत्र हितकर पित्तकफ ग्रहबाधा हरे. कांसांनां ठाम बुद्धि वर्धक पडता लोहीने अटकावे. पित्तळनां ठाम वायु करे रुक्ष, उष्ण, कृमि अने कफनाशक. लोढानां के काचनां ठाम सिद्धिप्रद सोजा, पांडु, कमळाने मटाडे बळ वधारे. पथ्थरना के माटीना ठाममां जमवाथी दरिद्रता आवे. केळना के बीजा पांदडा उपर जमवाथी विष हरे, भुख लगाडे. पाणी पीवानां ठाम त्रांबानां के माटीनां लेवां. उगमणे मोढे के उत्तरादे मोढे जमवा बेसवुं. जमवानुं ठाम पोताना आसनथी जरा उचुं राखवुं. प्रथम ठाममां केळना पानमां पत्रावळीमां षटकोण यंत्र पाणीथी करी वचमां ओं लखो पछी पोताना खोराक जेटलुं पीरसाववुं पीरसाइ जाय एटले अन्ननी स्तुति करवी ।

ॐ मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः
मानो व्विरान्रुद्रभामिनो व्वधिर्हविष्मंतः सदमित्वा हवामहे ॥ १ ॥

ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳫं हृदयेभ्यो नमो
व्विचिन्वत्केभ्यो नमो अविक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः ॥ २ ॥

नमः शंभवाय च मयोभवायच नमः शंकरायच
मयस्करायच नमः शिवायच शिवतरायच ॥ ३ ॥

अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः ॥ आ मंत्रथी अन्ननी स्तुति करी गायत्री मंत्रथी अन्न उपर जळ छांटवुं पछी धेनुमुद्रा बतावी सत्यं च त्वा ऋतेन संदधामि ए भणी ठामने फरती पाणीनी प्रदक्षिणा करवी पछी

ॐ अग्निरस्मिजन्मना जातवेदाघृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् ॥
अर्कस्त्रिधातुरजसो विमानोजस्त्रो धर्मो हविरस्मि नाम ॥ १ ॥

आ मंत्रथी अन्नदेवतानुं ध्यान करी जमणा हाथमां पाणी लइ नीचेनो मंत्र भणी पाणी जमीन पर मुकवुं ।

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्निर्ब्रह्मणा हुतं ॥
ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ॥ १ ॥

पछी जमवाना ठामनी जमणी बाजु कोइपण जातनुं पान मुकी तेना पर नीचेना मंत्र भणी ६ बलिदान आपवा ओं भू पतये स्वाहाः ॥ ओं भुवन पतये स्वाहा ॥ ओं भूतानां पतये स्वाहा ॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वेभ्यः पितृगणेभ्यः स्वधा ॥ क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥ पछी अपोशन माटे हाथमां पाणी लइ ते हाथ जमवाना ठामने अडाडी ओं अमृतोपस्तरण मसि स्वाहा ॥ आ मंत्र भणो पी जावुं. पछी पांच आंगळीयुनां पहेलां टेरवामां समाय तेवडो ग्रास लइ दांतने अडाडया विना गळी जवा ओं प्राणाय स्वाहा ओं अपानाय स्वाहा ओं व्यानाय स्वाहा ओं समानाय स्वाहा ओं उदानाय स्वाहा दरेक वखते एक एक ग्रास मोमां मुकी चाव्या वीना के दांतने अंन्न अडाडया विना गळी जावुं पछी जमवुं ।

प्रारंभमां मीठुं अने आदु खावुं तेथी जीभ अने कंठनी शुद्धि थाय छे पहेला मधुर रस पछी खाटो, खारो, तीखो, कडवो अने तुरो एम क्रमवार जमवुं बहु गरमा गरम खावाथी बळनो नाश थाय छे अने ठरी गयेलुं खावाथी पचतुं नथी माटे विचारीने खोराक लेवो. एकदम उतावळे नहि तेम बहु विलंबथी पण नहि तेम चावीने जमवुं. पेटना २ भागमां खोराक त्रीजा भागमां पाणी अने चोथो पवननी आव जा माटे खाली राखवो. वचमां वचमां पाणीनो कोगळो पीतु जवुं जमतां जमतां घणुं जळ पीवुं नहि तेम जळ पीधा विना जमवुं नहि अर्थात वचमां वचमां थोडु थोडु जळ पीतु जवुं जम्या पहेलां भुख्ये पेटे पाणो पीवाथी कृशता मंदाग्नि अने दोषनो प्रकोप थाय. भोजननी वचमां वचमां जळ पीवाथी भुख वधे अने आरोग्य मळे. जमीने तुरत जळ वधु प्रमाणमां पीवाथी शरीरनी स्थूळता अने कफ वधे. तरश्यो माणस जमे तो गुल्मरोग थाय अने भुख्यो माणस जळ पीये तो जळोदर रोग थाय जमी लीधा पछो दिवसे छाश अने रात्रे दुध पीवुं । केटलाक लोको जमीने सोडा पीये छे ते पश्चिमना संस्कार छे के ज्यां आपणा जेवी वलोणा उतार छाशना दर्शन पण थाता नथी सोडानी बहु टेवथी हृदय बंध पडी जाय छे. छाश पीवाथी भुख लागे छे खोराक पचे छे दिवसे जमीने छाश अने राते जमीने दुध पीवुं ।

जमी लीधा पछी हाथमां चापवुं पाणीनुं भरी ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा एम भणी हाथमांनुं अरधुं पाणी पीवुं अने अर्धुं जमीन उपर मुकवुं जमी लीधा पछी हाथ धोइ पाणी पीधा पछी थोडु एकाद कोळीयो अन्न बाकी राखवुं ते नीचेनो मंत्र भणी दक्षिण दिशाये जमीन उपर मुकवुं अने पाणी चापवुं एक हेटे मुकवुं ।

मद्भक्तोच्छिष्टमन्नंतु भुंजंतु पितरोऽधमाः ॥
तेषामन्नं मयादत्तमक्षय्यमुपतिष्टतु ॥ १ ॥

रौरवेऽपुण्यनिलये पद्मार्बुदनिवासिनाम् ॥
प्राणिनामुदकं दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ २ ॥

પછી ઉઠી માણસોની હાલચાલ ન હોય ત્યાં કોગળા કરી મો સાફ કરી અને ભીના હાથ આંખે ફેરવવા તેથી આંખ્યું તેજસ્વી રહે છે પછી જમણો હાથ ડુંટી ઉપર મુકી નીચેનો મંત્ર ભણવો.

हनुमंतमगस्त्यं च शनिं च वडवानलं ॥
आहारपाचनार्थं च स्मरेद् भीमं च पंचमं ॥ १ ॥

પછી સોક ડગલાં ચાલી પાન સોપારી ખાવાં.

પાન સોપારી—જમીને ઉઠયા પછી ગળામાં કફ ઉત્પન્ન થાય છે તેના નિવારણ માટે તથા મુખ શુદ્ધિ માટે તુરાં, તીખાં, કડવાં અને હૃદયને પ્રિય લાગે એવા પદાર્થોનો ધુંવાડો પીવો તથા કાથો ચુનો કપૂર કસ્તુરી લવિંગ સોપારી સાથે નાગરવેલનું પાન ખાવું દિવસે સુઇને ઉઠયા પછી, નહાયા પછી, જમીને, સભામાં કે રાજા પાસે જાતી વખતે અને સ્ત્રીસંગ પછી પાન ખાવું પાનમાં સવારને વખતે સોપારી વધુ નાખવી, બપોરે કાથો અને રાત્રે ચુનો વધુ નાખવો. પાનનો અગ્ર ભાગ (અણી) ખાવાથી આયુષ્ય ઓછું થાય છે પાનનું મૂળ (ડીંટીયું) ખાવાથી યશનો નાશ થાય છે અને પાનના મધ્ય ભાગની ઉભી નસો ખાવાથી લક્ષ્મીનો નાશ થાય છે માટે ત્રણે કાઢીને પાન ખાવું પાન ખાવાથી મો શુદ્ધ થાય છે દુર્ગંધ દાંત જીભના રોગ મોગાંથી લાળ પડવી ગળાના રોગ વગેરે મટે છે બહુ પાન ખાવાથી આંખ્યું વાળ દાંત જઠરાગ્નિ તથા કાનને નુકશાન પહોંચે છે. બળ ઓછું થાય છે, લોહી ઘટે છે, કાંતિ ઓછી થાય છે, શરીર કૃશ થાય છે જમીને તુરત સુવાથી શરીર મેદસ્વી થાય છે. જમીને દોડવાથી મૃત્યુ થાય છે અને જમીને આંટા મારવાથી આયુષ્ય વધે છે. ઉનાળો હોય તો દિવસે એકાદ કલાક સુવું સુવાની ટેવ ન હોય તો પણ જમ્યા પછી આડે પડખે થઇ કાંઇ વાંચવું એકાદ કલાક આળોટી પછી કામે વળવું હમેશાં ઉઠયા પછી ચા દુધ વગેરે પીધા પછી પાન સોપારી ખાધા પછી કે બીડી હોકો પીધા પછી ૨-૪ કોગળા પાણી પીવાનો નિયમ રાખવાથી મો અને હૃદય અન્નનળ શુદ્ધ થાય છે નીકર તે અવયવનાં દરદ થાય છે.

ताम्बूलं कटु तिक्तमुष्णमधुरं क्षारं कषायान्वितं
वातघ्नं कृमिनाशनं कफहरं दुःखस्य विच्छेदनम् ।
स्त्रीसंभाषणभूषणं धृतिकरं कामाग्निसंदीपनं
तांबूले निहिताखयोदशगुणाः स्वर्गेपि ते दुर्लभाः ॥



રાત્રિચર્યા

સંધ્યાકાળ—સંધ્યા ટાણે જમવાથી રોગ થાય, મૈથુનથી ખરાબ સંતાન થાય, નિદ્રા કરવાથી તેજ હણાય, અભ્યાસ કરવાથી વાંચવાથી આયુષ્ય ઓછું થાય અને પંથ-મુસાફરી કરવાથી ભય ઉપજે માટે સંધ્યા ટાણે એ પાંચ વાનાં છોડવાં.-

सांजे सायं संध्या कर्या पछी राते पहेला पहोरनी अंदर हळवुं पची जाय तेवुं चावीने भुखना प्रमाणमां ओछुं जमवुं अथवा पकवेलुं दुध पीवुं ।

रतिस्पृहा—मनुष्योने हमेशां विषय स्पृहा थाय छे विषयनो सर्वथा त्याग करवाथी प्रमेह मेद नपुंसकपणुं वीर्यस्राव थाय छे. १६ वरस सुधीनी स्त्री बाळा ३२ वरस सुधी तरुणी [illegible] थी ५० वरस सुधी [illegible] प्रौढा (आधेड) अने ते पछीनी विषय स्पृहा वर्जित वृद्धा कहेवाय छे आयुर्वेदमां आ संबंधे नीचे प्रमाणे लख्युं छे ।

निदाघशरदोर्बाला हिता विषयिणी मता ।
तरुणी शीतसमये प्रौढा वर्षवसंतयोः ॥
नित्यं बाला सेव्यमाना नित्यं वर्धयते बलम् ।
तरुणी ह्रासयेच्छक्तिं प्रौढा जनयेज्जराम् ॥
सद्योमांसं नवं चान्नं बाला स्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकस्नानं सद्यः प्राणकराणि षट् ॥
पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥

ताजुं मांस, नवुं अन्न, बाळा स्त्री घी दुधनुं भोजन तथा उने पाणीये न्हावुं ए ७ वानां तत्काळ जीवन वधारनारा बळवर्धक छे. वासी के सडेलुं मांस [illegible] स्त्री उगतो सूर्य. खाटुं दहीं, [illegible] वखते स्त्रीसंग सवारने वखते निद्रा ए छ तत्काळ प्राण हरनारां [illegible] नाश करनारां अने वृद्धावस्था लावनारां छे. उनाळामां पंदर दिवसे अने बीजी ऋतुमां त्रण त्रण दिवसे स्त्री पासे जवुं [illegible] पर्वमां (सपरमे परबे) पवित्र दिवसोमां मधराते मध्यान्ह समये खुल्ली जगामां स्त्रीसंग न करवो पुत्रनी इच्छावाळा पुरुषे शरीर उपर चंदनादि सुगंधी पदार्थो चोपडीने. मन प्रसन्न राखीने, [illegible] पदार्थ खाइने सारां वस्त्रो पहेरीने, पान खाई स्त्री पासे जवुं. बहु ताणीने [illegible] होय हिंमत विनानो भुख्यो तरस्यो क्रोध पण [illegible] पीडावाळो बाळक [illegible] मळमूत्रादिना वेगथी पीडायो होय तेणापुरुषे स्त्री पासे जवुं नहि [illegible] समान शीळवाळी कुलीन कामेच्छावाळी हर्ष पामती अने सुंदर लुगडां [illegible] पहेरेली होवी जोइये ।

रजस्वला कामेच्छा विनानी, मलिन अप्रिय, हलकी कामनी, अवस्थाये मोटी, व्याधि पीडित अंगो खोटवाळी सगर्भा, गुह्य भागना रोगवाळी, [illegible] पछी स्त्री पासे जवुं नहि. रजस्वला स्त्रीना संगथी नेत्र आयुष्य अने तेजनो नाश थाय छे [illegible] स्त्रीना संगथी गर्भने नुकशान थाय छे अने कांइपण अंग अवयव [illegible] बाळक जन्मे छे ।

[illegible] संगने अंते उन पाणीये न्हावुं साकरवाळुं दुध, कांइपण मिष्टान्न पदार्थ, खुल्ली हवा, मांसरस अने निद्रा ए हितकारक छे ।

अति विषयथी शूळ ज्वरास, खांस श्वास, कृशता, पांडु अने क्षयरोग थाय छे.

निद्रा—समय प्रमणे नियमित उंघ लेवाथी शरीरना साते धातु समान रहे छे अेचेनी मटे छे शरीर पुष्ट थाय छे वान कांति, बळ, उत्साह अने जठराग्नि वधे छे. रात्रे उजागरो करवाथी शरीर शिथिल थाय काम करवामां सुस्ती लागे आंखनुं तेज ओछुं थाय, मगजना रोग उपजे छे, पण जे लोकोये हमेशां उजागरो पोतानी प्रकृतिने अनुकूळ करी लीधो होय छे तेओने उजागरो उपाधिरुप थतो नथी. निद्रामां अधोवायु बहु छुटतो होय तो ते बंध करवा माटे सुती वखते बीजोरानां पाननो भुको तोलो ०। अने मध तोलो १ चाटवुं १६ दिवस चाटवाथी लज्जा उत्पन्न करनारो पवन ओछो छुटशे।

उगमणी दिशाये तथा दक्षिण दिशाये माथुं राखी सुवाथी दरेक प्रकारनुं सुख मळे आयुष्य वधे मन शांत रहे आथमणी तथा उत्तर दिशाये माथुं राखी सुवाथी चिंता उपजे मरण निपजे. आंख्ये टाढुं पाणी १-२ कळशा छांटी सारो सुरमो के आंजण आंजी सुवुं सुती वखते दीवो ठारी नाखवो बहारगाम अथावरु मकानमां सुवानो प्रसंग आवे तो दीवो जरुर जणाय तो राखवो बाकी हमेशने माटे दीवो राखी सुवाथी आंख्यनुं तेज ओछुं थाय मगजमां गरमी वधे अने अतःकरणनी शांति ओछी रहे छे हमेशां डाबे पडखे सुवुं सुती वखते नीचेनो मंत्र भणवो।

व्यासश्च पद्मनाभश्च मुचुकुंदो महामुनिः ॥
अगस्त्यो माधावश्चैव पंचैते सुखदायकाः ॥

राते दुध सोपारी पान के कोइपण वस्तु खाधी होय के बीडी होको पीधा होय तो सुती वखते आंख्ये पाणी छांटती वखते कोगळा करी बे चार कोगळा पाणी पी पछी सुवुं।

बाळको ३-४ वरसनां थाय त्यांसुधी त्रांबाना के कांसाना वाटकामां पाडेलुं कोरु आंजण अथवा ए आंजणमां गायनु घी कालवी तेमां कपुर के सुरमो मेळवी दररोज आंजवुं।

सुती वसते ओशीके के पासेना टेबल उपर स्वप्न बुक राखवी तेमां जे स्वप्नां आवे ते नोंधतु जावुं जे स्वप्नु आव्यु होय ते जागतानी साथे नोंधी लेवुं पछी ते भुली जवाय छे स्वप्नांने आधारे भविष्यनी घणी वातुं जाणी शकाय छे घणी वखत भविष्यमां पोताने जे धन जे जातना मकान बंगला मीलकत स्त्री पति संतान राजलाभ के बीजु मळवानुं होय के आपत्ति आववानी होय ते तथा पोताना स्नेही मित्रोना संबंधमां जे बनवानुं होय ते स्वप्नाने आधारे जाणी शकाय छे जो के केटलेक अंशे स्वपनानुं फळ मळतुं पण नथी परंतु स्वपन सृष्टिनी नोंध होय तो ते पोतानी तथा पोतानी प्रजाने ते वांचवानुं रसिक वांचन पुरु पाडे छे अने केटलेक अंशे भविष्यना बनावोनी आगाही जाणी शकाय छे।

निद्रात्याग—सवारमां सूर्योदय पहेलां उठीने तुरत कोगळा करी ८ चापवां वासी पाणी हमेशां पीवानी टेव राखवाथी कोइपण रोग थातो नथी, थयो होय तो मटी जाय छे, अकाळे वृद्धावस्था आवती नथी, आंखोनुं तेज वधे छे, मगज तृप्त रहे छे अने १०० वरस सुधी जीवी शकाय छे. आजनी सुधरेली दुनीया उठतांवेंत धगधगतां पीणां पीये छे तेथी हृदय फेफसां आंतरडां नबळां पडी अनेक रोग थाय छे।

अर्शः शोथग्रहण्यो ज्वरजठरजराकुष्ठमेदोविकारा
मूत्राघातास्त्र पित्तश्रवणगलशिरः श्रोणिशूलाक्षिरोगाः ॥
ये चान्ये वातपित्तक्षतजकफकृता व्याधयः संति जंतो
स्तांस्तानभ्यासयोगादपहरति जलं पीतमंते निशायाः ॥

सूर्योदय पहेला वासी पाणी ८ चापवा आशरे बे प्याला हमेशां पीवाथी टेव राखवाथी हरस सोज संग्रहणी ताव पेटनां दरद बुढापणथी कुष्ट मेदवृद्धि मूत्ररोग पडनुं लोही कानना मगजना कमर नीचेना नेत्रना रोग मटे छे ।

ऋतुचर्या

ऋतुना विभागथी वरसना छ भाग विभाग थाय छे शिशिर वसंत अने ग्रीष्म ए त्रण उत्तरायण तथा वर्षा शरद अने हेमंत ए त्रण दक्षिणायनना ऋतु छे. शिशिर मा फागण, वसंत चैत्र वेशाख, ग्रीष्म जेठ अषाड, वर्षा श्रावण भादरवो. शरद आशु कार्तक अने हेमत मागशर पोष ए प्रमाणे बार महीनाओमां छ ऋतुओ वहेंचायेली छे ।

दिवसना २४ कलाकमां पण छ ऋतुओना गुण रहेला छे सवारमां वसंत. मध्याह्हे ग्रीष्म, सांजना हेमंत रातना पहेला भागमां शिशिर, मधराते शरद अने पाछला राते वर्षा ऋतुनो प्रभाव रहेलो छे ते प्रमाणे भिन्न भिन्न प्रकृति वाळाने जेम ऋतुओना फेरफारथी प्रकृतिमां फेरफार थतो रहे छे तेम दिवसना ए ते भागमां पण दोषनो प्रकोप के शमन देखाय छे तेनो विचार करवाथी सारवारमां सरलता पडे छे ।

दरेक ऋतुमां शरीरने आरोग्य राखवा माटे ऋतुचर्यामां बताव्या प्रमाणे वर्तन राखवुं अने ओषधनु सेवन करवुं तेथी आरोग्य जळवाय छे रोगथी रक्षण मळे छे ।

शिशिर ऋतु (मा फागण, तप-तपस्य, हिम मास.)

यत्रामृतद्युतिकरव्रजसंनिकाशैर्व्याप्ता दिशश्च विहिताश्च तुषारजालैः ।
रुद्धं नभश्च समुदीक्ष्य ततो भियेव वह्निर्दिशं स भजते शिशिरे विवस्वान ॥

पथ्यापथ्य आ ऋतु बेसतां २१ दिवस सुधी हरडेदळ तोला ५ पीपर तोलो ०॥, साकर तोला १९, साथे खांडो ८। तोलो भुको पाणी साथे सवारमां लेवो. घउं, चोखा खीचडी सुरण आदु मध घी बाजरो तुरदाळ मग अडद गोळ स्निग्ध पदार्थ तलनु तेल गरम पाणी उननां तथा जाडां वस्त्र दळेलां धान्य चणयानी चाजो खाटां खारां पदार्थो स्त्रीसंग शरीरे तेल मर्दन वगेरे हितकारक छे रुक्ष तुरा वाहडां पदार्थ खाटां अथाणां खाटां दहीं मगफळीनु तेल वगेरे हानिकारक छे ।

शिशिरानंद रस—पारद तोला ३ गंधक तोला ४ अभ्रक तोला २ लोह तोलो १॥ बंग यशद भस्म केसर प्रत्येक तोलो १ एक, वंशलोचन आसोंध शतावरी बळदाणा भांगना बी सफेद जीरुं काचां अकलकरो मुशळी अजमोद चित्रो पलचि मरी लिंडीपिपर प्रत्येक तोला २ बे, कपुर तोलो ०॥

गळोनुसत्व तोला ५ हरगोरीरस तोला २॥ साथे मेळवी घुंटी भुकी राखवी. दिवसमां २ थी ६ रति दुध साथे अपाय छे मुख्यत्वे करी वीर्यना दरद छातीनी के मगजनी नबळाइमां उत्तम छे स्त्रीयो बाळको युवान वृद्ध विद्यार्थीओ सन्यासी बधा आनु सेवन करी शके छे मा के फागण मासमां सेववाथी शरीर निरोगी रहे छे।

वसंत ऋतु—(मधु–माधव, चैत्र वैशाख, मेष वृश्चिक)

पथ्यापथ्य—वसंतऋतुमां कफ दोषनो प्रकोप अधिक होय छे. तेथी जठराग्नि मंद पडे छे माटे वसंत ऋतुनी शरुआतमां इच्छाभेदी गोळी २ लेवाथी उलटी अने झाडा बन्ने थाय छे बनी शके तो प्रथम उलटी करावी पछी कफघ्न जुलाब आपवो. मध साथे हरडे तोलो ०। २१ दिवस लेवी. घउं तुवेर चण्या जव वगेरे जुनां धान्यो कडवा तीखा तुरा स्वादवाळी चीजो मोतिभस्म प्रवाळभस्म माणिक्य पिष्टी गायनु दुध घी रात्रीना ३ जा पहोरे स्त्रीसंग ए हितकारक छे दिवसे निद्रा दहीं चिकणां भारे पदार्थो खाटी चीजो मिष्टान्न तडको अथाणां दिवसे स्त्रीसंग ए हानिकारक छे।

वसंतानंद रस—शुद्ध गंधक रससिंदूर अभ्रकभस्म वंगभस्म धोळी मुशळी लिंडीपिपर प्रत्येक तोला ५ पांच, लइ साथे मेळवी शेमळानो छालना रसनी ७ भावना आमळाना रसनी १ भावना शतावरीना रसनी १ भावना आपी सुकावी घुंटी भुको करी शीशीमां भरवो. सवार सांज ४ थी ६ रतिभारनी मात्रा मधमां के घी साकरमां चाटी उपर दुध पीवुं आना सेवनथी आ ऋतुमां शरीर निरोगी रहेवा साथे बळ वीर्य कांति अने कामशक्तिनी वृद्धि थाय छे कृशना मटे छे शरीर पुष्ट थाय छे।

ग्रीष्म ऋतु—(शुक्र–शुचि. जेठ–अषाढ, मिथुन–कर्क)

यत्र प्रचंडतरचण्डकरप्रताप संशोषितद्रुमलतातृणवारिपूरः।
उज्जृंभते पवनवेगविकीर्णरेणुच्छना भवंति च दिशः स निदाघकालः॥

आरामाः शीतमन्नं शिशिरमपि जलं सेन्दु सैलं च निद्रा।
श्वेतं सूक्ष्मं च वस्त्रं स्रगपि सुकुसुमा चन्द्रपाटीरलेपः॥
सायं तोयावगाहाः सरसि सरिति वा फुल्लपंकेरुहायां।
सश्वेतः साज्यसक्तुर्व्यजनमरुदपि ग्रीष्मकाले हिताय॥

पथ्यापथ्य—आ ऋतुमां सूर्यना सखत तडका पडे छे तेथी शरीरमांनो कफ दोष ओछो तथा वायु वधे छे तेथी वृक्षोनी छाया नजीकनां ठंडकवाळां घरमां रहेवुं. बगीचा, ठंडां खानपान, ठंडुं पलची कपुर वाळाथी सुवासित जळ, बारीक श्वेत वस्त्रो, सुगंधी पुष्पोनी माळा, सांजे कमळ पुष्पो खीत्यां होय तेवा तळाव के नदीमां नहावुं, वींजणांनो पवन ग्रीष्म ऋतुमां हितकारक छे आ ऋतुना प्रारंभना २ अठवाडीयामां गोळ साथे हरडेनुं सेवन करवुं।

शश मृग, घउं, चोखा, मग, साकर, तांजळजो, भुरुंकोळुं कोळानो अवलेह, केळां, द्राक्ष, आमळांनो मुरब्बो, गुलकंद तरबुच, खजुर, छाश, जुना गोळनुं पाणी, वातपित्तशामक अन्न पाननुं सेवन करवुं. स्वच्छ झीणां वस्त्र पहेरवा. सफरजन, मीठां लींबु, संत्रा, मीठां दाडम वगेरे मधुर फळ खावां, शरबत पीवा. शीखंड, साथवो, आंबलवाणुं, (आंबलीना पाकेला कातरानुं गोळ नाखी करेलुं पाणी) दिवसे निद्रा, सुवासित करेलुं ठंडु जळ, चंद्रनो प्रकाश, अगाशीमां के खुला फळियामां शयन ए हितकारक छे ।

तीखां, जलद, गरम, खारां, खाटां, दाह करनारां पदार्थो, कसरत, मद्य, सूर्यनो तडको, अधिक स्त्रीसंग, तेलमां तळेली चीजो वगेरे हानीकारक छे ।

ग्रीष्मानंद रस—पारद, गंधक, अभ्रकभस्म, शिलाजीत माक्षिकभस्म, यशदभस्म प्रत्येक अकेक तोलो, विदारीकंद, शतावरी, वाराहीकंद, मुशळी प्रत्येक ५ तोला, सुखडनो घसारो तोला ३ लवींग तोलो १॥ पलची तोला ४ चणकबाब तोला २॥ साकर तोला १० जेठीमधनो शीरो तोला ३ जावंत्री तोलो १ बधांने साथे मेळवी खांडी मीठां दाडमनो रस बधो भुको पलळे तेटलो नाखवो सुकाइ जाय एटले भुको करी कपडे चाळी ०॥ तोलो उंचु गुलाबनुं अत्तर मेळववुं. मात्रा ३ थी ६ रती ग्रीष्मपानक शरबत साथे आपवुं ।

ग्रीष्म पानक—शोधेली भांग तोलो १ गुलाबनां फुल तोला १० खसखस तोलो १॥ बदामनां मींज तोला १० एलचि तोला ४ मरी तोलो १॥ चणकबाब तोला २ वरियाळी तोला २॥ पस्ता तोला ५ बधां साथे खांडी राखवा जरुर पडे त्यारे गुलाबजळमां वाटी तेमां जरुर जेटली साकर दुध मेळवी पावुं ।

आमळांनो मुरब्बो, गुलकंद, च्यवनप्राश अवलेह, द्राक्षासव, चंदनासव, उशीरासव वगेरेनो उपयोग करवो ।

वर्षा ऋतु (श्रावण—भादरवो, नभ—नभस्य, सिंह—कन्या)

यत्र व्योम चितं चयैर्जलमुचां भूमिर्नवैः शाद्वलैः
क्वापि क्वापि तु नूतनाम्बुपटलच्छन्नोच्चनिम्नस्थली ॥
भेकैः पक्वपलाण्डुपाण्डुरुचिभिस्तोयाशयाः सेविताः
नीपैः सर्वदिशश्च सोऽस्तु जगतो हर्षाय वर्षागमः ॥

पथ्यापथ्य—आ ऋतुमां वायु प्रबळ होय छे तेथी कुवानां पाणी पीवां मेडीवाळा मकान उपर रहेवुं नवशेका पाणीथी नहावुं शरीरे तेल मर्दन करवुं खाटां मधुर खारां तुरां तीखां अने कडवां पदार्थो योग्य प्रमाणमां खावां. आ ऋतुमां शरीर ओगळ्यां करे छे तेथी बे वखत नहावुं घउं चोखा अडद जांगल आमिष सेवन करवुं. सामे पवने चालवुं नहि वरसादमां तडकामां के खुल्ली जग्यामां उघाडे शरीरे सुवुं नहि फरवुं नहि बेसवुं नहि नदीने कांठे जवुं नहि दिवसे उंघवुं नहि स्त्री प्रसंग ओछो राखवो. रुक्ष लुखां सुकां काचां कोरां पदार्थ खावां नहि हरडेदळ तोला ५ अने सिंधालुण तोला २॥ साथे खांडी २१ दिवस

सुधी हमेशां ०। तोलो पाणी साथे खावुं राते बे बे गोळी आरोग्यवर्धनी पाणी साथे लेवी सिद्धसूत पूर्णचंद्रोदयनी गोळी लोहभस्म अभ्रकभस्म सुवर्णभस्म के सुवर्ण वसंत मालतीनुं सेवन करवुं ।

वर्षानंद रस—रससिंदूर तोला ३ अभ्रकभस्म, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिक भस्म, रौप्यभस्म, प्रवालभस्म, वंगभस्म, यशदभस्म, कनकबीज, जायफळ, जावंत्री, कपुर, लवींग, मुशळी, वळदाणा प्रत्येक अकेक तोलो खाथे मेळवी. चित्रो, शेनको, नगोड प्रत्येकना रसनी अकेक भावना दइ घुंटी भुको राखवो. मात्रा ३ थी ६ रती मध साथे चाटी उपर दुध पीवुं. बधी ऋतुमां आनुं सेवन कराय छे. शरीर निरोगी, दीर्घायुषी करवा माटे आनो प्रयोग २ महीना करवो जोइए. अनुपान-भेदथी क्षय, प्रमेह, प्रदर, वाना रोग तथा बीजा दर्दो मटे छे ।

शरद ऋतु—(आशु-कारतक, इश-ऊर्ज, तुला वृश्चिक)

यत्रोज्वला जलमुचो लसदिंदुबिम्बतारं नभो विकचनीरजकैरवाणि ॥
नीराणि मानसनिभानि सतां बिभर्ति स्वच्छानि काशकुसुमानि च सा शरत्स्यात् ॥

सर्पिः स्वादुकषायतिक्तकरसा यच्छीतलं यल्लघु
क्षीरं स्वच्छसितेक्षवः पटुरसः स्वल्पं पलं जांगलम् ॥
गोधूमा यवमुद्गशालिसहिता नादेयमंभ्रदकं
विश्रामः सुहृदां गणेषु मधुरा वाचः सरःक्रीडनम् ॥

पथ्यापथ्य—आहार विहार द्वारा शरीरमां जे पित्त वर्षाऋतुमां एकठुं थयुं होय छे तेनो प्रकोप शरदऋतुमां थाय छे. तेथी आशु महिनो बेसतां २१ दिवस सुधी साकर साथे हरडे भुकी तोलो ०। हमेशां खावी. घी साकर, गोळ, मग, चोखा, जव, उंघ, तळावनुं पाणी, कढेलुं दुध, शिखंड, मीठो छाश, शेरडी, तुरा, खारा, मधुर, कडवा रस, शाकपत्र, भाजीपालो, अंशूदक के नदीनां पाणी, जांगल अमिष, घी, तळावमां क्रीडा, स्नेही मित्रो साथे आनंद गोष्ठी च्यवनप्राश अवलेह, महालक्ष्मी विलास वगेरे हितकारक छे ।

शारदानंद रस—सुवर्णभस्म ०॥ तोलो रौप्यभस्म १ तोलो कांस्यभस्म १॥ तोलो, जायफळ, जावत्री, केसर, पलसी, लवींग, तज प्रत्येक २ बे तोला लोहभस्म २॥ तोला रससिंदुर ३ तोला अभ्रक ३॥ तोला बोळा मुसळी ४ तोला बधांने साथे मेळवी आमळांना रसमां तथा शतावरीना रसमां एक एक दिवस घुंटी छाये सुकावी खरल करी राखवुं. मात्रा दिवसमां ३ थी ६ रती मध वीनां चाटो उपर दुध पीवुं. शरद ऋतुमां एक के बे मास आ औषधनुं सेवन कर्युं होय तो आखुं वर्ष निरोगी रहेवाय. बीजी ऋतुमां पण खाइ शकाय छे. ते सिवाय प्रमेह, प्रदर सोमरोग, धातुविकार कोइ पण जातनो नबळाइ, छातीना मूत्रपिंडना, मूत्राशयना वीर्यना छातीना रोग, क्षयरोग पटलां दरदमां पण तात्कालिक फायदो करे छे.

हेमंत ऋतु,—(मागशर—पोष, सह—पहस्य, धन—मकर)

तुषार जालैः पिहितानि यत्र सवाष्पनाराणि मुखानि भानुः ।
प्रातः प्रसन्नानि करैः करोति दिशां वधूनामिव खण्डितानाम् ॥
कस्तूरिकागुरुविमिश्रितकुंकुमार्द्रदेहो निषेव्य रमणीरतिखेदखिन्नः ।
शीते कृती हिमविशालनिशासु धन्यस्तारुण्यपीनकुचयोगनिरस्तशीतः ॥

पथ्यापथ्य— हेमंत ऋतुमां ठंडी वधु होय छे वायु अने जठराग्नि वधे छे आ ऋतुमां रात्रिओ लांबी होय छे. झाकळ अने पवनना संसर्गथी वायु बळवान रहे छे. हिमालय तरफनो वायु वाय छे. आ ऋतुमां हमेशां शरीरे अने माथे तेल मालीस करवुं, सूर्यने तडके बेसवुं, तापणी, सवारमां भोजन, कसरत, पौष्टिक खोराक, जाडां गरम रेशमी वस्त्रो पहेरवां. रातना पहेला तथा बीजा पहोरे स्त्रीसंग, तिखां, कडवां, गरम खाटां खारवाळां पदार्थो, दहीं, घी, घउं, तल, अडद, गोळ, साकर जंगली मांस, पवन आवतो न होय तेवां मकान, आसव वगेरे हितकारक छे. सुंठ, हरडे समभागे खांडी बन्नेथी बमणो गोळ नाखी हमेशां ०। तोलो खावुं. अजीर्ण करनारी चीजो, लुखां, वाइडां, शुष्क, स्निग्धता विनानां पदार्थो वाल, वटाणा, ठंडु पाणी, जीणां कपडां वगेरे हानीकारक छे ।

हेमंतानंद रस—रौप्यभस्म तो. २ लोहभस्म तो. ०। सुवर्णभस्म तो. ०। पूर्णचंद्रोदय तो. ०॥ प्रवालभस्म, कौंचबीज, वरधाना बी, भीमसेनीकपुर, जायफळ जावंत्री, भांग, सुंठ, मरी पीपरीमूळ गोखरु, रास्ना, गळोसत्व, बळदाणा मस्तगी मुशळी, मीठी खरखोडीनां फळ, नागकेसर, एलची, केसर, प्रत्येक एक एक तोलो मेळवी शेमळाना मूळनी छालना रसमां तथा गोखरु पंचांग रसमां एक एक दिवस घुंटी मुको राखवो. मात्रा २ थी ४ रती कढेला दुध साथे लेवां पुष्टि बळ वीर्य कांति, कामशक्ति नेत्रतेज वधे हृदय मजबुत थाय [illegible] खीले, स्फुर्ति, उत्साह, आनंद वधे. सतत अभ्यासथी वळीयां पळीयां मटे [illegible] पण युवान जेवो बळवान थाय योगी संन्यासी पण आनुं सेवन करी शरीर स्थिर निरोगी करी योग साधनामां साफल्य मेळवी शके छे [illegible] मगजनां मूत्रनां, वीर्यनां स्त्रीना ऋतुनां दरदमां तथा दीर्घकालिक [illegible] तात्कालिक काम करे छे.

आ शिवाय पूर्णचंद्रोदय षोडशगुणगंधक आदिल छे तेमां मनुशाम [illegible] गोळीओ मोतीनी भस्म, माणिक्य भस्म शिव हरताल भस्म ताम्र भस्म [illegible] सहस्र पुटी अभ्रक भस्म, पन्ना पिष्टि वगेरे साथ वापराय छे ।

आ प्रमाणे एक वरस संवत्सर कहेवाय छे तेमां छ ऋतुओ [illegible] शिशिर वसंत ग्रीष्म त्रण उत्तरायण छे तेमां पृथ्वी पश्चा रसनु शोषण थाय छे आमां वायु सुको वाय छे आ ऋतुनो गुण अग्नि सूर्य प्रधान छे गरम छे. वर्षा शरद हेमंत त्रण दक्षिणायन आमां पृथ्वीने आपवानु होय छे दक्षिणायनमां [illegible] भीना स्निग्ध बहु बळवान रही पोताना ठंडा प्रकाशथी जगतने [illegible] एटले दक्षिणायन ठंडु छे एटले सूर्य वायु अने चंद्र काळने आधीन रही जा जगतने नभावी रह्या छे ।

सदाचार

आ जगतमां पृथ्वी जळ अग्नि वायु अने आकाश ए पांच महाभूतथी उत्पन्न थयेली, मनुष्यमात्रने आंखुंथी जोनारी कानथी सांभळनारी नाकथी सुंघनारी जीभथी स्वाद अने चामडीथी स्पर्श जाणनारी आ पांच इन्द्रियुं छे इन्द्रियुंथी जुदुं अने छठुं मन छे ते मनने आधारे इन्द्रियुं पोत पोताना कामममां प्रवृत्त थाय छे मनुष्यनी प्रत्येक क्रिया मननी प्रेरणाथीज थाय छे. पांच इन्द्रियुंना आधार रुप पृथ्वी जळ अग्नि वायु अने आकाश छे शब्द स्पर्श रुप रस अने गंध आ पांच इन्द्रियुंना विषयो छे. पांचे इन्द्रियुंनी पांच प्रकारनी बुद्धि होय छे ते बुद्धि इन्द्रिने लगता पदार्थ, सत्व वगेरे गुण अने आत्मा साथे संबंधवाळी तथा अस्थिर अने स्थिर बे जातना निश्चयवाळी होय छे. मननुं आश्रयस्थान बुद्धि अने आत्मा छे ए बधाने आधारे सारी के नरसी बाबतमां मनुष्य दोराय छे के पाछो हठे छे. वस्तु साथे संबंध धरावनारी क्रिया ए कर्म (काम) कहेवाय छे. मनुष्यमां सत्व गुण रजोगुण के तमोगुणना ओछा वधु प्रमाणने आधारे ते ते गुणोना स्वभावने अनुसरी तेनी इन्द्रियुं सारी नरसी बाबतोमां जोडाय छे. पांच इन्द्रियुंये ग्रहण करवाना पदार्थोनो बहु सहवास के सहवासनो तद्दन अभाव के अयोग्य सहवासने आधारे मन साथे पांचे इन्द्रियुं बगडी जइ मनुष्यनी सद्बुद्धिनो नाश करे छे. परंतु पूर्व जन्मना संस्कारने लइ सत्वगुणनो उदय थायतो इन्द्रियुं साथे मन ठेकाणे आवी बुद्धिने सारे मार्गे दोरे छे. पांच इन्द्रियुं मन अने बुद्धि सत्वादि गुणो साथे समान योग अतियोग हीनयोग के मिथ्यायोग जे प्रकारनो जे प्रमाणमां जे जे गुणोनो ओछो वधु संयोग थाय ते प्रमाणे पोताना कुदरती स्वभावमां रहे छे अथवा तेमां बगाडो थाय छे ।

पांच इंद्रियुं अने मन ए छये खराब रस्ते न दोरायां होय तेने सारे रस्ते दोरवा अने कुदरती नियमने अनुसरतां राखवा माटे दरेक मनुष्ये सावधान रहेवा माटे पोतानो स्वभाव प्रकृतिने हितकारक वस्तुमां प्रवृत्ति करवा अने अहितकारक वस्तुथी दुर रहेवा माटे बुद्धिपूर्वक विचारीने समजीने जोइने प्रत्येक काममां जोडावुं. तेमां देश समय पोतानी प्रकृति स्वभाव वगेरेने शुं लाभकारक छे शुं नुकशानकारक छे तेनो विचार करीने जेम पोतानुं अने पोतानां स्त्री संतान स्नेही मित्र आश्रित आश्रयदाता वगेरेनां कल्याणनी भावनाथी वर्तवुं. आप्तोपदेश (मोटेरानी शिखामण)थी, वाल्मिकी रामायण महाभारत पुराण इतिहास तथा बीजां शास्त्रोना वांचनथी पोतानुं अने पारकानुं कल्याण साधवानुं ज्ञान मेळवाय छे अने हमेशां सदाचारमां प्रवृत्ति रहे छे. धर्मशास्त्र आयुर्वेद अने बीजां शास्त्रोमां सदाचार सद्वर्तन विविध प्रसंगे वर्णवेलां छे ।

आ सदाचारने अनुसरनारां मनुष्य धर्म अर्थ काम मोक्ष अने आरोग्य मेळवे छे पोतानी इन्द्रियुने काबुमां राखी शके छे. चरक संहितामां आचार्य शिष्य अग्निवेशने नीचे प्रमाणे उपदेश करे छे ।

१ देव गाय ब्राह्मण वृद्ध माता पिता गुरु सिद्धपुरुष आचार्यनुं पूजन सत्कार सेवा प्रणाम करवां ।

२ यज्ञ होम हवनथी अग्निनी उपासना करवी घरमां अग्नि ठरवा देवो नहि।
३ उत्तम दिव्य औषधीयुं शरीरे धारण करवी साथे राखवी ।
४ सवारे सांजे संध्या करवी सूर्यनी उपासना करवी ।
५ नाक कान मोढुं मुत्रद्वार मलद्वार अने पग हमेशां शुद्ध राखवां. (पेशाब के कळशे जा ी वखते ते भाग अने हाथ माटीथी धोवा दरेक वखते पग धोइ शुद्ध राखवा ।)
६ पखवाडीयामां २ वखत माथाना डाढीना शरीरना वाळ रुंवाडां अने नख काढवा ।
७ हमेशां धोयेला कपडां पहेरवां मन प्रसन्न राखवुं कपडां उपर तथा शरीरे सुगंधी पदार्थ चंदन वगेरे चोपडवां ।
८ प्रजामां मान पामे, बीजा लोको प्रसन्न थाय, पोताना देशने अनुकूळ होय वखणाय एवो पहेरवेश-पोशाक राखवो ।
९ हमेशां सुगंधी तेल नाखी वाळ ओळवा ।
१० माथामां कानमां नाकमां तेल हमेशां नाखवां पगे हमेशां तेल चोळवुं ।
११ औषधीओनी बनावेली बीडी के होका वाटे धुवाडो हमेशां पीवो ।
१२ सामाने प्रसन्नता उपजे तेवी रीते बोलवानी शरुआत करवी ।
१३ मुखमुद्रा हमेशां प्रसन्न मंदहास्य मलकता मोढावाळी राखवी ।
१४ विपत्ति वखते तेना उपाय योजवामा कुशळता राखवी दुःखमां बीजाने मदद रुप थावुं ।
१५ वैश्वदेव रुपे हमेशां होम हवन करवा यज्ञ करवा कराववा ।
१६ सामा मळे तेओनी योग्यता प्रमाणे नमस्कार प्रणाम करवा ।
१७ हमेशां प्राणी मात्र ने गाय कुतरा कागडा कीडीयुं वगेरेने बळिदान देवां ।
१८ अतिथी मेमाननो सत्कार करवो ।
१९ पितृने पिंडदान हमेशां आपवुं ।
२० विचार करी समय संजोगने अनुसरी हितकारक होय तेवुं बोलवुं. जरुर जेटलुं बोलवुं. सामाने प्रिय लागे तेवुं बोलवुं. बोलवामां बीजानुं पोतानुं हित समायेलुं होय तेवुं अने वजनदार गौरव वाळुं उपयोगी बोलवुं ।
३१ मन काबुमां राखवुं मनना चंचळता उपर काबु राखवो ।
२२ धर्म उपर प्रीति राखवी मनुष्य तरीके पोते जे वर्ण (कोम) ज्ञाती के उद्यम करतो होय तेनी साथे संबंध धरावनाराओ प्रत्ये जे फरज छे तेनो ख्याल राखीने, प्रजामां पोते जे कोटीमां जन्मो होय ते स्थानने अंगे पोतानी बीजा प्रत्ये जे फरज छे ए बधानो ख्याल करीने वर्तवुं ।
२३ कारणमां इर्षा करवी पण लाभमां इर्षा न करवी. अर्थात एक माणसे पोतानी बुद्धिथी कोइ पण रीतें पोतानो उन्नति करी होय तो ते पायमाल केम थाय तेवी जातनी इर्षा न करवी पण तेणे जात महेनत बुद्धि हुशीयारीथी उन्नति करी तेवीज रीते तेना करतां वधु उन्नति हुं क्यारे करी देखाडु एवी भावना राखो प्रयत्न आदरवो ।
२४ द्रढ निश्चय फेरववो नहि द्रढ निश्चयी रहेवुं ।
२५ निर्भय हिमतवान मर्द थइ रहेवुं ।

२६ शरम राखवी निर्लज्ज शरम विनाना थावुं नहि ।

२७ दरेक काममां मोटो उत्साह राखवो कोइपण काममां निरुत्साहि निम[illegible] जेवुं थावुं नहि ।

२८ दरेक काम विचार करीने बुद्धिपूर्वक समजीने करवुं ।

२९ क्षमा राखवी वांकमां आव्या होय तेने के गुनेगारने माफी आपवामां उदार मन राखवुं भुल करनारने माटे मोटु मन राखी शिक्षा करवी ।

३० वृत्ति धार्मिक अने आस्तिक राखवी इश्वरने मानी इश्वरनो भय डगले डगले राखी जीववुं ।

३१ विनयवाळा बुद्धिशाळी विद्वान अने पोतानाथी उमरे मोटा होय तेओना तथा सिद्ध अने आचार्योना सहवासमां रहेवुं तेओनी सेवा करवी ।

३२ बहार जाती वखते हाथमां छत्री लाकडो राखवी माथे पाघडी पगमां जोडा पेरवा अने ८ हाथ जमीन आगळ जोतुं जावुं अने चालवुं ।

३३ आचार विचार अने स्वभाव मंगळकारी कल्याणकारी राखवां ।

३४ ज्यां फाटेलां चीथरां हाडकां कांटा अपवित्र वस्तुओ मोवाळा फोतरां राख ठीकरां तथा उकरडा होय त्यां जावुं नही ।

३५ नहावाने आरे कारणविना फरवुं नही ।

३६ थाकी जावा पहेलां कसरत छोडी देवी (अर्थात थाकी जवाय त्यां सुधी हाडतोड कसरत करवी नही तेथी आयुष्य ओछुं थाय छे आजकालना बहु कसरत करनारा नानी उमरे मरी जाय छे ।)

३७ जगतना तमाम मनुष्यो उपर तथा पशु पक्षी वगेरे प्राणिमात्र उपर पोताना कुटुंबी जेवो दया भाव राखवो ।

३८ रोशे भरायेलाने शांत पमाडवा ।

३९ भयभीत थयेलाओने आश्वासन आपी निर्भय करवा, शरणे आवेलाने अभयदान देवुं ।

४० गरीब अनाथ दीन लोकोनुं रक्षण करवुं ।

४१ हमेशां सत्य साचुं बोलवुं ।

४२ शांति राखवी ।

४३ कोइ कठोर वचन कहे तो सहन करवानी शक्ति केळववी ।

४४ क्रोधने जीतवो ।

४५ शांत स्वभावना मनुष्योनी प्रसंशा करवी ।

४६ राग द्वेष ईर्षा अदेखाइ वगेरे उत्पन्न थवानां कारणोनो नाश करवो अर्थात ते दोष उत्पन्न थाय नहि तेम वरतवुं ।

४७ असत्य खोटुं बोलवुं नहि (खोटु बोलवाथी आयुष्य ओछु थाय छे एम श्री व्यास मुनियें कह्युं छे ।)

४८ पारकुं धन लइ लेवानी इच्छा करवी नहि ।

४९ पारकी स्त्रीनी इच्छा करवी नहि ।

५० पारकी लक्ष्मीनी इच्छा करवी नहि ।

५१ बीजा साथे दुश्मनावट करवामां राजी थावुं नहि ।

५२ पापकर्म करवुं नहि के पापकर्म करतां होय तेने उत्तेजन टेको आपवो नहि ।

५३ बीजाना दोष गावा नहि ।

५४ बीजानी छानी वात उघाडी पाडवी नहि ।

५५ अधर्मी लोको साथे, राजानो द्रोह करनारा के राजानी नजरमां राजद्रोही होय तेओ साथे, गांडा लोको साथे, अधम कृत्यो करनारा पतित माणसो साथे, गर्भपातनां पाप करनारा साथे, हलका दुष्ट लोको साथे बेसवुं नहि सहवास राखवो नहि ।

५६ खराब वाहन उपर चडवुं नहि ।

५७ गोठण जेटला उंचा कठण आसन उपर बेसवुं नहि बेसवुं पडे तो गादी नाखी बेसवुं ।

५८ ओछाड ओछाडया विनाना, धोया विनाना मेला नानकडा टुंका सांकडा उंचा नीचा शयन पर (पथारी के पलंग उपर) सुवुं नहि ।

५९ पर्वतनी उंची नीची वांकी चुकी टेकरीयु उपर चडवुं नहि ।

६० झाड पर चडवुं नहि ।

६१ पाणीना भयंकर वेगमां पडवुं नहि (नदीना पुरमा समुद्रमां नहावा पडनारा असंख्य मुरखाओ मरी जाय छे ।)

६२ समाधी समाध्य खांभी के देवस्थानने टपवुं नहि ।

६३ आग लागी होय के अग्निनो बीजो उपद्रव थयो होय तेथी दूर रहेवुं ।

६४ खडखड हसवुं नहि मोटे अवाजे दांत काढवा नही (मंदहास्य करवुं ।)

६५ बगासा आवे छींक आवे वधु हसवुं आवे तो मो आडु कपडु राखवुं ।

६६ बीजा सांभळे तेम पादवुं नहि

६७ नाकनां फरणां सांकडा पहोळां करवां नहि ।

६८ दांत सामसामां कचडाववा नहि ।

६९ सामसामां नख वगाडवा नहि ।

७० हाडकां उपर कोइ चीज अथडाववी नहि ।

७१ नखे पगे जमीन खोतरवी नहि ।

७२ हाथे खड वाढवुं नहि कापवुं नहि ।

७३ पोतानां अवयवोने वांकां चुकां खराब आकार आपी चाळा करवा नहि ।

७४ खराब अपवित्र अयोग्य तेज तरफ चंद्र सूर्य ग्रहण के खराब ग्रहोने जोवा नहि ।

७५ शब प्रत्ये हुंकार करवो नहि मरण पामेला शबनो तिरस्कार अपमान करवुं नहि ।

७६ ग्रामदेवता धजा गुरु पूज्यनी छायाने तथा अपवित्र माणसनी छायाने टपवी नहि तेओनी छाया पोताना शरीर उपर पडवा देवी नहि ।

७७ देवताना मंदिरे गामने पादरना देवमंदिरे चोटां राजमार्ग बगीचामां स्मशानमां वधस्थानमां रातवेळाये संध्या टाणे एकलुं जावुं नहि ।

७८ अवावरु घरमां के वगडामां एकलुं पेसवुं नहि ।

७९ स्त्री मित्र के नोकर पापी होय खराब आचरणनो होय तो तेने तजी देवा ।

८० मोटा माणसो साथे बळवान् साथे विरोध करवो नहि ।

८१ हलका माणसोनो संग करवो नहि ।
८२ अनार्यनो आश्रय करवो नहि अर्थात आर्योना आचार विचार धर्म अने संस्कारवाळा मनुष्यो होय तेओनो आश्रो राखवो ।
८३ कुड कपटवाळी बाबतोमां प्रीति राखवी नहि ।
८४ बीजाने भयभीत करवा नहि बीवरावबा नहि ।
८५ साहस करवुं नहि. बहु उंघण थावुं नहि. बहु उजागरा करवा नहि ।
८६ नहावुं पीवुं अने जमवुं ए शरीरने सुखरुप नीवडे ते रीते सेववुं ।
८७ उभडक पग्गे (हंगवा बेसे छे तेम) बधु वखत बेसवुं नहि ।
८८ सर्प डाढवाळां अने शींगडावाळां जनावरनो संग करवो नहि ।
८९ सामो पवन सख्त तडको सख्त ठंडो वावाझोडुं एमां हरवुं फरवुं नहि ते गामतरु करवुं नहि ।
९० कजीया करवा नहि कारणविना कलेश उभो करवो नहि ।
९१ वधि नेयारा साधनोविना अग्निनी उपासना करवी नहि ।
९२ पहआड मोढे के नीचु मो करीने फुंकी अग्नि प्रगटाववो नहि ।
९३ पलाठी बेचेनी मटयाविना थाक उतर्याविना मोढुं धोयाविना अने नाना नाग पाणी पीवुं नहि आचमन लेवुं नहि ।
९४ जे पंचियुं पेरी नाया होइए तेनाथी माथुं लुवुं नहि ।
९५ वाळने ओढय उपर पछाडवा नहि ।
९६ नाहने पना ए वगर धोयेलां लुगडां पेरवा नहि ।
९७ पूज्य देव गुरु माता पिता वगेरेने प्रणाम कर्या विना, झवेरातनो घीनो मंगळकारी वस्तुनो फुलनो स्पर्श कर्या विना बहार जावुं नहि ।
९८ पूज्य के मंगळकारी वस्तु डाबी कोर उतरे अने अपवित्र हलकां जमणी कोर उतरे तो बहार जावुं नहि. ए अपशुकन छे ।

जमवाना नियम

९९ हाथमां जवेरात पेर्या विना जमवु नहि ।
१०० न्हाया विना जमवुं नहि ।
१०१ धोयेला कपडा पेर्या विना
१०२ गायत्री जप्या विना पाठ पूजा कर्या विना
१०३ वैश्वदेवथी होम कर्या विना
१०४ देवता अने पितृने धर्या विना तेकोने अर्पण कर्या विना
१०५ गुरु मोटेराने माता पिताने मेमानने आश्रित नोकर चाकरने जमाडया विना जमवुं नहि ।
१०६ सुगंधी पदार्थ चंदन वगेरेनुं त्रिपुंड्र कर्या विना
१०७ तुळसी के बोजी माळा पेर्या विना
१०८ हाथ पग मोढुं धोया विना कोगळा कर्या विना जमवुं नहि ।
१०९ नैर्ऋत्य मोढे जमवुं नहि ।
११० उत्तरादे मोढे जमवुं नहि ।

१११ रींढ़ चढो होय क्रोध उत्पन्न थयो होय तो ते शांत थया पहेलां जमवुं नहि ।

११२ पोताना प्रत्ये प्रीति विनाना आचार विचार विनाना अने भुख स्वभावना नोकर चाकरोये रांधेलुं अन्न खावुं नहि ।

११३ अपवित्र पठवाड ठामणामां जमवुं नहि ।

११४ अजाण्या अयोग्य स्थानमां जमवुं नहि ।

११५ समय टाणा विना जमवुं नहि ।

११६ अनेक माणसोनी अवर जवर होय त्यां जमवुं नहि ।

११७ अग्निमां होम कर्या विना जमवुं नहि ।

११८ पाणी छांटया विना-प्रोक्षण कर्या विना जमवुं नहि ।

११९ मंत्रथी मंत्र्या विनानुं अन्न जमवुं नहि ।

१२० अन्ननो तिरस्कार करतुं जमवुं नहि ।

१२१ स्वादमां अने बीजीरीते खराब अन्न जमवुं नहि ।

१२२ शत्रु के जेना उपर विश्वास न होय ते माणसे रांधेलुं के ते माणसे आपेलुं अन्न खावुं नहि ।

१२३ मांस लीलांशाक सुकवणी फळ के बीजां कोरडय जेवां पदार्थो शिवायनां रांधेलां अन्न सवारनां सांजे के रातना सवारे वासी अन्न खावां नहि ।

१२४ थाळीमां थोडुं अन्न बाकी राखवुं बधु खाइ जावु नहि. दही मध मीठुं साथवो पाणी अने घी एटलां वाना बधां खाइ जावां बाकी राखवां नहि ते शिवाय रांधेलां अन्न दरेक एक एक कोळीया जेटलुं बाकी राखवुं ।

१२५ राते दहीं खावु नहि । (खावाथी लक्ष्मी वई जाय)



१२६ विचित्र बेडोळ आकार करी छींक खावि नहीं. विचित्र बेडोळ थइ रात्री जमवु नहि के सुवुं नहि. छींक खातामां जमवामां अने सुवामां शरीर सरळ राखवुं ।

१२७ झाडा पेशाबनी खणस थइ होय वेग आव्यो होय के बीजा काइ पण वेग आव्यो होय ते वखते बीजा काममां परोवावुं नहि. जे वेग आव्या होय ते शांत थया पछी बीजा कामे जोडावुं ।

१२८ वायु अग्नि पाणी चंद्र सूर्य ब्राह्मण गुरु मा बाप मोटेरा पर्ना सामे थुंकवुं नहि पादवु नहि मुतरवा बेसवुं नहि. झाडे फरवा बेसवु नहि. लांबा पग करी अविवकथी बेसवुं नहि के उंचे आसने बेसवुं नहि ।

१२९ हालवा चालवाना रस्तामां पेशाब करवो नहि ।

१३० माणसोनी हालचाल होय त्यां, जमवां वखते जप होम वेदाध्ययन अभ्यास बलिदान अने मंगळकाम वखते बडखा के शेडां काढवां नहि एनो वेग आवे तो माणसना हालचाल न होय त्यां काढी आवी हाथ नाक धोइ कोगळा करी नाखवा ।

१३१ पोतानी के पारकी कोई पण स्त्रीनुं अपमान करवुं नहि. स्त्रीनो बहु विश्वास करवो नहि. गुप्त वात स्त्रीने कहेवी नहि स्त्रीने वधु पडतो अधिकार सत्ता आपवां नहि ।

१३२ नीचे प्रमाणेनी स्त्रीनो संग करवो नहि बहार बेठी होय रोगी होय अपवित्र होय उमर रुप गुण वगेरेथी अयोग्य होय पोताने अप्रिय लागे एवा आचार विचार अने रुपवाळी होय मुरखी होय, चतुर न होय संगनी इच्छा विनानी होय बीजा पुरुष उपर प्रीतवाळी एवी स्त्री पासे जावुं नहि ।

१३३ बीजानी स्त्री पासे जावुं नहि पशु वगेरे साथे के पुरुष जाती साथे संग करवो नहि ।

१३४ जाहेर रस्तामां बगीचामां स्मशान वधस्थानमां जळाशयने कांठे देवालयमां ब्राह्मण गुरु के देवताना स्थानमां संध्या टाणे स्त्री पासे जावुं नहि ।

१३५ पोते पवित्र थया विना वाजीकर औषध खाधा विना आगळथी ते बाबतनो संकल्प कर्या विना हर्ष अने आनंद उपज्या विना भुख्ये पेटे पेट तणाय तेटलु जमाणुं होय त्यारे पेशाब करवानी खणस लागी होय त्यारे महेनत कसरत उपवास कर्या होय ग्लानी बेचेनी थइ होय त्यारे अने एकांतस्थानमां न होय तेवे स्थळे स्त्री पासे जावुं नहि ।

१३६ संत, योगी, महात्मा, ऋषिमुनि पुरुषो वेद भणेला ब्राह्मणोनी साथे, मोटा गुरु माता पितानी साथे वादविवाद करवो नहि ।

१३७ पोते अपवित्र होय त्यारे पुजा पाठ अभ्यास देवपूजन के देवताइ कर्म करवां नहि।

१३८ विजळीना झबकारा कडाका थता होय दिशाओ खोली होय अग्निनो प्रकोप थयो होय लाय लागी होय भूमिकंप उल्कापात थयो होय मोटो आनंद मंगळनो ओछव होय चंद्र सूर्यनुं ग्रहण होय त्यारे भणवुं नहि. चंद्रना क्षयनी तिथीने दिवसे सवार सांज संध्या टाणे भणवुं नहि. गुरुना मोढा-मांथी शब्द निकळ्या पहेलां पोते आगळथी सूत्र वाक्य के श्लोक उच्चारवो नहि. बहु उंचे सादे न भणवुं. तेटलुं वेग बोलती वखते एकदम शरीरने हाळी दइने भणवुं नहि. बेडोळ साद काढीने भणवुं नहि. अस्थिर पद-वाक्यथी न भणवुं बहु उतावळे न भणवुं बहु वार लगाडीने- विलंबथी न भणवुं मनमां गणगणे ए रीते न भणवुं तेम बहु राडयुं पाडीने न भणवुं एकदम धीमेथी पण न भणवुं मध्यम स्वरे अध्ययन करवुं ।

१३९ नकामी वातचितुंमां वधु वखत गुमाववो नहि ।

१४० सामाजिक धार्मिक राजद्वारी नियम-कायदाने तोडवा नहि ।

१४१ राते क्यांय फरवुं नहि तेम अजाणी के अयोग्य भूमिमां राते जमवुं नहि ।

१४२ संध्या टाणे, जमवुं नहि भणवुं नहि स्त्री पासे जावुं नहि के सुवुं नहि ।

१४३ बाळक अतिवृद्ध लोभीयो मुर्खो दुखीयो नमालो नपुंसक एवा माणसो साथे मित्राचारी करवी नहि ।

१४४ दारु जुगार वेश्यागमन परस्त्री एमां कदी मन राखवुं नहि ।

१४५ छानी वात उघाडी पाडवी नहि ।

१४६ कोइनुं अपमान करवुं नहि ।

१४७ मुर्खाइवाळुं वर्तन राखवुं नहि डोढ डाह्या थावुं नहि कोइनी निंदा करवी नहि ।

१४८ ब्राह्मणो साथे तकरार करवी नहि ।

१४९ गायने मारवा लाकडो उगामवो नहि के लाकडी मारवी नहि ।

१५० अहंकारी बनवुं नहि, बडाइ मारवी नहि, पोतानां वखाण पोते करवा नहि के सांभळवां नहि ।

१५१ वृद्धो मोटेरां गुरु माता पिता मुरब्बीओनुं समाजनुं–ज्ञातिनुं टोळा समुदायनुं अने राजाओनुं अपमान करवुं नहि ।

१५२ लवलव कर्या करवुं नहि जरुर करतां वधु बोल्या करवुं नहि ।

१५३ कुटुंबीओने पोताना पर प्रीति राखनाराओने कष्ट वखते पडखे उभा रहेनाराने मुश्केली वखते मदद करनाराने पोताना खानगी छिद्रो छानो बाबतो जाणनाराओने तरछोडवा नहि तेओने तजी देवा नहि. एक वखत दुश्मनावट करनाराने मित्रो मानवा नहि ।

१५४ धीरज छोडवी नहि ।

१५५ पोताना बळ पराक्रम धन सत्ता अधिकार वधे तेथी उद्धत थइ जावुं नहि ।

१५६ पोताना नोकर चाकरो निर्धन दुःखी असंतोषी न होवा जोइये ।

१५७ पोताना स्वजनो पोता पर अविश्वास राखनारा न होवा जोइये पोताना स्वजनो विश्वासु विश्वास करवा योग्य अने पोता पर विश्वासवाळां होवा जोइये ।

१५८ पोते एकला सुखी थवानी भावना राखवी नहि पण पोताना सगा संबंधी ज्ञाती मित्र नोकर वधा सुखी थाय अने पोते ए बधाने सुखे सुखी थवानी भावना राखवी ।

१५९ सोगीयो स्वभाव राखवो नहि आचार अने वहेवार सोगीयो दुःख उपजावनारो राखवो नहि ।

१६० बधे ठेकाणे विश्वासु बनवुं नहि तेम बधे ठेकाणे शंकाशील रहेवुं नहि ।

१६१ बधो वखत विचार कर्या करवो नहि पण कोइपण काम माटे योग्य विचार करी तेनो अमल करवो ।

१६२ काम करवाना समयने नकामो वेडफी नाखवो नहि ।

१६३ पुरी परीक्षा कर्या विनां कोइने पेट आपवुं नहि ।

१६४ इंद्रियोने आधीन बनवुं नहि ।

१६५ चंचळ मनने ज्यां त्यां भमवा देवुं नहि ।

१६६ कान नाक आंख जीभ त्वचा ए पांच इंद्रियो उपर अने बुद्धि मन उपर हद उपरांत कामनो भार मुकवो नहि. दीर्घसूत्री थावुं नहि ।

१६७ क्रोधने अने आनंदने आधीन हद उपरांत थावुं नहि तेम शोक दुःख आवी पडयुं होय तो तेने पण वश थावुं नहि ।

१६८ धन ऐश्वर्य के लाभ मळे तो अभिमानी बनवुं नहि अने निष्फळता मळे के नुकसान थइ जाय तो दीनताने आधीन थावुं नहि ।

१६९ पोतानी प्रकृति स्वभावने हमेशां स्मरणमां राखवो ।

१७० सारां के खराब कारणोनो लाभ के गेरलाभनो निश्चय करवो ।

१७१ हमेशां कारणनो निश्चय करी कार्यनो आरंभ कर्या करवो ।

१७२ मारे हवे कांइ पण करवु नथी एम मानी बेसी रहेवु नहि पण हमेशां उद्यमी काममां गुंथायेलुंज रहेवुं अने पोतानी बुद्धिने शक्तिने नकामी वेडफी नाखवी नहि ।

१७३ पोता पर कांइ आळ आक्षेप आव्या होय अपमान थयुं होय तो तेने हमेशां संभारी संताप पामवुं नहि पण तेने हमेशने माटे भुली जावुं ।

१७४ पवित्र थइ गायनुघी चोख्खा तल दर्भ सरसवनो अग्निमां होम करवो ने वखने पोताना शरीर माटे पोतेज आशीर्वचनो नीचे प्रमाणे उच्चारवां ।

अग्निर्मे नापगच्छेच्छरीरात् । वायुर्मे प्राणान आदधातु ।
विष्णुर्मे बलमादधातु । इंद्रोमे वीर्यं शिवा मां प्रविशन्तु आपः ॥

अर्थ – अग्नि मारा शरीरमांथी चाल्यो न जाय. वायु मारा पांचे प्राणने टकावी राखे, विष्णु मारा शरीरमां बळ जाळवी राखे, इंद्र मारुं पराक्रम सुरक्षित राखे, कल्याणकारी जळदेवता मारा शरीरमां प्रवेशी मारा शरीरनुं पोषण करो । पछी आपोहिष्ठा ए मंत्र भणी बे आचमन लइ बे हाथ टुवालथी लुइ नाखी बेठ पगे पाणी छांटी माथे नाके काने मुरबे हाथ अडाडवो पछी जमणा हाथमां पाणी लइ पोताना शरीर पर छालीये अने माथा पर छांटवुं ।

१७५ हमेशां ब्रह्मचर्य बने तेटलुं पाळवुं शास्त्रो वांचवां दान आपवां बधा साथे मित्राचारी राखवी प्राणी मात्र पर दया राखवी हींसा न करवी आनंदमां रहेवुं ग्रहदोष दैवी आपत्ति के तेवी उपाधिनो शान्तिना देवा उपाया करवा. एवी रीते सदाचारमां रही सुखी जीवन गालावुं ।

राज धर्म

१७६ राजाये सेनाधिपति ब्राह्मणने अथवा क्षत्रियने करवो ।

१७७ राजाये वंशपरंपराथी चाल्या आवता माणसोने विद्वानोने सलाहकार नीमवा ।

१७८ राजाये हमेशां कुलीन गुप्तचरो राखवा ।

१७९ राजाये धान्य खाद्य पदार्थना रक्षक व्यवस्थापक वैश्य वाणियाने राखवा ।

१८० मित्रमंडळनी सलाह लीधा पछी राजाये कोइपण काम करवा ।

१८१ सगर्भा स्त्री गर्भनी रक्षा माटे पोताना सुखनी दरकार नथी करती तेम राजाये प्रजाना रक्षण माटे पोताना सुखनो भोग आपवो ।

१८२ प्रजानुं रक्षण न करे ते राजानां बधां धर्मकार्यो निष्फळ जाय छे ।

१८३ प्रजानुं रक्षण नथी करतो ते राजा नरकमां पडे छे ।

१८४ प्रजाना सारा के नरसा काममां के पाप पुण्यमां राजाने छट्ठो भाग मळे छे ।

१८५ व्याज खोरोथी प्रजानुं रक्षण करवुं ।

१८६ दंडथी वसुल करेला धननो उपयोग धर्मादामां करवो ।

१८७ प्रजानी चोरायेली मीलकतनी किंमत राजाये पोताना खजानामांथी आपी देवी अने चोरो न पकडे तो ते रकम अधिकारी पासेथी वसुल करवी ।

१८८ जे राजाना राज्यमां वेद भणेलो विद्वान ब्राह्मण दुःखी होय छे तेनुं राज्य रोग दुकाळ अने बारवटीयाथी पायमाल थाय छे ।

१८९ विद्वानोनी आजीविका राजाये बांधी देवी ।

१९० विद्वान ब्राह्मणो संध्या वैश्वदेव वेदाध्ययन होम हवन अने धर्मकार्यो करे छे तेथी राजानु राजपरिवारनुं आयुष्य आरोग्य अने लक्ष्मी वधे छे ।

१९१ खोराक विषय अने उंघ एनु अति सेवन करवुं नहि अति सेवनथी रोग थाय आयुष्य ओछुं थाय ।

१९२ राजाये पोतानी अने प्रजानी स्त्रीओनी रक्षा करवी. राणीओने धर्मशास्त्रो कथा पुराण महाभारत रामायण वगेरे संभळावी सारा संस्कार पाडवा ।

१९३ युवराजने वेद धर्मशास्त्र पुराण इतिहास धनुर्वेद शस्त्रविद्या शिल्पविद्या वगेरे शास्त्रोनुं शिक्षण आपवुं ।

१९४ युवराजना सहवासमां पोढ अनुभवी वृद्ध विद्वान शास्त्रज्ञ माणसोने राखवा ।

१९५ शिकार दारु अने जुगार ए राज्यने अने पोताने नाश करनारां समजवां ।

१९६ गुनेगारने कडक निर्दय शिक्षा करवी नहि ।

१९७ राजाये हमेशां उठी स्नान संध्या वैश्वदेव वेदाध्ययन करी विद्वान ब्राह्मणोने अन्न गाय सोनु घी वगेरेनु दान देवुं ।

१९८ दिवसे उंघवु नहि नकामुं फरवुं नहि कठोर वचन बोलवुं नहि ।

१९९ काम क्रोध लोभ मद अभिमान अने गर्वने जीतवा ।

२०० राजाये नोकर चाकर साथे ठठा मश्करी करवी नहि ।

२०१ कोइपण काम करवामां राजाये दीर्घसूत्री थावुं नहि ।

२०२ मंत्रणा करवा माटे गुप्त वातचित चर्चा माटे कोइ सांभळे नहि तेवा स्थानमां राजाये एकलाये मंत्रणा करवी ।

२०३ लोछडापणुं राखवुं नहि ।

२०४ जितेन्द्रिय राजा पोतानी प्रजामां ईश्वर पेठे पूजाय छे ।

२०५ लुलां लंगडा अपंग अनाथ आंधळा वृद्ध निराधार लोकोनु अने विधवा स्त्रीओनुं पोषण राजाये करवु ।

२०६ वर्णाश्रम धर्मनु [illegible] करवुं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र दरेकने पोत पोताना काममां जोडवा ।

२०७ भाग्य उपर आधार राखी आळसु थइ बेसी रहेवु नहि पण [illegible] राखी उद्यम पुरुषार्थ करवो ।

२०८ गुनेगारने शिक्षा नहि करनारा अने निर्दोषोने शिक्षा करनारा [illegible] आयुष्य क्षीण थइ जाय छे ।

२०९ धाराण्य ओळवनारने राजाये शिक्षा करवी ।

राजसेवकना धर्म

२१० कुलीन स्त्री पतिनी आज्ञा पाळे अने शिष्य गुरुनी आज्ञा पाळे [illegible] आज्ञा तेना नोकरे पाळवी ।

२११ राजाने पना हितनु अप्रिय वचन कहेवुं होय तो [illegible] ।

२१२ राजाये खानगी वात करी होय ते बहार क्यांय कहेवी नहि ।

२१३ राजा सामे बगासां खावां नहि. उधरस खावी नहि कोप करवो नहि ।

२१४ राजा पासे रहेनारये कुचवाइ चंचळता चाडीयापणुं [illegible] ।

२१५ राजानो पुत्र मंत्री [illegible] तेने प्रिय होयसे ओने नमतुं रहेवुं

२१६ राजाना [illegible] साथे के राजाये काढी मुक्या होय तेओ साथे [illegible] नहि ।

२१७ राजाये अधिकार उपर नीमेला माणसोये प्रजा पासेथी धन [illegible] ।

२१८ राजानी संमति विना आसन वाहन बेठक हाथी घोडा उपर बेसवुं नहि

२१९ राजाने वगर मागी शिखामण आपवी नहि ।

२२० मुंगा मुंगा राजानी सेवा चाकरी करवी ।

२२१ राजा पासे खोटुं बोलवुं नहि. खोटा बोला नोकरो तरफ शंकानी नजरे राजाओ जुवे छे ।

२२२ राजानी राणीओ साथे सहवास के मित्राचारी राखवी नहि ।

२२३ लाज मरजादमां रहीने राजाओ पासे रहेवुं स्वच्छंदी के उच्छृंखल थावुं नहि ।

२२४ जे जे काम राजायें चिंध्युं होय तेमां गफलती अहंकार के क्रोध करवो नहि ।

२२५ राजाना हितनुं छतां पने सारु लागे एम होय तोज कहेवुं. अप्रिय लागे तेवी वात राजाने करवी नहि ।

२२६ राजानी मारा पर बहु महेरबानी छे एवुं अभिमान राखवुं नहि के तेम कोइने कहेवुं नहि ।

२२७ राजना दुश्मनो द्रोहीयो साथे सहवास परिचय राखवो नहि ।

२२८ राजाये मश्करीमां कोइ वात करी होय ते साची तरीके बीजाने कहेवी नहि ।

२२९ हुं मोटो शूरवीर छुं हुं मोटो विद्वान छुं एवां अभिमाननां वचन राजा पासे बोलवां नहि ।

२३० राजा तरफथी धन संपत्ति मळे के पोतानुं सारु थाय तेथी फुलावुं नहि के तेथी पदी वनवुं नहि ।

२३१ राजा पासे हळवेथी धीमेथी वातचीत करवी राडुयुं पाडीने के बीजाओ सांभळे तेवी रीते वात करवी नहि ।

२३२ राजानी वातने वचमांथी तोडीने बोलवा मांडवुं नहि ।

२३३ राजा सन्मुख हसवा जेवी वात बने तो हद उपरांत हसवुं नहि के गांडानी पेठे खडखड उंचेसादे हसवुं नहि ।

२३४ राजा प्रसन्न थाय के पोताना पर कृपा करे तेवे प्रसंगे मंदहास्य करवुं मोढु मलकाववुं पण खडखड दांत काढवा नहि ।

२३५ राजा तरफथी लाभ मळे तो हद उपरांत खुशी थइ जावुं नहि के अपमान थाय तो दुःख पामवुं नहि सावधान थइने रहेवुं ।

२३६ राजानां तेनी राणीनां राज पुत्रोनां वखाण करनार लांबो वखत टकी शके छे ।

२३७ राजा गफलतीथी के भुलथी पोताने अन्याय करे वढे धमकावे दंड करे तोपण राजाना अवगुण गावा नहि तो फरीने तेने राजानो आश्रय अने लक्ष्मी मळे छे ।

२३८ जे प्रधान के मंत्री राजानी इच्छा नहि छतां पराणे ते होद्दा उपर चोट्यो रिये ते मुश्केलीमां मुकाय छे ।

२३९ प्रसन्न मुखवाळो सत्यवादी मीठां वेण बोलनारा मन पर कावु राखनारा अने पडछायानी पेठे राजाने अनुसरनारा माणसो राजकुटुंबमां रहि सुखी थाय छे

२४० राजाये कोइ काम चींध्युं होयतो तेमांथी पैसा खाइ जावानी वृत्ति राखवी नहि ।

संध्यानो प्रस्तावना

मंगलं त्रिषु कालेषु त्रिषु लोकेषु कर्मसु ॥ त्रिषु वर्णेषु यस्यास्तां संध्यां वंदामहे वयम् ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय अने वैश्य त्रण द्विजवर्णे अवश्य संध्या देवपूजन स्वाध्याय वेदाध्ययन वैश्वदेव आदि नित्यकर्म करवां जोइए. ते न करनारा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य पतित थाय छे शूद्रने तेनो अधिकार एटला माटे नथी के तेओ महेनत मजुरी तथा बीजा पोताना उद्यमने लगता एवा कामोमां हमेशां प्रवृत्त रहे छे के जेथी तेओने ए करवानो समय मळतो नथी तेथी तेओ माटे भजन कीर्तन कथा पुराण सांभळवा देवदर्शन वगेरे आत्म कल्याणनां साधन अनुकुळतावाळां बनाव्यां छे. आजे भरतखंडमां आ कर्म जुना आचार विचारनी प्रजामां धार्मिक क्रियाओ चाल्या करे छे पण सुधरेला इंग्रेजी आचार विचार वर्तनने अनुसरनारा ब्राह्मण क्षत्रियोमांथी आ धार्मिक कर्म संस्कार घणे भागे अस्त थवा लाग्यां छे. संध्यादि नित्यकर्म नहि करतां छतां ब्राह्मणो उत्तम ब्राह्मणो तरीके अने क्षत्रिओ कुळवान सूर्य चंद्रवंशी क्षत्रिय तरीके पोताने ओळखावे छे. एमना वडवा सूर्यवंशी अने चंद्रवंशी क्षत्रियो केवा संस्कारी हता नित्य नैमित्तिक द्विज कर्मोना उपासक हता एनु अभिमान तेओने होतुं नथी कारण पुराण महाभारत वाल्मीकी रामायण तथा बीजां शास्त्रोनुं श्रवण वांचन करवानो समय तेओने मळतो नथी एम जवाब मळे छे. ज्यारे मोजशोख मुसाफरी रमतगमतोमां शोकार तथा विविध विलास वैभवमां तेओने मोटो समय मळे छे त्यारे एकाद कलाक नित्यकर्ममां के एकाद कलाक शास्त्रो सांभळवानो तेओने वखत मळतो नथी. क्षत्रियोना आवा संस्कारने लइ तेनी प्रजामांथी पण ए धार्मिक भावना नाश पामती जाय छे अने जे भावनामां राजाने देव के ईश्वर रुप गणी पोताना शिरछत्र रुपे प्रजा मानती ते भावना नाश पामतां प्रजामां स्वतंत्रताने नामे स्वच्छंदता प्रवर्ती रही छे. शास्त्रनां श्रवण वांचनने अभावे राजाओमां प्रजा प्रत्ये माता पिता जेवी भावना राखवानी लागणी पण ओछी थावा लागी छे. पश्चिमना संस्कारनां अनुकरण घर करवा लाग्यां छे एटले शास्त्रमां कहेल **॥ राजा कालस्य कारणम् ॥** प्रजामां जे समये जे वातावरण प्रवर्ती रह्युं होय छे तेनु कारण राजाज छे ए साची वात ठरे छे. हालना क्षत्रियोना आदि पुरुषो श्रीरामचंद्र अने श्रीकृष्ण जेवा अवतारी पुरुषो पण हमेशां स्नान संध्या वैश्वदेव वेदाध्ययन आदि नित्यकर्मो करता. अरे महाभारतना युद्ध जेवा समयमां पण मध्यं संध्या करवानो समय थइ जातां श्रीकृष्ण अर्जुन अने बीजा योद्धाओ लडाइ थोडो वखत बंध राखी रथना घोडा छोडी नाखी संध्या करी लेता. प्राचीनकाळना क्षत्रियो चारे वेद छ शास्त्रो विविध कळा कौशल्य अने विविध शास्त्रोना अभ्यास करता. तेना वंशजो संध्यादि नित्यकर्म करतां शरमाय के शुद्ध गायत्री मंत्र पण जाणता न होय ए केटली शोकनी वात छे. महाभारत वांचनार जाणी शके छे श्रीकृष्ण पांडवो कौरवो तथा युद्धमां सामेल थयेला ते वखतना सेंकडो क्षत्रिय राजाओ वेद वेदांग तथा विविध शास्त्रोना पारंगत विद्वानो हता।

तेवीज रीते पोताने अत्रि वसिष्ठ विश्वामित्र जमदग्नि च्यवन भारद्वाज ऋषिमुनिना वंशजो माननारा जोशी दवे त्रिवेदी व्यास भट्ट पाठक पंड्या वगेरे अवटंकने अभिमान

साथे पोताना नाम साथे जोडनारा ब्राह्मणोने साचो गायत्री मंत्र पण के संध्यादि नित्य-कर्म न आवडतां होय. सुधारकना अभिमानने लइ जनोइ पेरतां पण शरमातां होय तेओ पांसे नित्यकर्मनी आशा शुं राखी शकाय ? आ वात सूर्य चन्द्रवंशी क्षत्रियो माटे अने ऋषिमुनियोनां संतान गणाता ब्राह्मण माटे केटला दुःखनी वात गणवी ? मोटे भागे तो तेओ आ मनुष्य तरीके अवतरी शरीर चोखुं राखवा नहावु बाकी खावुं पीवुं संसार सुख भोगववुं अने आनंद करवो एमांज पोतानु कर्तव्य पुरु थयुं माने छे. परलोक अने ईश्वरने पण तेओ आपत्ति वखते याद करे छे. छतां पोते पोताने उंचा ब्राह्मण, उंचा क्षत्रिय के उंचा हिंदु तरीके ओळखाववानुं अभिमान राखे छे. दरेक मनुष्ये समजवुं जोइए के जन्मथीज पोता उपर देव पितृनुं ऋण चडे छे तेमांथी मुक्त थवा माटे धार्मिक संस्कारो अने क्रियाओनुं आचरण दरेके करवुं जोइए. शास्त्रोक्त संस्कारो अने कर्मो करनाराज साचा ब्राह्मणो साचा क्षत्रियो साचा वैश्यो अने साचा मनुष्यो छे अने पोताना मनुष्य अवतारने सफळ बनावी शके छे।

त्रिदिनं संध्यामनुपासीनो ब्राह्मणः शूद्रतामेति पुनः संस्कारमर्हति ॥

त्रण दिवस संध्या नहो करनारो ब्राह्मण के द्विज शूद्र बनो जाय छे फरीने तेने जनोइ वगेरे संस्कारो कराववा जोइए. शास्त्रमां कयुं छे के संध्या आयुष्य आरोग्य ऐश्वर्यने वधारे छे. संध्याने अंगे करवामां आवतो जुदी जुदी क्रियाओनु जुदुं जुदुं फळ शास्त्रमां लख्युं छे. **आचमनथी** आन्तिकरणशुं आवे छे. **प्राणायामथी** पराक्रम स्मरणशक्ति आयुष्य वधे छे. **मार्जनथी** पवित्रता थाय छे. **अघमर्षणथी** रोग पीडा ग्रहबाधा अने पापनुं निवारण थाय छे, शरु करेलां काम उद्यम व्यवसायमां आवतो नडतर विघ्न दूर थाय छे **अर्घ्यथी** प्रत्यक्ष ईश्वरनु पूजन अर्चन करवा जेवुं बने छे तेम ईश्वरनु वरदान अनुग्रह मळे छे. **जपथी** ईश्वर साथे एकता थाय छे. **सूर्योपस्थानथी** पोते आरंभेला कार्यो उद्यमो सफळ बने छे, तथा पोताना शरीरनु रक्षण थाय छे, **प्रणामथी** अंतःकरणनो निर्मळता थाय छे. अने पोते करेला संध्यादि कर्म देवने ईश्वरने अर्पण करकरवाथी पोतानी साथे सहवासमां आवनाराओना प्रीति वधे छे **गायत्रीनी उपासनाथी** लोकोमां पोते पूजाय छे आ प्रमाणे संध्या अने तेना प्रत्येक कर्मनु अनन्य फळ छे ते न करवाथी पोते तथा पोताना पूर्वजो अने संतानो पोत पोताना उंचा वर्गमांथी नीची पंक्तिये उतरी जइ पतन पामे छे आ लोक परलोक बगडे छे अने पोतानां संतानो स्वच्छंदी माता पितानी आज्ञा नही पाळनारा अने भ्रष्ट थाय छे माटे दरेक माणसे संध्या वैश्वदेवादि नित्यकर्मने खावा पीवा अने बीजां शारीरिक काम जेटलुंज जरुरनुं गणवुं तेमां पोतानु पोतानां संतानोनुं परलोकमां पोताना मरी गयेला पूर्वजोनुं पोताना पाडोशीनुं पोताना गाम अने देशनुं कल्याण रहेलुं छे अने पोते आ लोकमां सर्व वाते सुखी थइ अंते ऊंचा लोकमां जाय छे ।

अषाढ शुक्ल पूर्णिमा मंगळवार
संवत २००१

राजवैद्य जीवराम कालिदास शास्त्री
गोंडल.

रसशाला औषधाश्रम गोंडल काठीआवाड.

सरस्वती भंडार विभाग

ता. १-८-१९४५

1 **ऋद्धिखंडः—वादिखंडः**— (Rs. 8) धातुवादीय नित्यनाथसिद्ध विरचितः। सुवर्णसिद्धेः औद्योगिक व्यावहारिक वस्तुनिर्माण दर्शकाश्च शतशः प्रयोगाः मूल सरल संस्कृत भाषया वर्णिताः सन्ति। पृष्ठ १८४

2 **श्रीभगवद्गीता**— (Rs. 10) **Shri Bhagavadgita** With its gloss Siddhi Datri in its English rendering explaining the variants Pgs. 153, and with its commentary Chandra ghanta on old ms. in Sanskrt and English translation 3 Adhyayas. Pgs. 113, mula Shlokas Pgs. 80 and introduction Pgs. 28 राजवैद्य जीवराम कालिदास शास्त्रि विरचित संस्कृत चंद्र घंटा टीका आंग्ल भाषांतरेण सहिता संवत् १२३६ हस्तलिखित-पुस्तकाधारेण मुद्रिता ७२३ मूल श्लोकैः, २५० तेऽधिक पाठभेदैरांऽऽग्लटिप्पणी-टीकायुताः। त्रयोऽध्यायाः संस्कृतांग्ल चंद्रघंटा टीकयोपेता। पृष्ठ संख्या ४००

3 **रसप्रकाशसुधाकरः**—(Rs. 5) श्रीयशोधर विरचितः रसशास्त्रीयो रसायन चिकित्सा ग्रन्थः। शतशः भस्म, कूपीपक्व, पर्पटी, रस रसायनौषध निर्माण शिक्षाप्रदो रस सर्वमंत्रोत्कीलनं, दुर्गाअथर्वशीर्ष, वैदिकं तांत्रिकं रात्रिसूक्तं, सप्तशतोन्यासः, प्रथमचरितं, मध्यमचरितं, उत्तमचरितं, उत्तरन्यासः, देवीसूक्तं प्राधनिकं रहस्यं, वैकृतिकं रहस्यं, मूर्तिरहस्यं, दुर्गापंजर स्तोत्रं, देव्यपराधक्षमापनं, कुमारीलक्षणं, नित्यचंडीपाठ पाठविधिः नवदुर्गाप्रयोग विधिः, साधनवचंडीप्रयोगः, सप्तशतीदीप दानविधिः, ६५ विविध-कामनासिद्धिप्रयोगाः, नवचंडीपद्धतिः, परिशिष्टं प्रथमदिवस कृत्यं, गणपतिपूजनं, घृतमातरः, वसोर्धाराः, आयुष्यमंत्रजपः, नांदीश्राद्धं ॥

4 **श्रीसप्तशती दुर्गापाठः**—मूल्यं (RS. 8) प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकाधारेण राजवैद्य जी. का. शास्त्रिणा संशोधितोऽङ्गोपांगैरुपबृंहितः षोडशांगचंडीपाठः ७०० मंत्रात्मकः पृष्ठ संख्या ४००। तत्र विषयाः प्रधानसंकल्पः, दीपस्थापनं, मातृपूजनं, पुस्तकपूजनं, कन्यापूजनं, भूशुद्धिः, भूतशुद्धिः, प्राणप्रतिष्ठा, वैदिक प्राणप्रतिष्ठा, दशावरणयंत्रं, कलश स्थापनं, पात्रासादन प्रयोगः, संक्षेपतः पूजाविधिः, कुमारीपूजा, कुष्मांडबलिदानं, श्रीदुर्गामहाचंडी आवाहनं, श्रीभगवती स्तुतिः, महालक्ष्मीहृदयं, नवार्णन्यासः एकादशन्यासः, दलं, चंडीहृदय, रुद्रचंडी, कंठादिमातृकान्यासः, महातत्त्वन्यास, कमला-मातृकान्यासः, वनदुर्गा कवचं, मृतसंजीवनी शुक्रविद्या, कुंजिकास्तोत्रं, महाकालीसूक्तं, महालक्ष्मीसूक्तं, महासरस्वतीसूक्तं, दुर्गाध्यान, भगवतीमहिम्नः स्तोत्रं, सर्वोत्कीलनं,

देवीकवचं–वज्रकवचं, अर्गला, कीलकं । श्रीमत्सप्तशतीदुर्गापाठारंभः नवार्णजपः, शापोद्धारः, संस्कारैर्युतो धातुर्वाद प्रयोगालकृतो ग्रन्थः राजवैद्यकृत मूलसह गुजराती भाषांतर ભસ્મ, રસ રસાયન, કૂપીપક્વ, પર્પટી વગેરે સેંકડો ઔષધો બનાવવાના પ્રયોગો તથા પારદના સંસ્કારો સુવર્ણસિદ્ધિના પ્રયોગો વગેરે વિષયો મૂળ-શ્લોક સાથે સાદી કાઠીઆવાડી ભાષામાં વર્ણવ્યા છે ભાષાંતરની લીપી ગુજરાતી અક્ષરમાં છે. પૃષ્ઠ ૨૦૦

5 **श्री भोजपत्री भगवद्गीता** मूल्यं (Rs. 4) ७४५ संपूर्णश्लोकैः सहिता विस्तृतांग्ल English Introduction (Pgs. 87) विस्तृतसंस्कृतप्रस्तावना (Pgs. 69) सहिता । ३५० तोऽधिकपाठभेदैर्युता भूर्ज पत्रलिखितप्राचीनपुस्तकाधारेण मुद्रिता राजवैद्येन संशोधिता च पृष्ठ २६०

6 **व्याधिनिग्रह –प्रशस्तौषधसंग्रहश्च**–मूल्यं (Rs. 1/4) सरल संस्कृत ग्रन्थः सपादरूप्यकः

7 **श्री सूक्तं**-तृतीयावृत्तिः पृष्ठ संख्या ११० मूल्यं (Rs 1/4) राजवैद्यकृत श्रीप्रसादिनी संस्कृत टीकया तत्कृत गुर्जर भाषांतरेण संयुतं । श्रीसूक्त प्रयोगः पुरश्चरणं । गुरुप्रोक्त काम्यप्रयोगाः विष्णुस्तवः कनकधारास्तवः । संस्कृताक्षरैर्मुद्रितं । ३ जी आवृति घणो सुधारो वधारो श्री सूक्त पुरुष सूक्तनी संस्कृत टीका गुजराती भाषांतर विविध प्रयोगो कनकधारा स्तोत्र विष्णु स्तोत्र साथे

8 **दशरूपकम्**—(Rs 3) धनंजयकृत धनिककृतावलोक सहितं संस्कृतांग्लव्याख्यया समलंकृतं प्रथमः प्रकाशः कोलेजाभ्यास विद्यार्थीनां कृते परमोपयोगी ग्रन्थः पृष्ठ संख्या ११५

9 **पूर्वपाणिनीयम्**–(Rs 1) महर्षि पाणिनिप्रणितम् एतदुपरि राजवैद्यकृत विवेचनं पृष्ठ संख्या १२

10 **यज्ञनाटकम्**—(Rs. 3) महाकवि श्री भासकृतम् राजवैद्यकृत प्रस्तावनया युतं पृष्ठ संख्या २२८

11 **रसोद्धारतंत्र**—(किंमत रु. १० विद्यार्थीओ माटे रु. ५) राजवैद्य जी. का. शास्त्री विरचित १९ मो आवृति भाषा काठीआवाडी, लीपी देवनागरी पृष्ठ संख्या ४७५ (रोयल ८ पेजी) बधा रोगोनां निदान उपचारनो शास्त्रीय ग्रन्थ. आमां रोगोनां कारण चिन्ह पथ्यापथ्य उपचार लगभग २१० रोगनां शास्त्रीय औषधो तथा सामान्य उपायो वर्णव्या छे. लगभग ३००० त्रण हजारथी वधु सादा प्रयोगो अने औषधोनो बनावटो आपो छे. आ एक ग्रन्थ आखा आयुर्वेदनो सार छे. आनो अभ्यास करवाथी विद्वान वैद्य तरीके प्रतिष्ठा साथे दरदीओनी सारवार करी जश अने धन मेळवी शकाय छे. गामडाना लोको माटे तमाम रोगोना हजारो घरगथ्थु उपायो उपयोगी छे. वैद दाक्तरनो अगवड नथी त्यां दरेक माणस आ ग्रन्थने

आधारे गरीब लोकोनी सेवा करी शके छे भाषा गुजराती छतां बाळबोध अक्षरमां छापेल छे तथा गुजराती अक्षर नहि वांची शकनार बीजी भाषावाळा पण आ ग्रन्थनो लाभ लइ शकशे. आज सुधी आ ग्रन्थनी १९ आवृत्तिमां ४९ हजार प्रतो बहार पडी छे ।

१२ કાયાકલ્પ ગુજરાતી— (As. 6)

13 સુવાવડીની દુર્દશા અને દેશી રમત અને ક્રિકેટ મેચ ગુજરાતી— (As. 6)

14 आत्मलहरी (संस्कृत)— (As. 6)

15 ધરજ્યોતિષ ગુજરાતી— (As. 12)

16 कृष्णचरितम्—(Rs 3) सम्राट श्री समुद्रगुप्त विरचितम् । प्राचीनेतिहास संशोधकानांकृते उपयोगि राजवैद्यकृत विवरणम्

17 राजवैद्य जीवराम कालिदास शास्त्रीनु भाषण. लाहोरनी ३१ मी अखिल हिंद आयुर्वेदिक कोंग्रेसना प्रमुख पदेथी करेलु भाषण संस्कृत हिंदी अंग्रेजी गुजराती दरेकनो रु. १

18 राज्याभिषेक पद्धति— संस्कृत गुजराती इंग्लीश राजा महाराजा आचार्यो महंतो वगेरेने गादीये बेसारवा वखते करवानो शास्त्रीय विधि पृष्ठ ९० रु. ३.

19 An Article on Politics, Ethics, Religion etc. As. 6

20 Portents of Kaliyuga, Greatness of Brahmins etc. As. 6

21 Glory of Brahminism, Duties of a king, Where does Lakshmi (wealth) abound ? etc. As. 6

22 Kaya Kalpa (English) As. 8

23 The Hopless condition of women in confinement (delivery) and Indian Games. As. 8

24 પતિને વશ કરવાનો માર્ગ દ્રૌપદી સત્યભામાં સંવાદ The way to control a husband-A dialogue between Draupadi and Satyabhama. (2) બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિયની એકતા Unity of the Brahmins and the Kshatriyas. (3) રાજા દેવ સ્વરૂપ છે King is Divine. (English and Gujarati) આ પુસ્તકમાં ત્રણે વિષય ગુજરાતી અને ઇંગ્રેજીમાં છે (As. 12)

25 પંચાંગ ૨૦૦૨ ના કીંમત ૧-૪-૦. જુના પંચાંગો રૂ. ૦-૮-૦ કીંમતે મળે છે

26 संध्या वैश्वदेवः (पृष्ठ ८० किंमत Re 1) चा काफी चंदनादि धारण भोजन पान सोपारी रात्रिचर्या रतिस्पृहा निद्रा निद्रा त्याग आरोग्य रक्षण मळोत्सर्ग दातण नस्य अणुतेल अंजन क्षौर कसरत धूम्रपान उद्वर्तन स्नान वस्त्र सदाचार २४० बोधवचन वगेरे भाषा संस्कृत तथा गुजराती आ संध्या वैश्वदेवना पुस्तकमां उपरे लख्या विषयो छे ।

ॐ ऐं

राजवैद्य जीवराम कालिदास शास्त्री



रसशाळा औषधाश्रमना मालेक

तथा

लाहोरनी ३१ मी ओल इन्डिया आयुर्वेदिक कोंग्रेसना प्रमुख

आयुर्वेद तत्वज्ञान इतिहास मंत्र कर्मकांड धर्मशास्त्र काव्य व्याकरण

वगेरे विषयोना अनेक ग्रन्थोना कर्ता

ह्रीं क्लीं

आयुर्वेदिक उपचार शास्त्र (रसोद्धार तंत्र) मां छपायेल
ओषधोनी अनुक्रमणिका

